REPRODUCTION OF EARLIE EDITION OF THE
SABDARTHACINTAMANIH

# शब्दार्थचिन्तामणिः

# ŚABDĀRTHACINTĀMAṆIH

प्रथम खण्ड

भाग - अ

ब्राह्मावधूत श्रीसुखानन्दनाथः

प्रिन्टवैल

जयपुर- 302 004

039163
Accession No.
Shantarakshita Library
Tibetan Institute, Sarnath

Published bv
**PRINTWELL**
S-12 Shopping Complex
Tilak Nagar Jaipur 302 004

Distributed by
RUPA BOOKS PVT LTD
H O S-12 Shopping Complex Tilak Nagar Jaipur 302 004
B O 295-B Bharti Nagar, P N Pudur Coimbatore 641 041

ISBN 81 7044-369 5 (Set)

**SABADARTH CHINTAMANI**

First Published 1860
Reprint - 1992

*Printed at*
**Efficient Offset Printers**
215 Shahzada Bagh Indl Complex
Phase-II Phone 533736 533762
Delhi 110035

तत् सत्

# शब्दार्थचिन्तामणिः

अर्थात्

गीर्वाणभाषासाशेषशास्त्रानेककोशादिभ्यः सङ्गृहीतानामकाराद्यर्ण
क्रमेण विन्यस्तानां शब्दानां तत्तल्लिङ्गनानार्थकार्थपर्यायप्रयोगोल्लेखेन
पाणिन्युक्तनिरुक्तिरूपैः तत्तदर्थस्फुटीकरणेन तत्तच्छब्दप्रस्तावागतवे-
दाङ्गस्मृतिपुराणागमेतिहासादिप्रयोगैः सूदशिल्पसङ्गीतादिशास्त्रीय
विषयाणां वर्णनैः शस्त्रास्त्रधातुरत्नादिपरीक्षाभिः ग्राम्यारण्यपशुप
क्ष्यादिलक्षणैः दैगार्गलेन सजलनिर्जलभूमिपरिज्ञानेनोद्यानकृत्या
युर्वेदेन द्रव्यगुणरोगनिदानादिभिरलङ्कारच्छन्दःप्रभृतिनाम
लक्षणोदाहरणैश्च संयुक्तोऽखिलशास्त्रमताभिद्योतकः
सहृदयहृदयाह्लाददो ग्रन्थः ॥

# तस्यायमवर्गकवर्गात्मकः प्रथमो भागः

ब्राह्मावधूतश्रीसुखानन्दनाथेन विनिर्मितः

एकविंशत्यधिकोनविंशतितमे १९२१ वैक्रमेऽब्दे आगरेति साधारणत
याविख्याते अग्रपुरे आदिगौडश्रीघासीरामकन्हियालालाख्ये। ध्ये
नतयोर्निजे संस्कृतयन्त्रालये श्रीरामप्रसादद्वारा मुद्राक्षिप्या
ऽभिव्यक्तः

तत् सत्

## शब्दार्थचिन्तामणेर्मुखबन्धः तत्राद्य श्रीजगदानन्दनाथः

---

नमो गुरवे ॥ श्रीमद्गौडकुले नितान्तविपुले ऽदीचप्रथोत्थेऽतुले जातः
पुष्करराज इत्यभिधया ख्यातो धरामण्डले । यत् सौजन्यसुधासरित्प्रतितर
ङ्गान्दोलनानन्दिता विद्यौदार्य्यदयादिशेवधिपराःसर्वे बभूवुर्ज्जनाः ॥ १ ॥ श्री
नन्दलालः सुकृते विशाल स्तुलादिरामसुमनोऽभिराम. । तद्वात्मजा वप्रति
मप्रभावौ श्रीरामरामानुजनैजभावौ ॥ २ ॥ श्रीनन्दलालपत्नी सुषुवे सुतत्र
यं सुता मेकाम् । प्रथमस्तु शम्भुनाथोऽन्तरजो रामप्रसादाख्य ॥ ३ ॥ मोती
रामोऽवरजः सर्वे सकलार्थतत्त्वज्ञाः । देवी सुलक्षणासीद् याहि सती शील
सम्पन्ना ॥ ४ ॥ विद्वत्तुलारामसुतो भवानीशङ्करोऽभवत् । ज्येष्ठःश्रेष्ठमति नीति
ससारासक्तमानसः ॥ ५ ॥ द्वितीयः सम्भूतो धनपतिपुरो राज इति यं कुली
ना नाम्नै न जगति कृतवन्तो मुमुदिरे । प्रकृत्या ऽऽजन्माऽसौ विरलतरकर्म्मा
तिरसिको व्यगा दप्रत्यच्च निजजनत एकः शिवपुरीम् ॥ ६ ॥ चिचन्द्राब्दायु
ष्मान् परमपरतत्त्व विविदिषुः पठित्वा शास्त्राणि प्रतिहरिहरानन्दपदल ॥
प्रतीतं नाथाख्यं निखिलनिगमार्थैकसुधियंगतोऽयं योगीन्द्रं कुशलमवधूतं कु-
लारम् ॥ ७ ॥ प्रीत्या नमस्या सन्तुष्टः सद्गुरुः करुणानिधिः । त्व सुखानन्दना
थो सौ ख्याचष्ट हि यथो चितम् ॥ ८ ॥ आत्मावधूतपदवीं प्राप्य देशानने
कशः ॥ गाच गाच वहुविधान् दर्शं दर्शं जनव्रजान् ॥ ९ ॥ ज्वालामुखीं महा
देवीं जालन्धरनिवासिनीम् ॥ अग्निवान् सुषमं पश्यं स्तत्र स्थिति मुपाश्रयत्
॥ १० ॥ य,त्राप्रसक्तोऽस्मिन् भज्जीदेशाधिप स्तदा गतवान् ॥ रामादिरुद्र
पाल्योऽमृतपालसुतो महोदार ॥ ११ ॥ पर्वतराज श्वतुर श्वतुर्षु यतेषु दी
क्षितो विद्वान् ॥ श्रीरुद्रमणः शिष्योऽमुं विचरन्त यदाद्राक्षीत् ॥ १२ ॥ आ
हूय श्रुतवाणीजनितश्रद्धो निनीषुरनुकूलः ॥ शुश्रूषया स्वदेशं तं प्रार्थ्यानी

नयद् यथायोग्यम् ॥ १३ ॥ सोऽयं प्रसन्नहृदयो महाशयाह्वैतुकीभक्ता ॥ अर्पितरणभद्राख्यं तत्पुत्रं पाठयन् न्यवसत् ॥ १४ ॥ निश्चिन्तो विरले समन्तत उपेतेष्टार्थसिद्धि स्तत श्चिन्तां तत्र समासदद् द्विजकुले दृष्ट्वा कले रापदा ॥ सौ ख्य तस्य तु शान्तये निखिलशास्त्रार्थांज्जिघृक्षुर्मुदा व्यास्यत् कोशकलाधरं कश्चिद्वरं शब्दार्थचिन्तामणिम् ॥ १५ ॥ गङ्गातीरे रुद्रपाले शिवेन शिवतां गते ॥ सात्त्वा नैमित्तिकाभावं निमित्ताभावसङ्गतौ ॥ १६ ॥ इन्द्रप्रस्थं पुनःप्र त्यागत्य मनसि चिन्तयन् ॥ कथ मेतस्य कोशस्य स्यात् प्रवृत्ति र्निरन्तरा ॥ १७ ॥ प्रस्तुतश्रीनन्दलालदेवीदितौ श्रेयआश्रयौ ॥ कोविदौ व्यवहाराणां प्राय स्तुप्रनिवासिनौ ॥ १८ ॥ सुश्रीलालाग्रजो घासीरामनामा प्रतापवान् ॥ धनिमान्यो राजमान्य स्वभुजार्जितसद्यशाः ॥ १९ ॥ वालप्रवासिनं दैवनोदि तो दूरदर्शिनम् ॥ स मातुल मनुप्राप्य कृत्वालापं मनोगतम् ॥ २० ॥ कोशप्र शंसां प्रस्तावे श्रुत्वा तस्योत्सुकं मन ॥ तन्मुद्रीकरणायाशु यदाश्चर्यं मवो भवीत् ॥ २१ ॥ परेश्वरकराङ्कमिते १९२१ विक्रमहायने ॥ तदैव मुद्रितो भा गःप्रथमः साङ्ग इत्यभूत ॥ २२ ॥ उत्तमश्लोकशिष्येण श्रीपादाम्बुजसेविना ॥ धर्मीसारस्वतेनैभिरिन्द्रप्रस्थनिवासिना ॥ २३ ॥ जगदानन्दनाथेन पारम्प र्यानुवर्त्तिना ॥ जगदीशोपनाम्नैषा श्लोकै रुद्घाटिता कृतिः ॥ २४ ॥ * ॥ * ॥

---

## अथ शब्दार्थचिन्तामणौ संकेताक्षराणां विवरणम् ॥

---

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ० | अर्द्धर्चा पुंसि च । अश्वा दिभ्यःफञ् ॥ | अनु० उ० | अनुशतिकादित्वादुभयप दवृद्धिः ॥ |
| अघ० | अघादिभ्यश्चेति यक् ॥ | अन्य० | अन्यत्रापीतिडः ॥ |
| अङ्गु० | अङ्गुल्यादि भ्यष्ठक् ॥ | अन्ये० | अन्येषामपीति दीर्घः ॥ अ न्येभ्योपीति डः ॥ अन्येभ्यो पिदृश्यतेइतिवः । वल ॥ |
| अजा० | अजादित्वात् टाप् ॥ | | |
| अध्या० | अध्यात्मादित्वात् ठञ् ॥ | | |

| | |
|---|---|
| | अन्येभ्योपि दृश्यते क्विप्॥ अन्येभ्योपिदृश्यतेइति यप्॥ अन्येभ्योपिदृश्यन्ते॥ मनिन्क्वनिप्वनिप् विच एते॥ |
| अन्येष्व० | अन्येष्वपि दृश्यतेइतिड॥ |
| अब्० | अब्दादयश्चेतिसाधुः॥ |
| अर्श्० | अर्शआदिभ्योऽच्॥ |
| अली० | अलीकादय श्चेति कीकन्॥ |
| अश्रु० | अश्रुादयश्चेतिसाधुः॥ |
| अश्व० | अश्वपत्यादिभ्यश्चेत्यण्॥ |
| आ० | आकर्षादिभ्यः कन्॥ |
| आद्या० | आद्यादिभ्य उपसङ्ख्यानमिति तसिः॥ |
| इ० | इति॥ |
| इ०वि०ति० | इतिविष्णुपुराणतिलके |
| इ०रा० | इतराभ्योपि दृश्यन्ते तसिलादय॥ |
| इष्० | इष्टादिभ्यश्चेति इनिः॥ |
| उ० | उक्थादिभ्यात् ठक्॥ |
| उत्० | उत्सादिभ्योऽञ्॥ |
| उद्० | प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ्॥ |
| उदा० | उदाहरणम्॥ |
| उर्० | उरःप्रभृतिभ्यः कप्॥ |
| उल्० | उल्कादयश्चेति वर्ण्णन्तसाधुः॥ |
| उलू० | उलूकादयश्चेत्यूकः॥ |

| | |
|---|---|
| ऋृ० | ऋत्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठाबद्वाच्यः॥ |
| ए०वि० | एतद्विवरणम्॥ |
| कं० | कण्ड्वादिभ्यो यक्॥ |
| क० | कर्ममीमांसायाम्॥ |
| क०० | कश्चित्॥ |
| कच्० | कच्छादिभ्यश्चेत्यण्॥ |
| कत्० | कत्र्यादिभ्योढकञ्॥ |
| कपि० | कपिलकादित्वाल्लत्वम्॥ |
| कम० | कमलादिभ्यः खण्डः॥ |
| कल्या० | कल्याण्यादित्वाट्ठक्। इनङागमश्च॥ |
| का० | काश्यपः। काश्यादित्वात् ञिठः॥ |
| का०पु० | कालीपुराणम्॥ |
| कालि० | कालिदासः॥ |
| का० | कादिभ्य किदितिडः॥ |
| काशी० | काशीखण्डम्॥ |
| का०सू० | कापिलसूत्रम्॥ |
| कि० | किसरादिभ्य.ष्ठन॥ |
| किशो० | किशोरादयश्चेत्योरन्॥ |
| कु० | कुर्वादिभ्योण्य॥ |
| कु० | कुटादिः॥ |
| कुला० | कुलालादिभ्योवुञ्॥ कुलालः॥ |
| कू | कूर्मपुराणम्॥ |
| के० | केचित्॥ |
| कृ० | कृञादिभ्य.संज्ञायांवुन्॥ |

| | |
|---|---|
| कुद० | कुदरादयश्चेतिसाधुः ॥ |
| क्रतु० | क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक् ॥ |
| क्रमा० | क्रमादिभ्योवुन् ॥ |
| ख० | खण्डिकादिभ्यश्च ॥ |
| ख० | खर्जादिभ्यः ऊरः ॥ |
| खर्० | खर्जपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ ॥ |
| खला० | खलादिभ्यइनिर्वक्तव्यः ॥ |
| ग० | गर्गादिभ्योयञ् ॥ |
| गम्० | गम्भीरादयश्चेति ईरन् ॥ |
| गहा० | गहादिभ्यश्चेतिछ ॥ |
| गु० | गुपादिभ्यःकिदितिइत्वम् । |
| गुडा० | गुडादिभ्यष्ठञ् ॥ |
| गौ० | गौरादिः ॥ |
| गौ० भा० | गौडभाषा ॥ |
| गृष्० | गृष्ट्यादिभ्यश्चेतिढञ् ॥ |
| ग्रहि० | नन्दिग्रहिपचादिभ्योल्युणिन्यचइतिणिनि. ॥ |
| चतु० | चतुर्वर्णादीनांस्वार्थे उपसंख्यानम् । ष्यञ् ॥ |
| चु० | चुरादिः ॥ |
| छ० | छत्रादिभ्योणः ॥ |
| छान्० | छान्दस ॥ |
| छा०भा० | छान्दोग्यभाष्यम् ॥ |
| छे० | छेदादिभ्यो नित्यमितिठञ् ॥ |
| ज० | जल्वादयश्चेतिसाधुः ॥ |

| | |
|---|---|
| जु० | जुहोत्यादिः ॥ |
| ज्व० | ज्वलादिभ्यणः ॥ |
| ज्यो० | ज्योत्स्नादिभ्यऽण् ॥ |
| त० | तथाच ॥ |
| त०छ०प० | तदुक्तं छन्दोगपरिशिष्टे ॥ |
| तडा० | तडागादयश्चेतिनिपातः ॥ |
| त० प० | तत् पञ्चविधम् ॥ |
| तर० | तरन्त्यादिभ्यश्चेत्यच् |
| ता० | तारकादिभ्यइतच् ॥ |
| ति० | तिकादिभ्यःफिञ् |
| तुन्० | तुन्दादिभ्यइलच्चेतिइनिश्च |
| तु० | तुदादिः |
| तुषा० | तुषारादयश्चेत्यारन् ॥ |
| दं० | दण्डादिभ्यात् यत् ॥ |
| दाम० | दामन्यादित्रिगर्त्तषष्ठाच्छः ॥ |
| दि० | दिगादिभ्योयदिति यत् । दिवादि' ॥ |
| दी० | दीपिका ॥ |
| दृ० | दृढादिः । वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च । इमनिच्च ॥ |
| नं० | नन्द्यादिभ्यस्ल्युः। नन्दिग्रहिपचादिभ्योल्युणिन्यचः॥ |
| नडा० | नडादिभ्यात् फक् । नडादीनांकुक्चेतिछः ॥ |
| नद्या० | नद्यादिभ्योढगितिढक् ॥ |
| न्यङ्० | न्यङ्क्वादिभ्यात् कुत्वम्॥ |
| न्या० | न्यायसूत्रम ॥ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ना॰ | नारदः ॥ | | ष्टम ॥ |
| नि॰ | निपात' ॥ | पृथ्व॰ | पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा ॥ |
| नि॰ | दिदानम् ॥ | प्र॰ | प्रसिद्ध'। प्रज्ञादिभ्यश्चेति |
| नै॰ | नैषध ॥ | | स्वार्थे ऽण् प्रत्ययः ॥ |
| प॰ | पचाद्यच्। पचाद्याचन्॥ | प्रति॰ | प्रतिजनादिभ्य खञ् ॥ |
| प॰ | नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्यु-णिन्यच. ॥ | प्रा॰वि॰ | प्रायश्चित्त विवेकः ॥ |
| | | फ॰ | फलम् ॥ |
| प॰प॰ | पराशरपद्धतिः ॥ | ब॰ | बलादिभ्योऽनुप् ॥ वसिष्ठः |
| पर्फ॰ | पर्फरीकादयश्चेती कन् ॥ | | । बहुलमन्यत्रापी तिजुर्च॥ |
| प॰भा॰ | पर्वतभाषा ॥ | बङ्क॰ | बर्ङ्क्यादयश्चेति क्निन् ॥ |
| पर्॰ | पर्पादिभ्य.ष्ठन् ॥ | बला॰ | बलाकादयस्वेत्याकः ॥ |
| पश्वा॰ | पश्वादिर्यौधेयादिभ्यो ऽणञो ॥ | बसं॰ | वसन्तादिभ्यष्ठक् ॥ |
| | | बह्वा॰ | बह्वादिभ्यश्चेति ङीष् ॥ |
| प॰सं॰ | पराशरसंहिता ॥ | ब॰वृ॰ | वर्षवृत्तप्रभेदः ॥ |
| पा॰ | पामादिभ्यात् नः ॥ | बा॰ | बाहुलकात । बाह्वादि-भ्यादिञ् ॥ |
| पा॰पा॰ | पाद्मे पातालखण्डः ॥ | | |
| पाचा॰ | पाचाद्यन्तस्यनेति ङीर्ब-न ॥ | बा॰पु॰ | वायुपुराणम् ॥ |
| | | वाहि॰ | वाहिताग्न्यादिषु॥ |
| पारस्॰ | पारस्करादिभ्यात् सुट् ॥ | वि॰ | विशेषः । विस्तारण ॥ |
| पाश॰ | पाशादिभ्योय' ॥ | विडा॰ | विडादिभ्यःकिदित्यङ्गम ॥ |
| पि॰ | पिच्छादिभ्यात् इलच् ॥ | विदा॰ | अनन्त्यानन्तर्ये विदादिभ्यो ऽञ् ॥ |
| पिञ्ज॰ | खर्जपिञ्जादिभ्यऊ रोल चाविन्द्यूलच् ॥ | वि॰ध॰ | विष्णुधर्मोत्तरम् ॥ |
| पिना॰ | पिनाकादयस्वेत्याकः ॥ | विन॰ | विनयादिभ्यष्ठ इति स्वार्थेठक् ॥ |
| पु॰ | पुष्करादिभ्योदेशेइति इ-नि. । पुराणम् ॥ | वि॰पु॰ | विष्णुपुराणम् ॥ |
| पुरो॰ | पत्यन्तपुरोहितादिभ्योयक् | वी॰ | वीरमित्रोदयः ॥ |
| पृ॰ | पृषोदरादीनि यथोपदि- | वे॰भा॰ | वेदभाष्यम् ॥ |

| | |
|---|---|
| चेत० | चेतनादिभ्यो जीवतीति-ठञ् ॥ |
| वै० | वैदिकप्रयोग' ॥ |
| वै०प० | वैद्यकपरिभाषा ॥ |
| वै०म० | वैद्यकमतम् ॥ |
| वृ० | वृत्ते ॥ |
| वृक्षा० | वृक्षादिभ्यःखण्डः ॥ |
| वृषा० | वृषादिभ्यश्चिदितिकन' ॥ |
| वृह० | बृहद्धर्मपुराणम् ॥ |
| व्यु० | व्युत्पत्त्या ॥ |
| भा० | भावप्रकाशः ॥ |
| ब्र० | ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ॥ |
| ब्र०पु० | ब्रह्मपुराणम् ॥ |
| ब्र०वै०ब्र० | ब्रह्मवैवर्त्ते ब्रह्मखण्डम् ॥ |
| ब्रा० | गुणवचनब्राह्मणादिभ्य: कर्मणिचेतिष्यञ् ॥ |
| व्री० | व्रीह्यादिभ्यश्चेतिइनिः ॥ |
| व्या०व० | व्यासवचनम् ॥ |
| भा० | भागवतम् ॥ |
| भा०प० | भाषापरिच्छेद ॥ |
| भा०प्र० | भावप्रकाशः ॥ |
| भार० | भारत ॥ |
| भि० | भिदिदादिभ्योऽङ् ॥ |
| भिक्षा० | भिक्षादिभ्योऽण् ॥ |
| भी० | भीमादयोऽपादाने ॥ |
| भू० | भूमि ॥ |
| भ्वा० | भ्वादिः ॥ |
| म० | मत्वर्थीय' ॥ |

| | |
|---|---|
| मद्गु० | मद्गुरादयश्चेति उरच् ॥ |
| मनो० | द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्चेति |
| म०भा० | महाभारतम् ॥ |
| मयू० | मयूरव्यंसकादित्वात् ॥ |
| माषावृ० | माषावृत्तम् ॥ वुञ ॥ |
| महा० | महाभारते ॥ महाभारतम् ॥ |
| मा०त० | मायातन्त्रम् ॥ |
| मि० | मिथिलादयश्चेति इलच ॥ |
| मित० | मितद्र्वादित्वात् डु ॥ |
| मु०तं० | मुण्डमालातन्त्रम् ॥ |
| मू० | कप्रकरणे मूलविभुजादिभ्यउपसंख्यानमिति क ॥ |
| मूले० | मूलेरादयश्चेत्येरक् ॥ |
| मृ० | मृगय्वादयश्चेतिक ॥ |
| मो० | मोक्षधर्म ॥ |
| य० | यजादित्वात् । यथा ॥ |
| या० | यावत् । यावादिभ्य'कन् ॥ |
| याज्ञ० | याज्ञवल्क्य' ॥ |
| यु० | हायनान्तयुवादिभ्योऽण् ॥ |
| यौ० | पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ ॥ |
| र० | रसादिभ्यश्चेति मतुप् ॥ |
| रा० | रामायणम् ॥ |
| राज० | राजदन्तादिषु परम् ॥ |
| राजनि० | राजनिर्घण्ट ॥ |
| रेव० | रेवत्यादिभ्यष्ठक् ॥ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ल० | लक्षणम् ॥ | सिशि० | सिद्धान्तशिरोमणि ॥ |
| ली० | लीलावती ॥ | स्त्रि० | स्त्रियाङ्क्तिन् ॥ |
| लो० | लोमादिभ्यः श | सु० | सुषामादिषु चेति षत्वम् ॥ |
| स्वा० | स्वादिभ्यश्चेति नत्वम् ॥ | सुवा० | सुवास्वादिभ्योऽण् ॥ |
| श० | शकन्ध्वादि ॥ | स्थूला० | स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् ॥ |
| शका० | शकादिभ्योटन् ॥ | | |
| शम्० | शमादिभ्योऽथच् ॥ | स्म० | स्मरणम् । स्मृति ॥ |
| शर्० | शर्करादिभ्योण् ॥ | स्वा० | स्वार्थे ॥ |
| शा० | शाकपार्थिवादि । शाखादिभ्योय ॥ | ह० | हरिवंश ॥ |
| | | हरि० | हरितादिभ्योऽञ् ॥ |
| शार्० | शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ॥ | हरी० | हरीतक्यादिभ्यश्चेति फल प्रत्ययस्य लुप ॥ |
| शि० | शिवादिभ्योऽण् ॥ | | |
| शु० | शुभ्रादिभ्यश्चेति ढक् ॥ | हे० | हेमचन्द्र. ॥ |
| शुण्० | शुण्डिकादिभ्योऽण् ॥ | | |
| श्री० | श्रीभागवतम् ॥ | | |
| स० | समासः ॥ | इक्० | इक्कृष्यादिभ्य. ॥ |
| स०कं० | सरस्वतीकण्ठाभरणम् ॥ | इञ्० | इञपादिभ्य ॥ |
| स० | सम्पदादिभ्यात् क्विप् ॥ | इण्० | ग्राजादिभ्य. ॥ |
| सङ् | सङ्काशादिभ्योण्य ॥ | ण्वुल्० | धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल्वक्तव्य । संज्ञायाम् ॥ |
| संज्ञा० | संज्ञापूर्वकत्वाद्वृद्ध्यभावः ॥ | | |
| सम्० | सम्प्रसारणम् ॥ | कः० | अज्ञाते । कुत्सिते । अल्पे । ह्रस्वे ॥ |
| सर्० | सर्वधातुभ्योमनन् ॥ | | |
| सर्व० | सर्वधातुभ्यइन् । सर्वधातुभ्य.ष्ट्रन् । सर्वधातुभ्योऽसुन् | कन्० | संज्ञायाम् । अनुकम्पायाम् । अवक्षेपेकन् । इवेप्रतिकृतौ । संज्ञायांच ॥ |
| साधाः | साधिक्यदर्पण ॥ | | |
| सि० | सिध्मादिभ्यश्चेति लच् ॥ | क्षुभ्० | क्षुभ्नादिषु चेतिणत्वाभाव. ॥ |
| सिन्० | सिन्ध्वादिभ्यादण् ॥ | | |
| सिमु० | सिद्धान्तमुक्तावली ॥ | | |

# तत् सत्

श्रीगणेशाय नमः

# अथ शब्दार्थचिन्तामणौमंगलम्

तत्रादौ मङ्गलाचरण मभिधेयादिकञ्च

0000

नम श्री सद्गुरवे ॥ ॥ श्रीमद्धरिहरानन्दनाथाभिन्नं स्वदेशिकम् नारा-
यणमहं वन्दे सच्छास्त्रज्ञानभास्करम् ॥ लम्बोदरं महाकाय मेकदन्तं गजा
ननम् । गौरीप्रियं मुदा वन्दे सर्वविघ्नविनाशनम् ॥ २ ॥ नमो देवि महा
विद्ये भजामि चरणौतव । देहिज्ञानप्रकाश मेनिखिलार्थ प्रसिद्धये ॥ ३ ॥ श्री
शारदां शारदचन्द्रकान्ति हृदम्बुजेऽभीतिवर दधानाम् । पुस्त विपञ्चीं सुक-
रैः प्रसन्नां ध्यायेऽनिश आश्रहरां त्रिनेत्राम् ॥ ४ ॥ वेद्यं ब्रह्मादिभि र्ध्येयं
योगीन्द्रै र्यन्महत्पदम् ॥ तत् तत्त्वं तत्त्व महादिवाक्यै रिह भवाम्यहम् ॥ ५ ॥
यद्ज्ञानादिद जात यज्ज्ञानेविलयंब्रजेत् । तन्निर्गुण निर्विशेषं ब्रह्मात्मानं
समाश्रये ॥ ६ ॥ कोशाननेकानवलोक्य यत्नाच्छास्त्राणि भूयः प्रविचार्य्य तेभ्य.
। बालाबोधाय लिखामि शब्दान् सार्थन् सुसङ्गृह्यमुदे वुधानाम् ॥ ७ ॥ अल्पा

युधो ऽल्पबुद्धींश्च द्विजान् दृष्ट्वा कलावथ । सुखानन्दोलिलेखैतत् कोषं सुखसुबोधदम् ॥ ८ ॥ सलिङ्गालिङ्गशब्दानां व्यानायत पुरः पुरः। तत्तद्धात्वर्थलेखोहि समासार्थो विधीयते ॥ ९ ॥ जिज्ञासा यत्र कुत्रापि शास्त्रीये शब्द उद्भवेत् । तदैवैतत् पश्यता ऽनुभूयते कृतकृत्यता ॥ १० ॥ तावद् भ्रमति शब्दार्थ चिन्ताव्याकुलमानसः । सुश्रद्धानः स्थिरधीर्यावदेनं नपश्यति ॥ ११ ॥ चतुर्दशसुविद्यासु प्रायः शब्दो न तादृशः। मातृकानुक्रमे नाऽत्रसपर्यायो निवेशितः ॥ १२ ॥ निदर्शनेषु शब्दानां तत्तच्छास्त्रसमुद्धृता । गद्यपद्यमयीवाणी वर्णितास्मिन् कश्चित् क्वचित् ॥ १३ ॥ केषाञ्चि देशभाषापि गुप्तबोधाय दर्शिता । अतः परोपकृतये कोन्यो भवितु मर्हति ॥ १४ ॥ शब्दार्थचिन्तामणिनामद्भुतं कोशेषु सर्वेषुच रत्नभूतम् । श्रीमत् सुखानन्दबुधेन कृतद्विजोपकारार्थं मिदं प्रभूतम् ॥ १५ ॥ पण्डितै राजधनिनां कृता ग्रन्थाह्यनेकशः धनाढ्ये तुस्या देतत् सर्वान्तर्यामितुष्टये ॥ १६ ॥ १९२० ॥ खनेत्रशशभूयुक्ते वैक्रमे वत्सरे शुभे । मार्गस्यासितपञ्चम्या मारब्धो मुद्रितुंह्यसौ ॥ १७ ॥

---

# अथ शब्दार्थचिन्तामणिः

——००००० ——

| अः | अश: |
|---|---|
| अ । ऽ । अभावे ॥ स्वल्पार्थे ॥ प्रतिषेधे ॥ अनुकम्पायाम् ॥ सम्बोधने ॥ अधिक्षेपे ॥ स्वराणामादिमेवर्णे ॥ अः । पुं । वासुदेवे ॥ महेश्वरे नञो- | यमकारः ॥ यद्वा ॥ अततिसर्वं व्याप्नोति । अततेर्ड. ॥ न । परब्रह्मणि ॥ अंशः । पुं । भवटके । भागे ॥ स्कन्धे ॥ वस्तुन एक देशे ॥ नवांशे ॥ अंशयते । |

अंशविभाजने । अदन्त. । कर्मणिघञ् ॥
अंशकः । पुं । दायादे ॥ अंशहारी अव श्यमंशंहरतीत्यर्थः ॥ अंशहारीतिकन् ॥ अल्पांशे ॥ अल्पार्थेकन् ॥ न । वासरे । दिने ॥
अंशी । त्रि । भागाधिकारिणि । भागिनि ॥ अंशोऽस्यास्ति । इनिः ॥
अंशुः । पु । प्रभायाम् ॥ सूत्रादिसूक्ष्मांशे ॥ किरणे ॥ सूर्ये ॥ अंशयति । अंशविभाजने । चुरादि. । मृगय्वादित्वात्कुः ॥ लेशे ॥ वेगे ॥
अंशुकम् । न । सूक्ष्मवस्त्रे ॥ वस्त्रमात्रे ॥ उत्तरीये ॥ परिधानीये । अर्धोवस्त्रे ॥ अंशून्कायति । कैशब्दे । आतइतिकः ॥ यद्वा । अंशुभिःकाशते । काशृदीप्तौ । अन्येष्वपीतिडः ॥ तेजपाताख्या पत्रे ॥ त्रि । अल्पांशे ॥ अल्पेइतिकन् ॥
अंशुजालम् । न । प्रभापटले ॥ अंशूनांजालमिव ॥
अंशुधरः । पु । सूर्ये ॥ धरति । धृञ्० । अच् । अंशूनांधरः ॥ त्रि । प्रभाविशिष्टे ॥
अंशुपट्टः । पुं । पट्टशाटके ॥
अंशुमान् । पुं । सूर्ये ॥ विम्बव्यापिप्रकाशे परमात्मनि ॥ सूर्यवंशीयत्वपान्तरे ॥ त्रि । अंशुविशिष्ट ॥ अंशवो विद्यन्ते ऽस्य । तदस्यास्तीतिमतुप् ॥
अंशुमती । स्त्री । परदेवतायाम् ॥ अंशवः सन्त्य ऽस्याः । मतुप्ङीपौ ॥ शालपर्ण्याम् ॥ अंशुमत्याः फलंमूलञ्चांशुमती । अनुदात्तादेश्चेत्य ञ् फलपाकमूलेष्विति लुपि युक्तवद्भाव. ॥
अंशुमत्फला । स्त्री । कदल्याम् ॥ अंशुमन्ति सूक्ष्मावयववन्ति फलान्यस्याः । अंशुमानिव वा फलान्यस्याः । अजादित्वाट्टाप् ॥
अंशुमाली । पु । राजभेदे ॥ भास्करे ॥ अंशूनां माला । साऽस्ति अस्य । व्रीह्यादित्वा दिनिः ॥
अंशुल । पुं । चाणक्यमुनौ । ऋषिभेदे ॥ इति त्रिकाण्डशेषः ॥
अंशुहस्तः । पु । सूर्ये ॥
अंशूदकम् । न । हंसोदके ॥ यथा । दिवा रविरश्मिजुष्ट निशि शीतकरांशुभि. । सेयमंशूदकं नामस्निग्ध दोषघ्नयापहम् ॥ अंशूनामुदकम् ॥
असः । पुं । न । भुजशिरसि । स्कन्धे ॥ अंस्यते समाहन्यते । असुसमाघाते । घञ् ॥ यद्वा । अमति अम्यते वा

भारादिना । अमगतौ । अमेःसनू ॥ पु । विभागे ॥

अंसकूट. । पु । ककुदि । वृषाङ्गे । चूडो इति ढाठइतिच भाषाप्रसिद्धे ॥ अंसे कूटं. ॥

अंसल. । त्रि । मांसले । पुष्ट । बलवति ॥ अंसोस्यास्ति । वत्सांसाभ्यां काम बले इतिलच् ॥

अंहति. । स्त्री । त्यागे । दाने ॥ हन्ति दुरितमनया । हन्तेरंहचेत्यतिः ॥ रोगे ॥

अंहती । स्त्री । अंहतौ ॥ बह्वादित्वा त् पक्षेङीष् ॥

अंह६ । न । दुःखे ॥ स्वधर्मत्यागे । दुरिते ॥ अमति गच्छति प्रायश्चि त्तादिना । अमगत्यादिषु । अमे- र्हुकूचेत्यसुन् हुगागमश्च ॥ अम तिगच्छत्यनेनेनवा ॥ अंहेरसुना सिद्धे अघेरसुनि अन्त्य इतिमा भू दिति अमेर्हुकूचेतिसूत्रम् । तथा च । स्यान्मध्योष्मवतुर्थस्य मंहसोरं हसस्तथेति द्विरूपकोशः । एवञ्च । दन्ताघाः सिद्धसङ्घेविंदधतुघृणयः शीघ्रमङ्घोविघात मितिपाठोऽनु प्रासरसिकानां प्रामादिक इति व दन्ति ॥

अकम् । न । पापे ॥ दुःखे ॥ नकम् ॥

कंसुखं तदिरुद्धंवा ॥ नलोपोनञः ॥

अकच: । पुं । केतुग्रहे ॥ त्रि । केश हीने ॥

अकनिष्ठग: । पुं । बुद्धमुनौ ॥

अकम्पन. । पुं । राक्षसान्तरे ॥

अकम्पित. । पु । बौद्धगणाधिपविशेषे ॥ त्रि । कम्पशून्ये ॥

अकरणि: । स्त्री । शापे । आक्रोशने ॥ यथा । अकरणि रिह भूयादप्रश- स्तस्यधातु रिति ॥ अकरणम् । आ क्रोशेनञ्यनिः ॥

अकरा । स्त्री । आमलक्याम् ॥ त्रि । करशून्ये ॥ अकरः । अकरम् ॥

अकरुण. । त्रि । निर्दये ॥ नकरुणः ॥

अकर्कश: । त्रि । कोमले ॥

अकर्ण: । त्रि । बधिरे ॥

अकर्त्ता । त्रि । अक्रिये । अव्यापारे । कर्तृत्वरहिते ॥ नकर्त्ता । नलोपो नञः ॥

अकर्मण्य: । त्रि । क्रियाक्षमत्वे । निक म्मा इतिभाषा ॥

अकर्म । न । तूष्णीम्भावे ॥ मोक्षे ॥ न विद्यते कर्मयस्मिन् तत् ॥ त्रि । का र्याक्षमे ॥

अकर्मी । त्रि । ब्रह्मविदि ॥ अकर्मअस्ति अस्य । व्रीह्यादित्वादिनिः । नकर्मी वा ॥ कर्मानुष्ठानरहिते अवधूते ॥

यथा ॥ अनुतिष्ठन्तु कर्म्माणि परलोककयियासव. । सर्व्वलोकात्मकः कस्मादनुतिष्ठामि किं कथमिति ॥

अकल्कनः । त्रि । } वीतदम्भे ॥
अकल्मषः । त्रि । }

अकस्मात् । अ । सहसार्थे । अतर्कितनिमित्तके ॥ यथा । अकस्माद्युवती वृद्धं केशेष्वाकृष्य चुम्बति । पतिर्निर्दयमालिङ्ग्य हेतुरत्र भविष्यतीति ॥

अकाम. । त्रि । बाह्यविषयकामनाशून्ये ॥ नविद्यते कामोऽस्य ॥ यथा । दृष्टानुश्रविकाबाह्याः कामायस्मन्सन्त्यसौ । अकामस्ताऽब्रह्मन्तुनिष्कामत्वेनसिध्यतीति ॥

अकामकारः । पु । यथेष्टानाचरणे ॥ नकामकारः ॥

अकामहत. । त्रि । आत्मसुखलोकामत्वाद्वर्वाचीनेष्वानन्देषु वितृष्णे ॥ कामेनहतः कामहतः । नकामहत. ॥

अकाय. । त्रि । अशरीरे ॥ लिङ्गशरीरवर्जिते ॥ नविद्यते कायोयस्यसः ॥

अकारः । पुं । अ अक्षरे । वर्णानांमध्ये भगवद्विभूतौ ॥ अवर्णनिर्देशे ॥ वर्णोत्कारः ॥

अकालः । पुं । कालासुद्धौ ॥ यथा ।



अनुराधर्क्षमारभ्यषोडशर्क्षेषु भास्करः । यावच्चरतिनैतावदकालं मनयो विदुरिति ॥ असमये ॥ त्रि । तद्विशिष्टे ॥

अकालवृष्टिः । स्त्री । सहस्यादिषुवर्षणे ॥ यथा । पौषादिचतुरो मासान् प्रोक्ता वृष्टिरकालजा । अत्र यात्रादिक तद्वर्जयेत्सप्तवासरानिति ॥

अकिञ्चनः । त्रि । दीने ॥ नास्ति किञ्चन यस्य । मयूरव्यंसकादित्वात्समासः ॥ निष्कामे ॥

अकिञ्चनिमा । पु । आकिञ्चन्ये ॥ अकिञ्चनस्य भावः । इमनिच् ॥

अकीर्त्तिकरम् । त्रि । कीर्त्त्यभावकरे । अपकीर्त्तिकरे ॥ नकीर्त्तिकरम् ॥

अकुप्यम् । न । स्वर्णरजतात्मके धने ॥ कुप्यादन्यत् ॥

अकुलसंज्ञः । त्रि । तिथिवारर्क्षविशेषे ॥ यथा । स्वात्यन्तकाश्विमसुपौष्णकरानुराधादित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः । सूर्येन्दुमन्दगुरवश्चेति ॥

अकुशलम् । त्रि । अशोभने ॥ नकुशलम् ॥

अकूपारः । पु । कूर्मराजे ॥ महोदधौ ॥ कूपृथ्वीं पिपर्त्ति । पृपालनपूरणयोः । कर्म्मण्यण् । अन्येषा

मपीति दीर्घः । नञ् समासः ॥ उप लादौ ॥ कर्ण्डे ॥

अकूर्चः । पुं । बुद्धे ॥ त्रि । कैतवहीने ॥

अकूपारः । पु । समुद्रे ॥

अकृतम् । त्रि । नित्ये ॥ मोक्षे ॥ अविहिते ॥ कारणे ॥ प्रमाणाविषये ॥ स्वयमजनिते ॥ नकृतम् ॥ अनिष्पादिते ॥ यथा । कालातीतन्तु यत्कुर्यादकृत तद्विनिर्दिशेदितिस्मृतिः ॥ स्त्री । प्रकृतिविशेषे ॥ यथा ऽपांनिम्नदेशगमनोदिस्वरूपा प्रकृतिः अजनकैनचितकृता ॥

अकृतकः । त्रि । स्वाभाविके ॥ नकृतकः ॥

अकृतज्ञः । त्रि । उपकारमनाजिनि । कृतघ्ने ॥

अकृतबुद्धिः । त्रि । शास्त्राचार्योपदेशन्यायै रनुपजनितविवेकबुद्धौ ॥ अकृताबुद्धिर्यस्य येनवा ॥

अकृतात्मा । त्रि । यमादिभिरशोधितान्तःकरणे ॥ शास्त्रेणासंस्कृतान्तःकरणे ॥

अकृताभ्यागमः । पुं । दोषविशेषे । अकृतयोः पुण्यपापयोरकस्मात्फलदातृत्वे ॥

अकृत्रिमः । त्रि । अकरणजे । अजन्ये । सिद्धे ॥

अकृत्रिमानन्दः । पु । स्वरूपभूतानन्दाभिव्यञ्जके निदिध्यासने ॥ अकृत्रिमस्तासा वानन्दश्च ॥ त्रि । कृत्रिमानन्दविरहिणि ॥ अविद्यमानः कृत्रिमानन्दो ऽस्य ॥

अकृत्स्नवित् । त्रि । अनात्माभिमानिनि ॥ अकृत्स्नवेत्ति । विद्वस्ताने । क्विप् ॥

अकृष्णकर्मा । त्रि । अस्निग्धाने । अपापकर्मणि ॥ अकृष्णं निष्पापत्वात् शुद्धं कर्मास्य ॥

अक्रोटः । पुं । गुवाकवृक्षे । ऊटाफले ॥

अक्रोशलम् । न । आक्रोशले ॥

अक्का । स्त्री । मातरि । अनन्याम् । अम्बायाम् ॥

अक्तं । त्रि । व्याप्ते ॥ युक्ते ॥ परिच्छिन्ने ॥ अञ्चेर्गतौक्तः । अक्तपरिमाणस्य वाचका इति भाष्यस्यकैयटेन तथा व्याख्यातत्वात् ॥ अनक्ति अव्यक्तेवा । अंजूव्यक्त्यादौ । अविद्यविभ्यः क्तः ॥

अक्रतु । त्रि । अकामे । दृष्टादृष्टवाह्यविषयोपरतबुद्धौ ॥

अक्रान्ता । स्त्री । बृहत्याम् ॥ त्रि । अनाक्रान्ते ॥

अक्रियः । त्रि । श्रौतस्मार्त्तक्रियाण्यागिनि ॥ अव्यापारे । अकर्त्तरि ॥ कुकर्मविशिष्टे ॥

अक्षः | अक्षद्द

अक्रूरः । पुं । श्वफल्कतनये । गान्दिनीसुते ॥ त्रि । अकठिने । अनिष्ठुरे ॥ नक्रूरः ॥ क्रौर्यवान् क्रूरः सनेत्यक्रूरः । यद्वाक्रूर इति भावप्रधानो निर्देशः । नविद्यते क्रौर्यमस्येत्यक्रूरः ॥

अक्रोधः । पुं । परैराक्रोशे ताडनेवा कृते सति प्राप्तो यःक्रोधस्तस्यतत्क्षालोपशमने ॥ त्रि । क्रोधरहिते ॥

अक्रोधनः । त्रि । क्रोधरहिते ॥

अक्लमः । त्रि । सततव्यापारेप्यश्रान्ते ॥ अविद्यमानः क्लमोयस्यसः ॥

अक्षः । पुं । रथावयवे । चक्रे ॥ चक्रधारणदारुभेदे । नभ्ये ॥ ज्ञातार्थे ॥ व्यवहारे । आयव्ययचिन्तायाम् ॥ पाशके । येन द्यूतविद्यायामेजति ॥ रुद्राक्षे ॥ इंद्राक्षे ॥ विभीतकतरौ ॥ ज्ञाने ॥ आत्मनि ॥ रावणौ ॥ सर्पे ॥ शकटे ॥ षोडशमाषेषु । कर्षे ॥ जात्यन्धे ॥ गरुडे ॥ पद्मभायाम् ॥ यथा । चद्राश्विनिशापद्मभाद्दिंताचलक्षावधिः स्यादिहदक्षिणोत्त इति ॥ न । सौवर्चले लवणे ॥ तुत्थे ॥ हृषीके ॥ अश्नोति अक्षति वा अक्ष्यते वा ऽनेना चवा अक्षू व्याप्तौ । पचाद्यच् घञ्वा ॥ अश्नुते ऽर्थम् । अशूव्याप्तौ । अशेर्देवने इति सेवा ॥

अक्षकः । पुं । तिनिशे ॥ इतिरत्नमाला ॥

अक्षगया: । पु । श्रोत्रादीन्द्रियसङ्घाते ॥ अक्षाणां गणः ॥

अक्षचरणः । पुं । अक्षपादे ॥

अक्षतम् । न । षण्डे ॥ पुं ० श्रू ० । लाजेषु ॥ क्षणनम् । क्षणुहिंसायाम् । नपुंसकेभावेक्तः । अनुदात्तोपदेशेत्यादिनाऽलोपः ॥ नक्षतं येषांते ॥ मुकुटस्त्वमरव्याख्यावसरे लाजाः पुंभूम्नितेऽक्षतमितिपठित्वा कर्मणिक्तः । क्षतंखण्डितम् । नक्षतमक्षतमितिविगृह्य नित्यपुंल्लिंगानित्यबहुवचनान्ताश्च लाजा अक्षतमितिव्याचख्यौ ॥ केचित्तु अखण्डतण्डुला अक्षतमित्याहुः ॥ पु । यवे ॥ त्रि । अहिंसिते ॥ अव्रणे । अखण्डिते ॥

अक्षता । स्त्री । कर्कटशृङ्ग्याम् ॥ पुरुषसंसर्गरहितायां स्त्रियाम् ॥ न क्षता ॥

अक्षदर्शक. । पु । प्राड्विवाके । धर्माध्यक्षे ॥ अक्षवेधके ॥ पश्यति । दृशिर्प्रेक्षणे । ण्वुल् । अक्षाणां व्यवहाराणां दर्शकः ॥

अक्षदृक् । पु । व्यवहारज्ञातरि । अक्षदर्शके ॥

ऽक्षदेवी । त्रि । द्यूतकृति । धूर्ते ॥ अक्षैर्दीव्यति । दिवुक्रीडादौ । सुपोतिणिनिः ॥

अक्षद्यूः । पु । अक्षदेविनि ॥ अक्षै र्दीव्यति । दिवु० । क्विप् । च्छ्वोः शूठ् ॥

अक्षधूर्त्त. । पु । द्यूतकारे । कितवे ॥ अक्षेषुधूर्त्त. । सप्तमीशौण्डैरिति समास. ॥

अक्षधूर्त्तिलः । पुं । वृषे ॥ इति हारावली ॥

अक्षपाद । पु । नैयायिके । गौतमे ॥

अक्षपीडा । स्त्री । यवतिक्ताख्यलतायाम् ॥

अक्षमः । त्रि । क्षमताशून्ये ॥ क्षमारहिते ॥

अक्षमा । स्त्री । ईर्ष्यायाम् । अक्षान्तौ ॥

अक्षमाला । स्त्री । अक्षसूत्रे । अकारादिक्षकारान्तवर्णमालायाम् ॥ अरुन्धत्याम् ॥ अक्षमाला वशिष्ठेनसंयुक्ताधमयोनिजेतिवचनात् ॥ रुद्राक्षमालायाम् ॥

अक्षय. । पु । अनन्ते । अक्षयकालाभिमानिनि ॥ त्रि । क्षयाभावे । क्षयरहिते ॥ अव्यये ॥ ब्रह्मनिष्ठे ॥ अ.वासुदेवः तस्मिन् क्षयोनिवासोऽस्य ॥

अक्षयकाल. । पुं । अक्षयकालाभिमानिनि परमेश्वराख्यकाले ॥ अक्षय्याशौकालश्च ॥

अक्षयतृतीया । स्त्री । वैशाखशुक्लतृतीयायाम् ॥ यथा । वैशाखे मासि राजेन्द्र शुक्लपक्षे तृतीयिका । अक्षयासातिथिः प्रोक्ता कृत्तिकारोहिणीयुता ॥ तस्यांदानादिकं पुण्यमक्षय समुदाहृतमिति ॥ इयं सत्ययुगाद्या

अक्षया । स्त्री । रव्यादिवारैः सप्तम्यादितिथिषु ॥ यथा । अमावे सोमवारेण रविवारेण सप्तमी । चतुर्थी भौमवारेण अक्षयादपिचाक्षया इतिभविष्यपुराणम् ॥ क्षयरहितायाम् ॥ नास्तिक्षयोयस्याः सा ॥

अक्षरम् । न । नक्षरतीति व्युत्पत्त्या अविनाशिनि निर्विशेषे प्रणवाख्ये ब्रह्मणि कूटस्थेनित्ये आत्मनि ॥ यथा । परादिवद्धर्मत्वादक्षरं ब्रह्मभण्यते । कार्यकारणरूपन्तु नश्वरंक्षरमुच्यते ॥ यत्किञ्चिदस्मिंल्लोकेस्मिन् वाचोगोचरतागतम् । प्रमाणस्य चतत्सर्वमक्षरेप्रतिषिध्यते ॥ यदप्रबोधात्कार्यभ्रमाद्यं यत्प्रबोधतः । तद

क्षरं प्रवोद्रूव्यं यथोक्तेश्वरवर्त्मनेति॥ ईश्वर वर्त्मनेतिशासिद्धत्वादितटस्य सच्चयाद्यारेष्वर्थ: ॥ अकारादिक्ष कारान्तवर्णे ॥ यथा । षाण्मासिके तुसम्प्राप्ते भ्रान्तिः संजायतेयतः । धात्राक्षराणि सृष्टानि पत्रारूढान्य तः पुरेति ॥ तत्पञ्चविधंलिपिश ब्दे द्रष्टव्यम्॥ अपामार्गे ॥ गगने- ॥ मोक्षे । अपवर्गे ॥ धर्मे ॥ तपसि॥ अध्वरे ॥ अव्याकृताख्ये मूलका रणे ॥ पु ॥ शङ्करे ॥ अजे । विष्णौ ॥ जीवे ॥ नक्षरति । क्षरसञ्चलने । पचाद्यच् ॥ यद्वा । अश्नुते । अशू व्याप्तौ । अशे: सरः ॥ त्रि । अक्षर णीये । अच्युते ॥

अक्षरचणः । पुं । लेखकोत्तमे ॥ अक्षरैर्वित्त. । तेनवित्तस्चुञ्चुप्च- णपावितिचणप् ॥

अक्षरचुञ्चुः । पु । लेखकोत्तमे ॥ अक्षरैर्वित्तः । तेनवित्तइतिचुञ्चुप्॥

अक्षरजननी । स्त्री । लेखन्याम् ॥ प्रकृतौ ॥ अक्षराणा मक्षरस्यवा जननी ॥

अक्षरजीवकः । पु । लेखके ॥ लेखके ऽक्षरपूर्वा स्युश्चणजीवकचुञ्चवइति हेमचन्द्रः ॥

अक्षरजीविकः । पु । कायस्थजातौ ॥ अक्षरैर्जीविकायस्यसः ॥ लेखकः स्याल्लिपिकरः कायस्थो ऽक्षरजीवि कइतिहलायुधः ॥ त्रि । अक्षरजी- विनि ॥

अक्षरतूलिका । स्त्री । लेखन्याम् ॥ अ क्षराणां तूलिका ॥ इतिजटाधरः ॥

अक्षरधीः । स्त्री । अक्षरे ब्रह्मणिधीर्या भ्यः इतिव्युत्पत्त्या श्रुतिषु ॥ त्रि । ब्रह्मनिष्ठे ॥

अक्षरपङ्क्तिः । स्त्री । छन्दोभेदे ॥ यथा । चेद्भगणान्तेगद्वययोग. । इत्य रिहोक्तासाऽक्षरपङ्क्तिरिति ॥

अक्षरमुख. । त्रि । कालाक्षरिके । शि क्षिताक्षरे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अक्षरविन्यासः । पु । लिपौ ॥ अक्षरा णांविन्यास. ॥

अक्षरसमुद्भव. । पु । अपौरुषेयत्वेन निरस्तसमस्ताशङ्केवेदे ॥ अक्षरात्प रमात्मनः समुद्भव. आविर्भावोय स्यस. ॥

अक्षवती । स्त्री । द्यूतक्रीडाविशेषे । चौपडइतिभाषा ॥ अक्षाः पाशकाः सन्त्यस्याम् । मतुप् । लोकात्स्त्री त्वम् ॥

अक्षवाटः । पु । मल्लभूमौ । नियुद्धभुवि । अखाडा इति भाषा ॥

अक्षवित् । त्रि । व्यवहारज्ञे ॥ द्यूतज्ञे ॥

अक्षविवर्त्तः । पुं । द्यूतप्रभेदे ॥

अक्षसूत्रम् । न । जपमालायाम् ॥

अक्षाग्रकीलकः । पुं । अणी । रथचक्राग्रस्थितकीले । अणी इतिभाषा ॥ अक्षस्यनाभिक्षेप्यकाष्ठस्यान्तेवन्धार्थंकीलकः ॥

अक्षान्तिः । स्त्री । परोत्कर्षासहने । ईर्ष्यायाम् ॥ नक्षमणम् । क्षमूसहने । दिवादिः । अस्याषित्त्वात् क्तिन् । अनुनासिकस्येतिदीर्घे नञ्समासः ॥

अक्षारलवणम् । न । अकृत्रिमे सैन्धवादौ ॥ यथा । ...क्षीर गोघृतंचैव धान्यंमुद्गास्तिलायवाः । सामुद्रसैन्धवश्चैव अक्षारलवणमितिस्मृतिशोढलतायाम् ।

अक्षि । न । चक्षुषि । अश्नुते ऽनेनवा ॥ अशूव्याप्तौ संघातेच । अशेर्निदितिक्सिः । यद्वा । क्षति । अशूव्याप्तौ । इन् ॥

अक्षिकूटः । पु । ईषिकायाम् । गजाक्षिपुटके ॥

अक्षिगत. । त्रि । द्वेष्ये ॥ इत्यमरः ॥ अक्षिगतवध्येस्तत्रृ ॥

अक्षिभेषजम् । न । लोध्रे ॥

अक्षिविकूणितम् । न । अपाङ्गदृष्टौ । कटाक्षे ॥

अक्षीणः । त्रि । पूर्णे ॥ अहीने ॥ नक्षीणः । यथा । असत्स्थानविषीदेतकाले काले ऽशनक्वचित् । अवस्थान हृष्येद्दृष्टिमानुभयं दैवतनिंतम् ॥ इतिमत्वानदीनोयो ऽधृतो ऽक्षीणउच्यत इति ॥

अक्षीवम् । न । वशिरे । सामुद्रलवणे ॥ पु । शिग्रौ ॥ त्रि । अमत्ते ॥ नक्षीवति अनेनवा अक्षीवयति वा । क्षीवृमदे । पचाद्यच् ॥ अक्षय. ई. । अक्षीवाति वायतिवा । वागतिगन्धनयोः. ओवैशोषणेवा । आतोनुपेतिकः ॥

अक्षोभः । पु । मनसि ॥ अक्षाणामीशः ॥

अक्षोटः । पु । शैलोत्थपीलौ । कर्पराले । अखरोटइतिख्याते ॥ अक्षणोति । अक्षूव्याप्तौ संघातेच । वाहुलकादोट. ॥ अक्षस्येवउटाः पर्णान्यस्येतिवा ॥

अक्षोटक. । पु । कर्परालवृक्षे । पर्वतपीलौ ॥ यथा । अक्षोटकोपिवातालद्दृशः कफपित्तकृदिति ॥ अक्षोटात्स्वार्थेकः ॥

अक्षोपकारणम् । न । द्यूतसाधने ॥

अक्षोभः । पुं । आलाने । शङ्कौ । हस्तिबन्धनस्तम्भे ॥ त्रि । क्षोभरहिते ॥

अक्षोभ्यः । पुं । शिवे ॥ रागद्वेषादि

भिः शब्दादिविषयैरसुरैश्च नक्षो भ्यते चोभविक्षेप व्यथांनप्राप्यते । क्षुभेर्हेतुमण्ण्यान्ता दक्षोयदितिय तृप्रत्ययः ॥ वि । अप्रधृष्ये ॥

अक्षोहिणी । स्त्री । सेनाविशेषे । दशानीकिन्याम् ॥ सायथा ॥ इभाः २१८७० । रथाः २१८७० । अश्वाः ६५६१० । पदातयः १०९३५० । उक्तञ्च । अक्षोहिण्यामित्यधिकैःसप्तत्याष्टभिःशतैः । संयुक्तानि सहस्राणि गजानामेकविंशतिः ॥ एवमेवरथानान्तु संख्यानंकीर्तितंबुधैः । पञ्चषष्टिसहस्राणि षट्शतानिदशैव तु ॥ संख्यातास्तुरगास्तज्ञैर्विना रथतुरंगमैः । नृणांशतसहस्रंतु सहस्राणि नवैवतु । शतानित्रीणि चान्यानि पंचाशच्चपदातयः इति ॥ समस्तसंख्ययातु । खद्वयस्वरवस्विंदुनेत्रै रक्षोहिणीमतेति ॥ २१८७०० ॥ ऊहःसमूहोस्त्यस्याः इति । अक्षाणामूहिनी । पूर्वपदादिति णत्वम् । अक्षादूहिन्या मिति वृद्धिः ॥

अक्षुण्णम् । त्रि । अखण्डे ॥ अश्नुते । अमूव्याप्तौसंघातेच । कृत्यशूभ्यां क्सः ॥ न । काले ॥

अखट्टः । पुं । प्रियालवृक्षे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥



अखट्टिः । पु । असद्व्यवहारे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अखण्डम् । त्रि । पूर्णे । खण्डशून्ये ॥ अनन्ते ॥ नखण्ड्यते । खडिभेदने । घञ् ॥ नास्तिखण्डोऽस्यवा ॥

अखण्डनः । पुं । काले ॥ इति शब्दचन्द्रिका ॥

अखण्डपरशुः । पुं । परशुरामे ॥ नखण्ड. अखण्डः केनाप्यखण्डितः परशु' कुठारो यस्य ॥

अखातम् । पु । न । देवखाते । अकृत्रिमजलाशये ॥ खाताद्भिन्नम् ॥

अखिलम् । त्रि । विश्वस्मिन् । कृत्स्ने ॥ नखिलमस्य ॥

अखिलाधारम् । त्रि । ब्रह्मणि ॥ अखिलस्याकाशादिप्रपञ्चस्याधारआश्रयस्तदितिविग्रह' । आश्रयशब्दः सृष्टिप्रलययोरप्युपलक्षणार्थं' ॥

अगः । पु । पर्वते ॥ वृक्षे ॥ सरीसृपे ॥ भानौ ॥ नगच्छति । गम्लृगतौ । अन्येभ्योपीति अन्येष्वपीतिवाड. ॥ नगोऽप्राणिष्विति पाक्षिकोऽप्रकृतिभावः ॥

अगजः । त्रि । गिरिसम्भवे ॥ न । शिलाजतुनि ॥

अगतिः । पु । अनववोधे । अपरिज्ञा-

ने ॥

अगदः । पुं । औषधे ॥ त्रि । नीरुजि ॥ गदविरुद्धः । नगदो ऽस्मादितिवा ॥

अगदङ्कारः । त्रि । चिकित्सके ॥ अगदमरोगंजन्तुकरोति । कर्मण्यण् । कारेसत्यागदस्येतिमुम् ॥

अगदतन्त्रम् । न । वैद्यविद्याङ्गविशेषे ॥ यथा । अगदतन्त्रंनामसर्पकीटलूतावृश्चिकमूषिकादिदष्टविषव्यञ्जनार्थं विविधविषसंयोगविषोपहतोपशमनार्थञ्चेतिसुश्रुत. ॥

अगमः । पु । वृक्षे ॥ नगच्छति । गम्लृगतौ । पचाद्यच् ॥

अगम्य । त्रि । अज्ञेये ॥ गमनायोग्ये ॥ नगम्यः ॥

अगस्तिः । पु । मुनिविशेषे ॥ विन्ध्याख्यम् अगमस्यतीत्यगस्तिः । अस्यतेः क्तिच्क्तौचेतिक्तिच् । बाहुलकात्सिर्वा । शकन्ध्वादि ॥ वकद्रौ ॥ अगस्तिः पित्तकफजिच्चतुर्थकहरोहिमः । रूक्षोवातकरस्तिक्तः प्रतिश्यायनिवारणः ॥

अगस्तिद्रुः । पु । वकपुष्पवृक्षे । मुनिद्रुमे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अगस्त्यः । पुं । वकद्रौ ॥ मुनिभेदे । मुखस्यतनये ॥ अगविन्ध्यस्त्यायतिस्तम्भाति । स्त्यैसङ्घाते । आतोऽ-पसर्गेकः ॥

अगस्त्याश्रमः । पु । अगस्त्यकुण्ड इतिनाम्नाकाश्यांप्रसिद्धेस्थाने ॥ मलयाचलेवर्त्तमाने मुनिवासस्थाने ॥

अगस्तिकुसुमम् । न । मुनिद्रुमपुष्पे ॥ अगस्तिपुष्पशाके ॥ अस्यगुणायथा । अगस्तिकुसुमं शीतंचतुर्थकनिवारणम् । नक्तान्ध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच ॥ पीनसश्लेष्मपित्तघ्नवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ॥ आगस्त्यंकुसुमं तथा मृदुफलं केनाहृतंजन्तुनाधन्यंचाद्यदिनं यदद्यमिलितंकस्याश्रमालोकितम् । स्विन्नंतक्रयुतंसहिंगुलवणं तप्तेघृतेपाचितंभोक्ता संततभाषितं प्रियतमेनाद्यापिसम्प्रापितम्मिति ॥

अगाधम् । त्रि । अतलस्पर्शे । अतिगम्भीरे ॥ दुर्बोधाशये ॥ न । छिद्रे ॥ नास्तिगाधः स्थितिरत्र । नञोऽस्त्यर्थानामिति बहुव्रीहिः ॥

अगाधजलः । पुं । ह्रदे ॥ त्रि । अतलस्पर्शजलविशिष्टे ॥ अगाधजलंयत्र ॥

अगारम् । न । गृहे ॥ अगान्नृच्छति । ऋगतौ । कर्मण्यण् ॥

अगारदाही । त्रि । गृहदाहके ॥

अगुः । पुं । राहुग्रहे ॥ त्रि । किरणरहिते ॥

अगुरुः । न । लौहके । सुगन्धिकाष्ठ-

भेदे। अगर इति भाषा॥ अगुरु च्चाकटुस्त्वच्यतिक्त तीक्ष्णञ्चपित्तल म। लघुकर्णाक्षिरोगघ्न शीत वातकफप्रणुत्॥ अगुरुर्वापुंसीति वोपालितः। शिंशपायाम्॥ का लागुरुणि॥ चि। लघुनि॥ नगुरुर स्मात्॥

अगूढगन्धम्।न। हिङ्गुनि॥ इतिरा जनिर्घण्टः॥

अगोचरम्। त्रि। इन्द्रियजन्यप्रत्य क्षाविषये॥

अगौकाः।पुं।शरभे।खगे॥ सिंहे॥ त्रि। अद्रिवासिनि।अद्रिगे॥ अ गः ओकोयस्यसः॥

अग्नायी।स्त्री। वन्हिपत्न्याम्॥ अग्नेः स्त्रीत्यस्मिन्नर्थे वृषाक प्यग्निकुसितेत्यादिसूत्रेणाग्निशब्द स्यैकारादेशोङीप्च॥ त्रेतायुगे॥

अग्निः।पुं।अङ्गयन्ति अग्र्यजन्मप्रा पयन्तीतिव्युत्पत्त्या हविःप्रत्ये याधि कारणेषु गार्हपत्याहवनीय दक्षिणा ग्निसभ्यावसथ्यौपासनाख्येषु षड ग्निषु॥ पावके।वैश्वानरे॥ अस्य गुणा यथा। रूपनेत्रेन्द्रियपाकःस न्तापस्तीक्ष्णतातथा। वर्णोभ्राजि ष्णुतामर्षः शौर्यमग्नेर्गुणाअमीति॥ षट्सुधूमाग्न्यादिषु॥ यथा। अर्वा



निष्कासनार्थायक्रमाजज्ञेयाः षडग्न यः। धूमाग्निश्चैवदीपाग्निर्मन्दाग्नि र्मध्यम स्तथा॥ खराग्निश्च भडाग्नि श्च तेषांवक्ष्यामि लक्षणम्॥ वि क्षालोयोधूमशिखो धूमाग्निःसउदा हृतः॥ ससारमतिशुष्कं यन्मुष्टिम ध्येसमेष्यति। तत्काष्ठं काष्ठमित्या हुः खदिरादिसमुद्भवम्॥ ताभ्यां तस्यचतुर्थाभ्यां दीप्ताग्निर्दीपाग्निरुच्य ते। चतुरग्नेन तेनैवमन्दाग्निः परिकीर्त्तितः॥ अर्द्धीकृताभ्यांद्वा भ्यांतुमध्यमाग्निरुदाहृतः॥ अर्द्धे स्तैः पञ्चभिः प्रोक्तःखराग्निः सर्वक र्मसु॥ मस्तकावधिपात्रस्य चतुर्दि क्षुक्रमेणच। प्रसरतियदाज्वाला. सभडाग्निरुदीरितः॥ सार्द्धयामञ्च यामञ्चयाममेकमुहूर्त्तकम। मुहूर्त्त मात्रमित्येवमर्थाय्यंवन्हय.स्मृताः इ ति॥ चित्रकाख्यौषधौ॥ तृतीये॥ चतुष्कले॥ आदिगुरोः सन्नाथाम॥ कृत्तिकानक्षत्रे॥ अङ्गति ऊर्द्धंगच्छ ति। अगिगतौ। अङ्गेर्नलोपश्चे तिनिर्नलोपश्च॥ रक्तचित्रके॥ भल्ला तके॥ निम्बूके॥ पित्ते॥ स्वर्णे॥

अग्निकः।पुं।इन्द्रगोपकीटे॥ इति हेमचन्द्रः॥

अग्निकणः।पुं।स्फुलिङ्गे॥ अग्नेः

कणः ॥ इत्यमरः ॥

अग्निकारिका । स्त्री । अग्निकार्ये ॥ इति हेमचन्द्रः ॥

अग्निकार्य्यम् । न । होमादौ हविर्दानादिपूर्वकाग्निज्वालने । अग्नीन्धने ॥ अग्नौसायप्रातःसमिद्धोमानुष्ठाने ॥ अग्न्यावग्नेर्वाकार्य्यम ॥

अग्निकाष्ठम् । न । अगुरुणि ॥ इति राजनिर्घण्टः ॥

अग्निकुक्कुटः । पुं । ज्वलदग्निटृणोल्कायाम् ॥ इतिचिकाण्डशेषः ॥ अग्नेः कुक्कुटः ॥

अग्निक्रीडा । स्त्री । खधूपादिन्त्यामे । हवाइ इतिभाषाप्रसिद्धे ॥

अग्निगर्भः । पुं । औषधविशेषे । अग्निनिर्यासे । अग्निजारे ॥ सूर्यकान्तमणौ ॥

अग्निगर्भा । स्त्री । महाज्योतिष्मत्याम् ॥ इति राजनिर्घण्टः ॥

अग्निचित् । पुं । साग्निके । अग्निचेतरि ॥ इत्यमरः । अग्निमचैषीत् । चिञ्चयने । अग्नौचेरिति क्विप् तुक् ॥

अग्निचित्या । स्त्री । अग्नेश्चयने ॥ चित्याग्निचित्ययोरितिभावेयप्रत्ययस्तुक्चनिपात्यते ॥

अग्निचूडा । स्त्री । अग्निशिखायाम् ॥



अग्निज । पुं । भल्लातके । भिलावा ख्ये ॥ अग्निजारवृक्षे ॥ चि । अग्नेर्जातमात्रे ॥

अग्निजात । पुं । } औषधविशेषे । वडवाग्निमले । सिन्धुफले इति राजनिर्घण्टः ॥
अग्निजारः । पुं ।
अग्निजाल । पुं ।

अग्निजिह्वा । स्त्री । अग्नेर्ज्वालायाम ॥ लाङ्गलीवृक्षे ॥ योगविशेषे ॥ यथा । सप्तषष्ठ्यादितिथयः सोमवारादिभिर्युताः । अग्निजिह्वाः सप्तयोगामङ्गलेष्वतिगर्हिता' इति ॥ काल्यादिसप्तसु ॥ यथा । कालीकपालीचमनोजवाचसुलोहितायाचसुधूम्रवर्णा । स्फुलिङ्गिनीविश्वरुचीचदेवीलेलायमाना इतिसप्तजिह्वा इतिप्रथममुण्डकश्रुतिः ॥

अग्निज्वलिततेजनः । पुं । अग्निना दीप्तफलके । आयुधविशेषे ॥

अग्निज्वाला । स्त्री । वन्हिशिखायाम ॥ धातुपुष्पिकायाम ॥ लाङ्गलिक्यावयौ ॥ अग्नेरिवज्वालास्याः । अग्नेर्ज्वालेववा । रक्तपुष्पत्वात् ॥

अग्निदमनी । स्त्री । क्षुपविशेषे । बहुकण्टकायाम् । गुच्छफलायाम्

अग्निदीप्ता । स्त्री । महाज्योतिष्मतीवृक्षे ॥ इति राजनिर्घण्टः ॥

अग्निदेवा । स्त्री । कृत्तिकानक्षत्रे ॥ इ

ति हेमचन्द्रः ॥

अग्निध्वज । पुं । मरुद्वाहे । धूमे । धूँवाँ इति भाषा प्रसिद्धे ॥

अग्निनिर्यासः । पु । अग्निजारवृक्षे ॥

अग्निपत्री । स्त्री । अग्निवल्ली अगिया इतिलोकप्रसिद्धौषधौ ॥

अग्निपुराणम् । न । आग्नेये ॥ तच श्लोकसंख्या यथा । षोडशैवसहस्राणि पुराणंचाग्निसंज्ञितमिति ॥

अग्निभम् । न । स्वर्णे ॥ कृत्तिकानक्षत्रे ॥

अग्निभूः । पुं । कार्त्तिकेये ॥ पुराकिल तारकोपद्रुतदेवरक्षार्थं शिवेनाग्निरूपस्ववीजवन्हिमुखेक्षिप्तं तेनाग्निनाकृत्तिकासुक्षिप्तं तास्वदैवागततगर्भसत्तपाः शरवणं प्रविश्यप्रसूता तेनाग्निभूरितिसर्वानन्दः ॥ न । जले ॥ त्रि । अग्निजाते ॥ अग्नेर्भवति । भू । क्विप् ॥

अग्निभूतिः । पुं । बौद्धभेदे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अग्निमणिः । पु । सूर्यकान्ते ॥ इति जटाधरः ॥

अग्निमन्थ । पुं । श्रीपर्णे । गणिकारिकायाम् । अरणीतिख्याते ॥ अग्निमन्थः श्वयथुहृद्वीर्येणः कफवातहृत् । पाण्डुनुत् कटुकस्तिक्तस्तु-



वरोमधुरोग्निद् ॥ अग्निमन्थकुसुमशाकस्तु । अग्निमन्थमवमासमुनीता सतराचमुद्रकोसुसाधिता । तक्रतसहतयुक्तपाचितार्हिंगुनाजनितवासवासिता ॥ अग्निमन्थोग्रहग्रस्वचिदोषशमनः सरः । आध्मानच्छर्दिकाशोथवक्तूरोगविषापहः ॥

अग्निमथाति । मन्थविलोडने । कर्मण्यण ॥ अयमर्थे ॥

अग्निमुखः । पुं । देवे ॥ विप्रे ॥ चित्रके ॥ अग्निर्मुखयस्य ॥ न । कल्पेवौषधपन्चसु ॥

अग्निमुखी । स्त्री । भल्लातके । भिलावाइतिख्याते ॥ लाङ्गलिकायाम् ॥ अग्निरिवमुखमस्याः । गौरादिः ॥

अग्नियन्त्रम् । न । अगन्यस्त्रविशेषे । तोप वन्दूक अगन गन इत्यादिभाषा प्रसिद्धे ॥

अग्निरक्षणम् । न । अग्न्याधाने ॥ अग्निपालने ॥ अग्ने रक्षणम् ॥

अग्निरजाः । पुं । इन्द्रगोपाभिधेकीटे ॥

अग्निरुहा । स्त्री । मांसरोहिण्याम् ॥

अग्निवल्लभः । पुं । राले ॥ सालवृक्षे ॥

अग्निवाह । पुं । छागे ॥ अग्नेर्वाह ॥ धूमे ॥

अग्निवित् । पुं । अगनिचिति । अग्निहोत्रिणि ॥

अग्निबीजम् । न । } स्वर्णे ॥
अग्निवीर्यम् । न । }

अग्निव्रतम् । न । भूभुजोव्रतविशेषे ॥ यथा । प्रतापयुक्तस्तेजस्वीनित्य-स्यात्पापकर्मसु । दुष्टसामन्तहिंस्रश्चतदाग्नेयव्रतस्मृतमिति ॥

अग्निशरणम् । न । दक्षिणाग्निगार्हपत्याहवनीयसभ्यावसथ्यशालायाम ॥ अग्नीनाशरणम् ॥

अग्निशाला । स्त्री । अग्निशरणे ॥ अग्नीनांशाला ॥

अग्निशिखम् । न । कुसुम्भपुष्पे ॥ कुङ्कुमे ॥ अग्नेरिवशिखाकेसरो ऽस्य॥ स्वर्णे ॥ पुं । कुसुम्भवृक्षे ॥ दीपे ॥ वाणे ॥ इतिशब्दरत्नावली ॥

अग्निशिखा । स्त्री । लाङ्गलिक्याख्यौषधौ ॥ अग्नेरिवशिखायस्या ॥ विशल्यायाम् । शाकभेदे ॥ अग्नेरिवशिखासन्तापोयस्याः ॥ ज्वालायाम ॥

अग्निशेखरम् । न । कुङ्कुमे ॥

अग्निष्टुत । पुं । अग्निष्टोमस्यविकृतिरूपे क्रतुविशेषे । अग्निः स्तूयते ऽस्मिन् क्रतुविशेषे । ष्टुञ् स्तुतौ । सम्पदादित्वादधिकरणे क्विप् । अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमा इति षः ॥

अग्निष्टोम. । पुं । यज्ञविशेषे ॥ अग्नीनांस्तोमः । अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमादितिष' ॥ अग्निष्टोमार्थग्रन्थे ॥

अग्निष्ठः । पुं । लोहमयेतण्डुलादिभर्जनपात्रे ॥

अग्निष्वात्तः । पुं । दिव्यपितृभेदे ॥ यथा । अग्निष्वात्ताश्चदेवानांमारीच्यालोकविश्रुता इति॥ अपिच । अग्निष्वात्तादयोलोके पितरश्चिरवासिनःइति । चिरलोकपितरइत्यर्थः ॥ अग्निनाखुष्टु यथास्वादेवमात्ताः भक्षिताःअतस्मात्ताग्नि दग्धाइत्यर्थः । एवञ्चात्रमूर्धन्यादेशोनयुक्तः । मन्वादिस्मृतिषु मूर्धन्यषकारवानेवपाठ' ॥ नित्यवहुवचनान्तोय मितिकेचित् ॥

अग्निहोत्रम् । न । यज्ञभेदे । अग्न्याधाने ॥ सायंप्रातःकालयोर्नियमेनानुष्ठेयेकर्मविशेषे ॥ अग्नयेहोत्रमत्रेतिबहुब्रीहिः ॥ पुं । अग्नौ ॥ हविषि ॥ इतिमेदिनिकरः ॥

अग्निहोत्रहवणी । स्त्री । यज्ञाङ्गभूते निर्वापसाधने काष्ठपात्रविशेषे ॥

अग्निहोत्री । पुं । अग्निहोत्रयुक्ते । अग्निचिति ॥ अग्निहोत्रमस्यास्ति । अतइनिठनावितीनि । योनर्चिषिजुहोत्यग्नौव्यङ्गारिणिचमानवः । मन्दोग्निरामयावीचदरिद्रश्चसजायते ॥

अग्नीत् । पुं । ऋत्विग्भेदे ॥ अग्नि मिन्धे । त्रिइन्धीदीप्तौ । क्विप् । न लोप ॥ यज्ञमण्डपभेदे ॥

अग्नीध्र । पुं । धनद्वारावरणीये ऋत्विग्विशेषे ॥ तस्यकर्माग्निरक्षणम् ॥ अग्निविशेषे ॥

अग्नीध्रा । स्त्री । अग्निकार्य्ये । हविर्दानादिपूर्वकाग्निज्वालने ॥

अग्नीध्रीयः । पुं । दक्षिणाग्नौ ॥

अग्नीन्धनम् । न । अग्निकार्य्ये ॥ अग्नेरिन्धनम् ॥

अग्नीषोमीयम् । न । अग्नीषोम्येह विषि ॥ अग्नीषोमौदेवतेअस्य । द्यावापृथिवीशुनासीरेत्यादिनाछ ॥

अग्नीषोम्यम् । न । हविर्विशेषे ॥ अग्नीषोमौदेवतेअस्य । द्यावापृथिवीत्यचस्यचकारात्यत ॥

अग्न्याधानम् । न । श्रौताग्निसत्कृतौ । अग्निहोत्रे । अग्निरक्षणे ॥ अग्नेः आधानम् । अग्निहोत्रमित्यर्थ ॥

अग्न्याधेयम् । न । आहवनीयाद्यग्न्युत्पादककर्मणि ॥

अग्न्यालय । पुं । अग्न्याधारकुण्डे ॥ अग्नेःआलय. ॥

अग्न्युत्पात । पुं । उल्कापातादिदिव्यवैकृते आकाशादिष्वग्नि विकारे । उपाग्निते ॥ अग्नेरुत्पातम्रुत्पातो वैकृतम् ॥ अग्निनिष्ठोत्पाते ॥ मन्त्रादिनाग्नेर्दाहशक्तिनिवारणे इत्यर्थ ॥



अग्रम् । न । पुरस्तात् ॥ उपरि ॥ पल परिमाणे ॥ आलम्बने ॥ समूहे ॥ वृक्षादिशिरसि । प्रान्ते ॥ भिक्षाविशेषे । ग्रासचतुष्टये ॥ ग्रासप्रमाणा भिक्षास्यादग्रं ग्रासचतुष्टयमि ति स्मृते । त्रि । अधिके ॥ प्रथमे ॥ प्रधाने ॥ अग्यते अगतिवा । अगकुटिलायांगतौ । ऋज्रेन्द्रेतिसाधु ॥

अग्रकाण्ड. । पुं । स्तोमवल्याम । काण्डीरे ॥

अग्रग. । त्रि । सेवके । अग्रेसरे ॥ अग्रेगच्छति । गम्लृगतौ । अन्यत्रापी तिडः ॥

अग्रगण्यः । त्रि । अग्रेगणनीये ॥ यथा । शमनभवनयाने यज्ज्वानग्रगण्य इतिमहानाटकम ॥

अग्रगामी । त्रि । अग्रगे । अग्रेसरे ॥

अग्रज । पुं । ज्येष्ठे भ्रातरि ॥ ब्राह्मणे ॥ त्रि । पूर्वजाते ॥ अग्रेजात. सप्तम्यां जनेर्डः ॥

अग्रजङ्घा ॥ स्त्री । जङ्घाग्रभागे । प्रतिजङ्घायाम् ॥

अग्रजन्मा । पुं । द्विजे ॥ ज्येष्ठे भ्रातरि ॥

अग्र्धि । अग्रेआदोजन्मास्य ॥

अग्रजात. । पुं । विप्रे ॥ चि । पूर्वजाते ॥ अग्रेजात ॥

अग्रजाति. । पुं । ब्राह्मणे ॥ अग्रेजातिर्जन्मास्य ॥

अग्रणी । चि । अग्रिमे । उत्तमे ॥ अग्रं नयति । णीञ्प्रापणे । सत्सूद्विषेतिक्विप् । अग्रग्रामाभ्यामितिणत्वम् ॥ विष्णौ ॥ सर्वेषामग्रणीर्विष्णुसेव्यःपूज्यस्सनित्यश इतिमोक्षधर्मः ॥ अग्रमुत्कृष्टनिरस्तसकलदुःखानुषङ्गपरमानन्दस्वरूप पदंस्थाननयतिर्मुमुक्षूनितितथा ॥

अग्रत । । । प्रथमे ॥ पुरोऽर्थे ॥ यथा । अग्रतश्चतुरोवेदाइति ॥ अग्रेइति । आद्यादित्वाततसिः ॥ अग्रे ॥

अग्रतःसरः । चि । अग्रगामिनि । पुरोगे ॥ अग्रतःसरति । सृगतौ । पुरोग्रतोग्रेषुसर्तेरितिटः ॥

अग्रदानी । पुं । आग्रहारिके । प्रेतसंप्रकल्पकषडङ्गतिलादि द्रव्यग्राहिणि पतितब्राह्मणे ॥ यथा । लोभीविप्रश्चशूद्राणामग्रेदान गृहीतवान् । ग्रहणेमृतदानानामग्रदानी बभूवस इतिब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ॥

अग्रपर्णी । स्त्री । गौडभाषायांमुल्कुशीतिप्रसिद्धौषधे । अजलोमाख्यवृक्षे ॥

अग्रमांसम् । न । हृदयान्तर्गतमांसभेदे । वुक्कायाम् ॥ अग्रं मुख्यमांसम् ॥ उदरमध्यवर्त्तिमांसवर्धनरूपरोगविशेषे ॥

अग्रयाणम् । न । प्रथमे ॥ नासीरे । सेनाविशेषे ॥

अग्रयायी । चि । अग्रेसरे ॥

अग्रलोहिता । स्त्री । चिल्लीशाके ॥ इति राजनिर्घण्ट ॥

अग्रसन्धानी । स्त्री । यमपञ्जिकायाम् । जीवानांशुभाशुभकर्मलिखितयमस्यपुस्तके ॥

अग्रसर. । चि । अग्रगामिनि ॥ अग्रेसरति । बाहुलकाट ॥ पुरोगाग्रतोग्रेषुसर्तेरितिटोवा ॥

अग्रहः । पुं । वानप्रस्थे ॥

अग्रहायण । पुं । मार्गमासे । मार्गशीर्षे ॥

अग्रायणीयम् । न । वादस्यभेदे ॥

अग्राह्य । चि । परमेश्वरे ॥ इन्द्रियाऽविषये ॥ नग्राह्यः ॥ गृहणायोग्ये ॥ यथा । अग्राह्य शिवनैवेद्यंपत्रंपुष्पंफलजलम् । सालग्रामशिलास्पर्शात्सर्वंयातिपवित्रतामिति ॥

अग्रिम । चि । ज्येष्ठे ॥ उत्तमे ॥ अग्रेजातः । तत्रभवोवा । अग्रादिपश्चाड्डिमच् ॥

अग्रिमा । स्त्री । लवनीफले । लोना इतिगौडप्रसिद्धेफलवृक्षे ॥

अग्रिय. । पुं । ज्येष्ठसोदरे ॥ त्रि । प्रधाने ॥ इत्यमर ॥ अग्रेभव । घ ॥

अग्रीय । त्रि । अग्रियार्थे॥ अग्रेभव । छप्रत्यय ॥

अग्रे । ॥ । प्रधाने ॥ विभक्तिप्रतिरूपकोनिपात ॥

अग्रेग । पुं । अग्रगे ॥ अग्रेगच्छति । गमॢगतौ । क्विप् । ऊङ्चगमादी नामितिवक्तव्य । अनुनासिकलोपश्च । अग्रेगवौ अग्रेग इत्यादिबोध्यम ॥

अग्रेदिधिषू । पुं । पुनर्भूभर्त्तरि । प्रधान पुनर्भूभार्य्यो ॥ अग्रेप्रधानदिधिषूर्यस्य । अग्रेइतिविभक्तिप्रतिरूपकोनिपात । समासान्तविधेरनित्यत्वान्नकप् ॥

ग्रेदिधिषू । स्त्री । ज्येष्ठायांसोदरभगिन्यामनूढायां याकनिष्ठा विवाह्येन दीयतेतस्याम् ॥ उक्तञ्चलोकाक्षिणा । ज्येष्ठायांयद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा । साचाग्रेदिधिषूर्ज्ञेयापूर्वा तुदिधिषु स्मृतेति ॥

अग्रेवणम् । न । वनस्याग्रभागे ॥ वनस्याग्रे । राजदन्तादिषु निपातनात्सप्तम्याअलुक् । वनपुरगेतिणत्वम ॥

अग्रेसरः । त्रि । अग्रगे । पुरोगमे ॥ अग्रमग्रेणाग्रेवासरति । सृगतौ । पुरोग्रतोग्रेषुसर्त्तेरितिट अग्रेइति एदन्तत्वनिपातनात ॥

अग्रेसरिक । त्रि । अग्रगामिनि ॥

अग्र्य । त्रि । अग्रिमे । प्रधाने ॥ पुं । ज्येष्ठभ्रातरि ॥ प्रतिष्ठिते ॥ अग्रेभव । अग्राद्यत ॥ अग्रेसाधुर्वा । तत्रसाधुरितियत् ॥ अग्रइववा । शाखादिभ्योय ॥

अघम् । न । व्यसने ॥ दुःखे ॥ दुरिते । पापे ॥ अपराधे ॥ त्रि । तद्वति ॥ पापाचरणे ॥ अघतेगच्छतिदानादिना । अघिगतौ । पचाद्यच् । आगमशास्त्रस्या ऽनित्यत्वान्ननुम ॥ अङ्घ्यतेऽनेनवा ॥ अघविद्यते ऽस्यअर्श आद्यच् ॥

अघमर्षणम् । त्रि । पापनाशिमन्त्रविशेषे । सर्वेनसामपर्ष्वसिनिजप्ये ॥ अघमर्षति । मृषुसहने । सहनमभिभव । यद्वा । मृष्यति । ल्युट् । स्त्रियांटित्वान्ङीप् ॥

अघमारः । पुं । यमे ॥ अघेनपापविशेषेणअपमृत्युरूपेण अकाले मारयतिइतिअघमारः अजन्तः ॥

अघायुः । त्रि । पापजीवने ॥

अघोर. । पुं । गिरिशे ॥ त्रि । अभयानके ॥

अघोरा । स्त्री । भाद्रकृष्णचतुर्दश्याम ॥

यथा । भाद्रमास्यसितेपक्षेअघोरा ख्याचतुर्दशी । तस्यामाराधित· स्था णुर्नयेच्छिवपुरंध्रुवमितिस्मृति· ॥
अघोः । I । सम्बोधने ॥
अघ्न्यः । पुं । प्रजापतौ ॥ अघन्यादि त्वात्हन्तेर्यक्अडागमउपधालोपश्च ॥ हन्तुमशक्यो ऽघ्न्यःपर्वतइतिवे दभाष्यम् ॥
अघ्न्या । स्त्री । सौरभेय्याम् ॥ नहन्य तेनहन्ति वादातारम् । अघ्न्याद यश्चेतिसाधुः ॥
अङ्कः । पुं । रूपकभेदे ॥ चिन्हे ॥ आजौ ॥ भूषणे ॥ कुचभूषायाम ॥ रूपके ॥ अंशे ॥ अन्तिके ॥ उत्सङ्गे ॥ स्थाने ॥ प्रकरणे ॥ अगे ॥ कटिप्रदेशे ॥ ना टकादिपरिच्छेदे ॥ एकादिरेखाया म् ॥ अपराधे ॥ नवसु ॥ नवमाङ्के ॥ अङ्क्यतेऽनेन । अकिलक्षणे । हल श्चेतिघञ् ॥
अङ्कतिः । पुं । अग्निहोत्रिणि ॥ वन्हौ ॥ वेधसि ॥ वायौ ॥ अञ्चति । अञ्चुग तौ । अञ्चे·कोविन्यतिःकश्चान्तादेशः ॥
अङ्कनम् । न । संख्यागस्थाने ॥ चिन्ह युक्तीकरणे । आंकनाइतिख्याते ॥
अङ्कपालिका । स्त्री । आश्लेषे । आ लिङ्गने ॥
अङ्कपाली । स्त्री । परीरम्भे ॥ धात्र्या

म् ॥ वेदिकायाम् ॥ इतिमेदिनी ॥ कोटयामितिहेमचन्द्रः ॥
अङ्कलोड्यः । पुं । चिञ्चोटके । चेच् कोइतिगौडभाषाप्रसिद्धे ॥
अङ्गः । न । चिन्हे ॥ शरीरे ॥ अञ्चति । अञ्चुगतिपूजनयोः । अञ्च्यञ्जियु जिभृजिभ्य·कुश्चेत्यसुन कवर्गश्चा न्तादेशः । अङ्कसी । अङ्कांसि ॥
अङ्कितः । त्रि । चिन्हिते । लाञ्छिते ॥ इतिव्याडिः ॥
अङ्किनी । स्त्री । अङ्कानांसमूहे ॥ ख लादित्वादिनिः ॥
अङ्की । स्त्री । मृदङ्गभेदे । अङ्क्ये ॥
अङ्कुरः । पुं । रुधिरे ॥ लोम्नि ॥ सलि ले ॥ अभिनवोद्भिदि ॥ अङ्क्यते । अ किलक्षणे । मन्दिवाशिमथीत्यु रच् ॥
अङ्कुरितः । त्रि । उदयति ॥
अङ्कुशः । पुं । न । सृण्याम् ॥ बाधाया म् । अङ्क्यतेऽनेन । अकि । लान सिवर्णसिपर्णासितखडुलाङ्कुशेति नि पातनादुशच् ॥
अङ्कुशदर्दुर । पुं । गम्भीरवेदिनि ॥
अङ्कुशी । स्त्री । फलाकाकृतिसाधने ॥ वौद्धमातरि । जिनानांचतुर्विंशति शासनदेव्यन्तर्गतदेवी विशेषे ॥ इति हेमचन्द्रः ॥

| अङ्क्यः | अङ्गजः |
|---|---|
| अङ्कूर । पुं । अङ्कुरे । अभिनवोद्भिदि ॥ अङ्क्यते । अङ्किलक्षणे । खर्जूरादित्वादूरः ॥ | अङ्ग । अ । सम्बोधने ॥ अङ्गति । अगिगतौ । पचाद्यच् । हर्षे ॥ सङ्गमे ॥ असूयायाम् ॥ पुनरर्थे ॥ अङ्गनरा । घञ् । मूर्खोऽपिनावमन्तव्यःकिमङ्गविद्वान ॥ |
| अङ्कोटः । पुं । निकोचके । अङ्कोले । टेराइतिख्यातवृक्षे ॥ अङ्कोटककटुस्तीक्ष्णःस्निग्धोष्णस्तुवरोलघुः । रेचनःकृमिशूलामशोथग्रहविषापहः ॥ विसर्पं कफपित्तास्रमूषकस्यविषापहः । तत्फलशीतलस्वादुश्लेष्मघ्नदृंहणगुरु ॥ बल्यविरेचनवातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ अङ्क्यते । अङ्किलक्षणे । बाहुलकादोटः ॥ | अङ्गम् । न । काये । गात्रे ॥ अवयवे । प्रतीके ॥ उपाये ॥ श्रुतेःशिक्षादिषट्सु ॥ यथा । शिक्षाकल्पोव्याकरणंनिरुक्तछन्दएवच । ज्योतिषञ्चषडङ्गानिकथितानिमनीषिभिः ॥ मनसि ॥ यथा । हिरण्यगर्भाङ्गभुवमुनिंहरिरितिमाघः ॥ क्लीवैकत्वेतुअप्रधाने ॥ तल्लक्षणंयथा । तदीयप्रधानफलजनकव्यापारजनकत्वेसतितदीयप्रधानफलाजनकत्वमङ्गत्वम् ॥ पुंभूम्नि ॥ नीवृति ॥ यथा । वैद्यनाथसमारम्भभुवनेशान्तगश्शिवे । तावदङ्गाभिधोदेशोयात्रायांनहिदुष्यतीति ॥ अङ्गाःक्षत्रियविशेषाःतेषांनिवासोजनपदःअङ्गाः । तस्यनिवासइत्यण्जनपदेलुप्लुपियुक्तवद्व्यक्तिवचने । त्रि । अङ्गवति ॥ अन्तिके ॥ अङ्ग्यते ज्ञायतेऽनेन । अगिगतौ । घञ् ॥ अङ्गति । अच्वा ॥ |
| अङ्कोठ । पुं । अङ्कोटे । टेराइतिख्यातवृक्षे । आकोडइतिगौडभाषाप्रसिद्धे ॥ अङ्क्यतेबाहुलकादोठ ॥ | सम्पादके ॥ षट्सु ॥ लग्ने ॥ |
| अङ्कोलः । पुं । अङ्कोटवृक्षे ॥ | अङ्गकः । पुं । गात्रवेदनायाम् ॥ इति वैद्यकम ॥ |
| अङ्कोलिका । स्त्री । आलिङ्गने ॥ इति शब्दमाला ॥ | अङ्गज । पुं । अनङ्गे ॥ केशे ॥ पुत्रे ॥ गदे ॥ न । रुधिरे ॥ मले ॥ अङ्गात् |
| अङ्कोल्लसार । पुं । स्थावरविषप्रभेदे द्रुमान्तरे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥ | |
| अङ्क्यः । पुं । मृदङ्गभेदे ॥ यथा । सार्द्धतालत्रयायामश्चतुर्दशाङ्गुलाननः । हरीतक्याकृतिर्यःस्यादङ्क्योऽङ्कसहिवाद्यतेइतिभरतः ॥ अपिच । हरीतक्याकृतिस्त्वङ्क्योयवमध्यस्तथोर्द्धकः । आलिङ्ग्यश्चैव गोपुच्छोमध्यदक्षिणवामगाः ॥ | |

अङ्गेभ्यो वा जातः । जनी । ड ॥ कन्यायामङ्गजा मता ॥ त्रि । कायजे ॥

अङ्गणम् । न । अङ्गने ॥ पृषोदरादित्वात् णत्वम् ॥ अङ्गन्त्यत्र । अगि । ल्युट् । अनादेशस्य बाहुलकात् णत्वमित्येके ॥

अङ्गतिः । पुं । अग्निहोत्रिणि ॥ वह्नौ वेधसि ॥ विष्णौ ॥ इति शब्दरत्नावली ॥

अङ्गदः । पुं । वालिवानरपुत्रे ॥ न । केयूरे ॥ त्रि । अङ्गदातरि ॥ अङ्गं दयते शोभयति द्यतिवा । दैङ् रक्षणे दैप् शोधने दो अवखण्डने वा । आतोऽनुपसर्गे कः ॥

अङ्गदा । स्त्री । याम्यदिग्दन्तिहस्तिन्याम् ॥

अङ्गनम् । न । प्राङ्गणे ॥ याने ॥ अङ्ग्यतेऽनेन । अगि गतौ । करणेऽधिकरणे वा ल्युट् ॥

अङ्गना । स्त्री । कामिन्याम् ॥ प्रशस्तान्यङ्गान्यस्याः । अङ्गात्कल्याणे इति नः ॥ सार्वभौमस्योत्तरदिग्गजस्य योषिति ॥ अङ्गति । अगि गतौ । युच् ॥

अङ्गनाप्रियः । पुं । अशोकपादपे ॥

अङ्गपः । पुं । कर्णे ॥

अङ्गपालिः । पुं । आलिङ्गने ॥ इति त्रिकाण्डशेषः ॥

अङ्गभूः । पुं । पुत्रे ॥ स्मरे ॥

अङ्गमर्द्दः । पुं । अङ्गसंवाहके । नापितादौ ॥

अङ्गमर्द्दकः । पुं । अङ्गमर्द्दे । अङ्गमर्द्दिनि ॥

अङ्गमेजयत्वम् । न । अङ्गकम्पने ॥ आसनस्थैर्य्यविघाते ॥ सर्वाङ्गाणां वेपथौ । आसनमनसोःस्थैर्यस्य बाधके ॥

अङ्गरक्तः । पुं । गुण्डारोचन्याम् । पिकाचेष्टचे ॥ त्रि । रञ्जिते ॥

अङ्गरक्षणी । स्त्री । आयस्याम् । जालिकायाम् । लोहिकासंजावाङ्गतिभाषामसिद्धायाम् ॥

अङ्गरागः । पुं । चन्दनाद्यै रङ्गलेपे । विलेपने ॥ अङ्गेषु रागः ॥

अङ्गराट् । पुं । अङ्गदेशाधिपे । कर्णे ॥

अङ्गलक्ष्मीः । स्त्री । देहकान्तौ ॥

अङ्गलोड्यः । पुं । चिञ्चोटतृणे ॥

अङ्गवः । पुं । शुष्कफले । याने ॥

अङ्गविकृतिः । पुं । अपस्माररोगे ॥ अङ्गविकारे ॥

अङ्गविक्षेपः । पुं । अङ्गुल्यादङ्गचालनरूपे नृत्ये । अङ्गविक्षेपणे । अङ्गहारे ॥ अङ्गानां विक्षेपो यत्र ॥

अङ्गवैकृतम् । न । अङ्गविकारे । इङ्गिते ॥

अङ्गः । न । पक्षिणि ॥ अज्यते । अञ्जू व्यक्त्यादौ । अञ्च्यञ्जियुजिभृजिभ्यः

कुरुचेत्यसुन्। कवर्गश्चान्तादेशः। अङ्गुसी अङ्गांसि॥

अङ्गसंस्कारः। पु। परिकर्म्मणि। शरीरशोभाजनककर्मणि स्नानादौ॥ अङ्गं संस्क्रियतेऽनेन। सम्पूर्वात् करोतेर्घञ्॥

अङ्गहारः। पुं। अङ्गविक्षेपे। अङ्गुल्यादिविन्यासभेदे। अङ्गानां स्थानात् स्थानान्तरेनयने॥ अङ्गस्य हरणम्। हृञ् हरणे। घञ्॥

अङ्गहारिः। पुं। अङ्गहारे॥ इति भरतधृतो हड्डचन्द्रः॥

अङ्गहीनः। त्रि। अङ्गे। काणादौ॥ अङ्गेन अङ्गाभ्यां अङ्गैर्वा हीनः॥

अङ्गारः। पुं। महीसुते॥ हितावल्याम्॥ पुं। न। अलाते। निर्धूमाग्निपिण्डे॥ अङ्गति। अगिगतौ। अङ्गिमदिमन्दिभ्यआरन्॥ अङ्गिर्यर्त्ति वा। ऋगतौ। कर्मण्यण्॥

अङ्गारकः। पुं। कुजे। भौमे॥ अङ्गानि दूयर्त्ति पीनत्वात्। ऋगतौ॥ कर्मण्यण्। स्वार्थे कन्। यद्वा। अङ्गारइव रक्तवर्णत्वात्। इवेप्रतिकृताविति कन्॥ उल्मुकांशे॥ कुरुण्टके॥ भृङ्गराजे॥

अङ्गारकतैलम्। न। स्वनामख्यातपक्वतैलविशेषे॥ तस्य पाकप्रकारो यथा। मूर्वालाक्षाहरिद्रे द्वे मञ्जिष्ठा सेन्द्रवारुणी। बृहती सैन्धवं कुष्ठं रास्नामांसी शतावरी॥ आरनालाढकेनैव तैलप्रस्थं विपाचयेत। तैलमङ्गारकं नाम सर्वज्वरविमोक्षणमिति सुखबोधः॥

अङ्गारकमणिः। पुं। प्रवाले॥ इति राजनिर्घण्टः॥

अङ्गारकर्कटी। स्त्री। अँगाकडी बाटी लिट्टी इत्यादि प्रसिद्धिगतायाम्॥ यथा। शुष्कगोधूमचूर्णन्तु साम्बु गाढं विमर्द्दयेत्। विधाय वटकाकारं निर्धूमेऽग्नौ शनैः पचेत्॥ अङ्गारकर्कटी ह्येषा बृंहणी शुक्रला लघुः। दीपनी कफकृद्बल्या पीनसश्वासकासजित्॥

अङ्गारकुष्ठकः। पुं। हितावल्याम्। कुष्ठे॥

अङ्गारधानिका। स्त्री। हसन्त्याम्॥ स्वार्थे कन्॥

अङ्गारधानी। स्त्री। अङ्गारधारिण्याम्। हसन्त्याम्॥ अङ्गाराधीयन्तेऽस्याम्। डुधाञ् धारणपोषणयोः। ल्युट्। ङीप्॥

अङ्गारधारिणी। स्त्री। अङ्गारधान्याम्। अङ्गाराणांधारिणी॥

अङ्गारपरिपाचितम्। न। शूलादिना पक्वमांसे॥ अङ्गारेषु परितः पाचितम्॥ त्रि। अङ्गारपक्वे॥

अङ्गारपर्णः । पुं । चित्ररथाख्यगंधर्वे ॥ इतिमहाभारतम् ॥

अङ्गारपुष्पः । पुं । जीवपुत्रद्रुमे ॥ इति रत्नमाला ॥

अङ्गारमञ्जरी । स्त्री । }
अङ्गारमञ्जी । स्त्री । } करञ्जभेदे ॥

अङ्गारवल्लरी । स्त्री । करञ्जभेदे ॥ अङ्गारवर्णपर्णावल्लरी ॥ भार्ग्याम् ॥ गुञ्जायाम ॥

अङ्गारवल्ली । स्त्री ॥ महाकरञ्जे ॥ भार्ग्याम् ॥ अङ्गारवतवल्लीअस्याः । समासान्तविधेरनित्यत्वात् । नकप् ॥

अङ्गारशकटी । स्त्री । हसन्त्याम् ॥ अङ्गाराणांशकटी ॥

अङ्गारि । स्त्री । हसन्त्याम् ॥ इतिजटाधरः ॥

अङ्गारिका । स्त्री । इक्षुकाण्डे ॥ किंशुककोरके ॥ इतिमेदिनी ॥

अङ्गारिणी । स्त्री । हसन्त्याम् ॥ भास्करत्यक्तदिशि ॥

अङ्गारितम् । त्रि । दग्धे ॥ अङ्गाराःसञ्जातान्यस्य । तारकादित्वादितच् ॥ न । पलाशकलिकोद्गमे ॥

अङ्गारिता । स्त्री । हसन्त्याम् ॥ लताभावे ॥ नदीभेदे ॥

अङ्गार्य्यं । स्त्री । अङ्गारराशिसमूहे ॥ पाशादिभ्योयः ॥



अङ्गावबद्धम् । न । अङ्गाश्रितोपासने ॥ अङ्गे अङ्गेषुवाअवबद्धम ॥ त्रि । अङ्गबद्धे ॥

अङ्गिका । स्त्री । कञ्चुके ' आँगी इति भाषाप्रसिद्धे ॥

अङ्गी । त्रि । प्रधाने । मुख्ये ॥ अवयविनि ॥

अङ्गिराः । पुं । मुनिभेदे ॥ बृहस्पतौ ॥ अङ्गिरआङ्गिरसयोरभेदोपचारात् ॥ प्रभवादिषुषष्ठवर्षे ॥ यथा । निरातङ्कञ्जगतसर्वंधनयौवनगर्वितम् । अङ्गिरसिप्रजाःसर्वानित्योत्साहावराननेइति ॥ अङ्गति । अगिगतौ । अङ्गिराइतिअङ्गतेरसिरिडागमश्चनिपातितः ॥

अङ्गीकारः । पुं । अभ्युपगमे ॥ अङ्गीकरणम् । अङ्गीतिच्व्यन्तम् । तत्पूर्वात्कृञोभावेघञ् ॥

अङ्गीकृतम । त्रि । स्वीकृते । ऊरीकृते ॥ यथा । आयातयातेनभवाम्बुराशौजातोमहानेवममप्रयासः। मोक्षायनाथस्य पदप्रसादादङ्गीकृतः सम्प्रतिकौलमार्गइति ॥ अनङ्गमङ्गमकारि ॥

अङ्गुः । पुं । अङ्गे ॥

अङ्गुरिः । स्त्री । अङ्गुल्याम् ॥

अङ्गुरी । स्त्री । अङ्गुल्याम् । पाणिपादाङ्गुल्याम् ॥

अङ्गुलि

अङ्गुरीयः । पुं । न । } अङ्गुलिभूषणे ॥
अङ्गुरीयकः । पुं । न । }

अङ्गुलः । पुं । अङ्गुष्ठे ॥ अवमाने ॥ वात्स्यायनमुनौ ॥ न । अष्टसंख्यावादरमाने ॥ अष्टभिस्तैर्भवेज्ज्येष्ठ मध्यमसप्तभिर्यवैः । कन्यसषड्भिरुद्दिष्टमङ्गुलमुनिसत्तम ॥ मानतुपार्श्वेन । षड्यवा. पार्श्वसम्मितादृति कात्यायनदर्शनात् ॥ अङ्गति । अगि गतौ । बाहुलकादुलः ॥

अङ्गुलिः । स्त्री । करशाखायाम् ॥ गजस्य कर्णिकायाम् । हस्तिशुण्डाग्रभागे ॥ अङ्गति । अगिगतौ । ऋतन्यञ्जीत्य ङ्गेरुलिः ॥यद्वा । अङ्गुपाणिपादभवमवयवलाति । बाहुलकात्डिः ॥

अङ्गुलितोरणम् । न । अर्द्धचन्द्रे । गलहस्ताधाने ॥ चन्दनादिद्वाराललाटेकृतेऽर्द्धचन्द्रे ॥ इतिहारावली ॥

अङ्गुलित्रः । पुं । अङ्गुलिकवचे ॥ अङ्गुलीस्त्रायते। त्रैङ्पालने । कप्रत्ययः ॥

अङ्गुलिमुद्रा । स्त्री । साक्षराङ्गुलिभूषा ॥ अङ्गुल्यामुद्राति । आतइतिकः ॥ मोदतेवा । मुदहर्षे । स्फायितञ्चीतिरक्वा । अङ्गुल्याःमुद्रा ॥

अङ्गुलिमुद्रिका । स्त्री । साक्षराङ्गुलिभूषायाम् ॥ अङ्गुलिमुद्रैव । स्वार्थे कन् ॥

अङ्गुष्ठ

अङ्गुलिमोटनम । न । अङ्गुलिध्वनौ । स्वच्छन्द्याम् ॥ इतिहारावली ॥

अङ्गुलिसन्देशः । पुं । अङ्गुलिशब्दे । अङ्गुलिमोटने ॥ इतिहारावली ॥

अङ्गुली । स्त्री । करशाखायाम् ॥ साच पञ्चधा । यथा । अङ्गुष्ठस्तर्जनी मध्यानामिकाचकनिष्ठिकेति ॥ गजकर्णिकायाम् । हस्तिशुण्डाग्रे ॥ बह्वादिषुइतः प्राण्यङ्गादितिपक्षेङीष् ॥

अङ्गुलीकण्टकः । पुं । नखे ॥

अङ्गुलीमुद्रिका । स्त्री । साक्षराङ्गुलिभूषायाम ॥

अङ्गुलीयम् । न । पुं । ऊर्मिकायाम् ॥ अङ्गुलीभवम् । जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः ॥

अङ्गुलीयकम् । न । पुं । अङ्गुलीभूषणे । ऊर्मिकायाम् ॥ यथा । अयमैथिल्यभिज्ञानंकाकुतस्थस्याङ्गुलीयक इतिभट्टिः ॥ स्वार्थेकन् ॥

अङ्गुलीसम्भूतः । पुं । करशूके । नखे ॥

अङ्गुष्ठः । पुं । अङ्गुलिभेदे । भूम्न्यङ्गुलौ ॥ अङ्गेपाणौतिष्ठति । ष्ठा । सुपीतिकः । अम्बाम्बेतिषत्वम् ॥

अङ्गुष्ठमात्रः । त्रि । अङ्गुष्ठपरिमाणे ॥ अङ्गुष्ठपरिमाणहृदयपुण्डरीक तच्छिद्रवर्त्त्यन्तःकरणोपाधिरङ्गुष्ठमात्रः । अङ्गुष्ठमात्रवशपर्वमध्यवर्त्त्यम्बरवत् ॥

अङ्घूषः । पुं । नकुले ॥ वाणे ॥ इत्युणादिकोषः ॥

अङ्घः । पुं । पातके । दुरिते ॥ अङ्घ्यतेऽनेन । अघिगत्याक्षेपे । घञ् ॥

अङ्घ्रिः । पुं । पादे ॥ द्रुमूले ॥ अङ्घति । अनेनवा । अङ्घिगतौ । वक्यादयश्चेतिसाधुः ॥

अङ्घ्रिनामकः । पुं । वृक्षमूले ॥ इत्यमरः ॥

अङ्घ्रिनाम । न । वृक्षमूले ॥ अङ्घ्रेर्मनामयस्य ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अङ्घ्रिपः । पुं । द्रुमे ॥ अङ्घ्रिभिःपिवति । पापाने । सुपीतियोगविभागात्कः ॥

अङ्घ्रिपर्णिका । स्त्री । पृश्निपर्ण्याम् । पिठवनोतिख्यातायाम् ॥ अङ्घ्रेरारभ्यपर्णान्यस्याः । ङीष् । स्वार्थेकन् ॥

अङ्घ्रिपर्णी । स्त्री । पृश्निपर्ण्याम् ॥

अङ्घ्रिवल्लिः । स्त्री । पृश्निपर्ण्याम् ॥ अङ्घ्रेरारभ्यवल्लिरस्याः ॥

अङ्घ्रिवल्लिका । स्त्री । पृश्निपर्ण्याम् । चाकुलिया इति गौडभाषाप्रसिद्धायाम् ॥

अङ्घ्रिवल्ली । स्त्री । पृश्निपर्ण्याम् ॥

अङ्घ्रिस्कन्धः । पुं । गुल्फे ॥

अचक्षु । त्रि । मन्दचक्षुषि ॥ नेत्रहीने । अन्धे ॥ नचक्षुर्यस्य ॥

अचण्डी । स्त्री । सुकरायाम् ॥ अकोपनस्त्रियाम् ॥ नचण्डी ॥

अचर । पुं । स्थावरे ॥ चरति । चरतेरच् । नचर ॥ त्रि । स्थिरे ॥

अचरमम् । त्रि । प्रधाने । श्रेष्ठे ॥

अचल । पुं । शैले ॥ कीले ॥ शिवे ॥ त्रि । अकम्पे । स्थिरे ॥ अविकारिणि । कूटस्थे ॥ नस्वरूपान्नसामर्थ्यान्नच ज्ञानादिकाद्गुणात् । चलनविद्यते यस्येत्यचल कीर्त्तितोच्युतः ॥ सुषुप्तिमूर्च्छास्तब्धीभावादिरूपलयलक्षणाचलनरहिते ॥ दीर्घकालादरनैरन्तर्यसत्कारसेवनैर्विजातीयप्रत्ययादूषिते आत्मतत्वे । अवक्रिये ॥ चलति । चलकम्पने । पचाद्यच् ॥ नचलः ॥

अचलकीला । स्त्री । भूमौ ॥ इतिशब्दरत्नावली ॥

अचलत्विट् । पुं । कोकिले ॥ इतिशब्दचन्द्रिका ॥

अचलप्रतिष्ठः । त्रि । अनतिक्रान्तमर्यादे ॥ पुं । समुद्रे ॥ अचलानांमैनाकादीनांप्रतिष्ठायस्मिन् ॥

अचलभ्राता । पुं । बौद्धगणाधिपविशेषे ॥ सतुशेष जैनाचार्यस्यैकादशशिष्यान्तर्गत इतिहेमचन्द्रः ॥

अचला । स्त्री । भुवि ॥ नचलति । चलकम्पने । पचाद्यच् ॥ यद्वा । अचला भूधराः सन्त्यस्याम । अर्शआदिभ्योजि

न्यच ॥

अचलाधिपः । पुं । हिमवति ॥ अचलानामधिपः ॥

अचापलम् । न । चापलाभावे ॥ नचापलम ॥

अचिन्त्यः । चि । अयमीदृशइतिप्रपञ्चलक्षणत्वेनचिन्तयितुमशक्ये। मनसोऽविषये परब्रह्मणि ॥ चिन्त्योनुमेयस्तद्भिलक्षणे । शब्दवृत्तेरिवमनोवृत्तेरप्यविषये । इयत्तयापरिच्छेत्तुमयोग्ये। प्रमाणादिसाध्यत्वेनसर्वप्रमाणागोचरे ॥ नचिन्त्यः ॥ अचिन्त्याःखलुयेभावानतांस्तर्केणयोजयेत्। प्रकृतिभ्यःपरयच्चतदचिन्त्यस्यलक्षणम ॥

अचिन्त्यात्मा । पुं । सर्वभूतप्रणेतरि । परमेश्वरे ॥

अचिरद्युतिः। स्त्री । विद्युति ॥ अचिरंद्युतिर्यस्याःसा ॥

अचिरप्रभा । स्त्री । विद्युति ॥ अचिरप्रभायस्याःसा ॥

अचिररोचि । स्त्री । विद्युति ॥ अचिररोचिर्यस्याःसा ॥

अचिरा । स्त्री । अर्हतांमातृविशेषे ॥

अचिरांशुः । स्त्री । तडिति ॥ अचिरअंशवोयस्याःसा ॥

अचिराङ्गलता । स्त्री । विद्युति ॥ अचिरमङ्गलतायस्याःसा ॥

अचिरात् । ।। अविलम्बे। शीघ्रे ॥

अचिराभा । स्त्री । सौदामिन्याम् ॥ अचिरमाभायस्याःसा ॥

अचेतनम । चि । व्यक्ते ॥ प्रधाने ॥ जडे ॥ सर्वएवप्रधानबुद्ध्यादयोऽचेतनाः नतुवैशेषिकवच्चैतन्यबुद्धेः । नचेतनम॥ सेन्द्रियचेतनद्रव्यंनिरिन्द्रियमचेतनमितिचरकः ॥

अचेताः। चि। विवेकशून्ये॥ दुष्टचित्ते॥ नास्तिचेतोयस्य ॥

अचैतन्यम । न। चेतनाभावे । अज्ञाने ॥ यथा। अचैतन्यमिदंविश्वंचैतन्यदेवमेवतत् । नजानन्त्यपिशास्त्रज्ञाअत्रमन्ये बहिर्केवलमिति ॥ चि। तद्वति ॥

अच्छः । पुं । भल्लूके ॥ स्फटिके ॥ चि। निर्मले ॥ छोच्छेदने । नछ्यतिदृष्टिम । सुपीतियोगविभागात्कः। नछ्यतेवा। अन्येष्वपीतिडः ॥

अच्छटाभा। स्त्री । विद्युति ॥

अच्छभल्लः । पुं । भल्लूके॥ अच्छमाभिमुख्येनभल्लते हिनस्ति । भल्लपरिभाषणहिंसादानेषु। पचाद्यच् ॥

अच्छम । ।। आभिमुख्ये॥

अच्छावाकः । पुं। ऋत्विग्विशेषे ॥

अच्छावाकीयम् । न । अच्छावाकस्यकर्मभावयोः ॥ होत्राभ्य च्छ ॥ सूक्तवि

शेषे ॥ अच्छावाक्शब्दोऽस्मिन्नस्ति । मतौ छ: सूक्तसाम्नोरिति छ: ॥

अच्युत: । पुं । विष्णौ । अप्रच्युतसच्चिदानन्दस्वभावे । देशकालवस्तुषु च्युतिरहिते । सर्वदानिर्विकारे ॥ कृष्णे । वासुदेवे ॥ स्वरूपभूतसामर्थ्यात् न च्युतो न च्यवते न च्यविष्यते य: सोऽच्युत: ॥ यस्मान्नच्युतपूर्वोऽहमच्युतस्तेन कर्मणेति भगवतो वचनम् ॥ नास्ति च्युतं स्खलनं स्वपदाद्यस्य ॥ यद्वा । न च्योतिष्ट । च्युङ् गतौ । भौवादिक: । गत्यर्थेति क्त: ॥ द्वादशसर्गे ॥ त्रि । स्थिरे ॥

अच्युतभाव: । पुं । विष्णुभक्तौ ॥ अच्युते भाव: ॥

अच्युतमूर्त्ति: । पुं । विष्णौ ॥

अच्युताग्रज: । पुं । बलदेवे ॥ शक्रे ॥ अच्युतस्य अग्रज: । षष्ठीतत्पुरुष: ॥

अच्युतावास: । पुं । अश्वत्थवृक्षे ॥

अज: । पुं । हरे ॥ विष्णौ ॥ अजति गच्छति भक्तहृदयम् अजति क्षिपति वा असुरान्प्रति । अजगतिक्षेपणयो: । अच् ॥ नहि जातो न जायेऽहं न जनिष्ये कदाचन । क्षेत्रज्ञ: सर्वभूतानां तस्मादहमज: स्मृत इति भारते ॥ वेधसि ॥ स्मरे ॥ आदिष्णोरजायत । जनी प्रादुर्भावे । पञ्चम्यामजाताविति ड: ॥ छागे ॥ अजति । अज गतौ । पचाद्यच् । अजाविभ्यामिति निर्द्देशात् नवीभाव: ॥ मेषे ॥ मेषराशौ ॥ रघुराजपुत्रे ॥ जन्मादिविक्रियारहिते आत्मनि ॥ माक्षिकधातौ ॥ विधौ । सोमे ॥ त्रि । जन्मशून्ये । न जायते इति व्युत्पत्त्या आद्यविकारशून्ये ॥ अवयवावयविविभागरहिते ॥ न जायते । जनी प्रादुर्भावे । अन्येष्वपीति ड: ॥ आत् विष्णोर्जायते वा ॥

अजएकपात् । पुं । एतन्नामके देवविशेषे ॥

अजकर्ण: । पुं । छागकर्णे ॥ सालतरो: प्रभेदे । मरिचपत्रे ॥ अजकर्ण: कटुस्तिक्त: कषायोष्णोऽव्यपोहति । कफपाण्डुश्रुतिगद्रान्मेहकुष्ठविषव्रणान् ॥

अजकर्णक: । पुं । सालवृक्षे ॥

अजकवम् । न । पुं । शिवधनुषि ॥ अजकौ विष्णुब्रह्माणौ वाति । वा गतिगन्धनयो: । सुपीति आतोनुपसर्गइति क: ॥

अजकाव: । पुं । न । पिनाके ॥ अजो विष्णु: को ब्रह्मा ताववतीत्यजकाव: ॥

अजग: । पुं । विष्णौ ॥

अजगन्धा । स्त्री । वर्वरायाम् ॥ अजमोदायाम् ॥ अजस्येव गन्धो यस्या: । अजशब्द: स्वगन्धेऽत्र लाक्षणिक: ॥

अजगन्धिका । स्त्री । वर्वरायाम् । वावुइ इतिख्याते शाकान्तरे ॥ अजस्येव गन्धोऽस्याः । अजशब्दः स्वगन्धेनाच्छिकः ॥ उग्रगन्धायाम् ॥

अजगन्धिनी । स्त्री । अजशृङ्ग्याम् ॥

अजगरः । पुं । अहिभेदे । वाहसे ॥ गिरतीतिगरः । गनिगरणे । पचाद्यच् । अजस्यगरः ॥ अजोनित्त्यो गरोविषयस्येतिवा ॥

अजगवम् । न । पिनाके । शिवचापे ॥ अजेनब्रह्मणा गम्यते प्राप्यते । गम्लृगतौ । अन्येष्वपिदृश्यतेइतिडः । अजश्छागगच्छतियत्रत्वेनप्रविशतीतिवा । अजगोविष्णुरस्तिशरत्वेनास्मिन् । गाव्यजगात्वचायामितिव ॥

अजगावम । न । ईशचापे । पिनाके ॥ इतिशब्दमाला ॥

अजजीवकः । पुं । अजाजीविनि । जावाले ॥ अजैर्जीविकायस्य ॥

अजटा । स्त्री । भूम्यामलक्याम् ॥

अजडा । स्त्री । भूम्यामलक्याम् ॥ कपिकच्छ्वां ॥

अजथ्या । स्त्री । स्वर्णयूथिकायाम ॥ अजाय अजायैवा हिता । अजाविभ्यांथ्यन् । तसिलादिष्वितिपुंवद्भाव ॥

अजदण्डी । स्त्री । ब्रह्मदण्डीवृक्षे ॥

अजननिः । पुं । अनुत्पत्तौ ॥ आक्रोशने ॥ अजननम् । आक्रोशेनञ्यनिः । यथा । तस्याजननिरेवास्तु ।

अजनयोनिः । पुं । ब्रह्मणि । चतुरानने ॥

अजनाभ. । पुं । अस्मिनवर्षे ॥ भरताधिकारातभारतइतिव्यपदेश पूर्वंत, अजनाभइति ॥

अजन्यम् । न । उत्पाते ॥ त्रि । निन्द्ये ॥ अजनेसाधु । तत्रसाधुरितियत् । नञ् न्यतेवा । जनेर्यक् । तकिशसिचतियतिजनिभ्योयद्वाच्य इतियद्वा ॥

अजप । त्रि । असदध्येतरि ॥ जपाभाववति ॥ पुं । छागपालके । यथा । स्रोपधीर्नामरूपाभ्याजानतेह्यजपावने इतिचरकः । अजम् अजान्वापाति । पारक्षणे । आतोनुपसर्गेइतिकः ॥

अजपा । स्त्री । सन्ध्यावन्दनहीनायाम् । देवताभेदे ॥ गायत्रीविशेषे ॥ यथा । अजपानामगायत्रींजीवोजपतिनित्त्यश' । अजपांजपतोनित्त्य पुनर्जन्मनंविद्यते इति । अस्याविधानंदक्षिणामूर्त्तिसहितायांस्पष्टम ॥

अजपात् । पुं । पूर्वभाद्रपदनक्षत्रे ॥

अजपाद' । पुं । विष्णुपदे

अजभक्ष' । पुं । वर्वुरवृक्षे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अजमीढ' । पुं । युधिष्ठिरे ॥ इतिशिकाण्डशेष. ॥

अजर्य्यं | अजस्र
---|---

अजमोदा । स्त्री । उग्रगन्धायाम् ॥ यवान्याम् ॥ अजमोदयति । मुदहर्षे । ण्यन्तः । कर्मण्यण् । अजादित्वाट्टाप् ॥ यद्वा । अजेभ्यमोदते मोदतेवा । पचाद्यच् षष्ठ्या ॥ अजमोदाकटुस्तीक्ष्णादीपनीकफवातनुत् । उष्णाविदाहिनी हृद्याहृष्यावलकरी लघुः । नेत्रामयकृमिच्छर्दिहिध्मावस्तिरुजोहरेत् ॥

अजम्भः । पुं । भेके ॥ नसन्तिजम्भाःदन्ताः अस्य ॥ इतिशब्दरत्नावली ॥

अजयः । पुं । पराजये ॥ राढदेशप्रसिद्धनदविशेषे ॥

अजया । स्त्री । भङ्गायाम् । विजयायाम् ॥

अजय्यम् । त्रि । जेतुमशक्य ॥ नजय्यम् ॥

अजरः । त्रि । जरारहिते ॥ पुं । आत्मनि ॥ देवे ॥ नजीर्यते नविपरिणमते इत्यजरः आत्मेत्यर्थः ॥

अजरा । स्त्री । जीर्णदारुणि ॥ गृहकन्यायाम् । घृतकुमारीतिप्रसिद्धायाम् ॥

अजर्य्यम् । न । सङ्गते । सौहृदे ॥ नजीर्य्यते । अजर्य्यसङ्गतम् ॥ (न । सङ्गते) नजीर्य्यते । अवद्ययोभावे । नञ्पूर्वात् जीर्य्यतेः सङ्गतेविशेष्ये अजर्य्यंसङ्गतमितिकर्त्तरियत्निपात्यते । तेन सङ्गतमार्य्येणरामाजर्य्यं कुरुद्रुतम् ॥ सङ्गतं युक्तम् ॥

अजलम्बनम् । न । स्रोतोञ्जने ॥

अजलोमा । पुं । शुयाशिम्बीतिगौडभाषाप्रसिद्धेवृक्षे । महाहुस्वायाम् ॥ । न । अजलोम्नि ॥

अजवल्ली । स्त्री । मेषशृङ्ग्याम् । विषाण्याम् ॥

अजवीथी । स्त्री । दक्षिणमार्गे नक्षत्रविशेषाणांसत्ताविशेषे ॥ यथा । मूलापाढोत्तराषाढा अजवीथ्य भिशब्दितेति ॥

अजशृङ्गी । स्त्री । विषाण्याम् । शृङ्ग्याम् । मेढासींगीतिख्यातायाम् ॥ अजःशृङ्गमस्याः ॥ अजशब्दोऽजशृङ्गसदृशेलाक्षणिकः । गौरादित्वान्ङीष् ॥

अजस्रम् । न । निरन्तरे । सन्तते ॥ कालत्रयावस्थायिनि ॥ नजस्यति । जसुमोक्षणे । नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपोर इतिरः । क्रियाविशेषणत्वेस्यक्लीवत्वम् । द्रव्यविशेषणत्वेतुवाच्यलिङ्गत्वम् ॥

अजस्रम् । ? । नित्ये । सातत्ये ॥

अजहत्स्वार्था । स्त्री । उपादानलक्षणायाम् । अजहल्लक्षणायाम् । स्वीयार्थापरित्यागिन्यां लक्षणायाम् ॥ यथा । कुन्ताःप्रविशन्तीत्यत्र कुन्तधारिणि पुरुषेलक्षणा ॥

अजहल्लक्षणा । स्त्री । अजहत्स्वार्थायाम् ॥ वाच्यार्थापरित्यागेनतत्सम्बन्धिनिवृत्तिरजहल्लक्षणेति । यथा । शोणोधावतीत्यत्रवाक्येशोणगुणगमनलक्षणस्य वाक्यार्थस्यविरुद्धत्वात्तदपरित्यागेनतदाश्रयाश्वादिलक्षणयातद्विरोधपरिहार सम्भवादजहल्लक्षणा । शोणपदेस्ववाच्यशोणगुणापरित्यागेन तदाधारलक्षणेत्यर्थः ।

अजहल्लिङ्गः । पुं । स्वलिङ्गात्यागिनि ॥ विशेषणभूतोपि स्वलिङ्गात्यागीशब्दोऽजहल्लिङ्ग इत्युच्यते ॥

अजहा । स्त्री । शूकशिम्ब्याम् ॥ कपिकच्छ्वाम् ॥

अजा । स्त्री । मायायाम् ॥ छागल्याम् ॥ अजति । अजगतौ । पचाद्यच् । अजाविभ्यामितिनिर्देशाद्वी । अजाद्यतष्टाप् ॥ नजायते इतिवा ॥

अजागर । पुं । भृङ्गराजे ॥ त्रि । जागरणरहिते ॥

अजाजी । स्त्री । काकोदुम्बरिकायाम् ॥ कृष्णजीरके ॥ श्वेतजीरके ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥ अजमजति । अजगतिक्षेपणयोः । कर्मण्यण् । ङीप् । बहुलतमीतिङीन् ॥

अजाजीवः । पुं । छागोपजीविनि । जाबाले ॥ अजाआजीवो जीविकाऽस्य ॥

अजातशत्रुः । पुं । युधिष्ठिराख्यपाण्डवे ॥ स्वयमविद्वेषणशीलत्वादजातशत्रुर्यस्य ॥

अजातिः । स्त्री । अनुत्पत्तौ ॥ हेतुफलयोः कार्यकारणभावानुपपत्तौ ॥ पूर्वापरापरिज्ञानमजातेः परिदीपकम् । नियतेपौर्वापर्येनिर्द्धारितेजातिसिद्धातितदभावेतदसिद्धिरित्यर्थः ॥ त्रि । जन्मरहिते ॥ जातिर्जन्मतद्रहितः ॥ अविद्यमानाजातिरस्यवा ॥

अजादनी । स्त्री । क्षुद्रदुरालभायाम् ॥

अजादुग्धम् । न । छागीदुग्धे ॥

अजानेयः । पुं । अश्वभेदे । उत्तमाश्वे ॥ त्रि । निर्भये ॥

अजान्त्री । स्त्री । नीलबुह्नायाम् । नीलाबोनाइतिभाषा ॥ वृद्धदारके ॥

अजापालः । पुं । अजाजीवे ॥ अजां पालयति । पालकत्वणे । कर्मण्यण् ॥

अजाप्रिया । स्त्री । बदर्याम् ॥

अजि । पु । तेजसि ॥ अजति दीप्यते वा । अजगतिक्षेपणयोः । खनिकष्यजीत्यादिनाइप्रत्ययः ॥

अजितः । पुं । विष्णौ ॥ तीर्थङ्करजिनभेदे ॥ भाविबुद्धे ॥ त्रि । अनिर्जिते ॥ नजीयतेस्म । जिअभिभवे । क्त । नञ् । जितः ॥

अजितसम्भवः । पुं । मनोज्ञे ॥ बुद्धभेदे ॥

अजितात्मसम्भवोयस्य ॥ वि । आभ्यामन्यस्मिन् ॥

अजिनम् । न । चर्मणि ॥ वि । अवुद्धके ॥ अजति वीयतेवा । अजगतौ । अजेरजवेति इनच् ॥

अजिनपत्रा । स्त्री । चर्मवत्याम । जतुकायाम् ॥ अजिनमिवपत्रमस्याः ।

अजिनपत्री । स्त्री । जतुकायाम ॥

अजिनयोनिः । पुं । हरिणे ॥ अजिनस्ययोनिः ॥ कदलीकन्दलीचीनश्चमूरुप्रियकावपि । समूरुश्चेतिहरिणा अमीअजिनयोनयः ॥

अजिरम् । न । प्राकाराद्वहिःक्रीडास्थाने । प्राङ्गणे ॥ वाते ॥ विषये । रूपादौ ॥ दर्दुरे ॥ तनौ ॥ अजन्त्यनेनवा । अजगतौ । अजिरशिशिरेतिसाधु ॥ नजीर्यति । जूष्वयोहानौ । अजिरशिशिरेतिकिरच् वर्णलोपश्चनिपात्यतइत्युक्तदृशपादीवृत्तौ ॥

अजिरा । स्त्री । नद्याम् ॥

अजिह्मः । वि । सरले । ऋजौ ॥ भिन्नोजिह्मात् ॥

अजिह्मगः । पुं । शरे ॥ जिह्मस्याभाव । अजिह्ममृजुगच्छति । गमल्लृगतौ । अन्येष्वपीतिडः । वि । अवगे ॥

अजिह्वः । पुं । भेके ॥ भिन्नौ ॥ यथा । इदमिष्टमिदंनेति योऽस्मन्नपिनसज्जते । हितसत्यमितवक्तितमजिह्वंप्रचक्षते ॥ वि । जिह्वाशून्ये ॥ नविद्यतेजिह्वायस्य ॥

अजीकवः । पुं । ऋजगवे । पिनाके ॥

अजीगर्त्त । पुं । शुनःशेफस्यपितरि । ऋषिविशेषे ॥

अजीर्णम् । न । अपाके । पक्वाशये । रोगभेदे ॥ नजीर्णम् ॥ अनात्मवन्तःपशुवद्भुञ्जतेयेऽप्रमाणत. । रोगानीकस्यतेमूलमजीर्णं प्राप्नुवन्तिहि ॥ अनात्मवन्तःअवुद्धिमन्तः। वि । जीर्णाभावविशिष्टे॥

अजीर्यन् । वि । वयोहानिमप्राप्नुवति ॥

अजीवः । वि । मृते ॥ अवसन्ने ॥ अनेकान्तवादिनां द्वितीयेपदार्थे। सचपुद्गलाकाशधर्माधर्मास्तिकायैश्चतुर्विध. ॥

अजीवनिः । स्त्री । शापोक्त्यजीवनाभावे ॥ जीवनाभावे ॥ शापे ॥ अजीवनिस्तवभूयात् ॥

अजैकपात् । पुं । रुद्रविशेषे ॥ पूर्वासांप्रोष्ठपदानांदेवते ॥

अजैकपादः । पुं । रुद्रविशेषे ॥

अज्जुका । स्त्री । नाट्योक्त्यागणिकायाम् ॥ अर्जति । अर्जअर्जने । समि

कस इति बाहुलकादुकनरस्य जः ॥

अज्झटा। स्त्री। भूम्यामलक्याम्। वितुन्नके। अद्भुतमाश्चर्य्यं। अत् आश्चर्यकारी झटः संघातोऽस्याः ॥ अत्ति क्विप्। झटति। झट संघाते। अच। टाप्। अद्भासौ झटा चेति वा ॥

अज्झल। पुं। अङ्गारे। कोकिले। अगार इति भाषायाम् इति त्रिकाण्डशेषः ॥ न। फलके। चर्म्मणि। ढाल इति भाषायाम् ॥ इति हेमचन्द्रः ॥

अज्ञः। त्रि। जडे। श्रुतितात्पर्य्यानभिज्ञे ॥ अनधीतशास्त्रत्वेनात्मज्ञानशून्ये अविवेकिनि ॥ मूर्खे ॥ न जानाति। ज्ञा अवबोधने। इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः ॥

अज्ञातः। त्रि। अज्ञानेनावृते। अविदिते ॥ न ज्ञातः ॥ यथा। अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्। मार्जारस्य हि दोषेण हतो गृध्रो जरद्गव इति हितोपदेशः ॥

अज्ञानम्। न। अविद्यायाम् ॥ ज्ञानविरुद्धमज्ञानम्। ज्ञाननिवर्त्त्यत्वात् ॥ यथा। एकः शत्रुर्न द्वितीयोऽस्ति शत्रुरज्ञानतुल्यः पुरुषस्य राजन्। येनाविष्टः कुरुते कार्य्यते च घोराणि कर्म्माणि सुदारुणानीति ॥ विपरीतदर्शने ॥ यत्प्रसादादविद्यादि सिध्यतीव दिवानिशम्।



तमप्यपह्नुतेऽविद्यानाज्ञानस्यास्ति दुष्करम् ॥ प्रपञ्चोपादाने। अविवेके। आवरणविक्षेपशक्तिमति। अनाद्यनिर्वाच्ये। अनृते। अनर्थव्रातमूले। आत्माश्रयविषये ॥ यथा। यस्याज्ञानं भ्रमस्तस्य भ्रान्तः सम्यक् च वेत्ति सः। जडन विद्यादेवत्वान्नातोऽज्ञानजडाश्रयमिति ॥ अविद्यामायादिशब्दवाच्ये तमसि ॥ अमानित्वादिविपरीतं यन्मानित्वादिविंशतिसंख्याकं तस्मिन् ॥ कर्त्तव्याकर्त्तव्यादिविषयविवेकाभावे ॥ लक्षणन्तु। सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि अहमज्ञो मोहित इत्यनुभवात् भावत्वेन व्यपदेशरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्ति ॥ तच्च। मूलकारणत्वात् सत्त्वरजस्तमोगुणानां साम्यावस्थारूपत्वाच्च मूलप्रकृतिः प्रलयावस्था अव्यक्तम् अव्याकृतम् महासुषुप्तिः कूटवन्निर्विकारेण तिष्ठतीति कूटस्थम् ज्ञानं विना न क्षरतीत्यक्षरमिति व्यपदिश्यते ॥ अविज्ञातं चाज्ञानमिति न्यायसूत्रम्। ५। ६०। भाष्ये। चकारः परिषदा विज्ञातस्येत्याद्यनुकर्षणार्थः। तथा च। परिषदा विज्ञातस्य वादिनाभिरभिहितस्याप्य विज्ञानमित्यर्थः। इदञ्च किम्वदसि बुध्यत एवं नेत्यादि।

विष्कारणेनज्ञातुंशक्यते इत्यर्थः ॥ त
मआदिपञ्चसु ॥ तम १ । मो हः २ ।
महामोह ३ । तामिस्र ४ । अ
न्धतामिस्रम् ५ । इति । सृष्टकाले
ब्रह्मा प्रथमम् पञ्चप्रकार अज्ञान स
सर्ज इतिश्रीभागवतम् ॥

अज्ञानकार्य्यम । न । स्थूलसूक्ष्मप्रपञ्च
द्वये ॥ अज्ञानस्यकार्य्यम् ।

अज्ञानजम । चि । अज्ञ नोपदाने ।
अज्ञानादावरणशक्तिरूपादुद्भूते ॥ अ
ज्ञानाज्जातम् । जनी० । डः ॥

अज्ञानप्रभवः । पुं । अज्ञानात् स्वस्व
रूपास्फुरणात् प्रभवतीति व्युत्पत्त्या
समस्तप्रपञ्चे ॥ चि । अज्ञानादुत्पन्ने ॥

अज्ञानशक्ति । स्त्री । आवरणशक्तिविक्षे
पशक्त्योः ॥ अज्ञानस्यशक्ति ॥

अज्ञानसम्भूतः । चि । अविवेकादुत्पन्ने ॥
अज्ञानात्सम्भूत ॥

अज्ञानसम्मोह । पुं । अज्ञाननिमित्त
विपर्य्यये ॥ अज्ञानेनसम्मोह ॥

अज्ञानी । चि । अविदुषि । अज्ञान
विशिष्टे ॥ आतत्त्वबोधमज्ञानीबध्य-
तेनन्तजन्मभि ॥

अज्ञेय । चि । ज्ञानाविषये ॥

अञ्चतिः । पुं । मारुते ॥ अञ्चति ।
अञ्चु । अञ्चेः कोवेत्यतिः ॥

अञ्चलः । पुं । वस्त्रान्ते । आंचर इति
आचल इतिच भाषा प्रसिद्धे ॥

अञ्चितम् । चि । पूजिते ॥ शोभने ॥
अञ्च्यतेस्म । अञ्चुपूजायाम् । क्तः ।
अञ्चे पूजायामितीट । नाञ्चे पूजा
यामितिनलोपाभाव ॥

अञ्जनम् । न । कज्जले ॥ अक्तौ ॥
सौवीरे ॥ रसाञ्जने ॥ प्रसौ ॥ पुं ।
दि ङ्मतङ्गजे । अञ्जनवर्णप्रतीचि
दिग्गजे ॥ उपायौ ॥ ज्योतिष्म्याम् ॥ अ
ज्ञाने । आवरणे ॥ अज्यतेनयनम-
नेन । अञ्जू व्यक्त्यादौ । करणेल्युट् ॥
दिवानतुप्रयोक्तव्यं नेत्रयोस्तीक्ष्णम-
ञ्जनम । विरेकदुर्बलादृष्टिरादित्य
प्राप्यसीदति ॥

अञ्जनकेशी । स्त्री । हट्टविलासिनीना
मगन्धद्रव्ये ॥ अञ्जनमिवकेशाअस्याः ॥

अञ्जना । स्त्री । वायुपत्न्याम् । हनु
मन्मातरि ॥

अञ्जनाधिका । स्त्री । अञ्जनिकायाम् ॥

अञ्जनावती । स्त्री । सुप्रतीकाख्यदिग्ग
जभार्य्यायाम् ॥ अञ्जनवर्णत्वातञ्ज
नमस्त्यस्या । मतौवह्वचइतिदीर्घः ॥

अञ्जनिका । स्त्री । ज्येष्ठीविशेषे । अ
ञ्जनहारी इतिभाषाप्रसिद्धे । छा-
लिन्याम् ॥ क्षुद्रमूषिकायाम् ॥

अञ्जनी । स्त्री । लेप्यनार्य्याम चन्द-
नादिलेपनयोग्यायाम् ॥ कटुकावृ-

चे ॥ काळाञ्जनीवृक्षे ॥

अञ्जलिः । पुं । हस्तसम्पुटे । मिलितप्रहस्तयोः ॥ कुडवपरिमाणे ॥ अज्यतेऽनेन । अञ्जू व्यक्त्यादौ । ऋतन्यञ्जीत्यञ्जेरलिच् ॥

अञ्जलिकारिका । स्त्री । लज्जालुके । सञ्ज्ञायाम् ॥ पुत्तलिकायाम ॥ त्रि । साञ्जलौ ॥ अञ्जलेःकारिका ॥

अञ्जलिनी । स्त्री । लज्जालुके ॥

अञ्जसः । त्रि । प्राञ्जले । अवक्रे ॥

अञ्जसा । अ । साक्षात् ॥ तत्त्वे ॥ शीघ्रे ॥ आर्जवे ॥ अनायासे ॥ अञ्जनम् । अञ्जू व्यक्त्यादौ । कृत्यल्युटोबहुलमिति भावेपचाद्यच् । अञ्जस्यति साययतिवा । षो अन्तकर्मणि षेच्ययेवा । पचाद्यच् क्विब्वा ॥

अञ्जसाकृतम् । त्रि । आर्जवेनकृते ॥ अञ्जसउपसङ्ख्यानादऽलुक् ॥

अञ्जिः । पुं । प्रेषणिके । प्रेरके ॥

अञ्जिष्टः । पुं । भास्करे ॥ अनक्ति । अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु । ऋतन्यञ्जीत्यादिनाअञ्जेरिष्टच् ॥

अञ्जीरम् । न । ख्यातेवृक्षभेदे ॥ अस्यगुणाः । शीतलत्वम् । स्वादुत्वम् । गुरुत्वम् । वायुपित्तरक्तक्रिमिशूलहृत्पीडाकफमुखवैरस्यनाशित्वम् । अग्निकारित्वञ्चेति राजनिर्घण्टराजवल्लभौ ॥ लघ्वक्षीरमस्मादल्पगुणम् ॥

अट् । अ । आश्चर्ये ॥

अटनम् । न । भ्रमणे ॥ अट गतौ । भावेल्युट् ॥

अटनिः । स्त्री । चापाग्रभागे ॥ अटति गुणोऽत्र । अट गतौ । बाहुलकादनि ॥

अटनी । स्त्री । चापाग्रभागे । धनुष्कोट्याम् ॥ कृदिकारादितिवाङीष् ॥

अटरूषः । पुं । वासके ॥ अटान्गच्छतो रूषति । रुष हिंसायाम् । मूलविभुजादित्वात्कः ॥

अटरूषः । पुं । वासके ॥ अटे रूष्यति । रूषमिश्रणे । इगुपधेतिकः ॥

अटविः । स्त्री । वने ॥ अटन्त्यत्र । अट गतौ । पद्यटिभ्यामविः ॥

अटवी । स्त्री । अरण्ये ॥ अटन्त्यत्र । अट गतौ । पद्यटिभ्यामविः । कृदिकारादितिवाङीष् ॥

अटा । स्त्री । भ्रमणे । पर्य्यटने ॥ इति रत्नकोषो नीलकण्ठश्च ॥ अटनम् । अट० । भिदादिपाठादङ् ॥

अटाट्या । स्त्री । भ्रमणे । पर्य्यटने ॥ अटनम् । अट० । परिचर्यापरिसर्यामृगयाऽटाट्यानामुपसङ्ख्यानमित्यटतेः शयकिच्छशब्दस्यद्वित्वम् पूर्वभागेयकारनिवृत्तिर्दीर्घश्चनिपात्यते ॥

अट्टः । पुं । हर्म्यपृष्ठे परिनिकेते । चौ

मे ॥ अत्यर्थे ॥ हट्टे ॥ गृहान्तरे ॥ चतुष्के ॥ प्राकाराग्रस्थितरथ्यागृहे ॥ न । ओदने ॥ अद्यते । अट्ट अतिक्रमणे । कर्मणिघञ् । अट्टयतिवा । अच् ॥ शुष्के ॥

अट्टट्ट । I । उच्चैरर्थे ॥ अत्युच्चे ॥

अट्टनम् । न । चक्रफलास्त्रे ॥ इतिचिकाण्डशेषः ॥

अट्टहास । पुं । महाहासे । अत्यर्थहासे ॥ हसिते ॥ अट्टश्चासौहासश्च ॥ शिवे ॥ रिहस्तानविशेषे ॥ अट्टहासेमहानन्दादेवीवर्त्तते ॥ अट्टहासेमहानन्दोमहानन्दामहेश्वरीत्यागमः ॥

अट्टहासकः । पुं । कुन्दपुष्पवृक्षे ॥

अट्टहासी । पुं । शिवे ॥ अट्टहासोऽस्यास्ति । इनिः ॥

अट्टालः । पुं । सौधोच्चगृहे । प्राकारादुपरितने उन्नतस्थाने ॥ यथा । भज्यमानपुरोद्यानप्राकाराट्टालगोपुरमिति श्रीभागवतम् ॥

अट्टालकः । पुं । सौधोच्चगृहे । उपरितनगृहे । चौमे । अट्टे । अट्टा इति भाषायाम् ॥

अट्टालिका । स्त्री । सौधोच्चगृहे । अटारी इतिभाषाप्रसिद्धे ॥ नृपागारे ॥ इति जटाधरः ॥

अट्टालिकाकारः । पुं । शूद्रागर्भेचित्रकारौरसजातजातिविशेषे । राजइतिभाषा ॥ यथा । कुलटायाञ्चशूद्रायांचित्रकारस्यवीर्यतः । वभूवाट्टालिकाकारःपतितोजारदोषतः इतिब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ॥

अट्टिका । स्त्री । शाकादिवद्धमुष्टौ । अट्टी इतिभाषा ॥

अट्या । स्त्री । भ्रमणे । पर्यटने ॥ तौर्यत्रिकंवृथाट्याचकामजोदशकोगण इतिमनुः ॥

अड्डुः । पुं । लकुचद्रुमे ॥

अणकः । त्रि । कुत्सिते । गर्ह्ये ॥ अणति । अणशब्दे । पचाद्यच् । कुत्सायांकन् ॥

अणव्यम् । न । व्रीहिभित्क्षेत्रे । क्षाणवीने ॥ अणूनांभवनंक्षेत्रम् । विभाषातिलमाषोमाभङ्गाणुभ्य इतियत् ॥

अणिः । स्त्री । पुं । अक्षाग्रकीलके । रथचक्राग्रस्थितकीले ॥ अश्रौ । खड्गाद्यग्रे ॥ सीम्नि ॥ अणति । अणशब्दे । सर्वधातुभ्यइन् ॥

अणिमा । पुं । ऐश्वर्य्यविशेषे ॥ सचाष्टविभूतिष्वेका । यतःअणुर्भवतिशिलामपिप्रविशति । यत्प्रभावात्देवाः सिद्धाश्चसूक्ष्मीभूयालक्षिताः सर्वत्रविचरन्ति ॥ अणोर्भावः । इमनिच् । टेरिति टिलोपः । इष्टेमेयस्तु ॥

अणिष्ठः । त्रि । अणुतमे ॥

अणीयान्। त्रि। अतिसूक्ष्मे। अत्यल्पे। सूक्ष्मतरे। कनीयसि॥ अयमनयोरतिशयेनाणुः। अजादीगुणवचनादेवेतीयसुन्॥

अणु। पुं। चीणाइतिख्याते व्रीहिविशेषे॥ लेशे॥ परमाणौ॥ पुरुषे। आत्मनि॥ सौक्ष्म्यातिशयशालित्वादणुः। पृथिव्याद्याकाशान्तानांभूतानांपूर्वपूर्वं मपेक्ष्योत्तरोत्तरस्य सौक्ष्म्यातिशयान्मूलकारणस्य सर्वातिशायिसौक्ष्म्यवत्तयाअणुरिवाणुरितिसौक्ष्म्यगुणयोगाज्जीवनामात्मनोऽणुरिति॥ त्रि।सूक्ष्मे॥ अणति अण्यतेवा। अण शब्दे। कृभ्वणरेभ्य उः॥ धान्येनिदिष्ठवर्णो॥

अणुकः। त्रि। निपुणे॥ अल्पे॥ सूक्ष्मे॥ अणुप्रकार। स्थूलादिभ्यः प्रकारवचनेकन्॥ यावादिषुअणुनिपुण इतिस्वार्थेकनवा॥

अणुभा। स्त्री। विद्युति॥

अणुमाचिकः। पुं। पुर्यष्टकयुक्तजीवे॥ अणवोमात्राः पुर्यष्टकरूपायस्यसोऽणुमाचिकः॥

अणुरेवती। स्त्री। दन्तीवृक्षे॥

अण्डम्। न। मुष्के॥ पेशीकोशे। पक्ष्यादिप्रादुर्भावककोशे। अण्डाइति भाषाप्रसिद्धे॥ नातिस्निग्धानिदृष्यांणिस्वादुपाकरसानिच। वातशान्यति

मुक्तानि गुरूण्यण्डानिपक्षिणाम्॥ वीर्ये॥ अमन्त्रस्मात्अमगत्यादिषु। अमन्ताड्डः॥ अमन्तिसम्प्रयोगंयान्त्यनेनेतिवा॥

अण्डकः। पुं। मुष्के। अण्डकोशे॥ इति हेमचन्द्रः॥

अण्डकोटरपुष्पी। स्त्री। नीलराज्ञायाम्। नीलवुन्हेतिख्यातायाम्॥

अण्डकोषः। पुं। वृषणे। मुष्के॥ अण्डयो.कोषः कुट्मलः॥

अण्डजः। पुं। सरटे॥ मत्स्ये॥ खगे॥ झषे॥ अण्डजाःपक्षिणःसर्पानक्रामत्स्याश्चकच्छपा। यानिचैवप्रकाराणि स्थलजान्यौदकानिचे तिमनुः॥ अण्डादौसम्भवतिततोजायतेवा। जनीप्रादुर्भावे। पञ्चम्यामजातावितिडः। त्रि। अण्डजातमात्रे। अण्डेजातः।सप्तम्यांजनेर्डः॥

अण्डजा। स्त्री। मृगनाभौ॥ इतिविश्वमेदिनीहेमचन्द्राः॥

अण्डालुः। पुं। मत्स्ये॥ इतिशब्दचन्द्रिका॥

अण्डीरः। पुं। पुरुषे॥ शक्ते॥

अतटः। पुं। प्रपाते। शैलोच्चदेशे॥ नतटमत्र॥

अतङ्गः। पुं। अलङ्कारविशेषे। यत्रा। तद्रूपाननुकारश्चेदस्यतत्स्यादत

गुणः। यदितु तदीयवर्णसम्भवन्त्याम पियोग्यतायामिदन्यूनगुणं नगृह्णी यात् तदाभवेदतद्गुणोनाम । उदाह रणम् । धवलोऽसि जहवि सुन्दर त हवितुए मज्झ रजिअं हिअअम् । रा अभरिएवि हिअए सुहअ णिहित्तो णरत्तोसि ॥ ※ ॥ अस्यसंस्कृतन्तु । धवलोसि यद्यपिसुन्दर तथापित्वया ममरञ्जित हृदयम् । रागभरितेपि हृदये सुभगनिहितोनरक्तोसीति ॥ धवलोनिर्मलः श्वेतश्च रागोलौहि त्यमनुरागश्च । धवलपदस्य वृषभ परत्वमपिकेचिदाहुः । अत्रोत्तरार्द्धे अप्रस्तुतेननायकेननिवेदनीयत्वात्ता न्यथाप्रकृतस्यहृदयस्यगुणाननुहरणा दतद्गुणोऽलङ्कारः॥ ※ ॥अत्रातिरक्ते नापिमनसासयुक्तो नरक्ततामुपगत इत्यतद्गुणः ॥ किञ्च । तदित्यप्रकृत मस्येतिच प्रकृतमत्र निर्दिश्यते ते नयद प्रकृतस्यरूप मकृतेन कृतोपि निमित्तान्नानुविधीयते सोऽतद्गुणाद् व्यपिप्रतिपत्तव्यम् । यथा । गाङ्गम म्बुसितमम्बुयामुन कज्जलाभमुभय चमज्जतः । राजहंसतवसैवशुभ्रता चीयतेनचनचाप चीयते ॥

अतद्व्यावृत्तिः । स्त्री । प्रपञ्चनिरसने ॥ तच्छब्देनब्रह्मोच्यते।अतच्छब्देनतद तिरिक्तमज्ञानादि । नतत् अतत् । तस्मातदः प्रपञ्चस्य व्यावृत्तिः निरस नमित्यर्थात् ॥

अतन्द्रितः । त्रि । अनलसे ॥ नतन्द्रि तः ॥

अतर्कितः । त्रि । अविचारिते ॥

अतर्क्यः । पुं । स्वबुध्यभ्यूहेनकेवलेनत र्केणातर्कितुमशक्येपरमात्मनि ॥ स्व बुध्यभ्यूहेनकेवलेनतर्केणातर्क्यमाणो ऽणुपरिमाणेकेनचितस्थापितेआत्म नि। ततोऽणुतरमन्योऽभ्यूहति। ततो प्यन्योऽणुतममिति । नहितर्कस्यनि ष्ठाक्वचिद्विद्यते॥ त्रि। तर्कितुमशक्ये॥

अतलम् । न । पातालभेदे ॥ त्रि । उ परि ॥

अतलस्पर्शम् । त्रि । अतिगम्भीरे । अगा धे इत्यमरः॥ ॥ तलस्याधोभागस्य स्पर्शः । नास्तितलस्यस्पर्शोऽत्र ॥

अतलस्पृक् । त्रि । अगाधे ॥ इतिहेम चन्द्रः ॥

अतलादिः । पुं । अधोऽधोविद्यमाने ष्वतलवितलसुतलरसातलतलातल महातलपातालनामकेषुसप्तसु ॥ अतलमादिर्यस्य वितलादिसमूहस्य सोयमतलादिः ॥

अतः । ।। हेतौ । कारणे ॥ अपदेशे ॥ निर्देशे ॥ एतस्मात् । तसिल् ।

एतद्देशान् ॥

अतसः । पुं । वायौ ॥ क्षौमे ॥ प्रहरणे ॥ आत्मनि ॥ अतति । अतसातत्यगमने । अत्यविचमितमिनमीत्यादिना ऽसच् ॥

अतसी । स्त्री । क्षुमायाम् । प्रसिद्धधान्ये ॥ यथा । अतसीमधुरातिक्ता स्निग्धापाकेकटुर्गुरुः । उष्णाद्दृक्शुक्रवातघ्नीकफपित्तविनाशिनीति भावप्रकाशः ॥ । गौरादि ॥

अतसीतैलम् । न । अतसीस्नेहे ॥ स्नेहे तैलच् । अतसीतैलमाग्नेय स्निग्धोष्णकफपित्तकृत् । कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यवातहरगुरु ॥ मलकृद्रसतः स्वादुग्राहित्वग्दोषहृद्घनम् । बस्तौ पाने तथाभ्यङ्गेनस्येकर्णस्यपूरणे ॥ अनुपानविधौचापि प्रयोज्यवातशान्तये ॥

अतस्क । त्रि । असयतेन्द्रिये ॥

अति । T । प्रशंसायाम् ॥ प्रकर्षे ॥ लङ्घने ॥ अतिशये । नितान्ते ॥ असम्भृतिक्षेपे ॥ स्तुतौ ॥ पूजायाम् ॥ अतति । अतसातत्यगमने । इन्प्रत्ययः ॥

अतिकटुः । त्रि । निम्बादौ ॥ अतिशयेनकटुः ॥

अतिकथः । त्रि । अश्रद्धेये ॥ नष्टधर्मे ॥ नष्टे ॥ अतिक्रान्ता कथायस्य ॥

अतिकथा । स्त्री । अपार्थभाषणे ॥

अतिकन्दः । पुं । हस्तिकन्दवृक्षे ॥

अतिकृतिः । स्त्री । पञ्चविंशत्यक्षरायां वृत्तौ ॥

अतिकृच्छ्रम् । न । व्रतविशेषे ॥ यथा । एकैकग्रासमश्नीयात् त्र्यहाणित्रीणिपूर्ववत् । त्र्यहञ्चोपवसेदन्त्यमतिकृच्छ्रंचरन् द्विजः ॥ इतिस्मृतिः प्रायश्चित्तविवेके ॥

अतिक्रमः । पुं । अतिपाते । क्रमोल्लङ्घने ॥ अतिक्रमणम् । क्रमुपादविक्षेपे । इञ् । नोदात्तोपदेशेतिन वृद्धिः ॥ अभिक्रमे ॥ अहितान् प्रत्यभीतस्य रणेयानमतिक्रमइत्यमरः ॥

अतिक्रमणम् । पुं । उचिताद्धिकस्यानुष्ठाने ॥ निष्फलेपिवस्तुनिक्रियाप्रवृत्तौ ॥ यथा । अतिसिक्तमेव भवता । अत्रातिरतिक्रमणेचेतिकर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञयाषत्वाभावः ॥

अतिक्रमणीयः । त्रि । अतिक्रमणार्हे ॥ यथा । महात्मानातिक्रमणीयोयावि जानतेति ॥

अतिक्रान्तः । त्रि । अतीते ॥ कृतातिक्रमे ॥

अतिगण्डः । पुं । षष्ठयोगे ॥ अत्रजातस्य फलयथा । कलिप्रियोवेदविनिन्दकश्च धूर्त्तः कृतघ्नोगलरोगयुक्तः । सरोमदे

इ'पुरुषोतिदीर्घं प्रकाण्डगण्डस्त्वति
गण्डअस्मेति । त्रि । वृहद्गण्डे ॥

अतिगन्धः । पुं । भूतृणे ॥ चम्पके ॥
मुद्गरवृक्षे ॥ गन्धके ॥ इतिराजनिर्घ
ण्टः ॥

अतिगन्धालुः । पुं । पुत्रदात्रीलताया
मितिराजनिर्घण्टः ॥

अतिगम्भीरः । त्रि । दुष्प्रवेशे ॥ महास
मुद्रवत्प्रवेष्टुमशक्ये ॥

अतिगर्वितः । त्रि । अहङ्कारातिशयशा
लि । समुन्नद्धे ॥ अतिशयेनगर्वितः ॥

अतिगुणा । स्त्री । पृश्निपर्ण्याम् ॥ त्रि ।
गुणातिक्रामके ॥

अतिगुह्याष्टकम । न । श्रीशैलादिषु ॥
यथा । श्रीशैलकलवे दारभैरवामा
तकेश्वराः । हरिश्चन्द्रमहाकालम
ध्याः सातिपदात्मकाविति मृगेन्द्रस
ंहिता ॥

अतिचरः । त्रि । शीघ्रगे ॥

अतिचरा । स्त्री । स्थलपद्मिन्याम् । चा
रुण्याम । पद्मचारिण्योषधौ ॥ अति
चरति । चरगतिभक्षणयोः । पचा
द्यच् ॥

अतिचारः । पुं । शीघ्रगमने ॥ अतिक्रम्य
गमनम् । कुजादिपञ्चग्रहाणांराशि
भोगकालासमाप्तौ राश्यन्तरगमन
म् । तत्रपूर्वराशिगमनेवक्रातिचारः ।
परराशिगमनेअतिचारः । एतौगुरो
र्भवेद्दकालोभवति । गुरुस्तुयदिपुनः
पूर्वराशिनायातितदामहातिचारः ।
तेनलुप्तसंवत्सरोभवतिग्रहाणांस्वभो
ग्यमानराशौ वपिवक्रातिचारौभव
तः । तत्रनाकालः । इतिस्मृतिज्यो
तिषे उक्तम् ॥

अतिच्छत्रः । पुं । छत्रायाम् । स्थूलतृण
विशेषे ॥ रक्तवर्णकोकिलाक्षके ताल
मखानाइतिभाषाप्रसिद्धे ॥ पाठान्ते ।ज
लजतृणभेदे । अति क्रान्तश्छत्रम् ॥

अतिच्छत्रकः । पुं । भूतृणे ॥

अतिच्छत्रा । स्त्री । शतपुष्पायाम् । शु
लुफा इति मौरीइतिच गौडभाषाप्र
सिद्ध शताह्वायाम् । सौंफ इति भा
षा ॥ छत्रमतिक्रान्ता अत्यादय इतिस
मासः ॥

अतिजगती । स्त्री । त्रयोदशाक्षरायां
वृत्तौ ॥

अतिजवः । त्रि । अतिवेगाढ्ये । जङ्घा
ले ॥ अतिशयितोजवोवेगोयस्य ॥

अतिजागरः । पुं । नीलक्रौञ्चे । नील
बके ॥

अतिडीनम् । न । पक्षिणःप्रचण्डगमने
दीर्घपतनेवा ॥

अतितितीर्षत् । त्रि । अतितरीतुमिच्छ
ति ॥

अतितीक्ष्णा । त्रि । मरीचादौ । पुं । शोभाञ्जने ॥

अतितीव्रा । स्त्री । गण्डदूर्वायाम् ॥

अतिथि । पुं । कुशपुत्रे ॥ त्रि । आगन्तुके । अदृष्टपूर्वगृहमागते॥ क्रोधे ॥तिथिभिन्ने ॥ अतति । अततिसातत्यगमने । ऋतन्यञ्जीत्यतेरिथिन् । नविद्यतेद्वितीयातिथिरस्येतिवा ॥ यथा । एकरात्रन्तुनिवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः । अनित्यं हिस्थितोयस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते । नैकग्रामीणमतिथिंविप्रसाङ्गतिकंतथा । उपस्थितगृहेविद्यात् भार्यायत्राग्नयोपिवा इतिमनुः ॥ अध्वनीनोऽतिथिर्ज्ञेयइतिचस्मृति. ॥ सर्वास्ववस्थास्वतिथि र्नोपेक्ष्योहिगृहस्थितैः ॥ अतिथी । स्त्री । ॥

अतिथिपूजनम् । न । न्वयज्ञे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अतिथिसपर्या । स्त्री । अतिथिसेवायाम् । पञ्चमहायज्ञेषुन्वयज्ञे ॥ अतिथीनामदृष्टपूर्वाणां गृहमागतानांसपर्यणम् । सपरपूजायाम् । कण्ड्वादिभ्योयक् । अप्रत्ययात् । सपर्यापूजा ॥

अतिदिष्ट. । त्रि । अतिदेशविशिष्टे ॥ यथा । नसमानगोत्रांभार्यांविन्देत इत्यनेनशूद्रस्यापिसगोत्राकथननिषिध्यते इति चेत् अत्रोपदिष्टातिदिष्टगोत्रस्यैवनिषेधो नत्वतिदिष्टातिदिष्टशूद्रगोत्रादेरित्युदाहृतत्वम् ॥

अतिदीप्य । पुं । रक्तचित्रकवृक्षे ॥ इति राजनिर्घण्टः ॥

अतिदेशः । पुं । अन्यत्रश्रुतस्य अन्यत्रान्वये ॥ यथा । अन्यत्रैवप्रणीतायाःकृत्स्नायाधर्मसन्ततेः । अन्यत्रकार्यतःप्राप्तिरतिदेशोभिधीयतेइति ॥ प्रकृतात्कर्मणोयस्मात्तत्समानेषु कर्मसु । धर्मप्रवेशोयेनस्यात् सोतिदेशइतिस्मृत ॥इतिचदर्शितोऽतिदेश पूर्वाचार्यै ॥

अतिधन्वा । पुं । ऋष्यन्तरे । शौनके ॥

अतिधृतिः । स्त्री । ऊनविंशत्यक्षरायां वृत्तौ ॥

अतिनु । त्रि । अतीतनौके ॥ नावमतिक्रान्त अत्यादयइतितत्पुरुष । ह्रस्वोनपुंसकइतिह्रस्व ॥ अतिनौ. पुमान् स्त्री वा ॥

अतिपतनम् । न । अत्यये । अतिक्रमणे ॥

अतिपत्तिः । स्त्री । अतिपाते ॥

अतिपत्त्रः । पुं । हस्तिकन्दवृक्षे ॥ शाकवृक्षे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अतिपन्थाः । पुं । सत्पथे ॥ अतिःपूजायाम् । कुगतीतिसमासः । नपूजनात् ॥

अतिपातः । पुं । अतिक्रमे । पर्यये ॥ अतिक्रम्यपतनम् । पत्लृगतौ ।

घञ् ।

अतिपातकम् । न । नवविधपापमध्ये गुरुतरपातके । तत्त्रिविधम् । पुंसो मातृदुहितृस्नुषागमनजन्यम् । स्त्रियास्तु पुत्रपितृश्वशुरगमनजन्यमिति प्रायश्चित्तविवेकः ।

अतिपातकी । पुं । स्त्री । पापिविशेषे । यथा । मातरभगिनीवापितथादुहितरंस्नुषे । गन्तारोब्राह्मणेयेचमहागुरुनिघातकाः । कुलधर्मंसमाश्रित्य पुनस्त्यक्तकुलक्रियाः । विश्वासघातिनोलोकाअतिपातकिनःस्मृताः । इतिश्रीमहानिर्वाणतन्त्रम् ।

अतिपातितः । त्रि । अतिक्रान्ते ।

अतिपेलवता । स्त्री । सुकुमारतरतायाम् ।

अतिप्रसक्तिः । स्त्री । अत्यन्तसेवने ।

अतिप्रसङ्गः । पुं । अतिप्रसक्तौ । अन्यस्योद्देशेन अन्यदीयस्यापिसङ्गानुष्ठाने ।

अतिबला । स्त्री । कङ्कतिकायाम् । पीतवाट्यालके । विद्याविशेषे । मध्यबलाम् । त्रि । बलिनि । अतिशयितबलं यस्यायस्मिन्वा ।

अतिभरः । पुं । अतिविस्तारे ।

अतिभीः । पुं । वज्रज्वालायाम् । त्रि । अतिभयान्विते ।

अतिभूमिः । स्त्री । अतिशये । आधिक्ये । अमर्यादायाम् । अतिक्रान्ताभूमिः । विपद्भिनदूषितातिभूमिरिति माघः ।

अतिमङ्गल्यः । पुं । बिल्वे । त्रि । मङ्गलाढ्ये । अतिशयमङ्गलजनके ।

अतिमर्यादम् । न । अतिशये । निर्भये । त्रि । तद्युक्ते । अतिशयिते ।

अतिमात्रम् । न । अतिमर्यादे । अतिशये । मात्रास्तोकं तामतिक्रान्तम् । गोस्त्रियोरितिह्रस्वः । अस्यक्रियाविशेषणत्वेक्लीवता । द्रव्यत्राचित्वेत्रिलिङ्गता ।

अतिमानिता । स्त्री । आत्मनि पूज्यत्वातिशयभावनायाम् ।

अतिमुक्तः । त्रि । निःसङ्गे । निष्फले । अतिशयेन मुक्तः । पुं । वासन्त्याम् । अतिक्रान्तो मुक्तां शौक्ल्यात् । गोस्त्रियोरिति ह्रस्वः । यद्वा । मुक्तान् विरक्तान् । तिनिशे । अतिशयितो मुक्तोविस्तारोऽस्य ।

अतिमुक्तकः । पुं । अतिमुक्तार्थे । तिनिशे । तिन्दुकवृक्षे । पुष्पवृक्षविशेषे । भ्रमरानन्दायाम् । अतिशयितो मुक्तोविस्तारोऽस्य ।

अतिमैत्रः । पुं । नवमतारायाम् । त्रि । परममित्रे ।

अतिमोदा । स्त्री । नवमल्लिकायाम् ॥

अतियातः । त्रि । अतिक्रम्यगते ॥

अतिरथः । पुं । योद्धृविशेषे । यथा । अमितान्योधयेद्यस्तुसम्प्रोक्तोतिरथस्तुस इति ॥

अतिरसा । स्त्री । मूर्वालतायाम् ॥ रास्नायाम् । क्लीतनके ॥

अतिरात्र. । पुं । यागविशेषे ॥ अतिक्रान्तोरात्रम् । अत्र सर्वैकदेशेभ्यश्च ॥

अतिरिक्तः । त्रि । अतिशयिते । श्रेष्ठे ॥ भिन्ने ॥ अधिके ॥ अतिरिच्यतेस्म । रिचिर्विरेचने । क्त ॥

अतिरुट् न । क्रोधाधिक्ये ॥

अतिरूक्षः । त्रि स्नेहशून्ये ॥ पुं । कङ्कोद्रवादौ ॥ अतिक्रान्तोरूक्षम् । अत्यादय इतिसमास ॥

अतिरेक । पुं । पृथग्भावे । अतिशये ॥

अतिरोगः । पुं । क्षयव्याधौ ॥

अतिरोमश. । पुं । वनच्छागे ॥ त्रि । रोमातिशयाढ्ये ॥

अतिरोमशा । स्त्री । नीलवुन्हायाम् ॥

अतिवक्ता । त्रि । वावदूके । वाचोयुक्तिपटौ ॥ अतिवक्ति । साधुकारिणि न तृच्वा ॥

अतिवर्णाश्रमी । पुं । पञ्चमाश्रमिणि ॥ सब्रह्मूतसंहितायां मुक्तिखण्डे पञ्चमाध्याये परमेश्वरेणवर्णितः । यथा ।



ब्रह्मचारीगृहस्थश्च वानप्रस्थोयभिक्षुकः । अतिवर्णाश्रमीतेषिक्रमाच्छ्रेष्ठाविचक्षणा. ॥ अतिवर्णाश्रमीप्रोक्तो गुरुः सर्वाधिकारिणाम् । नकस्यापि भवेच्छिष्योयथाहं पुरुषोत्तम ॥ अतिवर्णाश्रमीसाक्षाद्गुरूणांगुरुरुच्यते । तत्समोनाधिकश्चास्मिन् लोकेस्त्येवनसंशय. ॥ य.शरीरेन्द्रियादिभ्योविभिन्नसर्वसाक्षिणम् । पारमार्थिकविज्ञानसुखात्मानस्वयम्प्रभुम् ॥ परतत्त्वविजानातिसोतिवर्णाश्रमी भवेत् ॥ योवेदान्तमहावाक्यश्रवणेनैवकेशव । आत्मानमीश्वरंवेद सोतिवर्णाश्रमी भवेत् ॥ योवस्थात्रयनिर्मुक्तमवस्थासाक्षिणसदा । मह्यादेव विजानाति सोति० ॥ वर्णाश्रमादयोदेहेमाययापरिकल्पिता । नात्मनोबोधरूपस्यममतेसन्तिसर्वदा । इतियोवेदवेदान्तै सोति ० ॥ आदित्यसन्निधौ लोकश्चेष्टतेस्वयमेवतु । तथामेसन्निधावेवसमस्तंचेष्टतेजगत् ॥ इतियो वेद० ॥ सुवर्णेहारकेयूरकटकस्वस्तिकादय । कल्पितामाययातद्वज्जगन्मय्येवसर्वदा । इतियोवेद० ॥ शुक्तिकायां यथातारकल्पितमाययातथा । महदादिजगन्मायामयमय्येवकल्पितम् । इतियो० ॥ चाण्डालदेहेपश्वादि

रीरेब्रह्मविग्रहे । अन्येषुतारतम्येन स्थितेषुपुरुषोत्तम । व्योमवत्सर्वदा व्याप्त सर्वसम्बन्धवर्ज्जित. । एकरूपो महादेव. स्थित सोऽहपरामृत. इति यो० ॥ विमूढदिग्भ्रमस्यापियथापूर्वा विभाति दिक् । तथाविज्ञानविध्वस्त जगन्मेभातितन्नहि । इतियो० ॥ यथास्वप्नप्रपञ्चोयमयिमायाविजृम्भित. । तथा जाग्रत्प्रपञ्चोपिमयिमायाविजृम्भित. । इतियो० ॥ यस्यवर्णाश्रमाचारोगलित.स्वात्मदर्शनात् । सवर्णानाश्रमान्सर्वानतीत्यस्वात्मनिस्थित: ॥ यस्त्यक्त्वा स्वाश्रमान्सर्वान स्वात्मन्येव स्थित पुमान । सोतिवर्णाश्रमी प्रोक्त:सर्ववेदार्थवेदिभि: ॥ नदेहोनेन्द्रियं प्राणोनमने बुद्ध्यहङ्कृती । नचित्तनैवसामायानचव्योमादिकजगत् ॥ नकर्त्तानचभोक्ताचनचभोजयिता तथा । केवलचित्सदानन्दब्रह्मैवात्मायथार्थत: ॥ जलस्यचलनादेव चञ्चलत्वयथारवे: ॥ तथाहङ्कारसंसारादेवसंसारआत्मन: ॥ तस्मादन्यगतावर्णाआश्रमाअपिकेशव । आत्मन्यारोपिताएवभ्रान्त्याते ऽनात्मवेदिना ॥ नविधिर्ननिषेधश्चनवर्ज्यावर्ज्यकल्पना । आत्मविज्ञानिनामास्ति तथाचान्यज्जनार्द्दन॥ आत्मविज्ञानि



नांनिष्ठामीदृशीमम्बुजेक्षण । माययामोहितामर्त्या नैवजानन्तिसर्वदा ॥नमांसचक्षुषानिष्ठाब्रह्मविज्ञानिनामियम् । द्रष्टुंशक्यास्वत:सिद्धाविदुषा सैवकेशव ॥ यत्रसुप्ताजनानित्यप्रबुद्धस्तत्रसयमी । प्रबुद्धायत्रतेविद्वान् सुषुप्तस्तत्रकेशव ॥ एवमात्मानमद्वन्द्वनिराकारनिरञ्जनम् । नित्यशुद्धनिराभाससच्चिन्मात्रपरामृतम् येविजानातिवेदान्तै:स्वानुभूत्याचनिश्चितम् । सोतिवर्णाश्रमीमोक्त. सएवगुरुत्तम. इति ॥

अतिवर्त्तुल: । पुं । वाँटुलाकडा इति गौडभाषाप्रसिद्धकलायविशेषे ॥

अतिवाद: । पुं । पारुष्यवादे । अप्रियवचसि ॥ अतिक्रम्यउक्तिरतिवाद: । घञ् ॥

अतिवादी । त्रि । सर्वानतीत्यवदितुशीले ॥

अतिवाहित: । त्रि । गमिते ॥

अतावकट: । पुं । दुष्टहस्तिनि ॥ त्रि । अतिकराले ॥ अतिशयेनविकट ॥

अतिविदाही । त्रि । सन्तापकेराजिकादौ ॥ अतिशयेनविदाही ॥

अतिविषा । स्त्री । अतीसाखे । पर्यायास्तु । अतिविषाशुक्लकन्दाचैयाविश्वाचभङ्गुरा । श्यामकन्दाप्रतिविषाशृ

ङ्गीचोपविषाविषेति ॥ अपिच । वि
षात्वतिविषाविश्वाभृङ्गी प्रतिविषारु
णा । शुक्लकन्दाचोप विषाभङ्गुराश्रणा
वल्लभा ॥ विषासोष्णाकटुस्तिक्तापाच
नोद्दीपनीहरेत्। कफपित्तातिसारा
मविषकासवमिकृमीनितिभावप्रका
श.॥ त्रिविधातिविषाज्ञेयाशुक्लाकृष्णा
तथारुणा।रसवीर्यविपाकेषुनिर्विषेव
गुणाधिकेतिराजनिर्घण्टः ॥ त्रि । वि
षातिक्रामके । विषमतिक्रान्ता ॥

अतिवेलम । न । अतिशये ॥ त्रि ।
अतिशयिते ॥ अतिक्रान्तवेलांमर्यादा
म् । अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थेद्वितीयये
तिसमासः । अस्यक्रियाविशेषणत्वे
क्लीवत्वम् । द्रव्यविशेषणत्वेतुत्रिलि
ङ्गत्वम ॥

अतिव्यथा । स्त्री । पीडायाम् । अति
शययातनायाम् ॥

अतिव्याप्ति. । स्त्री । अतिशयव्यापने ॥
अलक्ष्येलक्षणगमने।यथा।साध्याभा
ववद्वृत्तित्वमितिव्याप्तिलक्षणे धूम
वानवह्नेरित्यत्रधूमाभावाधिकरणह्र
दवृत्तित्वाभावमादायअतिव्याप्तिरि
तितार्किकाः ॥ स्वाव्यवहितप्राक्च
णावच्छेदेन रविभुज्यमानराशीय
रविसंयोगविशिष्टस्वान्तिमक्षणकत्व
मलमासत्वम् । भानुलङ्घितेऽति



व्याप्तिवारणाय औत्पातिकभिन्नत्वे
न विशेषणीयम् ॥ मुख्यफलजनक
व्यापारजनकत्वे सति मुख्यफलाजन
कत्वमङ्गत्वम् घटादावतिव्याप्तिवार
णाय सत्यन्तम् इतितिथ्यादितत्त्व
टीका ॥

अतिशक्तिता । स्त्री । विक्रमे । वीरसा
मर्थ्ये ॥ अतिशयिताशक्तिर्यस्य । त
स्यभावः । तल् ॥

अतिशक्तिभाक् । त्रि । अतिशयशक्ति
विशिष्टे ॥

अतिशय । पुं । उत्कर्षे । अत्यर्थे ॥ अ
तिशेते । अतिपूर्वात्शीङ्पचाद्यच्
। यद्वा । अतिशयनम् । भावे एरच् ।
अस्यद्रव्यवचनत्वेपिपुल्लिङ्गतैव । घ
अजबन्ताःपुंसीतिवचनात् ॥ सतत
क्रियान्तरेणाव्यवधानम् । अतिशय
स्तुपौनःपुन्यमितिभेदः ॥

अतिशयितः । त्रि । अतिक्रान्ते ॥

अतिशयोक्तिः । स्त्री । अर्थालङ्कारभेदे ॥
अस्यलक्षणादयो यथा । निगीर्याध्य
वसानन्तुप्रकृतस्यपरेणयत् । प्रस्तुत
स्ययदन्यत्वयद्यर्थोक्तौचकल्पनम् । का
र्यकारणयोर्यश्च पौर्वापर्यविपर्यय ।
विज्ञेयातिशयोक्तिःसेति । उपमाने
नान्तर्निगीर्णस्यो पमेयस्ययदध्यवसा
नंसैका । यथा । कमलमनम्भसि क

मले च कुवलये तानि कनकलतिका याम। साचसुकुमारसुभगेत्युपात परपराकेयम्॥ अत्र मुखादिकमला दिरूपतयाध्यवसितम्॥ यत्र तदेवा न्यत्वेनाध्यवसीयते सापरा। यथा। अन्नलउहत्तणअ अन्नाविअकाइ व त्तणच्छाआ। सामासामन्नपआवइ णो रेहधिअ णहोइ॥ "अस्य संस्कृत यथा। लउहशब्द, सौकुमार्यं। अन्यत् सौकुमार्यमन्याकापिचवर्त्तनच्छाया। श्यामासामान्यप्रजापते रेखैवनभव तीति॥ वर्त्ततेजीवतीति वर्त्तनश रीरं तस्यच्छायाकान्ति, श्यामाषोडश वर्षिकीस्त्री सामान्यत, सर्वसाधार णीरेखैवेतिनिर्माणपरिपाटीरेखामा त्रेणापिनास्तीतिभावः। इयमन्यत्वव र्णनरूपातिशयोक्ति,॥ यद्यर्थस्ययदि शब्देनचेच्छब्देनवोक्तौयत्कल्पनमर्था दसम्भाविनोर्थस्यसातृतीया। यथा। राकायामकलङ्कंचेदमृतांशोर्भवेद्- पु। तस्यामुखतदासाम्यपराभवम वाप्नयात्॥ कारणस्यशीघ्रकारितां वक्तुंकार्यस्यपूर्वमुक्तौचतुर्थी। यथा। हृदयमधिष्ठितमादौमालत्याःकुसुम चापवाणेन। चरमंरमणीवल्लभलो चनविषयंत्वयाभजतेति॥

अतिशक्करी। स्त्री। पञ्चदशाक्षरा

यांवृत्तौ॥

अतिशायनम्। न। आधिक्ये। प्रकर्षे॥ अतिपूर्वाच्छेतेर्ल्युट्। अतिशयनमे व। अतिशायनेतमबिष्ठनाविति निर्दे शाद्दीर्घ॥

अतिशीतम्। । अतीतानिशीतानि- इतिविग्रहे अव्ययविभक्तीत्यादिनाऽ त्ययेऽव्ययीभाव,॥ त्रि। शीतातिशय विशिष्टे॥

अतिशेष'। त्रि। अतिशिष्टे। अवशिष्टे॥

अतिशोभनः। त्रि। अतिशयशोभायुक्ते॥ श्रेष्ठे॥ अतिशयेनशोभन॥

अतिसर्ग'। पुं। कामचारानुज्ञायाम्॥ दाने॥

अतिसर्जनम्। न। विलम्भे। दाने॥ व धे॥ सृजविसर्गे। ल्युट्॥

अतिसह'। त्रि। अतिसहिष्णौ॥ अत्य न्तसहते। षहमर्षणे। पचाद्यच्॥

अतिसार'। पुं। उदरामये। बहुद्रवम लनि' सरणरोगे॥

अतिसारकी। त्रि। अतिसारान्विते। सातिसारे॥ अतिसारोऽस्यास्ति। वा तातीसाराभ्यांकुक्चेतीनिः॥

अतिसृष्ट'। त्रि। दत्ते॥ नियुक्ते॥

अतिसौरभ'। पुं। सहकारे॥ अतिश यितसौरभमस्य॥

अतिस्थूल'। त्रि। अत्यन्तपीने॥ अत्य

लच्चयाम् । मेदोमांसातिवृद्धत्वा-च्चलस्फिगुदरस्तनः । अयथोपचयो त्साहोनरोऽतिस्थूलउच्यते ॥ अयथो पचयोत्साह ॥ नयथाऽउचितः उपच योमांसोपचय. उत्साहोवलम्वयस्य सः ॥

अतिस्फिर: । त्रि । स्फोते । अतिशयित स्फूर्त्तिशालिनि ॥

अतिहसितम् । न । अतिशयहास्ये ॥

अतिहास. । पुं । हास्यभेदे । सशब्दहा से ॥ अतिहसनम् । हसेहसने । भा वेघञ् ॥

अतिहिमम् । ा । हिमस्यात्यये ॥

अतीत. । त्रि । वर्त्तमानध्वसप्रतियोगि नि । अतिक्रम्यगते । भूतकाले ॥गते । भूते ॥ यथा । ननस्यन्यूनसप्ताब्दे नातीताशीतिवत्सरे । इतिवैद्यकप रिभाषा ॥ मानप्रभेदे ॥ इतिसङ्गी तशास्त्रम् ॥ अतिपूर्वादिणोगत्यर्था कर्मकेतिकर्त्तरिक्त. ॥

अतीतकाल' । पुं । हेत्वाभासविशेषे । वाधिते ॥ यथा । कालात्ययापदिष्ट कालातीत: । इतिन्यायसूत्रम् १ । ४९ ॥ अतीतकालस्यसमानार्थकत्वा त् कालातीतशब्देनोक्तम् । कालस्य साधनकालस्य अत्ययेअभावे अपदि ष्ट: प्रयुक्तोहेतु' । एतेनसाध्याभाव प्रमालच्चणार्थं इतिसूचितम् । सा ध्याभावनिर्णये साधनासम्भवादयमे ववाधितसाध्यक इतिगीयते । यथा । वह्निरनुष्ण कृतकत्वादित्यादौ ॥

अतीतद्वैतम् । न । प्रत्यगात्मतत्त्वे ॥ त्रि । द्वैताभाववति ॥ अतीत द्वैत यस्मादिति ॥

अतीतद्वैतभानम् । न । प्रत्यगात्मन साच्चात्कारे ॥ अतीतद्वैतस्यात्मनो भानसाच्चात्कार ॥

अतीन्द्र. । पुं । विष्णौ ॥ ज्ञानैश्वर्यादि भिःस्वभावसिद्धैरिन्द्रमतीत्यस्थित ॥ इन्द्रमतीत अत्यादय क्रान्ताद्यर्थेद्वि तीययेतिसमास ॥

अतीन्द्रियम् । त्रि । इन्द्रियाग्राह्यवस्तुनि । अप्रत्यच्चे ॥ इन्द्रियमतिक्रान्तम् ॥ मनसि ॥ इन्द्रियमतीत्यवर्त्तमान त्वात् ॥

अतीन्द्रियग्राह्य: । त्रि । मनोग्राह्ये । प रमात्मनि ॥ यथा । नैवासौचच्चुषा ग्राह्योनचशिष्टैरपीन्द्रियै । मनसा तुप्रसन्नेनगृह्यते सूच्मदर्शिभिरिति व्यास ॥

अतीर्थ्यम । त्रि । दुस्तरे ॥

अतीव । ा । अतिशये ॥ अतिच इवच॥

अतीसार: । पुं । उदरामये ॥ अतिसर ति । सृगतौ।व्याधिमत्स्यबलेषुचेति

अत्यः

वार्त्तिकाद्‌घञ् । अन्तर्भावितण्यर्थो सरति । रुधिरादिकमतिशयेनसारयतीत्यर्थः । उपसर्गस्यघञीति दीर्घः ॥

अतीसारकी । त्रि । अतीसाररोगयुक्ते । अतीसारोऽस्त्यस्य । वातातीसारपिशाचेभ्यश्चेतीनिः ॥

अतीसारभेषजम् । न । लोध्रे ॥ अतीसारस्यभेषजम् ॥

अतुलः । पुं । तिलवृक्षे ॥ इतिशब्दचन्द्रिका ॥ त्रि । तुलोज्झिते । निरुपमे ॥ अपरिमिते ॥ तुलाउपमानमस्यनविद्यते । शेषाद्विभाषेतिविकल्पान्नकप् । उपसर्जनह्रस्वः ॥

अत्कः । त्रि । पथिके ॥ कृत्युषादिकोपः ॥ अतति । अतसातत्यगमने । इण्भीकापाशल्यतिमर्चिभ्यः कन् ॥

अत्ता । स्त्री । ज्येष्ठभगिन्याम् ॥ मातरि ॥ प्राकृतभाषयाश्वश्र्वाम् ॥

अत्ति । स्त्री । नाट्योक्त्या ज्येष्ठभगिन्याम ॥ मातरि ॥

अत्तिका । स्त्री । नाट्योक्त्या ज्येष्ठभगिन्याम् ॥ मातरि ॥ अत्तामाता । सेव । स्वार्थेकन ॥

अत्तुः । पुं । भानौ । सूर्ये ॥

अत्यः । पुं । तुरङ्गे । अश्वे ॥ वैदिकोयंशब्दः ॥

अत्यन्ता

अत्यध्यक्ष । त्रि । इन्द्रियाऽगोचरे । अतीन्द्रिये ॥ अक्षेषु अध्यक्षम । विभक्त्यर्थे-व्ययीभावः । अतिक्रान्तोऽध्यक्षम् ॥

अत्यन्तम् । न । अतिशये ॥ यथा । 'अत्यन्तकठिनौ तथापिहृदया नन्दायचक्षोजाविति नरहरिकविः ॥ त्रि । संयुक्ते । सर्वानन्तान्परिच्छेदानतिक्रान्ते । निरतिशये । नितान्ते । अवसानमतिक्रान्ते ॥

अत्यन्तकठिनम् । न । उलूखलवज्रसवतवृक्षचन्दनादिसर्वद्रव्ये ॥ त्रि । अतिशयकाठिन्यविशिष्टे ॥

अत्यन्तकोपनः । त्रि । चण्डे ॥ अत्यन्तंकुप्यति । कुपक्रोधे । क्रुधमण्डार्थेभ्यश्चेतियुच् ॥

अत्यन्तगामी । त्रि । अत्यन्तिके । अतिशयगमनशीले ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अत्यन्तसंयोग । पुं । साकल्येनसम्बन्धे । निरन्तरसन्निकर्षे ॥ अन्तमवसानमतिक्रान्तोऽत्यन्तः । सचासौसंयोगश्च ॥

अत्यन्तसुकुमारः । पुं । कङ्गनीवृक्षे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥ त्रि । अतिकोमले ॥

अत्यन्ताभाव । पुं । त्रैकालिकसंसर्गावच्छिन्नप्रतियोगिताके अभावविशेषे

यथाभूतलेघटोनास्तीति ॥

अत्यन्ताभावसम्पत्ति । स्त्री । स्वरूपेणाप्यप्रतीतौ ॥

अत्यन्तिकः । पुं । अत्यन्तगामिनि । अतिशयभ्रमणकारिणि ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अत्यन्तीनः । त्रि । अतिशयितगतिशीले । अत्यन्तगामिनि ॥ अन्तस्याऽत्ययः । अत्ययेऽव्ययीभावः । अत्यन्तगामी । अवारपारात्यन्तानुकामगामीतिखः ॥

अत्यम्लम । न । वृक्षाम्ले । तंतडीकइति भाषाप्रसिद्धेवृक्षफलविशेषे ॥

अत्यम्लपर्णी । स्त्री । वल्लिकरथे । अत्यम्लानिपर्णानियस्याः । पाककर्णेत्यादिनाङीष् ॥

अत्यम्ला । स्त्री । अत्यम्लपर्ण्याम् । वनवीजपूरे । मधुटावा इतिगौड भाषाप्रसिद्धे ॥

अत्ययः । पुं । अतिक्रमे ॥ दण्डे ॥ अभावे । विनाशे ॥ दोषे ॥ कृच्छ्रे ॥ अतिगमने ॥ कार्यस्यावश्यम्भावे ॥ अत्ययनम् । अनेनवा । इणगतौ इगतौवा । एरच् ॥

अत्यर्थम् । न । अतिशये ॥ त्रि । अतिशययुक्ते ॥ अर्थोनिवृत्तिर्विषयोवा तमतिक्रान्तमत्यर्थम् ॥ अत्यक्रियावि

शेषणत्वे क्लीवत्वम् । द्रव्यवाचकत्वे वाच्यलिङ्गत्वम ॥ इत्यमरः ॥

अत्यल्पम् । त्रि । अल्पीयसि ॥ इत्यमर अतिशयेनाल्पम् ॥ ॥

अत्यष्टिः । स्त्री । सप्तदशाक्षरायांवृत्तौ ॥ सप्तदशसंख्यायाम् ॥

अत्याकारः । पुं । न्यक्कारे । तिरस्कारे ॥ त्रि । महादेहे ॥

अत्यागी । पुं । कर्मफलत्यागित्वेपिकर्मानुष्ठायिनि । अत्रे । गौणसन्यासिनि ॥

अत्याधानम् । न । अतिक्रमे ॥ उपक्षेपे ॥ उपरिस्थापने ॥

अत्यायम । न । अतिगमने ॥

अत्यालः । पुं । रक्तचित्रकवृक्षे ॥

अत्याशा । स्त्री । असम्भावनीयवाञ्छायाम । अत्यन्तस्पृहायाम् ॥ यथा । अत्याशाभिरुपागताध्वगगणानधन्यावनौतापितान्नोयत्तर्पयितुंचमोक्षिसमतद्दुःखैर्मनोदूयते ॥ इत्युद्भटः ॥

अत्याश्रमः । पुं । परमहंसे ॥ ब्रह्मचर्यादीनवसन्यासान्तानाश्रमधर्मवत-आश्रमानतिक्रम्यवर्त्तमानोयःसन्न्यस्याश्रमशब्देनोच्यते ॥

अत्याश्रमी । पुं । उत्तमाश्रमिणि । पूर्वाश्रमत्रयमतीत्यसर्वकर्मत्यक्त्वास्थितेपरमहंसपरिव्राजके ॥

अत्यासः । पुं । व्यतिक्रमे ॥

अत्याहितम् । न । महाभीतौ ॥ जीवानपेक्षिकर्मणि ॥ अतीवाधीयतेस्म मनसि । डुधाञःक्तः । दधातेर्हिः ॥ अतीवासमन्तादाहितवा ॥

अत्युक्तिः । स्त्री । असम्भवोक्तौ । आरोपितस्यकथने ॥ अलङ्कारविशेषे ॥ यथा । अत्युक्तिरद्भुतातथ्यशौर्यौदार्यादिवर्णनम् । त्वयिदातरिराजेन्द्रयाचकाः कल्पशाखिनइतिचन्द्रालोकः ॥

अत्युक्था । स्त्री । स्त्रीछन्दसि ॥ गौस्त्री ॥ गोपस्त्रीभिः । कृष्णोरेमे ॥

अत्युच्छ्रितः । त्रि । अतिप्रवृद्धे ॥ अत्युच्छ्रितस्यदमनमुचितञ्च श्रुतौ श्रुतम ॥

अत्यूहः । पुं । दात्यूहे । कालकण्ठके ॥ अतिशयवितर्के ॥ त्रि । बहुतर्कवति ॥

अत्यूहा । स्त्री । नीलिकायाम् । नीलसिन्दुवारे ॥ इतिमेदिनी ॥

अत्र । । अधिकरणे । अस्मिन् ॥ एतस्मिन् । सप्तम्यास्त्रल् । एतदोऽन् ॥

अत्रभवान् । त्रि । श्लाघ्ये । पूज्ये ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥ इतराभ्योऽपिदृश्यन्त इति प्रथमार्थेप्राक्दीव्यतीयस्त्रल् । सुप्सुपेतिसमास.

अत्रिः । पु । मुनिविशेषे । अनुसूयापतौ ॥ अत्तिअद्यतेवा । अदभक्षणे । अदेस्त्रिनिश्चेतिचकारात्त्रिप् । अत्रिः । अत्री । अत्रय ॥

अत्रिजातः । पुं । विधौ । चन्द्रे ॥ द्विजे ॥

अत्रिदृग्ज । पुं । चन्द्रे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अत्री । पुं । मुन्यन्तरे ॥ अत्ति । अद० । अदेस्त्रिनिश्चेतिचिनिः । अत्री । अत्रिणौ । अत्रिणः ॥

अत्रिनेत्रजः । पुं । चन्द्रमसि ॥ इतिजटाधरः ॥

अत्रिनेत्रप्रसूतः । पुं । शशिनि ॥ इतिहलायुधः ॥

अत्रिनेत्रभूः । पुं । सोमे । शशधरे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अथ । । । समये ॥ अधिकारे । अथस्नानविधिः ॥ मङ्गले । अथपरस्मैपदानि ॥ विकल्पे ॥ अनन्तरे । स्नातोऽथभुङ्क्ते ॥ अन्वादेशे ॥ प्रतिज्ञायाम् । गोदोभवानथेतिब्रूमः ॥ प्रश्ने । अथशक्तोसिभोक्तुम् ॥ कार्त्स्न्ये ॥ आरम्भे । अथशब्दानुशासनम् ॥ समुच्चये । भीमोऽथार्जुन ॥ अर्थयते । अर्थयाञ्चायाम् । अन्येभ्योऽपीतिडः । पृषोदरादित्वाद्रलोपः ॥

अथकिम् । । । स्वीकारे ॥

अथर्वणः । पुं । शिवे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अथर्वणिः । पुं । अथर्ववेदब्राह्मणे ॥ पु

रोधसि ॥ इतिमेदिनी ॥ ईश्वरे ॥
अथर्वा । पुं । ब्राह्मणे ॥ अथर्वणा प्रोक्ते ग्रन्थे धर्मे आम्नाये वा अथर्वा । अथर्वणोवेतिवार्तिकादणोवालुक् । पक्षेआथर्वण ॥ न । वेदे ॥
अथर्ववित् । पुं । अथर्ववेदाभिज्ञेवसिष्ठादौ ॥
अथर्ववेद । पुं । प्रायेणाभिचारार्थ्यर्थे ऋग्वेदांशे । छान्दोग्याद्युपनिषत्प्रसिद्धेच तुर्यवेदेपञ्चाशच्छाखात्मके ॥
अथर्वाधिपति । पुं । बुधे । शशिजे ॥
अथवा । T । पक्षान्तरे ॥
अथो । T । अथार्थेषु ॥ अधिकारभेदे ॥ अप्यर्थे ॥ अर्थयते । अर्थभाञ्जायाम् । बाहुलकाड्डोः । पृषोदरादित्वाद्रलोपः ॥
अद् । T । आश्चर्य्ये ॥ अत्ति । अदभक्षणे । क्विप ॥
अदक । त्रि । दन्तरहिते ॥ भक्षयितरि ॥ इतिछान्दोग्योपनिषत् ॥
अदत्ता । स्त्री । अपरिणीतायाम् ॥ इतिस्मृति ॥
अदत्तादायी । त्रि । चौरे ॥
अदनम् । न । भक्षणे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥
अदनीय । त्रि । भक्ष्ये ॥
अदभ्रम् । त्रि । बहुले । अनल्पे ॥ दभ्रादन्यत । नञ्समास. ॥

अदभ्रचक्षुः । न । ज्ञानचक्षुषि ॥ त्रि । तद्वति ॥
अदर्शनम । त्रि । अतीन्द्रिये ॥ न । विनाशे ॥ लोपे ॥ दर्शनस्याभाव. ॥
अदल । पुं । हिज्जले ॥ त्रि । दलवर्ज्जिते । दलरहिते ॥
अदला । स्त्री । घृतकुमार्याम् ॥
असौ । त्रि । परस्मिन् । परत्र ॥ पुरोवर्त्तिनोनिर्द्देशे ॥ असौपुमान् । असौस्त्री । अदः कुलम् ॥
अदाता । त्रि । कृपणे । दानशक्तिरहिते ॥ यथा । अदाताप्रुरुषस्त्यागीस्वधनं त्यज्यगच्छतीति ॥
अदान्त । त्रि । तपःक्लेशासहिष्णौ । अकृतबाह्येन्द्रियनिग्रहे ॥
अदाह्यः । पुं । परमात्मनि ॥ त्रि । दहनानर्हे वस्तुनि ॥
अदिति । स्त्री । भुवि ॥ देवमातरि ॥ पार्वत्याम ॥ पुनर्वसुनक्षत्रे ॥ त्रि । अखण्डे ॥ दितिभिन्ना अदितिः ॥ नञोदाञोडितिरिति शाकटायनोक्ते डिति प्रत्ययान्तोवा । अदनाददितिर्वा ॥
अदितिनन्दन. । पुं । देवे ॥ अदितेर्नन्दनइतिविग्रहः । कृद्योगाचषष्ठीसमस्यतइतिसमास ॥
अदिती । स्त्री । अदित्याम् ॥ कृदिका

रादित्वान्नदृत्यदितिशब्दान्ङीष् ॥

अदीनः । त्रि । उदारे ॥ नदीन. ॥

अदीनात्मा । त्रि । अतिव्यसनपरम्पराया मप्यक्षुभितान्तःकरणे ॥ अदीनआत्मायस्य ॥

अदृढ' । त्रि । अस्थिरे ॥

अदृक् । त्रि । अन्धे ॥ अक्षे ॥ नदृगस्य ॥

अदृश्यम् । न । द्रष्टृरूपे । अधिष्ठानचिद्रूपे ॥ त्रि । इन्द्रियागम्ये ॥ यथा । कन्याद्रेरतिकोमला त्रिभुवनव्याप्ताप्यदृश्याजनैरिति ॥ नदृश्य. ॥

अदृष्टम् । न । भाग्ये । प्राग्जन्मकर्मणि ॥ महीभुजां वह्नितोयादिजेभये ॥ आदिना हुताशनोजलंव्याधिर्दुर्भिक्ष मरणंतथा । अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाःशलभाद्ययोशृण्वन्ते।भयहेतुत्वाद्भयम् अदृष्टहेतुकत्वाददृष्टम्॥ त्रि । अवीक्षिते ॥ यथा । अदृष्टदर्शनो त्कण्ठादृष्टेविच्छेदभीरुतेति ॥

अदृष्टपूर्वः । त्रि । पूर्वमदृष्टे ॥ पूर्वंदृष्टो दृष्टपूर्वं । सुप्सुपेतिसमासः । ततो नञ्समासः ॥

अदृष्टभेदः । पुं । गुणपरिणामे ॥

अदृष्टिः । स्त्री । सरोषवक्रदृष्टौ । क्रूरदृष्टौ ॥ विरुद्धादृष्टिरदृष्टिः ॥

अदृष्टिका । स्त्री । सरोषवक्रदृष्टौ ॥

अदेवमातृकः । पुं । नदीमातृकदेशे ॥

अद्मः । पुं । पुरोडाशे ॥ अत्ति अद्यतेवा। अदभक्षणे । गनगम्यद्योरितिगन् ॥

अद्धा । । । तत्त्वे ॥ सत्यात । स्फुटे ॥ अवधारणे ॥ अतिशये ॥ अतसन्ततगमनधयति दधातिवा । विच ॥

अद्भुतम् । न । उत्पातभेदे ॥ विस्मये । चेतसोविस्मयाख्यविकारे ॥ पुं ।शृङ्गारादिनवरसान्तर्गतरसभेदे ॥ अत्आकस्मिकार्थेऽव्ययम् । तस्यभवनम् । अदिभुवोडुतच ॥

अद्भुतस्वनः । पुं । महादेवे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अद्मनिः । पुं । पावके ॥ अग्नौ ॥ अत्ति। अद° । अदेर्मुट्चेत्यनि. ॥

अद्मरः । त्रि । बहुभोक्तरि । भक्षके ॥ अत्ति। अदभक्षणे । सृघस्यदः क्मरच् ॥

अद्य । । । इदानीम् । वर्त्तमानदिने ॥ अस्मिन्नहनि । सद्यः परुत्परार्य्यैषम इतिइदमोऽश्भावोद्यश्चनिपात्यते॥

अद्यतनः । पुं । कालप्रभेदे । अतीतायाराचेरन्त्ययामेन आगामिन्याराचेराद्ययामेनचसहितेदिवसे ॥ अतीतराचेरन्त्ययामद्वयेन आगामिरात्रेराद्ययामद्वयेनचसहिते दिवसे॥ त्रि। अद्यभवे ॥ सायञ्चिरमित्यादिनाट्युट्युलौतुट्च ॥

अद्यत्वे । । । इदानीमित्यर्थे ॥

अद्यश्वीना । स्त्री । आसन्नप्रसवायाम ॥ अद्यश्वोवाविजायते । अद्यश्वीनावष्ट ब्ध इतिखप्रत्ययान्तः साधुः ॥ अवष्टब्ध माचेवानिपातनम् ॥ त्रि । आसन्न मृत्युके ॥

अद्रिः । पुं । पर्वते ॥ शाखिनि ॥ सूर्ये ॥ मानभेदे ॥ अत्ति अद्यतेवा । अद भक्षणे । अदिशदीतिक्रिन् ॥ सप्तांके ॥

अद्रिकर्णी । स्त्री । अपराजितायाम् ॥

अद्रिकीला । स्त्री । भूमौ ॥ अद्रयः कीलायस्याम् ॥

अद्रिकूटः । पुं । देव्याःस्थानविशेषे ॥ यथा । अद्रिकूटेमहायोगी रुद्राणी परमेश्वरीति ॥

अद्रिजम् । न । शैलजे । शिलाजतुनि ॥ त्रि । अद्रिसम्भवे ॥ अद्रौजातम् । जनी । सप्तम्यांजनेर्डः ॥ अद्रेर्वा जातम् । पञ्चम्यामितिडोवा ॥

अद्रिजतु । न । शिलाजतुनि । शैलनिर्यासे ॥ अद्रेर्जत्विव । षष्ठीतत्पुरुषः ॥

अद्रिजा । स्त्री । पार्वत्याम् ॥ अद्रेर्जाता । जनी । पञ्चम्यामजाताविति ड ॥ सैंहलीवृक्षे ॥

अद्रिजित् । पुं । वासवे ॥ अद्रीनजयति । जि० । सत्सूद्विषेतिक्विप । तुक् ॥

अद्रितनया । स्त्री । पार्वत्याम् ॥ अद्रेः तनया ॥

अद्रिभिद् । पुं । मघवति । इन्द्रे ॥ अद्रीन् गोत्रान्भिनत्ति । भिदे क्विप् तुक् ॥

अद्रिभूः । पुं । आखुकर्णीलतायाम् ॥

अद्रिराजः । पुं । हिमाद्रौ ॥ अद्रीणांराजा । टच् ॥

अद्रिसारः । पुं । लोहे ॥ अद्रे सार ॥

अद्रीश. । पुं । हिमाद्रौ ॥ शिवे ॥ अद्रीणामीशः ॥

अद्रोह. । पुं । द्रोहाभावे ॥ नद्रोहः ॥ त्रि । तद्वति ॥ अद्रोहोऽस्यास्ति । अर्शआद्यच ॥

अद्वयम् । त्रि । स्वगतभेदशून्ये । अद्वितीये ॥ पु । बुद्धे ॥

अद्वयकारणम् । न । जगतोऽभिन्ननिमित्तोपादानेब्रह्मणि ॥

अद्वयवादी । पु । बुद्धे ॥ वैदान्तिके ॥ अद्वयमद्वैतवदत्यवश्यम् । आवश्यकेणिनि. ॥ त्रि । अद्वयवक्तरि ॥

अद्वितीय । त्रि । केवले । एकस्मिन् ॥ न । विजातीयभेदरहिते आत्मतत्त्वे ॥ नविद्यतेद्वितीयोऽस्य ॥

अद्वेष्टा । त्रि । द्वेषाभावविशिष्टे ॥ सर्वाणिभूतान्यात्मत्वेनपश्यन्नात्मनोदुःखहेतावपिप्रतिकूलबुध्यभावाद्योनद्वेष्टितस्मिन् ॥

अद्वैत । त्रि । सजातीयविजातीयद्वितीयशून्ये पूर्णपरमात्मनि ॥ भेदविकल्परहिते ॥ यथा । द्वैतामतीतेनाऽनर्थं किन्त्वानन्दो महानिति । अचलौकिकदृष्टान्तःस्त्रीवाक्येनेरितःश्रुतौ ॥ स्त्रियावियुक्तस्तद्ब्रूपश्यन्कामेनपीड्यते । आलिङ्गितस्तयैकत्त्वमाप्यानन्देनतृप्यति ॥ चित्तानुरागसिद्ध्यर्थंप्रिययेतिविशेषणम् । दुष्टायांसत्यपिस्त्रीत्वेचेतोनैवानुरज्यति ॥ चेचागमादिकवाह्यगृहकृत्यंतथान्तरम् । आलिङ्गितःसुखाविष्टोनवेत्तिद्वयमप्यसौ । ... नतद्वानिरुद्धोस्मिन्तोपरिस्वजनःअप्राप्यचित्तविक्षेपमद्वात्म्यानन्दसागरे ॥ एवमुमौसुषुप्तौधाम्नि ... परमात्मना । नवहिर्जागरंनान्तः स्वप्नःचद्वैतमीच्यते ॥ आनुकूल्यमाधिकं ... द्वैतं ना दर्शनतोनहि । ततःकामभयाभावादात्मानन्देनिमज्जतीति ॥

अद्वैतवादी । पुं । वुद्धे ॥ त्रि । विवेकिनि ॥ ब्रह्मात्मैक्यवादिनि ॥ अस्यमतं यथा । ब्रह्मैवसत्यम्प्रत्यक्षादिप्रमाणैः सिद्धम । विश्वन्तुब्रह्मण्यारोपितम् । यथारज्जौ रज्जुस्वरूपाज्ञानातसर्पवत् प्रतिभाति तथाऽब्रह्मस्वरूपाज्ञानात् विश्वंवस्तुवत् प्रतिभाति । प्रकृतिर्जीवस्यापिपर्यवसाने ब्रह्मैव ब्रह्मान्यतसद्वस्तुनास्तीति ॥

अध क्रिया । स्त्री । अपमाने ॥ अधःकरणम् । कृञ शच ॥

अधःक्षिप्तम । त्रि । न्यक्षिप्ते । अधस्थितवस्तुनि ॥

अधःपुष्पी । स्त्री । अवाकपुष्पिकायाम् । छोठाहुली इतिगौडभाषा ॥ गोजिह्वायाम ॥ अध पुष्पाण्यस्याः । गौरादित्वानङीष् ॥

अधनः । त्रि । भार्यादिषु ॥ यथा । त्रय एवाऽधनाराजन्भार्यादासस्तथासुतः । यत्तेसमधिगच्छन्तियस्यतेतस्यतद्धनमितिमात्स्ये ३१ अध्याय ॥

अधम । त्रि । कुत्सिते ॥ न्यूने ॥ पुं । उपपतिभेदे ॥ अवत्यस्मादात्मानम् । अवरक्षणादौ । अवद्यावमाधमार्वरेफाःकुत्सितेइत्यमप्रत्ययेनिपातः । तचैववकारस्यपक्षेधकार ॥ यद्वा । नधम्यते धमतिवा । धमध्मानेसौत्रः । घञपचाद्यच्वा ॥ यद्वा । अधोभवः । अवेधसोर्लोपश्चेतिस्वामी ॥

अधमर्णः । त्रि । ऋणिनि । ऋणकारिणि ॥ अधमदुःखमदृणं यस्य ॥ अधमऋणेइतिऋणमाधमर्णेइतिनिपातनात्सप्तम्यन्तोत्तरपदेनवासमासः ॥

अधमर्णिकः । त्रि । अधमर्णे ॥

अधमा । स्त्री । नायिकाभेदे ॥

अधमाङ्गम । न । चरणे । पादे ॥

अधर । पुं । ओष्ठे । उत्तराधरोष्ठमात्रे ॥ अधरलक्षणं यथा । पाटलोवर्तुल स्निग्धोरेखाभूषितमध्यभू । सीमन्तिनीनामधरोराज्ञाञ्चैवप्रियाभवेत् ॥ श्याम स्थूलोधरोष्ठ स्याद्दैधव्य कलहप्रद । मसृणोमत्तकाशिन्या श्चोत्तरोष्ठ सुभोगद ॥ इतिसामुद्रकम ॥ पुं । न । स्मरागारे । रतिमन्दिरे ॥ चि । हीने ॥ तले । अनूर्द्धे॥ नधरति । धृञ्धारणे । पचाद्यच ॥ यद्वा । धरादुत्रातकठिनाद्दाऽन्य ॥ न म्रियते । धृङ्अनवस्थाने । पुंसीति-घोवा । नञ्समास ॥ धरासम्बन्धरहिते ॥ हीनवादिनि ॥

अधरत । । । अधोभागे ॥ अधरस्मात् । तसिल् ॥

अधरमधु । न । अधरामृते । वक्त्रासवे॥

अधरस्तात् । । । अधोभागे । अधरत ॥

अधरा । स्त्री । अधोदिशि ॥ नीचायाम् ॥

अधरात । । । अधोभागे ॥ उत्तराधरदक्षिणादातिरितिस्वार्थेआति । वसत्यागतोरमणीयवा ॥

अधरीकृत । चि । तिरस्कृते ॥

अधरीण । चि । धिक्कृते । तिरस्कृते ॥

अधरेण । । । अधो दिशि देशे कालेच । एनवन्यतरस्यामदूरेऽपंचम्या इतिस्वार्थे एनप् । वसति रमणीयवा ॥

अधरेद्यु । । । परस्मिन्नहनि ॥ अधरस्मिन्नहनि । सद्य परुदित्यादिनाऽधरशब्दात् एद्युस्प्रत्ययोनिपात्यते ॥

अधर्म । पुं । ब्रह्मवधादिनिषिद्धकर्मजन्ये पापे ॥ वेदेनिषिद्धे । नानाविधदुःखसाधने । धर्मविरोधिनि ॥ धर्मविरुद्धोऽधर्म ॥ न । परब्रह्मणि ॥ धर्मरहितत्वात् ॥ चि । ब्रह्मविदि ॥

अधर्मज्ञ । चि । धर्मविचारनिष्ठारहिते । तत्त्वासारत्वप्रत्ययवति ॥

अधर्ममित्र । पुं । कलियुगे ॥ अधर्मोमित्रयस्य ॥ चि । अधर्मप्रिये । मिथ्यावादिनि ॥

अधर्मास्तिकाय । पु । धर्मप्रतिवन्धकृति ॥

अधश्चर । पुं । चौरे ॥ चि । अधोगामिनि ॥

अधश्शय्या । स्त्री । अखट्वाशयने ॥

अधश्शल्य । पुं । अपामार्गे । ऊगाइति ख्याते ॥

अधश्शाख । पुं । ससाराश्वत्थवृक्षे ॥ अधइति अर्वाचीना कार्योपाधयोहिरण्यगर्भाद्यागृह्यन्ते ते नानादिक्कमहत्त्वात् शाखाइवशाखाअस्येतिव्युत्पत्यामायामय ससाराश्वत्थवृक्षोऽभ

श्चाख्यशब्देनोच्यते ॥

अधः । त । पाताले ॥ नीचैरर्थे । तले । अधोभागे ॥ स्मरालये ॥ अधरस्मिन् अधरस्याम् अधरस्मात अधरस्याः अधरः अधरावा । वसत्यागतोरम गोयवा । पूर्वाधरावराणामित्यसिर धादेशश्च ॥

अधस्तात् । त । कामगेहे । योनौ ॥ अनुखार्थे । अधोभागे ॥ अधरस्मिन् अधरस्याम अधरस्मात् अधरस्याः अधरः अधरावा दिक् । दिक्शब्दे भ्यःसप्तमोपञ्चमीत्यादिनाअस्ताति प्रत्ययस्तद्योगेनास्तातिचेत्यधरस्या धादेशः ॥

अधस्ताद्गमनम् । न । अधर्मेणसुतला दिषुगमने ॥ अधोगमने ॥

अधार्मिकः । त्रि । पापिनि । अधर्मेण व्यवहर्त्तरि । शास्त्रप्रतिषिद्धागम्यागमनाद्यनुष्ठातरिमानुषे ॥ नाधार्मिके वसेद्ग्रामेनव्याधिबहुलेभृशमिति मनुः ॥

अधार्ष्ट्यम् । न । असामर्थ्ये ॥

अधि । त । अधिकारे ॥ ईश्वरे ॥ अधिकृत्यार्थे ॥ आधिक्ये ॥ उपरि ॥ अधिकार्थे ॥ यथा अधिमास । अधिको मासइत्यर्थः ॥

अधिकम् । न । अर्थालङ्कारभेदे ॥ य-



था । महतोर्यन्महीयांसावाश्रिताश्रययोः क्रमात । आश्रिताश्रयिणौ स्यातांतनुत्वेप्यधिकन्तुतत् ॥ आश्रितमाधेयम । आश्रयस्तदाधारः । तयोर्महतोरपि विषयेतदपेक्षयातनू अप्याश्रयाश्रयिणौ प्रस्तुतवस्तुप्रकर्ष विवक्षया यथाक्रमयदधिकतरतांव्रजतस्तद्विद्द्विविध मधिकनाम । क्रमेणोदाहरणम् । अहोविशालभूपाल भुवनत्रितयोदरम् । मातिमातुमशक्योपियशोराशिर्यदत्रते ॥ युगान्त कालप्रतिसंहृतात्मनोजगन्तियस्यां सविकाशमासत । तनौममुस्तत्रनकैटभद्विषस्तपोधनाभ्यागमसम्भवा मुद इति ॥ फले ॥ अध्यारूढम् । अधिकमिति अध्यारूढशब्दात्कन उत्तरपदलोपश्च ॥ * ॥ हेतूदाहरणाधिकमधिकम ॥ न्या ५ । ५६ । हेतूदाहरणेत्युपलक्षणम् दूषणाद्यधिकमपि बोध्यम् । तथाच । कृतकर्तव्यापुनरुक्ताभिधानमितिफलितम् । अनुवादस्तु नकृतकर्त्तव्य साभिप्रायत्वात् । प्रतिज्ञाधिकयन्त्वपुनरुक्तम् धूमादालोकात् महानसवच्चत्वरवदित्यादिक न्तुविनासमयबन्धदार्ढ्यादिभ्रमादुक्त मधिकम् । यथा । महानसमहानसवदितितुनाधिकङ्किन्तु पुनरुक्तम् ॥

चि। उत्कृष्टे॥ अतिरिक्ते। समधिके॥

अधिकरणम्। न। आधारकारके। यत्रभवतितस्मिन्। कर्त्तृकर्मद्वाराक्रियाश्रयइत्यर्थः॥ एकन्यायोपपादने॥ मीमांसाग्रन्थे॥ अधिक्रियते वेदविचारोऽस्मिन्ननेनवेत्यधिकरणवेदविचारग्रन्थात्मिकामीमांसेत्यर्थः॥ यथाहु। विषयोविषयश्चैवपूर्वपक्षस्तथोत्तरम्। निर्णयश्चेतिपञ्चाङ्गशास्त्रेऽधिकरणंस्मृतमिति॥ एवक्रमेणविवेचनमत्राधिक्रियतइत्यधिकरणम्॥ अधिपूर्वात्कृञोल्युट्॥

अधिकरणविचाल·। पुं। द्रव्यस्यसख्यान्तरापादने॥ यथा। एकराशिंपञ्चधाकुरु। अनेकराशिमेकधाकुरु। सएवाधिकरणविचालोयदेकमनेकंक्रियते यदप्यनेकमेकंक्रियते सोप्यधिकरणविचालइतिभाष्यम्॥

अधिकरणसिद्धान्त। पुं। सिद्धान्तविशेषे॥ यथा। यत्सिद्धावन्यप्रकरणसिद्धिः सोधिकरणसिद्धान्तः। १। ३० यस्यार्थस्यसिद्धौजायमानायामेव अन्यस्य प्रकरणस्य सिद्धिर्भवति सोधिकरणसिद्धान्तइत्यर्थः॥

अधिकर्त्तव्येम्। न। अधिकरणेयद्भवतितस्मिन्॥

अधिकर्द्धि·। चि। मत्तासम्प्रयुक्ते। समृद्धे॥ इत्यमरः। अधिकाऋद्धिरस्य॥

अधिकर्म्मिक·। पुं। हट्टाध्यक्षे। हाटका चौधरी इतिभाषाप्रसिद्धे॥

अधिकाङ्गम्। न। कञ्चुकादिनिबन्धने। सारसने। कञ्चुकादिदार्ढ्यार्थंशूरैर्मध्यकायेनिबद्धेपट्टिकादौ॥ चि। एकविंशत्यङ्गुल्यादौ॥ अधिकमङ्गात्॥

अधिकारः। पुं। विधिपुरुषसम्बन्धे॥ प्रक्रियायाम्। राज्ञांछत्रधारणादिव्यापारे॥ अधिआधिक्यस्यकरणम्। कृञोभावेघञ्॥ अधिकृतदेशादौ॥ यथा। निजाधिकारोयम्। अयञ्चपराधिकारः॥ प्रकरणे॥ यथा। नैमित्तिकोयप्रायश्चित्ताधिकारः॥ क्रियाजन्यफलभागित्वरूपे प्रतिकर्मणिभिन्ने। स्वामित्वे॥ यथा। सर्वेस्युरधिकारिण इतिस्मृतिः॥ प्रभुयोजने॥ व्याकरणमतेपूर्वसूत्रस्थितपदस्यपरसूत्रेषूपस्थितौ। अनुवृत्तौ॥ सचिविधोयथा। सिंहावलोकिताख्यश्चमण्डूकप्लुतिरेवच। गङ्गास्रोतइतिख्यातश्चाधिकारस्त्रयोमता इति॥

अधिकारविधि·। पुं। कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधकेविधौ॥ कर्मजन्यफलस्वाम्यञ्चकर्मजन्यफलभोक्तृत्वम्। सचयजेतस्वर्गकाम इत्यादिरूपः। स्वर्गमुद्दिश्ययागविद्धिताऽनेनस्वर्गकामस्ययाग

गजन्यफलभोक्तृत्वप्रतिपाद्यते । य
स्याहिताग्नेरग्निर्गृहान्दहेत् सोऽग्न
येक्षामवतेऽष्टाकपालंनिर्वपेदित्या-
दिनाऽग्निदाहादौनिमित्ते कर्मविद
धतानिमित्तवत:कर्मजन्यपापक्षयरू
पफलस्वाम्यप्रतिपाद्यते । एवमहरहः
सन्ध्यामुपासीतेत्यादिनाशुचिविहि
तकालजीविन सन्ध्योपासनजन्यप्रत्य
वायपरिहाररूपफलस्वाम्यबोध्यते ।
तत्रफलस्वाम्यतस्यैवयोऽधिकारविशि
ष्टः । अधिकारश्चसएव यद्विधिवाक्ये
षुपुरुषविशेषणत्वेनश्रूयते । यथाका
म्येकर्म्मणिफलकामना । नैमित्तिके
निमित्तनिश्चयः । नित्येसन्ध्योपास
नादौ शुचिविहितकालजीवित्वम् ।
अतएवराजाराजसूयेनस्वाराज्यका-
मो यजेतेत्यनेनविधिवाक्येनस्वारा
ज्यमुद्दिश्यराजसूयंविदधतापि नस्वा
राज्यकाममात्रस्य तत्फलभोक्तृत्वं प्र
तिपाद्यते । किन्तुराज्ञःसतःस्वाराज्य
कामस्यैव राजत्वस्याप्यधिकारिविशे
षणत्वेनश्रवणात् । विशेषःशास्त्रे ॥

अधिकारी । पुं । प्रमातरि ॥ यथा । वि
धिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधि
गताखिलवेदार्थोऽस्मिन्जन्मनिजन्मा
न्तरेवा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरस्सरंनि
त्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानु



ष्ठानेननिर्गताखिलकल्मषतयानिता
न्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्प
न्नः प्रमातावेदान्ताधिकारीतिलक्ष
णलक्षिते पुरुषे ॥ त्रि । अधिकारवि
शिष्टे । प्रभौ ॥ अधिकारोऽस्त्यस्य ।
अतइनिठनाविती निः ॥

अधिकार्थवचनम । न । स्तुतिनिन्दाफ
लकेऽध्यारोपितार्थवचने ॥

अधिकृतः । त्रि । अध्यक्षे । आयव्ययाऽवे
क्षके ॥ व्यापारिते ॥ कृताधिकारद्र
व्ये ॥ अधिअधिकउपरिवाक्रियतेस्म
क्तः ॥

अधिक्रमः । पुं । आक्रमणे ॥ अधिक्रम
णम् । क्रमुपादविक्षेपे । घञ् ॥ अधि
क्रम्यते वा कर्मणिघञ् । नोदात्तेति
वृद्ध्यभावः ॥

अधिक्षिप्तः । त्रि । स्थापिते । प्रणिहिते
॥ कुत्सिते ॥ भर्त्सिते । प्रतिक्षिप्ते ।
कृताक्षेपे ॥ अधिक्षिप्यतेस्म । क्षिप
प्रेरणे क्त ॥

अधिक्षेपः ।पुं । तिरस्कारे ॥

अधिगतः । त्रि । प्राप्ते ॥ यथा । अधि
गतपरमार्थाः पण्डिताइति । अधि
गम्यतेस्म । गम्लृ ० । क्तः ॥

अधिगमः । पुं । साक्षात्कारे । प्राप्तौ ।
स्वीकरणे ॥ अधिगमनम् । गम्लृ ।
घञ् ॥

अधित्यका । स्त्री । शैलस्योर्ध्वभूमौ ॥ अद्रेरध्यारूढाभूमिः । उपाधिभ्यांत्य कन्नासन्नारूढयोरितित्यकन् । त्य कनश्वनिषेधइतिनेत्त्वम् ॥

अधिदैवतम् । न । पुरुषे ॥ पुरुषोहिर ण्यगर्भः दैवतान्यादित्यादीन्यधिकृ त्यचक्षुरादिकरणान्यनुगृह्णातीति तथोच्यते ॥ देवताविषयदर्शने ॥ दे वताया अधियत्तदधिदैवतम ॥

अधिनाय । पुं । गन्धे ॥

अधिपः । त्रि । प्रभौ ॥ राज्ञि ॥ अधि पाति । पारक्षणे । आतश्चोपसर्गइ तिकः ॥

अधिपति । पुं । प्रभौ ॥ राज्ञि ॥ अधि ष्ठायपालयितरि ॥ अधि पाति । पार क्षणे । पातेर्डतिः ॥

अधिभू । पुं । प्रभौ ॥ अधिभवति । भू सत्तायाम । भुव' सत्तान्तरयोरिति क्विप् ॥

अधिभूतम् । न । चरेभावे ॥ चरतीति चरोविनाशी । भावोयत्किञ्चिज्जनि मद्वस्तुभूत प्राणिजातमधिकृत्यभव तीतितथोच्यतइतिस्वामी ॥

अधिमांसक । पु । दन्तरोगविशेषे ॥ यथा । हानव्येपश्चिमेदन्ते महान्शो थोमहारुज. । लालास्त्रावीकफकृतो विज्ञेय सोधिमांसक' ॥ ११ ॥

अधिमासः । पुं । असङ्क्रान्तिमासे । रविसङ्क्रान्तिरहितेचान्द्रमासे । म लमासे ॥ यथा । असक्रान्तमासोऽधि मास' स्फुट स्यादिति । अपिच । द्वा त्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनै षोडशभिस्त- था । घटिकानांचतुष्के णपतति ह्यधि मासक इति ॥ एतच्चसम्भवार्थंनतु नियमार्थम् ॥ अधिअधिकोमास ॥

अधियज्ञ । पु । विष्णौ ॥ अधियज्ञो ह मेवात्रदेहेइतिवचनात सर्वयज्ञा धिष्ठाता सर्वयज्ञफलदायक' सर्वय ज्ञाभिमानिनीविष्णवाख्यादेवता । यज्ञोर्हिविष्णु सचअधियज्ञ. । अय वासुदेवएव न मद्भिन्न. कश्चित । अतएव परब्रह्मण सकाशातअत्यन्ता भेदेनैवात्मामतिपत्तव्यइति । सचात्र नुष्यदेहे यज्ञरूपेण वर्त्तते । बुध्या दिव्यतिरिक्तो विष्णुरूपत्वात् मनुष्य देहे च यज्ञावस्थानम् यज्ञस्यमनु ष्यदेहनिर्वर्त्त्यत्वादित्यर्थ' ॥

अधियोग' । पुं । यात्रायोगान्तरे ॥ य था । बुधगीष्पतिभार्गवानांमध्ये द्वौ ग्रहौ चेत्केन्द्रे अथवापञ्चमनवमेस्था ने स्थानभेदेन स्थानैक्येन वा स्थि- तौ स्यातां तदाऽधियोगोभवति तदा यात्रुर्जयोभवेत ॥

अधिरथ । पुं । कर्णस्यपितरि ॥

अधिराट् । पुं । सम्राजि ॥ अधिअधिक राजते । राज् । क्विप् ॥

अधिराज्यभाक् । पुं । अधिराजि ॥

अधिरूढम् । न । अङ्कुरे ॥ तालबीजाङ्कुरास्थिमज्जार्द्रौ ॥ चि । आक्रान्ते ॥

अधिरूढिः । स्त्री । आरोहणे ॥

अधिरोहिणी । स्त्री॥ वंशकाष्ठादिरचितेसोपाने । नि.श्रेण्याम् ॥ अधिरुह्यतेऽनया । रुहप्रादुर्भावे । करणे ल्युट् ॥

अधिवचनम् । न । नामनि । संज्ञायाम् ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अधिवास । पुं । गन्धमाल्याद्यै. संस्कारे ॥ निवासे ॥ अधिवसनम् । वस । घञ ॥

अधिवासनम् । न । पूजार्थेगन्धमाल्यादिभि संस्कारे । गन्धमाल्यादिभिरङ्गसंस्कारे ॥ अधिकवास्यते । वासउपसेवायाम् । चुरादिः । ल्युट् ॥

अधिवासितः । त्रि । सञ्जातगन्धे ॥ कृताधिवासे ॥

अधिविन्ना । स्त्री । अनेकभार्यस्यप्रागूढायांस्त्रियाम् । कृतसापत्निकायाम् । अध्यूढायाम् ॥ अधिउपरिविन्नलाभो यस्याः ॥ यद्वा । अधिकाविन्नालब्धा य स्याः ॥

अधिश्रयणम् । न । चुल्ल्याद्युपरिस्थापने ॥

अधिश्रयणी । स्त्री । चुल्ल्याम् । अग्न्यन्ते ॥ इत्यमरः ॥ अधिश्रीयतेऽत्र । श्री ञ पाके । अधिकरणेल्युट् । ङीप् ॥

अधिष्ठाता । त्रि । अध्यक्षे । प्रवृत्तिनिवृत्तिकारणे॥ योयस्यप्रवर्त्तकोनिवर्त्तकश्चसतस्याधिष्ठातेतिव्यवहारः ॥

अधिष्ठानम् । न । पुरे ॥ चक्रे ॥ प्रभावे ॥ अध्यासने ॥ स्थाने । कल्पनाधारभूते । इच्छाद्वेषसुखदुःखचेतनाद्यभिव्यक्तेराश्रये । कूटस्थचैतन्ये । अस्मातेवस्तुनि ॥ अधितिष्ठन्ति भूतान्युपादानकारणत्वेनेतिव्याख्यानात् ॥ शरीरे ॥ जीवरूपेणप्रविश्यसदैवाधितिष्ठत्यस्मिन्नितिव्याख्यानात । अध्यस्तस्यस्वरूपे ॥ अधिष्ठीयतेऽनेनास्मिन्वा । ष्ठा । भावकरणादौल्युट्॥ अधिष्ठानावशेषोहिनाशः कल्पितवस्तुनइतिन्यायः ॥

अधिष्ठितः । त्रि । स्थिते ॥ आश्रिते ॥

अधीतः । त्रि । पठिते । कृताध्ययने ॥ अधिगते । प्राप्ते ॥ अधिपूर्वादिणो गधर्थाकर्मकेतिक्तः ॥

अधीतिः । स्त्री । अध्ययने । पठने ॥

अधीती । त्रि । अध्ययनविशिष्टे । अधीतवति ॥ अधीतमनेन । इष्टादिभ्यश्चेतिकर्त्तरीनिः ॥

अधीनः । त्रि । आयत्ते ॥ इनमधिगतः अत्याद्यय इतिसमासः । अधिउपरि इनोऽस्येतिवा ॥

अधीयानः । त्रि । पठमाने ॥ वेदाध्ययनवति ॥ यथा । अधीयानः पण्डितम्मन्यमानोयोविद्ययाहन्तियशः परेषाम् । तस्यान्तवन्तस्तुभवन्तिलोकानचास्यतद्ब्रह्मफलन्ददातीति महाभारतम् ॥

अधीरः । त्रि । कातरे ॥ चञ्चले ॥ न धीरोधैर्य्यंयस्य ॥

अधीरा । स्त्री । विद्युति ॥ मानिनीभेदे ॥ यथा । प्रातेऽन्यासङ्गिनिपतौ खण्डितेर्ष्याकषायिता । अधीराश्रु विमुञ्चन्तीविज्ञेयाचाचनायिकेतिद शरूपके ॥

अधीश । त्रि । प्रभौ । ईश्वरे ॥ यथा । अधीशेनाविनंविप्रंनाशयन्तिजिन-श्च । ततपातून्पातिविश्वेशस्तस्माल्लोकहितोभवेदिति ॥ जिनश्चेवोनाशयितुमिच्छवः । नश्यतिरंचान्तर्भावितण्यर्थः ॥ कामे ॥

अधीश्वरः । पुं । बुद्धे ॥ पुं । स्त्री । प्रणताखिलसामन्तावनिपाले । सर्वसिद्धिदि तत्पवशकारिणि ॥ अधिकईश्वरः । राजातुप्रणताशेषसामन्तःस्यादधीश्वरः ॥ स्त्रियामधीश्वरी ॥



अधीष्टः । पुं । सत्कारपूर्वकेव्यापारे ॥ त्रि । सत्कृत्यव्यापारिते ॥

अधुना । ७ । सम्प्रतीत्यर्थे ॥ अस्मिन्काले । अधुनेतिनिपातितः इदमोऽश भावोधुनाचप्रत्यय ॥

अधुनातनम् । त्रि । इदानींतने । वर्त्तमानकालवृत्तौ ॥ अधुनाभवः । सायंचिरमितिट्युप्रत्ययः । स्त्रियांङीपि । अधुनातनी

अधृष्ट । त्रि । लज्जावति । शालीने ॥ नधृष्टः ॥

अधृष्यः । त्रि । प्रगल्भे । अधर्षणीये । अनभिभवनीये ॥ नधृष्य ॥

अधृष्या । स्त्री । नदीप्रभेदे ॥ नधृष्या ॥

अधोंशुकम् । न । परिधेयवस्त्रे । अन्तरीये ॥ अध अधोभागस्यअंशुकम् ॥

अधोक्षः । त्रि । जितेन्द्रिये ॥

अधोक्षजः । पुं । विष्णौ ॥ अधः अक्षजं ज्ञान यस्मादितिव्युत्पत्तेः ॥ अधः कृतमक्षजमैन्द्रियकंज्ञानयेन ॥ अधोक्षाणांजितेन्द्रियाणांजायते प्रत्यक्षो भवतिवा ॥ अक्षमिन्द्रियं अधइन्द्रिय पादौ ताभ्यांजातः । अन्येभ्योपिदृश्य तइतिडः ॥ अधोनक्षीयते जातुयस्मात्तस्मादधोक्षजइत्युयोगपर्वोक्तिः । यद्वा ॥ अधःशब्देनपृथिवीवाचिना-अण्डस्याधरकपालमुच्यते धुवाचके

नाक्षशब्देनचोपरितनकपालमुच्यते । ताभ्यांशब्दाभ्यांतन्मध्यंलक्ष्यते । तथाचाधोक्षयोरण्डस्याधरकपालोत्तरकपालयोर्मध्येवैराजरूपेणजायतेइत्यधोक्षजः । सप्तम्यांजनेर्डइतिड प्रत्ययइत्यभिप्रेत्यनिर्वचनान्तरमाहभाष्यकारः । द्यौरन्तरीक्षं पृथिवीचाधस्तयोर्यस्माद्जायतमध्ये वैराजरूपेणेतिवा अधोक्षजः ॥

अधोगतिः । स्त्री । नरके ॥

अधोघण्टा । स्त्री । अपामार्गे ॥ इति रत्नमाला ॥

अधोजिह्विका । स्त्री । तालुमूलस्थक्षुद्रजिह्वायाम् ॥

अधोदृष्टि । त्रि । निजविनयख्यापनाय सततमधएवनिरीक्षणकर्त्तरि । विनीते ॥ अधो दृष्टिर्यस्य सः ॥

अधोभुवनम् । न । पाताले । वलिसद्मनि ॥ इत्यमरः ॥ अधश्चतद्भुवनञ्च ॥

अधोमर्म । न । गुदे । गुह्यद्वारे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अधोमुख । त्रि । अवाङ्मुखे । न । नक्षत्रविशेषेषु ॥ यथा । मूलाश्लेषाकृत्तिकाश्चविशाखाभरणी तथा । मघापूर्वात्रयश्चैव अधोमुखगणः स्मृत इति ॥

अधोमुखा । स्त्री । गोजिह्वायाम् ॥

अधोलोक । पुं । पाताले ॥ अधश्चासौलोकश्च ॥

अधोवायु । पुं । अपानवायौ । पर्दे ॥

अध्यक्ष । पुं । क्षीरिकावृक्षे ॥ त्रि । अधिकृते । राज्ञोहस्त्यश्वरथपदात्यर्थादिस्थानेषुकर्मावेक्षितरिपुरुषे । आयव्ययादिनिरीक्षके ॥ अधिगतोक्षव्यवहारम् । प्रादयइतिसमासः ॥ इन्द्रियजन्यज्ञाने । प्रत्यक्षे । नियन्तरि ॥ अधिगतोऽक्षम् ॥ अधिगतोऽक्षेणवा ॥ अक्षेषु व्यवहारेषु आयव्ययचिन्तासु योगक्षेमप्रापणरूपव्यवहारेषुवा अधिकृतोऽध्यक्षः ॥ अधिकृतान्यक्षाण्यस्यवा ॥ अध्यक्ष्णोतिवा । अक्षूव्याप्तौ । पचाद्यच् ॥ अध्यक्षतिवा ॥ अध्यक्षयति प्रत्यक्षयतीति अध्यक्षशब्दात् तत्करोतितदाचष्टइतिणिजन्तात् पचाद्यच्वा ॥

अध्यग्नि । न । अध्यग्निधने ॥ । अग्निमध्ये ॥

अध्यग्निधनम् । न । विवाहकालेऽग्निसन्निधौपित्रादिभिर्दत्तधने ॥ यथा । विवाहकालेयत् स्त्रीभ्योदीयतेह्यग्निसन्निधौ । तदध्यग्निकृतसद्भिः स्त्रीधनपरिकीर्त्तितमिति ॥

अध्यण्डा । स्त्री । शूकशिम्ब्याम् ॥ भूम्यामलक्याम् ॥ अधिकमण्डवीजम-

स्या ॥

अध्यधीन । त्रि । अत्यन्तपरतन्त्रे । गर्भदासे ॥

अध्ययनम । न । पठने । विधिवद्गुरुमुखादध्यात्मादिविद्यानामक्षरस्वरूपग्रहणे । गुरूच्चारणानूच्चारणे ॥ अधीयते । इङ अध्ययने नित्यमधिपूर्व । वहुलवचनात्कर्मणिल्युट ॥ प्राङ्मुखत्वादिनियमसहितस्यपुरुषस्य ऋगादेरभ्यासे ॥ अध्ययनलक्षणापश्चासिद्धिस्तारमुच्यते । यस्यशिष्याचार्यसम्बन्धेनसांख्यशास्त्रग्रन्थतोऽर्थतश्चार्थीत्यज्ञानमुत्पद्यतेतस्य सा ध्ययनहेतुकासिद्धि. अध्ययनम ॥ किञ्च याध्ययनेनाचहृढवन्धकरेणाच । पठितव्यतदेवाशुमोचयेद्भववन्धनात् ॥ इत्युपदेशोमुमुक्षुषु ॥

अध्यर्द्धम् । त्रि । सार्द्धं ॥ अधिकमर्द्धं यस्य । अध्यारूढमर्द्धं यस्मिन्वा । प्रादिभ्योधातुजस्येतिसमासः ॥

अध्यवसाय । पुं । निश्चये । इदमित्थमेवेतिविषयपरिच्छेदे ॥ उत्साहे ॥ अध्यवसानम् । षोन्तकर्मणि घञ् । आतोयुक् ॥ अध्यवसायश्चबुद्धिव्यापारोज्ञानम । उपात्तविषयाणामिन्द्रियाणांवृत्तौसत्त्यांबुद्धे. रजस्तमोभिभवेसतिय सत्त्वसमुद्रेक. सोध्यवसा

य इतिवृत्तिरितिचाख्यायते ॥ बुद्धौ ॥ क्रियाक्रिययावतोरभेदविवक्षया सर्वो व्यवहर्त्ता आलोच्य मत्वा अहमत्राधिकृतइत्यभिमत्य कर्त्तव्यमेतन्मये त्यध्यवस्यति ततश्च प्रवर्त्तते इति लोकसिद्धम । तत्रकर्त्तव्यमितियोयनिश्चयश्चितिसन्निधावापन्नचैतन्यायाबुद्धे सोध्यवसायोबुद्धेरसाधारणव्यापार ॥

अध्यशनम् । न । अजीर्णेपरिभोजने ॥ यथा । अजीर्णेभुज्यतेयत्तुतदध्यशनमुच्यते इति ॥ अधिकमशनमध्यशनम ॥

अध्यस्त । त्रि । कृताध्यासे ॥

अध्यात्मम । न । आत्मतत्त्वे ॥ स्वभावोध्यात्ममुच्यते । अस्यार्थः । स्वोभावः स्वरूपमन्त्यक्चैतन्यम् । आत्मानकार्यकारणसघातंदेहमधि कृत्यमोक्तृतयावर्त्तमानमध्यात्ममुच्यतेइतिमधुसूदनः ॥ परस्यब्रह्मणःप्रतिदेहमन्तर्गात्मभावः स्वभावइति स्वोभावं स्वभावोध्यात्ममुच्यतेआत्मानदेहमधिकृत्यप्रत्यगात्मतयाप्रवृत्त परमार्थब्रह्मावसानवस्तुस्वभावोध्यात्ममुच्यतेअध्यात्मशब्देनाभिधीयतेइतिभाष्यकाराः ॥ स्वस्यैवब्रह्मणएवांशतयाजीवरूपेणाभवनस्वभावःसएवात्मानंदेहमधि

कृत्यभोक्तृत्वेनवर्त्तमानोऽध्यात्मशब्दे नोच्यतइत्यर्थइतिश्रीधरस्वामिनः॥ आत्मविषयदर्शने॥ करणग्रामे॥ आत्मनिइतिविभक्त्यर्थेऽव्ययीभाव। अनश्चेतिटच्। नस्तद्धितइतिटेर्लोप॥ आत्मनोऽधि आत्मविषयमध्यात्मम्॥

अध्यात्मज्ञानम्। न। आत्मानमधिकृत्य प्रवृत्ते आत्मानात्मविवेकज्ञाने॥

अध्यात्मनिष्ठः। त्रि। परमात्मस्वरूपालोचनतत्परे॥ अध्यात्मे आत्मज्ञानेनित्यः ष सिद्धिनः

अध्यात्मयोगः। पुं। विषयेभ्यः प्रतिसंहृत्यचेतस आत्मनि समाधाने॥

अध्यात्मविद्या। स्त्री। आत्मतत्त्वविद्यायाम॥

अध्यापकः। त्रि। अध्यापयतरि। उपाध्याये॥ अध्यापयति। इङ् अध्ययने ण्वुल॥

अध्यापनम्। न। ब्रह्मस्यासाधारणकर्मविशेषे। ब्रह्मयज्ञे: पाठने। विद्याप्रदाने॥ अध्यापनं ब्राह्मणस्यवृत्तिर्नामब्रह्मयज्ञ पश्चिमयन्तिमिथ्याइतिकैयट। अतोब्राह्मणेनावश्यशब्दाज्ञेयाः। नचान्तरेणव्याकरणलघुनोपायेन शब्दाःशक्याविज्ञातुमितिभाष्यम्॥

अध्यापयिता। त्रि। पाठयिता। अध्यापनकर्त्तरि। उपाध्याये॥

अध्यापित। त्रि। पाठिते॥

अध्याय। पुं। अध्ययने॥ प्रकरणे। पुराणपरिच्छेदे॥ यथा। सर्गोवर्गः परिच्छेदोद्घाताध्यायाङ्कसङ्ग्रहाः। उच्छ्वास परिवर्त्तश्चपटलः काण्डमेवच॥ स्थानप्रकरणञ्चैवपर्वाह्निकानिच॥ पुराणादौपरिच्छेदा अनेकेपरिकीर्त्तिताइति॥ त्रि। ध्यानशून्ये॥ अधीयतेऽसौ। इङ्०। नित्यमधिपूर्व.। इङश्चेतिघञ्॥ यद्वा। अधीयतेऽस्मिन्। अध्यायन्यायेति घञन्तोनिपात्यते॥

अध्यारूढम्। त्रि। समारूढे। कृतारोहणे॥ अभ्यधिके॥ अध्याङ्पूर्वाद्रुहेर्गत्यर्थाकर्मकेत्यादिनाकर्त्तरिकर्मणिवाक्तः। ढत्वधत्वष्टुत्वढलोप दीर्घाः॥

अध्यारोपः। पुं। असदभूतायांरज्जौ सर्पारोपवत् वस्तुन्यवस्त्वारोपे। सच्चिदानन्दानन्ताद्वयब्रह्मण्यज्ञानादिसकलजडसमूहस्यारोपणे॥

अध्यावाहनिकम्। न। पितृगृहात्भर्तृगृहंनीयमानयास्त्रियालब्धेधने॥ यथा। यत्पुनर्लभतेनारीनीयमानापितृकात्। अध्यावाहनिकनामतत्स्त्रीधनमुदाहृतमितिकात्यायनः॥ पैतृकादित्यकशेषात्पितृमातृकुला

तयल्लभतेधनमितितदर्थः ॥

अध्याशनम् । न । भुक्तस्योपरिभूयोभोजने ॥ यथा । राजन्नध्याशन त्वाज्यत्वाज्यतुविषमाशनम् । त्यजेद्दिश्द्दमाहार तत्सर्वंदोषकारकमिति ॥

अध्यासः । पुं । स्मृतिरूपेपरत्रपूर्वदृष्टावभासे । यत्रयदध्यासस्तद्विवेकाग्रहणनिबन्धने भ्रमे । यत्रयदध्यासस्तस्यैव विपरीतधर्मत्वकल्पनायाम् । अन्यत्रान्यधर्मावभासे । वस्तुन्यन्यवुद्धौ । अविद्यायाम् ॥ आसनम् । आसउपवेशने । घञ् । अधिउपरिआसः ॥

अध्यासितः । त्रि । निषेविते ॥ अधिष्ठिते ॥

अध्याहरणम् । न । ऊहने । तर्कणे ॥ अध्याङ् पूर्वाद्धरतेर्ल्युट् ॥

अध्याहारः । पुं । तर्के । ऊहे । आकांक्षासमापकपदानुसन्धाने ॥ अध्याहरणम । अध्याङ् पूर्वाद्धृञोभावेघञ् ॥ अपूर्वोत्प्रेक्षणे ॥

अध्युषितः । त्रि । उषिते । वसाइति भाषा ॥

अध्युष्टः । त्रि । सार्द्धत्रिसंख्यायाम् ॥

अध्युष्ट्रः । पुं । उष्ट्रयुक्तरथे ॥ उष्ट्रवाह्यप्रेङ्खायाम् ॥ इतिहारावली ॥

अध्यूढः । पुं । ईश्वरे ॥ त्रि । अधिकवृध्याढ्ये । समृद्धे ॥ उपरिभावेनस्थिते ॥ यथा । स्त्र्यध्यूढसीमेति ॥

अध्यूढा । स्त्री । कृतसापत्निकायाम् । कृताऽनेकविवाहस्यप्रागूढयोषिति ॥ अधिउपरिऊढमुद्वहनमस्या ॥

अध्येषणम । न । गुर्वादेराराध्यस्यप्रवर्त्तनायाम् । प्रार्थनायाम् ॥ समानस्याधिकस्यवाज्ञत्विगाचार्यादि' प्रवर्त्तनायाम् ॥

अध्येषणा । स्त्री । याचने ॥ निकृष्टस्योत्कृष्टप्रतिप्रवर्त्तनायाम् । गुर्वादेःप्रार्थनयाक्वचिदर्थेनियोजनेइतिस्वामी । सनौ । गुर्वाद्याराधने ॥ अध्येषणम् । इषेरनिच्छार्थस्येतियुच् ॥

अध्येष्यमाणः । त्रि । अध्ययनकरिष्यमाणे ॥

अध्रुवः । त्रि । अनित्ये ॥ अस्थिरे । फलजनकतानियमशून्ये ॥ नध्रुवः ॥

अध्वग' । पुं । पथिके ॥ सूर्य्ये ॥ उष्ट्रे ॥ खेसरे । खच्चरइतिभाषा प्रसिद्धे ॥ अध्वानगच्छतीतिविग्रहे अन्तात्यन्ताध्वदूरेत्यादिनागमेर्डः प्रत्ययः ॥

अध्वगभोग्यः । पुं । आम्रातकवृक्षे ॥

अध्वगा । स्त्री । गङ्गायाम् ॥ टाप् ॥ इति त्रिकाण्डशेषः ॥

अध्वजा । स्त्री । स्वर्णुलीवृक्षे । हेमपुष्प्याम् ॥

अध्वा । पुं । मार्गे । गन्तव्यत्वेनलोकप्रसिद्धेक्रोशयोजनादौनियतपरिमा

णे ॥ सस्थाने ॥ अवस्कन्दे ॥ काले ॥ अन्तिवत्तम् । अदभचणे । अदेर्द्धचेवि क्वनिप् घस्त्वान्तादेशः ॥

अध्वनीनः । चि । पथिके ॥ अध्वानमलङ्गच्छति । अध्वनोयत्खाविति ख. । आत्माध्वानौखे इतिटिलोपेन ॥

अध्वन्यः । चि । पथिके ॥ अध्वानमलङ्गच्छति । अध्वनोयतखाविति यत् । येचाभावकर्मणोरितिटिलोपेन ॥

अध्वर । पुं । क्रतौ ॥ सावधाने ॥ वसुभेदे ॥ नध्वरति । ध्वृकौटिल्ये । अच् ॥ अध्वानरातिवा । आतोनुपतिकः ॥

अध्वरथः । पुं । परिघातिके । अध्वगमनापयुक्तरथे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥ दूते ॥ अध्वनेरथः । अध्वारथोऽस्यवा ॥

अध्वर्युः । पुं । यजुर्वदर्त्विजि ॥ अध्वरमिच्छति । सुपद्मातक्यच् । क्यच्ध्वरयुतनस्यर्विलोपः । क्याच्छन्दसी त्युः ॥ नध्वरति । ध्वृकौटिल्यो । विच् । अध्वरयाति । यौतिवा मितद्रवादित्वाड्डुर्वा ॥

अध्वर्युः । स्त्री । अध्वर्युशाखाध्येत्र्याम ॥ अध्वर्युशाखाध्येतृवशोद्भवायाम् ॥ योपधत्वादूङ्न ॥

अध्वशल्यः । पुं । अपामार्गे ॥

अध्वान्तशावनः । पुं । स्योनाकद्रौ ॥

अनः । पुं । प्राणे ॥ अनिति । अनप्राणने । अच् ॥

अनगुमत्फला । स्त्री । कदल्याम् ॥ इति जटाधरः ॥

अनक्षम् । चि । अक्षशून्ये ॥ अन्धे । अक्षिविहीने ॥

अनक्षरम् । न । दुर्वचने । गुणाक्षेपकदोषोत्थवाक्ये । अवाच्ये । निन्दावचने । दुर्वचसि । गाली इतिभाषायाम् ॥ नप्रशस्तान्यक्षराणियस्मिन । अक्षराणामप्राशस्त्यंचार्थद्वारकम् ॥

अनक्षि । न । मन्दाक्षिणि ॥ चि । तद्वति ॥

अनगार । पुं । ऋषौ । मुनौ ॥ चि । अगारशून्ये ॥

अनग्निः । पुं । श्रौतस्मार्त्तकर्महीने ॥ यथा । अनग्नित्राश्रमाः कथाविति । अग्निसंस्काररहितेपरिव्राजके ॥ अथ शौनकः ॥ सर्वसङ्गनिवृत्तस्यध्यानयोगरतस्यच । नतस्यदहनकार्यंनैवपिण्डोदकक्रिया ॥ निदध्यात्प्रणवेनैवबिले भिक्षोः कलेवरम् । प्रोक्षणखननञ्चैवसर्वं तेनैवकारयेदिति ॥

अनग्निका । स्त्री । दृष्टरजस्कायांकन्यायाम् ॥

अनघः । चि । निर्मले ॥ अपापे ॥ मनोज्ञे । कृष्णे ॥ अदुःखे ॥ अव्यसने ॥ अघनविद्यतेयस्य ॥

अनङ्गम । न । आकाशे ॥ मनसि ॥ पुं । मदने ॥ नास्ति अङ्गमस्य । नाङ्गत्वा नमस्मादितिवा ॥ दशास्यावस्था भवन्ति । तद्यथा । दृङ्मनस्सङ्गसंकल्पाजागरः कृशतारतिः । ह्रीत्यागोन्मादमूर्छा इत्यनङ्गदशादशेति ॥ त्रि । अङ्गरहिते ॥

अनङ्गकम् । न । मनसि ॥

अनङ्गशेखरः । पुं । दण्डकछन्दभेदे ॥ यथा । प्रतापतापतापितप्रतीपभूपते शरन्निशानिशाकरप्रभालसद्यशोधन स्वदानवारिधारयादरिद्रतानलज्वलद्द्विजालितापहारकस्वभावशोभन । भुजङ्गमङ्गलोदितः प्रसङ्गसङ्गतेः सभान्तरे निवेदितो विधायकः कविप्रियः क्रमाल्लघौ गुरौ यथेच्छया निवेशिते भवेदनङ्गशेखरः सुधांसुशेखरप्रियइति ॥

अनङ्गासुहृत् । पुं । शिवे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अनच्छ । त्रि । कलुषे ॥ भिन्नोऽच्छात् । नञ्तत्पुरुषः । नलोपोनञः । तस्मान्नुडचि ॥

अनञ्जनम् । न । व्योम्नि ॥ तत्त्वे ॥ पुं । नारायणे ॥ त्रि । अञ्जनशून्ये ॥ नास्तिअञ्जनमस्मिन् ॥

अनडुज्जिह्वा । स्त्री । गोजिह्वाख्ये ॥

अनड्वान् । पुं । षण्डे । वृषभे ॥ अनः शकटवहति । वहप्रापणे । अनसिवहेः क्विप् अनसोडश्चेतिक्विप् अनसोडान्तादेशश्च । यजादित्वात सम्प्रसारणम ॥

अनडुही । स्त्री । सौरभेय्याम् । गौरादित्वान्ङीष् ॥

अनड्वाही । स्त्री । सौरभेय्याम् ॥ आमनडुहः स्त्रियांवावक्तव्यइति अनडुहआमि गौरादित्वान्ङीष् ॥

अनतिरेकः । पुं । अभेदे ॥

अनघः । पुं । गौरसर्षपे ॥ इतिराजनिघण्टः ॥

अनध्यक्षः । त्रि । अध्यक्षभिन्ने । अप्रत्यक्षे ॥

अनध्यायः । पुं । अनध्ययने ॥ सचद्विविधो नित्यो नैमित्तिकश्चेति । तथाहि । चातुर्मास्यद्वितीयासु मन्वादिषु युगादिषु । अष्टकासु च सङ्क्रान्तौ शयने वै धनेश्वरे ॥ अनध्यायं प्रकुर्वीत तथा सोपपदासु च ॥ नैमित्तिकास्तु । निर्घातभूकम्पोल्कादिपतनादिसर्वाङ्गेषु । अग्न्युत्पाते । अकालवृष्टौ । सन्ध्यागर्जने । चौरैरुपद्रुते ग्रामे । सङ्ग्रामे । सोमसूर्यग्रहे । दिग्दाहे । विद्युल्लनिपाते । इत्यादिषु नैमित्तिकानध्यायः । छिद्राण्येतानि विप्राणां येऽनध्यायाः प्रकीर्त्तिताः । छिद्रेभ्यः सूर्वातब्रह्म

ब्राह्मणेन यदर्जितम् ॥ तत्कालेतस्य रक्षांसिश्रियं ब्रह्मयशोबलम । सर्व माद्याय गच्छन्ति वर्जयन्तीप्सितफल मिति ॥

अननुगतम् । न । आत्मतत्त्वे ॥ त्रि । अनु गतभिन्ने ॥

अननुभाषणम् । न । विज्ञातस्यपरिषदा त्रिरभिहितस्याप्यप्रत्युच्चारणमननु-भाषणम् । पश्य ०५।५९ ॥

अनन्तः । पुं । केशवे ॥ यथा । गन्धर्वा प्सरसः सिद्धाः किन्नरोरगचारणाः । नान्तगुणानांगच्छन्तितेनाऽनन्तोयम व्ययइतिविष्णुपुराणम् ॥ अन्तःसीमा द्यन्तानविद्यतेयस्य ॥ शेषे । नागजा तिराजे ॥ बलदेवे ॥ सिन्दुवारवृक्षे ॥ अनन्तजिति ॥ त्रि । अनवधौ ॥ अप रिच्छिन्ने । अविनाशिनि । व्यापित्वा न्नित्यत्वात्सर्वात्मत्वात्देशकालवस्तु परिच्छेदशून्ये परमेश्वरे ॥ अवि-द्यमानोऽन्तः कार्योयस्य ॥ अखण्डे ॥ न । सुरवर्त्मनि ॥ अभ्रके ॥ नास्त्य न्तोयस्य ॥

अनन्तकरः । त्रि । असमाप्तिकरे ॥ अ नन्तकरोति । द्विवाविभेतिटः ॥

अनन्तजित् । पुं । बुद्धगणभेदे । जि नानांचतुर्विंशत्यन्तर्गतचतुर्दशजि-ने ॥ अनन्ते ॥ अनन्तंजयतिजेष्यति



वा । जिजये । क्विप् । तुक् ॥ विष्णौ ॥ अनन्तान्यसख्यातानिभूतानि युद्धक्री डादिषुसर्वथाचिन्त्यशक्तितयाजयती ति ॥

अनन्ततीर्थकृत । पुं । अनन्तजिति । बु द्धगणप्रभेदे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अनन्तमात्रः । त्रि । एतावत्त्वमस्येतिपरि च्छेत्तुमशक्ये ॥ मात्रापरिच्छित्तिःसा अनन्तायस्य ॥

अनन्तमूर्त्तिः । पुं । सर्वात्मनि । परमात्म नि । अखण्डैकरसे ॥ अनन्तादेशतः कालतोवस्तुतःस्वरूपतस्तावत्परि च्छेदरहितामूर्त्तिः स्वभावोयस्य ॥

अनन्तमूलः । पुं । कराखाख्यौषधौ ॥ सु गन्धायाम् । स्थूलग्रन्थौ । वचाप्रभेदे ॥

अनन्तरम् । न । पराचीनकाले । प श्चादर्थे ॥ त्रि । चिदेकरसेपरमात्म नि ॥ नयस्यअन्तरंभिन्नजातीयकिञ्चि द्विद्यतेस' ॥ छिद्रशून्ये ॥ सन्निहिते । अव्यवहिते । ससत्ते ॥ अन्तरछिद्रत-च्छून्यम् ॥

अनन्तरितम् । त्रि । अव्यवहिते ॥

अनन्तरूपः । पुं । भगवति । विश्वरूपे ॥ त्रि । अनन्तरूपविशिष्टे ॥ अनन्तानि रूपाणियस्य ॥

अनन्तलोकः । पुं । स्वर्गलोके । अन न्तश्चासौलोकश्च ॥

अनन्तविजयः । पुं । युधिष्ठिरस्यशङ्खे ॥ अनन्तोविजयोयस्मिन् ॥

अनन्तवीर्यं । पुं । अर्हद्भेदे । भाविकल्पेजिनानांचतुर्विंशत्यन्तर्गतेत्रयोविंशेतीर्थंकरजिने ॥ चि । दृढवीर्ये । अनन्तप्रभावे ॥ अनन्तानिवीर्याणियस्मिन् । अनन्तवीर्यंयस्यवा ॥

अनन्तव्रतम् । न । भाद्रशुक्लचतुर्दशीकर्त्तव्येऽनन्तदेवस्यव्रते ॥

अनन्तशीर्षा । स्त्री । वासुकेः पत्न्याम् ॥

अनन्ता । स्त्री । विशल्यायाम् । शाकभेदे ॥ शारिवायाम् ॥ दुरालभायाम् ॥ दूर्वयोः ॥ कणायाम् ॥ पथ्यायाम् ॥ पार्वत्याम् ॥ आमलक्याम् ॥ विश्वम्भरायाम् ॥ गुडूच्याम् ॥ अग्निमन्थवृक्षे ॥ यवासे ॥ वृक्षभेदे ॥ तारायाम् ॥ नास्त्यन्तोऽस्याः ॥ अनन्तः शेषोस्तिधारकोऽस्याः अर्शआद्यच् ॥

अनन्तात्मा । पुं । नारायणे ॥ देशतः कालतोवस्तुतश्चापरिच्छिन्नस्वरूपत्वात् अनन्तः आत्माअस्य ॥

अनन्तिका । स्त्री । माघोर्जमाधवेषाणां पूर्णमासीषु ॥

अनन्तेशः । पुं । हरे ॥

अनन्दः । त्रि । अनानन्दे । असुखे ॥ औपनिषदोयम् ॥

अनन्यः । चि । सर्वभोगनिस्पृहे ॥ सर्वात्मदर्शिनि । अहमेवभगवान् वासुदेवः सर्वात्मा न मद्व्यतिरिक्तंकिञ्चिदस्तीतिज्ञानवतिब्रह्मात्मैक्यनिष्ठे । अपृथग्दर्शिनि ॥ नविद्यतेऽन्योविषयोयस्य यस्मिन् वा । अन्योभेददृष्टिविषयोनविद्यतेयस्यवा । नविद्यतेस्वेष्टविनाऽन्यदालम्बनयस्येतिवा ॥ अद्वितीये । एकाकिनि ॥

अनन्यगतिकः । चि । एकाश्रये । गत्यन्तररहिते ॥ यथा । अनन्यगतिकेजनेविगतपातकेचातकेयथाक्वचितथाकुलम्प्रियतथापिनान्यभजे इत्युद्भटः ॥

अनन्यचेता । चि । तदेकचित्ते ॥ नञन्यचेताः ॥

अनन्यजः । पुं । कामे ॥ नास्त्यन्यद्यस्मात् अनन्योविष्णुः ततोजातः ॥ मनसोऽन्यस्मान्नजायते इतिवा । चि । अनन्यभवे ॥

अनन्यभवः । चि । अन्यस्यासाध्ये ॥ अन्यस्मान्नभवतीति तथा । पचाद्यजन्तोत्तरपदेननञ् समासः ॥

अनन्यभावः । चि । एकान्तभक्ते ॥ नविद्यतेअन्यस्मिन् भावो यस्य ॥

अनन्यवृत्तिः । चि । एकाग्रे । एकताने ॥ इत्यमरः ॥ नञन्यावृत्तिरस्य ॥

अनन्वक् । चि । अननुगते ॥ अनुअञ्चतीत्यन्वक् । नञन्वक् अनन्वक् ॥

अनन्वय । पुं । अर्थालङ्कारविशेषे ॥ यथा । उपमानोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे । अनन्वय ॥ उपमानान्तरसम्बन्धाभावोऽनन्वय. । यथा । नकेवलंभातिनितान्तकान्तिर्नितम्बिनी सैवनितम्बिनीव । यावद्विलासायुधलास्यवासास्ते तद्विलासाइवतद्विलासाः॥ अत्रएवकारोभिन्नक्रमः । सानितम्बिन्येवकेवलनितम्बिनीवन्नितान्तकान्तिर्भातीति न यावत्अपिविलक्षर्थं।ते अनुभवैकगोचरास्तस्याविलासास्तद्विलासाइवभान्तीति वचनविपरिणामेनान्वयः । कीदृशाः । विलासायुधस्यकामस्यलासेऽन्त्यंतस्यवासानिवासभूताः। नितम्बिनीसैवनितम्बिनीवतन्मात्रनितम्बिनीसदृशीतिवार्थः । तेनस्फुटतयाव्यक्तैक्यलाभः। एवन्वतत्रैवतदुपमा नाऽस्तीत्यनन्वयोऽलङ्कारः । तत्फलञ्च निरुपमत्वबोधः । इतिकाव्यप्रकाशोदाहरणस्यार्थः ॥

अनपदेशः । पु । असाधके ॥

अनपरम् । त्रि । पश्चाद्भाविकार्यसम्बन्धविधुरे पृथगभिन्नेब्रह्मणि ॥ अपरंकार्यंनविद्यतेयस्मात्तत्अकार्यमितियावत् ॥ इतरशून्ये ॥

अनपवर्गवीर्यः । त्रि । अक्षीणप्रभावे ॥

अनपायी । त्रि । अपायविधुरे । अनश्वरे ॥ निश्चले ॥

अनपेक्षः । त्रि । निरपेक्षे । सर्वेषभोगोपकरणेषुयदृच्छोपनीतेष्वपिविःस्पृहे ॥ अपेक्षावर्जिते । हेये ॥

अनभिज्ञः । त्रि । अविदुषि । मूर्खे ॥ न अभिज्ञ. ॥ यथा । धिक्त्वांचूततरोपरापरपरिज्ञानाऽनभिज्ञोभवानिति॥

अनभियुक्तः । त्रि । अनादृते ॥ असम्मते ॥

अनभिलाषः । पुं । अरुचौ ॥ अनिच्छायाम् ॥

अनभिव्यक्तिः । स्त्री । अनुद्भूतरूपवत्वे । अव्याकृते ॥

अनभिष्वङ्गः । त्रि । पुत्रादौप्रीतिहीने ॥ अन्यस्मिन्सुखिनिदुःखिनिवाऽहमेवसुखीदुःखीचेतिअनन्यभावनया प्रीत्यतिशयोऽभिष्वङ्गस्तद्रहिते ॥

अनभ्युदितम् । त्रि ।अनभिप्रकाशिते ॥

अनमः । पुं । द्विजे । ब्राह्मणे ॥ इतित्रिकाण्डशेष. ॥

अनमितम्पचः । त्रि । कृपणे ॥ नमितम्पचोऽमितम्पचः । तद्भिन्नोऽनमितम्पचः ॥

अनम्बरः । पुं । बौद्धविशेषे ॥ इतिसिद्धान्तशिरोमणौगोलाध्यायः ॥

अनयः । पुं । अशुभदैवे ॥ विपदि ॥ व्य

सने । अनीतौ । द्यूतविदांप्रसव्यगतौ । तेषामप्रदक्षिणगमने ॥ ननयनम् अनेनवा । स्त्रीन्नपापणे । एरच् । विरोधेनञ् ॥ अयात्शुभावहविधेरन्य ॥

अनर्गलम् । त्रि । प्रतिवन्धकरहिते । निरावाधे ॥ नविद्यते अर्गलंयस्मिन् ॥

अनर्घः । त्रि । अमूल्ये ॥

अनर्थः । पुं । हरौ ॥ नविद्यतेअर्थः प्रयोजनमस्य आप्तकामत्वात् ॥ त्रि । अर्थिनःप्रतिकूले ॥ यथा । अर्थमनर्थं भावयनित्यंनास्तितत.सुखलेशः सत्यम् । पुत्रादपिधनभाजाभीतिः सर्वत्रैषाविहितानीतिरितिमोहमुद्गर ॥ नअर्थः ॥ अर्थरहिते ॥

अनर्थकम् । न । प्रलापे । समुदायार्थरहितसार्थवाक्ये । असद्वाक्ये ॥ त्रि । व्यर्थे ॥ नअर्थोयस्य । अर्थान्नञःस्त्युर. प्रभृतिषुपाठान्नित्यंकप्समासान्तः ॥

अनर्थमूलम् । न । आत्माज्ञाने ॥ यथा । आत्माज्ञानमनर्थानांमूललोकेपिनेतरत् । स्वपराक्रमअज्ञात्वायुध्यम्त्रियतएवहीति ॥

अनर्थान्तरम् । न । अभेदे ॥ एकार्थे ॥

अनर्थी । त्रि । निस्पृहे ॥

अनलः । पुं । वन्हौ ॥ नविद्यते अलं पर्याप्तिर्यस्येत्यनलः ॥ वसुभेदे ॥ नलाभावे ॥ कृत्तिकानक्षत्रे ॥ त्रिषु ॥ चित्रके ॥ रक्तचित्रके ॥ भल्लातके ॥ पित्ते ॥ अनित्यनेन । अनप्राणने । इषादित्वात्कलच् ॥ ५० वत्सरे ॥ यथा । दुर्भिक्षंजायतेघोरंधान्यौषधिमपीडनम् । अनलेचसमाख्यातंनात्रकार्याविचारणेति ॥ भगवतिवासुदेवे ॥ अलनम् अलः । अलेर्भूषणाद्यर्थाद्भावेघञ् । संज्ञापूर्वकत्वान्नवृद्धिः । घञर्थेकोवा । अलः पर्याप्तिः शक्तिसम्पदौपरिच्छित्तिरियत्तासानविद्यतेऽस्यत्यनल ॥

अनलदः । पुं । जले ॥ अनलं सन्तापंद्यतिखण्डयति इतिविग्रहः ॥

अनलनामा । पुं । चित्रके ॥

अनलप्रभा । स्त्री । ज्योतिष्मतीलतायाम् ॥

अनलप्रिया । स्त्री । अग्नाय्याम् ॥ अनलस्यप्रिया ॥

अनलिः । पुं । मुनिद्रुमे । वकवृक्षे ॥ इति त्रिकाण्डशेषः ॥

अनल्प । त्रि । वहुषु ॥

अनवः । त्रि । प्राचीने ॥ ननवः ॥

अनवधानम् । न । अमनोयोगे ॥ प्रमादे ॥ त्रि । तद्विशिष्टे ॥ नअवधानमस्य ॥

अनवधानता । स्त्री । प्रमादे । अविमृष्ट

कृत्ये ॥ नञ्अवधानमस्य । तस्यभाव' । त त्व ॥ यथा । कर्त्तव्याकरणं यत्रसमर्थस्य कश्चिद्भवेत् । उच्यतेद्वितयंतत्रप्रमादो ऽनवधानतेतिशब्दरत्नावली ॥

अनवनः । त्रि । अरक्षणे । हन्तरि ॥ अवतेः कर्त्तरिल्युट् । न अवनंरक्षणंयस्मात् ॥

अनवम' । त्रि । समाने । सदृशे ॥ नञ्अवमः ॥ नवमादन्यस्मिन् ॥ ननवम'॥

अनवरः । त्रि । प्रधाने । श्रेष्ठे । अकनिष्ठे ॥ नञ्अवर. ॥

अनवरतम् । न । अविरते । निरन्तरे॥ उत्कृष्टे ॥ नास्ति अवरतंयत्र । क्रियाविशेषणत्वेऽस्यक्लीवत्वम् । द्रव्यविशेषणेतुत्रिलिङ्गत्वम् ॥

अनवरार्द्ध्यः । त्रि । मुख्ये ॥ अवरस्मिन्नर्द्धे भवः । अर्द्धाद्यत् । परावराधमोत्तमपूर्वाच्च । नञ्अवरार्द्ध्यः । नञितिसमासः ॥

अनवलोभनम । न । सीमन्तोन्नयनानन्तरं चतुर्थमासिकर्त्तव्येसंस्कारविशेषे ॥ चतुर्थेऽनवलोभनमित्याश्वलायनः ॥

अनवसरः । त्रि । निरवकाशे ॥ पुं । अवसरस्याभावे ॥

अनवस्करम् । त्रि । निश्शोध्ये । निर्मले । अपनीतमले ॥ नावस्करोत्र ॥

अनवस्थः । त्रि । अवस्थितिरहिते ॥ न अवस्थाप्रतिष्ठायस्यस' ॥

अनवस्था । स्त्री । तर्कविशेषे ॥ तस्यलक्षणं यथा । उपपाद्योपपादकयोरविश्रान्ति रितिमीमांसकाः ॥ अव्यवस्थितपरम्परारोपाधीनानिष्टप्रसङ्गे ॥ यथा । यदिघटत्वघटजन्यत्वव्याप्यं स्यात् कपालसमवेतत्वव्याप्यंनस्यात् ॥ स्थित्यभावे ॥

अनवस्थानम् । न । अव्यवस्थाने ॥ पुं । वायौ । पवने ॥ त्रि । चञ्चले ॥ नञ्अवस्थानंयस्य ॥

अनवस्थितः । त्रि । अव्यवस्थिते ॥

अनवस्थितत्वम् । न । सन्ध्यायामपिसमाधिभूमौप्रयत्नशैथिल्याच्चित्तस्यतत्राप्रतिष्ठितत्वे ॥

अनवस्थितिः । स्त्री । चापले ॥ मात्सर्यद्वेषरागादेश्चापलन्त्वनवस्थितिः ॥ नञ्अवस्थितिः ॥

अनशनम् । न । उपवासे ॥ कामानशने ॥ त्रि । तद्वति ॥ नञ्अशनं भक्षणं-यस्मिन् यस्यवातत् ॥

अनश्नन् । त्रि । अभुञ्जाने ॥

अनश्वर' । त्रि । शाश्वते ॥ ननश्वरः ॥

अनः । न ।शकटे ॥ मातरि ॥ ओदने ॥ प्राणिजन्मनि ॥ अनितिचोत्करोति । अनप्राणने । असुन् ॥

अनसूया । स्त्री । अत्रे:पत्न्याम् । कर्द्दमसुने कन्यायाम् ॥ त्रि । असूयाशून्ये ॥ अभ्यालक्षणंयथा । नगुणान्गुणिनोहन्तिस्तौतिमन्दगुणानपि । नान्यदोषेषुरमतेसानसूयाप्रकीर्त्तितेति वृहस्पति' ॥

अनसूयुः । त्रि । अनिन्दके ॥ सन्तःप्रणयिवाक्यानिगृह्णन्तिह्यनसूयवइतिभट्टपादाः ॥

अनहंवादी । त्रि । गर्वोक्तिरहिते ॥ यः कर्त्ताहमितिवदनशीलो न भवतिस' ॥

अनहङ्कार: । त्रि । अहङ्कारविधुरे ॥

अनहङ्कृतिः । स्त्री । गर्वाभावे । अशोचे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अनाकारः । त्रि । निराकृतौ । निराकारे ॥

अनाकुलम् । त्रि । अव्यग्रमनसि । एकाग्रमनसि ॥ स्थिरे । एकाग्रे ॥ असङ्कीर्णे ॥ नआकुलम् ॥

अनाक्रान्तः । त्रि । अपराजिते ॥ नआक्रान्तः ॥

अनाक्रान्ता । स्त्री । कण्टकार्याम ॥ न आक्रान्ता ॥

अनागतः । त्रि । वर्त्तमानप्रागभावप्रतियोगिनिकाले । भविष्यति ॥ अनायाते । अनुपस्थिते ॥ अज्ञाते ॥ यथा । अनागतादिलिङ्गेननस्यादनुमितिस्तदेतिकारिकावली ॥ न आगतः ॥

अनागतार्त्तवा । स्त्री । अरजस्कस्त्रियाम् । नग्निकायाम् ॥ अनागतमार्त्तवंरजोऽस्याः ॥

अनाचारः । पुं । कदाचारे । श्रुतिस्मृतिविरुद्धकर्मकरणे ॥ सर्वदेशेष्वनाचारःपथितामूलक्षयम् । त्रि । तद्विशिष्टे ॥

अनातपः । पुं । छायायाम् । रौद्राभावे ॥

अनात्मा । पुं । शरीरादौ ॥ यथा । अप्राप्तःप्राप्यतेयोयमप्यक्तश्चत्यज्यतेतथा । जानीयात्तमनात्मानंबुद्ध्यन्तवपुरादिकमिति ॥

अनात्म्यः । त्रि । रागादिदोषरहिते ॥ आत्मनिमनसिभवम् रागादि । तद्रहितः ॥

अनाथः । त्रि । स्वतन्त्रे । प्रभुहीने ॥ नविद्यतेनाथोयस्य ॥

अनादरः । पु । परिभवे । तिरस्कृतौ ॥ नआदरः ॥

अनादिः । पु । परमेश्वरे ॥ चतुर्वक्त्रेब्रह्मणि ॥ त्रि । आदिरहिते ॥ नविद्यते आदिःकारणंयस्यसः ॥ यथा । जीवईशोविशुद्धाचित्तथाभेदःपरस्परम् । अविद्यातच्चितोर्योगः षडस्माकमना

द्वयः ॥ इतिवेदान्तरहस्यम ॥

अनादित्वम् । न । उत्पत्तिमत्त्वेसति सहेतुत्वेसतिकेनाप्यविदितमूलकारणत्वे ॥ भावेत्वः ॥

अनादिनिधनः । चि । आद्यन्तशून्ये षड्भावविकारवर्जिते परमेश्वरे ॥ आदिर्जन्मनिधनंविनाशः । आदिश्चनिधनञ्च आदिनिधने जन्मविनाशौत द्वयंनविद्यतेयस्यसः ॥

अनादृतम् । चि । अवज्ञाते । कृततिरस्कारे ॥ नआदृतम् ॥

अनापन्नः । चि । अप्राप्ते ॥ नआपन्नः ॥

अनामकम् । न । अर्शोरोगे ॥ पुं । मलमासे ॥ अप्रशस्तंनामास्य ॥

अनामयम् । त्रि । न । आरोग्ये ॥ अविद्यातत्कार्यात्मकरोगरहिते मोक्षाख्ये पुरुषार्थे ॥ आत्मरूपे ॥ अस्तिजायते वर्द्धतेइत्यादिषड्भावविकारशून्यमात्मरूपम तेषांविकाराणां देहोपाधिनिष्ठत्वात् आत्मनश्चदेहाभावात्तद्विकाररहितमनामयमात्मैवेत्यर्थः ॥ आमयस्याऽभावः । अर्थाभावे ऽव्ययीभावः ॥ चि । तद्विशिष्टे ॥ अनामयमस्त्यस्य । अच् ॥

अनामयावी । चि । व्याधिविवर्जिते । व्रीहिरूपी ॥ न आमयावी ॥

अनामा । स्त्री । उपकनिष्ठाङ्गुलौ ॥ न नामग्रहणयोग्यमस्याः । ब्रह्मणोऽनयाशिरश्छेदनात् । अतएवास्यांपवित्रीक्रियते । डाप् ॥

अनामिका । स्त्री । अनामायाम् ॥ अनामैव । स्वार्थेकः । प्रत्ययस्थादितीत्वम् ॥

अनायत्तः । चि । अनधीने । अवशीभूते ॥ यथा । एतावज्जन्मसाफल्यं यदनायत्तवृत्तितेति ॥

अनायस्तः । चि । आयासहीने ॥

अनायासः । पुं । अक्लेशे । यत्नाभावे ॥ अस्यलक्षणन्तु । शरीरंपीड्यते येन सुशुभेनापि कर्मणा । अत्यन्तंतन्न कुर्वीतअनायासः सउच्यतइत्येकादशीतत्त्वम् ॥ यथा । अनायासेनमरणंविनादैन्येनजीवनम् । अनाराधितगोविन्दचरणस्यकथंभवेदिति ॥

अनायासकृतम् । चि । विनायत्नकृते ॥ न । फाण्टे ॥ अनायासेनकृतम् ॥

अनारतम् । न । सन्तते ॥ चि । तद्युक्ते ॥ आङ्पूर्वोरमिर्विरामे । अविद्यमानमारतंयस्मिन् ॥ क्रियाविशेषणत्वे क्लीबत्वम् । द्रव्यविशेषणेतु चिलिङ्गत्वम् ॥

अनारम्भणम् । चि । निरालम्बे ॥

अनारम्भः । पुं । अननुष्ठाने ॥ नआरम्भः ॥

अनार्जवः । पुं । रोगे ॥ ऋजुत्वाभावे ॥ त्रि । तद्वति ॥

अनार्त्तवम् । न । पौषादिमासचतुष्टये वर्षाभवेजले ॥ यथा । अनार्त्तवप्रमुंचन्तिवारिवारिधरास्तुयत् । तस्मिदोषायसर्वेषां देहिनांपरिकीर्त्तितमिति ॥ ऋतौभवम् आर्त्तवम् । नआर्त्तवम् ॥

अनार्य्यः । त्रि । दुर्ज्जने । दुःशीले ॥ नआर्य्यः ॥

अनार्य्यकम् । न । अगुरुकाष्ठे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अनार्य्यजम् । न । जोङ्गके ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥ त्रि । नीचजाते ॥

अनार्य्यजुष्टम । त्रि । मुमुक्षुभिरसेविते ॥ अनार्य्यजुष्टम ॥

अनार्य्यतिक्तः । पुं । भूनिम्बे । चिरातिक्ते ॥ अनार्य्यप्रियत्वात्तिक्तश्च शाकपार्थिवादिः ॥

अनाविद्धः । त्रि । अनभिभूते ॥ नआविद्धः ॥

अनाविल । त्रि । निर्म्मले ॥ नआविलः ॥

अनावृतः । त्रि । प्रथमे ॥ आवरणवर्जिते ॥

अनावृष्टिः । स्त्री । वर्षणाभावे । ईतिविशेषे ॥

अनाशकम् । न । कामानशने ॥ नतुभोजननिवृत्तिरनाशकम् भोजननिवृत्तौम्रियतएवेति तपसानाशकेनेत्यत्रत्त्यभाष्यम् ॥

अनाशकायनम् । न । उपवासपरायणत्वे ॥

अनाशी । पुं । अपरिच्छिन्ने । आत्मनि ॥

अनाश्रितः । त्रि । अनपेक्ष्यमाणे । फलाभिसन्धिरहिते ॥ नआश्रितः ॥ आश्रयप्राप्तिरहिते ॥

अनाश्वान् । त्रि । अशनमकुर्वाणे ॥ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्चेतिनञ्पूर्वादश्नातेःक्वसुरिटोभावश्चनिपात्यते । धृतजपधृतेरनाशुषइतिभारविः ॥

अनासिकः । त्रि । नासिकारहिते । विखे ॥

अनास्था । स्त्री । अनादरे ॥ आस्थाभावे ॥

अनाहतम् । न । षट्चक्रान्तर्गतहृदयस्थेद्वादशदले चतुर्थचक्रे ॥ यथा । शब्दब्रह्ममयशब्दानाहततत्रदृश्यते । अनाहताख्यतत्पद्मंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् । आनन्दसदनंतत्तुपुरुषाधिष्ठितंपरमितिदेवीभागवतम् ॥ अनाहतोनामताडनंविनाजायमानःशब्दः ।

सोमाहत:शब्दोयस्मिंस्तच्छब्दानाह
तम्।वा हिताग्न्यादित्वात्साधु॥ पु
रुषाधिष्ठितम रुद्राधिष्ठितम्॥ अनाह
तशब्दोमध्यमावाणीरूपोज्ञेय:॥त्रि।
छेदोभोग:चालनञ्चहननम् तद्रहि
तेवस्त्रे। नूतनवस्त्रे॥ आघातरहिते॥
अगुणिताङ्के॥ आहन्यतेस्म क्त:॥ न
आहतवा॥

अनिकेत'। त्रि। नियतनिवासरहिते
॥ नास्तिनिकेतोऽस्य॥

अनिक्षु:। पुं। इक्षुतुल्यायाम्। खाक्-
डेति आनाखुइतिच गौडख्याते॥ न-
इक्षु'। सादृश्येनञ्॥

अनिगीर्ण:। त्रि। अनुक्ते॥ विषस्यानि
गीर्णस्येतिसाहित्यदर्पणम॥

अनिङ्गनम्। त्रि। अचले। निर्वातप्र-
दीपकल्पे॥

अनित्य:। त्रि। अध्रुवे। विनाशिनि।
बाधयोग्ये॥ व्यक्ते। कालाद्यवच्छिन्ने।
नस्थास्यतीतिलोकागमयोर्व्यवहार-
योग्ये॥ ननित्य:॥ यथा। धर्मोनि
त्य:सुखदु:खेत्वनित्येजीवोनित्योहे
तुरस्याप्यनित्य:॥ इतिभारतेभार-
तसावित्री॥

अनिद्र:। पुं। लयावस्थया स्वप्नशून्ये पर
मात्मनि॥ त्रि। निद्राशून्ये॥

अनिभृत:। त्रि। चपले। अविनीते॥
ननिभृत.॥



अनिमिष.। पुं। स्त्री। सुरे॥ मत्स्ये॥ पुं
। विष्णौ॥ अलुप्तदृष्टित्वात्॥ काले
॥ ननिमिषति। मिषस्पेषणे। इगु
पधेतिक:। नञ्समास:॥

अनिमिषक्षेत्रम्। न। नैमिषारण्ये॥

अनिमिषाचार्य.। पुं। गुरौ। बृहस्प
तौ॥अनिमिषाणांदेवानामाचार्य:॥

अनिमेष:। पुं। देवे॥अविद्यमानोनि
मेषोऽस्य॥ मत्स्ये॥

अनियत.। त्रि। अनैकान्तिके। अनि
त्ये।अस्थायिनि॥ ननियत:॥

अनियन्त्रित:। त्रि। उच्छृङ्खले। उ
द्दामे॥

अनिरुक्त.। त्रि। वाचामगोचरे॥

अनिरुद्ध:। पुं। कामपुत्रे। मनसोऽधि
ष्ठातरि। उषापतौ॥ न। सन्दाने
। पश्वादिबन्धनरज्जौ॥ त्रि। अप्र
तिरुद्धे॥ चरे॥ ननिरुद्धोऽनिरुद्ध:।
युद्धेकेनापिननिरुद्ध:॥

अनिरुद्धपथम्। न। व्योम्नि॥ त्रि। अ
वारितपथे॥ अनिरुद्ध: रोधशून्य:
पन्थायस्मिन् यस्यवा॥

अनिरुद्धभामिनी। स्त्री। स्वैरिण्याम्॥
वाणकन्यायाम्। उषायाम॥ अनि-
रुद्धाचासौभामिनी। अनिरुद्धस्यभा
मिनीवा॥

अनिरोधः । पु । अप्रतिबन्धे ॥

अनिर्देश्यः । त्रि । निर्देष्टुमशक्ये ॥ वच नागोचरेपरमेश्वरे ॥ स्वसंवेद्यत्वात् परस्मैइदंतदितिनिर्देष्टुमशक्यत्वात् ॥ ननिर्देश्यः ॥ निर्विशेषसच्चित्सुखमा त्रलक्षणोवस्तुनिधर्मोणासम्भावादिद- तदित्यादिसाधारणशब्दे द्रव्यं शुक्लः पाचकइत्यादिविशेषशब्दैश्चननिर्देष्टुं शक्यतइत्यनिर्देश्यःपरमेश्वरः । श्रु- त्यापिजातिगुणक्रियासत्ताभिर्निर्दे- ष्टुमशक्यइत्यर्थः ॥

अनिर्माल्या । स्त्री । लक्ष्मापिकायाम् ॥ त्रि । निर्माल्यशून्ये ॥

अनिर्वचनीयः । त्रि । निर्वचनायोग्ये । वाक्यागम्ये ॥

अनिर्विण्णः । त्रि । विषादरहिते ॥ ननि र्विण्ण । नविद्यते निर्वेदोऽस्यवा ॥ अ विरक्ते ॥

अनिर्विण्णचेता. । त्रि । अविरक्तचित्ते ॥ इहजन्मनिजन्मान्तरेवा अस्मिन्वर्षे वर्षान्तरेवा अवश्यंवोपालेस्यतिकिंत्वर येतिधैर्ययुक्ते ॥ अनिर्विण्णं चेतोयस्य ॥

अनिलः । पुं । वाते ॥ अनन्यनेन । अ नप्राणने । सलिकल्यनिमहिभडिभ खिडशखिडपिखिडतुखिडकुकिभूभ्यइल च ॥ गणदेवताभेदे ॥ वाताःपंचाश दूनकाः ॥ इलति प्रेरणांकरोति इ तिइणः । तद्रहितः ॥ वसुभेदे ॥ स्वा तिनक्षत्रे ॥ त्रि । इलाशून्ये ॥



अनिलघ्नकः । पुं । विभीतकवृक्षे ॥ इति राजनिर्घण्टः ॥

अनिलवन्धुः । पुं । कृत्तिकायाम् ॥ वन्हौ ॥

अनिलयनः । त्रि । अनाधारे ॥

अनिलसखः । पुं । वन्हौ ॥ अनिलस्य सखा । राजाहः सखिभ्यष्टच्॥

अनिलान्तकः । पुं । इङ्गुदीवृक्षे ॥

अनिलामयः । पुं । वातरोगे ॥

अनिशम् । न । सदा । सना । अविरते ॥ निशा व्यापाराहित्यमुपचारात् । नास्तिनिशाऽस्मिन् । क्रियाविशेषण त्वेऽस्यक्लीवत्वम् द्रव्यविशेषणेतुत्रिलि ङ्गत्वम् ॥ रात्रिवर्जिते ॥

अनिशम् । । सातत्ये ॥

अनिष्टम् । न । प्रतिकूलवेदनीये नार कतिर्यगादिलक्षणे पापफले ॥ अप कारे ॥ नइष्टमितिविग्रहः ॥ त्रि । अ नभिलषिते ॥ यथा । इष्टनाशादनि ष्टाप्ते' करुणाख्योरसोभवेदितिसाहि त्यदर्पणः ॥

अनिष्टा । स्त्री । नागवलायाम् ॥

अनिसृष्टः । त्रि । अनियुक्ते ॥

अनीकः । पुं । न । रणे ॥ सैन्ये । सेना मात्रे ॥ अनित्यनेन । अनप्राणने ।

अनिङ्गषिभ्यांकिच्चेतिईकन् ॥ अनन म । अनगतौ प्राणनेवा । अनीकाद् यश्चेतिसाधुः ॥ अनयनंवा । णीञ् प्रापणे । बाहुलकात्कक् । नञ्स मासः ॥

अनीकस्थः । पुं । रणगते ॥ हस्तिशि क्षाविचक्षणे ॥ रक्षिवर्गे । राजरक्षि णि ॥ चिह्ने ॥ वीरमर्दलवाद्ये । जय ढक्केतिप्रसिद्धवाद्ये ॥ त्रि । सैन्यस्थे ॥ अनीकेतिष्ठति । ष्ठा । सुपीतिकः ॥

अनीकाधिकृतः । त्रि । सेनापतौ ॥

अनीकिनी । स्त्री । सेनायाम् ॥ तिस्तृषुच मूषु । इभाः २१८७ । रथाः २१८७ । अश्वाः ६५६१ । पदातयः १०९३५ । एतत्परिमाणविशिष्टसेनाभेदे । स मस्तसंख्यया २१८७० सप्तत्यधिकाष्ट शताधिकसहस्राधिकायुतद्वये ॥ अ क्षौहिणीदशमांशेयं संख्या । अनी- कोरणोस्तिप्रयोजनत्वेनयस्याः । इ- निः । ङीप् ॥ त्रि । अनीकिनि ॥

अनीचदर्शी । पुं । बुद्धभेदे ॥

अनीशः । पुं । विष्णौ ॥ नविद्यते ईशो नियन्ता स्वामीवास्य ॥ ईश्वरभिन्ने ॥ प्रवृत्तिनिवृत्त्योरस्वतन्त्रे ॥ यथा । अ ज्ञोजन्तुरनीशोयमात्मनः सुखदुःख योः । ईश्वरप्रेरितोगच्छेत्स्वर्गंवाश्व भ्रमेववेतिस्मृतिः ॥

अनीशा । स्त्री । दीनभावे ॥

अनीश्वरः । त्रि । नास्तिशुभाशुभयोः कर्मणोः फलदातेश्वरइतिवादिनि ॥

अनीहः । त्रि । फलाशारहिते ॥ निश्चे ष्टे ॥ नास्तिईहायस्यसः ॥

अनु । अ । हीने ॥ सहार्थे ॥ पश्चादर्थे ॥ सादृश्ये ॥ लक्षणे ॥ इत्थंभूताख्या ने ॥ भागे ॥ वीप्सायाम् ॥ अनुक्रमे ॥ आयामे ॥ समीपे ॥ अनिति । अन प्राणने । बाहुलकादुः ॥

अनुकः । त्रि । कामिनि । कामयितरि- ॥ अनुकामयते । अनुकाभिकेति- साधुः ॥

अनुकम् । अ । वितर्के ॥

अनुकम्पा । स्त्री । दयायाम् ॥ आन्वर्थ्ये ॥ अनुकम्पनम् । कपिकिम्पिचल ने । गुरोश्चेत्यः ॥

अनुकम्प्यः । त्रि । कृपायोग्ये ॥ अनुक म्पितुंयोग्यः । ण्यत् ॥

अनुकरणम् । न । अनुकृतौ । सदृशी करणे ॥ तद्द्विविधम् । शब्दानुकरण म् अर्थानुकरणञ्च । यथार्थरहितस्य केवलशब्दस्यसदृशकरणम् तच्छब्दा नुकरणम् । यथार्थविशिष्टस्यसदृशक रणम् तदर्थानुकरणम् । इतिवैया- करणाः ॥

अनुकर्षः । पुं । रथाधःस्थदारुणि ॥ र

थस्याधस्तनभागे यद्दारुधारणकाष्ठं-
तिष्ठति यतोधस्स्कमुपरिपट्टकर्म यत्र
चक्रंतदनुकर्षशब्दवाच्यमित्यर्थः. इ-
तिभरतः॥ अवकर्षणे ॥ अनुकृष्यते।
कृषविलेखने। घञ्॥
अनुकर्षणम्। न। आकर्षणे। अवकर्ष
णे॥
अनुकल्पः। पुं। मुख्यकल्पादधमे गौण-
कल्पे। प्रतिनिधौ। गौणविधौ॥ अ
नुहीनःकल्पः। प्रादिसमासः॥ यथा
ब्रीहिभिर्यजेतेतिमुख्योविधिः। ब्रीह्य
भावेनीवारैर्यजेतेतिगौणोविधिः॥
स शक्तेन नानुष्ठातव्यः। यथा। प्रभुःप्र
थमकल्पस्ययोनुकल्पेनवर्त्तते। नसा
म्परायिकंतस्यदुर्म्मतेर्विद्यतेफलम्॥
इतिमनुः॥
अनुकामीनः। त्रि। कामङ्गामिनि। यथे
ष्टगमनशीले॥ कामस्यसदृशम्। य
थार्थेव्ययीभावः। अनुकामंगामीत्य
र्थे। अवारपारात्यन्तानुकामङ्गामी-
तिखः॥
अनुकारः। पुं। सुसदृशक्रियायाम्।
अनुहारे॥ अनुकरणम्। सदृशरूप
वेशभाषाद्याविष्करणम्। अनुकृ०।
घञ्॥ उपमायाम्॥ अनुकूलकरणे॥
अनुकूलः। पुं। पतिभेदे॥ अस्यल
क्षणं यथा। सर्वदापराङ्गनापराङ्मु



खत्वे सतिसर्वदास्वजायानुकूलत्वमि
ति॥ त्रि। तत्तदिच्छाचरणशीले।
अनुरक्ते॥ सहाये। सहकारिणि॥
अनुकूलादितिविग्रहः॥
अनुकूलता। स्त्री। दाक्षिण्ये॥ भावे
तल्॥
अनुकूला। स्त्री। स्यादनुकूलाभतनग
गाश्चेदितिलक्षणलक्षितायावृत्तौ॥
यथा। वल्लववेशमुररिपुमूर्त्तिं गोप
मृगाक्षीकृतरतिपूर्त्तिः। वाञ्छति
सिद्धौ प्रणतिपरस्य स्यादनुकूलाजग
तिनकस्येति॥ दन्तीवृत्ते॥
अनुकृतिः। स्त्री। अनुकरणे॥ अनुक
रणम्। कृञ्०। क्तिन्॥
अनुक्रमः। पुं। यथाक्रमे। परिपाट्या
म्॥ अनुक्रमणम्। क्रमुपादविक्षेपे।
घञ्। नोदात्तोपदेशेतिनवृद्धिः॥
अनुक्रमणिकायाम्॥
अनुक्रमणिका। स्त्री। भूमिकायाम्।
ग्रन्थादेर्मुखबन्धे॥ पुराणादेर्वृत्तविव
रणस्यसंक्षेपेणपुनःकथने॥
अनुक्रमणी। स्त्री। ग्रन्थादेर्मुखबन्धे।
भूमिकायाम्॥
अनुक्रान्तः। त्रि॥ अनुक्रमेणोक्ते॥
अनुक्रियमाणः। त्रि। विडम्बमाने॥
अनुक्रोशः। पुं। दयायाम्॥ यथा। गु
णाधिकान्मुदंलिप्सेदनुक्रोशंगुणाध-

भात् । मैत्रींसमानादन्विच्छेञ्चता पैःपरिभूयते इति ॥ अनुक्रोशन्त्यने- न । क्रुशआह्वानेरोदनेच । इसश्च तिघञ् ॥

अनुगः । त्रि । अनुगते । अन्वचे ॥ अ- नुगच्छति । गम्लृगतौ । अन्येभ्योपी तिडः ॥

अनुगतः । त्रि । सेवके । अनुगे । पश्चा द्व्याप्ते ॥ नियते ॥ अनुगम्यतेस्म । ग म्लृ॰ । क्त ॥

अनुगमः । पुं । उपसर्पणे ॥ यथा । कृ तेतुदीयतेगत्वाचेतायामाहूतायवै । द्वापरेयाचमानायकलौत्वनुगमा न्विते । इतिस्मृतिः ॥ पश्चाद्गमने ॥ न्यायमते येनरूपेण तावत्पदार्थग्र- हः तद्रूपंतावत्पदार्थानुगमक- म् तस्यक्रियायाम् ॥

अनुगमनम् । न । पश्चाद्गमने ॥ सह गमने ॥

अनुगवीनः । पुं । गोपाले ॥ गोःपश्चा त् इतिअनुगु । पश्चादर्थेऽव्ययीभावः । गोः पश्चात् पर्याप्तंगच्छतीत्यर्थे अनुग्वलंगामीतिखः ॥

अनुगामी । त्रि । कामगामिनि ॥ पश्चा द्गामिनि ॥ स्त्री । अनुगामिनी ॥

अनुगिरम् । । । गिरेःसमीपम् । सामी प्येऽव्ययीभावः । गिरेश्चसेनकस्येति समासान्तष्टच् ॥

अनुग्रहः । पुं । प्रसन्नतायाम् । फलदान ने ॥ इष्टसम्पादनेच्छायाम् । अभ्युप पत्तौ । अनिष्टनिवारणपूर्वकेष्टसाध ने ॥ यथा । विरूपोन्मत्तनिःस्वाना मकृत्वापूर्वकंहियत् । पूरणंदानमा नाभ्यामनुग्रहउदाहृतइति ॥ तारका सु ॥ अनुग्रहणम् । ग्रहउपादने । ग्र हवृद्रिश्चप् ॥

अनुग्राहकः । त्रि । समर्थके ॥ अनुगृ ह्णातीतिग्रहेर्ण्वुल् ॥

अनुचरः । त्रि । सहाये ॥ दासे । सेव के ॥ अनुचरति । चरगतौ । चरेष्टः ॥

अनुचिन्तनम् । न । अनुध्याने ॥

अनुच्छिष्टम् । त्रि । पवित्रे ॥ नउच्छिष्ट म् ॥

अनुजः । पुं । कनीयसि । कनिष्ठसोद रे ॥ अनुपश्चाज्जातः । उपसर्गेचसं ज्ञायामितिडः ॥ त्रि । पश्चाज्जाते ॥ । न । प्रपौण्डरीकनामनिसुगन्धि द्रव्ये ॥

अनुजन्मा । पुं । कनीयसि ॥ अनुपश्चा ज्जन्मयस्यस ॥

अनुजा । स्त्री । त्रायमाणायाम् ॥ कनि ष्ठायांभगिन्याम् ॥

अनुजाता । स्त्री । कनिष्ठायांभगिन्याम् ॥

अनुजिघृक्षा । स्त्री । अनुग्रहीतुमिच्छा

याम्। ग्रहेःसन्नन्तादप्प्रत्ययेटाप्॥

अनुजीवी। त्रि। सेवके॥ अनुजीवितुंशील. सुपीतिणिनि.॥

अनुज्ञा। स्त्री। अनुमती॥ यथा। नाग्न्योर्नवाह्मणयोर्नगुरुशिष्ययोरन्तराव्यपेयात् अनुज्ञयातुव्यपेयात् इतितिथ्यादितत्त्वम्॥ समस्य समंप्रत्युत्कर्षनिकर्षौदासीन्येन प्रवर्त्तनायाम्॥ अनुज्ञायते इति अनुपूर्वा ज्ज्ञानातेरातश्चोपसर्ग इत्यङ्॥

अनुज्ञातः। त्रि। अनुमते॥

अनुज्येष्ठम्। १। ज्येष्ठानुक्रमेणेत्यर्थे॥ ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण। अव्ययंविभक्तीत्यव्ययीभाव॥

अनुतर्षः। पुं। सुरापानपात्रे॥ तृष्णायाम्॥ अभिलाषे॥ शीधुपाने। सर्के॥ अनुतर्षणम्। त्रितृषापिपासायाम्। घञ्॥ मद्ये॥ अनुतृष्यत्य नेन इति॥

अनुतर्षणम। न। अनुतर्षे॥ अनुतर्षणम अनेनवा। त्रितृषा०। भावेकरणेवाल्युट्॥

अनुतापः। पुं। पश्चात्तापे॥ अनुतपनम्। तपसन्तापे। घञ्॥

अनुत्तमः। त्रि। वरे। मुख्ये॥ ईश्वरे॥ नउत्तमोऽस्मात्॥ अधमे॥ नउत्तमः॥

अनुत्तमाम्भः। न। सांख्यानांतुष्टिविशेषे॥ शब्दादिभोगाभ्यासात प्रवर्द्धन्त कामाः तेचविषयाप्राप्तौ कामिनं दुन्वन्तीति भोगदोषंभावयतोविषयेषपरमेयातुष्टिः साचतुर्थीअनुत्तमाम्भउच्यते॥

अनुत्तरः। त्रि। श्रेष्ठे॥ निरुत्तरे। प्रतिजल्पविवर्जिते॥ वुभ्रे॥ दक्षिणस्यांदिशि॥ अधमे। स्थिरे॥ अनतिशये॥ उत्तरस्याभाव. उत्तरविरुद्धो वा॥ नउत्तरोयस्माद्वा॥

अनुदर्शनम्। न। पुन. पुनरालोचने॥ अनुवार वारं दर्शनम्॥

अनुदात्तः। पुं। स्वरभेदे॥ नीचैरनुदात्त इतितत्स्वरूपम्॥ नउदात्त.॥

अनुदितः। पुं। उदयात् पूर्वमरुणकिरणवतिप्रविरलतारके कालविशेषे॥ त्रि। अनुक्ते॥ अनुत्थिते॥ नउदितः॥

अनुद्घात। त्रि। प्रतिवन्धनिवृत्तौ॥ प्रतिघातरहिते॥

अनुद्दिष्ट.। त्रि। उद्देशहीने॥

अनुद्रुत। त्रि। अनुगामिनि। अनुगते॥ न। तालविशेषे॥ सतुद्रुतार्द्धो मात्राचतुर्थभागोवा। यथा। अर्द्धमात्रंद्रुतंत्त्वेयंद्रुतार्द्धञ्चाप्यनुद्रुतमिति शब्दरत्नावली॥

अनुद्विग्नमना: । त्रि । स्वस्थचित्ते ॥ नउद्विग्नंमनोयस्यस: ॥

अनुद्वेगकर: । त्रि । कस्यचिदप्यदु:ख करे ॥ यथा। अनुद्वेगकरोराजेति ॥

अनुधावनम् । न । पश्चाद्धावने ॥ अनुसन्धाने ॥ यथा । तस्मिन् कुरङ्गश्चापात्मि मुहुश्चित्तंनिवारय । नतन्मनस्तवाधीनं इथातचानुधावनम् ॥ इत्युद्भट: ॥

अनुध्या । स्त्री । अनुध्याते ॥

अनुध्यानम । न । अनुचिन्तने ॥ अनुग्रहे ॥ आसक्तौ ॥

अनुध्येय. । त्रि । अनुग्राह्ये ॥

अनुनय: । पुं । विनये । प्रणिपाते ॥ सान्त्वने ॥ प्रार्थने ॥ अनुनयनम् । शोक्° । एरच् ॥

अनुनासिक: । पुं । मुखसहितनासिकयोच्चार्य्यमाणे वर्णविशेषे ॥ त्रि । नासिकामनुगते ॥

अनुनेय: । त्रि । अनुनयार्हे ॥

अनुन्न: । त्रि । अविद्धे ॥ ननुन्न: ॥

अनुपकारी । त्री । प्रत्युपकाराजनके ॥ नउपकारी ॥

अनुपथ: । त्रि । अनुवर्त्तिनि ॥ भृत्ये ॥ अनुपश्चात्पन्थायस्य । ऋक्पूरब्धू: पथामानक्षेइत्यः ॥

अनुपदम् । । न । अनुगे ॥ पश्चाद्गमने ॥ पदस्यपश्चात् । पश्चादर्थेऽव्ययीभाव: ॥

अनुपदी । त्रि । अन्वेष्टरि ॥ अनुपदमन्वेष्टा । अनुपदान्वेष्टेतिसाधु. ॥ अनुपदीगवाम् । गोपदात् पश्चादन्वेषणात्ग्गवामेव । तेनहिरण्याद्यन्वेष्येनभवतीति हरदत्त. ॥ हलायुधस्तुसामान्ये नान्वेषणकर्त्तरीत्याह । खोजी इतिभाषायाम् ॥

अनुपदीना । स्त्री । पनद्धाम् । पादायामवर्त्मापादुकायाम् ॥ पदस्यानु । यस्यचायामइत्यव्ययीभाव: । अनुपदंपादायामप्रमाणा बद्धा । अनुपदसर्वेतिख: ॥

अनुपपत्ति: । स्त्री । अभावे ॥ नउपपत्ति: ॥ असङ्गतौ ॥

अनुपम: । त्रि । उत्तमे ॥ नास्तिउपमायस्य ॥

अनुपमा । स्त्री । कुमुदाख्यदिग्गजकरिण्यामित्यमर: ॥ सुमतीकाख्यदिग्गजकरिण्यामितिमेदिनि: ॥ श्रेष्ठत्वान्नास्त्युपमाऽस्य: ॥

अनुपरत: । त्रि । अविरते । सन्तते ॥ नउपरत: ॥

अनुपलब्धि: । स्त्री । प्राप्त्यभावे ॥ ज्ञानाभावे ॥ तत्कारणं यथा। अतिदूरात् सामीप्यादिन्द्रियघातान्मनोऽन

वस्थानात्। सौक्ष्म्याद्व्यवधानादभिभवात्समानाभिहाराच्च। ७। उदाहरणानि यथा। उत्पतन् वियति पतत्री अतिदूरतया सन्नपिनप्रत्यक्षेणोपलभ्यते। लोचनस्थमञ्जनमतिसामीप्यान्नदृश्यते। बाह्येन्द्रियघातोऽन्धत्वबधिरत्वादिस्तस्मात् रूपादयोनोपलभ्यन्ते। अङ्किकामाद्युपहतमना स्फीतालोकमध्यवर्त्तिनमिन्द्रियसन्निकृष्टमप्यर्थं मनोनवस्थानान्नपश्यति। इन्द्रियसन्निकृष्टं परमाण्वादिप्रणिहितमना अपिसौक्ष्म्यान्नपश्यति। कुड्यादिव्यवहितं राजदारादिव्यवधानान्नपश्यति। अहनिसौरीभिर्भाभिरभिभूतंग्रहनक्षत्रमण्डलंनपश्यति। तोयदमुक्तजलबिन्दून्जलाशये समानाभिहारान्नपश्यति। चकारोऽनुक्तसमुच्चयार्थः। तेनानुद्भवोपिसङ्गृहीतः। तद्यथा। क्षीराद्यवस्थायां दध्याद्यनुद्भवान्न दृश्यते॥

अनुपशयः। त्रि। असात्म्ये॥

अनुपसंहारी। पुं। हेत्वाभासविशेषे॥ सच अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितोनुपसंहारी। यथा। सर्वमनित्यं प्रमेयत्वादिति। अत्रसर्वस्यापिपक्षत्वात् दृष्टान्तोनास्ति। नउपसंहारी॥

अनुपस्कृतम्। त्रि। अविकृते॥ अविगर्हिते॥

अनुपहितः। त्रि। समष्ट्यज्ञानतदुपहितेश्वरयोराश्रये स्वमहिमप्रतिष्ठिते अक्षरशब्दवाच्ये चिन्मात्रे॥

अनुपाकृतः। पुं। मन्त्रैः पशोः स्पर्शनमुपाकरणं तद्रहितेपशौ॥

अनुपातः। पुं। त्रैराशिकगणिते॥ पश्चात्पतने॥ पूर्वोक्तपातानुसारेणापराङ्कपाते॥

अनुपातकम्। न। पञ्चत्रिंशत्प्रकारभिन्नेमहापातकसदृशपापविशेषे॥

अनुपात्ययः। पुं। क्रमप्राप्तस्यानतिपाते। पर्याये॥

अनुपानम्। न। भेषजाङ्गे पेयविशेषे। भेषजेनसह ततपश्चाद्वा यत्पीयते तस्मिन्॥ यथा। अनुपानविशेषेणाकरोतिविविधान्गुणानिति वैद्यकम्॥ समीपस्थोदके॥ अनुगतंपानम्॥

अनुपुष्पः। पुं। शरे॥ इतिशब्दचन्द्रिका॥

अनुपूर्वशः। ा। क्रमेणेत्यर्थे॥

अनुप्रेतः। त्रि। मामुपनयस्वेत्युपनयनार्थमनुपसन्ने॥ अननुगते॥ एकाकिनि॥

अनुप्रविष्टः। त्रि। विषयविकारविज्ञाने. प्रच्छन्ने॥

अनुप्रभूतः। त्रि। अनुस्यूते॥

अनुप्रासः । पुं । शब्दालङ्कारभेदे ॥ स यथा । वर्णसाम्यमनुप्रासः । स्वरवैसादृश्येपिव्यञ्जनसदृशत्त्वं वर्णसाम्यम् । रसाद्यनुगतः प्रकृष्टोन्यासोऽनुप्रासः ॥ उदाहरणं यथा । आदायवकुलगन्धानन्धीकुर्वन् पदेपदे भ्रमरान् । अयमेतिमन्दमन्दं कावेरीवारिपावन.पवनइति ॥ छेकवृत्तिगतोद्विधा । छेकाःविदग्धा.।वृत्तिर्नियतवर्णगतोरसविषयोव्यापारः । गतइतिछेकानुप्रासोवृत्त्यनुप्रासश्चेतितद्भेदौ ॥

अनुप्लवः । त्रि । सहाये ॥ अनुगे ॥ अनुपश्चात्प्लवते । प्लुङ्गतौ । पचाद्यच् ॥

अनुबन्धः । पुं । बन्धे ॥ दोषोत्पादे । इच्छातोऽपराधकरणे ॥ यथा । अनुबन्धमवस्थांचदृष्ट्वादण्डं निपातयेदिति ॥ वातादिदोषाणाम प्राधान्ये ॥ उच्चरितप्रध्वंसिनि । विनश्वरे ॥ प्रकृतिप्रत्ययागमादेशानांयःकार्यार्थमासज्यते नचप्रयोगसमवायी सोऽनुबन्धउच्यते॥मुख्यानुयायिनिशिशौ । मुख्यंपित्रादिकमनुयातियः शिशुस्तस्मिन् ॥ प्रकृतस्यानुवर्त्तने । प्रकृतस्यप्रारब्धस्यअनुवर्त्तने । सम्बन्धे॥ पश्चाद्भाव्यशुभपरिणामे॥ अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनेषु ॥ लेशे ॥ फलसाधने॥ अनुबध्यते । बन्धबन्धने । घञ् ॥

अनुबन्धी । त्रि । सहचारिणि॥ अविच्छेदेनव्यापके ॥ अनुबध्नातीति ॥

अनुबन्धी । स्त्री । हिक्कायाम॥ तृष्णायाम् ॥

अनुबोधः । पुं । प्रबोधने । गतगन्धस्य पुनःप्रयत्नेनोद्बोधने ॥ यथा । कस्तूरिकादिनामस्यादेः ॥ पश्चाद्बोधे ॥ अनुबोधनम । बुधअवगमने । भावेघञ् ॥

अनुब्राह्मणी । त्रि । अनुब्राह्मणाध्ययनकर्त्तरि ॥ ब्राह्मणसदृशोग्रन्थोऽनुब्राह्मणम् । तदधीते । अनुब्राह्मणादिनिः ।

अनुभवः । पुं । स्मृतिभिन्नज्ञाने ॥ सद्विधः यथार्थोऽयथार्थश्चेति । तद्वति तत्प्रकारकानुभवो यथार्थानुभवः । सैवप्रमेत्युच्यते । तदभाववति तत्प्रकारकश्चायथार्थानुभवः॥ उपलम्भे। उपलब्धौ । साक्षात्कारे । साक्षात् स्वरूपबोधे ॥ अस्यमाहात्म्यन्तु । यस्यानुभवपर्यन्ता दृष्टिस्तत्त्वे प्रवर्त्तते । तद्दृष्टिगोचराःसर्वेमुच्यन्तेसर्वकिल्बषैरिति ॥ प्रत्यक्षादौ ॥ अनुभवनम् । भू० । ऋदोरप् ॥

अनुभविता । त्रि । चेतने ॥

अनुभावः । पुं । कोषदण्डजतेजसि । प्रभावे ॥ निश्चये ॥ सतांमतिनिश्चये । सतामभिप्रायस्यनिश्चये ॥ भावबोधके रोमांचादौ । कटाक्ष भुजाक्षेप प्रभृतिषु ॥ यथा । भावंमनोगतसाक्षात्स्वहेतुंव्यञ्जयन्तिये । तेऽनुभावा इतिख्याताभ्रूविक्षेपस्मितादय इतिर सार्णवसुधाकरः ॥ भवनंभावः । श्रिणीभुवइतिघञ् । अनुगतोभावोऽनुभावः।प्रादयोगताद्यर्थइतिसमासः। सामर्थ्ये । अनुभावयति । भुवःपचाद्यच् ॥

अनुभाव्यः । त्रि । अनुभवविषये ॥

अनुभूतः । त्रि । परिचिते ॥ यथा । जयतिश्रीगुरुदेवोयत्प्रसादादिदंजगत् । अनुभूतंमयासम्यग्दृष्टंनसौरम ख्यपीति ॥

अनुभूतिः । स्त्री । ज्ञानभेदे । अनुभवे ॥ यथा।अनुभूतिंविनामूढोवृथाब्रह्मणि मोदते । प्रतिबिम्बितशाखाग्रफलास्वादनमोदवदिति ॥ प्रत्यक्षानुमित्युपमितिशब्दभेदात्साचतुर्विधाभवति ॥

अनुमतः। त्रि। कृतोत्साहे ॥ अनुज्ञाते॥

अनुमतकर्मकारी । त्रि । आज्ञयाकार्यकर्त्तरि ॥ लिखितपत्राद्यनुसारेणकर्मकर्त्तरि ॥

अनुमतिः । स्त्री । कलोनेन्दुपूर्णिमायाम् । अनुज्ञायाम् ॥ उदयकालेमतिपक्षयोगात्कलाहीनेचन्द्रेसत्यनुमतिशब्दवाच्यापूर्णिमाभवति ॥ अनुज्ञायाम् । राजादेःसम्मतौ । तांविनायागादिक्रियायाअनिष्पत्तेः ॥ सम्मतिपूर्वकाज्ञायाम् ॥ अनुमन्यतेऽनेन ॥

अनुमन्ता । त्रि । यदनुमतिंविनाकर्त्तुं नशक्यतेतस्मिन् । अनुमतिदातरि ॥ कार्यकारणप्रवृत्तिषुस्वयमप्रवृत्तोपिपरमात्मा प्रवृत्तइवसन्निधिसत्तामात्रेणतदनुकूलत्वात्स्वव्यापारेषुप्रवृत्तान्देहेन्द्रियादीन्ननिवारयतिकदाचिदपि तत्साक्षिभूतःपुरुषः साक्षीअनुमन्ता ॥

अनुमरणम् । न । अनुसंस्थायाम् । पश्चान्मरणे । भर्त्तरिमृतेतत्पादुकादिकमुरसिनिधायज्वलच्चितारोहणपूर्वकं ब्राह्मणीभिन्नस्त्रिया मरणे ॥ यथा । देशान्तरमृतेपत्यौसाध्वीतत्पादुकाद्वयम् । निधायोरसिसंशुद्धाप्रविशेज्जातवेदसमितिब्रह्मपुराणम् ॥ पृथक्चितिंसमारुह्यनविप्रा गन्तुमर्हतीतिस्मृतिः ॥ तवस्वरूपारमणीजगत्याच्छन्नविग्रहा । मोहाज्जुर्चितारोहाद्भवेन्नरकगामिनी-

तिसहमरणानुमरणयोःसामान्यतो निषेधकमागमवचनम् ॥ सहमरणे॥

अनुमा। स्त्री। अनुमितौ। अनुमाने॥

अनुमानम्। न। कल्पने॥ साख्यस्मृति परिकल्पिते प्रधाने॥ स्मृतौ॥ अनु मीयते श्रुतिर्ययेतिव्युत्पत्त्या स्मृतेर् धिप्रामाण्यम् प्रतिमूलसापेक्षत्वात्॥ अ नुमितिकरणे॥ लिङ्गलिङ्गिपूर्वके। पूर्ववत् शेषवत् सामान्यतो दृष्टश्चेति त्रिविधे अनुमितिसाधने॥ अत्रोक्त- भाष्यकारैः।सत्सुचवेदान्तवाक्येषु ज गतो जन्मादिकारणवादिषु तदर्थ ग्रहणदार्ढ्यायानुमानमपिवेदान्तवाक्या विरोधिभवन् नं निवार्यतइति॥

अनुमानोक्ति। स्त्री। तर्के॥ अनुमाने स्यउक्तिः॥

अनुमितिः। स्त्री। अनुभवविशेषे। प सामर्शजन्यज्ञाने। व्याप्तिविशिष्टप- क्षधर्मताज्ञानजन्यज्ञाने॥ यथा। धूमदर्शनाद्वह्निमान्पर्वतइत्याकार- ज्ञानमनुमितिः। अस्याव्यापारकार णपरामर्शः। अस्याःकरणंव्याप्तिज्ञा नम्॥ अनुमानम्। डुमिञ्प्रक्षेपणे क्तिन्॥

अनुमेयः। त्रि। अनुमातुंयोग्ये॥

अनुमोदः। पुं। एवमस्तुइत्याकारे अ नुमोदने॥

अनुमोदनम्। न। अनुमोदे॥

अनुमोदितः। त्रि। अनुज्ञाते। कृता नुमोदने। अनुमते॥ यथा। भवता यद्व्यवसितंतन्मेसाध्वनुमोदितमिति श्रीभागवतम्॥

अनुयाजः। पुं। यज्ञाङ्गे॥ पश्चादनुयाजाः। यजेर्घञि प्रयाजानुयाजौयज्ञाङ्गइति कुत्वाभावोनिपातसिद्धः॥

अनुयायी। त्रि। सदृशे॥ पश्चाद्गा- मिनि॥

अनुयुक्तः। पुं। भृतकाध्येतरि॥ इति- महाभारतम्॥

अनुयोक्ता। पुं। भृतकाध्यापके॥ इति महाभारतम्॥

अनुयोगः। पुं। प्रश्ने॥ अनुयोजनम्। युजेर्घञ्॥

अनुयोगकृत्। पुं। आचार्ये॥ इतिहे मचन्द्रः॥

अनुयोजनम्। न। प्रश्ने॥ इतिहेम चन्द्रः॥

अनुरक्तः। त्रि। अनुरागवति॥ यथा। अनुरक्तोगुणान्ब्रूतेविरक्तोदूषणानि चेति॥ अनुकूले॥

अनुरञ्जनम्। न। अनुरागे। हर्षजन ने॥

अनुरतः। त्रि। अनुरागविशिष्टे। प्री ते। अनुरक्ते॥ अनुपूर्वात् रमेः क-

र्जिगाः॥

अनुरतिः । स्त्री । अनुरागे ॥

अनुरहसम् । न । एकान्ते । रहोऽनु । अनुगतंरहः । अनुगतं रहोस्मिन्वा । अन्ववतप्ताद्रहसइत्यच् ॥

अनुरागः । पुं । अन्योन्यप्रीतौ । स्नेहे ॥ अनुगतोरागः ॥

अनुरागी । त्रि । अनुरक्ते ॥ अनरागोऽस्यास्तिअस्मिन वा । मतुवर्थेइनिः ॥

अनुराधा । स्त्री । सप्तदशेनक्षत्रे ॥ अत्रजातस्य फलंयथा । सत्कीर्त्तिकान्तिश्चसदोत्सवःस्याज्जेतारिपूणांचकलाप्रवीणः । स्यात्सम्भवेयस्यकिलानुराधासम्पत्प्रमादौविविधौ भवेतामिति कोष्ठीप्रदीपः ॥ राधामनुगता ॥

अनुबद्धः । त्रि । निबद्धे ॥

अनुरूपम् । त्रि । सदृशे ॥ योग्ये ॥

अनुरूपम् । ऽ । सदृशे । प्रतिरूपे ॥ रूपस्ययोग्यम् । यथार्थेयोग्यतायामव्ययं विभक्तीत्यव्ययीभावः । अव्ययीभावश्चेत्यव्ययत्वम् ॥

अनुरोधः । पुं । अनुवृत्तौ । अनुवर्त्तने । आराध्यादेरिष्टसम्पादने ॥ अनुरोधनम् । रुधिर्आवरणे । घञ् ॥

अनलब्ध. । त्रि । अनुविक्ते ॥

अनलापः । पुं । मुहुर्भाषणे । वारंवारं भाषणे ॥ अनुलपनम् लपव्यक्तायांवा

चि । भावे घञ् ॥

अनुलिप्तः । त्रि । रञ्जिते ॥ कृतानुलेपने ॥

अनुलेपः । पुं । चन्दनादौ ॥ अनुलेपनम् । लिपेर्घञ् ॥

अनुलेपनम् । न । चन्दनादौ ॥ गात्रेगन्धद्रव्यादिलेपने ॥ अनुलिप्यते । लिपउपदेहे । कर्मणिल्युट् ॥

अनुलोमः । पुं । यथाक्रमे ॥ अचमप्रत्यन्वेत्यच् ॥

अनुलोमजः । त्रि । अनुलोमजाते । अप्रतिलोमजे ॥ यथा । ब्राह्मणात् क्षत्रियागर्भजातः । क्षत्रियात् वैश्यायां जातइत्यादिज्ञेयम् ॥

अनुवत्सरः । पुं । सम्वत्सरे ॥

अनुवर्त्तनम् । न । अनुरोधे । आराध्यादीष्टसम्पादने ॥ अनुगम्यवर्त्तनमाराधनम् ॥ अनुवृत्तौ ॥

अनुवर्त्तितः । त्रि । सेविते ॥

अनुवर्त्ती । त्रि । अनुकूले ॥

अनुवाकः । पुं । ग्रन्थे । अध्यीतऋग्जाले ॥ ऋग्यजुःसमूहे ॥ अनूच्यते । वचपरिभाषणे । घञ । चजोरिति कुत्वम् ॥

अनुवाक्या । स्त्री । पूशास्तृपाठ्यर्थादेवताह्वान्याम्ऋचि ॥ अनुउच्यते । वचेऋहलोर्ण्यत् । चजोरितिकुत्वम् ॥

। शब्दसत्त्वात् वचोशब्दसंशाया-
मितिनप्रतिषेध. ॥

अनुवातः । पुं । वायुविशेषे । यःशिष्य देशाद्गुरुदेशमागच्छतिवायुः सोनु वातइत्युच्यते ॥

अनुवादः । पुं । प्राप्तस्यपुनः कथने । ज्ञातार्थस्यप्रतिपादने।।सद्वस्योपन्यासे ॥ प्रमाणान्तरावगतस्यार्थस्यशब्देनोक्तिरनुवादः ॥ ज्ञातस्यकथने । यथा । अग्निर्हिमस्यभेषजमित्यादिः । हिमविरोधित्वस्याग्नेःप्रत्यक्षावगतत्वात् । अनुवदनम् । वदअभिवादनस्तुत्योः । घञ् । कुत्सितेर्थे । विधिविहितस्यानुवचनमनुवादः । न्या० २ । ६५ ॥

अनुवासः । पुं । सौरभ्ये ॥

अनुवासनम् । न । स्नेहने ॥ धूपने ॥ वैद्यकोक्तस्नेहवस्तौ ॥ यथा । द्विधावस्तिः परिक्लेयानिरूहश्चानुवासनम् । कर्षाय।थैनिरूहः स्यात्स्नेहाथैरनुवासनमिति ॥ वासच्छेदेचु० । अनुपूर्वात्-भावेल्युट् ॥

अनुवित्तः । त्रि । अनुलब्धे ॥

अनुविद्धः । त्रि । खचिते ॥

अनुविषक्तम । त्रि । अनुगते ॥

अनुविहितः । त्रि । अनुवर्त्तनि ॥ कर्त्तरिक्तः ॥



अनुवृत्तः । त्रि । प्रविष्टे । व्याप्ते ॥ पालिते ॥ अनुवृत्तिविशिष्टे ॥

अनुवृत्तिः । स्त्री । प्रवाहरूपेणानुगतौ ॥ अनुरोधे ॥ आनुकूल्ये । सेवायाम् ॥ अन्वये ॥ अनुवर्त्ततेव्याप्नोति । वृतु वर्त्तने । क्तिच् ॥ अनुवर्त्तनंवाक्तिन् ॥

अनुवेश्यः । त्रि । तदन्तर्गृहवासिनि ॥

अनुव्रजनम् । न । अनुव्रज्यायाम् । गृहागतानांशिष्टानांगमनसमयेकियद्दूरपर्यन्तंपश्चाद्गमनरूपे शिष्टाचारे ॥ यथा । आयान्तमग्रतोगच्छेत् गच्छन्तमनुव्रजेदितिनिगमकल्पद्रुमतन्त्रम् ॥

अनुव्रज्या । स्त्री । गच्छतोनुगमने । अनुव्रजने ॥ अनुव्रजनम् । अनुव्रज्या- । क्यप् ॥

अनुशयः । पुं । द्वेषे ॥ पश्चात्तापे ॥ अनुबन्धे ॥ दीर्घद्वेषे ॥ शास्त्रोक्तकर्मणि ॥ अनुशयनम् अनेनवा । शीङ्स्वप्ने । एरच् पुंसीतिघोवा ॥

अनुशयी । त्रि । चन्द्रस्थलस्खलितेऽवरोहतिव्रीह्यादिदेहसंश्लिष्टे वेदविहितकर्मानुष्ठातरि कर्मिणि ॥ जीवे ॥ अनुबन्धवत्प्रणामैश्वर्यमूलेशेते इति तथा ॥

अनुशयी । स्त्री । क्षुद्ररोगान्तर्गतपादरोगविशेषे ॥ तल्लक्षणादिर्यथा ॥

गम्भीरामल्पशोर्थांचसवर्णामुपरिस्थिताम्। पादस्यानुशयींतान्तुविद्यात्त: प्रपाकिनीम्॥ वरेदनुशयींवै ख:क्रिययाश्लेषविद्वेषेरितिभावप्रकाशः॥

अनुशरः। पुं। राक्षसे॥ अनुशृणाति। शहिंसायाम। अनुपूर्वः। ऋदोरप्॥

अनुशायी। पुं। जीवे॥

अनुशासनम्। न। अनुशिष्टौ। आज्ञायाम॥ उपदेशे॥ नियोगवचने॥ अनुशिष्यन्ते व्याख्यायते लक्षणादिर्येन। शासुअनुशिष्टौ अनुपूर्वः। ल्युट्॥ अनुत्पादने॥ यथा। शब्दानामनुशासनम। अनुशिष्यन्तेअसाधुशब्देभ्यः प्रावभज्यबोध्यन्तेयेनेतिकरणेल्युट्॥

अनशासितः। त्रि। अनुशिष्टे। अनुशिषिते॥

अनुशासिता। त्रि। निश्चन्तरि॥ प्रशासितरि॥

अनुशिष्टः। त्रि। ज्ञापिते। शिक्षिते॥ आप्तसे॥

अनुशिष्टिः। स्त्री। कर्त्तव्याकर्त्तव्ययोर्विशिष्यज्ञापने। अनुशासने॥ अनुशासनम। शासु०। स्त्रियांक्तिन् नाकादिभ्यः। शास इदङ्हलोः॥

अनुशीलनम्। न। आलोचने॥ मुहुःसेवने॥ पुनःपुनरभ्यासे॥

अनुशोचनम्। न। शोके॥ शुचशोके अनुपूर्वः। ल्युट्॥

अनुश्रवः। पुं। वेदे॥ गुरुमुखादनुश्रूयतएव न केनचित्क्रियते अनुपूर्वाच्छृणोतेः ऋदोरविच्छ्यप्॥

अनुषक्। ।। अनुमाने॥

अनुषक्तः। त्रि। अनुविषक्ते। अनुगते॥ अनुसज्यतेस्म। षञ्ज०। क्तः॥

अनुषङ्गः। पुं। करुणायाम॥ इतिहलायुधः॥ एकत्रान्वितार्थानामपरत्रान्वये॥ आसत्तौ॥ न्याये। उपनयस्य शब्दस्यनिगमने॥ यथा। वह्निव्याप्यश्चायमतस्मादन्हिमानिति॥ अनुषज्यतेऽच। षञ्जसङ्गे। हलश्चेतिघञ्॥ अन्योन्देशेप्रवृत्तावन्यस्यापिसिद्धिः॥

अनुषङ्गि। चि। व्यापके॥

अनुष्टुप्। स्त्री। सरस्वत्याम्॥ अष्टाक्षरायांवृत्तौ॥ यथा। पञ्चमोलोगुषष्ठं सप्तमस्तुसमेलगुः। पादेष्विशेगश्चेतश्लोकोऽनुष्टुप्चकीर्त्तितः॥ क्वचितपादेतुविषमेपञ्चमाद्यस्तथोपिवा:। तेन्नापिसर्वगाःश्लोकेक्वचित् केवलपञ्चमइति॥ अनुस्तुभ्नाति। स्तुनभु ०। क्विप्॥

अनुष्ठानम्। न। क्रियारम्भे॥ करणे॥ अनुष्ठीयतेयत्। ष्ठा०। ल्युट्॥

अनुष्ठितः। चि। कृते॥

अनुस्वा — अनूढः

अनुष्णः । त्रि । अलसे । मन्दे ॥ शीतले ॥ उष्णोदन्यः उष्णादन्यः ॥ न । उत्पले ॥

अनुष्णवल्लिका । स्त्री । नीलदूर्वायाम् ॥

अनुसंस्था । स्त्री । अनुमरणे ॥

अनुसञ्चरन् । त्रि । गमनागमनेकुर्वति ॥

अनुसन्ततम् । त्रि । अनुस्यूते । अनुगते ॥

अनुसन्धानम् । न । अन्वेषणे ॥ अनुसन्धीयते । डुधाञ्० । ल्युट् ॥

अनुसमुद्रम् । । समुद्रस्यसमीपे ॥ समुद्रंसमया । अनुर्यत्समयेत्यव्ययीभावः ॥

अनुसरणम् । न । अनुवृत्तौ ॥ अनुपूर्वात् सर्त्तेर्ल्युट् ॥

अनुसर्गः । पुं । प्रतिसर्गे ॥ ब्रह्मादीनाम मन्तरोत्पत्तिरूपे ॥

अनुसवम् । न । त्रिकाले ॥

अनुसवनम् । । सर्वदार्थे ॥

अनुसारः । पुं । पूर्वानुरूपे । अनुसरणे । अनुमाने । अनुसर्त्तेर्घञ् ॥

अनुसारी । त्रि । अनुसरणकर्त्तरि ॥

अनुसृतः । त्रि । उपासिते ॥

अनुस्मृतिः । स्त्री । ध्याने ॥ अनुस्मरणम् । स्मृ० । क्तिन् ॥

अनुस्यूतम् । त्रि । अनुसन्तते ॥ अनुसीव्यतेस्म । षिवु० । क्तः । च्छ्वोरित्यूठ् ॥

अनुस्वारः । पुं । अं इति अचः परेबिन्दौ ॥ स्वरति । स्वृशब्दोपतापयोः । अच् । ततःमत्वाद्यण् । स्वरणम् भावे घञ्वा ॥ अनुगतःस्वारः । स्वरमनुभवतिवा ॥

अनुहारः । पुं । अनुकारे । सदृशकरणे । सदृशरूपवेशभाषाद्याविष्करणे ॥

अनुहरणम् । हृञ्हरणे । घञ् । उपमायाम् ॥

अनूकः । पुं । गतजन्मनि ॥ न । कुले ॥ शीले ॥ अनूच्यति । उचसमवाये । इगुपधेतिकः । न्यङ्क्वादिः ॥ त्रिपुरुषानूकमित्यत्र तु त्रीन्पुरुषाननुकायति । कैशब्दे । आतश्चेतिकः । अन्येषामपीतिदीर्घः ॥

अनूचानः । पुं । साङ्गवेदविचक्षणे ॥ अनुवचनसमर्थे ॥ यथा । अनूचानः पण्डितम्मन्यकानोयोविद्ययाऽत्सिय- शः परेषाम् । तस्यान्तवन्तस्तुभवन्ति लोकानचास्यतद्ब्रह्मफलंददातीति- महाभारतम् ॥ त्रि । सविनये । विनीते ॥ अनुवोचत् । वेदस्यानुवचनं कृतवान्वा । उपेयिवानितिसाधुः ॥

अनूचानमानी । त्रि ॥ अनूचानंमन्ये ॥ अनूचानमात्मानंमन्यते इत्यर्थेणिः । आत्ममानेखश्चेतिचकारात्णिनिः ॥

अनूनः । त्रि । वामने ॥ नीचे ॥

अनूढः । त्रि । अविवाहिते ॥ नऊढः । नञ्समासः । नलोपोनञः । तास्मा

नुडर्चि ॥

अनूचम् । त्रि । अवक्तव्येगुर्वादिनामनि ॥ यथा । आत्मनाम गुरोर्नाम नामा तिकृपणस्यच । श्रेयस्कामोनगृह्णीयाज्जयेष्ठापत्यकलत्रयोरिति ॥ वदः सुपिक्यप्चेति वदेर्भावेक्यप् ॥

अनूनः । त्रि । पूर्णे ॥ नऊनः ॥ अनिश्चिते ॥ नास्तिनूनंयस्य ॥

अनूनकः । त्रि । पूर्णे ॥ ऊनयति । ऊन परिहाणे ॥ अच् । स्वार्थेकन् । नऊनकः ॥

अनूपः । पुं । सैरिभे । महिषे ॥ त्रि । जलप्राये । अम्बुप्रायदेशे ॥ अस्यलक्षणंयथा । वह्वम्बुर्वहुवृक्षश्चवातश्लेष्मामयान्वितः । देशोऽनूप इतिख्यातः शास्त्रेषुचमनीषिभिरिति ॥ अपि च । नदीपल्वलशैलाढ्यफुल्लोत्पलकुलैर्युतः । हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः ॥ सरोवराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः । प्रभूतद्रुमगुल्माढ्यो नानापुष्पफलान्वितः ॥ अनेकशालिकेदारकदलीक्षुविभूषितः । अनूपदेशोवातव्योवातश्लेष्मयार्त्तिमानितिभावप्रकाशः ॥ अनुगता आपोऽच । प्रादिभ्योधातुजस्यवाच्योवाचोत्तरपदलोपश्चेतिवहुव्रीहिः । ऋक्पूरित्यः । ऊदनोर्देशे ॥

अनूपजम् । न । आर्द्रके ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥ त्रि । अनूपोत्पन्नमात्रे ॥

अनूवन्धः । पुं । अनुवन्धे ॥ अनुवध्यते । वन्धवन्धने । घञ् । उपसर्गस्यघञीतिदीर्घः ॥

अनूरुः । पुं । अरुणे । सूर्यसारथौ ॥ अविद्यामानावूरूयस्य ॥

अनूरुसारथिः । पुं । सूर्ये ॥ अनूरुः सारथिर्यस्य ॥

अनृचः । पुं । माणवके ॥ अविद्यमाना ऋचोऽस्य । ऋक्पूरित्यप्रत्ययः

अनृजुः । त्रि । शठे । वक्राशये ॥ नऋजुः ॥

अनृणी । त्रि । ऋणमुक्ते ॥ यथा । एकमप्यक्षरंयस्तुगुरुःशिष्येनिवेदयेत् । पृथिव्यांनास्तितद्द्रव्यंयद्दत्त्वासोऽनृणीभवेदिति तिथ्यादितत्त्वम् ॥

अनृतम् । न । कृषौ ॥ असत्ये ॥ अयथादृष्टकथने । अयथार्थभाषणे ॥ तत्कथनेदोषः । समूलोवाएषपरिशुष्यति योऽनृतमभिवदतीतिश्रुतेः ॥ अवध्यहिंसानुवन्धियथार्थभाषणे ॥ नऋतम् । अनृतम् ॥ विवाहादिपञ्चकेष्वनृतभाषणेपापाभावो यथा । विवाहकाले रतिसंप्रयोगेप्राणात्यये सर्वधनापहारे । विप्रस्यचार्थेह्यनृतं वदेत पञ्चानृतान्याहुरपातकानी-

तिकर्णपर्वणि जिष्णुंप्रति श्रीकृष्णो -क्तिः ।

अनेकः । त्रि । एकभिन्ने । बहुषु । न । व्यक्ते । प्रतिपुरुषं बुध्यादीनां भेदात् । पृथिव्यादिकमपि शरीरघटादि भेदेनाऽनेकमेव । नएकः ।

अनेकजः । पुं । पक्षिणि । विष्णौ । धर्मगुप्तयेऽसकृज्जायमानत्वात् । त्रि । बहुजाते ।

अनेकता । स्त्री । परस्परंभिन्नतायाम् । न एकता ।

अनेकधा । ऽ । अनेकप्रकारे ।

अनेकप. । पुं । स्त्री । हस्तिनि । अनेकेन करेण मुखेनच पिबति । पापाने । सुपीतिकः ।

अनेकरूपम् । त्रि । विचित्रे । अनेकानि रूपाणियस्मिन ।

अनेकसंयुक्तम् । न । लिङ्गशरीरे । अनेकैर्देवमनुष्यादिनानास्थूलशरीरैःसंयुक्तम् । अनेकाभिः श्रोत्रादिबुध्यन्तसप्तदशकलाभिः संयुक्तं । त्रि । बहुभिः सम्बद्धे ।

अनेकान्तः । त्रि । अनियते । अनतिशये ।

अनेकान्तवादी । त्रि । आर्हते । सप्तपदार्थवादिनि नास्तिकभेदे । यथा । स्वसमयपदार्थाःस्युर्जीवाजीवास्रवा



स्त्रयः ।संवरोनिर्ज्जरश्चैवबन्धमोक्षावुभावपि । स्याद्वादलाञ्छितार्श्चैतेसर्वेनैकान्तिकत्वतइति ।

अनेकाश्रितगुणः । पुं । बहुनिष्ठगुणे । सयथा । संयोगः विभागः द्विपृथक्त्वादिःएकत्वान्यसङ्ख्येतिसिद्धान्तमुक्तावली ।

अनेजत् । त्रि । चलनरहिते । सदैकरूपे । एजतीत्येजत् । एजृकम्पने । चलनं स्थिरत्वप्रच्युतिः । नञ्समासः ।

अनेडमूकः । त्रि । शठे । मूकबधिरे । वाक्श्रुतिवर्ज्जिते । नास्त्येडमूकोऽस्मात् । एडमूकसदृशोऽनेडमूकइतिवा । सादृश्यस्यनञर्थत्वात । अन्धे ।

अनेनाः । त्रि । निर्दोषे ।

अनेहा । पुं । काले । समये । नहन्यते । नञि ७ नएहश्चेत्यसिरेहादेशश्च । ऋदुशनसित्यनङ् ।

अनैकान्तिकः । पुं । हेत्वाभासविशेषे सव्यभिचारे । साधारणासाधारणानुपसंहारिभेदादनैकान्तिकस्त्रिविधः । ऐकान्तिकोऽव्यभिचारी । नऐकान्तिकः । त्रि । ऐकान्तिकादितरस्मिन् ।

अनैक्यम् । त्रि । एकताशून्ये । अनेकतायाम् । एकस्यभावऐक्यम् । नऐक्यम ।

न पुणम् । न । अनिपुणतायाम् ॥

अनैश्वर्यम । न । अनीश्वरतायाम् । असामर्थ्ये ॥

अनाकष्टः । पुं । कुठे । हच्चे ॥ अनसश्च कटस्याकंगतिरहन्ति । अन्येष्वपीतिड न्तेर्डः ॥

अनौचिती । स्त्री । लोकमर्य्यादातिक्रमे ॥ न औचिती ।

अनौपम्यम् । त्रि । आत्मरूपे । यद्दित त्सदृशोद्वितीयः पदार्थोजगत्यांस्यात् तदा तदुपमानेनस आत्मोपमेयः स्यात् नतुतदस्ति तस्मादनौपम्यमात्मरूपम् ।

अन्तम् । न । स्वरूपे ॥ यथा । वनान्तम्' ॥ पुं । नाशे ॥ पुं । न । अवसाने चरमे । त्रि अन्तिके ॥ प्रदेशे ॥ यथा ।रम्यैर्हर्म्यतलै नकिंवसतयेश्राव्यं नगीतादिकं किंवाप्राणसमासमागमसुखनैवाधिकप्रीतये । किन्तुभ्रान्तपततपतङ्गपवनव्यालोलदीपाङ्कुरच्छायाचञ्चलमाकलय्यसकलं सन्तोवनान्तंगताइति । परिग्रहापेक्षयासमाप्तौ ॥ अतिमनोहरे । रुचिरे । अवयवे ॥ निर्णये ॥ इयत्तायाम् । सीमायाम् ॥ यथा । लवणजलान्तानद्यः स्त्रीभेदान्तञ्च मैथुनम् । पैशुन्यंजनवार्त्तान्तं वित्तंदुःखत्रयान्तकम् ॥ राज्यश्रीर्ब्र



ह्मशापान्ताद्दरुणाक्त ब्रह्मवर्चसम् । आचारोद्घोषवासान्तः कुलस्यान्तंस्त्रियश्रुताः ॥ सर्वेक्षयान्तानिचयाः पतनान्ताःसमुच्छ्रयाः । संयोगाविप्रयोगान्तामरणान्तञ्च जीवितमितिगारुडे-११५ अध्यायः ॥ अमति । अमगत्यादौ । हसिमृग्रिणितन् ॥ अनतशिवा अतिबन्धने । पचाद्यच् ॥ अन्तनम् । घञ्वा ॥

अन्तः करणम् । न । मनोबुध्यहङ्कारचेतसु ॥ यथा । मनोबुद्धिरहङ्कारश्चित्तंकरणमान्तरम् । संशयो निश्चयोगर्वः स्मरणं विषयाअमी इति । अस्योत्पत्तिर्यथा । मिलितैस्तुतैः । अन्तःकरणमेकंस्यादिति । तैःपञ्चभूतस्यसत्त्वांशैर्मिलितैरन्तःकरण भवतीत्यर्थः । आभ्यन्तरवृत्तित्वादन्तःकरणम् । अन्तःअभ्यन्तरे करणम् ॥

अन्त'करणदेवता । स्त्री । चन्द्राच्युतचतुर्मुखशङ्करेषु । यथासंख्यंचतुर्णांचतुर्षु ॥

अन्त.करणविषय' । पुं । सङ्कल्पविकल्पनिश्चयाहङ्कार्य्य चैत्याख्येषु ॥ यथासंख्यंचतुर्णां चत्वारो विषयाज्ञेयाः । अन्तःकरणवृत्तित्वेनाप्येषांव्यवहारः ॥

अन्तःकरणवृत्ति. । स्त्री । मनोवृत्तौ । साचत्रिविधा । यथाहु. । शान्ताघो

रास्तथामूढामनसोवृत्तयस्त्रिधा । वैराग्यक्षान्तिरौदार्यमित्याद्याः शान्तवृत्तयः ॥ तृष्णास्नेहोरागलोभामित्याद्याघोरवृत्तयः । सम्मोहोभयमित्याद्याःकथितामूढवृत्तयइति ॥ वृत्तिभेदादन्तःकरणं चतुर्विधंभवति ॥ वृत्तिभेदोयथा, । यदातुसङ्कल्पविकल्पकृत्त्वंतदाभवेत्तन्मनइत्यभिख्यम् । स्याद्बुद्धिसञ्ज्ञंयदाप्रवेत्तिसुनिश्चितंसंशयहीनरूपम्॥ अनुसन्धानरूपंतच्चित्तञ्च परिकीर्त्तितम् । अहङ्कृत्यात्मवृत्त्यातुतदहङ्कारतागतमिति ॥ सङ्कल्पविकल्पकृत्त्वंयदान्तःकरणंकरोतितदातदन्तःकरणंमनःसंज्ञंभवति । एवमग्रेप्यूह्यम ॥

अन्तःकुटिलः । पुं । शङ्खे ॥ त्रि । वक्रान्तःकरणे ॥

अन्तःपदवी । स्त्री । सुषुम्णायाम् ॥

अन्तःपुरम् । न । भूभुजांस्त्यगारे । शुद्धान्ते ॥ अन्तरभ्यन्तरेपुरंगृहम् । तात्स्थ्याद्राजदारेषु ॥

अन्तःपुराध्यक्षः । पु । शुद्धान्ताधिकृते ॥ तल्लक्षणमाहयुक्तिकल्पतरुः । यथा । वृद्धः कुलोद्गतः शक्तः पितृपैतामहः शुचिः । राज्ञामन्तः पुराध्यक्षोविनीतश्चतथोच्यते ॥

अन्तःप्रज्ञः । पुं । तैजसे ॥ इन्द्रियार्थेषु यामनसोन्तःस्थत्वात् तद्वासनारूपाप्रज्ञायस्यस. ॥

अन्तःसत्त्वा । स्त्री । गर्भिण्याम् ॥ अन्तःअभ्यन्तरे सत्त्वंयस्याःसा ॥ भल्लातक्याम् ॥

अन्तःसुखः । त्रि । बाह्यविषयजनितसुखशून्ये । स्वरूपसुखे ॥ अन्तः अभ्यन्तरे सुखंयस्यसः ॥

अन्तःस्वेदः । पुं । स्त्री । गजे ॥ अन्तः अभ्यन्तरे स्वेदोयस्य सः ॥

अन्तकः । पुं । न शकारिणि । यमे ॥ अन्तंकरोति अन्तयति । तत्करोतीतिण्यन्तात् ण्वुल् ॥ मरणाम् ॥

अन्तकरः । त्रि । नाशकरे ॥ अन्तकरोति । दिवाविभेतिटः ॥

अन्तकर्म । न । नाशने ॥ राघवस्य शरैर्घोरैर्घोरंरावणमाहवे । अन्तराघवेतिसम्बुद्ध्यन्तम् ॥ स्येतिषेअन्तकर्मणीत्यस्यलोपाभ्यमैकवचनम ॥

अन्तकालः । पुं । मरणसमये । समस्तकरणग्रामवैयर्थ्यवति ॥ अन्तश्चासौकालश्च ॥

अन्तगः । त्रि । अन्तगामिनि । पारगे ॥ अन्तंगच्छतीतिविग्रहे अन्तात्यन्तेत्यादिनागमे डे प्रत्ययः ॥

अन्तगतः । त्रि । अवसानंप्राप्ते ॥ अन्तेगतः ॥

अन्ततः । अ । सम्भावनायाम् ॥ अवयवे ॥ पञ्चम्यर्थे ॥ शासने ॥ इति हेमचन्द्रः ॥ अन्त इत्यर्थे आद्यादित्वात्तसिः ॥

अन्तपालः । पुं । बाह्यरक्षके ॥

अन्तः । अ । मध्ये ॥ प्रान्ते ॥ अभ्युपगमे ॥ ॥ चित्ते ॥ अमति । अमगत्यादिषु । अमेस्तुट्चेत्यरन् । तस्य लुडागमः । रेफादकारउच्चारणार्थः ॥

अन्तरम् । न । अवकाशे ॥ यथा अन्तरं देहि ॥ अवधौ ॥ यथा मासान्तरे देयम् ॥ परिधानांशुके ॥ यथा अन्तरे शाटकाः परिधानीया इत्यर्थः ॥ अन्तर्द्धौ ॥ यथा पर्वतान्तरं गताः स्त्रियः ॥ भेदे । परस्परवैलक्षण्ये । विशेषे ॥ यथा । अन्तरज्ञो भव सदा धनस्य च जनस्य च । विशेषज्ञ इत्यर्थः ॥ तादर्थ्ये ॥ ओदनान्तरस्तण्डुलः । ओदनार्थ इत्यर्थः ॥ छिद्रे ॥ यथा । अन्तरं लब्ध्वा अरेः प्रहरेत् ॥ आत्मीये ॥ अयमेवान्तरो मम ॥ विनार्थे ॥ यथा । अन्तरेण पुरुषकारं न किञ्चित्सिध्यति ॥ बहिरर्थे ॥ यथा । अन्तरे चाण्डालगृहः । बाह्य इत्यर्थः ॥ अवसरे ॥ यथा । अन्तरज्ञोऽपि सेवकः ॥ मध्ये ॥ यथा । आवयोरन्तरे जाताः पर्वताः सरितो द्रुमाः ॥ आत्मनि ॥ यथा । प्रभान्तरं वेद । अन्तरात्मानं जानातीत्यर्थः ॥ सदृशे ॥ यथा । इकार



स्यपकारोऽन्तरतमः ॥ अन्तं राति । रा दाने । आतोऽनुपेतिकः ॥

अन्तरङ्गः । त्रि । आत्मीये ॥ अन्तःअङ्गानियस्य ॥

अन्तरस्थः । त्रि । नीचानीचादिविशेषाभिज्ञे ॥

अन्तरप्रभवः । त्रि । सङ्कीर्णजातौ । अनुलोम प्रतिलोमजाते ॥

अन्तरा । अ । निकटार्थे ॥ मध्यार्थे ॥ विनार्थे ॥ अन्तरेति । इणगतौ । डाप्रत्ययः ॥

अन्तरात्मा । पुं । अन्तःकरणे ॥ अन्तःअभ्यन्तरे आत्मा ॥ सर्वान्तरे परमात्मनि ब्रह्मलोकशब्दवाच्ये ॥ यथा । न कर्मणाकनीयस्तां इह्विर्कानान्तरात्मनः । इतिवाहुमिवोद्धृत्य वेदान्तैकैर्घणाकृतेति ॥

अन्तरापत्या । स्त्री । गर्भिण्याम् ॥ अन्तरे अपत्यं यस्याः ॥

अन्तरायः । पुं । विघ्ने ॥ अन्तरायश्चदृष्टीतोयोगस्य वियोगे । व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वाऽनवस्थितत्वानीति ॥ चित्तविक्षेपे ॥ अन्तर्मध्ये अन्तरस्य व्यवधानस्य वा अयनम् अयगतौ । इण्गतौवा । घञ्ऽज्वा ॥ योगे ॥

अन्तरारामः । त्रि । त्यक्तसर्वपरिग्रहत्वे

नवाह्यसुखसाधनशून्ये ॥ अन्तःआरा मोयस्य ॥

अन्तरालम । भ । मध्ये । अभ्यन्तरे ॥ अन्तरंलाति । आतोनुपेतिक. । अ न्येषामपीतिदीर्घः ॥ । आङ्मस्लेषो वा । मूलविभुजादित्वात्कः ॥

अन्तरालकम् । न । अभ्यन्तरे ॥

अन्तरिक्षम् । न । अम्बरे ॥ पतत्रिमेघ संचार प्रदेशे ॥ भूलोकसूर्य्यमध्यव र्तिनि ॥ द्यावापृथिव्योरन्तरीक्ष्यते । ईक्षदर्शने। कर्मणिघञ्। वेदेछांद- संक्षस्वत्वम् ॥ अन्तर्ऋक्षाणिनक्षत्रा ण्यस्य पृषोदरादित्वादित्वंवा ॥

अन्तरिक्षक्षित् । पुं । वायौ ॥ अन्तरिक्षे क्षयतिवसति । क्षि० । क्विप् । तुक् ॥

अन्तरितम् । त्रि । तिरस्कृते । व्यवहिते ॥ व्यवकलिताङ्के । यस्यवाकीइतिभाषा ॥

अन्तरिन्द्रियम् । न । अन्तःकरणे ॥ अन्तः अभ्यन्तरे इन्द्रियम् ॥

अन्तरीक्षम् । न । नभसि । पतत्रिमेघ संचारप्रदेशे ॥ द्यावापृथिव्योरन्तरी- क्ष्यते । ईक्षदर्शनांकनयोः । कर्मणि घञ् । अन्तरीक्षतेजगदस्मिन्निति- अधिकरणव्युत्पत्तिस्तुनोचिता । ल्युटा घञोबाधप्रसङ्गात् ॥ अभ्रकधातौ ॥

अन्तरीक्षजलम् । न । आकाशजले । दिव्योदके ॥

अन्तरीपः । पुं । न । द्वीपे ॥ अन्तर्गता- आपोऽत्र । ऋक्पूरित्यः समासान्तः । द्व्यन्तरुपसर्गेभ्य इत्यपईदादेशः ॥

अन्तरीयम् । न । अधोंशुके । परिधान वस्त्रे ॥ अन्तरेभवम् । गहादित्वाच्छ ॥ नाभेधृतत्वयदवस्त्रमाच्छादयतिजा नुनी । अन्तरीयंप्रशस्तंतदच्छिन्नमुभ योस्तयोः ॥

अन्तरे । । । मध्ये ॥ अन्तरेति । इणगतौ । विच् ॥

अन्तरेण । । । विनार्थे ॥ मध्यार्थे ॥ अ- न्तरेति । इणोणः ॥

अन्तर्गडुः । त्रि । निरर्थके । रमौली इति भाषायाम् ॥

अन्तर्गतम् । त्रि । मध्यप्राप्ते । विस्मृ- ते ॥ अन्तर्गम्यतेस्य अन्तर्गच्छतिस्म वा । गमॢगतौक्तः ॥

अन्तर्गृहम् । न । गृहमध्ये ॥

अन्तर्घणः । पुं । वाहीकग्रामविशेषे । ह न० । अन्तर्घनोदेशइतिहन्तेर्घनादे शोऽप् प्रत्ययश्चनिपातनात् ॥

अन्तर्जठरम् । न । कोष्ठे । कुक्षिमध्ये ॥

अन्तर्जलम् । न । अन्तर्जलसाध्येऽघमर्ष णजपादौ ॥

अन्तर्ज्योतिः । न । अन्तरात्मनि ॥

अन्तर्दधनम् । न । मद्यबीजे । किण्व ॥ इतिशब्दचन्द्रिका ॥

अन्तर्दाहः । पु । कोष्ठसन्तापे । शरीराभ्यन्तरज्वालायाम् ॥

अन्तर्द्धा । स्त्री । अन्तर्द्धाने । व्यवधायाम् ॥ अन्तर्द्धानम् । डुधाञ० । अन्तःशब्दस्याङ्किविधिणत्वेषूपसर्गत्वादातश्चोपसर्गइत्यङ् ॥

अन्तर्द्धानम । न । अन्तर्द्धा । तिरोधाने ॥ शरीरत्यागे ॥

अन्तर्द्धिः । पुं । पिधाने । व्यवधाने ॥ अन्तर्द्धानम् । अन्तःशब्दस्याङ्किविधिणत्वेषूपसर्गत्वादुपसर्गेघोः किरितिकिप्रत्ययः ॥

अन्तर्द्वारम् । न । गृहाभ्यन्तर्गूढद्वारे । प्रच्छन्ने ॥ अन्तःस्थितंद्वारम् । शाकपार्थिवादिः ॥ खिडकीतिख्याते ॥ यथा । प्रच्छन्नमन्तर्द्वारंस्यात्पक्षद्वारंतदुच्यत इतिशबरस्वामी ।

अन्तर्भूत. । त्रि । मध्यस्थिते । अन्तर्गते ॥

अन्तर्मनाः । त्रि । व्याकुलचेतसि । दुःखितमनसि । दुर्मनसि । विमनसि ॥ अन्तर्मनोऽस्य ॥

अन्तर्यामी । पुं । वायौ ॥ यथा । अन्तःप्रविश्यभूतानियोविभर्त्त्यात्मकेतुभिः । अन्तर्यामीश्वरः साक्षात्पातुनोयद्वशेस्फुटमिति ॥ केतुभिः प्राणादिवृत्तिभिः ॥ ईश्वरे । प्रत्यक्तमे । अन्तरनुप्रविश्यसर्वेषांभूतानांनियन्तरि ॥ सूचादप्यान्तरंतत्त्वमन्तर्याम्याख्यमुच्यते ॥ त्रि । अन्तर्स्थे । मनोगतस्थे ॥

अन्तर्वंशिकः । पुं । अन्तःपुराधिकृते । कुब्जवामनादिजने ॥ अन्तरभ्यन्तरोवंशोगृहम् । अन्तर्वंशेनियुक्तः । तत्रनियुक्तइतिठक् । संज्ञापूर्वकत्वान्नवृद्धिः ॥ यद्वा अन्तर्वंशोऽस्यास्ति अतइतिठनाविति ठन ॥

अन्तर्वत्नी । स्त्री । गर्भिण्याम् ॥ अन्तरस्त्यस्यांगर्भइतिविग्रहे अन्तःशब्दस्याधिकरणप्रधानत्वेन प्रथमासमर्थत्वाभावाद्दस्तिनासामानाधिकरण्याऽसम्भवादप्राप्तोमतुप् अन्तर्वत्पतिवतोर्नुगित्यनेननिपात्यते नुगागमश्चविधीयते ततस्तत्त्वेभ्य इतिङीप ॥

अन्तर्वमिः । पुं । अजीर्णे अपाके ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अन्तर्वाणिः । त्रि । शास्त्रज्ञे ॥ अन्तर्वाणयस्य । समासान्तविधेरनित्यत्वान्नचृतश्चेतिनकप् । गोस्त्रियोरितिह्रस्वः ॥ यद्वा । अन्तर्वाणयति । वणशब्दे । स्वार्थणिजन्तादिचइः ॥

अन्तर्विगाहः । पुं । प्रवेशे ॥

अन्तर्विगाहनम् । न । प्रवेशने ॥

अन्तर्वेदी । स्त्री । नीवृदन्तरे । शशस्थल्याम् । हरिद्वारादारभ्य प्रयागपर्य

थिकाः प्रकृतितोलिङ्गवचनान्यति-
वर्त्तन्तेपीति पुंस्त्वम् ॥ यद्वाविनयादि
त्वाट्ठक् । इसुसुक्तान्तात्कः । केणेति
ह्रस्वः । इकोह्रस्वोऽङ्योगालवस्येतिवा
॥ यद्वा । अन्धशब्दात् संज्ञायांकन् ।
केणइतिह्रस्व. ॥

अन्दुः । स्त्री । निगडे ॥ स्त्रीपादभूषणे ॥
अन्द्यतेऽनेन । अदिबन्धने । अन्देरू
न्भिवितिकूः ॥

अन्ध । पुं । न । तिमिरे ॥ अदर्शनात्म
काज्ञाने ॥ त्रि । अदृशि । चक्षुर्हीने ॥
पुं । भिक्षौ ॥ यथा । तिष्ठतो ब्रजतो
वापियस्यचक्षुर्नदूरगम् । चतुर्युगांभु
वंमुक्तापरिव्राटसोऽन्धउच्यतेइति ॥
राशिविशेषे ॥ यथा । मेषोवृषोमृगे
न्द्रश्चदिवान्धाःपरिकीर्त्तिताः । न्मृयु
कर्कटकन्यास्त्राभावन्धाःप्रकीर्त्तिताः
इति ॥ अन्धयति । अन्धदृष्ट्युपघा-
ते । पचाद्यच् ॥

अन्धकः । पुं । दैत्यविशेषे । देशभेदे ॥
नृपान्तरे ॥ मुनिविशेषे ॥ यादवप्र
भेदेषु । हिरण्याक्षसुते ॥

अन्धकरिपुः । पुं । शिवे ॥ अन्धक
स्य दैत्यस्यरिपुः ॥ श्लेषकाव्यादावन्ध
कारनाशकत्वात् । सूर्ये । चन्द्रमसि ।
अग्नौच ॥

अन्धकवर्त्तः । पुं । पर्वतान्तरे ॥

अन्धकान्तकः । पुं । शिवे ॥ अन्धकस्य
अन्तकः ॥

अन्धकारः । पुं । न । तेजस्सामान्यभा
वे । ध्वान्ते ॥ महाप्रभात्वावच्छिन्ना
भावो ऽन्धकारइतिसामान्यलक्षणा
योजगदीशः ॥ भयदृष्टिलेशावरोध
कारित्वं तित्तत्वं सर्वथाधिकरणत्वञ्च
त्यस्यगुणाइतिराजवल्लभ. ॥ मिथ्या
प्रत्ययलक्षणो स्वविषयावरणे तद्रुपा
दानाज्ञाने ॥ अन्धदृष्ट्युपघाते । चु
रादिः । अन्धनम् । घञ । अन्धंकरो
ति कर्मण्यण् ॥

अन्धकारिः । पुं । हरे । शिवे ॥ अन्धक
स्यअरिः ॥

अन्धकासुहृत् । पुं । ईश्वरे । शिवे ॥ अ
न्धकासून् हरति । क्विप् ।

अन्धकूपः । पुं । कर्करान्धुके । सान्धका
रकूपे ॥ मोहे । नरकविशेषे ॥ अंध
श्चासौ कूपश्च ॥

अन्धतमसम् । न । गाढान्धकारे ॥ अ
न्धयति । अन्धदृष्ट्युपघाते चुरादिः
। अच् । अंधश्चतत्तमश्च । अवसमन्धेभ्य
स्तमसइत्यच् ॥

अन्धतामिस्रः । पुं । अभिनिवेशे ॥ स
चाष्टादशविधः । तथाहि । देवाः
खल्वणिमादिकमष्टविधमैश्वर्यमासा
द्यशब्दादीन् भुञ्जानाःशब्दादयो

भोग्यास्तदुपायाश्चाणिमादयोऽस्मा
कमसुरादिभिर्मोपघातिषतेतिविभ्यति
तदिदं भयमभिनिवेशोन्धतामिस्रो-
ऽष्टादशविषयत्वादष्टादशधेतिसां-
ख्या.॥ न। निविडान्धकारमये नरक
विशेषे ॥ पञ्चप्रकाराज्ञानान्तर्गता
ज्ञानविशेषे। सचविशेषोयथा। देह
नाशे अहमेवमृतोस्मीतिवुद्धिः ॥

अन्धमूषिका। स्त्री। देवताडे ॥

अन्धवर्त्मा। पु। वायौ सप्तमेस्कन्धे ॥
यथा। मरुदिन्द्रःसरभसःसामस्तोमा
नुषीतिपाः। देवीविशोन्धवर्त्माचस्क
न्ध' सप्तमआध्रुवादिति ७ ॥

अन्धः। न। ओदने ॥ अद्यते। अदभ
क्षणे। अदेर्नुम् धौचेत्यसुन् ॥ अन्ध
यतिवा अन्धदृष्ट्युपघाते। असुन् ॥

अन्धातमसम्। न। अत्यन्धे। महा
न्धकारे ॥ अन्धञ्च तत्तमश्च। अव
समन्धेभ्यस्तमस इत्यच्। अन्येषाम
पीतिदीर्घः ॥

अन्धाहिः। पुं। कुंचियाइतिगौडप्रसि
द्धे मीनभेदे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अन्धिका। स्त्री। द्यूतभेदे ॥ रजन्या
म ॥ सर्षप्याम् ॥ सिद्धार्थौषधौ ॥
स्त्रीविशेषे ॥ चक्षुषोरोग विशेषे ॥

अन्धु। पुं। कूपे ॥ अम्यते। अमग
त्यादौ। अर्जिदृशिकम्यमीति कु

धुंकच ॥ यद्वा। अन्धयति। अन्धदृ-
ष्ट्युपघाते। मृगय्वादित्वात्कुः ॥

अन्धुलः। पुं। शिरीषद्रौ ॥

अन्ध्रः। पुं। वैदेहेन कारावरस्त्रिया
मुत्पादिते अन्त्यजविशेषे ॥ देशविशे
षे ॥ यथा। जगन्नाथादूर्द्ध्वभागमर्वाक्
श्रीभ्रमरात्मिकात्। तावदन्ध्राभि
धोदेशः मोक्षःश्रीशक्तिसङ्गमे ॥

अन्नम्। न। भक्ते। ओदने। स्विन्नतण्डु
ले ॥ यथा। सस्यंक्षेत्रगतमाहुःसतुषं
धान्यमुच्यते। आमवितुषमित्युक्त
स्विन्नमन्नमुदाहृतमिति वसिष्ठः ॥
व्रीहियवादौ ॥ भक्ष्यभोज्यलेह्यचो
ष्यभेदाच्चतुर्विधमन्नंभवति ॥ पृथि-
व्याम् ॥ उपकरणे ॥ औपचारिकम
र्थंगृहीत्वा दृष्टस्योपकरणेऽन्नशब्दः
। यथा स्त्रियोन्नम् पशवोन्नम् विशो
न्नं राज्ञामित्यादौ ॥ त्रि। भुक्ते ॥
अनिति। अन्यन्तेनेनवा। अनप्राणने।
कृवृजॄसिद्रुपन्यनिस्वपिभ्योनिदितिन
न् ॥ यद्वा। अद्यतेस्म। अदभक्षणे।
क्तः। अन्नाणः इतिनिपातनात्सवक्षु
लंतणोतिवा न जग्धिः ॥ यद्वा। अत
ति। अतः। धापृवस्यज्यतिभ्योनिद
तिन ॥

अन्नकोष्ठकः। पुं। तण्डुलादिरक्षण
स्थाने ॥ गोलाइतिकाख्यायस्य प्रसि

039163
Accession No.
Shantarakshita Library

द्धिः । इतिहेमचन्द्रः ॥

अन्नगन्धिः । पुं । अतिसारे । उदरामयरोगे ॥ इतित्रिकाण्डशेष. ॥ अन्नस्यगन्ध इव गन्धोऽस्य । उपमानाद्वेतीत्वम् ॥

अन्नदः । त्रि । अन्नदातरि ॥

अन्नदा । स्त्री । अन्नपूर्णायांदेव्याम् ॥

अन्नदाता । पुं । प्रभौ ॥ अन्नस्यदातरि ॥

अन्नपूर्णा । स्त्री । स्वनाम्नाऽतिप्रसिद्धायांदेव्याम् ॥

अन्नपूर्णास्थानम् । न । काश्याम्प्रसिद्धेसिद्धिस्थाने ॥

अन्नप्राशनम् । न । अन्नाशने । यथाविधिवालकस्य प्रथमान्नभोजने ॥ षष्ठे अष्टमे वा मासि वालकस्य पञ्चमे सप्तमे वामासि वालिकायाः प्रथमान्नभक्षणरूपसंस्कारइतिस्मार्त्ताः ॥ अन्नस्यप्राशनम् यस्मिन्तत् ॥

अन्नमय. । पुं । स्थूलशरीरे । प्रथमकोशे ॥ यथा । पितृभुक्तान्नजाद्वीर्याज्जातोऽन्नेनैववर्द्धते । देह.सोन्नमयोनात्मा प्राक्चोर्द्ध्वंतदभावतइति ॥ अन्नस्यविकारःमयट् ॥ यद्वा । प्रकृतमन्नम् । अन्नं प्रकृतमुच्यतेऽस्मिन वा । तत्प्रकृतवचनेमयट् ॥ स्थूलसमष्ट्याम् । पञ्चीकृतपञ्चमहाभूततत्कार्यात्मके विराड्मूर्त्तौ ॥

अन्नविकारः । पुं । रेतसि । शुक्रे ॥ इति राजनिर्घण्ट. ।

अन्नादः । त्रि । अन्नस्यभोक्तरि ॥ अन्नमत्तीतिविग्रहेकर्मण्यण् ॥ दीप्ताग्नौ । आमयाविस्त्वरच्छिते ॥ पु । विष्णौ ॥

अन्नाशनम । न । अन्नप्राशने ॥

अन्यः । त्रि । असदृशे । इतरस्मिन् । भिन्ने ॥ अत्यन्तविलक्षणे ॥ सदृशे ॥ अनिति । अनप्राणने । अघ्न्यादित्वाद्यः ॥

अन्यत् । T । अन्यार्थे ॥

अन्यतमः । त्रि । भिन्नतमे । वहूनां मध्येनिर्द्धारितै कस्मिन् ॥ न्यायमते अनेकभेदावच्छिन्नप्रतियोगिताकभेदे ॥ अव्युत्पन्नोयम ।

अन्यतर. । त्रि । निर्द्धार्ये । द्वयोर्मध्ये निर्द्धारितैकस्मिन ॥ निर्द्धारणेडतरच ॥ न्यायमते द्वयावच्छिन्नप्रतियोगिताकभेदे ॥ भिन्नार्थके ॥ अन्यएव । अल्पाच्तरमितिवत्स्वार्थेतरप् ॥ अन्यतरान्यतमशब्दावव्युत्पन्नौ स्वभावाद्विवहुविषयेनिर्द्धारणे वर्त्तेते इतिकैयटः । किंयत्तदृभ्योऽन्यत्रडतराभावादिति विवरणम् ॥

अन्यतरेद्युः । T । अन्यतरदिवसे । अन्यतरस्मिन्नहनि । सद्यः परुदित्या

द्विनान्यतरशब्दादेत्सुप्रत्ययोनि-पातितः ॥

अन्यतः । ा । अन्यत्रार्थे ॥ अन्यस्मात् । तसिल ॥

अन्यतस्त्यजायी । त्रि । सपत्नजयशीले ॥

अन्यत्र । ा । व्यतिरेके ॥ अन्यस्मिन् । त्रल् ॥ विनार्थे ॥ यथा । अन्यत्रनिधनात्पत्युः पत्नीकेशान्नवापयेत् इति ॥ स्थानान्तरे ॥

अन्यथा ॥ ा । वितथे ॥ अपरार्थे ॥ दुष्टे ॥ अन्येनप्रकारेण । प्रकारवचनेथाल् ॥

अन्यथासिद्धिः । स्त्री । कार्य्याव्यवहित पूर्ववर्त्तित्वेसतिकार्यानुत्पादकत्वे ॥ सापञ्चविधा । यथा यत्कार्य्यम्प्रति कारणस्यपूर्ववर्त्तिता येनरूपेण गृह्यते तत्कार्यम्प्रति तद्रूप मन्यथा सिद्धम् । यथा घटं प्रति दण्डत्वम् ॥ १ ॥ यस्यस्वातन्त्र्येण अन्वयव्यतिरेकौ नस्तः किंतु कारणमादायान्वय व्यतिरेकौ तदन्यथासिद्धम् । यथा घट प्रतिदण्डरूपम् ॥ २ ॥ अन्यम्प्रतिपूर्ववर्त्तितां गृहीत्वैवयस्य यत्कार्य्यंप्रति पूर्ववर्त्तित्व गृह्यते तस्य तत्कार्य्यंप्रति अन्यथासिद्धत्वम् । यथा-घटादिकं प्रतिआकाशस्य ॥ ३ ॥ यत् कार्य्यजनकं प्रति पूर्ववर्त्तित्वंगृहीत्वैव यस्य यत् कार्य्यं प्रति पूर्ववर्त्तित्वं गृह्यते तस्य तत्कार्य्यंप्रति अन्यथासिद्धत्वम् । यथा कुलालपितुर्घटम्प्रति ॥ ४ ॥ अवश्यक्लृप्तनियत पूर्ववर्त्तिनएव कारणत्वसम्भवे तद्भिन्नमन्यथासिद्धम् । यथा घटम्प्रति रासभादिरितिसिद्धान्तमुक्तावली ॥ ५ ॥ यस्य कारणत्वकल्पनाविनाप्यन्यप्रकारेण-कार्यसिद्धिर्भवेत् सोऽन्यथा सिद्धः तद्धर्मोऽन्यथासिद्धिः ॥

अन्यदा । ा । कालान्तरे ॥ अन्यस्मिन्काले । सर्वैकान्यकिंयत्तदः कालेदा ॥

अन्यपूर्वा । स्त्री । पौनर्भवायां कन्यायाम् । एकस्मैवागादिनादत्तायांपुनरन्येनविवाहितायां कुमार्याम् ॥ सा-सप्तधा । यथा । सप्तपौनर्भवा कन्या वर्ज्जनीयाः कुलाधमाः । वाचादत्ता मनोदत्ता कृतकौतुकमङ्गला ॥ उदकस्पर्शिता याच याचपाणिगृहीतिका । अग्निंपरिगतायातुपुनर्भूप्रसवाचया ॥ इत्येताः कश्यपेनोक्ता दहन्तिकुलमग्निवत् । इत्युद्वाहतत्त्वम् ॥

अन्यभृत् । पुं । काके ॥ इति हेमचन्द्रः ॥ त्रि । परेषांपोषके ॥ अन्यंविभर्त्ति । डुभृञ० । क्विप् ॥

अन्यभृतः । पुं । कोकिले ॥ अन्येनभृतः ॥ इतिहलायुध ॥

अन्यवर्द्धित. । त्रि । अन्येन प्रति पालिते

। अन्यपुष्टे । पुं । कोकिले । अन्येन वर्द्धित. ।

अन्यवादी । त्रि । अन्यथावादिनि । अस्थिरवादिनि । व्यवहारेपञ्चविधहीनजनान्तर्गतहीनविशेषोयम् । यथा । अन्यवादीक्रियाद्वेषीनोपस्थायीनिरुत्तरः । आहूतप्रपलायीचहीनः पञ्चविधः स्मृतइतिनारदः ।

अन्यशाखकः । पुं । शाखारण्डे । स्वशाखामुत्सृज्यान्यशाखोक्तकर्मकारिणि- । अन्याशाखा यस्यसः । कप् ।

अन्यादृक् । त्रि । अन्योपमे । अन्यप्रकारे । अन्यइवदृश्यते । दृशिर्प्रेक्षणे । त्यदादिषु दृशइतिक्विन् । आसर्वनाम्नः ।

अन्यादृशः । त्रि । अन्योपमे । अन्यप्रकारे । अन्यइवपश्यति दृश्यतेवा । दृशिर् । त्यदादिष्विति कञ् । आत्सम् ।

अन्यायः । पुं । अविचारे । परस्वहरणादौ । न्यायभिन्ने । अनौचित्ये । यथा । अन्यायेनापियद्भुक्तं पित्रापूर्वतरैस्त्रिभिः । नतच्छक्यमपाकर्तुं क्रमात्त्रिपुरुषागतमितिनारदः । नन्यायः ।

अन्याय्यम् । त्रि । अयोग्ये । यथा । दृष्टार्थसम्भवेअदृष्टकल्पनायाअन्याय्यत्वमिति । नन्याय्यम् ।

अन्येद्युः । अ । दिवसान्तरे । अन्यस्मिन्नहनि । सद्यःपरुदित्यन्यशब्दादेद्युस् प्रत्ययोनिपातितः ।

अन्येद्युष्कः । पुं । विषमज्वरविशेषे । यथा । अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालं प्रवर्त्ततइति । एककालंदोषाभेद्यया एककालमपि द्वितीयं प्रथमकालेद्वयोर्दोषस्थितेः ।

अन्योदर्य्यः । पुं । स्त्री । वैमात्रेये ।

अन्योन्यम् । त्रि । परस्परार्थे । अर्थालङ्कारविशेषे । यथा । क्रिययातुपरस्परं वस्तुनोर्जनने ऽन्योन्यम् । अर्थयोरेकक्रियामुखेनपरस्परं कारणत्वेसत्यन्योन्यं नामालङ्कारः । उदाहरणम् । हंसाणं सरेहिं सिरीसारिज्जइअहसराणं हंसेहिम । अण्णोण्णं चिअ एए अप्पाणं णवरगहअन्ति । अस्य संस्कृतंयथा । हंसानांसरोभिःश्रीःसारीक्रियते अथसरसांहंसैः । अन्योन्यमेवएतेआत्मानंकेवलंगुरूकुर्वन्तीति । श्रीः शोभा सारीकरणं श्रेष्ठतासम्पादनम् । अत्रसरोहंसयोः परस्परंशोभासारीकरणरूपोपकारजनकत्वादन्योन्यंनामालङ्कारः । अत्रोभयेषामपि परस्परजनकता मिथः- श्रीसारतासम्पादनद्वारेण । कर्मव्यतिहारे सर्वनाम्नोद्वेभवतइतिद्वित्वम् ।

| अन्योन्या | अन्वय |
|---|---|
| असमासवद्भावेपूर्वपदस्थस्य सुप:सुर्व-त्तव्य. ॥ | ॥ अन्योन्यस्यआश्रय: ॥ |

अन्योन्यद्दश्य: । त्रि । इतरेतरग्राह्ये ॥

अन्योन्याध्यास: । पुं । अन्योन्यस्मिन्नन्योन्यात्मकताअन्योन्यधर्म्मांश्चेत्याचार्य्यैर्निरूपितेतादात्म्याध्यासे ॥ यथा । जलव्योम्नाघटाकाशोयथासर्वैस्तिरोहित. । तथाजीवेनकूटस्थ: सोन्योन्याध्यासउच्यत इति ॥

अन्योन्याभाव: । पुं । तादात्म्यावच्छिन्नप्रतियोगिताके ॥ यथाघट: पटोनभवतीति ॥

अन्योन्याश्रय: । त्रि । अन्योन्यापेक्षे ॥ स्वग्रहसापेक्षग्रहसापेक्षग्राहके इतितार्किका: ॥ तर्कविशेषे ॥ सचात्माश्रयवत्त्रेधा । तस्यलक्षणम् । स्वापेक्षापेक्षित्वनिबन्धनोऽनिष्टप्रसंगोन्योन्याश्रय: । अपेक्षाच ज्ञप्तौ उत्पत्तौ स्थितौचग्राह्या । तत्राद्या यथा । घटोयं यद्येतद्घटज्ञानजन्यज्ञानविषय.स्यात् तदैतद्घटभिन्न: स्यात् ॥ द्वितीया यथा । घटोयं यद्येतद् घटजन्यजन्य: स्यात् तदैतद् घटजन्यभिन्न:स्यात ॥ तृतीया यथा । घटोयं यद्येतद्घटवृत्तिवृत्ति.स्यात् तथात्वेनोपलभ्येत इतिजगदीश: ॥ परस्परज्ञानसापेक्षज्ञानाश्रयेोऽन्योन्याश्रयइतिस्मार्त्ता:

अन्वक्षम् । त्रि । अनुगामिनि । अनुपदे ॥ अनुगतमक्षमिन्द्रियम् ॥ प्रत्यक्षे ॥

अन्वक्षम् । । । अक्ष्णो: समीपे ॥ अनुर्यत्समयेत्यव्ययीभाव: । प्रतिपरसमनुभ्योऽक्ष्णइति समासान्तष्टच् ॥

अन्वक् । त्रि । अनुगे । अन्वक्षे ॥ अन्वञ्चति । अनुगतौ । क्विन् ॥

अन्वय: । पुं । सन्ततौ । कुले ॥ पदानांपरस्परेण सम्बन्धे ॥ यथा । विशेषणांपुरस्कृत्य विशेष्यं तदनन्तरम् । कर्त्तृकर्मक्रियायुक्तमेतदन्वयलक्षणमिति ॥ अनुगमे । अनुवृत्तौ । कार्यकारणानुवृत्तौ ॥ तत्सत्त्वानियतसत्ताकत्वे ॥ द्रव्यस्वामिनां सम्बन्धे ॥ अन्वियते । इगतौ । इणगतौवा । एरच् ॥

अन्वयव्यतिरेकि । त्रि । अन्वयेन व्यतिरेकेणचव्याप्तिमतिहेतौ ॥ यथा वन्हौ साध्येधूमवत्त्वम् यत्रधूमस्तत्राग्निरित्यन्वयव्याप्ति. । यत्रवह्निर्नास्ति तत्रधूमोनास्तीतिव्यतिरेकव्याप्ति । यथा महानसह्रदादौ । अन्वयव्यतिरेकौस्तोऽस्मिन् । इनि: ॥

अन्वयव्याप्ति: । स्त्री । यत्रधूमस्तत्राग्निरित्येवंरूपायांव्याप्तौ ॥ यथा महान

से । अन्वयेनव्याप्तिः ॥

अन्ववसर्गः । पुं । कामचारानुज्ञायाम् ॥ अन्ववसर्जनम् । सृजेर्घञ् ॥

अन्ववायः । पुं । वंशे ॥ कुले ॥ अन्ववाय्यते । अवगतौ । घञ् ॥

अन्वष्टका । स्त्री । साग्नीनामावश्यकेश्राद्धकालविशेषे ॥ अष्टकापश्चात्तिथौ ॥ सातुगौणचान्द्रपौषमाघफाल्गुनाश्विनमासानां कृष्णनवमी । तस्यां साग्नीनांमातृकश्राद्धमिति श्राद्धविवेकः ॥

अन्वहम् । ा । प्रत्यहमित्यर्थे ॥

अन्वाजे । ा । दुर्बलस्य सामर्थ्याधाने ॥ सप्तमीप्रतिरूपकोऽयंनिपातः ॥

अन्वाजेकृत्य । ा । } दुर्बलस्यबलमाधायेत्यर्थे ॥ उपाजेऽन्वाजे इतिगतिसंज्ञा । कुगतीतिसमासः ॥
अन्वाजेकृत्वा । ा । }

अन्वाचयः । पुं । चार्थविशेषे । मुख्यसिद्धावप्रधानसिद्धौ ॥ यथा भिक्षामट गाञ्चानयेति । एकस्यप्राधान्यादनुरोधेनेतरदन्वाचीयते । चीञ् । कर्मण्येरच् ॥

अन्वादेशः । पुं । किञ्चित्कार्यंविधातुमुपात्तस्य कार्य्यान्तरंविधातुंपुनरुपादानमन्वादेशइतिलक्षिते कथितानुकथनमात्रे ॥ यथा । अनेनव्याकरणमधीतम् एनंछन्दोऽध्यापयेति । अनयोः पवित्रंकुलम् एनयोः प्रभूतं स्वमिति ॥

अन्वाधिः । पुं । एकस्मिन् यदर्पितंवस्तु तेन पुरुषान्तरे अमुष्मिन् स्वामिनि त्वं दास्यसीति यन्निहितं तस्मिन् ॥ इतिविवादार्णवसेतुः ॥ कार्येषु योऽनेन अमुष्मिन् पुरुषे त्वं दद्या इतिपरिभाष्य यत्समर्पितं तस्मिन् ॥ यथा । अर्थमार्गणकार्येषु अन्यस्मिन् वचनात्मम । दद्यास्त्वमितियोदत्तःसद्भिरन्वाधिरुच्यते ॥ इतिकात्यायनः ॥ पुनर्बंधके ॥ पश्चान्मानसीव्यथायाम् ॥

अन्वाधेयम् । न । स्त्रीधनविशेषे ॥ यथा । विवाहात्परतोयत्तु लब्धंभर्तृकुलात् स्त्रिया । अन्वाधेयंतदुक्तंतु लब्धंबन्धुकुलात्तथेति कात्यायनः ॥ अन्यच्च । ऊर्ध्वंलब्धंतुयत्किञ्चित्संस्कारात्प्रीतितः स्त्रिया । भर्तुःपित्रोःसकाशाद्वा अन्वाधेयंतुतद्भृगुरिति ॥ बन्धुपदेन मातापित्रोरुपादानम् ॥

अन्वायत्तः । त्रि । अनुगते ॥

अन्वारूढः । त्रि । अधिष्ठिते ॥ अन्वारुह्पूर्वात् रुहेर्गत्यर्थेतिक्तः । ढत्वधत्वष्टुत्वढलोपदीर्घाः ॥

अन्वासनम् । न । शुश्रूषणे । उपासने ॥ लेपवस्तौ ॥ अनुशोचने ॥ शिक्षादि

गृहे । अनु असु॰ । ल्युट् ॥

अन्वाहार्य्यम् । न । मासिके । दर्शश्राद्धे । पितृयज्ञपिण्डानामनुपश्चात् आह्रियते । हृञ् हरणे । ऋहलोर्ण्यत् ॥ यथा । पितृयज्ञन्तुनिर्वर्त्त्यविप्रश्चेन्दुक्षयेऽग्निमान् । पिण्डान्वाहार्यकश्राद्धंकुर्यान्मासानुमासिकम् ॥ पितॄणां मासिकंश्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्बुधाः । तच्चामिषेणकर्त्तव्यंप्रशस्तेनप्रयत्नतः ॥ इतिमनुः ॥ दृष्टेर्दक्षिणायाम ॥ अन्वाहरणीये ॥

अन्वाहार्य्यपचनः । पुं । दक्षिणाग्नौ ॥

अन्वाहितम् । त्रि । यदेकस्यहस्तेनिहितंद्रव्यं तेनापिपश्चादन्यस्यहस्तेस्वामिनेदेहीति निहितम तस्मिन् द्रव्ये ॥

अन्विच्छा । स्त्री । अन्वेषणे ॥

अन्वितम । त्रि । मिलिते । युक्ते ॥ अनुगते ॥ कृतान्वयेपदादौ ॥

अन्विष्टम् । त्रि । अन्वेषिते ॥ अन्विष्यतेस्म । इषइच्छायाम् + क्त. ॥

अन्विष्यन । त्रि । विचिन्वति ॥

अन्वीक्षितम् । त्रि । विचारिते ॥

अन्वीतम् । त्रि । अन्विते ॥ अनुगते ॥ अनुपूर्वादिणगतावितिधातोः कर्मणिक्तः ॥ पृषोदरादिः । ईङ् गताविन्यस्मात्क्तः ॥

अन्वेषणम् । न । अनुसन्धाने । गवेषिते ॥ इषेरनिच्छार्थस्येतियुच् ॥

अन्वेषणा । स्त्री । अनुमार्गणे । गवेषणायाम ॥ तर्कादिनायथावोधितधर्माद्यन्वेषणे ॥ टाप् ॥

अन्वेषितम् । त्रि । गवेषिते ॥ अन्वेष्यतेस्म । एषृगतौ । इषिग्रन्तोवा । क्तः ॥

अन्वेष्टव्यः । त्रि । ज्ञातव्ये ॥ एषितव्ये ॥

अन्वेष्टा । त्रि । अनुपदिनि । अन्वेषणकर्त्तरि । पैरखगावनेवारा इति भाषा ॥

आपः । स्त्री । भू॰ । जले ॥ शब्दस्पर्शरूपतन्मात्रसहितात्रसतन्मात्रादुत्पन्नाः शीतस्पर्शवत्योह्यापः ॥ आप्नुवन्ति । आप्नृव्याप्तौ । आप्नोतेर्ह्रस्वश्चेतिक्विप् ह्रस्वत्वंच ॥

अप । । अपकृष्टार्थे ॥ वर्जनार्थे ॥ वियोगे ॥ विपर्यये ॥ विकृतौ ॥ चौर्ये ॥ निर्द्देशे ॥ हर्षे ॥ अपोवियोगेविकृतौ विपरीते निदर्शने । आनन्दे वर्जने चौर्ये वारणेसम्यगीरितः ॥ वियोगे । अपयाति । विकृतौ । अपाकृतवान् । विपरीते । अपशब्दः । निदर्शने । अपदिशति । आनन्दे । अपहसति । वर्जने । अपत्रिगर्त्तोद्दृष्टोदेवः । चौर्ये । अपहरति ॥

अपकर्म । न । दुष्क्रियायाम् ॥ अपोपसर्गेण कर्मशब्दस्य कर्मधारयः ॥

अपकर्षः । पुं । विद्यमानधर्मापचये ॥ अपकृष्यते । कृषविलेखने । घञ् ॥

अपकारः । पुं । द्वेषे ॥ अनिष्टे ॥ अपकरणम । कृञ । घञ ॥

अपकारकः । त्रि । अनिष्टकारिणि ॥ अपकरोति । कृ॰ । ण्वुल् ॥

अपकारगीः । स्त्री । भर्त्सने ॥ अपकारार्थागीर्वाक् ॥

अपकारी । त्रि । धूर्ते । शठे ॥ अपकारके ॥ यथा । अपकारिणिचेत् क्रोधः क्रोधः क्रोधेकथंनते । धर्मार्थकाममोक्षाणां चतुर्णां परिपन्थिनीति ॥

अपकुशः । पुं । दन्तरोगविशेषे ॥ यथा । वेष्टेषुदाहःपाकश्चताभ्यां दन्ताश्चलन्तिच । अघट्टिताः प्रस्रवन्तिशोणितं मन्ददन्तवेदना ॥ आध्मायन्तेस्रुतेरक्तेमुखंपूतिचजायते । यस्मिन्सोपकुशोनामपित्तरक्तकृतोगदइति ॥ ७ ॥

अपकृतः । त्रि । अपकारिणि ॥ न । अपकारे ॥ मित्रस्यचैवापकृतेर्द्विविधोविग्रहःस्मृतइत्यत्र मित्रस्यापकारे इत्यर्थदर्शनात् ॥

अपकृष्टः । त्रि । अधमे । हीने ॥ अपकृष्यतेस्म । कृषविलेखने । क्तः ॥

अपक्रमः । पुं । पलायने ॥ अपक्रमणम । क्रमुपादविक्षेपे । इञ । अक्रमे ॥

अपक्रिया । स्त्री । द्रोहे ॥ अपकरणम् । कृञःशश्चेतिश. ॥

अपक्रोशः । पुं । निन्दने । जुगुप्सने ॥ अपक्रोशनम । क्रुश॰ । घञ् ॥

अपक्कम् । त्रि । अपरिणते । आमे ॥ न पक्कम् ॥

अपच्चेपणम् । न । अधोदेशसंयोगहेतौ कर्मविशेषे ॥ अपपूर्वात् क्षिपेर्ल्युट् ॥

अपगतः । त्रि । मृते ॥ पलायिते । दूरीभूते । गते ॥ अपगच्छतिस्म । गम्लृ॰ । गत्यर्थेतिक्तः ॥

अपगमः । पुं । अपगमने ॥ गमेरप् ॥

अपगा । स्त्री । नद्याम् ॥ त्रि । अपगामिनि ॥ अपगच्छति । गमल्टगतौ । अन्येभ्योपीतिड. । टाप् ॥

अपघनः । त्रि । घनशून्ये ॥ पु । हस्तपादाद्यङ्गेषु । अवयवे ॥ अपहन्यते । अपघनोङ्गमिति करणे ऽपघनादेशश्च ॥

अपघातः । पुं । अपहनने ॥ अपहननम । हन्तेर्घञ् । हस्यघः । नस्यतः ॥

अपचयः । पुं॰ व्यये । हानौ । अपहारे ॥ अपचयनम् । चिञ्चयने । एरच् ॥

अपचायितम् । त्रि । अर्चिते ॥ अपचाय्यतेस्म । चायृपूजानिशामनयोः । क्तः ॥

अपचारः । पुं । अहिताचरणे ॥ यथा । योनिप्रदोषाद्भवन्निभिरश्चे पश्चोप

दंशाविविधापचारैरिति। वर्णधर्मव्य तिकरे । दोषे । अविनये ।

अपचारिणी । स्त्री । व्यभिचारिण्याम् ॥ अपचारोऽस्त्यस्याः । इनिः ।

अपचारी । त्रि । अपचारवति ॥

अपचितम् । त्रि । अर्चिते । क्षीणे । व्ययिते । अपचाय्यतेस्म । चायृपूजानिशामनयोः क्तः । चायतेश्चिरितिचिभावः ॥

अपचितिः । स्त्री । पूजायाम् । व्यये । निष्कृतौ । हानौ । अपचीयते अपचाय्यतेऽनया अपचायनंवा । चायृ-पूजादौ । क्तिन् । चायते क्तिनि चिभावोवाच्य ।

अपची । स्त्री । गण्डमालाया अवस्थाविशेषे । यथा । तेग्रंथय केचिदवाप्तपाका स्रवन्तिनश्यन्तिभवन्तिचान्ये। कालानुबन्धं चिरमादधातिसैवापचीतिप्रवदन्तिकेचिदिति । ते ग्रन्थय. गण्डमालायाएवगण्डाः ॥

अपजय. । पुं । भङ्गे । पराजये ॥ अपजयनम् । जिजये। एरच् ।

अपटान्तरम्। त्रि। आसक्ते। अव्यवहिते। संसक्ते॥ पटेनतिरस्करिण्या अन्तरम । नपटान्तरमत्र ।

अपटी। स्त्री। काण्डपटे। वस्त्रप्राकारे। कनात इतिभाषा॥ इतिहेमचन्द्रः।

त्रि । पटशून्ये ॥

अपटुः। त्रि। अचतुरे। कार्य्याक्षमे। पटोरन्यः॥ रोगिणि। आमयाविनि ॥

अपतर्पणम् । न । रोगादौभोजनाभावे। लङ्घने॥ इतिहेमचन्द्रः॥ अपपूर्वात् तृपेर्ल्युट् ।

अपतानकम् । न । वायुरोगविशेषे । प्रताने। यथा । दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञांचहत्वाकण्ठेनकूजति । हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयाति मोहंवृतेपुन । वायुनादारुणं प्राहुरेके तदपतानकमिति ।

अपत्यम् । न। सन्ताने। दुहितरि॥ पुत्रे ॥ नपतन्तिपितरोऽनेन । पत्लृगतौ। वाहुलकाद्यत्। अघ्न्यादिर्वा। यन्निमित्तंयस्यापतनंतत्तस्यापत्यमितिफलितोर्थ.। तथाचपौत्रादिरपिपितामहादीनामपतनेहेतुरिति तेषामपत्यंभवति ।

अपत्यदा। स्त्री । क्षुपविशेषे । गर्भदात्र्याम् ।

अपत्यपथः। पुं। भगे । योनौ ।

अपत्यशत्रु. । पुं । कुलीरे। कर्कटे ।

अपत्र. । पुं । करीरे । नविद्यन्ते पत्राण्यस्य । त्रि । पत्रहीने ।

अपत्रप: । त्रि । निर्लज्जे । अपगता त्रपायस्यसः ॥

अपत्रपा । स्त्री । परतोह्रियाम् । पित्रा

पुरस्तोजातलज्जायाम् ॥ स्त्री मात्रे ॥ इतिरत्नकोशः ॥

अपत्रपिष्णुः । त्रि । लज्जाढ्ये । लज्जाशीले । स्वभावतः सत्रपे ॥ अपत्रपते । अलंकृञि तीष्णुच् ॥

अपथम् । न । ा । अमार्गे ॥ पथोऽभावः । नञितितत्पुरुषः । पथोविभाषेतिपाक्षिकोऽप्रत्ययः ॥ अपथानिगाहते मूढः । अपथंनपुंसकम् । तत्पुरुषस्येव । अपथोदेशः । अपथानदी ॥ अपथे पदमर्पयन्तिहि श्रुतवन्तोपिरजोनिमीलिता. ॥ योनौ ॥

अपन्थाः । पुं । अपथे । मार्गाभावे ॥ पथोऽभावः नञितितत्पुरुषः । अपथंनपुंसकमिति कृतसमासान्तस्यनिर्देशान्नक्लीवत्वम् ॥

अपथ्यम् । त्रि । रोग्यभोज्ये । अहिते ॥ नपथ्यम् ॥

अपदस्थः । त्रि । स्वकर्मच्युते ॥

अपदानम् । न । वृत्तेकर्मणि । अवदाने ॥ हन्तिः प्रवर्त्तनं साप्रशस्ताविद्यते यत्र तत्र । यत्र कर्मणि हन्तिः सर्वैः प्रशस्यते तस्मिन्नित्यर्थः ॥ दैप् शोधने । भावे ल्युट् । निन्द्यदाने ॥ अपकृष्टंदानम् ॥

अपदान्तरम् । त्रि । अनन्तरे । अव्यवहिते ॥ नपदान्तरमत्र ॥

अपदिशम् । न । ा । दिक्कोणे । दिशोर्मध्ये । विदिशि ॥ दिशोर्मध्यम् । अव्ययमिति योगविभागात्समासः । दिशशब्दस्यशरदादिषु पाठाट्टच् । अव्ययीभावश्चेतिसूत्राभ्यांक्लीवत्वाव्ययत्वयोर्विधानम् । तेननाव्ययीभावादतोमत्वपंचम्या इत्यादिप्रवृत्तिः ॥ अपेतिमध्यवाची आवन्तेन समासेतु टज्नापेक्षित. ॥

अपदिष्टः । त्रि । प्रयुक्ते ॥ यथाकालात्ययापदिष्टः । अपदिश्यते । दिशअतिसर्जने । क्त ॥

अपदेशः । पुं । शरव्ये । लक्ष्ये ॥ निमित्ते ॥ व्याजे ॥ स्थाने ॥ अपदेशनम्-अपदिशते वा । दिश अतिसर्जने । घञ् ॥

अपध्वंसजः । पुं । वर्णसङ्करे ॥ यथा । शूद्रायांतुसधर्माणः सर्वेऽपध्वंसजाः स्मृता इतिमनुः ॥

अपध्वस्तः । त्रि । परित्यक्ते ॥ निन्दिते ॥ अवचूर्णिते ॥ अपध्वंसतेस्म । ध्वंसु अधःस्रंसने गतौच । क्तः ॥

अपनयनम् । न । अधःप्रापणे ॥ दूरीकरणे । खण्डने ॥

अपनीतः । त्रि । विनीते । कृते ॥

अपनुतिः । स्त्री । अपनोदे । खण्डने ॥

अपनेयः । त्रि । अपनोद्ये । निरस्ये ॥

अपनोद. । पुं । अपनोदने ॥

अपनोदनम् । न । दूरीकरणे ॥

अपपात्रित: । त्रि । उत्कटदोषैर्ज्ञातिभिर्भिन्नोदकीकृते ॥ यथा । अपपात्रितस्यरिक्थपिण्डोदकानि निवर्त्तन्त इतिशङ्खापस्तम्बौ ॥

अपभ्रंश: । पुं । अपशब्दे । अशास्त्रशब्दे । असंस्कृतशब्दे । ग्राम्यभाषायाम् ॥ यथा दण्डी । आभीरादिगिर:काव्येष्वपभ्रंशइतिस्मृत: । शास्त्रेषुसंस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितमिति ॥ संस्कृतादपभ्रश्यति । भ्रंशुअध.पतने । पचाद्यच् । पतने ॥ यथा । अन्याहृढिर्भवति महतामप्यप भ्रंशनिष्ठेत्यभिज्ञानशकुन्तला ॥

अपम: । पुं । क्रान्तौ । सूर्यगमनार्थतिर्यग्गोलरेखायाम् ॥

अपमानम् । न । अनादरे ॥ अस्यपर्यायायथा । स्यादवज्ञापरीहार परिहार: पराभाव' । अपमानपरिभवस्तिरस्कारस्तिरस्क्रिया ॥ अवहेलाचहेला स्यादवहेलनहेलने । चपेटोनिकार धिक्कारौपर्याया'स्युरनादर इतिशब्दरत्नावली ॥ यथा । वेदस्यब्राह्मणानाञ्च अपमानादधोगतिरिति ॥

अपमित्यकम् । न । ऋणे ॥

अपमृत्यु. । पु । विनारोगेणमरणे ॥ पश्चिमवयस्युत्सङ्गदंष्ट्रिशृङ्गिनखिपतनाशनवज्राग्निविषवन्धजलप्रवेशाश्वच्ताद्दिजन्यमरणे इतिकेचित् ॥ अपकृष्टोमृत्यु: ॥

अपमृषितम् । न । अविस्पष्टवाक्ये ॥

अपयानम् । न । पलायने ॥ यामापणे श्रेमपूर्व: । ल्युट् ॥

अपरम् । न । गजपश्चार्द्धे ॥ त्रि । इतरस्मिन ॥ अर्वाचीने ॥ निकृष्टे । द्रव्यादिसामान्ये ॥ कार्ये ॥ सन्निकृष्टे । परंनभवतीत्यपरम् ॥ पु । पाद पश्चिमे ॥ अपर'पश्चिम'पाद' इतिगजप्रकरणेवैजयन्ती ॥

अपरक्त: । त्रि । अननुकूले ॥ विरक्ते ॥

अपरताल' । पु । गिरिविशेषे ॥

अपरति । स्त्री । निवृत्तौ ॥ अपरमेभावे क्तिन ॥

अपरत्र । । पश्चादर्थे ॥

अपरत्वम् । न । अपरव्यवहारकारणे ॥ तद्दिविधम । दिक्कृतं कालकृतञ्चेति । समीपस्थे दिक्कृतम् कनिष्ठे कालकृतमिति । अपरस्यभाव: ॥

अपरपक्ष. । पुं । कृष्णपक्षे ॥

अपरराच: । पुं । रात्रिशेषे । उत्तरार्द्धे ॥ अपरंरात्रे: । पूर्वापराधरेति समासेअह: सर्वैकदेशेत्यच् ॥

अपरवक्त्रम् । न । वैतालीयसंज्ञकेवृत्ते ॥

अपरवैराग्यम् । न । वैराग्यविशेषे । यतमानसंज्ञाव्यतिरेकसंज्ञैकेन्द्रियसंज्ञावशीकारसंज्ञाभेदाच्चतुर्विधे सम्प्रज्ञातस्यान्तरङ्गे । असम्प्रज्ञातस्य वहिरङ्गे ॥

अपरस्परः । त्रि । क्रियायाः क्रियावतांच सातत्ये । अपरश्चपरश्चेतिद्वन्द्वः । अपरस्पराः क्रियासातत्येइतिसुट्निपात्यते क्रियासातत्ये । अपरस्परं गच्छन्ति । सततमविच्छेदेनगच्छन्तीत्यर्थः । निर्दिष्टंकर्मसातत्ये सुधीभिरपरस्परम् । क्रियावतां सातत्येतुक्लिष्टनयम् । अपरस्पराःसार्थाः स्त्रियश्च गच्छन्ति अपरस्पराणि कुलानि ॥

अपरा । स्त्री । जरायौ ॥ पश्चिमदिशि ॥

अपरागः । पुं । अप्रीतौ । द्वेषे ॥

अपराङ्गम् । न । गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदे ॥ इतिकाव्यप्रकाशः ॥

अपराजित । पुं । ईशे ॥ विष्णौ ॥ ऋषिभेदे ॥ नपराजितः ॥ गेन्धधूपे ॥ त्रि । अजिते ॥

अपराजिता । स्त्री । उमायाम् ॥ जयायाम् । आश्रीतिप्रसिद्धायाम् । जयन्त्याम् ॥ अश्मनपर्ण्याम् ॥ शेफाल्याम् ॥ शमीभेदे ॥ शंखिन्याम् ॥ क्षुपाम्रभेदे । स्वल्पफलायाम् ॥ गिरिकर्ण्याम् । विष्णुक्रान्तायाम् ॥ श्वेतनीलपुष्पभेदाद्विविधे अपराजिते । अपराजिते कटूमेध्ये शीतेकण्ठ्ये सुदृष्टिदे । कुष्ठमूत्रत्रिदोषाम शोथव्रणविषापहे ॥ कषायेकटुपाकेचतिक्तेचस्मृतिबुद्धिदे ॥ ऐशान्यांदिशि ॥ नपराजिता ॥ ब्रह्मलोकेहिरण्यगर्भपुर्याम् ॥ ब्रह्मचर्यसाधनवद्भ्योऽन्यैर्नजीयते इति । जी० । क्तः ॥

अपराद्ध । त्रि । अपराधिनि ॥ अपराध्यति । राध० । क्तः ॥

अपराद्धपृषत्कः । त्रि । लक्ष्यभ्रष्टशरे ॥ अपराद्धः पृषत्कोवाणोऽस्य । अपराद्धपृषत्कोसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥

अपराधः । पुं । आगसि । दण्डयोग्यकर्मणि ॥ अपराधनम् । राधसंसिद्धौ घञ् ॥ त्रि । राधाभाववति ॥

अपराधी । त्रि । कृतापराधे ॥ भेददर्शिनि ॥ अपोर्तंविचारयद्गुरुभिः विप्रश्चवत्सन्नलोकदेवभूतादिकं जगत् । स्वस्माद्भेदेन पश्यन्तंक्रोशयेदपराधिनम् ॥ यदस्तितन्नजानातियन्नेवास्ति तदीक्षते । इत्येवमपरोधोस्यविख्यातो भेददर्शिनइति ॥ योन्यथासन्तमात्मानमन्यथा प्रतिपद्यते । किंतेननकृतं पापंचौरेणात्मापहारिणेति ॥

अपरान्त । त्रि । पाश्चात्ये ॥ अपरान्तास्तुपाश्चात्या इतियादवः ॥ समुद्रमध्य

देशवर्त्तिजने । यथा । अवकाशंकि लोकवान् रामायाभ्यर्थितोददौ । अपरान्तमहीपालव्याजेनरघवेकर मिति ॥

अपराप्रकृतिः । स्त्री । भूमिरापोनलो वायु: खंमनोबुद्धिरेवच । अहंकार इ तीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा । अपरेय मितिभगवद्गीता ॥ चेतनत्वशून्यायाम् । अप्रधानायांशक्तौ ॥ अपराचासौप्रकृ तिश्च ॥

अपराभुक्तिः । स्त्री । पातालादिकला न्तःवर्त्तिविचित्रैश्वर्यसम्पन्नतत्तद्भु वनवासित्वमात्रे ॥

अपरामुक्तिः । स्त्री । मंत्रमंत्रेश्वरत्वे ॥ अपराचासौमुक्तिश्च ॥

अपराविद्या । स्त्री । ऋग्वेदादिविद्या यां ॥ ऋग्यजुःसामाथर्वाख्यावेदा अङ्गानिषड्द्विज । शिक्षाकल्पोव्याक रणंनिरुक्तंज्योतिषांगतिः ॥ छन्दोभि धानंमीमांसाधर्मशास्त्रपुराणकम् । न्यायोवैद्यकगान्धर्वंधनुर्वेदोर्थशास्त्र कम् ॥ अपरेयं पराविद्यायया ब्रह्मा वगम्यते । अपराचासौविद्याच ॥

अपराशक्तिः । स्त्री । अपराप्रकृतौ ॥ अपराचासौशक्तिश्च ॥

अपराह्णः । पुं । दिनान्तांशे ॥ तस्यभे दाः । द्विधाविभक्तस्यदिनस्यशेषभागः । त्रिधाविभक्तस्यदिनस्यतृतीयभागः । सतुविंशद्दण्डदिनमानेविंशतिदण्डा त्परंदशदण्डयावत् । पञ्चधाविभ क्तस्यदिनस्यचतुर्थभागः । सचाष्टाद शदण्डात्परंषट्दण्डंयावदितिश्रुति स्मृतिप्रसिद्धाः ॥ अह्नअपरमपराह्णः । पूर्वापरेत्येकदेशिसमासः । टच् । अ ह्नोह्नएतेभ्यइत्यह्नादेशः । अह्नोद न्तादितिणत्वम् ॥

अपराह्णतनः । त्रि । अपराह्णे भवेवस्तु नि । आपराह्णिके ॥ अपराह्णः सोढो ऽस्य । विभाषापूर्वाह्णापराह्णाभ्यामि तिट्युट्युलौतुट्च ॥

अपराह्णेतन. । त्रि । अपराह्णोद्भवेव स्तुनि । आपराह्णिके ॥ अपराह्णेभ वः । ट्युट्युलौतुट्च । घकालतनेष्वि ति सप्तम्याअलुक् ॥

अपरिकलित. । त्रि । अज्ञाते ॥ अदृष्टे ॥ नपरिकलित' ॥

अपरिग्रहः । पुं । असङ्ग्रहे ॥ अस्वीका रे ॥ नपरिग्रह. ॥ परिव्राजि ॥ नवि द्यतेकन्थाकौपीनाच्छादनादिव्यतिरि क्त.परिग्रहोयस्य ॥ त्रि । परिग्रहहीने ॥

अपरिच्छद' । त्रि । दरिद्रे ॥ नविद्यते परिच्छदोयस्यस. ॥

अपरिच्छिन्नम् । त्रि । परिच्छेदरहिते । असीमनि ॥

अपरिज्ञानम् । न । तत्त्वाविवेके । मू
ढतायाम् ॥

अपरिम्लानः । पुं । रक्ताम्लानवृक्षे । त्रि ।
म्लानिरहिते ।

अपरिसङ्ख्यानम् । न । आनन्त्ये । नप
रिसंख्यानम् ॥

अपरिहार्य्यः । त्रि । परिहर्त्तुमशक्ये
। अत्याज्ये ॥

अपरेद्युः । अ । अपरदिने । अपरे अह
नि । सद्यः परुदित्यपरशब्दादेद्युस् ॥

अपरोक्षम् । त्रि । स्पष्टे । असंभाव
नादिनिरासेतुविचारविपाकासेनैव
प्रमाणेन जनितं ज्ञानं प्रतिबन्धाभा
वात् फलं जनयदपरोक्षमित्युच्यते ।
अक्ष्णामिन्द्रियाणां परोऽतीतोनभव
तीत्यपरोक्षम् । नपरोक्षं वा ॥

अपर्णा । स्त्री । पार्वत्याम् । नपर्णान्य
स्याः । तपसिपर्णानामप्यनशनात् ।
त्रि । पर्णशून्ये ॥

अपर्द्धीकः । त्रि । निस्तेजसि ।

अपर्य्याप्तम् । त्रि । असमर्थे । पर्याप्ति
शून्ये ।

अपर्वदण्डः । पुं । रामशरवृक्षे ॥ इति
राजनिर्घण्टः ॥

अपलम् । न । कीलके । त्रि । मांस
हीने ॥

अपलापः । पुं । प्रेम्णि । अपह्नवे । स
तोऽप्यसत्त्वेनकथने । धार्यमाणेन न
धारयामीत्याद्युक्तौ । अपलपनम् ।
घञ् ॥

अपलाषिका । स्त्री । तृष्णायाम् ॥ इ
तिहेमचन्द्रः ॥

अपवरकः । पुं । वासौकसि । गर्भगृहे
। अपव्रियते वृणोतिवा । वृञ्० ।
कृञादिभ्यः संज्ञायांवुन् । फन्नुसखा
खटैन इति प्रसिद्धे । आवरके । य
था । दीपोऽपवरकस्यान्तर्वर्त्तते त
त्प्रभावच्छिरितिध्यानदीपे विद्यार-
ण्यगुरवः ।

अपवर्गः । पुं । त्यागे । मोक्षे । कार्या
वसानसाफल्ये । फलप्राप्तिपूर्विकायां
क्रियापरिसमाप्तौ । कर्मफले । तद
त्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः । न्या० १ । २२
। तस्यदुःखस्य अत्यन्तविमोक्षः स्वस
मानाधिकरणदुःखासमानकालीनो
ध्वंसः । तच्च जन्मापायादेव सम्भ
व इत्याशयेनदुःखेन जन्मनात्यन्तं-
विमुक्तिरपवर्गइति भाष्यम् । दुःखे-
नदुःखानुषक्तेणेत्यर्थः । अपवर्जनम
पवर्गः । वृजीवर्जने । भावेघञ् । दुः
खाभावे । नाशे । पूर्णतायामिति च
रथिः ।

अपवर्गगुरुः । पुं । सदाशिवे । हरौ ।
मोक्षमार्गप्रदर्शके ।

अपवर्जनम् । न । दाने । निर्वाणे । मोक्षे । परित्यागे ॥ वृजीवर्जने अपपूर्वः । भावेल्युट् ॥

अपवर्जितः । त्रि । परिहृते । त्यक्ते ॥

अपवर्त्तनम् । न । परिवर्त्ते । वक्रीभावे ॥

अपवर्त्तितः । त्रि । सञ्चलिते ॥

अपवादः । पुं । निन्दायाम् । आज्ञायाम् । विस्रम्भे । प्रणये । बाधके । अपवादो नाम रज्जुविवर्त्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववत् वस्तुविवर्त्तस्यावस्तुनो ऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वमिति । कार्यस्य कारणमात्रसत्तावशेषणम् कारणस्वरूपव्यतिरेकेण कार्यस्यासत्तावधारणं वाऽपवाद इत्यर्थः । अपवदनम् । वदअभिवादने । कर्मणि । भावे घञ् । अपोद्यते । वदत्यकार्यावाचि । घञ्वा ॥

अपवारणम् । न । अन्तर्द्धौ । वृञ्आच्छादने । चुरादिण्यन्ताद्वाभावेल्युट् ॥

अपवारितम् । त्रि । अन्तर्हिते । आवृते ॥

अपवित्रः । त्रि । अशुद्धे । नपवित्रः ॥

अपविद्धम् । त्रि । प्रतिक्षिप्ते । प्रत्याख्याते ॥ व्यक्ते । त्यक्ते ॥ पुं । पुत्रविशेषे यथा । मातापितृभ्यामुत्सृष्टं तयोरन्यतरेणवा । यंपुत्रंपरिगृह्णीयादपविद्धःसउच्यतेइतिमनुः ॥

अपविषा । स्त्री । निर्विषीतृणे । राजनिर्घण्टः ॥

अपवृतिः । स्त्री । अपवारणे ॥

अपवृत्तः । त्रि । पराङ्मुखीभूते

अपशब्दः । पुं । असंस्कृतशब्दे । ग्राम्यशब्दे ॥ अपभ्रष्ट. शब्दोपशब्दः ॥ म्लेच्छितवैनापशब्दो नवक्तव्यः । यथा भाष्यकारः । तेऽसुराहेलयहेलयइतिकुर्वन्तःपराबभूवुस्तस्माद्ब्राह्मणेन नम्लेच्छितवैनापभाषितवै म्लेच्छोहवाएषयदपशब्द. म्लेच्छामाभूमेत्यध्येयं व्याकरणमिति ॥ म्लेच्छितवैइत्यस्यपर्यायोनापभाषितवैकृत्यार्थइतितवैप्रत्ययइतिकैयटः यथैवहिशब्दज्ञानेधर्मः एवमपशब्दज्ञानेप्यधर्मः । इतिमहाभाष्यम् एवञ्च अपशब्दज्ञानमधर्मसाधनं धर्महेतुशब्दज्ञानविरोधित्वात् यद्विरोधि ततद्विरोधिफलकं यथाश्लेष्मिकद्रव्यसेवाश्लेष्मवतः इत्यनुमानम् ॥ श्लेष्मिकद्रव्यसेवयाश्लेष्मव्याधिसम्भवस्तद्विपरीतसेवयारोग्यमित्यर्थः ॥

अपशुकः । पुं । आत्मनि । अपगत यस्मात् ॥

अपशोकः । पुं । अशोकपादपे ॥

अपष्टम् । न । अङ्कुशाग्रे । इतिहेम

अपष्ठु । ।। निरवद्ये ॥ शोभनार्थे ॥ वि परीते ॥

अपष्ठुः । पुं । काले ॥ त्रि । वामे । प्रति कूले । विरुद्धार्थे ॥ अपतिष्ठति । ष्ठाग तिनिवृत्तौ । अपदुःसुषुभ्यःस्थ इति कुः सुषामादिः ॥

अपष्ठुतम् । त्रि । निन्दिते । विपरीते ॥

अपस । न । यज्ञकार्ये ॥ अपनशब्दार्थे ॥ आप्नोति । आप्लृ० । आपःकर्माख्या यांह्रस्वोनुट्चवेत्यसुन् पाक्षिकोनु डभावः ॥

अपसदः । पुं । अधमे । नीचे ॥ अपकृष्ट मपकृष्टेवासीदति । षद्लृविशरणा दौ । पचाद्यच् ॥

अपसरः । पुं । अपसरणे ॥ सर्त्तेरप् ॥

अपसरणम् । न । स्थानात्स्थानान्तरग मने ॥

अपसर्जनम् । न । परिवर्जने ॥ दाने ॥ आम्राते ॥ अपसृज्यते । सृज० ल्युट् ॥ मोक्षे ॥ मारणे ॥

अपसर्पः । त्रि । चरे ॥ अपसर्पति । सृप्लृ गतौ । पचाद्यच ॥ पुं । अहिभेदे ॥ अपक्रमे ॥

अपसर्पणम् । न । पृष्ठतोगमने ॥

अपसव्यम् । त्रि । पितृतीर्थे । प्रदेशिन्य ङ्गुष्ठयोर्मध्ये ॥ यथा । प्रदेशिन्यङ्गुष्ठयो रन्तरा अपसव्ये अपसव्यंवा तेनपि तृभ्योनिदधाति इतिश्राद्धतत्त्वे भट्ट भाष्यधृतग्रन्थम् ॥

अपसव्यम् । त्रि । शरीरदक्षिणे । शरी रस्यदक्षिणभागे ॥ प्रतिकूले । विरु द्धार्थे ॥ न । पितृतीर्थे । अपसव्ये वि अपगतम् अपक्रान्तंवा सव्यात ॥

अपसारणम् । न । अपनयने ॥

अपसारितः । त्रि । उत्सारिते ॥

अपसिद्धान्तः । पुं । स्वीकृतसिद्धान्तात् प्रच्यवे ॥ तल्लक्षणमाह । सिद्धान्तम भ्युपेत्यानियमात्कथाप्रसङ्गो ऽपसि- द्धान्तः । ५ । ६६ सिद्धान्तं स्वशास्त्रका राभ्युपगतमर्थं स्वीकृत्याऽनियमात् तन्नियमप्रच्यवात् कथाप्रसङ्ग इति । तथाच कथायां स्वीकृतसिद्धान्तप्रच्य वोऽपसिद्धान्तः । तथाचसांख्यमतेनाहं वदिष्यामीत्यभ्युपेत्यारब्धायांकथा याम् आविर्भावस्याविर्भावाभ्युपगमेऽ नवस्थेति दूषणोद्धारायाविर्भावस्याऽ सदुत्पत्तिंयद्यभ्युपैतितद ऽपसिद्धा- न्तः । यस्त्वेकदेशिमतेनकथामारभते तस्यशास्त्रकाराभ्युपगमविरोधेऽप- पसिद्धान्तइतिविबोधयितुमभ्युपेत्ये त्युक्तम् ॥ सौगतास्त्वपसिद्धान्तंदूषणां नमन्यन्ते इत्यन्यदेतत् ॥ अपकृष्टः सिद्धान्तः ॥

अपसोपानः । पुं । खलिनखे ॥

अपस्कर' । पुं । रथाङ्गे । चक्रभिन्नेरथा रम्भके ॥ अपकीर्यतेऽस्य स्वस्वस्थाने क्षिप्यते । कृविक्षेपे । ऋदोरप् अप स्करोरथाङ्गमितिसाधु ॥

अपस्नात. । त्रि । मृतस्नाते । मृतमु द्दिश्यस्नातेजने ॥ अपकृष्टंस्नात' । प्रादयोगताद्यर्थेइतिसमास. ॥ संस्का रार्थंस्नापितेमृते ॥ इतिस्वामी ॥

अपस्नानम् । न । मरणनिमित्तस्नाने । मृतस्नाने ॥ अपकृष्टंस्नानम् ॥

अपस्मार. । पु । रोगभेदे । भूतविक्रिया याम् । मिरगीतिख्याते ॥ तस्यसामा न्यरूपम् । तमःप्रवेशःसंरम्भोदोषो द्रेकहतस्मृतिः । अपस्मार इतिज्ञेयो गदोघोरतरोऽहिस. ॥ अस्यौषधंयथा । य खादेत्क्षीरभक्ताशीमाक्षिकेण यस्यारजः । अपस्मारंमहाघोरं चिरो त्थंसनयेद्ध्रुवमिति ॥ वचाद्युरयञ्च । अपिच । देवकीटमेषेविधिवद्दानी शरविकासरै । कण्ठेभुजेवासन्धार्य्यं जयेदुग्रामपस्मृतिमिति ॥ अयंकीटो नदीतीरेसिकतामध्येतिष्ठति । इति भावप्रकाशः ॥

अपस्मारी । त्रि । अपस्माररोगिणि ॥ तल्लक्षणम् । क्रुद्धैर्धातुभिराहते ऽथ मनसिप्राणीमन'सन्दर्शनदन्तान्खा दतिफेनमुद्गिरतिदोः पादौक्षिपन्भू धौः । पश्यन्रूपमसत् क्षितौनि पततिव्यर्थां करोतिक्रियां विभ्रत सत्वयहैवशाम्यतिगतेवेगेस्वपस्मार रुक् ॥ इति ॥

अपहत. । त्रि । अपनीते ॥ नष्टे ॥ अ पहन्यतेस्म । हन० । क्तः ॥

अपहतपाप्मा । पुं । वेदान्तवेद्यआत्म- नि ॥ अपहत पाप्माधर्माऽधर्माख्योय- स्यसः ॥

अपहतिः । स्त्री । विनाशे । उच्छेदे ॥

अपहन्ता । त्रि । विनाशयितरि ॥

अपहर्त्ता । त्रि । अपहारिणि ॥ यथा । आपदामपहर्त्तारंदातारं सर्वसम्प- दाम् । लोकाभिरामं श्रीरामंभूयो भूयोनमाम्यहमिति ।

अपहस्तितः । त्रि । निरस्ते ॥

अपहार' । पु । अपचये । हानौ ॥ अ पहरणे । चौर्ये ॥ सङ्गोपने ॥ धनस्वा म्यनुपयोगिव्यये ॥ इतिदायभाग. ॥ अपहरणम् । हृञ्हरणे । घञ् ॥

अपहारकः । त्रि । अपहारिणि । अप हरणकर्त्तरि ॥ अपहरति । हृञो ण्वुल् ॥

अपहारी । त्रि । अपहरणशीले । अप हर्त्तरि ॥

अपहास. । पुं । अकारणहास्ये ॥

अपहृत' । त्रि । अपनीते ॥

अपह्नवः । पुं । स्नेहे । अपलापे । इति मेदिनीहेमचन्द्रौ । अपह्नवनम् । ऋु ङ् अपनयने । क्रुदीरम् ।

अपह्नुतिः । स्त्री । अपलापे । अर्थालंकारे । प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत् साध्यते सा त्वपह्नुतिः । उपमेयमसत्यं कृत्वोपमानं सत्यतया यत् स्थाप्यते सापह्नुतिः । उदाहरणम् । अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये कलङ्को नैवायं विलसति शशाङ्कस्य वपुषि । अमुष्येयं मन्ये विगलदमृतस्यन्दिशिशिरे रतिश्रान्ता शेते रजनिरमणीगाढमुरसि । इत्थं वा । वतसखि कियदेतत् पश्य वैरं स्मरस्य प्रियविरहकृशेऽस्मिन् रागिलोके तथाहि । उपवनसहकारोद्भासिभृङ्गच्छलेन प्रतिविशिखमनेनोट्टङ्कितं कालकूटम् । अत्र हि न सभृङ्गाणि सहकाराणि अपि तु सकालकूटाः शरा इति प्रतीतिः । एवं वा । अमुष्मिंल्लावण्यामृतसरसि नूनं मृगदृशः स्मरः शर्वप्लुष्टः पृथुजघनभागे निपतितः । यदङ्गाङ्गाराणां प्रशमपिशुना नाभिकुहरे शिखा धूमस्येयं परिणमति रोमावलिवपुः । अत्र रोमावलिर्धूमशिखेयमिति प्रतिपत्तिः । एवमियं भङ्ग्यन्तरैरप्यूह्या । अपह्नवनम् । ह्नुङ्

तिन् ।

अपांनाथः । पुं । समुद्रे । अकूपारे । इति राजनिर्घण्टः ।

अपाकः । पुं । अजीर्णतायाम् । त्रि । पाकाभावविशिष्टे ।

अपाकरणम् । न । निराकरणे । अपाङ्पूर्वात् कृञोल्युट् ।

अपाकशाकम् । न । आर्द्रके । इतिराजनिर्घण्टः ।

अपाकृतम् । त्रि । अपेक्षिते । त्यक्ते । अपाकारि । डुकृञ् । क्तः ।

अपाकृतिः । स्त्री । विकारे । अपाकरणे ।

अपाच्यम् । त्रि । प्रत्यक्षे । इतित्रिकाण्डशेषः ।

अपाङ्क्त्यः । त्रि । पङ्क्तिभोजनानर्हे सिद्भिःसहैकपङ्क्त्यांभोजनायोग्ये । तेच । येस्तेनपतितक्लीबाये चनास्तिकवृत्तयः इत्यादिवचनैर्मनुनोक्ता बोध्याः ।

अपाङ्गः । पुं । नेत्रान्ते । तिलके । त्रि । अङ्गहीने । अपगतोऽङ्गात् । निरादयइतिसमासः । अपकृष्टोऽङ्गाद्वा । अपकृष्टान्यङ्गान्यस्माद्वा । अपाङ्गति । अगिगतौ । पचाद्यच्वा ।

अपाङ्गकः । पुं । अपामार्गे । नेत्रान्ते । त्रि । अंगहीने ।

अपाङ्गदर्शनम् । न । कटाक्षे । अपांगेन नेत्रान्तेन दर्शनम् । इतिहेमचन्द्रः ।

अपाग । त्रि । दक्षिणदिग्भवेवस्तुनि । अपाचीने ॥

अपाची । स्त्री । दक्षिणदिशि ॥ अक्षो मध्ये अंचतिसूर्यम् । अपेत्यव्ययंम ध्यार्थे अपदिशमितिवत् । अंचुगति पूजनयो: । ऋत्विगादिनाक्विन् । उगितश्चेतिङीप् ॥

अपाचीनम् ॥ त्रि । विपर्यस्ते ॥ अपाग र्थे । दक्षिणदिग्भववस्तुनि ॥ अपागे व । विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियामिति ख' । तस्य ईनादेश: ॥

अपाच्यम् । त्रि । दक्षिणदिग्भवे ॥ पा कानर्हे ॥ द्युप्रागपागित्यादिनाशेषि कोयत् । न पाच्यम् ॥

अपाटवम् । न । रोगे ॥ अपटुत्वे ॥ न विद्यते पाटवं यस्मिन् ॥

अपात्रम् । न । योग्यताहीने । निन्दि ते । विद्यातपोहीने । नटविटादो । कुपात्रे ॥ नपात्रम् ॥ अपात्रे पातयेद्द त्तं सुवर्णं नरकार्णवे ॥ इतिमलमा सतत्त्वम् ॥

अपात्रीकरणम् । न । नवविधपापमध्ये पापविशेषे ॥ तच्चतुर्विधंभवति यथा । निन्दितधनादानम १ । वाणिज्य म् २ । शूद्रसेवनम् ३ । असत्यभाष णञ्च ४ । इति ॥ यथाहमनु: । निन्दि तेभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम् । अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाषण मिति ॥

अपादानम् । न । विश्लेषेऽवधिभूते । पं चमीकारके । यस्माद्वस्तुनोवस्त्वन्तर स्यचलनंभवतितस्मिन् ॥ विश्लेषहेतु क्रियानाश्रयत्वेसतिविश्लेषाश्रय इत्य र्थ ॥ तत्रै कादशार्थे पंचमीस्यात् । यथा । यतोऽपाय: । यथावृक्षात्प र्णं पतति १ ॥ यतो भी: । यथाव्या घ्राद्बिभेति २ ॥ यतोजुगुप्सा । यथा पापात् जुगुप्सते धीर ३ ॥ यत:परा जय । यथा सिंहात् पराजयते हस्ती ४ ॥ यत:प्रमाद: । यथा धर्मात् प्र- माद्यतिनीच: ५ ॥ यत आदानम् । यथा भूपात् धनमादत्तेविप्र: ६ ॥ य तो भू: । यथा पितु: पुत्रोजायते ७॥ यतस्त्राणम् । यथा व्याघ्रात गां रक्ष- तिगोप: ८ ॥ यतो विराम: । यथा पापाद्विरमतिविप्र' ९ ॥ यतोऽन्तर्द्धि: । यथा गुरोरन्तर्द्धत्तेशिष्य: १० ॥ य- तो वारणम् । यथायवेभ्यो गां वारय ति ११ ॥ इतिमुग्धबोधटीका ॥

अपान: । पुं । गुदस्थवायो । नाभेरध स्ताद्गमनवति मलापनयनव्यापारे वपाय्वादिस्थानवर्त्तिनिवायो ॥ य था । अधोनयत्यपानस्तु आहारञ्च क्रमाभ्रध: । मूत्रशुक्रवहोवायुरपान

लेसर्न्वोस्तित: । कृकाटिकापृष्ठपार्श्व पायूपस्थस्त्ति वायु: ॥ न । गुदे । अपसरणेनानिस्यनेन । इत्यश्वेति शुक्र ।

अपान्तरतमा: । पुं । वेदाचार्येपुरा णर्षिविशेषे ॥ य:कश्चिद्द्वापरयो: सन्धौ विष्णुनियोगात् कृष्णद्वैपायन: सम्बभूवेतिस्मृतौ प्रसिद्धम् ॥

अपान्नपा॰ । पुं । एतन्नामधेयेदेवे ॥

अपाप: । त्रि । पापशून्ये । निष्पापे ॥

अपापविद्ध: । त्रि । धर्माधर्मवर्जिते ॥ न पापविद्ध. ॥

अपामार्ग: । पुं । प्रत्यक्पर्ण्याम् ॥ अपमार्जन्त्यनेन अपमृज्यते ऽनेनव्या ध्यादिरितिवा । मृजूष॰ । इत्यस्वे त्रियत्न । निष्ठायामनिट्त्वात्कुत्त्वम् उपसर्गस्य घञीतिदीर्घ. ॥ अपकृष्टप्रासमन्तान्मार्गोऽस्येतिवा ॥ अपामार्ग:सरस्तीक्ष्णोदीपनस्तिक्तक: कटु: । पाचनोनावनच्छर्दिकफमेदोनिलापह: । निहन्तिहृद्रुसिध्मार्श: कंडूशूलोदरापची: । अपामार्गोऽरुणोवातविष्टंभीकफकृद्धिम: । रूक्ष: पूर्वगुणैर्न्यून: कथितोगुणवेदिभि: । अपामार्गफलंस्वादुरसे पाकेचदुर्जरम् । विष्टंभिवातलंरूक्षंरक्तपित्तप्रसादन मितिभावप्रकाश: ॥

अपाम्पति: । पुं । समुद्रे । वरुणे ॥ अपांपति: । तत्पुरुषे कृतिवहुलमित्यलुक ॥

अपाम्पित्तम् । न । अग्नौ ॥ अपांपित्तमिवदाहकत्वात् । अलुक् ॥

अपाय: । पुं । विश्लेषे ॥ अपाये ॥ नाशे ॥ अपगमे ॥

अपार: । त्रि । उत्तरावधिवर्जिते ॥ अपार: संसारात्कूपार: ॥ अनन्तमहिमनि ॥ नविद्यते पार उत्तरावधिर्यस्य ॥ न । अवारे । नद्यादेरर्वाचिपारे ॥

अपार्थ । त्रि । अर्थशून्ये ॥

अपार्थकम । न । इमंलक्षयतिगोतम: । पौर्वापर्यायोगादप्रतिसम्बद्धार्थमपार्थकम ॥ ५ । ५३ । पौर्वापर्यंकार्यकारणभाव स्तस्यायोगादसम्भवात्शाब्दबोधजनकाकाङ्क्षाज्ञानाद्यभावादिति फलितार्थ: । अप्रतिसंवद्धो ऽसम्बद्धोर्थ: प्रयोजनंशाब्दबोधरूपं यत्र । यद्यपि दशदाडिमानि षडपूपा: कुण्डमजाजिनमित्यादाववान्तरवाक्यादर्थबोधसत्वादव्याप्तिरतिव्याप्तिश्चनिरर्थके । तथाप्यभिमतवाक्यार्थबोधानुकूलाकाङ्क्षादिशून्यबोधजनकत्त्वं तत्। अविज्ञातार्थे तुस्वस्य बोधोभवत्येवेति नातिव्याप्ति: । उदा

इत्यन्तु । अयोग्यानासन्नानाकांक्ष वाक्यम् ॥ ५३ ॥ अनर्थके ॥ व्यर्थे ॥

अपावृत । त्रि । पिहिते ॥ अप्रतिबद्धे । स्वतन्त्रे ॥ उद्घाटिते ॥ अपगतमावृतमावरणमस्य ॥

अपावृत्तम् । त्रि । लुठिते । परावृत्ते ॥

अपाश्रयः । पुं । चन्द्रातपे । प्रांगनावरणे ॥ त्रि । आश्रयशून्ये ॥ अधीने ॥

अपासनम् । न । मारणे ॥ असुक्षेपे । भावेल्युट ॥

अपास्तः । त्रि । निरस्ते ॥ अवधीरिते ॥

अपि । ा । सम्भावनायाम् ॥ प्रश्ने ॥ शङ्कायाम ॥ गर्हायाम ॥ समुच्चये ॥ युक्तपदार्थे ॥ क्रियाकारक्रियायाम । कामकारक्रियासु ॥ अनुज्ञायाम् ॥ अवधारणे ॥ पुनरर्थे ॥ नपियति । पिगतौ । क्विप् । आगमशास्त्रस्यानित्यत्वान्नतुक ॥

अपिगीर्णम् । त्रि । ईलिते । स्तुते । वर्णिते । गीर्णे ॥ अपिगीर्यतेस्म । गनिगरणे । क्तः । निष्ठातस्यनः ॥

अपितु । ा । किन्त्वर्थे । यद्यर्थे । यद्यपि ॥

अपिधानम् । न । आच्छादने ॥ अपिपूर्वकाड्डुधाञोल्युट् ॥ त्रि । पिधानरहिते ॥

अपिनद्धः । त्रि । परिहिते वस्त्रादौ । पिनद्धे ॥ अपिनह्यतेस्म । णहबन्धने । क्तः ॥

अपिहित' । त्रि । छादिते ॥ अपिधीयतेस्म । डुधाञ्० । क्तः । दधातेर्हिः ॥

अपीच्यम् । त्रि । अतिसुन्दरे ॥

अपीतिः । स्त्री । प्रलये ॥ अप्यये । एकीभावे ॥

अपीनसम् । न । पीनसरोगे ॥ इतिरभसः ॥ त्रि । तद्रहिते ॥

अपुच्छा । स्त्री । शिंशपावृक्षे ॥ त्रि । पुच्छहीने ॥

अपुनरावृत्तिः । स्त्री । मुक्तौ । कैवल्ये ॥

अपुनर्भव. । पुं । मुक्तौ ॥ त्रि । मुक्ते ॥ पुनर्जन्माभावे ॥ यथाहचरकः । हेतौलिङ्गे प्रशमनेरोगाणामपुनर्भवे । ज्ञानंचतुर्विधंयस्यसराजार्होभिषक्तमइति ॥ नपुनर्भवोयस्यसः ॥

अपुष्पफलदः । पुं । पनसोदुम्बरादिवनस्पतौ ॥

अपूप' । पुं । पिष्टके ॥ गोधूमे ॥ नपूयते । पूयीविशरणे । बाहुलकात्पः । वलिलोप. ॥ यद्वा । पवनं पूः । पूञ् पवने । संपदादिक्विप् । अपूर्न्पाति पिबतिवा ॥ पा० । आतोनुपेतिक. ॥

अपूपीयम् । त्रि । अपूपार्थकपिष्टादौ ॥ अपूपेभ्योहितम् । विभाषाहविरपूपादिभ्यइतिछः ॥

अपूप्यम् । त्रि । अपूपीये । गोधूमचूर्णे ॥

अपूपेभ्योहितम् । यत् ॥

अपूरणी । स्त्री । शाल्मलितरौ ॥

अपूर्वः । त्रि । अदृष्टपूर्वे ॥ अविदिते ॥ आश्चर्ये ॥ यथा । अपूर्वयंहरेर्माया त्रिगुणारज्जुरूपिणी । ययामुक्तोनच लतिवद्धोधावतिधावति ॥ पुं । पूर्वभा विकारणसंस्पर्शशून्ये अकार्ये परमा त्मनि ॥ नविद्यते पूर्वंकारणं यस्यसः ॥ न । यागाद्यान्तरव्यापारे ॥ धात्वर्था तिरिक्तेकालान्तरभाविकस्यफलस्यसा धने ॥ अत्रपञ्चद्वयंमीमांसकानाम् । तदानीमेवस्वरूपत्वेनोत्पन्नंफलमेवा ऽपूर्वम् । कालान्तरफलोत्पादिकाक र्मशक्तिर्वेति ॥ तदुक्तम् । यागादेव फलंतद्धिशक्तिद्वारेण सिध्यति । सूक्ष्मशक्त्यात्मकंवापिफलमेवोपजायते ॥ इति ॥

अपूर्वता । स्त्री । अपूर्वत्वे ॥ भावेतल् ॥

अपूर्वत्वम् । न । अपूर्वतायाम् ॥ षड्वि धलिंगेषुतृतीयेलिङ्गे ॥ प्रकरणप्रति पाद्यस्य प्रमाणान्तरेणाविषयत्वम- पूर्वत्वम् । यथाछान्दोग्येषष्ठप्रपाठ केअद्वितीयवस्तुनोमानान्तरेणावि- षयीकरणम् ॥ भावेत्वः ॥

अपूर्वप्रवेशः । पुं । प्रथमप्रवेशे । नवंगृहं निर्मायतत्रप्रथमप्रवेशे ॥

अपूर्वविधिः । पुं । प्रमाणान्तरेणाऽप्राप्त स्य प्रापके विधौ ॥ यथा यजेतस्वर्ग कामइत्यादिः । स्वर्गार्थकयागस्य प्र माणान्तरेणाप्राप्तस्यानेन विधानात् ॥ अपूर्वस्यासौविधिश्च ॥

अपेक्षणीयः । त्रि । अपेक्षायोग्ये । अ पेक्षितव्ये ॥

अपेक्षा । स्त्री । आकांक्षायाम् ॥ कार्य निमित्तयोरन्योन्याभिसम्बन्धे ॥ अ पेक्षणम् । ईक्ष० । गुरोश्चहलःइत्यः । टाप् ॥

अपेक्षाबुद्धिः । स्त्री । अनेकैकत्वविषयक बुद्धौ । नानैकत्वावगाहिबुद्धौ । अय मेकःअयमेक इत्याकारबुद्धौ ॥ इति कारिकावली ॥

अपेक्षितः । त्रि । ईप्सिते ॥

अपेतः । त्रि । रहिते ॥ अपदस्ते ॥ अप सृतः ॥

अपेतकृत्यः । त्रि । कृत्यशून्ये । कृतकृत्ये ॥

अपेतराक्षसी । स्त्री । तुलस्याम् । वृ न्दादृष्टे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अपेताखिलचापलः । त्रि । नियतेन्द्रिये ॥

अपोगण्डः । त्रि । वलिभे ॥ अतिभीरौ ॥ विकलाङ्गे ॥ शिशौ ॥ पवते पुना तिवा । पूङः पूञोवा विच् । पोगण्ड एकदेशोऽस्य । नपोगण्डः ॥

अपोढः । त्रि । निरस्ते ॥ वाधिते ॥ य था । प्रातुर्मेयः परोक्षात्मासोविद्या

कल्पितः स्मृतः । अपोढेविद्ययात स्मिन् रज्वांसर्पइवाद्वयः । इत्युपदेश साहस्र्यां १४ प्रकरणे १७ पद्यम् ॥

अपोढकर्म्मा । त्रि । त्यक्तव्यापारे ॥

अपोदका । स्त्री । उपोदिकायाम् । शाकान्तरे ॥ अपगतमुदकमस्याः ॥

अपोनपात् । पुं । एतन्नामधेयेदेवता विशेषे ॥

अपोहः । पुं । तर्कनिराकरणे । वितर्का भावे । शुश्रूषाद्यष्टधाधीगुणान्तर्गत षष्ठगुणे ॥ त्यागे ॥ अतद्व्यावृत्तौ ॥ अपगतऊहः ॥ अपोहनम् । ऊह० । घञ् ॥

अपोहनम् । न । कामक्रोधशोकादिव्या कुलचेतसां स्मृतिज्ञानयोरपाये ॥ अपोहे ॥

अपोर्णितम् । त्रि । अनावृते ॥

अप्तः । न । यज्ञकार्ये ॥

अप्तुः । पुं । शरीरे । अभिलषितार्थे ॥ अंगे ॥ आप्नोति । आप्तृव्याप्तौ । आ प्नोतेर्ह्रस्वश्चेतितुः ॥

अप्नः । न । अम्बुनि ॥ आप्नोति । आप्तृ० । आपःकर्माख्यायाङ्ह्रस्वोनुट् चवेत्य सुन् ॥ वैदिकोयमितिकश्चित् ॥

अप्पतिः । पुं । वरुणे ॥ अम्बुधौ ॥ अपां पतिः ॥

अप्पित्तम् । न । अग्नौ ॥ चित्रकौषधौ ॥ अपांपित्तमिवदाहकत्वात् ॥

अप्ययः । पुं । परब्रह्मणि ॥ अपियन्ति लीयन्तेजगन्त्यस्मिन् । अपपूर्वादि णो ऽधिकरणे ऽच्प्रत्ययः ॥ अपाये ॥ अपीतौ । लये ॥ अप्येत्यस्मिन् । इण् । इगतौवा । एरच् ॥

अप्रकाण्डः । पुं । झिण्टिकादौ । स्तम्बे । गुल्मे ॥ नप्रकाण्डोऽस्य ॥

अप्रकाशः । पुं । सत्यप्युपदेशादौबो धकारणेसर्वथाबोधायोग्ये ॥ प्रकाशा भावे । जनान्तिके ॥ गोपने ॥ ३ प्र काशाभाववति ॥ नप्रकाश' ॥

अप्रखरः । त्रि । अतीक्ष्णे । प्राखर्यरहि ते ॥

अप्रगुणम् । त्रि । व्याकुले ॥ अप्रकृष्टगुणे ॥ भिन्नःप्रगुणात् ॥

अप्रणयः । पुं । अप्रीतौ ॥ प्रणयनम प्रण यः । नप्रणयः ॥

अप्रतर्क्यः । त्रि । मनोऽगोचरे ॥ अनु मानाविषयेश्रुत्यैकसमधिगम्ये पर मेश्वरे ॥

अप्रतिकरः । त्रि । विश्वस्ते । विश्वास पात्रे ॥ इतिजटाधरः ॥

अप्रतिघः । त्रि । अप्रतिबद्धे ॥ नप्रतिघः ॥

अप्रतिपक्ष । त्रि । अप्रतियोगिनि ॥ वि पक्षशून्ये ॥ नास्तिप्रतिपक्षोयस्यसः ॥

अप्रतिपत्तिः । स्त्री । प्रकृताज्ञाने ॥

अप्रतिबद्ध. । त्रि । उद्दामे ॥ नप्रतिबद्धः ॥

अप्रतिभः । त्रि । अधृष्टे । लज्जिते । अप्रत्युत्पन्नमतौ । अप्रगल्भे ॥ नास्ति प्रतिभा नवनवोन्मेष शालिनी प्रज्ञा यस्यसः ॥

अप्रतिभा । स्त्री । निग्रहस्थानविशेषे ॥ यथा । उत्तरस्याप्रतिपत्तिरप्रतिभेतिगोतमः । ५ । ६१ । उत्तरार्हे परोक्तं बुद्धापियत्रोत्तरसमये उत्तरंन प्रतिपद्यते तत्राऽप्रतिभानिग्रहस्थानम् ॥

अप्रतिमः । त्रि । असदृशे ॥ नविद्यते प्रतिमाउपमायस्यसः ॥

अप्रतिरथम् । न । यात्रायाम् ॥ मङ्गले ॥ सामवेदे ॥ इतित्रिकाण्डशेषो भूरिप्रयोगश्चेति शब्दकल्पद्रुमेराधाकान्तः ॥ पुं । भटे ॥ हरौ ॥ नविद्यते प्रतिरथः प्रतिपक्षोऽस्य ॥ तुल्ययोद्धृरहिते इतिपुराणम् ॥

अप्रतिरूपकथा । स्त्री । अप्रतिवचनायांवाचि । सङ्कीर्णकायाम् ॥ इतित्रिकाण्डशेष. ॥

अप्रतिष्ठः । त्रि । अप्रतिष्ठिते । प्रतिष्ठारहिते ॥ नास्तिप्रतिष्ठायस्यसः ॥

अप्रतिष्ठानम् । न । अस्थैर्ये ॥

अप्रतिष्ठितः । त्रि । अप्रतिष्ठे । प्रतिष्ठारहिते ॥ नप्रतिष्ठितः ॥

अप्रतिसम्बद्धः । त्रि । असम्बद्धे ॥

अप्रतिहतः । त्रि । विघ्नैरनभिभूते ॥

अप्रत्यक्षम् । न । प्रत्यक्षभिन्ने । प्रत्यक्षाभावे ॥ त्रि । प्रत्यक्षशून्ये । अतीन्द्रिये ॥ भिन्नंप्रत्यक्षात् ॥

अप्रत्ययः । पुं । अविधीयमाने ॥ अविश्वासे ॥ प्रतीयते विधीयते इतिप्रत्ययः । न प्रत्ययः ॥ नास्तिप्रत्ययो यस्यवा ॥

अप्रधानम् । न । अप्राधान्ये । अंगभूते । गौणे ॥ प्रधानादन्यत् ॥ वाच्यलिङ्गोप्ययम् ॥

अप्रधृष्यः । त्रि । अधाल्ये ॥ नप्रधृष्यः ॥

अप्रमत्तः । त्रि । प्रमादवर्जिते । सावधाने ॥ नप्रमत्तः । नप्रमाद्यतिवा । मदी० । क्तः ॥

अप्रमेयः । त्रि । अचिंत्यप्रभावे ॥ इदमित्थमितिपरिच्छेत्तुमशक्ये । स्वप्रकाशचैतन्यरूपे । फलाव्याप्ये । अनवगम्यमानप्रमेये ॥ तथाहि । परमेश्वरो हि शब्दादिरहितत्वा अप्रत्यक्षः । नाप्यनुमानविषयो व्याप्तिलिंगाद्यभावात् । नाप्युपमानसिद्धो निर्विभागत्वेनसादृश्याभावात् । नाप्यर्थापत्तिग्राह्यः तद्विनानुपपद्यमानस्या सम्भवात । नाप्यभावगोचरो भावरूपत्वाद्भावसाक्षिकत्वाच्च । नापिशास्त्रप्र

माणवेद्यः प्रमाणजन्यातिशयाभावात् । यद्येवंशास्त्रयोनित्वंकथ मुच्यते । प्रमाणादिसाक्षित्वेन प्रकाशस्वरूपस्य प्रमाणाविषयत्वे अध्यस्तात् द्रूपनिवर्त्तकत्वेन शास्त्रप्रमाणकत्वम् इत्यमप्रमेयोभवतीश्वर' ॥ प्रमातुंयोग्यः प्रमेयः । न प्रमेयःअप्रमेयः ॥

अप्रगल्भम् । न । अविलम्बे । शीघ्रे ॥ त्रि । तद्वति ॥

अप्रशस्तम् । त्रि । अश्रेष्ठे । अविहिते ॥ यथा । अप्रशस्तंनिशिस्नानं राहोरन्यत्रदर्शनादितिपराशरः ॥

अप्रसङ्गः । पुं । अव्यतिकरे ॥

अप्रसन्नम् । त्रि । अनच्छे ॥ अतुष्टे ॥

अप्रस्तुत' । त्रि । अनुपस्थिते । प्रकरणप्राप्ते ॥ नप्रस्तुतः ॥

अप्रस्तुतप्रशंसा । स्त्री । अर्थालंकारविशेषे । अप्राकरणिकस्यार्थस्याभिधानेन प्राकरणिकस्याक्षेपे ॥ यथा । अप्रस्तुतप्रशंसा सायाचैव प्रस्तुताश्रया । साच । कार्येनिमित्ते सामान्ये विशेषे प्रस्तुतेसति । तदन्यस्यवचस्तुल्ये तुल्यस्येतिचपञ्चधा ॥ तदन्यस्यकारणादेः । क्रमेणोदाहरणम ॥ याताः किन्नमिलन्ति सुंदरिपुन श्चिन्तात्वया मत्कृते नोकार्यानितरां कृशासि कथयत्येवं सवाष्पेमयि । लज्जाम न्थरतारकेण निपतत्पीताश्रुणा चक्षुषा दृष्ट्वामां हसितेनभाविमरणोत्साहस्तयासूचितः ॥ अत्रप्रस्थानात् किमिति निवृत्तोसीतिकार्ये पृष्टेकारणमभिहितम् ॥ १ ॥ राजन् राजसुता नपाठयतिमां देव्योपितूष्णीं स्थिताः । कुब्जेभोजयमां कुमारसचिवैर्नाद्यापि किंभुज्यते । इत्थंनाथ शुकस्तवारिभवनेमुक्तो ध्वगैःपञ्जराच्चित्रस्थानवलोक्य शून्यवलभावे कैकमाभाषते ॥ अत्रप्रस्थानोद्यतंभवन्तं ज्ञात्वा सहसैवत्वदरयः पलाय्य गताइतिकारणे प्रस्तुतेकार्य्य मुक्तम् ॥ २ ॥ एतत्तस्य मुखात् कियत्कमलिनीपत्रेकणं वारिणो यन्मुक्तामणि रित्यमंस्तसजडःशृण्वन् यदस्मादपि । अङ्गुल्यग्रलघुक्रिया प्रविलयि न्यादीयमानेशनैः कुत्रोड्डीय गतो ममेत्यनुदिनं निद्रातिनान्तः शुचा ॥ अत्रास्थाने जडानांममत्व संभावना भवतीति सामान्ये प्रस्तुतेविशेष कथितः ॥ ३ ॥ सुहृद्वधूवाष्प जलप्रमार्जनं करोतिवैरप्रतियातनेनयः । स एवपूज्यःसपुमान् सनीतिमान् सुजीवनं तस्य सभाजनं श्रिय. ॥ अत्र कृष्णंनिहत्य नरकासुरवधूनां यदि दुःखंप्रशमयसि तत्त्वमेवश्लाघ्यइति-

विशेषे प्रकृते सामान्यमुदितम् । ४ । तुल्ये प्रस्तुते तुल्याभिधानेत्रयः प्रकाराः । श्लेषः समासोक्तिः सादृश्यमात्रं वा । तुल्यात्तुल्यस्य ह्याक्षेपे हेतुः । क्रमेणोदाहरणम् । पुंस्त्वादपि प्रविचलेद्यदि यद्यधोपि यायाद्यदि प्रणयनेन महानपि स्यात् । अभ्युद्धरेत्तदपि विश्वमितीदृशीयं केनापि दिक्प्रकटिता पुरुषोत्तमेन ॥ येनास्यभ्युदितेन चन्द्रगमितःक्लान्तिं रवैा तत्र ते युज्येत प्रतिकर्तुमेव न पुनस्तस्यैव पादग्रहः । क्षीणो नैतदनुष्ठितं यदि ततः किं लज्जसे नो मनागस्त्वेवं जडधामता तु भवतो यद्व्योम्नि विस्फूर्जसे ॥ आदाय वारि परितः सरितां मुखेभ्यः किन्तावदर्जितमनेन दुरर्णवेन । क्षारीकृतञ्च वडवादहने हुतञ्च पातालकुक्षिकुहरे विनिवेशितञ्च ॥ इयञ्च काचिद्वाच्ये प्रतीयमानार्थानध्यारोपेणैव भवति । यथा । अध्वेरन्तः स्थगितभुवनाभोगपातालकुक्षेः पोतोपाया इह हि बहवो लंघनेपि क्षमन्ते । आहो रिक्तः कथमपि भवेदेष दैवात्तदानीं को नाम स्यादवटकुहरालोकनेप्यस्य कल्पः ॥ काचिदध्यारोपेणैव यथा । कस्त्वं भोः कथयामि दैवहतकं मां विद्धि शाखोटकं वैराग्यादिव वक्षि साधु विदितं कस्मादिदं कथ्यते । वामेनात्र वटस्तमध्वगजनः सर्वात्मना सेवते न च्छायापि परोपकारकरणी मार्गस्थितस्यापि मे ॥ क्वचित्त्वशेषाध्यारोपेण । यथा । सोपूर्वो रसनाविपर्ययविधिस्तत्कर्णयोश्चापलं दृष्टिः सा मदविस्मृतस्वपरदिक् किंभूयसोक्तेन वा । सर्वं विस्मृतवानसि भ्रमर हे यद्वारणोप्यद्य सा वन्तःशून्यकरो निषेव्यत इति भ्रातः क एष ग्रहः ॥ अत्र रसनाविपर्यासः शून्यकरत्वञ्च भ्रमरस्यासेवने न हेतुः कर्णचापलन्तु हेतुः । मदः प्रच्युतसेवनेनिमित्तम् । इति काव्यप्रकाशः ॥

**अप्रहतम् ।** त्रि । अनाहते । हलाद्यकृष्टभूमौ । खिले । न प्रहन्यतेस्म । हन हिंसागत्योः । कर्मणि क्तः ॥

**अप्राकृतः ।** त्रि । अलौके । सामान्ये ॥

**अप्राग्र्यम् ।** त्रि । अप्रधाने । प्राग्र्याद्भिन्नम् ॥

**अप्राचीनम् ।** त्रि । नव्ये ॥ प्राचीतरदिग्भवे ॥ न प्राचीनम् ॥

**अप्राप्तः ।** त्रि । अलब्धे । न प्राप्तः ॥

**अप्राप्तकालम् ।** न । सभायोभव्यामोहादिनाव्यस्ताऽभिधाने ॥ यथा-हगोतमः । अवयवविपर्यासवचनमप्राप्तकालमिति । ५ । ५४ । अवय

अप्राप्त

वस्य वर्थैकदेशस्य विपर्यासोवैपरी त्यम्। तथाच समयवन्धविषयीभूत कथाक्रमविपरीतक्रमेणाभिधानं प र्यवसन्नम्। तत्रायंक्रमः। वादिना साधनमुक्ता सामान्यतो हेत्वाभासा उद्धरणीया इत्येकः पादः। प्रतिवा दिनश्च तथोपालम्भो द्वितीयः पादः। प्रतिवादिनः स्वपक्षसाधनं तत्र हे त्वाभासोद्धरणञ्चेतितृतीयः पादः। जयपराजयव्यवस्थाचतुर्थः पादः। ए वमतिवाहेत्वादीनांक्रमः। तत्रस भाषोभव्यामोक्षादिनाव्यस्य त्वाभि धानमप्राप्तकालमिति। त्रि। अल व्धसमये। अप्राप्तःकालोयस्य॥

अप्राप्तव्यवहारः। त्रि। व्यवहारानभि ज्ञे। अप्राप्तवयस्के॥ यथा। अप्राप्त व्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम्। न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु प्रोषितानांतथैव- च॥ इतिदायतत्त्वे कात्यायनः॥ कि ञ्च। गर्भस्थैःसदृशोज्ञेयअष्टमात् व त्सराच्छिशुः। बालआषोडशाद्वर्षा तपौगण्डोपिनिगद्यते॥ परतो व्य वहारज्ञः स्वतन्त्र पितरावृते। इति व्यवहारतत्त्वेनारदः॥

अप्राप्तिः। स्त्री। अलाभे॥ द्वादशभ वने॥

अप्रामाणिकः। त्रि। प्रमाणानभिज्ञे॥

अप्सर

प्रमाणसिद्धे॥

अप्रामाण्यम्। न। प्रमाणाभावे॥

अप्रियम्। त्रि। अहिते॥ अनिष्टवस्तु नि॥ नप्रियम्॥

अप्रिया। स्त्री। मद्गुरसमेमत्स्ये। शृङ्गी मत्स्ये॥

अप्रीतिः। स्त्री। दुःखे॥

अप्रीत्यात्मकः। पुं। रजोगुणे॥

अप्सरा:। स्त्री। उर्वश्यादिस्वर्वेश्या याम्। अद्भ्यः सरति। सरतेरप्पूर्वा त् अप्सराइत्यसिः। स्त्रियांबहुष्व प्सरसःस्यादेकत्वेऽप्सराअपीति श ब्दार्णवः। एकाप्सरःप्रार्थितयोर्विवा द इतिरघुः॥

अप्सरसः। स्त्री। भूम्नि। उर्वश्यादि स्वर्वेश्यायाम्॥ यथा। उर्वशीमेन कारंभाघृताची पुञ्जिकस्थली। सु केशीमञ्जुघोषाचमहारङ्गवतीति- तादृति॥ अद्भ्यःसरन्ति। गतौ। सर तेरप्पूर्वादप्सरा इत्यसिः। भूम्नीति प्रायोवादः। अनचिचेतिद्वित्वे अप्स रा इतिभाष्यप्रयोगात्॥ वह्निपुरा णेगणभेदनामाध्यायेद्वादशाप्सरसः प्रोक्ताःयथा। उर्वशीमेनकारम्भामि श्रकेशीह्यलम्बुषा। विश्वाचीचघृता चीचपञ्चचूडातिलोत्तमा॥ भानुम त्यवलावर्णाद्वादशाप्सरसः शुभा-

इति ॥

अफल:। पुं। झाबुके॥ इतिशब्दचन्द्रिका॥ त्रि। अवकेशिनि॥ निष्फले॥ नफलान्यस्य॥

अफलप्रेप्सु:। त्रि। फलाभिलाषरहिते॥

अफला। स्त्री। घृतकुमार्याम्॥ भूम्यामलक्याम्॥ इतिशब्दचन्द्रिका॥

अफेनम्। न। अहिफेने॥ तच्चतुर्विधम्। एकंश्वेतवर्णम् अन्नजीर्णताकारकत्वान्नाम जारणम्। द्वितीयं कृष्णवर्णम् मृत्युकारकत्वान्नाममारणम्। तृतीयम पीतवर्णम् वय:स्तम्भनकारकत्वान्नामधारणम्। चतुर्थंकर्बुरवर्णम् मलसारकत्वान्नाम सारणम्॥ इतिराजनिर्घण्ट:॥

अबद्धम। त्रि। समुदायार्थ शून्यवाक्ये॥ यथा। जरद्गव: कम्बलपादुकाभ्यां द्वारिस्थितोगायतिमंगलानि। तं ब्राह्मणीपृच्छतिपुत्रकामाराजन् कुमार्यांलशुनस्यकोर्घ:। इत्याद्यस्यविषय:॥ अबन्धने॥ नबध्यतेस्म। बन्ध बन्धने। क्त:॥

अबद्धमुख:। त्रि। अप्रियवादिनि। मुखरे॥ न बद्धंनियंत्रितं मुखमस्य॥

अबद्धम्। त्रि। अवधार्थे॥ अनर्थकवचसि॥ इतिमेदिनीहेमचन्द्रौ॥

अबन्ध्य:। त्रि। फलेग्रहौ। सफले॥ न

न्धेमाधु:। तच्चसाधुरितिय:। नबन्ध्य:॥

अबल:। पुं। वरुणद्रौ॥ त्रि। बलशून्ये। दुर्बले॥ नास्तिबलं यस्य॥

अबला। स्त्री। वनितायाम्॥ यथा। हृदये वहसि गिरीन्द्रौत्रिभुवनजयिनीकटाक्षेण। अबलास्त्वंयदि मन्येकेवलबन्तोवयंनजानीमइति॥ अल्पंबलमस्या:। अल्पार्थेनञ्॥ पराशक्तौ॥ नविद्यते बलंयस्या:सकाशादन्यस्य॥

अबलिमा। पुं। अबलभावे। देह. रोगादिनिमित्ते जरादिनिमित्तेवाकृशीभावे॥

अबाध:। त्रि। निरर्गले। अनिवारिते॥ नबाधा अस्य॥

अबाध्य:। त्रि। सत्ये॥ ज्ञानान्तरेण वाधायोग्ये॥

अबिन्धन:। पुं। वाडवाग्नौ॥ विद्युति॥ आपइन्धनंदाह्यमस्य॥

अबोध:। पुं। अज्ञाने॥ त्रि। बोधशून्ये॥

अबोधविक्लव:। त्रि। अज्ञानोपहते॥ अबोधेनविक्लव.

अब्ज:। पुं। न। शङ्खे॥ पुं। निचुले॥ धन्वंतरौ॥ हिमकिरणे॥ न। पद्मे॥ संख्यान्तरे। दशार्बुदे। शतकोटिसंख्यायाम्॥ १०००००००००॥ न र्कान्तरे। अब्जोजात:। पञ्चम्यामजा

ताविति ङः ॥ अप्सु जायते । जनीप्रादुर्भावे । सप्तम्यामिति डो वा ॥
अब्जकर्णिका । स्त्री । संवर्त्तिकायाम् ॥
अब्जजः । पुं । ब्रह्मणि ॥ योगान्तरे ॥ यथा । स्वराशौ स्वांशगे सौम्ये लग्नस्येवाभृगो. सुते । जीवेवाऽब्जयोगोयं यातुः शत्रुविनाशकृदिति ॥
अब्जभोगः । पुं । वराटके । पद्मकन्दे ॥
अब्जयोनिः । पुं । धातरि । ब्रह्मणि ॥ अब्जं योनिरुत्पत्तिस्थानमस्य । विष्णोर्नाभिकमलजत्वात् ॥
अब्जवाहनः । पुं । शिवे ॥ इति त्रिकाण्डशेषः ॥ स्त्री । लक्ष्म्याम् ॥
अब्जः । न । रूपे ॥ आप्नोति । आप्लृ० । रूपेजुट् चेत्यसुन् ह्रस्वश्च धातोः प्रत्ययस्य जुट् च । अब्जसी अब्जांसि ॥
अब्जहस्तः । पुं । दिवाकरे ॥
अब्जिनी । स्त्री । नलिन्याम ॥ पद्मसमूहे ॥ पद्मलतायाम् ॥ अब्जानि सन्त्यस्याम् । पुष्करादिभ्यो देशइतीनि. ॥
अब्जिनीपतिः । पुं । सूर्ये ॥
अब्दः । पुं । संवत्सरे ॥ स च सावन सौरचान्द्र नाक्षत्र बार्हस्पत्य भेदैरिति पञ्चविध ॥ वारिवाहे ॥ मुस्तके ॥ शैलभेदे ॥ आप्यते । आप्लृ व्याप्तौ । अब्दादयश्चेतिदन् ह्रस्वत्वञ्च ॥ अवतिवा । अव० । पूर्ववत्साधुः ॥ अपो ददाति । डुदाञ० । आतोनुपेति को वा ॥
अब्दपर्य्यय. । पुं । समासे वर्षे द्वितीयवर्षस्यप्रवृत्तौ ॥
अब्दसारः । पुं । कर्पूरप्रभेदे ॥
अब्दुर्गम् । न । जलदुर्गे । अगाधोदकेन सर्वतः परिवृते राज्ञो वासपुरे ॥
अब्धिः । पुं । समुद्रे ॥ आपोधीयन्तेऽत्र । कर्मण्यधिकरणे चेति धाञः किः ॥ चतुर्थाङ्के ॥ सरसि ॥
अब्धिकफः । पुं । सिन्धुफेने । हिण्डीरे ॥ इत्यमरः ॥ अब्धे. कफइव ॥
अब्धिजः । पुं । विधौ ॥ अब्धेर्जातः । जनी० । डः ॥
अब्धिद्वीपा । स्त्री । पृथिव्याम् ॥ इति त्रिकाण्डशेषः ॥
अब्धिनगरी । स्त्री । कृष्णपुरि । द्वारावत्याम् ॥ अब्धौ नगरी ॥
अब्धिनवनीतम् । न । शशिनि ॥ अब्धेर्नवनीतमिव ॥
अब्धिफेनः । पुं । समुद्रफेने ॥
अब्धिमण्डूकी । स्त्री । शुक्तौ । मुक्तास्फोटे । सीपी इतिभाषा ॥ इति हेमचन्द्रः ॥
अब्धिशयनः । पुं । नारायणे ॥ अब्धिः शयनमस्य ॥
अभ्युग्निः । पुं । वाडवानले ॥ इति हेमचन्द्रः ॥

अभ्युत्थम् । त्रि । समुद्रभवे ।

अभ्रक्षः । पुं । सर्पे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥ त्रि । जलाहारिणि ।

अभ्रमातङ्गः । पुं । ऐरावते । अभ्रमातङ्गे ।

अभ्रिः । स्त्री । तीक्ष्णाग्रलोहदण्डे । अभ्रिकाष्ठायसीद्वयात् सर्वेषस्या द्विजोत्तम इतिमनुः । अभ्रति । अभ्रगत्याम् । इन् ।

अब्रह्मचर्य्यकम् । न । मैथुने ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ।

अब्रह्मण्यम् । न । नाट्योक्त्या अवध्योक्तौ । वधंनार्हतीतिवचसि । ब्रह्मणिसाधुः । तत्रसाधुरितियत् । ततोनञ्समासः । ब्रह्मण्याभावे । त्रि । तद्वति ।

अब्राह्मणः । पुं । अब्राह्मणपदवाच्येषुषट्सु ॥ तेचोक्ताः शातातपेन यथा । अब्राह्मणास्तुषट्प्रोक्ता ऋषिणातत्त्ववेदिना । आद्योराजभृतस्तेषांद्वितीयः क्रयविक्रयी । तृतीयो बहुयाज्यः स्याच्चतुर्थोग्रामयाजकः । पञ्चमस्तु भृतस्तेषांग्रामस्यनगरस्यच । अनादित्यांतुयः पूर्वां सादित्यांचैवपश्चिमाम् । नोपासीतद्विजःसंध्यांसषष्ठोऽब्राह्मणःस्मृतः इति ।

अभक्ष्यः । त्रि । भक्षणायोग्येग्राम्यकुक्कुटादौ । यथा । अभक्ष्योग्राम्यकुक्कुटः अभक्ष्योग्राम्यशूकरइतिमहाभाष्यम् । एवञ्चग्राम्यकुक्कुटादौ विशेषनिषेधस्येतराभ्यनुज्ञाफलकतया आरण्यादिभक्षणे दोषाभावइति विवरणम् ।

अभद्रः । त्रि । दुःखरूपे ।

अभयम् । न । वीरणाङ्घ्रौ । उशीरे ॥ गर्भवासादि दुःखाभावे । मोक्षे ॥ अशेषभयनिवृत्तिसाधने आत्मदर्शने । त्रि । भयशून्ये । सर्वपरिग्रहशून्ये एकाकिनि । शास्त्रोपदिष्टेऽर्थेसन्देहंविनाऽनुष्ठाननिष्ठे । पुं । यात्रायोगान्तरे । यथा । उत्तमूलत्रिकोणेषु वर्त्तेतेगुरुभार्गवौ । अभयाभिधयोगोयंभयंकरविनाशनइति । अन्यत्र । यत्रैकादशगश्चन्द्रो भानुर्वाप्रबलःशुभः । अभयोनामयोगोयमरिभूतविनाशकृदिति । नभयमस्मात् । आत्मनि ॥ आत्मातिरिक्तस्यकस्यचिदभावात् ।

अभयडिण्डिमः । पुं । युद्धवाद्यविशेषे । रणतूर्य्ये । सङ्ग्रामपटहे ।

अभया । स्त्री । हरीतक्याम् । पञ्चरेखाभयाप्रोक्तेतिलक्षणलक्षितायाम् ॥ नेत्ररोगेप्रशस्तेयम् । नभयमस्याः ॥

अभवः । पुं । मोक्षे ।

अभव्यः । त्रि । अविनीते । निर्भाग्ये ।

नभख्य. ॥

अभाव: । पुं । मरणे ॥ असत्वे ॥ द्रव्यादिषट्कभिन्ने ॥ स चतुर्विधोयथा । प्रागभाव: प्रध्वंसाभाव: अन्यन्ताभाव अन्योन्याभावश्चेतितर्कसङ्ग्रह: । स संसर्गाभावोऽन्योन्या भावश्चेतिद्विविधोऽभाव इतिभाषापरिच्छेद: ॥ नाशे ॥ त्रि । प्रेमशून्ये ॥ भावहीने ॥ भाव स्थायिभावादिरिन्त्यालङ्कारिका. ॥

अभावसम्पत्ति. । स्त्री । वाहुल्येययोर्मिथ्यात्ववुद्धौ ॥

अभाषणम् । न । मौने ॥ नभाषणम् । भाषव्यक्तायांवाचि । भावेल्युट् ॥

अभि । १ । इत्थंभूतकथने ॥ आभिमुख्ये ॥ अभिलाषे ॥ वीप्सायाम् ॥ लक्षणे ॥

अभिक । त्रि । कामुके ॥ अभिकामयते । अनुकाभिकेन्ति साधु. ॥

अभिक्रम. । पुं । अभीतयोधादे र्युद्धेश त्रुसम्मुखगमने ॥ आरोहणे ॥ इति हेमचन्द्र: ॥ अभिक्रमणम् । क्रमु० । घञ् । नोदात्तेतिवृद्ध्यभाव: ॥ अभिक्रम्यतेकर्मणाप्रारभ्यतेइतिव्युत्पत्त्या कर्मारब्धफले । प्रारंभे ॥

अभिक्लृप्त: । त्रि । अभिसमर्थिते । अभिप्रकाशिते ॥

अभिख्या । स्त्री । अभिधाने ॥ शोभायाम् ॥ यशसि ॥ अभिख्यानम् । ख्याप्र

कथने चक्षिङादेशोवा । आतश्चोपसर्ग इत्यङ् ॥

अभिगत. । त्रि । सेविते ॥

अभिगन्तव्य । त्रि । अभित समासाद्ये ॥ यथाहरामंप्रतिवसिष्ठ ॥ सन्त सदाभिगन्तव्यायद्यप्युपदिशन्तिन । याह्निस्वैरकथास्तेषामुपदेशाभवन्तिता. इति ॥

अभिगीतम् । न । शोभनगीते ॥

अभिगृहीतपाणि । त्रि । संयोजितहस्ते ॥

अभिग्रह: । पुं । अभिग्रहणे ॥ अभियोगे । आभिमुख्येनोद्यमे ॥ गौरवे ॥ अभिग्रहणम् । ग्रहउपादाने । ग्रहवृद्रित्यप् ॥

अभिग्रहणम् । न । चौर्ये ॥ अभिहारे । आभिमुख्येनग्रहणे ॥ अभिग्रहेल्युट् ॥

अभिघात: । पुं । प्रहारे ॥ अभिहननम् । हन० । घञ् । हनस्तोचिण्णलो: । हो हन्तेरितिकुत्वम् ॥ क्रियाविशिष्टद्रव्यस्य द्रव्यान्तरेण संयोगविशेषो भिघात: । यथोद्यमितनिपतितमुसलस्योलूखलेन संयोग इतिव्याख्यातार: ॥ सम्बन्धे ॥

अभिघाति: । पुं । शत्रौ ॥ अभिघाते: क्तिच् बाहुलकात्क्तिर्वा ॥

अभिघाती । पुं । रिपौ ॥ अभिहन्तुंशी

ख: । सुपीतिणिनि: ॥

अभिघार: । पुं । अभित: सेचने ॥ घृते ॥ इतिराजनिर्घण्ट: ॥

अभिचर: । पुं । दासे ॥ इतिहेमचन्द्र: ॥

अभिचार: । पुं । हिंसाकर्मणि ॥ अथर्ववेदोक्तमन्त्रयन्त्रादिनिष्पादितेमारणोच्चाटनादिहिंसात्मकेकर्मणि इतिभरत: ॥ मारणादिफलकेतान्त्रिकप्रयोगविशेषे। सचषड्विध: । मारणमोहनस्तंभनविद्वेषणोच्चाटनवशीकरणभेदादितितन्त्रशास्त्रम् ॥ उपपातकविशेषोयम् । नाशोऽभिचारतोमास्तिधर्मिष्ठानां नसंशय: । अतश्च । ब्राह्मणंधार्मिकंभूपंवनितामास्तिकंनरम् । वदान्यंसदयनित्यमभिचारे न योजयेत् । अभिचरणम् । चरेर्घञ् ॥

अभिजन: । पुं । कुले ॥ ख्यातौ ॥ जन्मभूम्याम् । कुलध्वजे ॥ अभिजायतेऽस्मिन् । जनीप्रादुर्भावे । हलश्चेति घञ् । जनिवध्योश्चेति वृद्धिर्न । णिलोपस्यस्थानिवत्त्वाद्वा ॥ अभिजन्यते । कर्मणिघञ् वा । अभितोऽभिमुखोवाजनोजन्मात्र ॥ अभिजनोनाम यत्र पूर्वैरुषितमिति भाष्यम् ॥

अभिजनवान् । त्रि । कुलीने ॥ अभिजनोऽस्यास्ति । मतुप् । वत्वम ॥

अभिजात: । त्रि । कुलीने ॥ न्याय्ये ॥



पण्डिते ॥ यथा । नम्लेच्छितव्यंयज्ञादौ स्त्रीषुनाप्रकृतंवदेत् । सङ्कीर्णं नाभिजातेषुनाप्रबुद्धेषुसंस्कृत मिति ॥ अभिजायतेस्म । जनीप्रादुर्भावे । गत्यर्थेतिक्त: ॥

अभिजातकोविद: । पुं । जातककर्मकोविदे । जातकज्ञे ॥

अभिजित् । न । नक्षत्रविशेषे ॥ उत्तराषाढायाश्चतुर्थांशस्य श्रवणादिघटिकाचतुष्टयस्य च संज्ञा ऽभिजिदिति ॥ अत्र जातस्यफलं यथा । अतिसुललितकान्ति: सम्मत:सज्जनानांननु भवतिविनीतश्चारुकीर्त्ति:सुवेश: । द्विजवरसुरभक्तो व्यक्तवाङ्मानव:स्यादभिजितियदिसूतिर्भूपति: स्ववंशे ॥ इतिकोष्ठीप्रदीप: ॥ यात्रामुहूर्त्तान्तरे ॥ यथा । मध्यंव्योमप्रयातेस्फुरदनलनिभेकेशरे चार्कबिम्बे छायासाक्षीचकान्ता प्रचलतिपुरुषे यत्र तत्पादलग्ना । तावत्तौरेनंदृष्टि:कुजकृतमशुभं नैवऋक्षंनयोग: सन्मानारोग्यसम्पत् क्षितिमथयुवतींतत्रगन्तालभेत ॥ अभिमुखीभूयजयतिप्रतिपक्षाननेन । जि० । क्विप् ॥ कुतपकालइतिप्रसिद्धेदिवसस्याष्टमेमुहूर्त्ते ॥ यथा । अपराह्णेतु सम्प्राप्तेअभिजिद्रौहिणोदये । यदत्रदीयतेजन्तो

स्तद्वयमुदाहृतमितिमत्स्यपुराणम् ॥

अभिज्ञः । त्रि । निपुणे ॥ अभिजानाति । ज्ञा० । आतश्चोपसर्ग इतिकः ॥

अभिज्ञा । स्त्री । आद्यज्ञाने ॥ स्मृतौ ॥ अभिज्ञायते । ज्ञा० । आतश्चोपसर्ग इत्यङ् ॥ टाप् ॥

अभिज्ञानम् । न । चिह्ने ॥ ज्ञानभेदे ॥ अभिज्ञायतेऽनेनेतितथा । ज्ञा० । ल्युट् ॥

अभिज्ञापकः । त्रि । बोधके ॥

अभिडीनम् । न । पक्षिणा आभिमुख्येनपुन पुन पतने ॥

अभितप्तः । त्रि । पीडिते ॥ अभितस्तप्तः ॥

अभितः । अ । शीघ्रे ॥ साकल्ये ॥ सम्मुखे ॥ उभयत ॥ अन्तिके ॥ सर्वत. ॥ पर्यऽभिभ्यां चेत्यभिशब्दात्तसिल् ॥

अभिद्रवणम् । न । वेगेनगमने ॥

अभिद्रोहः । पुं । आक्रोशे ॥

अभिधर्षणम् । न । रक्षःपिशाचभूतादेरभिसङ्गे ॥ सर्वतोभावेनधर्षणे ॥

अभिधा । स्त्री । भट्टमतभावनायाम् ॥ आह्वये । वाचके ॥ न्यायमतेनशब्दशक्तौ ॥ मीमांसकमतेन विधिसमवेतविधिव्यापारीभूतपदार्थे ॥ अभिधानम् । डुधाञ्० । आतश्चेत्यङ् ॥

अभिधानम् । न । संज्ञायाम् ॥ कथने ॥ अभिधीयते अनेनवा । डुधाञ् धारणपोषणयोः । कर्मणि करणे वा ल्युट् ॥ शब्दकोषे ॥ यथा । कृततद्धितसमासाना मभिधानंनियामकम् ॥ इति वोपदेवः ॥

अभिधायक. । त्रि । वाचके ॥

अभिधेयम् । न । संज्ञायाम् ॥ त्रि । वाच्ये । शब्दप्रतिपाद्ये ॥ अभिधातुंशक्यम । डुधाञ्० । अचोयत् । ईद्यति । गुण. ॥

अभिध्या । स्त्री । ग्रहणेच्छायाम् ॥ परस्वविषये स्पृहायाम् ॥ परस्वेविषये चौर्यादिनालिप्सायामितिमुकुट ॥ परस्वविषयविषयिणीयायामिच्छायामितिरामाश्रम. ॥ विषयप्रार्थनाऽभिध्येतिस्वामी ॥ जिघृक्षामात्रमभिध्येतिकश्चित् ॥ स्वस्यवह्वृत्वसंकल्पे ॥ अभिध्यानम् । ध्यैआध्याने । आतश्चोपसर्गइत्यङ् । टाप् ॥

अभिनद्ध । त्रि । वद्धे । वंधा इति भाषा ॥ अभितोनद्धः ॥

अभिनन्दः । पुं । सुखलवे ॥ अत्रस्यपि सुखहेतुर्यः स्वकलत्रादिः सशुभोविषयः तद्गुणकथनादिप्रवर्त्तिकाधीवृत्तिर्भ्रान्तिरूपाअभिनंद सचतामसः ॥ अभितोनन्दः आनंदः ॥

अभिनन्दनः । पुं । बुद्धभेदे । चतुर्थस्तीर्थंकरजिनोयम् ॥ न । स्तवने ॥ त्रि । सर्वतो भावेनानन्दजनके ॥ अभितो नन्दनः ॥

अभिनयः । पुं । विवक्षितार्थप्रतिपत्त्यर्थं मसाधारणेशारीरव्यापारे । व्यञ्जके । अन्तर्गतभावस्यव्यञ्जके ऽङ्गचेष्टाविशेषे ॥ अभिनयश्चतुर्द्धा । वाचिकाङ्गिकाऽऽहार्यसात्विकभेदात् । विशेषो दृश्यरूपकादि ष्वनुसंधेयः ॥ अभिनयत्यर्थम् । पचाद्यच् ॥

अभिनवः । पुं । स्तोत्रे ॥ त्रि । नूतने ॥ अभिनूयते । णुस्तुतौ । ऋदोरप् ॥

अभिनवतामरसम् । न । तामरसाख्ये जगतीछन्दोभेदे । अभिनवतामरसं नजजाय इति लक्षणलक्षिते ॥

अभिनवोद्भिद् । पु । अङ्कुरे ॥ उद्भिनत्तिभुवम् । भिदिर् विदारणे । सत्सूद्विषेतिक्विप् । अभिनवश्चासावुद्भिच्च ॥

अभिनहनम् । न । वन्धने । मुसक इति भाषा ॥

अभिनिर्मुक्तः । पुं । सूर्यास्तकाले निद्राक्रान्ते ब्रह्मचार्यादौ ॥ अभिसर्वतःसायंतनेनकर्मणा निश्चयेनमुक्तः ॥ अभिसर्वसायन्तनंकर्मनिश्चयेनमुक्तयेनवा ॥

अभिनिर्याणम् । न । विजिगीषोः प्रस्थितौ । गमने ॥ अभिनिरपर्वात या तेर्ल्युट् ॥

अभिनिविष्ट । त्रि । अभिनिवेशविशिष्टे । दुराग्रहग्रस्ते ॥

अभिनिवेश. । पु । अन्यतामिस्त्रे । पञ्चक्लेशे ॥ सचआयुरभावेप्येतैः शरीरेन्द्रियादिभि रनित्यै रपिवियोगोमाभूदित्याविद्वदज्ञनावालस्वाभाविक सर्वप्राणिसाधारणोमरणत्रासरूपो-विपर्ययविशेष ॥ मनोयोगे ॥ आग्रहे ॥ अभितोनिवेशः ॥

अभिनिष्टानः । पुं । अक्षरमात्रे ॥ विसर्जनीये । विसर्गे ॥ अभिनिस्तननम् । स्तन॰ । भावे घञ् । अभिनिसःस्तनःशब्दसंज्ञायामितिमूर्द्धन्यः ॥

अभिनिष्पत्तिः । स्त्री । सिद्धौ । उत्पत्तौ ॥

अभिनिस्तानः । पुं । अभिनिष्टाने ॥ पक्षेमूर्द्धन्याभावः ॥

अभिनीतः । त्रि । न्याय्ये ॥ क्रोधने । अमर्षिणि ॥ संस्कृते ॥ अभिनीयतेस्म । णीञ् प्रापणे । क्तः ॥

अभिनीतिः । स्त्री । अभिनये ॥

अभिनेता । त्रि । नाटकप्रसिद्धे अभिनयकर्त्तरि । स्वांगी स्वांगवाला इति भाषा प्रसिद्धे ॥

अभिपन्नः । त्रि । अपराद्धे ॥ अभिग्रस्ते ॥ आपन्नते ॥ स्वीकृते । आभिमुख्येन प्राप्ते ॥ अभिद्रुते ॥ अभिपद्यतेस्म ।

पद्गतौ । गत्यर्थेतिक्तः । कर्मणि वा॰॥

अभिमतारी । पुं । वेदप्रसिद्धे चषिक विशेषे । कात्यसेनौ ॥

अभिमाय' । पुं । आशये । मानससम्मतौ । अभिमयणम् । प्रीञ्तर्पणे । घञ् ॥

अभिमेतः । त्रि । सम्मते ॥ अभिप्रायविषयीभूते । अभीष्टे ॥ अभितः प्रेतिस्मतिम् । इण्॰ । क्त. ॥

अभिमर्वः । पुं । अनादरे ।जये । गर्वनाशे ॥ भावे घञ् ॥

अभिभूतः । त्रि । गर्वासे । पराभूते । आत्तगर्वे ॥ इतिकर्त्तव्यतामूढे । व्यानरक्षिते । व्याकुले ॥ अभिभूयतेस्म । अकर्मकत्वात्कर्त्तरिक्तः ॥

अभिभूतिः । स्त्री । निकारे । अवज्ञायाम् ॥

अभिमतः । त्रि । सम्मते । आदृते ॥ अभीष्टे ॥

अभिमन्त्रणम । न । निमन्त्रणे ॥ आह्वाने । आकारणे ॥ आङ् मन्त्रि॰ ल्युट् ॥

अभिमन्थ. । पुं । अक्षिरोगे । अधिमन्थे ॥ सचतुर्विध । यथा । वन्यादृष्टिक्लैष्मिकः सप्तरात्रादधिमन्थोरक्तजः पञ्चरात्रात । षड्रा त्राद्वैवातिकः संनि



हन्यान्मिथ्याचारात् पैत्तिकः सद्य एवेतिमाधवः ॥

अभिमन्युः । पुं । अर्जुनात्सुभद्रायामुत्पन्ने ॥

अभिमन्युसुतः । पुं । परीक्षिते । औत्तरेये ॥

अभिमर. । पुं । युद्धे ॥ वधे ॥ स्ववलसाधने ॥ इतिमेदिनीकरः ॥ संकेतस्थलनिर्गमे । स्ववलसाध्वसे ॥ इति हेमचन्द्रः ॥ प्राणानिरपेक्षोयोद्रव्यहेतोर्व्यांडंहस्तिनंवा बोधयति सोऽभिमरइत्येके ॥

अभिमर्द' । पुं । मद्ये ॥ युद्धे ॥ मद्ययुद्धयोरिति हेमचन्द्र' ॥ पीडने ॥ अभिमर्द्दनम् । क्षुदक्षोदे । घञ् ॥

अभिमर्शः । पुं । घाते ॥

अभिमर्शितः । त्रि । स्पृष्टे ॥

अभिमानः । पुं । अहङ्कारवृत्तौ । धनस्वजनादिनिमित्ते मदवधारणहेतौ गर्वविशेषे ॥ आत्मन्यत्यन्तपूज्यत्वातिशयाध्यारोपे । अर्थादिदर्पे ॥ आदिना कुलपशुगुणादिग्रहः ॥ ज्ञाने ॥ प्रणये ॥ हिंसायाम् ॥ अभिसर्वतो मानः ॥ अभिमननम । मनज्ञाने । घञ् ॥ मीञ्हिंसायांवा । मीनातीत्यात्वम् ॥

अभिमानितम् । न । सुरते ॥ त्रि । अभि

मानयुक्ते । अभिमानः सञ्जातोऽस्य । तारकादित्वादितच् ॥

अभिमानी । त्रि । मानिनि ॥ सर्वतो मानास्पदे । अभिमानोऽस्यास्ति । इनिः । अभितोमानीवा ॥

अभिमुखः । त्रि । सम्मुखे ॥ अभिगतो मुखम् । अत्यादयःक्रान्ताद्यर्थे द्वितीययेतिसमासः ॥

अभिहृष्टः । त्रि । संहृष्टे ॥

अभियातः । त्रि । स्वयंप्राप्ते ॥

अभियुक्तः । त्रि । परैकद्धे ॥ तत्परे ॥ प्रानिनि ॥ अभियोगविषयीभूते । आसामीतिख्याते । प्रतिवादिनि ॥ यथा । अभियुक्तोऽभियोगस्ययदिकुर्यादपह्नवम् । मिथ्यातत्तुविजानीयाद् दुत्तरंव्यवहारत इतिनारदः ॥ अभितोयुक्तः ॥

अभियोक्ता । पु । अर्थिनि । विवादस्य कर्त्तरि । फरियादीति इतरजनेषु ख्याते ॥ यथा । अभियोक्ताऽप्रगल्भ्यात्वक्तुंनोत्सहतेयदि । तदाकाङ्क्ष्यःप्रदातव्यः कार्यप्रश्नयनु रूपतः ॥ इति नारदः ॥

अभियोगः । पुं । अन्यकृतस्वस्वधर्मबाध राजनिवेदने । अन्येनविरोधे स्वार्थसम्बन्धितयाराजसमीपे कथने । नालिश इतिइतरजनेषु ख्याते ॥ सद्विविधः । यथाहनारद. । अभियोगस्तुविज्ञेयः शङ्कातत्त्वाभियोगतः । शङ्काऽसतांतु संसर्गात् तत्त्वंह्रोढाभिदर्शनादिति ॥ अभिग्रहे । आग्रहे ॥ अभिगम्याक्रमणे ॥ प्रयत्ने ॥ आहवे ॥ अभियोजनम् । युजिर्योगे । घञ् ॥ उद्योगे ॥

अभिरत्या । स्त्री । सर्वतस्त्राणे ॥

अभिरतः । त्रि । रते ॥

अभिराद्धः । त्रि । आराधिते ॥

अभिरामः । त्रि । सुन्दरे । मनोज्ञे । प्रिये ॥ अभिरमन्तेऽस्मिन् । रम० । अधिकरणे घञ् ॥

अभिरामकथा । स्त्री । श्राव्यवाचि ॥

अभिरूपः । पुं । हरे । विष्णौ ॥ इन्दौ । कामे ॥ त्रि । बुधे । पण्डिते ॥ मञ्जुले । सुन्दरे । मनोहरे ॥ अभिलक्ष्यं रूपमस्य ॥ सदृशे ॥ समाहमेवाभिरूप इतिलक्षणम् ॥

अभिलषित. । त्रि । अभीप्सिते ॥

अभिलापः । पुं । सङ्कल्पाङ्गवाक्ये ॥ यथा । काम्याभिलापसहितः कुरुतेलजवण्यागरूपः सङ्कल्पःशास्त्रार्थइतिप्रक्रमाधिकरणम ॥ अभिलप्यतेऽनेनेतिव्युत्पत्त्यावाक्करणेअभिपूर्वालपेर्घञ् ॥ शब्दे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अभिलावः । पुं । छेदने । लवने ॥ अभिलवनम् । लूञ् छेदने । निरभ्योः पूल्वोरिति घञ् ॥

अभिलाषः । पुं । लोभे । मनोरथे ॥ अभिलषनम् । लषकान्तौ । घञ् ॥ भोग्यवस्तुनि ॥ अभिलष्यते । कर्मणि घञ् ॥ सङ्गमेच्छायाम् ॥

अभिलाषी । त्रि । इच्छावति । अभिलाषयुक्ते ॥

अभिलाषुकः । त्रि । लुब्धे ॥ अभिलष्यति । लषकान्तौ । लषपतपदेत्युकञ् ॥

अभिलासः । पुं । अभिलाषार्थे ॥ अभिलसनम् । लसश्लेषणक्रीडनयोः । घञ् ॥

अभिवादः । पुं । प्रणामे ॥ अभिवदनम् । वदेर्घञ् ॥

अभिवादकः । त्रि । प्रणामयुते । वन्दारौ । वन्दनशीले ॥ अभिवादयति । वदिअभिवादनस्तुत्योः । ण्वुल् ॥

अभिवादनम् । न । पादग्रहणे । नामोच्चारणपूर्वकसंस्कृतप्रयोगेण नमस्कृतौ । वाचानतौ ॥ अभिमुखीकरणार्थं वादनंवदनम् । वदवाक्संदेशयोः चुरादिः । ल्युट् ॥ अभिमुखेनवाद्यते आशी'कार्यतेऽनेनवा । णय्न्ताद्वदेः करणे ल्युट् ॥ अभिवादनविधिमाहमनुः । अभिवादात् परंविप्रोज्यायांसमभिवादयन् । असौनामाहमस्मीतिस्वंनामपरिकीर्त्तयेत् ॥ नामधेयस्ययेकेचिदभिवादंनजानते । तान् प्राज्ञोहमितिब्रूयात्स्त्रियःसर्वास्तथैवच ॥ भोःशब्दंकीर्त्तयेदन्ते स्वस्यनाम्नोभिवादने । नाम्नां स्वरूपभावोहिभोभावऋषिभिः स्मृतइति ॥ तथाच अभिवादये शुभशर्माहमस्मिभोः इत्यभिवादनवाक्यम् ॥ तन्निषेधोयथा । समिदार्युदकुम्भपुष्पान्नहस्तोनाभिवादयेच्चान्यदप्येवंयुक्तमितिबौधायनः ॥ जपयज्ञजलस्थञ्चसमित्पुष्पकुशानलान् । दन्तकाष्ठञ्चभक्षञ्चवहन्तंनाभिवादयेदिति लघुहारीत. ॥ अन्यत्रापि । समित्पुष्पकुशाग्न्यम्बुमृदन्नाक्षतपाणिकः । जपंहोमञ्चकुर्वाणोनाभिवाद्योद्विजोभवेदिति ॥

अभिवाद्यः । त्रि । अभिवादनार्हे ॥

अभिविधिः । पुं । तेनसहेत्यर्थे ॥ व्याप्तौ ॥

अभिविनीतः । त्रि । सर्वतःशिक्षिते ॥

अभिविमानम् । न । आभिमुख्येनविश्वं मिमीते जानातीतियोगाद्वैश्वानरात्मनि ॥

अभिव्यक्तः । त्रि । सर्वतःप्रत्यक्षे ॥

अभिव्यक्तिः । स्त्री । प्रत्यक्षे ॥ उद्भूते ॥ अभितोव्यक्तिः ॥

अभिव्याप्ति. । स्त्री । साकल्येन योगे । सम्मूर्छने । सर्वतोव्याप्तौ ॥ अभिव्यापनम् । आप्लृव्याप्तौ । क्तिन्नाबादिभ्य इति क्तिन् ॥

अभिशसनम् । न । अभिकथने ॥

अभिशपनम् । न । अभिशापे ॥

अभिशस्तः । त्रि । शापग्रस्ते । मांसाभिशापे ॥

अभिशस्तः । पुं । त्वपे ॥ अभितःशस्तः प्रशस्तः । त्रि । मृषापवादग्रस्ते । परस्त्रियां परपुरुषेण वा मैथुनं प्रतिमिथ्या दूषिते । शापग्रस्ते । आचारिते । अनिर्णीतेपितस्मिन्महापातकादौ जाताभिशापे । अभिशस्यतेस्म । शसुहिंसायाम् । क्तः । यस्यविभाषेति नेट् । धृषिशसीइतिवा ।

अभिशस्तिः । स्त्री । लोकापवादे ॥ प्रार्थनायाम् । याच्ञायाम् ॥ अभिशंसनम् । शंसुस्तुतौ याचनेच । स्त्रियां क्तिन् ॥

अभिशापः । पुं । मिथ्याभिशंसने । स्वर्णस्तेयंत्वया कृतमित्यादिमिथ्यादूषणाभिधायकेवाक्ये । ब्राह्मणगुरुद्दुसिद्धानामनिष्टाभिशंसने ॥ अभिशपनम् । शपआक्रोशे । घञ् ।

अभिषङ्गः । पुं । पराभवे । आक्रोशे । शपथे । सर्वतोभावेनसङ्गे । भूताद्यावेशे । अभिषञ्जनम् । षञ्जसङ्गे । घञ् । उपसर्गादितिषः ।

अभिषवः । पुं । अवभृथस्नाने ॥ यज्ञे । स्नपने । पीडने । मद्यसन्धाने । सुराकरणे । सुरोत्पादनप्रकारे । सवने । सुत्यायाम् ॥ अभिषूयते अभिषवणंवा । षुञ् अभिषवे । ऋदोरप् । उपसर्गादितिषः । न । काञ्जिके ॥ इतिहलायुधः ॥

अभिषवणम् । न । स्नाने । षुञ्० । ल्युट् ।

अभिषह्य । I । प्रसह्यार्थे । अभिषोढ्वा । षहमर्षणे । क्त्वा । ल्यप् ।

अभिषिक्तः । त्रि । अभिषेचिते ।

अभिषिषेणयिषुः । त्रि । सेनयाऽभियातुमिच्छति । सत्यापपाशेत्यादिना णेनाशब्दात्सिचि सनि सनाशंसेत्युः । स्थादिष्वितिधात्वभ्याससकारयोः षत्वम् ।

अभिषुतम् । न । काञ्जिके । अभिषूयते स्म । षुञ् अभिषवे । क्तः । उपसर्गादितिषत्वम् ।

अभिषेकः । पुं । शान्तिस्नाने । स्नाने । रुद्राभिषेकादौ । पूर्णाभिषेकशाक्ताभिषेकराजाभिषेकादिपदवाच्ये अधिकारप्राप्त्यर्थस्नाने । मार्जने । अभिषेचनम् । षिच्० । घञ् । जले । अभिषिच्यतेऽनेन घञ् ।

अभिषेचनम् । न । अभिषेके । षिच० । ल्युट् ।

अभिषेणनम् । न । शत्रोऽरिसम्मुखगतौ । युद्धयात्रायाम् । यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् । सेनया ऽभियानम । सत्यापेतिसेनाशब्दाण्णिच । ल्युट् । उपसर्गात्सुनोतीतिषत्वम ।

अभिष्टुतम । त्रि । स्तुते । वर्णिते । ईडिते । अभिष्टूयतेस्म । ष्टुञ् स्तुतौ । क्त ।

अभिष्यन्दः । पुं । अतिवृद्धौ । आस्रावे । अक्षिगदविशेषे । अभिष्यंदनम् । स्यंदू० घञ् ।

अभिष्यन्दिरमणम् । न । शाखानगरे । प्रधाननगरसन्निहितनगरे । इतिजटाधरः ।

अभिष्वङ्गः । पुं । उत्कटरागे । अन्यस्मिन्नहंबुद्धौ । अभिष्वञ्जनम् । ष्वञ्ज० । घञ ।

अभिसंरब्धः । त्रि । कुपिते ।

अभिसंवृत्तिः । स्त्री । व्यवहारे ।

अभिसन्तापः । पुं । युद्धे । अभिशापे । अभितः सन्तापोऽत्र ।

अभिसन्धः । पुं । सत्यत्वाभिमाने ।

अभिसन्धानम् । न । वञ्चने । प्रतारणे ।

अभिसन्धिः । पुं । अभिसन्धाने । उद्देशे ।

अभिसम्पात । पुं । युद्धे । अभिसम्पतनम् । पतॢ गतौ । घञ् ॥

अभिसरः । त्रि । अनुचरे । सहाये । अभितः । सरति । सृ गतौ । पचाद्यच् ।

अभिसर्जनम् । न । दाने । वधे ॥ अभिपूर्वात् सृजेर्भावे ल्युट् ॥

अभिसारः । पुं । बले । युद्धे । सहाये । साधने । स्त्रीपुंसयोरन्यतरस्याऽन्यतरार्थं सङ्केतस्थानगमने ॥ अभिसरणम् । सृ० । घञ् ।

अभिसारिका । स्त्री । नायिकाविशेषे । सङ्केत स्थलेस्वयङ्गमनकर्त्र्याम् । एवं प्रियगमनकारयित्र्याम । कान्तार्थिनीतुयायातिसङ्केतंसाभिसारिकेत्यमरः । भरतश्च । हित्वालज्जाभये श्लिष्टामदनेमदनेनच । अभिसारयतेकान्तंसाभवेदभिसारिकेति ॥ अभिसरति । सृगतौ । ण्वुल् ।

अभिसारिणी । स्त्री । अभिसारिकायाम् ।

अभिसृष्टः । त्रि । दत्ते ।

अभिहतः । त्रि । विद्धे । ताडिते ।

अभिहारः । पुं । अभियोगे । अभिमुख्याक्रमणे । अभिग्रहणे । आभिमुख्येन ग्रहणे । चौर्ये । कवचादिधारणे । सन्नहने ॥ मद्यपे । अभिहरणम् । हृञ् हरणे । घञ् ।

अभिहितम् । त्रि । कथिते । प्रोक्ते ॥ अ-

भिधीयतेस्म। डुधाञ् धारणपोषणयो:। क्त:। दधातेर्हि:॥

अभीक:। त्रि। कामुके॥ क्रूरे॥ निर्भये॥ पुं। कवौ॥ अभिकामयते। अनुकाभिकेतिसाधु:॥ स्वामिनि॥

अभीक्ष्णम्। ।। नित्ये। अत्यर्थे॥ भूशे। पौन:पुन्ये॥ अभिक्ष्णौति। क्ष्णु तेजने। बाहुलकादमु:। अन्येषामपीतिदीर्घ:॥ यद्वा। अभिक्ष्णवनम्। क्ष्णुतेजने। डम्। पृषोदरादित्वाद भेर्दीर्घ:॥ शीघ्रे॥ प्रकर्षे॥

अभीक्ष्णम्। न। भृशे। पौन: पुन्ये॥ नित्ये। सर्वदार्थे॥ त्रि। भृशयुक्तक्रियायाम्॥ नित्ययुक्तक्रियायाम्॥

अभीत:। त्रि। अभिव्याप्ते अभिपूर्वात् इण: क्त:॥ अभितइतोवा॥ निर्भये॥ नभीत:॥

अभीप्सितम्। त्रि। वाञ्छिते। अभीष्टे॥ अभ्याप्तुमिष्यतेस्म। आप्लृव्याप्तौ सनन्त:। आप्ज्ञप्यृधामीत्। क्त:।

अभीर:। पुं। आभीरे। गोपे॥ अभिईरयति। ईरगतौकम्पनेच। पचाद्यच्॥

अभीरु:। त्रि। निर्भये॥ स्त्री। शतमूल्याम्॥ नभीरु:। स्थिरपत्रत्वात्।

अभीरुपत्री। स्त्री। शतमूल्याम्॥ अभीरूणि पत्राण्यस्या:। पाककर्णेति ङीष्।

अभीशु:। पुं। प्रग्रहे॥ किरणे। रश्मौ।

अभीषङ्ग:। पुं। आक्रोशने। शापे॥ पञ्जसङ्गे। घञ्। उपसर्गस्यघञीति दीर्घ:॥

अभीषु:। पुं। किरणे॥ अश्वास्यरज्जौ। प्रग्रहे॥ कामे॥ अनुरागे॥ त्रि। इच्छति॥ ईषतेर्हिनस्ति ईष्यतेवा। ईषगतिहिंसादर्शनेषु। ईषे: किच्च्यु:। आदेरिकारादेशश्च। अभिगतईषु:। प्रादयोगतेति समास:

अभीष्ट:। त्रि। ईप्सिते। प्रिये॥ अभितइष्यतेस्म। इषुइच्छायाम्। क्त:॥

अभीष्टा। स्त्री। रेणुकाभिधगन्धवस्तुनि॥

अभुक्त:। त्रि। उपवासिनि॥ यथा अभुक्तस्यदिवानिद्रापाषाणमपिजीर्यतीति। अकृतभोजनेवस्तुनि॥

अभुक्तमूल:। पुं। न। ज्येष्ठान्त्यघटीचतुष्टयसहितमूलाद्यघटीचतुष्टये॥ ज्येष्ठान्त्यैकघटीसाहितमूलाद्यघटिकाद्वये॥ ज्येष्ठान्त्यघटिकार्द्धसहितमूलादिघटिकार्द्धे॥ ज्येष्ठान्त्यपञ्चघटिकासहितमूलाद्यष्टनाडिकासु॥

अभूत। त्रि। अविद्यमाने॥

अभूताभिनिवेश:। पुं। असतिअस्तित्वनिश्चये॥

अभेदः । पुं । ऐक्ये । अवियोगे । नभेदः । यथा । रलयोर्डलयोस्तद्वज्जयोर्बवयोरपि । शसयोर्मनयोश्चान्ते सविसर्गाविसर्गयोः । सविन्दुकाविन्दुकयोःस्यादभेदेन कल्पनमिति । यथा वा । गुणगुणिनोः क्रियाक्रियावतोश्चाभेदः ॥

अभेद्यम । न । हीरके । त्रि । अभेदनीये ।

अभोगः । त्रि । भोगशून्ये । भोगानर्हे । नास्तिभोगोयस्य ॥

अभोजनम । न । भोजनाभावे । उपवासे । यथा । अजीर्णे भोजनंयेषां जीर्णेयेषामभोजनम् । रात्राविभोजनंयेषांतेषांनश्यन्तिधातवः इतिवैद्यकम । अपिच । वेदोदितानां नित्यानां कर्मणां समतिक्रमे । स्नातकव्रतलोपेच प्रायश्चित्त मभोजनमिति मनुस्मृतम् ।

अभ्यक्तः । त्रि । कृततैलाभ्यंगे । अभितोऽक्तः ।

अभ्यग्रम । त्रि । आसन्ने । समीपे । अभिमुखमग्रमस्य ।

अभ्यङ्गः । पुं । तैलमर्दने । स्नेहने । यथा । तैलमभ्यंयदङ्गेषु न चस्मात्तु तर्पणम् । सामान्येः पृथगभ्यंगोमूलकादौ प्रकीर्तितः । अभ्यङ्गमाचरेन्नित्यं सजराश्रमवातहा । शिरःश्रवणपादेषु तं विशेषेण शीलयेदित्यायुर्वेदः । पादगते वेश्मिरे चक्षुषि सम्बद्धेस्तः अतश्चक्षुर्हितार्थिनापादाभ्यङ्गः करणीयः । कफग्रस्तकृतभेदवमनाजीर्णिभिर्नाभ्यङ्ग करणीयः । अपिच । मूर्ध्निदत्तं यदा तैलं भवेत्सर्वाङ्गसङ्गतम । स्रोतोभिस्तर्पयेद्दाहू अभ्यङ्गस्तत्रचोदित इति । तैलादिना शिरःसहितदेहमर्दने ॥

अभ्यञ्जनम । न । तैले । अभ्यङ्गे । मलापहस्नाने । अभितःअञ्जनम् ।

अभ्यधिकः । त्रि । सर्वोत्कृष्टे ।

अभ्यनुज्ञा । स्त्री । अनुमतौ । अभितः अनुज्ञा ।

अभ्यनुज्ञातः । त्रि । आभिमुख्येनज्ञाते ।

अभ्यन्तम् । त्रि । प्रकाशिते ।

अभ्यन्तरम । न । अन्तराले । मध्यमार्गे । अभिगतमन्तरम् ।

अभ्यमितः । त्रि । रोगिणि । अभ्यमर्त्तेक्तः । अमरोगे । क्तः । चुरादीनां णिचोवैकल्पिकत्वात् णिजभावे इट् न । अभ्यमतिस्मवा । अमगत्यादौ । गत्यर्थेतिक्तः । वृध्यमत्वरेतिवेट ॥

अभ्यमित्रीणः । त्रि । अभ्यमित्र्य । अभ्यमित्रमलंगामी । अभ्यमित्र्योच्छचेतिखः ।

अभ्यमित्रीयः । त्रि । अभ्यमित्र्ये । अभ्यमित्रमलंगामी । अभ्यमित्राच्छ चेतिछः । अमित्राभिमुखंसुष्ठुगच्छतीत्यर्थः ॥

अभ्यमित्र्यः । त्रि । स्वशक्तित शत्रोरभिमुखगच्छद्वीरे । अभ्यमित्रीये ॥ अमित्राभिमुखम् । लक्षणेनाभिमती इत्यव्ययीभावः । अभ्यमित्रमलं गामी । अभ्यमित्राच्छचेतियत् ॥

अभ्यर्णम् । त्रि । समीपे ॥ अभ्यर्द्यतेस्म अभ्यर्दितिस्मेतिवा । अर्द्गतौ । कर्मणिकर्त्तरिवाक्तः । अभेस्राविदूर्यइतीडभावः । रदाभ्यामितिनत्वसत्वणात्वम् ॥

अभ्यर्हितः । त्रि । पीडिते ॥ अभिपूर्वादर्हेः क्तः । इट् ।

अभ्यर्हणीयः । त्रि । पूज्ये ।

अभ्यर्हितः । त्रि । उचिते ॥ श्रेष्ठे ।

अभ्यवकर्षणम । न । शल्यादेः समुत्पाटने । निष्कारे । शल्यादेरुद्धत्यानिःसारणे । अभ्यवकृषेर्ल्युट् ।

अभ्यवस्कन्दः । पुं । रिपोराक्रमणे । निःशत्रीकरणाय शत्रुभिर्दीयमानेप्रहारे । अभ्यासादने । प्रयाते ॥

अभ्यवस्कन्दनम् । न । रिपोराक्रमणे । अभ्यासादने । प्रहारादिना शत्रोर्निःशत्रीकरणे । बलादाक्रमणे इतिस्वामी । शत्रोः सम्मुखगमने । स्कन्दृ गतिशोषणयोः । ल्युट् ।

अभ्यवहारः । पुं । भक्षणे । स च भक्ष्यभोज्यलेह्यपेयचोष्यभेदेन पञ्चविधः ।

अभ्यवहृतम । त्रि । भुक्ते ॥ अभ्यवह्रियतेस्म । क्तः ॥

अभ्यसनम । न । अभ्यासे । पौनः पुन्येनचिन्तने करणे च ॥

अभ्यसूयकः । त्रि । गुर्वादीनां वैदिकमार्गस्थानां कारुण्यादिगुणेषु प्रतारणादिदोषारोपके । अभितोऽसूयकः ।

अभ्यसूया । स्त्री । गुणेषुदोषारोपे ॥ अभ्यसूयनम् । असूञ् असूयायाम् । कण्ड्वादित्वाद्यकिअप्रत्ययादित्वः ।

अभ्याकाङ्क्षितम् । न । अलीकाभियोगे । मिथ्यादावा इतिख्याते । अभ्याख्याने । त्रि । ईप्सिते । अभितः आकाङ्क्षितम् ।

अभ्याख्यानम् । न । मिथ्याभियोगे । शतंमे धारयसीत्यादिमिथ्योद्भावने । मिथ्यावादे । अभ्याङ्पूर्वात्ख्याञोभावेल्युट् ।

अभ्यागतः । पुं । अतिथौ । दृष्टपूर्वेगृहागते । त्रि । सम्मुखागते ॥ अभित आगतः । आभिमुख्येन आगतोवा ॥

अभ्यागमः । पुं । विरोधे । समरे । अन्तिके । अभिघाते । अभ्युद्गमने । भोगे । स्वीकारे । फलसम्बन्धे । अभ्यागमनम् । गम्लृ गतौ । ग्रहवृद्रित्यप् ॥

अभ्यागारिकः । त्रि । कुटुम्बव्यापृते । पुत्रदारादिपोषणव्यग्रे । अभ्यागारेनियुक्तः । अगारान्ताट्ठन् । अभि अधिक आगारिकोवा ॥

अभ्याघातः । पुं । चौर्याद्यनर्थोपदेशे ॥

अभ्याक्तः । त्रि । अभिव्याप्ते । व्याप्यर्थस्यातेः कर्त्तरि कर्मणिवा निष्ठा ॥

अभ्यादानम् । न । आरम्भे । आभिमुख्येनादानम् ॥

अभ्यान्तः । त्रि । रोगिणि अभ्यमयते स्म । अमरोगे । क्तः । चुरादीनां णिचोवैकल्पिकत्वात् णिजभावपक्षे । अमन्तिस्मवा । अमगत्यादौ । गत्यर्थेति क्तः । अभ्यमत्वरेतिवेट् । इडभावे अनुनासिकस्येतिदीर्घः ॥

अभ्यामर्दः । पुं । रणे । समरे । अभ्यामर्दनम् । मृदक्षोदे । घञ् ॥

अभ्याशः । पुं । अवश्यमेव । अन्तिके । अभ्यश्यते । अशूव्याप्तौ । घञ् ।

अभ्यासः । पुं । अभ्यसने । आवृत्तौ । आकर्णनं विचारोजपः शिष्येभ्योदानमावृत्तिरित्येति पञ्चविधोऽभ्यासो-भवति ॥ खुरल्याम् । शराभ्यासे । युनःप्रयोगे । संस्कारबाहुल्ये । इतरसंस्कारे । षड्विधलिङ्गेषु द्वितीये लिङ्गे । यथाहुः । प्रकरणप्रतिपाद्यस्य तन्मध्ये पौनःपुन्येनप्रतिपादनमभ्यासः । यथाछान्दोग्येषष्ठेप्रपाठके अद्वितीयस्यवस्तुनोमध्ये तत्त्वमसीति नवकृत्वः प्रतिपादनमिति ॥ विजातीयप्रत्ययानन्तरिते सजातीयप्रत्ययवाहे । अतिपरिचये । त्रि । अन्तिके । अभ्यासीदति । अन्येभ्योपीतिड ॥

अभ्यासयोगः । पुं । एकस्मिन् प्रतिमाद्यालम्बने सर्वतः समाहृत्य चेतसः पुनः पुनः स्थापनमभ्यासस्तत्पूर्वकेसमाधौ ।

अभ्यासादनम् । न । रिपोरक्षार्थैर्निःशक्तीकरणे । अभ्यवस्कन्दने । अभ्यासः समुखगमने । षद्लृविशरणादौ । चुरादिः । ल्युट् ॥

अभ्याहारः । पुं । अभिग्रहणे । चौर्ये ॥ आभिमुख्येनाहरणम् । हृञ्हरणे घञ् ॥

अभ्याहितः । त्रि । उपचिते । ध्वनैकपचितेग्नौ पुं ॥

अभ्युक्तः । त्रि । प्रकाशिते

अभ्युत्थानम् । न । गौरवोत्थमभ्युद्गमने । गौरवंदृष्ट्वाआसनादेरुत्थाने ॥

उद्यमे । उद्भवे ॥ आभिमुख्येनउत्था नम् ॥

अभ्युत्पतनम् । न । आभिमुख्येनोत्पतने ॥

अभ्युदय । पुं । पराक्रमे ॥ वृद्धिश्राद्धे ॥ अभीष्टार्थानांकार्याणामाभिमुख्येनोदयः प्रादुर्भावोयेनेतिविग्रहः ॥ सर्वतोभावेनधनजनादीनांवृद्धौ । यथा । राजन्नभ्युदयोस्तु वल्लनकवे हस्तेकिमास्तेतव श्लोकः कस्यकवेरमुष्य कृतिनस्तत्पठ्यतांपठ्यते । किन्त्वासामरविन्दसुन्दरदृशां द्राक्चामरान्दोलनादुद्वेल्लद्भुजवल्लिकङ्कणझणत्कारः क्षणंवार्यताम् ॥ अस्यपूर्वार्द्धंवल्लनकविकर्णाटराजयोर्वाक्यं शेषार्द्धंकालिदासस्य ॥

अभ्युदितः । त्रि । सूर्योदयकालेनिद्राकृते । सुप्तेयस्मिन्सूर्यउदितस्तस्मिन् ॥ अभिसर्वतः उदितिशयेन इतं गतं प्रातस्तनंकर्मास्यैति । उदिते । प्रकाशिते ॥

अभ्युद्धतम् । त्रि । अयाचितोपनीते ऽर्थादौ । आभिमुख्येन स्थापिते ॥

अभ्युपगतः । त्रि । स्वीकृते ॥ अभ्युपगम्यतेस्म । गम्लृ गतौ । क्तः ॥ अभ्युदिते ॥

अभ्युपगमः । पुं । स्वीकारे । अङ्गीकारे । समीपागमने । अन्तिकसमागमे ॥

अभ्युपेत्युपसर्गद्वयपूर्वाद्गमे र्ग्रहवृद्-निश्चिगमश्चेत्यप् ॥

अभ्युपगमसिद्धान्तः । पुं । न्यायाश्रयसिद्धान्तविशेषे ॥ यथा । अपरीक्षिताभ्युपगमात्तद्विशेषपरीक्षणमभ्युपगमसिद्धान्तः । १५ । ३१ । अपरीक्षितस्य साक्षादसूचितस्य विशेषपरीक्षणं विशेषधर्मकथनम् । अभ्युपगमादिति ज्ञापकत्वे पञ्चमी अभ्युपगमज्ञापकमित्यर्थः ।विशेषपरीक्षणाज्ज्ञायते सूत्रकृतोऽभ्युपगतमिदमिति ॥ तथाच साक्षादसूचिताभ्युपगमोऽभ्युपगमसिद्धान्त. । यथा मनसइन्द्रियत्वमिति ॥

अभ्युपपत्ति । स्त्री । अनुग्रहे । हित.प्राप्तिनाहितनिवारणप्रवृत्तौ ॥ अभ्युपपदनम । पद्ल गतौ । क्तिन् ॥

अभ्युपायः । पुं । स्वीकारे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥ उपाये ॥ यथा । ततस्त्रीकृतत्थितिकरे कदहाभ्युपायइतिकाव्यप्रकाश ॥

अभ्युपायनम । न । उपढौकनद्रव्ये । उपायने ॥ यथा । ता वानय समं गोपैर्नन्दाद्यैः साभ्युपायनैः रितिविष्णुभागवतम् ॥

अभ्युपेत । पुं । उपगते । स्वीकृते ॥ ।

अभ्युषः । पुं । ईषतपक्वे । भर्जिते च

इत्ययवादो। पैासो॥ अभ्योषति। उषदाहे। इगुपधेतिकः। अभ्यूष्यतेवा। घञ्॥

अभ्यूषः। पुं। आपक्के। अभ्युषे॥ अभ्यूषति अभ्यूष्यतेवा। अवदाहायाम्। इगुपधेतिकोघञ्वा॥

अभ्यूहितः। त्रि। ज्ञाते॥ अभितः ऊहितः॥

अभ्योषः। पुं। अभ्यूषे। पैासो॥ अभ्योषति। उषदाहे। पचाद्यच्। गुणः॥

अभ्रम्। न। मेघे॥ आपोविभर्त्ति। डुभृञ्०। मूलविभुजादित्वात्कः॥ यद्वा। नभ्रंश्यन्त्यापोऽस्मात्। भ्रंशुअधःपतने। अन्येभ्योपीतिडः॥ अभ्रकधातैा॥ काञ्चने॥ गगने॥ नविभर्त्ति किञ्चित्। मूलविभुजादित्वात्कः॥ यद्वा। आपोभ्रंश्यन्त्यस्मात्। अन्येभ्योपीतिडः॥ यद्वा। अभ्रतिस्वैर्यंगच्छति। अभ्रवभ्रमभ्रचरगत्यर्थाः। अच्॥ यद्वा नभ्राजते। भ्राजृदीप्तौ। अन्येभ्योपीतिडः॥

अभ्रंलिहः। पुं। वायौ॥ त्रि। मेघस्पर्शिनि। उच्चतरे॥ अभ्रंलेढि। लिह आस्वादने। वहाभ्रेलिहइत्यभ्रोपपदाल्लिहेः कर्त्तरिखश् प्रत्ययः। अरुर्द्विषदितिमुमागमः॥

अभ्रकम्। नं। धातुभेदे। अभ्रे। गिरिजातमके। अस्योत्पत्त्यादिकं यथा। पुरावधायवृत्रस्य वज्रिणा वज्रमुद्धृतम्। विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्य गगने परिसर्पिताः। तेनिपेतुर्घनध्वाना च्छिखरेषु महीभृताम्। तेभ्य एव समुत्पन्नं तच्छिरिषु चाऽभ्रकम्। तद्वज्रवज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात्। गगनात् स्खलितंयस्माद्गगनंच ततोमतम्। विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तत्स्याच्चतुर्विधम्। क्रमेणैवसितंरक्तंपीतंकृष्णंचवर्णतः। प्रशस्यतेसितंतारेरक्तन्तुरसायने। पीतंहेमनिकृष्णन्तु गदेषुद्रुतयेपिच। पिनाकंदर्दुरंनागं वज्रंचेतिचतुर्विधम्। मुञ्चत्यग्नौविनिःक्षिप्तं पिनाकं दलसञ्चयम्। अज्ञानाद्भक्षणात्तस्य महाकुष्ठप्रदायकम्। दर्दुरंत्वग्निनिःक्षिप्तंकुरुते दर्दुरध्वनिम्। गोलकान्बहुशःकृत्वासस्यान्मृत्युप्रदायकः। नागन्तु नागवद्वह्नौफूत्कारंपरिमुञ्चति। तद्भक्षितमवश्यन्तु विदधातिभगन्दरम्। वज्रन्तुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिं व्रजेत्। सर्वाभ्रेषुवरंवज्रं व्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत्। अभ्रमुत्तरशैलोत्थं बहुसत्त्वंगुणाधिकम्। दक्षिणाद्रिभवंस्वल्पसत्त्वमल्पगुणप्रदम्। अथमारिताभ्रस्यगुणाः। अभ्रंक

षायंमधुरं सुशीतमायुष्करंधातुविव र्द्धनंच । हन्यान्निदोषंव्रणमेहकुष्ठप्ली होदरग्रंथिविषकृमींश्च ॥ रोगान् हन्तिदृढयतिवपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्ते तारुण्याढ्यंरमयतिशतंयोषितांनित्य-मेव । दीर्घायुष्कान्जनयति सुतान् विक्रमैः सिंहतुल्यान् मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रमिति ॥ अथाशोधिताभ्रस्यदोषाः । पीडांविधत्ते विविधांनराणां कुष्ठंचयंपाण्डुगदंचशोथम् । हृत्पार्श्वं पीडांचकरोत्यसत्याम शुद्धमभ्रं गुरुवह्निहृत्स्यात् ॥ अस्यशोधनविधिर्यथा । कृष्णाभ्रकंधमेद्वह्नौ ततः क्षीरेविनिः क्षिपेत् । भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातण्डुलीयाम्लयोर्द्रवैः । भावयेदष्टयामंतदेवमभ्रं विशुध्यति ॥ मारणन्तु । कृत्वाधान्याभ्रकंतच्चशोधयित्वाथमर्दयेत् । अर्कक्षीरैर्दिनंखल्लेचक्राकारं चकारयेत् ॥ वेष्टयेदर्कपत्रैश्चसम्यग्गजपुटेपचेत् । पुनर्मर्द्यंपुनः पाच्यंसप्तवारान् पुनः पुनः ॥ ततोवटजटाक्वाथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयम् । म्रियतेनात्रसन्देहः प्रयोज्यंसर्वकर्मसु ॥ तुल्यंघृतंमृताभ्रेणलोहपात्रेविपाचयेत । घृतेजीर्णेतदभ्रन्तु सर्वयोगेषुयोजयेदिति भावप्रकाश ॥

अभ्रति अभ्रयतेवा । अभ्र० । कुम ॥ अभ्रस्याकृतिर्वा । इवे प्रतिकृताविति कन् ॥

अभ्रङ्कषः । पुं । समीरणे ॥ अभ्रंकषति हिनस्तीतिविग्रहे सर्वकूलाभ्रेत्यादिनाकषेः खच्प्रत्ययः । मुमागमः ॥

अभ्रपिशाचः । पुं । राहौ ॥ इतिचिकाण्डशेषः ॥

अभ्रपुष्पम् । न । जले ॥ अभ्रस्यपुष्पमिव ॥ पुं । वेतसे ॥ अभ्रमिव अभ्रसजयेवा पुष्पमस्य ॥

अभ्रमांसी । स्त्री । आकाशमांसीलताम् ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अभ्रमातङ्गः । पुं । ऐरावणे ॥ अभ्रंमेघस्तद्रूपःकोमातङ्गः । शाकपार्थिवादिः ॥ अभ्रे आकाशे मेघेवा विद्यमानोमातङ्ग इतिवा ॥

अभ्रमुः । स्त्री । ऐरावतपत्न्याम् ॥ अभ्रेखे माति मन्थरगामिनीत्वात् । बाहुलकाद्' ॥ अभ्रे आकाशएवमाति । मामाने । मितद्र्वादित्वाड्डुर्वा । न भ्राम्यति । भृमृचरीत्यु' । मन्थरगामिनीत्वर्थ इतिवा ॥

अभ्रमुप्रियः । पुं । अभ्रमातङ्गे ॥ अभ्रमोः प्रियः ॥

अभ्रमुवल्लभः । पुं । ऐरावणे ॥ अभ्रमोर्वल्लभः ॥

अभ्ररोहम । न । वैदूर्यमणौ ॥ इति

राजनिर्घण्टः ॥

अभ्रलिही । स्त्री । अभ्रैरभ्रैर्लिहसायांदि वि ॥ अभ्रैरभ्रैर्लिहा का दृश्यामाख्यायामितिङीष् ॥

अभ्रवाटिकः । पुं । आम्रातके ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अभ्रावकाशिकः । पुं । तापसान्तरे ॥ यो वातातपवर्षेषु केवलमाकाशे असंवृतप्रदेशे तपश्चरति सोऽभ्रावकाशकः ॥

अभ्रिः । स्त्री । काष्ठकुद्दाले । नौमलोत्सारके । पोतादेर्मलापनयनार्थं काष्ठघटितकुद्दाले । अभ्रति । अभ्र गतौ । सर्वधातुभ्य इन्निति इन ॥

अभ्रियः । त्रि । मेघभवे । अभ्रेभवम् । समुद्राभ्राद्घः । छांदसत्वं प्रायिकम ॥ स्त्रियामभ्रिया ॥

अभ्री । स्त्री । काष्ठकुद्दाले ॥ अभ्रति । अभ्रगतौ । सर्वधातुभ्य इतिइन् । कृदिकारादितिङीष ॥

अभ्रेषः । पुं । न्याय्ये । उचिते । भ्रेषणम् भ्रेषः । भ्रेषृचलने । घञ् । भ्रेषादन्यः ॥

अभ्रोत्थम् । न । कुलिशे ॥ त्रि । अभ्रभवे ॥

अमम् । अव्य । शीघ्रतायाम । इति व्याडिः ॥

अमः । पुं । रोगे ॥ त्रि । अपक्वफलादौ ।

अमङ्गलः । पुं । एरण्डवृक्षे ॥ त्रि । मङ्गलहीने । अशुभसूचके ॥

अमण्डः । त्रि । मण्डहीने ॥

अमतः । पु । मृत्यौ ॥ काले ॥ रोगे ॥ त्रि । असंमते । अविज्ञाते ॥ अतर्किते ॥ अमति । अमगत्यादिषु । भृमृदृशियजीत्यादिनाऽतच् ॥

अमतिः । पुं । काले ॥ दण्डे ॥ चन्द्रे ॥ त्रि । दुष्टे ॥ अमति । अमगत्यादिषु । अमेरतिः ॥

अमत्रम् । न । भाजने । भाण्डे ॥ अमति अत्रमत्र । अमगत्यादिषु । अमिनक्षियजिवधिपतिभ्योऽत्रन् ॥

अमदनः । पुं । शिवे ॥

अमनाः । त्रि । स्नेहशून्ये ॥

अमनस्कः । त्रि । अप्रगृहीतमनस्के ॥ पुं । योगग्रन्थविशेषे ॥

अमनिः । स्त्री । वर्त्मनि । गतौ ॥ अमति । अमगत्यादिषु । अर्त्तिसृधृ इत्यादिनाऽनिः ॥

अमन्दः । त्रि । धृष्टे ॥ मन्दभिन्ने ॥

अममः । पुं । भाविजिनविशेषे ॥ त्रि । ममताहीने ॥

अमरः । पुं । सुरे ॥ अष्टशाब्दिकान्तर्गतवैयाकरणविशेषे ॥ येननामलिङ्गानुशासनंकृतम् ॥ विक्रमादित्यसभास्थनवरत्नान्तर्गतरत्ने ॥ अयमप्यहुरितिकश्चित् ॥ स्नुहीवृक्षे ॥ पारदे ॥

अस्थिसंहारे। त्रि। मरणवर्जिते॥ नम्रियते इतिअमरः। मृङ्प्राणत्यागे तुदादि। पचाद्यच्॥

अमरजः। पुं। खदिरवृक्षभेदे। कालस्कन्धे। पत्रतरौ॥

अमरदारुः। पुं। देवदारुवृक्षे॥

अमरद्विजः। पुं। देवले। देवाजीवे। पुजारीति प्रसिद्धे॥ अमराणांद्विजः॥

अमरपुष्पकः। पुं। काशे। इक्षुगन्धायाम्॥ इतिरत्नमाला॥

अमरपुष्पी। स्त्री। अवाक्पुष्प्याम्। अधःपुष्प्याम्॥

अमरप्रभुः। पुं। विष्णौ॥ अमराणांप्रभुः॥

अमररत्नम्। पुं। स्फटिके॥ इतिराजनिर्घण्टः।

अमरवल्लरी। स्त्री। आकाशवल्ल्याम्॥

अमरा। स्त्री। गुडूच्याम्॥ अमरावत्याम्॥ दूर्वायाम्। स्थूणायाम्॥ जरायौ॥ इन्द्रवारुण्याम्॥ वटीवृक्षे॥ महानील्याम्। घृतकुमार्याम्॥ नाभिनालायाम्॥ नम्रियते। मृङ्प्राणत्यागे। पचाद्यच्। टाप्॥

अमराद्रिः। पुं। सुमेरौ॥ अमराणामद्रिः॥

अमरालयः। पुं। स्वर्गे॥ अमराणामालयः॥

अमरावती। स्त्री। इन्द्रपुर्य्याम्॥ यथा। नानारत्नप्रभाजालमण्डलाखण्डलाकरे। सिद्धसाध्यमरुज्जुष्टाशक्रभूरमरावतीति॥ अमराः सन्त्यस्याम्। मतुप्। मतौबह्वचोनजिरादीनामितिदीर्घः॥

अमरेशः। पुं। अमरकण्टकतीर्थस्थेदेवे॥ अमरेशोऽमरकण्टकइत्यागमोक्तेः। अपिच। अमरेशमहापीठे कुम्भतुम्बुरुसंज्ञकः। तत्रदुर्गाद्वयंनाम चण्डिकाचमहेश्वरीति॥

अमर्त्यः। पुं। त्रिदशे॥ नम्रियते। अमर्त्यः॥ नमर्त्यःइतिनञ्समासोवा॥

अमर्त्यनदी। स्त्री। गङ्गायाम्॥ अमर्त्यानांनदी॥

अमर्त्यभुवनम्। न। स्वर्गे॥ अमर्त्यानांभुवनम्॥

अमर्षः। पुं। कोपे। क्रुधि॥ परोत्कर्षासहनरूपेचित्तवृत्तिविशेषे॥ कृतापराधे ऽसमर्थस्यद्वेषे॥ मर्षणम्। मृषतितिक्षायाम्। भावेघञ्। नञ्समासः॥

अमर्षणः। त्रि। क्रोधने॥ नमर्षं॥ युक्तः॥ युच्॥ असहने॥

अमलम्। न। अभ्रके॥ त्रि। निर्मले॥ रजस्तमोमलरहिते॥ अमति। अमगतौ। वृषादित्वात्कलच्। नञ्

समस्येतिवा ॥

अमला । स्त्री । लक्ष्म्याम ॥ भूम्यामल-
क्याम् ॥ सातलावृक्षे ॥ नाभिनाला
याम् ॥ टाप् ॥

अमलात्मा । पुं । निवृत्तरागादिमले ॥

अमस: । पुं । काले ॥ निर्बोधे ॥ रोगे ॥

अमहात्मा । पुं । क्षुद्रहृदये ॥ नमहा
त्मा ॥

अमा । I । सहार्थे ॥ निकटे ॥ नमाति
मा माने । क्विप ॥

अमा । स्त्री । दर्शे । अमावास्यायाम् ॥
नामैकदेशेनामग्रहणात् ॥ चंद्रलोक
स्थसूर्यदीधितौ ॥

अमांस: । त्रि । दुर्बले ॥ अल्पमांसयुक्ते
॥ मांसरहिते ॥ नमांसमस्य । अल्पा
र्थेनञ् ॥

अमांसाशी । त्रि । निरामिषाशिनि ॥
यथा । नभक्षयेत् वृथामांसममांसा
शी भवत्यपीतिशान्तौ मोक्षधर्मे
भीष्म: ॥

अमात्य: । पुं । मन्त्रिणि ॥ यथा ॥ शान्तो
विनीत:कुशल: सत्कुलीन:शुभान्वि
त: । शास्त्रार्थतत्त्वगोऽमात्योभवेद्भू
मिभुजामिहेतियुक्तिकल्पतरु: ॥ त्रि ।
सहभवे ॥ अमासह समीपेवाभव: ।
अव्ययात्त्यप् ॥

अमान: । त्रि । कार्यकारणभावशून्येतु-
रीयेपरमात्मनि ॥ माचापरिच्छि-
त्ति: सानविद्यतेयस्यस ॥ निर्धने ॥

अमाननम् । न । अनादरे ॥ नमानन
म् ॥

अमानस्यम् । न । पीडायाम् ॥ त्रि । पी
डायुक्ते ॥ मानसाय हितम मानसे-
साधुवा । उगवादित्वात तत्साध्वि
ति वायत् । नमानस्यममानस्यम् ॥

अमामसी । स्त्री । दर्शे । कृष्णपक्षान्त
तिथौ ॥

अमामासी । स्त्री । अमावास्याम् ॥

अमावसी । स्त्री । अमामस्याम् ॥

अमावस्या । स्त्री । अमायाम् ॥ अमास
हवसतोऽस्याम् चन्द्रार्कावित्यमोपप
दाद्वसे रमावस्यदन्यतरस्यामित्यधि
करणे ण्यत् पाक्षिकोह्रस्वश्चनिपात-
सिद्ध: ॥ सूर्याचन्द्रमसोर्य: पर:सन्नि
कर्ष: साऽमावस्येतिगोभिल: । पर:स
न्निकर्षश्चउपर्यधोभावा पन्नसमसूत्र
न्यायेनैकावच्छेदेन सहावस्था
नरूपोबोध्य. ॥

अमावासी । स्त्री । दर्शे ॥ इतिशब्दर-
त्नावली ॥

अमावास्या । स्त्री । दर्शे ॥ अमासहव-
सतोऽस्यांचन्द्रार्कौ । अमावस्यदन्यत
रस्यामितिण्यत् । णित्वाद्वृद्धि: ॥

अमित: । त्रि । अपरिच्छिन्ने ॥ अपरि

च्छेदे ॥

अमितौजा.। त्रि। अतिवीर्यशालिनि । अमितमपरिच्छेद्यमोजः सामर्थ्यं यस्य ॥

अमित्रः। पुं। रिपौ ॥ अमति गच्छति। अमगतौ रोगेवा। अमेर्द्विषतिचिदिति इत्रः ॥

अमी। त्रि। रोगिणि ॥ अमोरोगस्तद्वान्। इनि ॥

अमीवम्। न। क्रौर्य्ये ॥ पापे ॥ दुःखे। अमीवहन्नितिलक्ष्यम् ॥

अमुक्तम्। न। छुरिकाविशेषे। हायच्छुरीति यस्यभाषा॥ त्रि। मुक्तिरहिते। अत्यक्ते॥

अमुतः। I। अमुष्मादित्यर्थे। तसिल्।

अमुत्र। I। भवान्तरे। परलोके। अमुष्मिन्। अदस सप्तम्यास्त्रल् ॥

अमुर्हि। I अमुष्मिन्काले॥

अमुष्यपुत्र। पुं। स्त्री। प्रख्यातवंशजे। कुलीने॥

अमूढ.। त्रि। वेदान्तप्रमाणसञ्जात सम्यक्ज्ञाननिवारितात्माज्ञाने।

अमूदृशः। त्रि। एवं प्रकारे। एतद्रूपे॥

अमूर्त्त.। त्रि। निरवयवे। वाय्वन्तरीक्षयोः। यथा। सन्निवेशेनेच दृश्यो यस्यतन्मूर्त्तमुच्यते। चिन्त्यमचिन्त्यंमूर्त्तममूर्त्तंत्वितरद्द्वयमिति वेदविदः। न्यायमतेनाकाशकालदिगात्मसु। एषांसामान्यगुणाः। सङ्ख्यापरिमितिपृथक्त्वसंयोगविभागाः। तत्राकाशस्यविशेषगुणः शब्दः। कालदिशोर्विशेषगुणोनास्ति। आत्मनोविशेषगुणास्तु। बुद्धिसुखदुःखेच्छाद्वेषयत्नभावनाख्यसंस्काराधर्माधर्मौचेति॥

अमूर्त्तविद्। त्रि। शून्यवादिनि॥ अमूर्त्तःसर्वाकारशून्यो निस्स्वभाव परमार्थ. इति शून्यवादिनां कल्पनैव। यत. परमार्थो निस्स्वभावश्चेति व्याघातः॥

अमूलः। त्रि। मूलहीने।

अमूलकम्। त्रि। मूलरहिते॥ प्रमाणशून्ये। नास्तिमूलंयस्य। कप्॥

अमूला। स्त्री। अग्निशिखा दृक्षे। ओषधिविशेषजातौ मूलाग्रणवति-टाप्।

अमृणालम्। न। नलदे। वीरणमूले॥ मृणालमिव। सादृश्येऽनञ॥

अमृतम। न। यज्ञशेषे। होमावशिष्टाज्यपुरोडाशादौ। अमृतमिवअमृतसाधनत्वात्॥ पीयूषे॥ सलिले। घृते। अयाचितागतवस्तुनि॥ अमृतंस्यादयाचितमितिमनु॥ मोक्षे॥ अविद्यमानं मृतंमरणमत्र॥ अन्ने॥ नम्रियंतेऽनेन।तनिमृङ्भ्यां

क्तिश्चेतितन् । राजनिर्घण्टे त्वमृत शब्देनविषसामान्यं वत्सनाभः पारदश्चोक्तः ॥ काञ्चने ॥ स्वादुनि । आनन्दे ॥ रसायने ॥ स्वस्मिन् । हृद्ये ॥ गोरसे ॥ देवानां सर्वप्राणिनाञ्च जीवने । पदेपदे स्वादुनि । सुरायाम् । आभूतसम्प्लवस्थाने । योगविशेषे । मयथो । बुधमन्दगतानन्दाकुजेभद्राजयागुरौ । भृगौरिक्तामृतप्रोक्तं पूर्णाचरविचंद्रयोरिति । पञ्चमान्तिकस्य द्वितीयपर्याये । पुं । धन्वन्तरौ । देवे ॥ मरणादिदेहेन्द्रियमनोधर्मवर्जिते आत्मनि । वाराहीकन्दे । वनमुद्गे । त्रि । अविनाशिनि । अमरणधर्मिणि । देवतात्मभावे ।

अमृतगतिः । स्त्री । छन्दोविशेषे । यथा । यदिदशमंगुरुविहितं विशिखमितं सुकविहितम् । अमृतगतिः फणिकथिता दलयतिकाव्यपविदितेति ।

अमृतजटा । स्त्री । जटामांस्याम् ।

अमृततरङ्गिणी । स्त्री । ज्योत्स्नायाम् ।

अमृततिलका । स्त्री । वर्णवृत्ते । यथा । नगणपयोधरञ्चिरा कुसुमविराजितसुकरा । वसुलघुदीर्घयुगलका भवतिसखेऽमृततिलकेति । स्वरितगतिश्चनजनगैः ।

अमृतत्वम् । न । अमरणभावे । स्वात्मन्यवस्थाने । मोक्षे ।

अमृतदीधिति. । पुं । इन्दौ ॥

अमृतनालिका । स्त्री । कर्पूरनालिकप्रभेदेपक्वान्नविशेषे ।

अमृतफलम् । न । नासपातीति यवनेषुप्रसिद्धे रुचिफले । यथा । अमृतफलंलघुहृष्यंसुस्वादुचीनहरेद्दोषान् । देशेषुमुद्गलानांवहुलंतल्लभ्यतेलोकैरिति । पारेवतद्रौ । पटोले ।

अमृतफला । स्त्री । द्राक्षायाम् । आमलक्याम् ॥

अमृतयोग. । पुं । पञ्चामृते योगविशेषे ॥ अपिच । हस्तमूलोत्तरापुष्यारोहिणीरेवतीरवौ । सोमेभद्राश्विनीहस्ताफलगुनीविधिविष्णुयुक् । कुजेश्विन्यपुष्याग्निसार्पपौष्णसमीरणाः । बुधेशतभिषामैत्रकृत्तिकारोहिणी तथा ॥ गुरौपुष्यानुराधाच स्वातीचैवपुनर्वसु. । भृगौभगाजयुङ मित्रतुरङ्गश्रवणानिच । शनौस्वातीरोहिणीचामृतयोगंविदुर्बुधाइति । पुनश्च । आदित्यभौमयोर्नन्दाभद्राशुक्रशशाङ्कयो' । जयाचेस्याद्गुरौरिक्तापूर्णार्कि चामृताशुभाइति ॥ अपरञ्च । रवौमूला । सोमेश्रवणा । भौमेउत्तराभाद्रपदा । बुधेकृत्तिका । गुरौपुनर्वसू । शुक्रेपूर्वफाल्गुनी ।

शनौस्वातिनक्षत्रश्चेत्तदाऽमृतयोगो भवतीति ॥

अमृतरसा । स्त्री । अंदरसाइतिभाषाप्र सिद्धे पक्वान्नभेदे ॥ यथा । तृतीय भागखण्डेनमिश्रितंषष्टिपिष्टकम् । शुभ्रमीषद्दधियुतंमर्दयेद्दृढपाणिना ॥ एवंसमुदितंकृत्वास्थापयेद्रजनी- मितम् । ततोऽन्यस्मिन्नहनितच्चिचि तंनिस्तुचैस्तिलैः ॥ विधायपूपकंतेन तल्लिकायांघृतेपचेत् । ततोऽमृतर साजातावातहृद्बलवर्द्धिनी ॥ अरोच कहराहृद्यासुशीतापित्तवृद्धिमेति ॥ कपिलद्राक्षायाम् ॥

अमृतवल्ली । स्त्री । गुडूच्याम् ॥

अमृतसंयावः । पुं । पक्वान्नविशेषे ॥ स यथा । समितांमधुदुग्धेनमर्दयित्वा ... ।पचेद्घृतेत्तमेतस्मे न्यसे त्पाकंनवेघटे॥ततोमरिचचूर्णेनाथ खण्डचूर्णेश्चचूर्णितम् । कुर्यात्कर्पूरसं युक्तंसंयावममृतोपमम् ॥ संयावममृ तंस्वादुपित्तघ्नंमधुरंस्मृतम् । वृष्यंश्र मघ्नंहृद्यविषावेगुरुभाषितमिति ॥

अमृतसम्भवा । स्त्री । गुडूच्याम् ॥

अमृतसारजः । पुं । गुडे ॥ तवराजो द्भवखंडे ॥

अमृतसिद्धियोग. । पुं । योगविशेषे ॥ यथा । हस्तामृगशिराश्वाजीमैत्र



पुष्येचरेवती । रोहिण्यर्कादिषु क्षे याऽमृतसिद्धिर्यथाक्रममिति ॥

अमृतसूः । पुं । विधौ ॥ स्त्री । अदितौ ॥ अमृतानांदेवानांसूः प्रसूतिः ॥

अमृतसोदरः । पुं । घोटके ॥ इतिरा जनिर्घण्टः ॥

अमृतस्रवा । स्त्री । रुदन्त्याम् ॥ उप वल्लिकायाम् । घनवल्ल्याम् ॥

अमृता । स्त्री । मागध्याम् ॥ पथ्यायाम् ॥ कथितामांसलाऽमृ तेतिलक्षणाम् । विरेचनेप्रशस्तेयम् ॥ गुडूच्याम् ॥ नमृतमस्याः ॥ आमलक्याम् ॥ नम्रि यंतेऽनया । तन्निमृ ज्यांकिञ्चेति तन् ॥ मदिरायाम् ॥ इन्द्रवारुण्या- म् ॥ ज्योतिष्मत्याम् ॥ गोरक्षदुग्धा याम् ॥ अतिविषायाम् ॥ रक्तत्रिवृ ति ॥ दूर्वायाम् ॥ तुलस्याम् ॥

अमृतान्धाः । पुं । देवे ॥ अमृतमन्धो ऽन्नंयस्यसः ॥

अमृताफलः । पुं । पटोले ॥ इतिद्रव्या भिधानम् ॥

अमृतायमानः । त्रि । अमृतरसभरिते ॥ आनन्दसुधारसपुष्टे ॥

अमृतांशुः । पुं । विष्णौ ॥ आत्मामृतर समश्नाति इति तथा ॥ अमृतवद् मृतस्वरूपानन्दरसमश्नात्यनुभवति । अम्र० । अमंशयएवा ॥

अमृताशन' पुं। देवे ॥ अमृतमशन मस्य ॥

अमृतासङ्गम् । न । कर्परिकातुत्थे ॥

अमृताहरणः । पुं । गरुडे ॥ अमृत मा हरणं यस्यसः ॥

अमृताह्वम् । न । लघुविल्वफलाकृति खुरासानदेशजेफलविशेषे । अमृत फले । नाशपातीतीतरजनभाषा प्रसिद्धे ॥

अमृतोत्पन्नम । न । खर्परीतुत्थे ॥

अमृतोत्पन्ना । स्त्री । मक्षिकायाम् ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अमृतोद्भवम् । न । खर्परीतुत्थे । तुत्थे ॥

अमृतोपमः । त्रि । प्रीत्यतिशयास्पदे ॥ अमृत मुपमायस्य ॥

अमृष्यमाणः । त्रि । असहमाने ॥

अमेधाः । त्रि । मूढे ॥

अमेध्यम् । न । पुरीषे ॥ अयज्ञार्हे । अशुचिमांसादौ ॥ त्रि । अपवित्रे ॥ नमेध्यमितिविग्रहः ॥

अमेयः । त्रि । अपरिच्छेद्ये । इयानि तिमातुमशक्ये ॥ नमेयः ॥

अमोघः । पुं । नदविशेषे ॥ त्रि । सफले । अव्यर्थे ॥ परमेश्वरे ॥ सद्भिपूजितःस्तुतःसंस्मृतःसर्वंफलंददातिनवृथाकरोतीत्यमोघः ॥ नमोघः ॥

अमोघदृक् । त्रि । यथार्थवीर्ये ॥

अमोघा । स्त्री । हरीतक्याम् ॥ विडङ्गे ॥ पाटलाद्ये ॥

अम्नर् । I । } ध्रौव्ये ॥ साम्प्रतिके ॥
अम्नस् । I । }

अम्बकम् । न । लोचने ॥ ताम्रे ॥ अम्ब क'पितेतिच्यम्बकेरामाश्रमः ॥

अम्बरम् । न । पतत्त्रिमेघसञ्चारप्रदेशशब्दपरिसिद्धविद्याधरसञ्चारप्रदेशे । आकाशे ॥ स्वनामख्यातसुगन्धिद्रव्ये ॥ वस्त्रे ॥ कार्पासे ॥ अभ्रधातौ ॥ लज्जा इशमे ॥ अम्बते शब्दायते । अविशब्दे । भावेघञ । अम्बः शब्दः । तंराति ।रातेःकः । अम्बरम् ॥ अम्बते अभ्यतेवा । अविशब्दे । बाहुलकादरोवा ॥

अम्बरलेखि । न । अभ्रङ्कषे ॥

अम्बरीषः । पुं । मान्धातुस्तनये ॥ सूर्यवंशीयनाभागात्मजेपरमभागवते ॥ नरकभेदे ॥ किशोरे ॥ भास्करे ॥ विष्णौ ॥ खण्डपरशौ ॥ आम्रातके ॥ अनुतापे ॥ न । रणे ॥ भ्राष्ट्रे । भर्जने ॥ पचन्तितस्मिन्नम्बरीषम् । निपातनात्साधु ॥ अम्ब्यतेऽनेना । अविशब्दे । अम्बरीषइतिसाधुः । मण्डकपाकभाजने ॥

अम्बष्ठः। पुं । देशभेदे ॥ विप्राद्विवाहितवैश्यासुते ॥ ब्राह्मणाद्वैश्यकन्या

यामम्बष्ठोनामजायते । अयंचिकित्सावृत्तिर्वैश्यइतिख्यात. ॥ हस्तिपके ॥ कायस्थजातिविशेषे ॥ अम्बेतिष्ठति । ष्ठागतिनिवृत्तौ । सुपीतिकः । अम्बाम्बेतिषत्वम् ॥

अम्बष्ठकी । स्त्री । पाठायाम् । पटाडू इतिहिमगिरि प्रसिद्धलतायाम ॥

अम्बष्ठा । स्त्री । अम्ललोण्याम् । चाङ्गेर्याम् ॥ शठाम्बायाम् ॥ पाठायाम ॥ यूथिकायाम । जूहीतिख्यातपुष्पे ॥ ब्राह्मणाद्वैश्यायामुत्पन्नायाम् ॥ अम्बेव मातेवतिष्ठति । सुपिस्थइतिकः । अम्बाम्बेतिषत्वम् । डयापोरितिह्रस्व ॥

अम्बष्ठिका । स्त्री । अम्बष्ठायाम् । पाठायाम् ॥ ब्राह्मण्याम् । वह्मनेटी इतिभाषा प्रसिद्धायाम् ॥

अम्बष्ठी । स्त्री । अम्बष्ठायाम ॥

अम्बा । स्त्री । मातरि ॥ दुर्गायाम् ॥ नाट्योक्त्यापिमातरि ॥ पाण्डुराज्ञो-मातुः स्वसायाम् ॥ अम्बष्ठायाम् । शठाम्बायाम् ॥

अम्ब्यते शब्दयते । अविशब्दे । गुरोश्चहलइत्यः ॥

अम्बामख. । पुं । नवरात्रोत्सवे ॥

अम्बालिका । स्त्री । अम्बायां ॥ काशिराजस्यसुतायाम । पाण्डुराज्ञो मातरि ॥

अम्बासुत. । पुं । गणेशे ॥

अम्बिका । स्त्री । पार्वत्याम् ॥ अम्बैवाम्बिका । जगन्मातृत्वात् ॥ मातरि ॥ धृतराष्ट्रजनन्याम् । काशिराजतनयायाम् ॥ जैनदेव्यन्तरे ॥ कटुक्याम् ॥ अम्बष्ठायाम् ॥

अम्बु । न । जले ॥ चतुर्थभवने ॥ ह्रीवेरे ॥ अम्बते । अविशब्दे । वा हृ्स्वकादुः ॥

अम्बुकण्टक: । पुं । कुम्भीरे ॥ शृङ्गाटके ॥

अम्बुकिरात: । पुं । कुम्भीरे ॥ इतिचिकाण्डशेष. ॥

अम्बुकीश. । पुं । हूसइतिप्रसिद्धे जलजन्तुविशेषे । शिशुमारे ॥ इतिहेमचन्द्र. ॥

अम्बुकूर्म: पुं । शिशुमारे ॥ इतिहेमचन्द्र:

अम्बुकेशर: । पुं । छोलङ्गवृक्षे ॥ इतिरत्नमाला ॥

अम्बुचामरम् । न । शैवले ॥ इतिजटाधर: ॥

अम्बुज: । पुं । हिज्जले । निचुले ॥ न । कमले ॥ वज्रे ॥ शङ्खे ॥ अम्बुनिजात. । जनीप्रादुर्भावे । सप्तम्यां जनेर्ड: ॥

अम्बुजन्म । न । पद्मे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥ त्रि । जलोद्भवे ॥

अम्बुतालः । पुं । शैवाले ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अम्बुदः । पुं । मेघे ॥ मुस्तायाम् ॥ अम्बुददाति । डुदाञ् । कः ॥

अम्बुधरः । पुं । मुस्तके ॥ मेघे ॥

अम्बुधिः । पुं । पारावारे ॥ अम्बूनिधीयन्तेऽत्र । डुधाञ् । कर्मण्यधिकरणे चेतिकिः ॥

अम्बुधिस्रवा । स्त्री । गृहकन्यायाम् ॥

अम्बुपः । पुं । चक्रमर्दे ॥ वरुणे ॥ शतभिषाख्येनक्षत्रे ॥

अम्बुपतिः । पुं । वरुणे ॥

अम्बुपत्रा । स्त्री । उच्चटायाम् ॥

अम्बुपर्णी । स्त्री । पृश्न्याम् ॥

अम्बुप्रसादः । पुं । कतकवृक्षे ॥

अम्बुप्रसादनम् । न । कतके । निर्मली इतिख्याते फले ॥

अम्बुमायम् । न । अनूपे ॥ अम्बु मायंयत्र ॥

अम्बुभृत् । पुं । समुद्रे ॥ मेघे ॥ मुस्तके ॥ अम्बुबिभर्त्ति । डुभृञ् धारणपोषणयोः । क्विप् तुकौ ॥

अम्बुमान् । पुं । कच्छे ॥

अम्बुमात्रजः । पुं । शम्बूके ॥ अम्बुमात्रे जायते जनी० । डः ॥



अम्बुरः । पुं । द्वाराधःकाष्ठे । गोवराट इतिगौडभाषा प्रसिद्धे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अम्बुरुहम् । न । कमले ॥ अम्बुनि रोहति । रुहे कः ॥

अम्बुरुहा । स्त्री । स्थलपद्मिन्याम् ॥

अम्बुरुहिणी । स्त्री । नलिन्याम् ॥

अम्बुवाची । स्त्री । रजस्वलायाभूमौ ॥ यथा । यद्वारे यत्काले मिथुनसङ्क्रमणं भूतं तद्वाराभ्यन्तरे तावत्कालावधिविशत्यादि दण्डाधिकदिनत्रयमम्बुवाची । साचार्द्रानक्षत्रायपादावच्छेदेनतिष्ठति । तस्यदिनस्यनिषिद्धत्वमुक्तं ज्योतिःशास्त्रे । यथा । मृगमिरसिनिवृत्ते रौद्रपादेम्बुवाचीभवतिऋतुमतीखलुपृथ्वीवर्ज्जयेत् त्रीण्यहानि । यदिवपतिकृषाणः क्षेत्रमासाद्यबीजं न भवतिफलभागी शस्यचाण्डालपाकः ॥ नस्वाध्यायोवषट्कारोनदेवपितृपूजनम् । नापिपाठोवीजवापोनवाभूखननादिकमित्यादि । विशेषः परिशिष्टे ॥ तत्रसर्पभयोपशमनाय दुग्धंपेयम् । यथोक्तं ज्योतिषे । रजोयुक्ताम्बुवाचीचरौद्रायपादगेरवौ । नास्यांपाठोवीजवापोनाहिभीर्दुग्धपानतइति ॥ रजोयुक्त्वाऋतुमतीपृथ्वीत्यर्थः ॥

अम्बुवासिनी । स्त्री । पाटलौ ॥

अम्बुवासी । स्त्री । पाटलावृक्षे ॥

अम्बुवाहः । पुं । अम्बुदे ॥ अम्बुवहति । वह० । कर्मण्यण् ॥ मुस्तके ॥

अम्बुवेतसः । पुं । जलवेतसे ॥ अम्बुनिजातो वेतसः । शाकपार्थिवादिः ।

अम्बुशिरीषिका । स्त्री । शिरीषिकायाम् । जलशिरीषे ॥

अम्बुसंरोधः । पुं । जलधौ ॥ अम्बुसंरुध्यतेऽनेन ॥

अम्बुसर्पिणी । स्त्री । जलौकायाम् ॥

अम्बूकृतम् । त्रि । सनिष्ठ्यूते । श्लेष्मकणानिर्गमसहितवचसि ॥ अम्बुशब्द उपचारात्तद्वति । अनम्बु अम्बु अकारि । च्विः । च्वौचेतिदीर्घः । क्तः ॥

अम्ब्लः । पुं । अम्लरसे ॥ इत्युणादिकोषः । अम्बते । अविशब्दे । मूशक्यम्बिभ्यः क्लः ॥

अम्भः । न । जले ॥ आप्नोति आप्यते वा । आप्लृव्याप्तौ । उदकेनुम् भश्चेतिह्रस्वोभान्तादेशो नुमागमश्च ॥ अम्बतेवा । अभिशब्दे । असुन् ॥ देवे ॥ मनुष्ये ॥ पितरि ॥ असुरे ॥ तानि ह वा एतानि चत्वार्यम्भांसि देवा मनुष्याःपितरोऽसुरा इतिश्रुतेः ॥ वाले । ह्रीवेरे ॥ लग्नाच्चतुर्थराशौ ॥ नवविधतुष्टिषु प्रकृत्याख्यातुष्टि राध्या त्मिका अम्भउच्यते । यथा कस्यचिदुपदेशः विवेकसाक्षात्कारोऽपि प्रकृति परिणामभेदः तच्चप्रकृतिरेवकरोति इतिकृतं तेध्यानाभ्यासेन तस्मादेवमेवास्तु वत्सेतियेयमुपदिष्टस्य।शिष्यस्यप्रकृतौतुष्टिःसाप्रकृत्याख्याअम्भउच्यते ॥

अम्भःसारम् । न । } मुक्तायाम ॥ इतिशब्दनिर्घण्टः ॥
अम्भस्सारम् । न । }

अम्भःसूः । पुं । } धूमे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥
अम्भस्सूः । पुं । }

अम्भोजम् । न । अम्बुजे ॥ पु । चन्द्रमसि ॥ त्रि । जलोद्भवे ॥ अम्भसिजः । जनी० । सप्तम्याञ्जनेर्डः ॥

अम्भोजखण्डम् । न । अम्भोजानां समूहे ॥ कमलादिभ्यःखण्डः ॥

अम्भोजन्म । न । कमले ॥

अम्भोजयोनिः । पुं । वेधसि ॥ अम्भोजं योनिः प्रादुर्भावस्थानमस्य । नारायणनाभिकमलजत्वात् ॥

अम्भोजिनी । स्त्री । पद्मसमूहे । नलिन्याम् ॥ पद्मवतिदेशे ॥ अम्भोजान्यसन्त्यत्र । पुष्करादिभ्यादिनिः ॥

अम्भोदः । पुं । जलदे ॥ मुस्तके ॥ अम्भो ददाति । दा० । कः ॥

अम्भोधरः । पुं । अम्बुधौ । मेघे ॥ मुस्तके ॥ धरति ॥ धृञ्धारणे । अच् । अ

म्भसांधरः ॥

अम्भोधिः। पुं। सिन्धौ। समुद्रे॥ अम्भां सिधीयंतेऽत्र। धाञः कर्मण्यधिकरणेचेति किः॥ जलाशये॥

अम्भोधिवल्लभः। पुं। प्रवाले॥ इतिराजनिर्घण्ट॥

अम्भोनिधिः। पुं। अब्धौ। समुद्रे॥ अंभांसि निधीयंतेऽस्मिन्। कर्मण्यधिकरणेचेति धाञः किः॥ अम्भसां निधिर्वा॥ हरौ॥ अम्भांसि देवादयो निधीयन्ते ऽस्मिन्निति। देवमनुष्य पितृसुरादेवादयः॥

अम्भोरुहम्। न। अम्बुजे॥ अम्भसिरोहति। रुहप्रादुर्भावे। इगुपधेतिकः॥

अम्मयम्। त्रि। अम्बुमये। आप्ये। जलविकारे फेनादौ॥ अपांविकारः। एकाचोनित्यमितिमयट्। स्त्रियामम्मयी॥

अम्रः। पुं। आम्रवृक्षे॥ न। आम्रफले॥ इतिशब्दरत्नावली॥

अम्रातः। पुं। आम्रातके॥

अम्रातकः। पुं। आम्रातके। अम्बाडा इति ख्याते॥ अकजमतति। अतसातत्यगमने कृञादिभ्योवुन्। रलयोरैक्यम्॥

अम्लः। पुं। रसान्तरे। खट्टा इतिभाषा॥ तोयाग्निगुणबाहुल्यादम्लइतिश्रुतः॥ अस्यगुणायथा। अम्लोग्न्योग्नोवह्निःशीतोरुच्यःपित्तकफास्रदः। विवन्धानाहहृष्टिघ्नो दन्ताक्षिभूनिकोचनइति॥ अम्लवेतसे॥ इतिराजनिर्घण्टः॥ न। तक्रे॥ अम्यतेशब्द्यते भोक्तृभिः। अमगत्यादिषु। मूशक्यम्बिभ्य.क्ल इतिवाहुलकाद्मे.क्लः॥ त्रि। अम्लरसवति॥ अर्शआद्यच्॥

अम्लक'। पुं। लकुचवृक्षे॥ इतिशब्दरत्नावली॥

अम्लकाण्डम्। न। लवणतृणे॥

अम्लकेशर'। पु। मातुलुङ्गे॥ अम्ला. केशरा'अस्य॥

अम्लचूड.। पुं। अम्लद्रव्यविशेषे। शाकाम्ले। चिञ्चासारे॥ इतिराजनिर्घण्ट.॥

अम्लजम्बीरः। पुं। अम्लनिम्बूके॥

अम्लद्रवः। पुं। वीजपूरादिरसे॥

अम्लनायकः। पुं। अम्लवेतसे॥

अम्लनिशा। स्त्री। शट्याम्॥

अम्लपञ्चफलम्। न। अम्लरसयुक्तपञ्चप्रकारफले॥ तद्यथा। कोलम् १। दाडिमम् २। वृक्षाम्लम् ३। चुक्रिका ४। अम्लवेतसमिति ५॥ मतान्तरेतु। जम्बीरम् १ नारङ्गम् २ अम्लवेतसम् ३ तिन्तिडीकम् ४ वीजपूरमिति ५ राजनिर्घण्टः

अम्लपत्रः । पुं । अश्मन्तकवृक्षे ॥

अम्लपत्री । स्त्री । क्षुद्राम्लिकायाम् ॥ पलाशीलतायाम् ॥

अम्लपनसः । पुं । लिकुचे ॥ अम्लश्चासौ पनसश्च ॥

अम्लपूरम् । न । वृक्षाम्ले ॥

अम्लफलम् । न । अम्लो रू॰प्र॰ वृक्षाम्ले ॥ पुं । आम्रवृक्षे ॥

अम्लभेदनः । पुं । अम्लवेतसे ॥

अम्लरुहा । स्त्री । मालवदेशजनागवल्ली प्रभेदे ॥

अम्ललोनिका । स्त्री । चाङ्गेर्य्याम् ॥

अम्लवती । स्त्री । क्षुद्राम्लिकायाम् । चाङ्गेर्य्याम् ॥

अम्लवर्गः । पुं । आम्रादिवर्गे ॥ यथा । आम्रं आम्रातकोधात्री लकुचंचकपित्थकम् । नारङ्गं द्विविधा जम्बूः करमर्द्दं पियारकम् ॥ दाडिमंप्राचीनामलका दरं तूदकम् । बीजपूरं चजम्बीरं निम्बुकं चुक्रिकाम्लवेतसम् ॥ वृक्षाम्लं हरिमन्थं च चाङ्गेरीत्यम्लवर्गकः । निम्बूकं दाडिमं धात्रीफलमम्लं प्रकाशते । प्रदर्यादम्लसात्म्याय काञ्जिकं वा पुरातनमिति ॥ ज्वराधिकारस्थोऽयं श्लोकः ॥

अम्लवल्ली । स्त्री । त्रिपर्णिकानामकन्दविशेषे ॥

अम्लवाटिका । स्त्री । नागवल्लीभेदे ॥

अम्लवातकः । पुं । आम्रातके ॥

अम्लवास्तूकम् । न । चुक्रे । चूका इति प्रसिद्धशाके ॥

अम्लवीजम् । न । वृक्षाम्ले ॥

अम्लवृक्षम् । न । वृक्षाम्ले । इम्लीति प्रसिद्धवृक्षे ॥

अम्लवेतसः । पुं । स्वनामख्यातवृक्षे । सहस्रवेधिनि । चुक्रे ॥ गुणा यथा । अम्लवेतसमत्यम्लं भेदनं लघु दीपनम् । हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्तलोहितदूषणम् ॥ रूक्षं विण्मूत्रदोषघ्नं प्लीहोदावर्त्तनाशनम् । हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत् ॥ आमवातामयध्वंसिच्छागमांसद्रवत्वकृत् । चणकाम्लगुणं चैतल्लोहसूचीद्रवत्वकृदिति ॥ अम्लश्चासौ वेतसश्चेति समासात् ॥

अम्लशाकः । पुं । अम्लचुक्रे ॥ न । चुक्रे ॥ वृक्षाम्ले ॥

अम्लसारः । पुं । अम्लवेतसे ॥ निम्बूके ॥ हिन्ताले ॥ न । काञ्जिके ॥

अम्लहरिद्रा । स्त्री । शट्याम् ॥ इति राजनिर्घण्टः ॥

अम्ला । स्त्री । चिञ्चायाम् ॥

अम्लाङ्कुशः । पुं । अम्लवेतसे ॥

अम्लातकः । पुं । अम्लादने ॥

अम्लादनः । पुं । कुरण्टके । अम्लाने ॥ पीयावांसा इतिप्रसिद्धे । वाणपुष्प इतिगौडेषु विख्याते ॥ गुणा यथा । अम्लादनः कषायोष्णः स्निग्धः स्वादुस्तिक्तकइति ॥

अम्लानः । पुं । महासहायाम् । कठसरय्याइतिख्याते ॥ त्रि । निर्मले ॥ न म्लायतिस्म । म्लै० । गत्यर्थाकर्मकेतिक्तः । संयोगादेरातोधातोर्यण्वत इतिनिष्ठानत्वम् ॥

अम्लानिनी । स्त्री । पद्मिन्याम् । पद्मसमूहे ॥

अम्लिका । स्त्री । चिञ्चायाम् ॥ अस्या गुणास्तु ॥ अम्लिकामा गुर्व्वातहरी पित्तकफास्रकृत । पक्वातु दीपनी रूक्षासरोष्णाकफवातनुत् ॥ अम्लिकायाः फलंपक्वं मर्द्दितं वारिणाद्दढम् । शर्करामरिचोन्मिश्रंलवङ्गेन्दुसुवासितम् ॥ अम्लिकाफलसम्भूतंपानकंवातनाशनम । पित्तश्लेष्मकरंकिंचित्सुरुच्यंवह्निबोधकमिति॥अम्लोद्गारे । चाङ्गेरिकायाम् ॥ पलाशीलतायाम् ॥ श्वेताम्लिकायाम् ॥ अम्लोरसोऽस्याअस्ति । अतइनिठनाविति ठन् ॥

अम्लिकावटकः । पुं । भोरीवराइति लोके ॥ विधिर्यथा । अम्लिकास्वेदयित्वातुजलेनसम्यमर्द्दयेत् । तन्नीरे कृतसंस्कारे वटकान्मज्जयेज्जनः ॥ अम्लिकावटकास्ते तुरुच्यावह्निप्रदीपनाः । वटकस्यगुणैः पूर्व्वैरेतेपिचसमन्विताः इतिभावप्रकाशः ॥

अम्ली । स्त्री । चाङ्गेर्याम् ।

अम्लीका । स्त्री । तिन्तिड्याम् ॥

अम्लोटकः । पुं । अम्लकुचाइ इति गौडदेशभाषाप्रसिद्धे अश्मन्तकवृक्षे ॥ इतिरत्नमाला ॥

अयः । पुं । शुभावहविधौ । प्राक्तनशुभकर्मणि । कल्याणप्रापके दैवे । एत्यनेनसुखम् । इण्गतौ । पुंसि संज्ञायामितिघः ॥ पाशकस्यगमने ॥ कस्मिंश्चिद्भागे ॥ द्यूतकृतां प्रदक्षिणगमने ॥ अयतेः कर्त्तरि पचाद्यच् ॥

अयः पानम् । न । नरकविशेषे ।

अयः प्रतिमा । स्त्री । सूर्म्याम् । अयसः प्रतिमा ।

अयः शूलम् । न ।तीक्ष्णउपाये ।

अयत्नः । पुं । दैवादियत्नभिन्ने ॥ त्रि । यत्नरहिते ॥

अयज्ञियः । त्रि । यज्ञानर्हे ॥ पुं । माषे ।

अयत' । त्रि । चेष्टाशून्ये ।

अयथा । ?। उचितस्यान्यथात्वे । मिथ्यार्थे ॥

अयथार्थानुभवः । पुं । तदभाववति त

त्प्रकारकानुभवे ॥ सचसंशयविपर्ययतर्कभेदात्त्रिविध. ॥ अयथार्थश्चासावनुभवश्च ॥ नयथार्थानुभवोवा ॥

अयथार्थस्मृतिः । स्त्री । अप्रमाजन्यायांस्मृतौ ॥ अयथार्था चासौस्मृतिश्च ॥

अयनम् । न । पथि ॥ अयन्ते ईयन्तेवाऽनेन । करणेति ल्युट् युज्वा ॥ भानोरुदग्दक्षिणतोगतौ ॥ यथा । मृगकर्कटसङ्क्रान्ती । द्वे उदग्दक्षिणायनेइति॥ अपिच । द्युमणिसङ्क्रमतोमृगकर्किणोरयनकेभवतइति ॥ अयतेऽस्मिंऽनेन । अयगतौ । ल्युटिच्छत्नुवे ॥ यथा । सौरस्तुवितयं प्रदिष्टमयनमिति ॥ अयते यात्यनेन कृत्तुज्ञयेशाह्वर्योद्दक्षिणामुत्तरांवेति ॥ समरसमारंभकाले योधानांकृथा प्रधानं युद्धभूमौपूर्वापराद्दिग्विभागेनावस्थिति स्थानानि यानि नियम्यन्ते तेषु।मोरचाइतीतरभाषाप्रसिद्धेषु ॥ व्यूहप्रवेशमार्गे॥ गतौ ॥ आश्रये ॥ स्थाने ॥ गेहे ॥ शास्त्रे ॥ यथा । ज्योतिषामयनंनेत्रमिति ॥

अयनांशः । पुं । सूर्यगतिविशेषस्य भागे ॥ यथाह्काळिदासः । शाक. शराम्भोधियुगोनितोहृतोमानंखतर्कैरयनांशकाः स्मृताइति ॥

अयन्त्रित' । त्रि । अनर्गले ॥ नयन्त्रित. ॥

अयवान् । त्रि । भाग्यवति ॥ मतुप् ॥

अयशः । न । अधर्मनिमित्तायां लोकनिन्दायां प्रसिद्धौ । अकीर्त्तौ ॥ नयशः ॥

अयः । न । लोहे ॥ एति अयत्विना । इणगतौ । असुन् ॥

अयस्कान्त' । पुं । चुम्बकाश्मनि ॥ अयः कान्तोऽस्य ॥ कान्तीसार इतिख्यातेकान्तलोहे ॥ सचतुर्विधः । भ्रामकचुम्बकरोमकस्वेद्रकभेदात् ॥ एते रसायने उत्तरोत्तरंगुणिनः । क्रमेण दार्ढ्याङ्गकान्तिकार्श्यनीरोगदायिनइतिराजनिर्घण्टः ॥

अयस्कारः । पुं । लोहकारे ॥ अयःकरोति । डुकृञ् करणे । कर्मण्यण् ॥

अयाचितम् । न । अमृतवृत्तौ ॥ यथा । ऋतमुञ्छशिलंप्रोक्तममृतस्यादयाचितमितिमनुः ॥ त्रि । याच्ञांविनालब्धेवस्तुनि । अनर्थिते ॥ पुं । मुनिभेदे । उपवर्षे ॥ व्रतविशेषे ॥ नयाचितम् ॥

अयाज्यः । त्रि । व्रात्ये ॥ नयाज्यः ॥

अयानम् । न । स्वभावे ॥ इतिहारावली ॥ अगमने ॥

अयानयम् । न । द्यूतिनांस्थानविशेषे॥ तेषांगतिविशेषे ॥ अयसह्निऽनतं-

नय. ॥

अयानयीनः । पुं । शारे । अक्षोपकरणे ॥ अयानयंस्थलविशेषंनेतव्यः । अनुपदसर्वान्नायानयमित्यादिनाख ॥ अचेयंद्यूतशास्त्रस्यमर्यादा । चतस्रो वीथयः प्रत्येकंद्वादशकोष्ठोपेताः । शारास्तुत्रिंशत् । तेच एकैकेनकितवेनपंचदशस्ववामपार्श्वस्थ प्रथमकोष्ठ पर्यंतंप्रदक्षिणप्रसव्यगतिभ्यांनेयाः । सर्वेष्वायानयीनाः । ससहायस्यशारस्यपरैर्नाक्रम्यते पदम् । असहायस्तु शारेण परकीयेणबाध्यते इत्यादि तच्छास्त्राद्बोध्यम ॥

अयाः । पुं । वह्नौ ॥ एति । इण्° । आसि. ॥

अयि । ा । प्रश्ने ॥ अनुनये ॥ सम्बोधने । अनुरागे ॥ ईयते अय्यतेवा । इः इन्वा ॥

अयुक्छदः । पुं । सप्तपर्णवृक्षे ॥

अयुक्त । त्रि । अजितचित्ते । सर्वदाविषयापहृतचित्तत्वेन कर्त्तव्येष्वनवहिते । असूचिते ॥ अमिश्रिते ॥ न युक्तः ॥

अयुक्तम् । ा । अनर्थे ॥

अयुग्मः । पुं । विषमे ॥

अयुग्मच्छदः । पुं । सप्तपर्णवृक्षे ॥ अयुग्माः छदायस्य ॥

अयुतः । त्रि । असंयुक्ते । अयुक्ते ॥ न । दशसहस्रे १०००० ॥ नयुतम ॥

अयुतसिद्धौ । पुं । ययोर्द्वयोर्मध्ये एकमपराश्रितमेवतिष्ठते तावयुतसिद्धौ ॥ यथा । अवयवावयविनौ गुणगुणिनौ क्रियाक्रियावन्तौ जातिव्यक्ती विशेषनित्यद्रव्येचेति ॥

अये । ा । क्रोधे ॥ विषादे ॥ सम्भ्रमे ॥ स्मरणे ॥ सम्बुद्धौ ॥

अयेयः । त्रि । अयातव्ये । यान विनैव साध्ये ॥ यातुंयोग्य । या° । अचोयत् । ईयति । गुणः । नयेयः ॥

अयोगः । पुं । विधुरे ॥ कूटे ॥ विश्लेषे ॥ कठिनोद्यमे ॥ वमनविरेचनादीनां प्रतिलोमप्रवृत्तौ अल्पप्रवृत्तौच ॥ तदुक्तं वैद्यके । योग.सम्यक्प्रवृत्तिः स्या दतियोगोतिवर्त्तनम् । अयोगः प्रातिलोम्येननचाल्पंवाप्रवर्त्तनमिति ॥ नयोगः ॥

अयोगव । पुं । आयोगवे । शूद्राद्वैश्य कन्यायामुत्पन्ने ॥ इतिजटाधरः ॥

अयोगुडः । पुं । लौहगुलिकायाम् । गोली इतिभाषा प्रसिद्धायाम् ॥

अयोग्रम । न । मुसले ॥ अयोऽग्रेऽस्य ॥

अयोग्रकम् । न । मुसले ॥

अयोघनः । पुं । लौहपुञ्जे । हथौडा इत्यादि भाषाप्रसिद्धे लौहमुद्गरे ॥ अ

योष्न्यतेऽनेन । इन॰ । करणेऽयो विद्रुब्धित्यप् घनादेशश्च ॥

अयोध्या । स्त्री । सरयूतीरे द्वादशयोजनायतायां साकेतपुर्य्याम् । उत्तरकोशलायाम ॥ त्रि । युद्धानर्हे ॥

अयोनिजः । पुं । हरौ ॥ योनौ योनिपदलक्षितायां जनन्यां न जायते । जनो प्रादुर्भावे । सप्तम्यां जनेर्डः ॥ स्त्री । सीतायाम् । जानक्याम् ॥

अयोमलम् । न । मण्डूरे । लौहकिट्टे ॥

अयोमुखः । पुं । असुरविशेषे ॥

अरम् । न । शीघ्रे ॥ चक्राङ्गे । चक्रस्य नाभिनेम्योर्न्तरालस्थकाष्ठे ॥ ऋच्छति श्यर्त्ति वा । ऋच्छगत्यादौ । ऋ हिंसायां वा । पचाद्यच् । शीघ्रार्थे क्रिया विशेषणत्वादसत्वे वर्त्तमानोयं क्लीबः द्रव्यगामीतु त्रिलिङ्गः ॥ ब्रह्मलोकस्थेतसमुद्रोपमे सरसि ॥ जिनानां कालचक्रस्य द्वादशांशे ॥ सतु अवसर्पिण्याः जगन्धगः ॥ जिनानामष्टादशे ऽन्तरे ॥ त्रि । शीघ्रगे ॥

अरकः । पुं । शैवले ॥ पर्पटे ॥

अरग्वधः पुं । राजवृक्षे ॥ इत्यमरटीकायां भरतः ॥

अरघट्टः । पुं । महाकूपे ॥

अरघट्टकः । पुं । घटीयन्त्रे । पादावर्त्ते । महाकूपे ॥

अरजस् । त्रि । निर्मले ॥ नविद्यते रजो रेणुर्यस्मिन् । रजोगुणरहिते ॥

अरजाः । स्त्री । नग्निकायाम् । अनागतार्त्तवायाम् । कुमार्य्याम् ॥ त्रि । रजोगुणरहिते ॥

अरणम् । न । शरणे ॥

अरणिः । पुं । वह्निमन्थे । गणिकारिकावृक्षे ॥ सूर्य्ये ॥ इतिकाशीखण्डम् ॥ पुं । स्त्री । निर्मन्थ्यदारुणि ॥ ऋच्छति । ऋगति प्रापणयोः । अर्त्ति सृधृधमीत्यनिः ॥

अरणिकः । पुं । श्रीपर्णे । अग्निमन्थे ॥

अरणी । स्त्री । अरण्याम् ॥

अरणीकेतुः । पुं । अग्निमन्थवृक्षे ॥

अरणीसुत । पुं । अग्नौ ॥

अरण्यम् । न । वने ॥ स्त्रीजनासङ्कीर्णाश्रमे ॥ दण्डकारण्यादिनवसु ॥ यथा । दण्डकं सैन्धवारण्यं जम्बूमार्गञ्च पुष्करम् । उत्पलावर्त्तकारण्यं नैमिषं कुरुजाङ्गलम् । हिमवानर्बुदश्चैव नवारण्यं विमुक्तिदमिति वराहपुराणम् ॥ अर्य्यते मृगैः । ऋगतौ । अर्त्तेर्निच्चेत्यन्यः ॥ पुं । कट्फलवृक्षे इति शब्दचन्द्रिका ॥

अरण्यकदली । स्त्री । गिरिकदल्याम् ॥

अरण्यकार्पासी । स्त्री । वनकार्पास्याम् । भारद्वाज्याम् ॥ इयंहिमालुया

वृणग्रहवत्तनाग्निनीति राजनिघण्टः ।

अरण्यकुलत्थिका । स्त्री । कुलत्थायाम् । वनकुलथी इतिभाषा ।

अरण्यकुसुम्भः । पुं । वनकुसुम्भे । अग्निसम्भवे । कौसुम्भे ॥ पाकेकटु, श्लेष्मनाशी जठराग्निविवृद्धिकृदित्यस्यगुणाः ।

अरण्यघोली । स्त्री । पत्रशाकविशेषे । वनघोल्याम् ।

अरण्यचटकः । पुं । धूसरे । वनचटके ॥

अरण्यजार्द्रका । स्त्री । वनार्द्रकायाम् । ऐन्द्रे । वन अद्रक इतिभाषा ।

अरण्यजीरः । पुं । वनजीरे ।

अरण्यधान्यम् । न । नीवारे ।

अरण्यमक्षिका । स्त्री । दंशे । अरण्यस्यमक्षिका ।

अरण्यमुद्गः । पुं । मकुष्ठे ।

अरण्यवायसः । पुं । द्रोणकाके ।

अरण्यवासिनी । स्त्री । अत्यम्लपर्णीलतायाम् ॥

अरण्यवास्तूकः । पुं । कुणञ्जरे ॥

अरण्यशालिः । पुं । नीवारे । वनधान्ये ॥

अरण्यशूरणः । पुं । वनशूरणे ॥

अरण्यश्वा । पुं । वृके ॥

अरण्यषष्ठी । स्त्री । ज्येष्ठशुक्लषष्ठ्याम् । यथा । ज्येष्ठमासिसिते पक्षे षष्ठी चारण्यसंज्ञिता । व्यजनैककरास्त



स्यामटन्तिविपिनेस्त्रियः । तांविन्ध्यवासिनींस्कन्दषष्ठीमाराधयन्तिच । कन्दमूलफलाहाराभन्तेसन्ततिंशुभाम् । कन्दंशूरणादि । तद्भिन्नंमूलम् । इतिराजमार्त्तण्डः ॥

अरण्यानी । स्त्री । महावने । महदरण्यमित्यर्थेऽस्मिन्नर्थे इन्द्रवरुणेतिसूत्रस्थेन हिमारण्ययोर्महत्त्वइतिवार्त्तिकेनाऽरण्यशब्दस्यानुगागमस्ततोङीष् ।

अरण्यायनम् । न । अरण्यवासे ॥

अरतत्रपः । पुं । शुनि । वक्रपुच्छे ॥

अरतिः । पुं । क्रुधि ॥ स्त्री । अनवस्थितचित्तत्वे । क्रोधाभावे । रतिविरहे । उद्वेगे । इष्टवियोगान्मनसआकुलीभावे । यथा । स्वामीष्टवस्त्वलाभेन चेतसोयाऽनवस्थितिः । अरतिःसेति । त्रि । रतिहीने । ऋच्छति । ऋ० । वहिवस्यर्त्तिभ्यश्चिदित्यतिः । अर्त्तेश्चेत्यतिर्वा ।

अरत्निः । पुं । सप्रकोष्ठततांगुलिकरे । विस्तृतकनिष्ठबद्धमुष्टिहस्तपरिमाणे । कफोणौ । रत्निभिन्नः । नञ्समासः । यथा । ऋतन्यञ्जीन्यर्त्तेः कत्निच् । बद्धमुष्टिकरोऽरत्निः सोरत्निः प्रहृतांगुलिः । सहस्तइत्यर्थः ।

अरत्नम् । न । वधोडा इतिप्रसिद्धे पाकाभावे । यथा । कर्कान्नमध्यात

सिंहाह्वे सिंहाख्यं सिंहकन्ययोरि-
त्याचारमार्त्तण्ड. ॥

अरन्ध्रः । त्रि । निबिडे ॥

अरपाः । त्रि । अपापे ॥ नविद्यते रपः पापंयस्य ॥

अरम् । I । असमर्थे ॥ अलमित्यव्ययस्य वाऽलमूलेत्यादिना पचेरेफः ॥ अ-त्ये ॥

अररम् । त्रि । छदे ॥ कपाटे ॥ इयर्त्ति । अर्त्तिकमीत्यरच् ॥ अपिधाने ॥

अररिः । पुं । न । कपाटे ॥ ऋच्छति । विच् । अर ऋच्छति । सर्वधातुभ्यइ तीनिः ॥

अररी । स्त्री । कपाट्याम् ॥ इयर्त्ति । ऋगतौ । अर्त्तिकमीत्यरन् । गौ रादिङीष् ॥

अरलुः । पुं । अलङ्कारे ॥ अग्नौ ॥ ऋच्छ ति अर्यतेवा । ऋगतिमापणयोः । अर्त्तेरलुः ॥

अरे । I । आशुसंबुद्धौ । त्वरान्वितस म्बोधने ॥ इतिशब्दरत्नावली ॥

अरलुः । पुं । श्योनाकवृक्षे ॥ इयर्त्ति । ऋगतौ । अर्त्तेरलुः । कपिलकादिः ॥

अरविन्दम् । न । पद्मे ॥ अराकारागिि दलानितत्वात्‍ इत्यादराः तान्विन्दति लभतइत्यर्थे गवादिषुविन्देः संज्ञाया मिति कर्मण्युपो वाधकःशः । शेमु चादीनामितिनुम् ॥ अरंशीघ्रंलिप्सा विन्दतिवा ॥ सारसपक्षिणि ॥ नीलो त्पले ॥ रक्तकमले ॥ ताम्रे ॥ इतिराज निर्घण्टः ॥

अरविन्दिनी । स्त्री । नलिन्याम् ॥ पद्म खण्डे ॥ तडागे ॥ अरविन्दानि सन्त्य त्र । पुष्करादिभ्यादिनिः । ङीप् ॥

अरसिकः । त्रि । अरसज्ञे । अविदग्धे ॥ यथा । अरसिकेषु रसस्यनिवेदनं शिरसि मालिख मालिख मालिख त्युद्भटः ॥

अराजकः । त्रि । राजशून्यदेशादौ ॥ यथा । चौरप्रायं जनपदं हीनसत्त्व मराजकमितिश्रीभागवतम् ॥ अरा जकेहिलोकेऽस्मिन् सर्वतोविद्रुते भयात् । रक्षार्थमस्यसर्वस्यराजानम सृजत् प्रभुरितिमनुः ॥

अरातिः । पुं । अरौ ॥ नरातिसुखम् । रादाने । क्तिच् तिर्वा ॥

अरालः । पुं । सर्ज्जरसे ॥ समदहस्तिनि ॥ त्रि । कुटिले ॥ ऋच्छति । ऋगतौ । विचि अर् । अरमालाति । मूलवि भुजादित्वात्कः ॥ अराः आला तिवा ॥ नरातिदुःखम् । बाहुलका ल्लण्वा ॥

अराला । स्त्री । वेश्यायाम् ॥

अरिः । पुं । शत्रौ । स्वकृतापकारमन-

पेक्ष्य स्वभावात् क्रौर्य्यणामकर्त्तरि । अरेर्गुणा यथा । मास्मंकुलीनंशूरं त्वदर्थंदातारमेवच । कृतघ्नधृतिमन्तंचकष्टमाहुररिंबुधा इति ॥ षण्मुग्रहे । षट्सु ॥ रथाङ्गे । चक्रे । खदिरप्रभेदे । खदिरपत्रिकायाम् । इयर्त्ति विरोधम् । ऋगतौ । अच इः ।

अरित्रम् । न । कर्णे । केनिपातके ॥ ऋच्छत्यनेन । ऋगतौ । अर्त्तिलूधूइतित्रः ।

अरिन्दमः । पुं । पराभिभावके ॥ अरिं दाम्यतीति विग्रहे संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहितपिदमइत्यनेनदाम्यतेः खचि पूर्वपदस्याजन्तत्वाणोमुमागमः ॥ अरीन्कामादीन् दमयतीति वा ॥

अरिमर्द्दः । पुं । कासमर्द्दे ॥

अरिमेदः । पुं । इरिमेदे । विट्खदिरे ॥ अरिरिवमेदः स्नेहोऽस्य ॥ अयंकषायउष्णस्तिक्तोभूतविनाशनःशोथातिसारकासविषवैसर्पनाशीचेतिराजनिर्घण्टे नरसिंहकोशः ॥

अरित्रा । स्त्री । मात्राहत्तभेदे ।यथा । छन्दसिषोडशकलेविलासिनि प्रतिपदमन्त्यमकविलासिनि । अरित्तानामपयोधरधारिणि शेषेनियतलघुहयधारिणि ॥ यथा । किंकीनाशपाशधरगर्जसिनासुखगम्यहासभरमर्जसि । हरिचरणंशरणं नहिपश्यसियन्नामस्मरणादपिनश्यसीति ॥

अरिष. । पुं । अपानमांसजेरोगे । धाराप्रवर्षे ॥

अरिषड्डृकम् । न । विवाहाद्युपयोगिनि गणनाविशेषे ॥ यथा । मकरःकर्किकुलरिपुणा कन्यामेषेणसह भषस्तुलया । कर्किघटौ हषधनुषौ वृश्चिकमिथुनौषड्डृविधाविति ॥

अरिषड्वर्ग. । पुं । कामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्य्येषु ॥ षण्णांवर्ग. षड्वर्गः । अरीणामन्तःशत्रूणांषड्वर्गः ॥ यथा । इत्याकलय्यरंकिंचित्कालादीनामनागपि । आसुसेराम्रतेःकार्यंनवेद्दान्तचिन्तयेत्युपदेशः ॥

अरिष्टः । पुं । लशुने । निम्बे ॥ लह्वानिकटवर्त्तिनि पर्वतविशेषे ॥ काके ॥ नरिष्टमस्य ॥ कङ्के । फेनिलद्रौ । रीठाइतिख्याते ॥ अस्यगुणास्तु । अरिष्टकश्छिदोषघ्नोग्रहजिद्गर्भपातन इति । वृषभासुरे । न । अशुभे । तक्रे । सूतिकागारे ॥ उत्पाते ॥ आसवे ॥ यथा । पक्वौषधाम्बुसिद्धंयन् मद्यंतत्स्यादरिष्टकम् ॥ अरिष्टं मरणाभितिलोके । यथा । द्राक्षारिष्टम् दशमूलारिष्टम् । वब्बूलारिष्टमिति । अ

रिष्टं लघुपाकेन सर्वतस्वगुणाधिकम्। अरिष्टस्यगुणा ज्ञेयावीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥ मद्येपुंल्लिङ्गोपीतिसुश्रुतटीका। शुभे। नास्तिरिष्टमत्र नरिष्यतेऽसहिंस्यैरितिवा। रिषहिंसायाम्। क्तः ॥ नरिष्टमशुभमस्मादा। अनेकमितिसमासः ॥ मरणचिह्ने ॥ यथा। रोगिणोमरणंयस्मा द्वश्यंभावि लक्ष्यते। तल्लक्षणमरिष्टंस्याद्रिष्टमप्यभिधीयत इति ॥ नरिष्टम्। त्रि। अविनाशिनि ॥

अरिष्टकः। पुं। निम्बे ॥ फेनिले। रीठा इतिख्याते ॥

अरिष्टतातिः। त्रि। क्षेमङ्करे। शुभङ्करे ॥

अरिष्टदुष्टधीः। त्रि। विवशे। आसन्नमरणसूचितलक्षणेनदूषितबुद्धौ। अरिष्टेन दुष्टाधीरस्य ॥

अरिष्टनेमिः। पुं। कश्यपात्मजे ॥ मुनिविशेषे। जिनानां चतुर्विंशत्यन्तर्गतद्वाविंशतितीर्थङ्करे ॥

अरिष्टसूदनः। पुं। विष्णौ ॥ अरिष्टसूदके। अरिष्टसंज्ञक मसुरंसूदितवान् सूदयतिवा। सूद॰। नन्द्यादित्वाल्ल्युः ॥

अरिष्टा। स्त्री। कटकायाम् ॥

अरिष्टिः। स्त्री। शैवाले। सकलाधिव्याध्यभावे ॥

अरिष्टुः। त्रि। नाशने ॥ अरिरिवतिष्ठति। ष्ठा॰। कः ॥

अरुचिः। पुं। अन्नानभिलाषरूपे रोगप्रभेदे। अरोचके ॥ तत्र सत्यभिलाषेऽभ्यवहारासामर्थ्यरूपोबोध.॥ रुच्यभावे ॥

अरुजः। पुं। आरग्वधे।

अरुणः। पुं। अर्के ॥ अर्कसारथौ ॥ अव्यक्तरागे। कृष्णलोहिते। कृष्णमिश्रितरक्ते ॥ सन्ध्यारागे ॥ निःशब्दे ॥ कपिले ॥ दानवान्तरे। कुष्ठभेदे ॥ पुन्नागपादपे ॥ गुडे। न। कुङ्कुमे। सिन्दूरे ॥ त्रि। गुणिनि ॥ ऋच्छति। ऋगतौ। अर्त्तेश्चेत्युनन्। अरुणोवर्णोऽस्यास्ति। अर्शआद्यच्।

अरुणकमलम्। न। रक्तोत्पले ॥

अरुणलोचनः। पुं। पारावते ॥

अरुणसारथिः। पुं। सूर्ये ॥ अरुणःसूरसूतःसारथिर्यस्य ॥

अरुणा। स्त्री। अतिविषायाम् ॥ श्यामायाम् ॥ मञ्जिष्ठायाम् ॥ त्रिवृतायाम् ॥ प्लक्षद्वीपस्थनद्यन्तरे ॥ इन्द्रवारुण्याम्। गुञ्जायाम् ॥ मुण्डितिकायाम्। कदम्बपुष्पायाम् ॥ ऋच्छति। ऋगतौ। अर्त्तेश्चेत्युनन्। टाप् ॥ अरुणोवर्णोऽस्त्यस्याः। अर्शआद्यच्। टाप् ॥

अरुणात्मजः । पुं । जटायुनामविहगे । अरुणस्यानूरोरात्मजः ।

अरुणावरज । पुं गरुडे ।

अरुणोदकम् । न । सरोविशेषे । मेरो. प्राच्यांदिशियो विष्कम्भशैलस्तस्य मूलेसरोऽरुणोदकंनाम तच्चहेमाब्जमण्डितम् ।

अरुणोदय. । पुं । ब्राह्ममुहूर्त्ते । सूर्योदयात् पूर्वंमुहूर्त्तद्वये । यथा । रजन्याश्चेषयामस्यशेषार्द्धमरुणोदय इति । अपिच । चतस्रोघटिकाः प्रातररुणोदयउच्यते । यतीनांस्नानकालोऽयंगङ्गाम्भः सदृशः स्मृतःइति । सप्तपञ्चारुणोदयइतिदेवी भागवतम् । अथसप्तपञ्चाशत् घटिकोत्तरमरुणोदयइतितदर्थः । अरुणस्योदयोयस्मिन् सः ।

अरुणोदयसप्तमी । स्त्री । माकर्याम् । भविष्योक्तविवरणायांतपः शुक्लसप्तम्याम् ।

अरुणोदा । स्त्री । मन्दरगिरिशिखराद्विपतन्त्यांसरिति । अरुणोयआम्रफलरसः सएवउदकं यस्याः ।

अरुणोपलः पुं । पद्मरागे । चुन्नीतिलोके । अरुणोऽरुणवर्णश्चासावुपलः पाषाणश्च ।

अरुन्तुदः । त्रि । मर्मस्पृशि । मर्मपीडके । अरुः षि मर्माणितुदति । तुद व्यथने । विध्वरुषोस्तुदइतिखश् । अरुर्द्विषदितिमुमिकृतेसंयोगान्तस्येत्यरुषःसकारस्यलोप. ।

अरुन्धती । स्त्री । वशिष्ठपत्न्याम् । अक्षमालायाम् । कर्द्दममुने कन्यायाम् ।

अरुन्धतीजानि । पुं । वशिष्ठे । अरुन्धती जायायस्यसः । जायायानिङ् ।

अरुन्धतीनाथः । पुं । वशिष्ठे । अरुन्धत्यानाथः स्वामी ।

अरुष्कः । पुं । भल्लातके । इतिशब्दरत्नावली ।

अरुष्करः । पुं । भल्लातकवृक्षे । न । भल्लातकफले । त्रि । व्रणकृति । अरुर्व्रणं करोति । दिवाविभेतिटः । नित्यंसमासेनुत्तरपदस्थेतिषः ।

अरुः । न । मर्मणि । पुं । रक्तखदिरे । अर्के । पुं । न । व्रणे । क्षते । ऋत्तिं । ऋगतौ । अर्त्तिपवपियजी त्युसि ।

अरुणा । स्त्री । भूधात्र्याम् । भूमि आवला इतिख्यातायाम् ।

अरूपः । त्रि । रूपशून्ये । कुत्सितरूपे ।

अरूषः । पुं । रवौ । सर्पविशेषे । ऋच्छति अर्य्यते वा । ऋगतिप्रापणयोः

। ऋहनिभ्यामूषन् ।

अरे । । । नीचसम्बोधने । यथा । अरे यमभटाः शठाः कपटविग्रहे पूज्ञटानि वेदयत वोवचस्तवनचाधिकारो मयि । अहन्तु शिवसुन्दरीचरणचारुपङ्क रुहस्खलन्मधुसुधासवंसमपिवंनजानीतरेदृति । रुषाह्वाने । अपाकृतौ । असूयायाम् ॥

अरेरे । । । नीचसम्बोधने ॥ रुषाह्वाने । सक्रोधाह्वाने ॥

अरोक । त्रि । निष्प्रभे । छिद्रवर्जिते । रोचनम् रोकः । रुचदीप्तौ । घञ् । नरोकोऽस्य ॥

अरोग । त्रि । व्याधिरहिते ॥ पुं । दोषसाम्ये । रोगाभावः । नरोगोऽस्यवा ।

अरोचक । पुं । रोगविशेषे । अरुचि रोग इतिभाषा ।

अर्कः । पुं । रक्तार्के । अर्कपर्णे ॥ अस्य गुणा यथा । अर्कद्वयं सरंवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् । निहन्तिप्लीहगुल्मार्शः श्लेष्मोदरयकृत्क्रिमीन् । अर्कद्वयं रक्तार्क श्वेतार्कश्च । मुक्तार्ककुसुमं वृष्यंलघुदीपनपाचनम् । अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवा[र]णम् । रक्तार्कपुष्पंमधुरंसतिक्तं कुष्ठक्रिमिघ्नंकफनाशनञ्च । अर्शोविषंहन्तिचरक्तपित्तंसङ्ग्राहिगुल्मे श्वयथौ हितंतत् । क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णंस्निग्धंसलवणं-लघु । कुष्ठगुल्मोदरहरं श्रेष्ठमेतद्विरेचनमिति भावप्रकाशः । स्फटिके । रवौ । लक्षणयारविवारे । ताम्रे । दिवस्पतौ । विडौजसि । श्रीहरौ । ब्रह्मादिभिः पूज्यतमैरर्चनीयत्वात् । द्वादशांके ॥ हस्तर्क्षे ॥ सर्वदर्शिनि । अर्च्यते । अर्चपूजायाम् कर्मणिघञ् । चजोःकुघिण्ण्यतोरिति कुत्वम् । यद्वा । कृदाधारार्चिकलिभ्यःक इतिकः । अर्कतेवा । अर्कस्तवने । घञ् । अरकइतिप्रसिद्धे क्वाथविशेषे । यथा । द्रव्यकल्पःपञ्चधास्यात् कल्कंचूर्णं रसस्तथा । तैलमर्कःक्रमाज्ज्ञेयंयथोत्तरगुणान्विये इतिरावणः ।

अर्ककान्ता । स्त्री । आदित्यभक्तायाम् ।

अर्कचन्दनम् । न । रक्तचन्दने ॥

अर्कजः । पुं । यमे । शनैश्चरे ॥

अर्कजौ । पुं । अश्विनीसून्वोः ॥ निस्यविवचमान्तीयम् ॥

अर्कतनयः । पु । कर्णे । राधेये । वैवस्वतमनौ । सावर्णिमनौ । शनौ ॥ यमे ।

अर्कतनया । स्त्री । यमुनायाम् । तपत्याम् ।

अर्कनन्दनः । पुं । अर्कतनये । सुग्रीवे ।

अर्कस्य नन्दनः ॥

अर्कनामा । पुं । रक्तार्के ॥

अर्कपत्रः । पुं । आदित्यपत्रवृक्षे ॥

अर्कपत्रा । स्त्री । सुनन्दायाम् । अर्कमूलायाम् ॥

अर्कपर्णः । पुं । अर्काह्वे । मन्दारे ॥ अर्काभानि तीक्ष्णानि पर्णान्यस्य ॥

अर्कपादपः । पुं । निम्बे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

अर्कपुष्पिका । स्त्री । सूर्यवल्ल्याम् ॥

अर्कपुष्पी । स्त्री । कुटुम्बिनीवृक्षे ॥ अर्कपुष्पीकृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजिदितिभावप्रकाशः ॥

अर्कप्रिया । स्त्री । जवायाम् ॥

अर्कबन्धुः । पुं । गौतमे । बुद्धे ॥ सच इक्ष्वाकुकुलोद्भवशाक्यवंशीयोबोद्धव्यः ॥ अर्कस्यबन्धुः सूर्यवंशजत्वात् ॥ अम्बुजे ॥ अर्कोबन्धुर्यस्यसः ॥

अर्कबान्धवः । पुं । अम्बुजे ॥ अर्कोबांधवोयस्यसः ॥ बुद्धे ॥ बुद्धभिदि ॥ अर्कस्यबान्धवः ॥

अर्कभम् । न । सूर्याक्रान्तनक्षत्रे ॥

अर्कभक्ता । स्त्री । आदित्यभक्तायाम् । हुलहुल् इति प्रसिद्धे शाके ॥

अर्कमूला । स्त्री । अर्कपत्रायाम् । ईश्वरमूलेतिगौडेषुप्रसिद्धायाम् ॥

अर्करेतोजः । पुं । सूर्यात्मजविशेषे । रेवन्ते ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अर्कवल्लभः । पुं । बन्धूकवृक्षे ॥

अर्कवेधम् । न । तालीशपत्रे ॥

अर्कव्रतम् । न । राज्ञोव्रतविशेषे ॥ यथा । अष्टौमासान् यथादित्यस्तोयं हरतिरश्मिभिः । तथाहरेत्करंराष्ट्रान्नित्यमर्क व्रतंहितदितिमनुः ॥ आरोग्यसप्तम्यादिसूर्यव्रते ॥

अर्कसूनुः । पुं । शनौ ॥ यमे ॥ सुग्रीवे ॥ कर्णे ॥ अर्कस्यसूनुः ॥ द्विवचनान्तः आश्विनेययोः ॥

अर्कसोदरः । पुं । ऐरावते ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अर्कहिता । स्त्री । अर्कभक्तायाम् ॥

अर्काश्मा । पुं । अरुणोपले ॥ अर्कस्य अश्मा ॥ सूर्यकान्तमणौ ॥

अर्काह्व. । पुं । रक्तार्के । अर्कपर्णे ॥ अर्कआह्वायस्य ॥

अर्की । पुं । अर्कवति । शस्त्रसूपमन्त्रवति होतरि ॥

अर्कोपलः । पुं । सूर्यकान्तमणौ ॥

अर्गलम् । न । कपाटद्वयमध्यस्थदण्डे ॥ दुर्गापाठादौपाठ्यदेवीस्तोत्रविशेषे ॥ यथा । मार्कण्डेयउवाच । ब्रह्मन्केनप्रकारेणदुर्गामाहात्म्यमुत्तमम् । श्रीमंसिद्ध्यातितत् सर्वंकथयस्वमहाप्रभो ॥ ब्रह्मोवाच । अर्गलंकीलक-

न्यादौपठित्वाकवचं पठेत् । अपेत् सप्तशतींपश्चात् क्रमएषशिवोदितइति । त्रि । कल्लोले ॥ अर्घ्यते । अ र्जअर्जने । दृषादित्वात्कलच् । न्य ङ्क्वादिः ।

अर्गला । स्त्री । आगल इतिभाषाप्रसि द्धे कपाटबन्धककाष्ठविशेषे । कपाटा न्तरविष्कम्भदण्डे । त्रि । कल्लोले । टाप् ।

अर्गलिका । स्त्री । अर्गले । आगली इ तिभाषाप्रसिद्धायाङ्क्षुद्रार्गलायाम् ।

अर्गली । स्त्री । कपाटरोधनार्थंतन्मध्य स्थे क्षुद्रदण्डे ॥ गौरादित्वान्ङीष् ।

अर्ग्वधः । पुं । राजवृक्षे ।

अर्घ । पुं । मूल्ये । पूजाविधौ । पूजोप चारभेदे । अर्घ्यतेऽनेन । अर्हपूजा याम् । हलश्चेति घञ् । न्यङ्क्वादिः । अर्घिर्धात्वन्तरंवा । अर्घशब्दः साम गानां सर्वत्राभिलापेसयकारोनपुंस कलिङ्गेनैवप्रयोज्यः । अन्यवेदिनां निर्यकारः पुल्लिंगेन प्रयोज्यः । इति आह्निकतत्त्वेरघुनन्दनः ।

अर्घीशः । पुं । ईश्वरे । शिवे । इतिश ब्दरत्नावली ।

अर्घ्यम् । न । जरत्कारुमुनेस्तपोवनत रुसम्भूतमधुनि । उपचारभेदे । मस्त के दीयमाने अर्घजले । अर्घायेद म । पादार्घाभ्याञ्चेतियत् । त्रि । पू जार्हे । अर्घस्ययोग्ये । अर्घमर्हति । दण्डादिभ्यइतियत् । पुं । मूल्ये । पूजाविधौ ।

अर्चकः । त्रि । पूजके । यथा । अर्चक स्यतपोयोगादर्चनस्यातिशायनात् आभिरूप्याच्चबिम्बानांदेवः सान्निध्य मृच्छतीतितिथ्यादितत्त्वम् । अर्चति । अर्च० । ण्वुल् ।

अर्चनम् । न । पूजायाम् । यथा । धन धान्यकरंनित्यंगुरुदेवद्विजार्चनमि- ति । अर्चपूजायामस्माच्चौरादिका ल्ल्युटस्त्रयोर्युच् । त्रि । पूजाद्रव्ये ।

अर्चना । स्त्री । पूजायाम् । टाप् ।

अर्चा । स्त्री । प्रतिमायाम् । यथाहश्री कृष्णोव्यासादीन् प्रति । किंस्वल्पत पसांनॄणामर्चायांदेवचक्षुषाम् । दर्श नस्पर्शनप्रश्नप्रह्वपादार्चनादिकमि- ति दशमस्कन्धे ८४ अध्यायः ॥ पूजा याम् । अर्चनम् अर्च्यतेवा । अर्चपूजा यामस्माद्गोवादिकात्गुरोश्चहलइत्य मप्रत्ययः । टाप् ।

अर्चिः । स्त्री । ज्वालायाम् । इन्नन्तः । अ र्च० । शिजन्तादचरवी ।

अर्चितम् । त्रि । पूजिते । अर्च्यतेस्म० । अर्चपूजायाम् । क्तः ।

अर्चिरादिमार्गः । पुं । उत्तरमार्गे ।

अर्जुनः | अर्णव

अर्चिरादुपलक्षिते देवयानपथि ।

अर्चिष्मान् । पुं । वह्नौ । भास्करे । दीप्ते । अर्चिर्विद्यते ऽस्याखिनवा । मतुप् ।

अर्चिः । न । स्त्री । मयूखे । वह्निशिखायाम् । दीप्तौ । अर्च्यते । अर्चपूजायाम् । अर्चिशुचिहुसृपिच्छादिच्छर्दिभ्य इसिः । अर्चिः सान्तः ।

अर्च्यः । त्रि । पूज्ये । अर्च्यते । स्तुवस्तु तौ । ण्यत् । यजयाचरुचप्रवचर्चश्चेतिकुत्वनिषेधः ।

अर्जकः । पुं । बाबुई इतिभाषाप्रसिद्धे श्वेतपर्णासे । अस्यगुणाः । कटुरुष्णाःकफवातामयनेत्ररोगनाशी रुचिकारी सुखप्रसवकारकश्चेतिराजनिर्घण्टः । अर्जयति । अर्जसर्जअर्जने । ऋगतिस्थानार्जनोपार्जनेषुवा । ण्वुल्ः । ण्वुल् । त्रि । उपार्जनस्य कर्त्तरि ।

अर्जनम् । न । अर्जयितृव्यापारे । स्वामित्वहेतुभूतव्यापारे । सङ्ग्रहे ॥ सम्पादने ॥ अर्ज० । ल्युट् ॥

अर्जुनः । पुं । ककुभद्रुमे । कौहइति ख्याते । अस्यगुणा दधा । क्षतभग्नरक्तस्तम्भनमूत्रकृच्छ्रघ्नो पथ्यत्वमितिराजवल्लभः । कषायत्वमुष्णत्वंश्लेष्मशोधनत्वम् कफपित्तश्रमतृष्णाशिनाशित्वंवायुरोगप्रकोपकारित्वमिति राजनिर्घण्टः । सर्वसम्प्रतिपन्नपराक्रमे तृतीयेपाण्डुतनये । कार्त्तवीर्ये । मयूरे । मातुरेकसुते । धवले । करवीरे । न । तृणे ॥ नेत्ररोगे । यथा । एकोयः शशवधिरोपमस्तु विन्दुः शुक्लस्थोभवतितदर्जुनंवदन्तीति । त्रि । धवलवर्णवति ॥ अर्ज्यते । अर्ज अर्जने । अर्जेर्णिलुक्चेत्युनन् । तृणाख्यायांचिदिति विनामन् ।

अर्जुनधनुः । न । गाण्डीवे । अर्जुनस्य धनुः ।

अर्जुनध्वजः । पुं । वायुपुत्रे । हनूमति ।

अर्जुननामा । पुं । ककुभद्रुमे ।

अर्जुनी । स्त्री । गवि । अर्जुनवर्णयोगात् । अन्यतोङीष् ॥ उषायाम् ॥ बाहुदानद्याम् ॥ कुट्टन्याम् ॥

अर्जुनोपमः । पुं । शाकद्रौ । महापत्रे । शेगनइति गौड देश ख्याते ॥ अर्जुनउपमायस्य ।

अर्णः । पुं । अक्षरे । शाकद्रुमे ॥ अर्णः क्तः ॥

अर्णवः । पुं । अम्बुनिधौ ॥ अर्णांस्यत्र सन्ति । अर्णसोलोपश्चेतिवः सलोपश्च ।

अर्णवजः । पुं । न । समुद्रफेने ।

अर्णवमन्दिरः । पुं । वरुणे । अर्णवेम

न्दिरमस्य ॥
अर्थबोद्भवः । पुं । अग्निजारद्रव्ये ॥
अर्णः । न । जले ॥ ऋच्छति । ऋगतौ । उदकेनुट्चेत्यसुन् तस्य चनुट ॥
अर्णोदः । पुं । मुस्तके ॥ मेघे ॥
अर्णोभवः । पुं । शङ्खे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥
अर्त्तगलः । पुं । नीलझिण्ट्याम् ॥
अर्त्तनम् । न । जुगुप्सायाम् । घृणीयायाम् ॥ ऋतिः सौत्रोधातुः । ल्युटभावेल्युट् ॥
अर्त्तिः । स्त्री । पीडायाम् ॥ धनुष्कोटौ ॥ अर्दनम् । अर्दहिंसायाम् । क्तिच्क्तावादिभ्यः । तितुत्रेतिनेट् ॥
अर्थः । पुं । विषये ॥ अर्यनायाम ॥ अर्थ्यते गम्यते ऋच्छतिवा । ऋगतौ । उषिकुषिगार्त्तिभ्यस्थन्नितिथन् ॥ यद्वा । अर्थ्यते प्रार्थ्यतेसुखरूपत्त्वात्सर्वैः । अर्थउपयाञ्चायाम् । अकर्त्तरीतिघञ् ॥ कारणे ॥ वस्तुनि ॥ वाच्ये । शब्दानामभिधेये ॥ यथा । अर्थोवाच्यश्च लक्ष्यश्चव्यङ्ग्यश्चेति त्रिधामतः । वाच्योर्थोऽभिधया बोध्योलक्ष्योलक्षणयामतः । व्यङ्ग्योव्यञ्जनयातास्तुस्तिस्रः शब्दस्यशक्तय इतिसाहित्यदर्पणः ॥ अर्थिनोऽनुकूले ॥ निवृत्तौ ॥ प्रयोजने ॥ अर्थ्यते । कर्मणि घञ् ॥ फले ॥ धने ॥ प्रकारे ॥ द्वितीयभवने ॥ अभिलाषे ॥ अर्थनमर्थः । भावेघञ् ॥
अर्थक्रमः । पुं । क्रमनिर्णये ॥ यथा । यत्रप्रयोजनवशेन क्रमनिर्णयःस अर्थक्रमः । यथा ऽग्निहोत्रंजुहोतियवागूंपचतीत्यग्निहोत्रहोमयवागूपाकयोः । अत्र हि यवाग्वाहोमार्थत्वेनतत्पाकः प्रयोजनवशेन पूर्वमनुष्ठीयते । सचायं पाठक्रमाद्बलवान् । यथा पाठंह्यनुष्ठाने क्रमप्रयोजनबाधे ऽदृष्टार्थत्वंस्यात् । नहि होमानन्तरं क्रियमाणस्य पाकस्य किञ्चिद्दृष्टं प्रयोजनमस्ति ॥
अर्थदूषणम् । न । क्रोधजव्यसनेषुषष्ठे । अर्थानामपहरणे ॥ देयानामदाने ॥
अर्थना । स्त्री । याञ्चायाम् ॥ अर्थयाञ्चायाम् । चुरादिः । ण्यासश्रन्थोयुच् ॥
अर्थपतिः । पुं । राज्ञि ॥ कुबेरे ॥ अर्थानांपतिः ॥
अर्थप्रयोगः । पुं । कुसीदे ॥ अर्थस्यप्रयोगः ॥
अर्थभावना । स्त्री । आर्थीभावनायाम् । स्वर्गंयागेन प्रयाजादिभिरुपकृत्य साधयेदिति पुरुषप्रवृत्तिरर्थभावनोच्यते ॥
अर्थमर्यादा । स्त्री । सत्याङ्कारणासाम

प्यांकार्योत्पादे ।

अर्थवान् । त्रि । धनिनि । अर्थःसन्निहितो ऽस्त्यस्य । मतुप् । असन्निहितेतु अर्थीत्येव । प्रयोजनवति ॥ पुं । पुरुषे इति राजनिर्घण्टः ॥

अर्थवादः । पुं । विधिशेषे । स्तुतौ । काल्पनिकफलश्रुतौ । अङ्गफलश्रुतौ । तल्लक्षणं यथा ॥ अभिधेयया गौण्या वा वृत्त्या भूतमर्थं वदन् स्वाध्यायविध्यापादित प्रयोजनवत्त्वलाभाय विधिसाकाङ्क्ष इति । स च षड्विधलिङ्गेषु पञ्चमम् । यथा । प्रकरणप्रतिपाद्यस्य तत्तत्र प्रशंसनमर्थवादः । यथाछान्दोग्ये षष्ठप्रपाठके उततमादेशमप्राक्ष्यो येनाश्रुतं श्रुतं भवति अमतं मत मविज्ञातं विज्ञातमित्य ऽद्वितीयवस्तुप्रशंसनमिति । अर्थस्य प्रयोजनस्य वदनं विध्यर्थप्रशंसापरंवचनम् । अर्थवादोहि स्तुत्यादिद्वारा विध्यर्थं शीघ्रं प्रवृत्तये प्रशंसतीति ॥ स्तुतिर्निन्दापरकृतिःपुराकल्पइत्यर्थवाद इति न्याय सूत्रम् ॥ स्तुतिःप्रशस्ता विध्यर्थस्य प्रशंसार्थकं वाक्यम् । यथा । सर्वजिता वै देवाः सर्वमजयन् सर्वस्य व्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै सर्वमेवैते नाप्नोति सर्वं जयतीत्यादि ॥ अनिष्टबोधनद्वारा विध्यर्थप्रवर्त्तकं निन्दा । यथा । एषवाव प्रथमो यज्ञानां यज्ज्योतिष्टोमो यएतेनानिष्ट्वा अन्येन यजते स गर्त्ते पतत्ययमेवैतज्जीर्यते प्रवामीयत इत्यादि ॥ पुरुषविशेषनिष्ठमिथो विरुद्धकथनं परकृतिः । यथा । हुत्वावपामेवाग्रेऽभिघारयन्ति अथ पृषदाज्यं तदुह चरकाध्वर्यव.पृषदाज्यमेवाग्रेभिघारयन्त्यग्नेः प्राणाः पृषदाज्यमित्यभिदधतीत्यादि ॥ ऐतिह्यसमाचरिततया कीर्त्तनं पुराकल्पः । यथा । तस्माद्वाएते पुराब्राह्मणा बहिष्पवमानसामस्तोम मस्तौषन् यज्ञं प्रतनवामह इत्यादीत्यर्थः ॥ प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादइतिलौगाक्षिभास्करः । यथा । विरोधे गुणवादःस्यादनुवादोऽवधारिते । भूतार्थवादस्तद्धानादर्थवादस्त्रिधामतइति । अस्यार्थः । विरोधेविशेष्यविशेषणयोः सामानाधिकरण्येनान्वयविरोधे गुणवाद अङ्गकथनरूपत्वात् । यथा यजमानः प्रस्तर इति । अत्रप्रस्तरः कुशमुष्टिः तस्य यजमानेऽभेदान्वयबाधात यजमानस्य कुशमुष्टिधारणरूपार्थवादरूपत्वात् गुणवादः ॥ अवधारिते प्रमाणान्तरसिद्धेर्थे यो वादः । यथा नाग्निरीचेऽग्नि

श्वेतश्च अग्निर्हिमस्य भेषजमित्यादि च । अन्तरीक्षेऽग्निचयनस्यासम्भवेन तदभावस्य अग्नेर्हिमनाशकत्वस्य च लौकिकप्रमाणसिद्धत्वादनुवादः । तद्धानौ तयोर्विरोधावधारणयोरभावे भूतार्थवादः । यथा इन्द्रो वृत्रहन्नित्यादि । सोऽपि द्विविधः । स्तुत्यर्थवादो निन्दार्थवादश्च । यथा । सन्ध्यामुपासते ये चेत्यादिस्तुत्यर्थवादः । रतिर्मांससम्भोगी पर्वस्वेतेषु वै पुमान् । विण्मूत्रभोजनं नाम प्रयाति नरकं मृतः इत्यादिनिन्दार्थवाद इति ॥ तत्त्वसम्बोधनी ॥ एतेतु सप्तविधः । यथा । स्तुत्यर्थवादः १ फलार्थवादः २ सिद्धार्थवादः ३ निन्दार्थवादः ४ परकृतिः ५ पुराकल्पः ६ मन्त्रः ७ । एषामुदाहरणानि श्रौतानि ग्रन्थगौरवभिया न लिखितानि ॥

अर्थविज्ञानम् । न । शुश्रूषाद्यष्टधीगुणान्तर्गतगुणविशेषे । शब्दार्थज्ञाने ।

अर्थविप्रकर्षः । पुं । पूर्वपूर्वमपेक्ष्योत्तरोत्तरस्य विलम्बेनार्थोपपादकत्वे ॥

अर्थव्यपाश्रयः । पुं । प्रयोजनसम्बन्धे ॥

अर्थव्ययज्ञः । त्रि । धनव्ययप्रकारविदि । चतुरे ॥ अर्थव्ययौ जानाति । ज्ञा कः ॥

अर्थशास्त्रम् । न । अथर्ववेदस्योपवेदे चतुष्षष्टिकलासङ्ग्राहके औशनसादिशास्त्रभेदे । दण्डनीत्याम् । यथा । बृहस्पतिप्रभृतिभिः प्रणीतञ्चार्थशास्त्रकम् । तथैव दण्डनीतिःस्यात्तत्रैवौ नयानयाविति । अर्थ्यते गम्यते । ऋ गतौ । उषिकुषिगार्त्तिभ्यस्थन् । अर्थस्य भूमिधनादेः शास्त्रम् ।

अर्थसमाहर्त्ता । त्रि । सम्यग्धनार्जनशीले ॥

अर्थसिद्धकः । पुं । सिन्दुवारवृक्षे ।

अर्थागमः । पुं । आये ।

अर्थान्तरम् । न । प्रकृतानाकाङ्क्षितार्थे । यथाह गौतमः । प्रकृतादर्थादसम्बद्धार्थमर्थान्तरम् । ५ । ५ । प्रकृतात् प्रकृतोपयुक्तात् । ल्यब्लोपे पञ्चमी । तेन प्रकृतोपयुक्तमर्थमुपेक्ष्य असम्बद्धार्थाभिधानमर्थान्तरम् । प्रकृतानाकाङ्क्षिताभिधानमिति फलितार्थः यथा । शब्दोऽनित्यः कृतकत्वादित्युक्ता शब्दो गुणः स चाकाशस्येत्यादौ ।

अर्थान्तरन्यासः । पुं । अर्थालङ्कारभेदे । यथा । सामान्यो वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते । यत्र सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा ॥ साधर्म्येण वैधर्म्येण वा सामान्यं विशेषेण यत्समर्थ्य

शैविशेषोवासामान्येनसोऽर्थान्तरन्यासः। क्रमेणोदाहरणम्। निजदोषावृतमनसा अतिसुन्दरमेवभाति विपरीतम्। पश्यतिपीतोपहतःशशिशुभ्रं शंखमपिपीतम्। सुसितवसनालङ्कारायां कदाचन कौमुदीमहसि सुदृशिस्वैरं यान्त्यांगतोऽस्तमभूद्विधुः। तदनु भवतःकीर्त्तिः केनाप्यगीयत येनसा प्रियगृहमगान्मुक्ताशङ्काक्वनासिशुभप्रदः। गुणानामेवदौरात्म्याद्धुरिधुर्य्यो नियुज्यते। असञ्जातकिणस्कन्धः सुखंस्वपितिगौर्गलिः। अहोहिमेवह्वपराद्धमायुषा यदप्रियंवाच्यमिदंमयेदृशम्। तएवधन्याः सुहृदः पराभवंजगत्यदृष्ट्वैवहियेक्षयंगताः इति।

अर्थापत्तिः। स्त्री। प्रमाणविशेषे। जीवतश्चैत्रस्यगृहाभावदर्शनेन बहिर्भावस्यादृष्टस्य कल्पनायाम्। अनुपपद्यमानेनार्थेनोपपादककल्पने। यथा दृष्ट्वामेघमानं वृष्ट्यासह मेघस्य वैयधिकरण्याकथ्यामितिरिति नानुपपन्नेऽन्तर्भावः। उक्तेनानुक्तमाक्षिप्यते यासा अर्थापत्तिः। अलङ्कारान्तरे। एकस्यवस्तुनोभावाद्यत्रवस्त्वन्यथापतेत्। कैमुत्यन्यायतः साप्यादर्थापत्तिरलङ्क्रिया। दण्डापूपिकया र्थान्तरस्यापतनमर्थापत्तिरितिस्मृतम्।

अर्थार्थी। त्रि। इच्छामुत्वा यद्भोगोपकरणंतदभीप्सौ। अर्थस्य अर्थी।

अर्थिकः। पुं। वैतालिके। निद्रायास्य राजादेः सुत्थादिना प्रातर्जागरयितरि।

अर्थितः। त्रि। याचिते। अर्थ्यतेस्म। अर्थ॰। क्त।

अर्थी। त्रि। याचके। सेवके। विवादिनि। धनिनि। सहाये। अर्थोऽस्यास्ति। अर्थोद्वासन्निहिते इतिइनिः। अर्थयतेवा। अर्थ याचने। ग्रह्यादित्वाणिनि। स्त्रियामर्थिनी।

अर्थ्यः। त्रि। पण्डिते। सम्पाद्ये। न्याय्ये। अर्थशालिनि। न। शिलाजतुनि। अर्थसाधुः। तत्रसाधुरितियत्। अर्थादनपेतः। धर्मपथ्यर्थ इतियत्। अर्थ्यते। अर्थ उपयाञ्चायाम्। ण्यन्तः। अर्चायत्।

अर्दनम्। न। गमने। पीडने। याचने। हनने। अर्द भावेल्युट्।

अर्दना। स्त्री। याञ्चायाम्। अर्दगतौयाचनेच। स्वार्थण्यन्तः। युचिस्त्रियाम्। टाप्।

अर्दितम्। त्रि। याचिते। हिंसिते।

रोगिणि। गते॥ न। वातव्याधिविशे
षे॥ तस्य लक्षणम्। वक्रीभवति वक्त्रा
र्द्धं ग्रीवा चाप्यपवर्त्तते। शिरश्चलति
वाक्सङ्गो नेत्रादीनाञ्च वैकृतम्॥ ग्री
वाचिबुकदन्तानां तस्मिन् पार्श्वे च वे
दना। तमर्द्दितमिति प्राहुर्व्याधिं व्या
धिविशारदा इति॥ यस्मिन् पार्श्वे चा
र्द्दितं तच्छिन्नपार्श्वे ग्रीवादीनां वेदने
त्यर्थः। अस्यौषधं यथा। रसोनक
ल्कं तिलतैलमिश्रं योऽश्नाति नित्या-
र्द्दितरोगयुक्तः। तस्यार्द्दितं नाशमुपै
ति शीघ्रं वृन्दं घनानामिव वायुयोगा-
दिति। विषमज्वरेप्येतद्देयम्॥ अर्द्द
तेऽसौ। अर्द्द गतौ याचने च। क्तः।

अर्द्धः। पुं। भित्ते। खण्डे। न। समां
शे। आधा इति भाषा। स्थाने। रू
पकार्द्धं। ऋध्नोत्यनेन। ऋधु वृद्धौ।
हलश्चेति घञ्। अत्रायं विवेकः। अ
र्द्धशब्दः खण्डमात्रविवक्षायां पुल्लिङ्ग
एव। असि अर्द्धे अर्द्धोः। समखण्ड
विवक्षायां क्लीव एव। यदा त्वर्द्धशब्दो
धर्म्मिपरस्तदा त्रिलिङ्ग एवेति।

अर्द्धगङ्गा। स्त्री। कावेर्य्याम्। अर्द्धं गङ्
गायाः। अर्द्धं नपुंसकमिति समासः॥

अर्द्धगुच्छः। पुं। चतुर्विंशतिलतिकाहा
रे। गुच्छार्द्धं। अर्द्धं गुच्छस्य।

अर्द्धचन्द्रः। पुं। नखक्षते। गलहस्ते।
बाणभेदे। चन्द्रार्द्धे। अर्द्धचन्द्राकारे
स्त्रीणां ललाटाभरणविशेषे॥

अर्द्धचन्द्रा। स्त्री। कृष्णत्रिवृति। अर्द्धश्च
न्द्रोयस्याः। एतद्दलस्यार्द्धचंद्राकार
त्वात्॥

अर्द्धचन्द्रिका। स्त्री। कर्णस्फोटालताया
म्। चित्रपर्ण्याम्॥

अर्द्धचोलकः। पुं। कूर्पासे। काँचुली
इति प्रसिद्धवस्त्रे। कुर्त्ती इति च प्रसि
द्धे॥ इति हारावली॥

अर्द्धजाह्नवी। स्त्री। कावेर्य्याम्।

अर्द्धतिक्तः। पुं। नेपालनिम्बे॥

अर्द्धनारीश्वरः। पुं। शिवे। उमामहे
श्वरे। अस्य ध्यानं यथा। नीलप्रबाल
रुचिरं विलसत्त्रिनेत्रं पाशारुणोत्पल
कपालकशूलहस्तम्। अर्द्धाम्बिकेश
मनिशं प्रविभक्तभूषं बालेन्दुबद्धमुकुटं
प्रणमामि रूपमिति॥

अर्द्धनावम्। न। नावोर्द्धं। नावोऽर्द्धम्।
अर्द्धं नपुंसकमिति तत्पुरुषः। अर्द्धाच्चे
ति नावष्टच्॥

अर्द्धपारावतः। पुं। चित्रकण्ठे। तित्ति
रिपक्षिणि॥

अर्द्धपुलायितम्। न। अश्वस्य मण्डल
गतिविशेषे॥ यथा। शताद्धीर्द्धक्रमाद
नैर्मण्डलायितवल्गितैः। उन्मुखस्या
श्वमुख्यस्य गतिरर्द्धपुलायितमिति॥

अर्द्धयमकः। पुं। काव्यबन्धप्रभेदे॥

अर्द्धमाणवकः। पुं। द्वादशयष्टिकेहारे॥

अर्द्धमात्रा। स्त्री। बिन्दुचन्द्ररूपिण्यां म ब्रह्मरूपिण्याम्॥ अर्द्धमात्रापरं पदम्॥ यथा। अकारोभगवान्ब्रह्मा उकारोविष्णुरुच्यते। मकारोभगवान्रुद्रोप्यर्द्धमात्रामहेश्वरो॥ उत्तरोत्तरभावेनाप्युत्तमत्वंस्मृतंबुधैः। अन्तःसर्वेषुशास्त्रेषुदेवीसर्वोत्तमास्मृता अर्द्धमात्राश्रितानित्याध्यायानुशार्या- विशेषतइति॥

अर्द्धयाम.। पु। वारवेलायाम्॥ यामार्द्धे। कालवेलायाम्॥ कुलिकवेलायाम्॥

अर्द्धरथः। पुं। रथान्यूने॥

अर्द्धरात्रः। पु। निशीथे। रात्र्यर्द्धभागे। अर्द्धं रात्रेः। अर्द्धं नपुंसकमितिसमासः। अहः सर्वैकेत्यच्॥

अर्द्धर्चः। पुं। न। ऋगर्द्धे॥

अर्द्धलक्ष्मीहरिः। पुं। विष्णौ॥ तद्ध्यानं यथा। उद्यत्प्रद्योतनशतरुचिंतप्तहेमावदातं पार्श्वद्वन्द्वेजलधिसुतया विश्वधात्र्याचजुष्टम्। नानारत्नोल्लसितविविधाकल्पमापीतवस्त्रं विष्णुं- वन्देदरकमलकौमोदकीचक्रपाणि- मिति॥

अर्द्धवीक्षणम्। न। कटाक्षे। अपाङ्ग- दर्शने॥

अर्द्धवैनाशिकः। पुं। वैशेषिके॥ वैशेषिकस्तावत् परिणामभेदेन देहादेरा शुतरविनाशित्वाङ्गीकारादात्मन- स्थायित्वाङ्गीकाराच्चार्द्धवैनाशिकत्वे- नमसिद्धएव॥

अर्द्धशनम्। न। अर्द्धभुक्तौ। अर्द्धाशने॥

अर्द्धशफर। पु। क्षुद्रमत्स्यविशेषे। दण्डपाले। दाँडिकामाच इतिगौडानां भाषयाख्याते॥

अर्द्धहार। पुं। चौसठलडाहार इतिलोकभाषा प्रसिद्धे चतुष्षष्टियष्टिकहारे॥

अर्द्धाशनम्। न। अर्द्धभोजने॥

अर्द्धासनम्। न। स्नेहदाने॥ अनिन्दने॥ इतिधरणि.॥

अर्द्धेन्दुः। पुं। अर्द्धचन्द्रे। चन्द्रार्द्धभागे॥ गलहस्ते॥ नखाङ्के॥ अतिप्रौढस्त्रीयोन्यङ्गुलियोजने॥ अर्द्धचन्द्रवाणे॥ अर्द्धम् इन्दोरितिविग्रह.॥

अर्द्धोदयः। पु। पर्वविशेषे॥ सचोक्तः कामधेनुतंत्रे। यथा। माघेमासि अमावास्या यदिश्रर्कयुताभवेत्। नक्षत्रेश्रवणेदेविव्यतीपातो भवेद्यदा। अर्द्धोदयःसविज्ञेयः सूर्यपर्वशतैः समइति॥ दिवैवयोगः शस्तोऽयंनचरात्रौकदाचन॥ अर्द्धोदयेतुसम्प्राप्ते स-

वं गङ्गासमं जलम् । शुद्धात्मानो द्विजाः सर्वे भवेयुर्ब्रह्मसन्निभाः । यत्किञ्चित् क्रियते दानं तद्दानं मेरुसन्निभमिति स्कान्दपुराणम् ।

अर्द्धोरुकम् । न । चण्डातके । ऊर्व्वोरर्द्धाच्छादनांशुके । उत्तमस्त्रीणामर्द्धोरुपर्य्यन्ते चोलकाकारे परिधेयवस्त्रे । ऊर्व्वोरर्द्धम् । अर्द्धं नपुंसकमिति समासः । अर्द्धोरौ काशते । का शृदीप्तौ । अन्येभ्योऽपीति डः ।

अर्द्धम् । त्रि । अर्द्धभवे । अर्द्धभवः । अर्द्धाद्यत् ।

अर्पणम् । न । समर्पणे ॥ अर्प्यतेऽनेनेति व्युत्पत्त्या जुह्वादौ । मन्त्रादौ ॥ अर्प्यतेऽस्मै इति व्युत्पत्त्या देवतादिरूपे सम्प्रदाने । अर्प्यतेऽस्मिन्निति व्युत्पत्त्या अधिकरणे देशकालादौ । हविरादौ । अर्प्यते यत्तत् कर्म्मणि ल्युट् ।

अर्पितः । त्रि । सम्प्रवेशिते । न्यासे ।

अर्पिसः । पुं । हृदये । अग्रमांसे ॥ अर्पयति । ऋ गतौ । ऋतन्यञ्जीत्यादिना अर्पयतेरिसन् ।

अर्बुदः । पुं । न । मांसकीले । रसौली इति ख्याते रोगविशेषे ॥ दशकोटिसंख्यायाम् । १०००००००० ॥ पुं । आबू इति प्रसिद्धे महीधरविशेषे । न ।

वर्त्तुलफलाढ्ये ।

अर्भः । पुं । बाले । उत्तानशये । ऋच्छति । इयर्त्ति वा । ऋ० । अर्त्तिगृभ्यां भन् ।

अर्भकः । पुं । बाले । मूर्खे । कृशे । सदृशे । अल्पे । अर्य्यते वृद्धिं प्राप्यते । ऋ गतौ प्रापणे च । अर्भकपृथुकपाकावयसीति साधुः । यद्वा । इयर्त्ति वृद्धिं गच्छति वा । अर्त्तिगृभ्यां भन् । स्वार्थे कः । यद्वा । ऋध्नोति । ऋधु वृद्धौ । अर्भकपृथुकेति कुन् भष्भावान्तादेशः ॥

अर्म्मः । पुं । न । नेत्ररोगभेदे । स च पञ्चविधम् । प्रस्तार्य्यर्म्मशुक्लार्म्मरक्तार्म्माधिमांसार्म्मस्नाय्वर्म्मभेदात् । यथा यथामितत्स्वच्छेद्रष्टव्यानि । ऋच्छति । ऋ गतिप्रापणयोः । अर्त्तिस्तु स्विति मन् ।

अर्म्मणः । पुं । द्रोणपरिमाणे । इ. वैद्यकपरिभाषा ।

अर्य्यः । पुं । स्वामिनि ॥ वैश्ये ॥ त्रि । श्रेष्ठे । अर्य्यते । ऋ गतौ । अर्य्यःस्वामिवैश्ययोरिति साधुः ।

अर्य्यमा । पुं । सूर्य्ये । अर्कवृक्षे ॥ पितृणां राज्ञि । उत्तरफल्गुन्याम् । इयर्त्ति अर्य्यः । ऋ गतौ । श्वन्नुक्षन्पूषन्प्लीहन्नित्यादिना अर्य्यपूर्व्वान् माङः कनि-

न निपातितः ।

अर्य्या । स्त्री । वैश्यजातीयायाम् ॥ स्वामिन्याम् । अर्यःक्षत्रियाभ्यांवास्वार्थ इति आनुगागमाभावेटाप् ॥

अर्य्याणी । स्त्री । वैश्यजातीयायाम् । स्वामिन्याम् । अर्यःक्षत्रियाभ्यांवास्वार्थं इतिपक्षे आनुगागमोङीष्च ।

अर्य्यी । स्त्री । वैश्यप्रियायाम् । अर्य्यस्य स्त्री । पुंयोगलक्षणोङीष् ।

अर्वती । स्त्री । कुम्भदास्याम् । वडवायाम् । घोटक्याम् । तुरग्याम् ।

अर्वा । पुं । तुरङ्गमे । ऋच्छति । ऋगतो । अन्येभ्योपीति वामदीत्यादि अभावावनिप् । यद्वा । अर्वतिवा । अर्व गतो । वाहुलकात् कनिप । मन्द्रेन्द्रे । हयकर्णपरिमाणे । त्रि । अधमे । ऋच्छते. अवद्यावमाधमार्वरेफा' कुत्सितवइतिवक्ष्यन्ते निपात. ।

अर्वाकृतनः । त्रि । निर्मूले । अवेदमूले । स्वेच्छाकृते । अर्वाकभवः । सायंचिरमित्यादिनाट्यु' ॥

अर्वाक । । अवरे । पूर्वकालतःपश्चादर्थे । अवरे अञ्चति । अस्ताति. । अञ्चेर्लुक् । पृषोदरादि' । अर्वन्तम ञ्चति वा । विपर्यस्ते । इतिधरणिः ।

अर्वाचीन' । त्रि । अर्वाचि । पश्चाज्जाते । अर्वागेव । विभाषाञ्चेरदिक्

स्त्रियामितिखः ।

अर्शम् । न । गुदव्याधो । इतिशब्दरत्नावली ।

अर्शः । न । अर्शे । गुदव्याधिभेदे । दुर्नामके । गुदकीले । अस्यसामान्यलक्षणं यथा । दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसन्दूष्यविविधा कृतोन् । मांसाङ्कुरानपानादोकुर्वन्त्यर्शांसितान जगुरिति । अथास्यसामान्यतोमिदानंयथा । पृथग्दोषैःसमस्तैश्चशोणितात् सहजानिच । अर्शांसिषटप्रकाराणि विद्याद्गुदवलित्रये ॥ सामान्यतोऽर्शसश्चिकित्सायथा । यद्वायोगानुलोम्याय यदग्निवलवृद्धये । अन्नपानोषधंसर्वंतत्सेव्यंनित्यमर्शसैरिति । ऋच्छति । ऋगतो । व्याधो शुट् चेत्यर्शेरसुन् ।

अर्शस. । त्रि । गुदव्याधियुक्ते । अर्शांरोगयुते । अर्शांस्यस्यविद्यन्ते ॥ अर्शआदिभ्योऽच ।

अर्शसानः । पुं । अग्नौ । ऋच्छति । ऋ० । अर्त्तेर्गुणः शुट्चेत्यसानच् । अर्शसानाय भ्रष्टकांक्षिणे इतिवेदभाष्यम् ।

अर्शी । त्रि । गुदव्याधियुक्ते । इतिशब्दरत्नावली ॥

अर्शोघ्नः । पुं । सूरणे । भल्लातके । अ

ꣳसि हन्ति। अमनुष्यकर्तृकेषुचे तिहन्तेष्टक॥

अर्शोघ्नी। स्त्री। तालमूल्याम्॥ भल्लातक्याम्॥ ठित्वान्ङीप्॥

अर्शोरोगयुतः। त्रि। अर्शसे। मूलव्याधियुते॥ अर्शोरोगेणयुत॥

अर्शोऽश्वितः। पुं। अर्शोघ्ने॥ अर्शसोऽश्वितः॥

अर्हन्तः। पुं। क्षपणे॥ बुद्धे॥ त्रि। मान्ये॥ इतिमेदिनीमुद्राङ्किता॥

अर्हः। पुं। पूजाप्रशंसास्तुतिनमस्कारादिभिः पूजनीये परमेश्वरे॥ अर्हते पूज्यतेषोडशभिरुपचारै रित्यर्हः। अर्हःकर्मणिघञ्॥ शक्रे॥ त्रि। योग्ये अर्हति। अर्हपूजायाम्। पचाद्यच्॥

अर्हण। पुं। जिने॥ न। पूजने॥ उपायने। पुष्पादौ॥

अर्हणा। स्त्री। अर्हायाम्। योग्यायां पूजायाम्॥ अर्हपूजायां चुरादिः। ण्यासश्रन्थोयुच्। टाप्॥

अर्हणीयः। त्रि। पूज्ये॥

अर्हन। पुं। जिने॥ जिनभेदे। अनादिसिद्धजीवास्तिकाये॥ क्षपणे॥ बुद्धे॥ कोङ्कवेङ्कुटकानाराजिनऋषभदेवे॥ त्रि। पूज्ये॥ अर्हति। अर्ह०। अर्ह प्रशंसायामिति शतृप्रत्यय.॥

अर्हत्तमः। त्रि। श्रुताचाराभिजनादिभि. पूज्यतमे॥

अर्हन्त.। पुं। सुगते॥ क्षपणे॥ अर्हति। अर्ह०। बाहुलकाज्झच्॥

अर्हा। स्त्री। पूजायाम्॥ अर्ह०। गुरोश्चहलइत्यकारप्रत्यय.। टाप्॥

अर्हितम्। त्रि। अर्चिते॥ अर्ह्यतेस्म। अर्हपूजायाम क्तः॥

अलम्। न। वृश्चिकपुच्छकण्टके॥ हरिताले॥

अलकः। पुं। न। चूर्णकुन्तले॥ अलति भूषयति मुखम् अल्यतेवा। अलभूषादौ। कुनादित्वादुन्॥

अलकनन्दा। स्त्री। कन्यायाम्॥ गयाम्॥ यथा। तथैवालकनन्दापिदृणे नैतिभारतम। मयातिसागरं त्वासप्तभेदामलामुने इति॥ तत्र।सोतावत॥

अलकप्रभा। स्त्री। यक्षेशपुर्य्याम्॥

अलकप्रियः। पुं। पीतसालके। विजयसार इतिख्याततरौ॥

अलका। स्त्री। कुवेरपुर्य्याम्॥ अष्टवर्षावधिदशवर्षपर्यन्तवयस्कायांकन्यायाम॥ अलति भूषयति। अलभूषणादिषु। कुनशिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि। क्षिपकादित्वान्नेत्वम्॥

अलकाधिपः। पुं। धनपतौ॥ अलकायाअधिपः॥

अलक्तः । पुं । लाक्षारसे । अस्य गुणाः । तिक्तत्वम् उष्णत्वम् कफवातरोगव्रणदोषनाशित्वम् कण्ठरोगशमनत्वम् दृषिकारित्वञ्चेति राजनिर्घण्टः । लाक्षायाम् । नलक्ज्वलेभ्य । ओलजी ओलस्जी व्रीडे । बाहुलकात्तन् । यद्वा । नलक्ष्यतेस्म । अभक्ष्यत्वात् । क्तः । यद्वा । नरक्तोऽस्मात् । कपिलकादित्वाल्लत्वम् ।

अलक्तकः । पुं । लाक्षारसे । निर्भर्त्सने । लाक्षायाम् । यथा । कदाकालेमातः कथय कलितालक्तकरसंपिबेयंविद्याशीतवचरणनिर्णेजनजलमिति । अलक्तमेवालक्तकम् ।

अलक्षणः । त्रि । परेतत्त्वे । अननुमेये । नविद्यतेलक्षणंयस्मिन् । न । दुर्लक्षणे । त्रि । तद्वति ।

अलक्षितः । त्रि । अज्ञाते ।

अलक्ष्मीः । स्त्री । निर्ऋतौ । नरकदेवतेतिकश्चित् । अशोभायाम् । लक्ष्मयाः विरुद्धा ।

अलगर्दः । पुं । जलव्याले । नागादपकृष्टसर्पजातौ । लगति । लगेसङ्गे । क्विप् । अर्दयति । अच् । लकचासावर्दश्च । लग्नः सन् पीडकइत्यर्थः । निर्विषत्वात्तद्भिन्नोऽलगर्दः । यद्वा । अलति । अलगत्यादौ गर्दशब्दे । अच् । अलश्चासौगर्दश्चेति ।

अलगर्द्दः । पुं । जलव्याले । अलंगृध्यति । गृधु अभिकाङ्क्षायाम् । पचाद्यच् । पृषोदरादिः ।

अलङ्करणम् । न । भूषायाम् । कृञ् । ल्युट् ।

अलङ्करिष्णुः । त्रि । भूषके । मण्डने । अलङ्करोति तच्छीलः । अलंकृञ्ञिष्णुच् ।

अलङ्कर्त्ता । त्रि । अलङ्करिष्णौ । अलङ्करणशीले । अलङ्करोति । तृन् ।

अलङ्कर्म्मीणः । त्रि । कार्यक्षमे । कर्मक्षमे । क्रियाकरणसमर्थे । कर्मक्रियायै अलंसमर्थः । अषडक्षेतिखः । प्राप्तापन्नालम्पूर्वेतिपरवल्लिङ्गनिषेधात्ज्ञापकात् समासः । पर्याप्त्यर्थेनालमर्थ इतिवा ।

अलङ्कारः । पुं । हारादौ । कङ्कणाद्याभरणे । अथालङ्कारधारणविधिरुच्यते । रेवत्यश्विधनिष्ठासु हस्तादिष्वपिपञ्चसु । गुरुशुक्रबुधस्याह्निस्त्र्यालङ्कारधारणम् । अनिष्टेष्वपिनिर्दिष्टं स्त्रीणामलङ्कारधारणम् । उद्वाहेराजसम्माने ब्राह्मणानाञ्चसम्मते । शिरस्सु मुकुटं हारः कुण्डलञ्चाङ्गदंतथा । कङ्कणंवालकञ्चैवमेखलाष्टाविति क्रमात् । प्रधानभूषणान्येषु यथासंख्या

नि निश्चयः। पद्मरागश्चवज्रञ्चविज
योगोविद्रास्तथा । मुक्तावैदूर्यनी
लानितथामरकतंक्रमात् । आदि
त्यादिग्रहाजानां सर्वसम्पत्तिदाम-
ताः । सुवर्णेनापिघटनासर्वेषामुपयु
ज्यते । प्रधानभूषणेष्वेवमप्रधाने न
निश्चयः । प्रधानभूषणंप्राय शिर-
सोह्यभिधीयते। तस्यप्रधानभूषत्वा
दित्याहभृगुनन्दन ॥ सुखदामणयः
शुद्धादुःखदादोषशालिनः । अतोम
णीनांवक्ष्यामिलक्षणानि यथाक्रम-
मितियुक्तिकल्पतरुः।मणिविशेषल-
क्षणानितत्तच्छब्देद्रष्टव्यानि। काव्या
लङ्कारे । उपमादौ ॥ सद्विविधं ।
शब्दालङ्कारोऽर्थालङ्कारश्च । तल्लक्ष
णोदाहरणान्युपमादितत्तच्छब्देव-
लोकनीयानि । चतुष्कसेप्रगुरोः
। ईसंज्ञायाम् । अलंक्रियतेऽनेन ।
-डुकृञ० । घञ् ॥
अलङ्कृतः । त्रि । भूषिते । अलंक्रियते-
स्म० । क्तः ।
अलङ्क्रिया । स्त्री । भूषायाम् अलङ्कार
साध्यशोभायाम् । अलंकरणम् ।
कृञः शच । टाप् ।
अलन्धूमः । पुं । धूमसंहतौ ।
अलब्धः । त्रि । अप्राप्ते ।
अलब्धभूमिकत्वम् । न । कृतश्चिन्निमि



त्तात् समाधिभूमेरलाभे ॥
अलम् । र । भूषणे । पर्याप्तौ । वारणे
। निषेधे ॥ निरर्थके । शक्तौ । अत्य
र्थे ॥ अवधारणे । अलति अलनं वा
। अलभूषणादौ । बाहुलकादम ।
अलम्पुरुषीणः । त्रि । प्रतिमल्लादौ ।
अलंपुरुषायेत्यर्थे अपञ्चेतिखः ।
अलम्बुष । पुं । प्रहस्ते । छर्दे । राक्ष
सान्तरे ।
अलम्बुषा । स्त्री । मुण्डीर्याम् । स्वर्वे
श्याभेदे । लज्जालुप्रभेदे । गन्धाया
म् ॥ अलम्बुषालघुःस्वादुः क्रिमिपित्त
कफापहेष्वस्यागुणाः ।
अलम्बुसाः । पुं भूम्नि । देशविशेषेषु
अलर्कः । पुं । प्रतापसे । धवलार्के ।
था । अलर्ककुसुमं हृष्यंलघुदीपन
पाचनम । अरोचकप्रसेकार्श. का
सश्वासनिवारणमिति ॥ उन्मत्तकुनि
। विषिसकुकुरे । नृपान्तरे । अल
ति । अलभूषणादौ । क्विप् । अल्
चासावर्कश्च । यद्वा । अलमर्कते अ
र्च्यते वा । अर्कस्तवने अर्चपूजायां
वा । घञ् । प्रकन्ध्वादिः । अत्रुवि
शेषे ।
अलर्कक । पुं । अलकार्के ।
अलले । र । पिशाचभाषयासंबोधने ॥
अलवालम् । न । आलवाले । जवमा

अलातः

खाति । खाआदाने । मूलविभुजादि त्वात्क । नञ्समास. ॥

अलस' । त्रि । अवश्यकर्त्तव्येष्वप्रवृत्ति शीले । क्रियामन्दे । क्रियाजडे । शी तके ॥ यथा । स्त्रीभिःशठइचअ्री भिरलस परिभूयते । इतिकामंद के । श्रियंहिसततोत्साहीदुर्बलोपि समश्नुते इतिच ॥ पुं । पादरोगेमभे दे ॥ यथा । क्लिन्नाङ्गुल्यंतरौपादौक ण्डूदाहरुजान्वितौ । दुष्टकर्दमसंस्प र्शादलसंतंविभावयेदिति ॥ द्रुमभेदे ॥ नलसति । लसश्लेषणे । पचाद्यच् ॥

अलसक । पुं । उदररोगविशेषे ॥ अ स्यस्वरूपन्तु । कुक्षिरानह्यते ऽत्य र्थंप्रताम्येत् परिकूजति । निरुद्धोमा रुतश्चैवकुक्षावुपरिधावति ॥ वातव र्चोनिरोधश्चयस्यात्यर्थंभवेदपि । त स्यालसकमाचष्टेतृष्णोद्गारौचयस्य- तु ॥ इति ॥

अलसा । स्त्री । हंसपद्याम् ॥ टाप् ॥

अलसीका । स्त्री । शरीरजोदकविशेषे ॥ उक्तंच चरकेण । आमगंधियत्तुर्वा त्वगन्तरे न्यागतमुदकंतदलसीका शब्दंलभते इति ॥

अलसेक्षणा । स्त्री । स्त्रीविशेषे ॥ अल से ईक्षणेयस्याः ॥

अलातः । पुं । न । अङ्गारे । उल्मुके ।

अलिङ्ग.

अर्द्धदग्धकाष्ठे ॥ लानम् । लाआदाने । क्त । नलातमस्य ॥

अलाबु । स्त्री । तुम्ब्याम् ॥

अलाबूः । स्त्री । तुम्ब्याम ॥ नलम्बते । लबिअवस्रंसने । नञिलम्बेर्नलोप श्चेत्यूर्णित ॥ अलाबूः कथितातु ... दिधादीर्घावर्त्तुला । मिष्टतुम्बीफ लंहृद्यं पित्तश्लेष्मापहंगुरु । वृष्यंर चिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ अ लावुका फलंदीर्घंघृतेपक्वं सजीरक म् । दुग्धसैन्धवचूर्णैर्नसंसिक्तंत्वनुशो षितम् ॥

अलाबूकटम् । न । तुम्बीरजसि ॥ अ लाबूनांरजः । अलाबूतिलोमाभङ्गा भ्यो रजस्युपसंख्यानमितिकटच् ॥

अलारम् । न । कपाटे ॥

अलि: । पुं । स्त्री । सुरायाम् ॥ पुष्पलि हि । कोकिले । काके । वृश्चिके ॥ अलति इंगेसमर्थो भवति । अलभू षणादौ । सर्वधातुभ्यइन् ॥

अलिकम् । न । ललाटे ॥ अलति अ स्यतेवा । अल० । वाहुलकादिकन् ॥

अलिकुलसङ्कुल. । पुं । कुब्जकवृक्षे ॥

अलिङ्गः । त्रि । सर्वसंसारधर्मवर्जिते परमात्मनि ॥ लिङ्गंबुद्ध्याद्यविद्यमान मस्येति । सन्निहितमपिनलिंग्यतइ- तिवा ॥ धर्मध्वजित्वरहिते ॥ अव्यक्त

लिङ्गे ।

अलिजिह्वा । स्त्री । अल्परसने । जिह्वो परिक्षुद्रजिह्वायाम ।

अलिञ्जरः । पुं । मणिके । माँट इति ख्याते । अलनम् । अलभूषणादौ । इकृष्यादिभ्यः । इनधा । अलिंसाम र्थ्यंजरयति जृणातिवा । जष्वयोाहा नौ जृवयोाहानौवा । अण् अचवा । पृषोदरादिः ॥

अलिदूर्वा । स्त्री । मालादूर्वायाम् ।

अली । पुं । वृश्चिके ॥ भ्रमरे । अलमर्थो ऽस्यास्ति । व्रीह्यादित्वादिनिः । अ व्ययानां भमात्रेटिलोप । यद्वा । अ लोदंशकलांगूलम् । तदिवास्त्यस्य । अतइनिः ।

अलिन्दः । पुं । प्रघाणे । वहिर्द्वारप्रकोष्ठे । द्वारप्रकोष्ठा इहिर्दाराग्रवर्त्तिच तुष्के ॥ द्वारवहिर्भागे । अल्यतेभूष्य ते । अलभूषणादौ । बाहुलकात् किन्दच् ॥

अलिपकः । पुं । पिके ॥ भृङ्गे । कुक्कुरे ॥

अलिपत्रिका । स्त्री । वृश्चिकासक्षके क्षुपे ।

अलिपर्णी । स्त्री । वृश्चिकाल्याम् ।

अलिप्रियम् । न । कोकनदे । रक्तोत्प ले ॥ अलीनांप्रियम् ।

अलिप्रिया । स्त्री । पाटलावृक्षे ।

अलिमकः । पुं । भेके । पिके ॥ अलौ । भ्रमरे । पद्मकेशरे । मधूके । इति मेदिनिकरः ॥

अलिमोदा । स्त्री । गणिकारीवृक्षे ।

अलिम्पकः । पुं । पिके । अलौ । पद्मके केशरे । मधूके । भेके । इतिहेम चन्द्रः ॥

अलिल् । पुं । सततगगनचारिणि शा स्त्रप्रसिद्धे पक्षिविशेषे । तथाचोदा हरन्तिवेदान्तेषु वार्त्तिककाराः । अ लिलः पक्षिणःपुत्रोगगनाद्याति भूत लम् । स्वबोधाभावतः स्वस्यबोधे ा त्यम्बरंपुनरिति ॥ स

अलिवल्लभा । स्त्री । पाटलौ । फलेक ह याम् ।

अलिवाहिनी । स्त्री । केवेरइतिकोकन देशप्रसिद्धे केविकापुष्पे ।

अलीकम् । न । अप्रिये । दिवि । भाले ॥ अलति अल्यतेवा । अलभूषणादौ । अलीकादयश्चेतिसाधुः । असत्ये ॥ अलत्यनेना ऽयोगलिम् । अत॰ अलीकादिः ।

अलीकमत्स्यः । पुं । रिकवच्छइतिख्याते ॥ यथा । माषपिष्टिकयालिप्तं नागव ल्लीदलंमहत् । तत्तुसंस्वेदयेत्सम्यग् स्थाल्यामास्तारकोपरि ॥ ततोनि ष्काश्यतंखण्डांतलस्तैलेन भर्जयेत् ।

अलीकमत्स्य उक्तोयंप्रकारः पाकपतेः । तंहन्ताकभटिचेश वास्तूकेन चभक्षयेत् । अलीकमत्स्यकोक्च्यो दृष्योवल्योऽतिपुष्टिदः । वातकृच्छ्क्रदःप्रोक्तःकिञ्चित्पित्तं प्रकोपयेदिति ।

अलुब्धः । त्रि । निर्लोभे । लोभहीने ।

अले । । । पिशाचोक्त्यासम्बुद्धौ ।

अलेपकम् । न । निरवद्ये ।

अलेले । । । पिशाचोक्त्यासम्बुद्धौ ।

अलोकः । पुं । अतलादिसप्तसु । नलोक्यते अस्माभिः । लोकृ० । घञ् ।

लोकाकाशास्तिकायः । पुं । लोकानां वहिर्भूताकाशे ।

लोभः । पुं । लोभाभावे । त्रि । तद्वति । यथा । अलोभीस्यात प्रजाविभागगृह्णीयात सञ्चितंकरम् । इष्टसङ्गीकृतंधर्मं पुत्रवत्पालयेत् प्रजा इतिकाशीखण्डः ।

अलोभी । त्रि । लोभरहिते । अलोभोस्यास्तीति ।

अलोलुपः । त्रि । इन्द्रियाणां विषयसन्निधानेप्यविक्रियपुरुषे ।

अलौकिकः । त्रि । लोकातीते । लौकिकप्रत्यक्षाविषये । अमानुषिके । नलौकिकः ।

अल्पम् । त्रि । किञ्चिदर्थे । ईषत् । मनाक् । स्तोके । अल्प्यतेवार्यते । अलभूषणादौ । बाहुलकात्पः । सूक्ष्मे । स्वल्पे । मर्त्ये ॥

अल्पकम् । त्रि । अल्पार्थे । कृपणे । पुं । यवासे । अल्पमेवस्वार्थेकः ।

अल्पकेशी । स्त्री । भूतकेश्याम् ।

अल्पगन्धम् । न । रक्तकैरवे ।

अल्पतनुः । त्रि । स्वल्पदेहवति । पृश्नौ । खर्वे । दुर्बले । अल्पास्थियुक्ते । अल्पंतनुःशरीरमस्य ।

अल्पप्रज्ञः । त्रि । अल्पमेधसि । अल्पाप्रज्ञायस्यसः ।

अल्पप्रमाणकः । पुं । चेलाने । चेलो । चेलातरमूज इतिगौडभाषाप्रसिद्धे फललताविशेषे । त्रि । अल्पमाने । अल्पंप्रमाणमस्य ।

अल्पबुद्धिः । त्रि । मन्दे । अल्पाबुद्धिरस्य ।

अल्पमारिषः । पुं । तण्डुलीये । चंउराई इतिप्रसिद्धशाके । अल्पश्चासौमारिषश्च ॥

अल्पमेधाः । पुं । मन्दप्रज्ञत्वेनवस्तुविवेकासमर्थे । अल्पप्रज्ञे । अल्पामेधायस्य । नित्यमसिच् प्रजामेधयोः ।

अल्पशमी । स्त्री । शमीरे ।

अल्पसरः । न । वेशन्ते । अल्पंचतत्सरश्च ॥

अल्पायुः । पुं । छागे । त्रि । मितायुषि

॥ अल्पम् आयुर्यस्य ॥

अल्पिका । स्त्री । मुद्गपर्ण्याम् ॥ अल्पमात्रायाम् ॥

अल्पिष्ठः । त्रि । स्वल्पे । अत्यल्पे ॥ अयमेषामतिशयेनाल्पः । अजादीगुणवचनादेवेतीष्ठन् ॥

अल्पीयान् । त्रि । स्वल्पे । अणीयसि ॥ अयमनयोरतिशयेनाल्पः । अजादीगुणवचनादेवेतीयसुन् ॥

अल्ला । स्त्री । मातरि ॥ अम्बायाम् । अथर्वणह्रुतोक्तायांपरदेवतायाम् ॥

अव । । । व्याप्तौ ॥ निश्चये ॥ अनादरे ॥ असाकल्ये ॥

अवकटः । त्रि । अवाचीने । अवकुटारे ॥ अवाचीनः । अवात कुटारश्चेति चात्कटच् ॥ न । वैरूप्ये ॥

अवकम्पितः । त्रि । कम्पिते ॥ पुं । बुद्धान्तरे ॥

अवकरः । पुं । सम्मार्जन्यादिक्षिप्ते धूल्यादौ । सङ्करे ॥ अवकीर्यते । कृविक्षेपेहिंसायां वा । ऋदोरप् ॥

अवकर्षः । पुं । अनुकर्षे अवकृष्यते । कृष° । घञ् ॥

अवकलितम् । त्रि । दृष्टे ॥ इतिधरणिः ॥

अवकल्कनम् । न । मिश्रीकरणे । चिन्तने ॥

अवकाशः । पुं । अन्तरे ॥ कर्मरहितकाले ॥ प्रव्यक्ते ॥ यथा । अवकाशेषु चोक्षेषुनदी तीरेषु चैवहीतिमनुः ॥ अवपूर्वात् काशतेर्घञ् ॥

अवकीर्णः । त्रि । अवध्वस्ते । विक्षिप्ते ॥ अव कृ° । क्तः ॥

अवकीर्णी । त्रि । क्षतब्रह्मचर्यादिनियमे । क्षतव्रते । स्त्रीसंपर्कात् विप्लुतब्रह्मचर्ये प्रथमाश्रमिणि यतौच ॥ ब्रह्मचार्य्यवकीर्णीस्यात् कामतस्तु-स्त्रियंव्रजन्निष्युक्तः । अवकरणम् । कृविक्षेपे हिंसायांवा । भावेक्तः । अवकीर्णं विक्षिप्तंव्रतं हिंसनं वा अनेन । इष्टादिभ्यश्चेतीनिः ॥

अवकुटारः । त्रि । अवकटे ॥ अवाचीनः । अवात् कुटारश्च ॥

अवकृष्टः । त्रि । वहिष्कृते । निष्कासिते ॥ अवकृष्यतेस्म । कृषविलेखने । क्तः ॥

अवकेशी । त्रि । कालानुत्पन्नफलवृक्षे । वन्ध्ये । अफलेवृक्षे ॥ अवसन्नाः केशायस्यसोवकेशी निष्केशः । केशस्तिदृष्टान्तत्वेन अस्य । अतइनिः । सयथानिष्केशः एवमयं निष्फलः ॥ अवकंशून्यमीष्टेतच्छीलः । सुप्यजातावितणिनिर्वा ॥

अवक्रः । त्रि । अकुटिले ॥

अवक्रचेताः । पुं । परमात्मनि ॥ अवक्रमा

 

दिस्थप्रकाशवन्निश्चयमेव अवस्थित मेकरूपंचेतो विज्ञानमस्येति ॥ त्रि । अकुटिलचित्ते ॥ अवक्रसरलंचेतो यस्य ॥

अवक्रय. । पुं । मूल्ये । वस्ते ॥ राजग्राह्यद्रव्ये । वणिग्भि शुल्कस्थानेप्रतिभाण्डमधिपतयेदेये ॥ एतावत् कालमुपयोगार्थं भाण्डवस्त्राश्वादि मंशादीयते मह्यंच युष्माभिरेताव द्रूनंदेय मित्येवंविधेभाटके । भाडा इति प्रसिद्धे ॥ अवक्रीयते ऽनेन । डुक्रीञ्द्रव्यविनिमये । पुंसीतिघः । एरजित्यच्तुन ल्युटावाधात् ॥

अ.क्लेदनम् । न । किञ्चिदार्द्रत्वे ॥

अ॰।च्युतम् । न । उपरिकृतच्युते ॥

अ॰ क्षेप' । पुं । निन्दायाम् ॥

अवक्षेपणम् । न । भर्त्सने ॥

अवक्षेपणी । स्त्री । वल्गायामितिहेम चन्द्रः ॥

अवगणितम् । त्रि । तिरस्कृते । परिभूते ॥ अवगण्यतेस्म । गणसंख्याने । क्तः ॥

अवगण्ड: । पुं । गण्डस्थव्रणे । वरण्डे ॥ अवगच्छति । गम्लृगतौ । अमन्ताड्डु' ॥

अवगत' । त्रि । मते । ज्ञाते । विदिते ॥ अवगम्यतेस्म । गम्लृगतौ । क्तः ॥

अवगति: । स्त्री । ज्ञानमात्रे । ज्ञानसामान्ये ॥ अवगम्यतेऽनया । गम्लृ । क्तिन् ॥

अवगथ. । त्रि । प्रातःस्नाते ॥ अवगीयते । डुङ॰ । निशीथगोपीथा वगथा इ तिथक् गाङोह्रस्वस्य निपातनात् ॥

अवगम' । पु । माने ॥ अवगम्यतेऽनेन । फले ॥ अवगम्यते प्राप्यते । गम॰ । अप् ॥

अवगाढः । त्रि । निविडे ॥ अन्तः प्रविष्टे ॥ निमग्ने ॥ अवपूर्वाद्गाहेः कर्त्तरि क्त. ॥

अवगाद: । पुं । जलद्रोण्याम् । नौका जलसेचनकाष्ठपात्रे॥ इतिहलायुध.॥

अवगाह: । पुं । स्नाने ॥ स्नानगृहे ॥

अवगाहनम् । न । अवलोडने ॥ निमज्जने । अवगाहे । गोतामारके न हाना इतिभाषा ॥

अवगीत: । त्रि । निर्वादे । जनापवादे ॥ मुहुर्दृष्टे ॥ दुष्टे ॥ गर्हिते । ख्यातगर्हणे ॥ अवगीयतेस्म । गैशब्दे । क्तः । घुमास्थेतीत्वम् ॥ मुहुर्गीते ॥

अवगीर्ण: । त्रि । वर्णिते ॥ अवगीर्यते स्म । गशब्दे । क्तः ॥ अपानान्निर्गते द्रव्ये ॥

अवगुण. । पुं । दोषे ॥

अवगुण्ठनम् । न । योषाच्छिर: प्रावरण क्रियायाम् । घूंघट कर्ना इतिभाषा ॥

योषाननावरकसरन्ध्रवस्त्रे। स्त्रीमुखाच्छादनवस्त्रे। आच्छादनंसमुद्दिष्टमवगुण्ठनमीश्वरि। धूल्यादिम्नक्षणे॥ वेष्टने। मुद्राविशेषे।

अवगुण्ठिका। स्त्री। योषाप्रावरणभित्तायाम्। अवगुण्ठने। जवनिकायाम्।

अवगुण्डितम्। त्रि। चूर्णिते।

अवग्रहम्। न। प्रातिशाख्यादिषु पदविशेषे। यस्यपदस्यावग्रहः क्रियते तत्तेत्यर्थः॥ अवगृह्यते ग्रहउपादाने। विच्छेदोऽग्रहेरर्थः। पदास्वैरिवाह्या पश्येषुचेतिक्यप्। ग्रहिज्येति सम्प्रसारणम्। कुगतीतिसमासः।

अवगोरणम्। न। ताडनार्थं यष्ट्यादीनामुद्यमे। मारणेकू लट्ठउठावना इतिभाषा॥

अवग्रहः। पुं। वृष्टिरोधे। ज्ञानभेदे॥ प्रतिबन्धे। गजालिके। हस्तिललाटे। अवगृह्यतेऽनेन। ग्रहेरप॥ विच्छेदे। अन्तरपदसंज्ञार्थवयितुं पदपाठकाले किञ्चित्कालमवसाने। अवग्रहयाऽवग्रहः। ग्रहउपादाने। अवपूर्वात्ग्रहेर्घञोभावे ग्रहवृदृनिश्चिगमश्चेत्यप्। स्वभावे

अवग्रहणम्। न। प्रतिरोधे। तिरस्कृतौ। अनादरे।

अवग्राहः। पुं। वृष्टिरोधे॥ अवग्रहणम वग्राहः। अवेग्रहोवर्षप्रतिबन्धे इति अवपूर्वात् ग्रहेर्वाघञ्॥ शापे। आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहइतिघञ्। अवग्राहस्ते भूयात् अभिभवइत्यर्थः।

अवघट्टः। पुं। गर्त्ते। भूरन्ध्रे।

अवघातः। पु। अवहनने। तण्डुलादिकण्डने। अवहननम्। हनर्हिंसागत्योः। घञ्। हनस्तोचिण्णलोः। हो हन्तेरितिकुत्वम्।

अवचयः। पुं। पुष्पफलादीनांछेदने॥

अवचूडः। पुं। अवचूले॥ अधोलम्बिकलापे।

अवचूर्णितम्। त्रि। पेषिते। अवध्वस्ते॥ चिह्नसुधादिचूर्णस्यलेखादौ। अवक्षाचूर्णैराचिते। अवचूर्णयतेस्म सं-ज्ञायामितिण्यन्तात् क्तः। यद्वा। चूर्णमेचुरादिः

अवचूलः। पुं। अवाग्ध्वजकञ्चुके। ध्वजाग्रवस्त्राधो मुखवस्त्रे। भण्डेका पटका इतिभाषाप्रसिद्धे।

अवचूलकम्। न। चामरे।

अवच्छिन्नः। त्रि। सङ्कुचिते॥ अवच्छेदकतानिरूपके। विशिष्टेअवच्छेदाश्रये॥ अवच्छिद्यतेस्म। छिदिर्॰। क्तः।

अवच्छुरितम्। न। अट्टहासे। अवच्छु

रणम् । छुरच्छेदने । भावेक्तः ॥

अवच्छेदः । पुं । विरामे ॥ सङ्कोचे ॥ विशेषणत्वे ॥ एकदेशे । परिच्छेदे ॥

अवच्छेदकम् । त्रि । न्यायमतेन अव्याप्य वृत्त्यधिकरणसम्बन्धैकदेशे ॥ इतर व्यावर्त्तके । विशेषणे ॥

अवच्छेदकावच्छेदः । पुं । व्यापकत्वे ॥

अवच्छेद्यम् । त्रि । अवच्छेदाऽवच्छेदकोभयनिरूपणीये ॥

अवज्ञा । स्त्री । अनादरे ॥ अवज्ञानम् । आतश्चोपसर्ग इत्यङ् । टाप् ॥

अवज्ञातम् । त्रि । अवमानिते ॥ अवज्ञायतेस्म । ज्ञा अवबोधने । क्त. ॥ ानम् । न । तिरस्कारे ॥

अवटः । पुं । खिले ॥ गर्त्ते ॥ यथा । रक्षांगतमत्स्थानामेषधर्मः सनातनः । अवटेयेनिधीयन्ते तेषांलोकाः सनातना इतिरामायणम् । कूपे ॥ कुहकजीविनि ॥ अवन्त्यस्मात् अवरक्षणादौ । अकादिभ्योऽटन् ॥

अवटनिरोधनः । पुं । नरकविशेषे ॥

अवटिः । स्त्री । गर्त्ते ॥ इतिहलायुधः ॥

अवटीटः । त्रि ॥ नतनासिके । अवनाटे । अवनमनं नासिकायाः । नते नासिकायाःसञ्ज्ञायां टीटच् नाटच् भ्रटचः । अवटीटञ्चनासिकायानतमस्यास्याः । अर्श आद्यच् । अवटीटानासिका सा अस्त्यस्यपुरुषस्य । अर्श आद्यच् ॥

अवटुः । पुं । वृक्षभेदे ॥ गर्त्ते ॥ कूपे ॥ पुं । स्त्री । घाटायाम् । ग्रीवापश्चाद्भागे । ग्रीवायामुन्नतभागे ॥ अवटलति । टलवैक्लव्ये । अवटीकतेवा । टीकृगतौ । मितद्र्वादित्वात् डु. ॥ यद्वा । नवटति । वटवेष्टने वटभाषणेवा । वाहुलकादुः ॥

अवटोदा । स्त्री । भारतवर्षस्थनद्यन्तरे ॥

अवडीनम् । न । पक्षिणामवरोहणे । पक्षिणामधोगमने ॥

अवतंसः । पुं । न । कर्णपूरे ॥ शेखरे । शिरोभूषाभेदे । उत्तंसे ॥ अवतंसयति अवतंस्यतेऽनेनवा । तसिः सौचोभूषार्थः । पचाद्यच् हलश्चेति घञ्वा ॥

अवतमसम् । न । क्षीणान्धकारे ॥ अव क्षीनं तमः । अवसमन्धेभ्यस्तमस इत्यच् ॥

अवतरणम् । न । अवतारे ॥

अवतारः । पुं । अवतरणे । अवरोहे । पुष्करिण्यादौ । देवानांविशेषतो विष्णोर्मूर्त्त्यन्तरेण पूर्णांशावेशरूपेण पृथिव्यां प्रादुर्भावे । अवताराश्च सङ्ख्यातास्तेष्वेते विशेषतःप्रसिद्धाः

। मत्स्य: कूर्मोवराहश्चनरसिंहोऽथवा मनः।रामोरामश्चरामश्चबुद्धःकल्की चतेदश ॥ अपिच । प्रकृतिर्विष्णुरूपाचपुंरूपश्चमहेश्वरः । एवंप्रकृति भेदेनभेदास्तुप्रकृतेर्दश ॥ कृष्णरू पकालिकास्याद्रामरूपाचतारिणी- । बगलाकूर्ममूर्त्तिःस्यान्मीनोधूमाव तीभवेत् ॥ छिन्नमस्तानृसिंहःस्याद्व- राहश्चैवभैरवी।सुन्दरीजामदग्न्य. स्याद्वामनोभुवनेश्वरी॥कमलाबौद्ध रूपास्यान्मातङ्गीकल्किरूपिणी। स्व यंभगवतीकालीकृष्णस्तुभगवानस्व- यम॥ स्वयञ्चभगवान्कृष्ण.कालीरू पोभवेद्ध्रुवम्। इतिमुण्डमाला। विशे षोऽवलितोपाख्यानेद्रष्टव्य'॥पुनश्श्री भागवते १ स्कन्धे ३ ऽध्याये सएवप्रथ मंदेव: कौमारंसर्गमाश्रित इत्यादि नाद्रष्टव्यः ॥ तीर्थे । नद्यादितीर्थे ॥ अवतरन्त्यनेनाश्मिन्वा । तूप्लवनसन्त रणयो' । अवेतृस्त्रो र्घञ् ॥

अवतारणम् । न । भूतादिग्रहे । वस्त्रा ञ्चले ॥ अर्च्चने ॥ अवरोहणे ॥

अवतीर्ण: । त्रि । अवतरणविशिष्टे । प्रादुर्भूते ॥ जलादौकृतावरोहे ॥ प्रविष्टे ॥

अवतोका । स्त्री । स्रवद्गर्भायाम् । पति तगर्भायांगवि ॥ अवगलितं तोकम-

पत्यं यस्याः ॥

अवदंश: । पुं । दंशने ॥ भर्जितद्रव्यचर्व णे । मद्यपानरुचिजनकभक्ष्यद्रव्ये॥ अवदंश्यते पानरुच्यर्थम् । दंशदशने । कर्मणिघञ् भावेवा ॥

अवदात: । पुं । सिते॥ गौरे ॥ त्रि ।वि शुद्धे। शुक्लगुणविशिष्टे ॥ पीतवर्णव ति ॥मनोज्ञे ॥ अवदायतेस्म । दैप् शोधने । क्तः ॥

अवदानम् । न। खण्डने॥ पराक्रमे ॥ अतिक्रान्ते । शुद्धकर्मणि ॥ यथा । वि पञ्चागायन्तीविविधमवदानंपुरारि पोरिति ॥ उशीरे ॥ दोअवखण्डने दैपशोधनेवा । भावेल्युट् ॥

अवदारक: । पुं । खनित्रे ॥ त्रि । वि रणकर्त्तरि ॥

अवदारणम् । न । खनित्रे ॥ अवदार्यते ऽनेन । दृविदारणे । णिजन्त: । ल्युट्॥

अवदाह: । पुं । अवदहने ॥ न । वीरण मूले ॥ अवनीयते दाहोऽस्मात् ॥

अवदीर्णम् । त्रि । खण्डिते ॥ द्रुते । द्र- वीभूते घृतादौ ॥ अवदीर्यतेस्म । दृ विदारणे क्तः ॥

अवदोह: । पुं । दुग्धे ॥ अवदुह्यते । दु ह० । कर्मणि घञ् ॥

अवद्यम् । त्रि । अधमे॥ पापे । निन्द्ये॥ नवदति परंगुणम् नउद्यते नउच्यते

वा। अवद्यावमाधमार्वरेफाः कुत्सि तेइतिवद्देर्नञिकर्त्तरियत्। अवद्यप द्येतितु कर्मणियत्॥

अवद्योतनम्। न। प्रकाशे। त्रि। त इति।

अवद्रङ्गः। पुं। हट्टे॥

अवधानम्। न। मनोयोगे॥ अवडुधा ञोल्युट्॥

अवधारणम्। न। निश्चये। अवधृतौ। इयत्तादिपरिच्छेदे। परिमाणनि-श्चये।

अवधारितः। त्रि। निश्चिते। कृतावधा रणे॥

आ र्य्यः। त्रि। अवधारणीये। निर्धा र्य्ये।

अवधिः। पुं। अवधाने। सीम्नि। परस्यां काष्ठायाम्। काले। बिले। अवधान म्। डुधाञ्०। उपसर्गे घोः किः।

अवधीरितः। त्रि। अवज्ञाते।

अवधूतः। त्रि। अभिभूते। निवर्त्तिते। यथा। अवधूतभय'। वायौ। अव धुनोति धूञ्०। क्तः। अनादृते। योगेश्वरे। सन्न्यासाश्रमिणि। तन्नि रुक्तिर्यथा। अक्षरत्वाद्वरेण्यत्वाद्धूत संसारसङ्कटात्। तत्त्वमस्यर्थसिद्ध त्वादवधूतोभिधीयत इति। अपि च। योविलङ्घ्याश्रमान् वर्णान् आ त्मन्येवस्थितः पुमान्। अतिवर्णाश्र मीयोगी अवधूतःसकथ्यतइति। य था रविःसर्वरसान् प्रभुङ्क्ते हुताशन श्चापिहि सर्वभक्षकः। तथैवयोगी विषयान् प्रभुङ्क्ते नलिप्यते पुण्यपा पैश्चशुद्धइत्यपि। अनयो विशेषो हंसेद्रष्टव्यः।

अवधूननम्। न। तिरस्करणे।

अवधूलनम्। न। अवचूर्णने।

अवधृतः। त्रि। आकर्णिते। निश्चिते।

अवधृतिः। पुं। अवधारणे[illegible]

अवध्यः। त्रि। मारणायोग्ये। यथा। अवध्याञ्स्त्रियं प्राहुस्तिर्यग्योनिगता स्वपीति। अपिच गान श्रुत लोके अवध्याः सुयोषितइति। अव ध्यवधे पापमुक्तंमनुना। यावानवध्य स्यवधेतावान् वध्यस्य मोक्षणे। अ धर्मोनृपतेर्दृष्टोधर्मस्तुविनियच्छत इ ति। ९ ऽध्याये २४९ श्लोकः।

अवध्वंसः। पुं। परित्यागे। निन्दने। अवचूर्णने।

अवध्वस्तः। त्रि। परित्यक्ते। निन्दिते। अवचूर्णिते॥ अवध्वस्यतेस्म। ध्व सुगतौच। क्तः।

अवनम्। न। प्रीतौ। रक्षणे। प्रीण ने। अवरक्षणादौ। ल्युट्।

अवनतम्। त्रि। अवाग्भूते। आनते।

अवनमतिस्म । नमनम्नत्वे । गन्त्य र्वे तिक्तः । अनुदात्तोपदेशेत्यनुना सिकलोपः ॥
अवनतिः । स्त्री । विनये । अनौद्धत्ये ॥
अवनद्धः । त्रि । मन्थुले ॥
अवनाटः । त्रि । नतनासिके । नासि कायाःनतम । नतेनासिकाया इति नाटच् । तद्योगान्नासिकाऽवनाटा । साम्यस्य । अर्शआद्यच् ॥
अवनामः । पुं । प्रणामे । अवनमनम् । अवणामोघञ् ॥
अवनायः । पुं । अधोनयने । निपातने । अवनयनम् । णीञ् प्रापणे । अवो देर्ानिं ञ् ॥
अवनिः । स्त्री । भुवि । अवति अव्यते वा । अवरक्षणादौ । अर्तिसृधृधम्य विनिः ॥
अवनिक्तः । त्रि । क्षालिते ॥
अवनी । स्त्री । शिरायाम् । भूमौ । त्रा यमाणायाम् । कृदिकाराद्तिवा ङीष् ॥
अवनीपतिः । पुं । राजनि । अवन्याः पतिः ॥ अवनीं पातिवा । पारक्षणे पातेर्डतिः ॥
अवनेजनम् । न । प्रक्षालने । हस्तसंस्का रे । अवणिजिर० । ल्युट् । पिण्ड प्रदानार्थमास्तृतकुशोपरिजलसे-चने ॥
अवन्तयः । पुं । देशभेदे । मालवेषु ॥ अवति । अवरक्षणादौ । वाहुलका क्षिच ॥
अवन्तिका । स्त्री । उज्जयिन्याम् ॥
अवन्तिसोमम् । न । काञ्जिके । अवन्ति षु अभिषुतं सोमम् । शाकपार्थि वादिः ॥
अवन्ती । स्त्री । देशभेदे ॥ यथा । साम्र पर्णा "समासाद्यशेलादुशिखरोर्भ्रत" । अवन्तीसंज्ञकोदेश. कालिकातत्नि ष्ठतीति ॥
अवपातः । पुं । विले । निपाते । अ पतने । अवपतनम् । पत्लृ० । १ गजग्रहणागर्त्ते । अवपातस्तुहस्ति गर्त्तेछन्नेतृणादिनेतियादवः । खौ धी इतिभाषा ॥
अवपाटितः । त्रि । भिन्नोद्कीकृते अ पपाटिते ॥
अवपाशितः । त्रि । बद्धे ॥
अवप्लुतः । त्रि । अवतीर्णे । सम्यगेवाव तीर्णे ॥
अवबुद्धः । त्रि । अनुभूते ॥
अवबोधकः । पुं । परिदीपके ॥ अवबो धयति । बुध । ण्वुल् ॥
अवभर्त्सितः । त्रि । दग्धे ॥
अवभासः । पुं । साक्षात्कारे ॥

अवभासकः। चि। प्रकाशके ॥

अवभृथः। पुं। दीक्षान्तयज्ञे। मुख्ययज्ञशेषयज्ञविशेषे। प्रधानकर्म्मसमाप्तौ क्रियमाणेष्टिविशेषे॥ यज्ञाङ्गभूतस्नानविशेषे॥ अवभ्रियतेऽनेन। डु भृञ्धारणपोषणयोः भृञ्भरणेवा। अवेभृञइतिकथन्॥

अवभ्रटः। त्रि। नतनासिके॥ अवनतं नासिकायाः। नतेनासिकायाः संज्ञायामितिभ्रटच्। अवभ्रटंच नासिकायानतमस्यास्याः। अर्श्आद्यच्। अवभ्रटानासिकास्यास्य पुरुषस्य। अर्श आद्यच्॥

[illegible]:। त्रि। कुत्सिते॥ अवस्यस्मादागानम्। अवरक्षणादौ। अवइति सूत्रेणावतेरमःप्रत्ययोनिपातितः॥ अवोभवोवा। अवोधसोर्लोपश्चेतिमः॥ न। अवमदिने॥

अवमतम्। चि। अवमानिते॥ अवमन्यतेस्म। मनज्ञाने। क्तः॥

अवमतिथिः। स्त्री। युतिःसन्तिश्[illegible] वारे एकस्मिंअवमातिथि रिति ख्यिततिथौ॥

अवमदिनम्। न। अवमे॥ यथा। तिथ्यन्तद्वयमेकोदिनवारःस्पृश तियचत द्भवत्यवमदिनम्। अस्यार्थः। दिनेतावद्वारद्वयंभवति वारप्रवृत्तिकाखात् पूर्वमेकोवारस्ततपरंचान्यः। तद्दिनस्याहोरात्रस्य एकोवारस्तिथ्यन्तद्वयं तिथित्रयंवायद्दिनेस्पृशति तदवमदिनम्। वारप्रवृत्तिकालात् परंपरदिनसूर्योदयावध्येकवारेण तिथ्यन्तद्वयस्पर्शे तिथित्रयस्पर्शेवा अवमदिनंस्यादित्यर्थः॥

अवमन्ता। त्रि। अवमानस्यकर्त्तरि॥ अवमन्यते। अवपूर्वान्मनेस्तृच्॥

अवमर्द्दः। पुं। पीडने। अवमर्द्दनम्। मृदक्षोदे। घञ्॥

अवमर्शः। पुं। नाटकसन्ध्यन्तरे॥

अवमानना। स्त्री। अवज्ञायाम्॥ अवमाननम्। मनेर्ण्यन्ताद्युच्॥

अवमानितम्। त्रि। अवज्ञाते॥ अवमान्यतेस्म। मानपूजायाम्। क्तः॥

अवमूर्द्धशयः। त्रि। अधोमुखशायिनि॥ अवनतो मूर्द्धायस्यसः। अवमूर्द्धशेते शीङ्स्वप्ने। पार्श्वादिषूपसंख्यानादच्॥

अवमोटनम्। न। परिवर्त्तने॥

अवमोटनी। स्त्री। परिवर्त्तनशीलायाम॥

अवयवः। पुं। अङ्गे। प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनान्यनुमानावयवाः॥ अवयौति। युमिश्रणे। पचाद्यच्॥

अवरः। त्रि। चरमे। पश्चाद्भवे॥ अधमे॥

कार्ये । न । गवान्यजघ्नादिदेशे ।

अवराति । रादाने । आतश्चोपसर्ग इतिकः । यद्वा । नद्युतोतिव्रियतेवा । इत्यवरवो । अथ ग्रहइद्रिस्यद्वा ।

अवरजः । पुं । कनिष्ठभ्रातरि । यवीयसि । शूद्रे । अवरस्मिन् काले जातः । सप्तम्यांजनेर्डः ॥

अवरजा । स्त्री । कनिष्ठायांभगिन्याम् ।

अवरतः । ा । पश्चादर्थे । अवरस्मात् । तसिल् । अवरस्तादर्थे । विभाषापरावराभ्यामित्यतसुच् । अवरतोवस्थागतोरसर्वीयंवा ॥

अवरतिः । स्त्री । विरतौ । उपरामे । अवरमणम् । रमक्रिडायाम् । क्तिन् ।

अवरप्रोक्तः । त्रि । प्राकृतवुद्धिनोक्ते । नीचमतिनाप्रोक्ते । अवरेणप्रोक्तः ।

अवरवर्णः । पुं । स्त्री । शूद्रे । वृषले । अवरोऽधमोवर्णोऽस्य । अवरश्चासौ वर्णश्चेतिवा ।

अवरवर्णकः । पुं । स्त्री । शूद्रे । अवरवर्णएव ।

अवरव्रतः । पुं । अर्के । त्रि । हीनव्रते ।

अवरस्तात् । ा । अवरे । अवस्तादर्थे । अवरस्मिन् अवरस्याम् अवरस्मात् अवरस्याः अवरोऽवरावाअसच्छाग-तोरसर्वीयंवा । दिक्शब्देभ्यस्तस्तातिःतस्मिन्नियोगेनविभाषावरस्येति



अवरस्यपक्षेऽआदेशाभाव ।

अवरा । स्त्री । भवान्याम् । पार्वत्याम् ।

अवरार्द्ध्यम् । त्रि । अवरार्द्धभवे । अवरार्द्धेभवम् । परावराधमोत्तमपूर्वाच्चेतियत् ।

अवरीणम् । त्रि । धिक्कृते । अवरीयते स्म । रीङ्स्रवणे । क्तः ।

अवरुग्णः । त्रि । भग्ने ।

अवरुद्धः । त्रि । स्थगिते । आच्छादिते ।

अवरुद्धा । स्त्री । अन्तःपुरचारिण्यांभोग्यायांकर्मकर्याम् ।

अवरूढः । त्रि । अवतीर्णे ।

अवरोधः । पुं । तिरोधाने । राजद्वारेघ । शुद्धान्ते । राजस्त्रीगृहे । अवरुध्यतेऽत्र । रुधिरआवरणे । घञ् ।

अवरोधकः । त्रि । रोधकारके । अवरोधकर्त्तरि । अवरोधयति । अवपूर्वात् रुधेर्ण्वुल् ।

अवरोधनम् । न । राज्ञामन्तःपुरे । अवरुध्यतेऽत्र । रुधिर् आवरणे । ल्युट् । अवरोधकरणे रोकना इति भाषा । यथा । कक्षावरोधनमिति ।

अवरोधायनम् । न । अन्तः पुरे ।

अवरोधिकः । पुं । अन्तःपुराध्यक्षे । अवरोधेनियुक्तः । तत्रनियुक्तइतिठक् । संज्ञापूर्वकत्वाद्वृद्ध्यभावः । अवरोधेसाधुरितिवा । ठञ् ।

अवरोपितः । त्रि । उदासिते ॥

अवरोप्यमाणः । त्रि । अवतार्यमाणे ॥ वृक्षेभ्यःसंतालकर्मणिबटः प्रानव् । व-वः पोन्यतरस्यामितिपः ॥

अवरोहः । पुं । अवतारे । अवतरणे ॥ आरोहे । तरुमूलात्प्रभृतिशाखाग्रप र्यन्तं गतायां गुडूच्यादिलतायाम् । लतोद्गमे ॥ अधोगतौ । स्वर्गे ॥ अव रोहतिजन्यते । वृक्षबीजजन्मनि । पाशावच् ॥

अवरोहशाखी । पुं । प्लक्षवृक्षे ॥

अवरोहिका । स्त्री । अश्वगन्धालतायाम् ॥

रोही । पुं । वटद्रुमे ॥

र्णः । पुं । निन्दायाम् । परिवादे ॥ वर्ण्यते । वर्ण वर्णने । घञ् । वर्ण. प्रशंसा । तद्विरुद्धोऽवर्ण. ।

अवलग्न' । पुं । न । देहमध्ये ॥ त्रि । लग्नमात्रे । सलग्ने । लग्यतेस्म । ल गेसंगे । क्षुब्धस्वान्तेतिसाधुः । यद्वा । लज्जतेस्म । ओलस्जो व्रीडने । ग त्यर्थेतिक्तः । लस्जोरिति सलोपः । ओ दितश्चेतिनत्वम् । स्वीदितइतिनेट् । अवकृष्टमवसन्नं वा लग्नम् । प्रादयो गतेतिसमासः ॥

अवलम्बः । पुं । आधारे । अवलम्बने ॥

अवलम्बनम् । न । आश्रये । यथा । प्र तिकूलतामुपगतेहि विधौविफलत्व मेतिबहुसाधनता । अवलम्बनायदि नभर्तुरभून्न पतिष्यतःकरसहस्रम पीतिमाघे ९ सर्गः । पुं । हृदयस्थ कफे ॥

अवलम्बितम् । त्रि । अविलम्बिते । आ श्रयें । संश्रिते । आश्रिते । वस्त्रादि नारुद्धे ॥ अधोलम्बायमाने । अवल म्बतेऽच । लबि० । क्तोधिकरणे चेति-क्तः ॥

अवलिप्त । त्रि । गर्वअविवेकहीने ॥

अवलिप्तता । स्त्री । अहङ्कारे ॥

अवलिमा । पुं । अवलभावे । देहस्यरो गादिनिमित्तं जरादिनिमित्तवाकृ शीभावे ॥

अवलीढ. । त्रि । भक्षिते । कृतावलेहे ॥

अवलीला । स्त्री । अवज्ञायाम् । अना यासे ॥

अवलुञ्चनम् । न । लुञ्चने । लोचनाइति भाषा ॥

अवलेपः । पुं । गर्वे । लेपने । दूषणे ॥ सङ्गे । अवलेपनम् । लिपउपदेहे । घञ् ॥

अवलेपनम् । न । म्रक्षणे । विलेपने । मखना । इतिभाषा ॥

अवलेहः । पुं । लेह्यौषधे । अवलिह्य ते । लिह्आस्वादने । घञ् । तल्लक्षणं पर्यायाश्च

यथा। काथादेर्य पाकात् घनत्वं सारसक्रिया। सोऽवलेहश्चलेहश्चप्राश इत्युच्यते बुधैरिति वैद्यकपरिभाषा॥

अवलेहनम्। न। लेहने। जिह्वयाऽऽस्वादने। चाटना इतिभाषा॥

अवलोकनम्। न। आलोके। दर्शने॥ अनुसन्धाने॥ लोकृदर्शने। ल्युट्॥

अवलोकितम्। त्रि। निरीक्षते। देखा इतिभाषा॥ पुं। लोकनाथे। बुद्धविशेषे॥ नपुंसके भावेक्तः॥ न। प्रेक्षणक्रियायाम्॥

अवल्गुजः। पुं। सोमराज्याम्॥ त्रि। असाधुजे॥ अवल्गोरशोभनाज्जातः॥ कृष्णवर्णा सोमराज्याम्। बाकुच इतिगौडभाषा॥

अववादः। पुं। निन्दायाम्॥ आज्ञायाम॥ विस्रम्भे॥ अवाऽऽलम्बने। कार्यमवलम्ब्यवदनमत्र। वदेर्घञ्॥

अवश। त्रि। निःश्रेयससाधनाया ऽप्रयतमाने। परतन्त्रे। अस्वाधीनशरीरे॥ अविद्याकामकर्मादिपरवशे॥ प्रतिकूले॥ नविद्यतेवश मायत्तत्त्वंयस्य:॥

अवशिष्टः। त्रि। उर्वरिते। परिशिष्टे॥

अवश्यम्। ा। निश्चये॥ अशक्यनिवारणे। नित्ये॥ प्रयत्ने॥ अवश्यायते श्यैङ्गतौ। डमन्प्रत्ययः॥ लुम्पेदवश्यमःकृत्ये। यथा। अवश्यपाच्यम्। अवश्यश्चावश्यके इतिकृत्वंन॥ त्रि। अनायत्ते॥

अवश्या। स्त्री। कुज्झटिकायाम्॥ त्रि। अनायत्ते॥

अवश्यायः। पुं। नीहारे॥ अभिमाने। दर्पे॥ अवश्यायते शैत्यमापद्यते। श्यैङ्गतौ। श्याद्व्यधेतिणः। आतो-युगितियुक्॥

अवश्रयणम्। न। चुल्ल्यादितोऽवतार्यस्थापने॥

अवष्टब्धः। त्रि। अविदूरे। आसन्ने। आक्रान्ते॥ अवलम्बिते॥ अवष्टम्भस्य। ष्टभिस्तम्भे स्तम्भुरोधनेवा।। स्तम्भः अवाच्चेतिषः। अवाच्चालम्बनेतिसूत्रेण आविदूर्येस्तम्भःषत्वविधानादवष्टब्धशब्द आसन्नपर इति-अत्रश्रीनावष्टब्धे इत्यत्रमनोरमायांस्थितम्॥

अवष्टम्भः। पुं। स्वर्णे॥ स्तम्भे॥ प्रारम्भे॥ सौष्ठवे॥ अवष्टम्भनम्। ष्टम्भुरोधे। घञ्॥

अवष्वाणम्। न। भक्षणे॥

अव०। ा। बाह्ये। वहिरर्थे॥ अवोगच्छति॥ अवस्तादर्थे॥ अवरस्मिन् अवरस्याम् अवरस्मात् अवरस्याः अव

दो ऽवरा वा वसत्यागतोऽस्मिन्नीयं वा । पूर्वाधरावराणामित्यसिस्तत्सन्नियोगेनावरस्यावादेशश्च ॥

अवसः । पुं । अर्के । भूपे । अवति । अवरचणादौ । अत्यविचमीत्यादिनाऽसच् ॥

अवसक्तः । त्रि । लग्ने ।

अवसक्थिका । स्त्री । पर्य्यङ्कबन्धे । पर्यङ्के ॥

अवसण्डीनम् । न । पक्षिणोऽधःपतने शोभनवक्तायाम् ।

अवसन्नः । त्रि । प्राप्तावसादे । विषण्णे । अवासदत् । षद्लृ० । गत्यर्थेति क्तः ॥

अवसन्नता । स्त्री । खेदे । भावे तल् ।

अवसरः । पुं । प्रस्तावे । शिष्यजिज्ञासानिवृत्तावश्यवक्तव्यत्वरूपे सङ्गतिविशेषे । अनन्तरवक्तव्यत्वमवसरः । यथोपमानेऽवसरसङ्गतिरितिजगदीशतर्कालङ्कारः । वत्सरे । मन्त्रभेदे । वर्षणे । अवसरणम् । सृगतौ । बाहुलकादप् ॥ अधिकरणेपुंसिसंज्ञायामितिघो वा । योग्यकाले ।

अवसरालयः । पुं । अर्द्धरात्रे ।

अवसर्गः । पुं । निरवग्रहे । स्वतन्त्रे । अवसर्जनम् अवसृज्यते वा । सृज० । घञ् ॥

अवसर्पः । पुं । चारे । अवसर्पति । सृप्लृ गतौ । पचाद्यच् ॥

अवसर्पिणी । स्त्री । बौद्धकल्पे । सत्तु-दशकोटिकोटिसागरवर्षैस्समाप्यते ॥

अवसादः । पुं । अवसन्नत्वे । विषादे । अवसदनम् । षद्लृ० । भावे घञ् ॥

अवसादनम् । न । नाशे । शैथिल्यापादने ।

अवसानम् । न । समापने । विरामे । पर्य्यन्ते । मृत्यौ । सीमायाम् । षोऽन्तकर्मणि । ल्युट् ॥

अवसायः । पुं । शेषे । समाप्तौ । निश्चये ॥

अवसायकः । पुं । अवसानकरे । ष्यते र्ण्यन्तात् ण्वुल् ।

अवसितम् । त्रि । ऋद्धे । परिपक्वमर्द्दितधान्ये । ज्ञाते । गतौ । अवसाने । अवसानगते । समाप्ते । सम्बद्धे । षिञ् बन्धने इत्येतस्यावपूर्वस्य निष्ठायां रूपम् ॥ अवस्यतिस्म अवसीयते स्म वा । षोऽन्तकर्मणि । क्तः । द्यतिस्यतीतीत्त्वम् ॥

अवसृष्टम् । त्रि । निःसृते ।

अवसेकिमः । पुं । वटके । वडा इतिख्याते । इति हेमचन्द्रः ।

अवस्कन्दः । पुं । शिविरे । विजिगीषूणां निवेशस्थाने । अवस्कन्दति । स्कन्दि-

र० । पचाद्यच् । अ॰॰॰॰छने ॥

अवस्कन्दनम् । न । अ॰॰॰रणे ॥ अवगाहने ।

अवस्करः । पुं । विष्ठायाम् ॥ अपाने । गुह्ये । उपस्थे ॥ गोप्ये ॥ अवकीर्यते क्षिप्यते । कृविक्षेपे । ऋदोरप् । कस्कादिः । वर्चस्कोऽवस्कर इतिवासाधुः ।

अवस्तात् । । अधरे ॥ अवोर्थे ॥ अवरस्मिन् अवरस्याम् अवरस्मात् अवरस्याः अवरो ऽवरावा वसन्यागतोऽरमणीयंवा । दिक्छब्देभ्य इत्यस्तातिः । विभाषावरस्येतिपक्षेऽवादेशः ।

अवस्तारः । पुं । जवनिकायाम् । कनात इति चिक इति प्रसिद्धायाम् ॥ आस्तरणे ॥ अवस्तृणात्यऽनेनाभिन्ना । स्तञ् आच्छादने । अवेस्तृत्रोर्घञ् ॥

अवस्तु । न । अज्ञानादिसकलजडसमुदायस्वरूपे मायाप्रपञ्चे । वस्तुनोऽन्यस्मिन् । असद्वस्तुनि ॥

अवस्था । स्त्री । दशायाम् । कालकृतविशेषे । कालकृतोधर्मोवपुषोवैाव नादिविशेषस्तस्मिन् ॥ यथाहुः । कौमारं पञ्चमाब्दान्तंपौगण्डंदशमावधि । कैशोरमापञ्चदशाद्यौवनंतु ततः परमिति । अपिच । आषोडशाद्भवेद्बालस्तरुणस्तत उच्यते । वृद्धस्सप्ततेरूर्द्धंवर्षीयान्नवतेःपर इति । अवस्थाने ॥ अवतिष्ठति । अवपूर्वात् स्थाधातोर्यवस्थायामितिप्रकृतात् साधुः ॥ अवतिष्ठतेऽनयावा । आतश्चोपसर्गइत्यङ् । टाप् ॥

अवस्थाचतुष्टयम् । न । वैद्यकमतेकालकृतचतुर्विधदशायाम् ॥ यथा । आपञ्चदशवर्षंबाल्यम् । आत्रिंशद्वर्षं कौमारम् । आपञ्चाशद्वर्षं यौवनम् । पञ्चाशतऊर्द्ध्वंवृद्धत्वमिति ॥

अवस्थानम् । न । स्थितौ । वासे । प्रतिष्ठायाम् ॥ अवपूर्वात्तिष्ठतेर्ल्युट् ॥

अवस्थितः । त्रि । प्रतिफलिते ॥ आ॰॰ने । कृतावस्थाने । स्थिते ॥ अवपूर्वष्ठागतिनिवृत्तौ । क्तः । द्यतिस्यतिमास्थामितिकि । तीत्वम् ॥

अवस्थितिः । स्त्री । अवस्थाने ॥

अवस्यन्दनम् । न । नाव्ये ।

अवस्रंसनम् । न । अध॰पतने ॥

अवस्रंसितः । त्रि । लम्बिते ।

अवहः । पुं । वायोस्तृतीयेस्कन्धे ॥ यथा । स्तःसप्तोभुवोधर्माविधर्माच विधारणः । वरवश्चतुतीयोमारुद्राहकोगणः इति ॥

अवहननम् । न । अवघाते ।

अवहस्तः । पुं । हस्तपृष्ठे ।

अवहारः । पुं । चोरे ॥ यूतयुद्धादिवि

अग्रे । निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये । ग्रा हाख्ययादस्ति । अवहरति । अवपूर्वा त् हृञः स्याह्यधेतिञः । यद्वा । अव ह्रियन्तेऽस्मिन् । हृञ्० । अवहाराधा रेतिघञ् । धर्मान्तरे ।

अवहारकः । पुं । अवहारार्थे । हांगर इतिख्यातेजलजन्तुविशेषे । नक्रा- ले । अवहारएव । स्वार्थेकः ।

अवहार्य्यः । त्रि । समर्पणीये । दण्ड नीये ।

अवहालिका । स्त्री । प्राचीरे । इति हारावली ॥

अवहासः । पुं । परिहासे । अवहसन म् । हसे० । घञ् ।

अवहितम् । त्रि । सावधाने । विज्ञाते । प्रवेशिते । निहिते । अवधीयतेस्म । डुधाञ् धारणपोषणयोः । क्तः । द धातेर्हिः ।

अवहित्थम् । न । स्त्री । आकारगुप्तौ । अवहिः स्थितम् । सुपिस्थइत्यच स्थइतियोगविभागात्कः । पृषोदरा दिः । अवहित्थमयोग्रतेति भरतो- क्तःक्लीवम् ।

अवहित्था । स्त्री । आकारगोपने । अ वहिःस्थितिः अवहित्था । सुपिस्थ इ त्यत्र स्थ इतियोगविभागात्कः । पृ षोदरादिः । टाप् ।

अवहेलम् । न । स्त्री । अनादरे । अ वज्ञायाम् । अवहेलनम् । हेडृअना दरे । घञर्थेकः । डलयोरेकत्वस्मर णात्लः ।

अवहेलनम् । न । अनादरे । तिर स्कारे ।

अवहेला । स्त्री । अनादरे ॥

अवहेलितम् । त्रि । कृतावहेले ।

अवाक्पुष्पी । स्त्री । मधुरिकायाम् । शतपुष्पायाम् । सौंफ इतिख्यातायाम् । अवाञ्चिपुष्पाण्यस्याः । गौरादिः । अधःपुष्पाम् । मङ्गल्यायाम् । हे- ठाहुलीति गौडप्रसिद्धे तृणे ।

अवाक्शाखः । पुं । स्वर्गनरकतिर्य्य क्प्रेतादिशाखाभि श्शाखिनिसंसार- वृक्षे । अर्वाञ्चोनिकृष्टाः कार्योपाध योहिरण्यगर्भादयो महदहङ्कारत न्मात्रादयोवा शाखा इव शाखाय स्यसः ।

अवाक्शिरा । पुं । अधोमुखे । अवा क्शिरोऽस्य ।

अवाच्यः । त्रि । परिरक्षके ।

अवाग्र. । त्रि । नम्रे । अवनते । अवनत मग्रमस्य ।

अवाङ्मनसगोचरम् । त्रि । वाङ्मनस- योरविषये । वाङ्मनसयोर्गोचरम् नवाङ्मनसगोचरम् ॥

अवाङ्मुखः । त्रि । अधोमुखे ॥ अवाङ्मुखंयस्यसः ॥

अवाक् । । । अधोदेशे । अवाचिदेशे अशाचोदेशात् अवाङ्देशो वा । दिक्छब्देभ्य. सप्तमी पञ्चमी प्रथमाभ्य इत्यस्तातिः । अञ्चेर्लुक् ।

अवाङ् । त्रि । अधोमुखे । नम्रे ॥ अवाञ्च्यधोमुखीभवति । ऋत्विगिति क्विन् ।

अवाक् । त्रि । मूके । नवागस्य ।

अवाची । स्त्री । दक्षिणदिशि । अधोदिशि । अधोमुख्याम् ॥ अधोमध्यार्थः । अक्षोमध्ये व्यतिक्रमेम । ऋत्विगादिनाक्विन् । उगितश्चेति ङीप् इतिस्वामी ॥ वस्तुतस्तु दक्षिणदिशि असाधुरेवायम् । अवपूर्वस्याञ्चतेरधोमुखीभावेवृत्तेः ।

अवाचीनम् । त्रि । दक्षिणदिग्भवे । अधोमुखे । अवागेव । विभाषाञ्चे रिति खः ॥

अवाच्यम् । न । दुर्वचने । अनक्षरे ॥ नवचनार्हम् । यत । वचोऽमङ्गलं मायामितिनक्रुत्वम् ॥ त्रि । अनिन्दिते ॥ अवक्तव्ये ॥ यथा । नैवपश्येन्नशृणुयादवाच्यंजातुकस्यचित् । ब्राह्मणानां विशेषेणनैवब्रूयात् कथञ्चन । यद्ब्राह्मणस्यकुशलंतदेवसततंवदेत् । तूष्णीमासीत निन्दायां कुर्वन्भेषज्यमात्मन इतिमहाभारतम् ।

अवाच्यदेशः । पुं । योनौ । भगे ॥ अवाच्यश्चासौदेशश्च ।

अवाच्यवचनम् । न । दोषविशेषे । यदेवावाच्यवचनम वाच्यवचनंहितत ।

अवान्तरः । त्रि । प्रधानान्तःपातिनि ॥ इयंफलश्रुतिर्नश्रेयःपरमपुरुषार्थसाधनपरा भवति । किन्तुबहिर्मुखानां मोक्षविवक्षयाऽवान्तरकर्मफलैः कर्मसुरुच्युत्पादनमात्रम् । यथा । पिबनिम्बंप्रदास्यामिखलुते खण्डलड्डुकान् । पित्रैवमुक्तः पिबति तत्र फलतिवाक्यवदिति ॥

अवाप्तः । त्रि । प्राप्ते ।

अवाप्तिः । स्त्री । प्राप्तौ ।

अवाप्य । त्रि । लभ्ये ।

अवारम् । न । नद्यादेःपूर्वतीरे । अर्वाकतटे । अर्वाकतीरमवारम् । अवव्रियते । ऋगतौ । कर्मणि घञ् ॥ नवारमस्यमेतिवा । अर्थआद्यच् ।

अवारपारः । पुं । समुद्रे ।

अवारपारीणः । त्रि । पारगे । अवारपारंगच्छति अवारपारयोर्भवोवा तत आगतोवा । राष्ट्रावारपाराद्घखाविति खः । अवारपारंगामिनि ॥ अवारपाराद्यन्तानुकामंगामीति खः ।

अवारिका । स्त्री । धन्याके ॥ अवरिका पिपाठ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अवारितः । त्रि । अकृतवारणे ॥

अवारीण । त्रि । अवारगामिनि ॥ अवारं गच्छतीत्याद्यर्थेषु । अवारपारादि गृहीतादिपरीतात्वेतिखः ॥ अवारं गामीवा । अवारपारात्यन्तानुकामं गामीतिखः ॥

अ॰ावटः । पुं । द्वितीयेनपित्रासवर्णा यामुत्पादिते ॥ यथा । द्वितीयेनतु यःपित्रासवर्णायांप्रजायते । अवावट इतिख्यात. शूद्रधर्म'सजातित इति स्मृतिः ॥

॰साः । त्रि । नम्रे ॥ नवासोऽस्य ॥

॰ह्यः । त्रि । आभ्यन्तरे । प्रतीचि ॥ नीचोऽन्यस्यबाह्यस्याभावात् । न विद्यते बाह्यमन्यदस्य ॥

अविः । पुं । नाथे ॥ रवौ । मेषे । शैले ॥ मूषिककम्बले ॥ अवति अव्यतेवा । अवरक्षणादौ । इन् । स्त्री । स्त्रीध र्मिण्याम ॥ अवतिरज्ञाया. । सर्व- धातुभ्य इन् ॥

अविकः । पुं । अविशब्दार्थे ॥ अविरेव । अवेः कइतिकः ॥

अविकटः । पुं । मेषसमूहे ॥ अवीनांस ङ्घातः । सङ्घातेकटच् ॥

अविकम्प्य'। त्रि । अप्रचले ॥ नास्तिवि कम्पोवेपथुर्यस्य सः ॥

अविकम्पितः । त्रि । अचलिते ॥ नवि कम्पितः ॥

अविकल्पः । त्रि । एकरूपे ॥ नविकल्पो ऽस्मिन् ॥

अविकारी । त्रि । विक्रियाशून्ये कूटस्थे परमात्मनि ॥

अविकृतिः । स्त्री । मूलप्रकृतौ ॥ नास्ति विकृतिर्यस्याः ॥

अविगन्धिका । स्त्री । अजगन्धावृक्षे ॥

अविगीतम् । त्रि । अनिन्दिते ॥

अविघ्नः । पुं । करमर्दके ॥ विजयतेऽस्य । ओविजीभयचलनयोः । गत्यर्थेति- क्तः । ओदितश्चेतिनत्वम् । नविघ्नः ॥

अविचारः । पुं । अन्याये ॥ विवेकाभावे ॥ यथा । अविचारसिद्धैर्यवेशविला- सिनीवमाया असतोपिभावानुपदर्श यन्तीपरपुरुषंवञ्चयतीति ॥ त्रि । वि चाररहिते ॥

अविचारकः । त्रि । मूढे ॥

अविचारितम् । त्रि । अकृतविचारे । अविवेचिते ॥

अविचाली । त्रि । देशान्तरप्राप्तिरहि- ते ॥

अविच्युतः । त्रि । निश्चले ॥

अविज्ञः । त्रि । अनभिज्ञे । अप्रवीणे ॥

अविज्ञातः । त्रि । अर्थापरिज्ञानाद्-

निश्चिते । यथा । यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते । अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचिदिति ॥ न तज्ज्वलतीति । निष्फलं भवतीत्यर्थः । ईश्वरे ॥ यन्न विज्ञायते पुम्भिर्नामभिर्वा क्रियागुणैरिति निरुक्तः ।

अविज्ञातार्थम् । पुं । परिषत्प्रतिवादिभ्यां त्रिरभिहितमप्यविज्ञातमविज्ञातार्थम् ॥ ५ । ५२ ॥ त्रिरभिहितं वादिनेति शेषः ॥

अविज्ञानवान् । पुं । अनिपुणे ॥ अविवेकिनि ॥ अविज्ञानमस्ति अस्याभिन्ना । मतुप् ॥

अविज्ञेयम् । न । प्रमाणान्तरानवगाह्ये । औपनिषदे ब्रह्मणि ॥ तद्धि रूपाद्रूपादिहीनत्वात् इदमेवमिति विस्पष्टज्ञानार्हं न भवति ॥ नविज्ञेयम् । त्रि । प्रमाणानवगाह्ये । दुर्ज्ञेये ॥

अविडीनम् । न । पक्षिणामाभिमुख्याभिडीने ॥

अवितम् । त्रि । रक्षिते । अव्यतेक्त । अवरक्षणादौ । क्त ॥

अवितथम् । न । सत्ये । तत्त्वे । नवितथम् । त्रि । तद्विशिष्टे ॥

अवितर्क्यम् । त्रि । अनूहनीये । अचिन्त्यार्थे ॥

अविता । त्रि । पालयितरि ।

अविन्ध्यजः । पुं । न । पारदे । इति राजनिर्घण्टः ॥

अविदग्धः । त्रि । अप्रगल्भे । निर्बुद्धे । अचतुरे ॥

अविदासी । त्रि । उपक्षयशून्ये ।

अविदितः । त्रि । विदितविपरीते । अव्याकृते । अज्ञाते । विज्ञानापेक्षे । अविदितविज्ञाना यद्दिशोऽक्रमन्तः ॥

अविदूसम् । न । मेषदुग्धे ॥ अवेर्दुग्धम् । अवेर्दुग्धेसोढदूसमरीसचः ॥

अविद्धकर्णी । स्त्री । पाठायाम् ॥ अविद्धौ कर्णौ यया । पाककर्णेतिङीष् । न विद्धोऽच्छिद्रः पर्णरूपः कर्णोऽस्याः

अविद्यः । त्रि । विद्यारहिते ।

अविद्यमाना । स्त्री । मायायाम् ॥ अभावे । अवर्त्तमाने ॥

अविद्या । स्त्री । अहङ्कृतौ । अज्ञाने । यथाहुः । अविद्याया अविद्यात्वमिदमेव तु लक्षणम् । यत्प्रमाणासहिष्णुत्वमन्यथा वस्तु सा भवेदिति ॥ अन्यच्च । सेयं भ्रान्तिर्निरालम्बा सर्वन्यायविरोधिनी । सहते न विचारं सा तमो यद्वद्दिवाकरमिति ॥ पुनश्च । दुर्घटत्वमविद्याया भूषणं न तु दूषणम् । कथञ्चिद्घटमानत्वेऽविद्यात्वं दुर्घटं भवेदिति ॥ अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिः । अव्यक्त

महदहङ्कारपञ्चतन्मात्रेषु नात्मस्वात्मबुद्धौ । अतस्मिंस्तद्बुद्धौ । विपर्यये । मिथ्याज्ञाने । अनात्मन्यात्मख्यातौ । यथा शरीरे मनुष्योऽहमित्यादि । इयञ्च सर्वक्लेशमूलभूता तमइत्युच्यते । अनादिभाववरूपाज्ञाने । अग्निहोत्रादिलक्षणकर्मणि । मलिनसत्त्वप्रधानायाम् । संहृतौ ॥ परमानन्दस्वरूपात्माज्ञाने । वेदनंविद्या । विद ज्ञाने । संज्ञायां समजनिषदनिपतेति क्यप् । विद्याविरुद्धा अविद्या ॥

अविद्वान । त्रि । कर्त्ते । अविद्वान् ।

अविधिः । पुं । शास्त्राविहिते । अविधाने । यथा । वसेत्सनरके घोरे दिनानिपशुरोमभिः । अमितानिदुरा.रोयोऽहन्त्यविधिना पशूनित्याह्निकतत्त्वेयाज्ञवल्क्य' ॥

अविनः । पुं । राज्ञि । अध्वर्य्यौ । अवति । अवरक्षणादौ । स्यास्त्राद्धृश्च विष्यदूनच् । त्रि । यष्टरि ॥

अविनत. । त्रि । उन्नते ।

अविनय. । पुं । विनयाभावे । त्रि । अविनीते ।

अविनाभाव । पुं । व्याप्तौ । व्याप्यनिष्ठव्यापकनिरूपितधर्मे । यथा । वह्निमान् धूमादित्यादौ धूमनिष्ठा वह्निनिरूपिताव्याप्तिरिति न्यायमीमांसयोर्मतम् ॥ ततपदार्थे तत्पदार्थो भाववद्वृत्तित्वाभावे । यथा । केयमाकाङ्क्षा न तावद्विनाभावः । नीलंसरोजमित्यादौ तदभावात् । विमलंजलंनद्याः कच्छे महिषइत्यत्र जलान्वितनद्या अविनाभावात् कच्छेसाकाङ्क्षतापत्तेश्च । इत्याकाङ्क्षा चिन्तामणिः । अविनाभावइति । तत्पदार्थेन विनायोभाव' सत्त्वंतदभावइत्यर्थ । तत्पदार्थे तत्पदार्थाभाववद्वृत्तित्वाभावस्तत्पदार्थेतत्पदार्थाकाङ्क्षा इतिभाव इति-तट्टीकामाधुरी ।

अविनाशी । त्रि । अन्त्यविकारवर्जिते । नित्ये । सत्ये । अबाध्येसर्वप्रकारपरिच्छेदशून्ये । अविक्रियआत्मनि । विनष्टुं शीलमस्येति विनाशी । नविनाशी ॥

अविनीत । त्रि । वियाते । समुद्धते । नव्यनायि । शीञ० । क्त ॥

अविनीता । स्त्री । कुलटायाम ॥ नव्यनारि । सोऽभ्रापणे । क्त । नविनीताबा ॥

अविन्ध्य. । पुं । राक्षसान्तरे ॥

अविपटः । पुं । मेषविस्तारे । अवीनां विस्तार. । विस्तारे पटच् ॥ कम्बलादौ ॥

अविपश्चित् । पुं । विचारजन्यतात्पर्यपरिज्ञानशून्ये ॥ अविवेकिनि ॥ नविपश्चित् ॥

अविप्रकृष्टः । त्रि । आसन्ने ॥

अविप्रियः । पुं । श्यामाकतृणे ॥

अविप्रिया । स्त्री । श्वेताकतायाम् ॥

अविभक्तम् । त्रि । अभिन्ने । एकमेवार्थं ॥ अव्याहते सर्वत्राऽनस्यूते अधिष्ठानतयाबाधावधितयाच सर्वस्मिनविशमाने ॥ नविभक्तम् ॥

अविभावित । त्रि । अनुपलक्षिते ॥

अविमरीसम् । न । मेषीदुग्धे ॥ अवेर्दुग्धम् । अवेर्दुग्धेमरीसचप्रत्ययः ॥

अविमुक्तम् । न । काशीक्षेत्रे ॥ अविमुक्ते कदाचिदेवोविमुक्तावीशिवापरेव्यागमः ॥ यथा । मुक्तेऽप्यवकालेऽपितत्क्षेत्रं कदाचन । विमुक्तंनशिवाभ्यांयदविमुक्तंततो विदुरिति ॥ अविमुक्तंमोक्षार्थंसर्वैवमुमुक्षुभिः । किन्तु विघ्नभविष्यन्तिकाश्यांविवसतामिति श्रीदेवीभागवतम् ॥ त्रि । अत्यक्ते ॥ नविमुक्तम् ॥

अविरतम् । न । सन्तते । अनवरते ॥ अनुपरते ॥ नास्तिविरतमस्य । क्रियाविशेषणे क्लीबत्वंक्लीबम् । सन्ततमितिविशेषणम् ॥

अविरतिः । स्त्री । चित्तस्यविषयसम्प्रयोगात्मनिगर्हे ॥

अविरलः । त्रि । घने । निबिडे ॥

अविरुद्धः । त्रि । अनुकूले ॥ अप्रतिषिद्धे ॥ नविरुद्धः ॥

अविरोधः । पुं । विवादाभावे ॥ यथा । श्रुतिस्मृतिविरोधेतु श्रुतिरेवगरीयसी ॥ अविरोधेसदाकार्यंस्मार्तंवैदिकवत्सतेति ॥ नविरोधः ॥

अविलम्बितम् । त्रि । आशुने । द्रुते ॥ न । आशुनि । शीघ्रे ॥ विलम्बते स्म । नविलम्बसंसने । आत्मनोपद । अकर्मकत्वात् कर्तरिक्तः । नञ्समासः ॥

अविला । स्त्री । मेष्याम् । मेष्यात्

अविवरः । त्रि । नीरन्ध्रे ॥

अविवाक्यम् । न । दशरात्रसाध्ययागे ॥

अविवादः । पुं । विवादाभावे ॥ नविवादः ॥

अविवेकः । पुं । विवेकविरहाभावे ॥ सम्भूयकारितायाम् ॥ नचकिञ्चित्कंकार्यं पर्यासमपितुसम्भूय ॥ विवयोर्मे ॥ व्याकुलत्वेहेतोमोहे ॥ अविमृश्यकारित्वे ॥ सदसद्विवेचनाराहित्ये । त्रि । तद्वति । नविवेक ॥

अविवेकी । त्रि । विवेकहीने । अविवेकी ॥ तस्मादविवेकिनः कुलमामुष्यायणोऽनधिकारित्व इतिस्मृतिः

सगादाधरीटीका । अशुक्तिवि-
चारे ॥

अविवेकि । न । व्यक्ते । प्रधाने ॥ मह
दादौ ॥ यथा प्रधानं स्वतोनविवि
च्यते एवंमहदादयोपि न प्रधानाद्वि
विच्यन्ते ॥ वाच्यलिङ्गे । मूर्खे ॥ गुरुशा
स्त्राद्युपदेशरहिते ॥ नविवेकी ॥

अविशिष्टम् । त्रि । समाने ॥ नविशिष्ट
म् ॥

अविशेषः । पुं । तन्मात्रेषु ॥ तानि शब्द
ादिभिःपरस्परव्यावृत्तानि नानुभू
यन्ते सूक्ष्मविशेषाः सूक्ष्माश्चोच्यन्ते ॥
नैयायिके । विशेषाभावे । त्रि । वि
शेषरहिते । तुल्ये ॥

अविश्रान्तम् । न । अनवरते ॥ त्रि । वि
श्रामहीने ॥

अविश्वस्तः । त्रि । प्रत्ययायोग्ये । विश्वा
सानर्हे ॥ यथा । नविश्वसेदविश्वस्ते वि
श्वस्तेनातिविश्वसेत । विश्वासाद्भयमु
त्पन्नंमूलान्यपिनिकृन्ततीति ॥

अविश्वासा । स्त्री । चिरप्रसूतायांगवि ॥

अविषः । पुं । अब्धौ ॥ राजनि ॥ अव
ति । अवरक्षणादौ । अविमह्योष्टि
षच् ॥ त्रि । निर्विषे ॥

अविषा । स्त्री । निर्विषाख्ये ॥

अविषी । स्त्री । नद्याम् ॥ टिड्ढाणञितीप् ॥

अविसोढम् । न । अविमरीषे ॥ अवे
र्दुग्धम् । अवेर्दुग्धेसोढदूसमरीस
चोवक्तव्याः ॥

अविस्पष्टम् । न । क्लिष्टे । अप्रकटवच
ने ॥ नविस्पष्टमस्फुटम् ।स्पशबाधनस्प
र्शनयोः । कर्मणिक्तः । अविस्पष्टेति
निर्देशादिडभावः ॥

अवीः । स्त्री । ऋतुमत्याम् ॥ अवति
लज्जायाः । अवरक्षणादौ । अवितॄ
स्तृतन्त्रिभ्यईः ॥

अवीचिः । पुं । नरकभेदे । तरङ्गे ॥ ना
स्तिवीचिःसुखमत्र । त्रि । तरङ्गशू
न्ये ॥

अवीचिमयः । पुं । नरकभेदे ॥ यःसा
क्ष्यादावनृतंवदति सनिरयवत्मेऽवी
चिमये ऽधश्शिरानिपात्यते ॥ इति
श्रीभगवतम् ॥

अवीजा । स्त्री । ईषद्बीजायांद्राक्षाया
म् । किसमिस् इतिलोके ॥

अवीतम् । न । अनुमानप्रभेदे । व्यति
रेकमुखेन प्रवर्त्तमाने निषेधके ॥ त
त्रावीतंशेषवत् । विशेषेणास्पष्टमितो
वीतः सनभवतीत्यवीतः ॥

अवीरः । त्रि । निःसत्त्वे । निर्वीर्ये ॥

अवीरा । स्त्री । निष्पतिसुतायाम् ॥ वी
रयति । वीरविक्रान्तौ । अच् ॥ पति
पुत्रवतीनारी वीराप्रोक्तामनीषि-
भिः । नवीरा ॥ अजातापत्यविधवा

ऽवोरेतिस्मृतिः ॥

अवृजिनः । त्रि । यथोक्तकारित्वयानिध्याये ॥

अवेक्षणम् । न । दर्शने ॥ ईषद्दर्शने । ल्युट् ।

अवेक्षा । स्त्री । अवेक्षणे । प्रतिजागरे ॥ अवधाने ॥ अवेक्षणम । ईषद्दर्शने । गुरोश्चहलःइत्यः । टाप् ॥

अवेक्षिता । न । अवेक्षके । अध्यक्षे । आयव्ययादिनिरीक्षके ॥ अवेक्षते । ईक्ष० । तृच् ॥

अवेद्यः । पुं । गोवत्से ॥ त्रि । अज्ञेये ।

अवेलः । पुं । अपलापे ॥ त्रि । वेलाशून्ये ॥

अवेला । स्त्री । पूगचर्विते । चवाई सुपारी इतिभाषा ॥

अवैधम् । त्रि । विधिविवर्जिते । विध्यविषये । यथा । अवैधंपश्वमं कुर्वन् राष्रोदण्डेनशुध्यतीति ॥

अवोदम । त्रि । अवक्लेदने । उन्दीक्लेदने अवपूर्वे । भावेघञ् । अवोदैधौ द्मप्रश्रथेतिनिपातनान्नलोपः ।

अव्यक्तः । पुं । हरौ । स्मरहरे । सर्वकारणे । रूपादिहीनतया चक्षुराद्यगोचरे योगाभ्यासावसेये भावे । कल्पितेषुसर्वकार्येषुसद्रूपेणानुगते । हिरण्यगर्भे । सूक्ष्मशरीरे । स्वापादव्याकृत । निर्विकारे । शब्दप्रवृत्तिनिमित्तैर्जातिगुणक्रियासम्बन्धैरहिते । व्यक्तःस्पष्टोनेत्यव्यक्तः ॥ यत्रध्वनावकारादयोवर्णा विशेषरूपेणनव्यज्यन्तेसध्वनिरव्यक्तः । मूर्खे । कन्दर्पे ॥ न । प्रकृतौ । तथाहि । यत् सर्वस्यजगतो बीजभूत मव्याकृतनामरूपसतत्वम् सर्वकार्यकारणशक्तिसमाहाररूपम् अव्यक्ताव्याकृताकाशादिनामवाच्यंपरमात्मन्योतप्रोतभावेनसमाश्रितम् वटकणिकायामिव वटवृक्षशक्तिः । सत्त्वादिरूपेणनिरूप्यमाणे व्यक्तिरस्यनास्तीत्यव्यक्तम् । तदुक्तम् । हेतुमदनित्यमव्यापिसक्रियमनेकमाश्रितंलिङ्गम् । सावयवपरतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तमिति । साङ्ख्योक्तमहदादौ । आत्मनि । परमात्मनि । मायोपाधिके ब्रह्मणि ॥ त्रि । अवयवरहिते । अव्यक्तमितिविज्ञेयंलिङ्गग्राह्यमतीन्द्रियम् । सूक्ष्मे । अविशेषे । अस्फुटे ॥ नव्यज्यतेस्म । अञ्जूव्यक्त्यादौ । क्तः । अव्याकृतकार्यभूतसूक्ष्मे ॥ भूतसूक्ष्मलयाधिकरणे । नव्यक्तम इतिवा ।

अव्यक्तमूलप्रभवः । पुं । संसारवृक्षे ।

अव्यक्तरागः । पुं । अरुणवर्णे । किञ्चिल्लोहिते ॥ अव्यक्तोरागोयस्य ।

अव्यक्तलिङ्गः । त्रि । अदृश्येनश्रुतिस्मृत्युक्तप्रकारेण अभवति । न व्यक्तं दृश्येन गृहीतं लिङ्गमाश्रमचिह्नमनेन ।

अव्यग्रः । त्रि । अनाकुले । नव्यग्रः ॥

अव्यङ्गः । त्रि । अविकले । परिपूर्णे । अविकलाङ्गे । नव्यङ्गः ।

अव्यङ्गा । स्त्री । शूकशिम्ब्याम् ॥

अव्यञ्जन । पुं । शृङ्गहीनपशौ । त्रि । अव्यक्ते । अस्फुटे । अविद्यमानंव्यञ्जनंयस्यचिह्नंवा ।

अव्यण्डा । स्त्री । शूकशिम्ब्याम् । कौंच इतिख्यातायाम् ॥ नविगतमण्डम्याः ॥

...तिकरः । पु । अप्रसङ्गे ।

...थः । पुं । सर्पे । त्रि । निर्भये । न ...थायस्य । नव्यथते । व्यथभयसञ्चलनयोः । पचाद्यच् ।

अव्यथा । स्त्री । पथ्यायाम् । चारव्याम् ॥ ओषधीभेदे । मुण्ड्याम् ॥ नव्यथायस्याः । नव्यथते । व्यथ । पचाद्यच् । टाप् ॥

अव्यथी । पुं । अश्वे । नव्यथते तच्छीलः । व्यथ° । जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्रसूभ्यश्चेतीनिः ॥

अव्यथिषः । पुं । अर्णवे । सूर्ये । नव्यथते । व्यथ° । अव्यथिषइतिटिषच् ।

अव्यथिषी । स्त्री । धरायाम् । रात्रौ ॥

टित्वान्ङीप् ॥

अव्यभिचारी । त्रि । केनापिप्रतिकूलेन हेतुनानिवारयितुमशक्ये ॥

अव्ययः । पुं । न । स्वरादिशब्दे । पुं । विष्णौ । शिवे ॥ अनाद्यनन्ते देहादिसन्तानाश्रये आत्मज्ञानमन्तरेणानुच्छेद्ये मायामये संसारवृक्षे । त्रि । उत्पत्तिविनाशादिसर्वक्रियाशून्ये । नित्ये । अविनाशिनि । अपरिच्छिन्ने । यथा । सदृशंत्रिषुलिङ्गेषु सर्वासुचविभक्तिषु । वचनेषुचसर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययमिति ॥ नविद्यतेव्ययोऽवयवापचयोगुणापचयोविनाशोवा यस्य । यद्वा । नव्येति विकारं नभजते इत्यव्ययम् । विपूर्वादिण. पचाद्यच् । नव्यय. ।

अव्ययात्मा । पुं । अनश्वरस्वभावे ।

अव्ययीभावः । पु । प्रायः पूर्वपदार्थप्रधानेसमासविशेषे ।

अव्यलीकः । पुं । सत्ये ।

अव्यवसायकृत् । त्रि । शिष्ठे । व्यवसायरहिते । इतिचिकाण्डशेषः ।

अव्यवस्था । स्त्री । शास्त्रविरुद्धव्यवस्थायाम् । अपसिद्धान्ते । अविधौ ।

अव्यवस्थितः । त्रि । नीतिशास्त्राद्विव्यवस्थानभिज्ञे ॥ सिद्धान्तरहिते ।

अव्यवधानः । त्रि । अभिधानाभिधेयक...

ऽधोरेतिस्मृतिः ॥

अवृजिनः । त्रि । यथोक्तकारित्वयानि- ध्याये ॥

अवेक्षणम् । न । दर्शने । ईषद्दर्शने । ल्युट् ॥

अवेक्षा । स्त्री । अवेक्षणे । प्रतिजागरे । अवधाने । अवेक्षणम । ईषद्दर्शने । गुरोश्चहलइत्यः । टाप् ॥

अवेक्षिता । न । अवेक्षके । अध्यक्षे । आयव्ययादिनिरीक्षके । अवेक्षते । ईक्ष० । तृच् ॥

अवेद्यः । पुं । गोवत्से । त्रि । अज्ञेये ।

अवेलः । पुं । अपलापे । त्रि । वेला शून्ये ॥

अवेल्या । स्त्री । पूगचर्विते । चवाई सुपारी इतिभाषा ॥

अवैधम् । त्रि । विधिविवर्जिते । विध्य विषये । यथा । अवैधपश्चमं कुर्वन राज्ञोदण्डेनशुध्यतीति ॥

अवोदम । त्रि । अवक्लेदने । उन्दीक्लेद ने अवपूर्वे । भावेघञ् । अवोदैधौ द्मेतिनिपातनान्नलोपः ॥

अव्यक्तः । पुं । हरौ । स्मरहरे । सर्वका रणे । रूपादिहीनतया, चक्षुराद्य गोचरे योगाभ्यासावसेये भावे । कल्पितेषुसर्वकार्येषुसद्रूपेणानुगते । हिरण्यगर्भे । सूक्ष्मशरीरे । स्वापा

वस्थायाम् । निर्विकारे । शब्दप्रवृ त्तिनिमित्तैर्जातिगुणक्रियासम्बन्धै रहिते । व्यक्तःस्पष्टानेत्यव्यक्तः ॥ यत्र ध्वनावकारादयोवर्णा विशेषरूपेण नव्यज्यन्तेसध्वनिरव्यक्तः । मूर्खे । कन्दर्पे ॥ न । प्रकृतौ । तत्वादि । यत् सर्वस्यजगतो बीजभूत मव्याकृ तनामरूपसतत्वम सर्वकार्यकारण शक्तिसमाहाररूपम् अव्यक्ताव्याकृता काशादिनामवाच्यंपरमात्मन्योतप्रो तभावेनसमाश्रितम् वटकणिकाया मिव वटवृक्षशक्तिः । सत्वादिरूपेण निरूप्यमाणे व्यक्तिरस्यनास्तीत्य क्तम् । तदुक्तम् । हेतुमदनित्य व्यापिसक्रियमनेकमाश्रितंलिङ्गम् सावयवपरतन्त्रं व्यक्तं विपरीतम[illegible]त मिति । साङ्ख्योक्तमहदादौ । आ त्मनि । परमात्मनि । मायोपाधिके ब्रह्मणि ॥ त्रि । अवयवरहिते । अ व्यक्तमितिविज्ञेयंलिङ्गग्राह्यमतीन्द्रि- यम । सूक्ष्मे । अविज्ञेये । अस्फुटे ॥ नव्यज्यतेस्म । अनुव्यञ्जादौ । क्तः । अव्याकृतकार्यभूतसूक्ष्मे । भूतसू क्ष्मतयाधिकरणे । नव्यक्तम इतिवा । अव्यक्तमूलप्रभवः । पुं । संसारवृक्षे । अव्यक्तरागः । पुं । अरुणवर्णे । किञ्चि ल्लोहिते । अव्यक्तोरागोयस्य ॥

अव्यक्तलिङ्गः । त्रि । अदर्शनेनश्रुतिस्मृत्युक्तप्रकारेणाप्रभवति। नव्यक्तंदर्शनग्राह्यंलिङ्गमाश्रमित्वमनेन ।

अव्यग्रः । त्रि । अनाकुले । नव्यग्रः ॥

अव्यङ्गः । त्रि । अविकले । परिपूर्णे । अविकलाङ्गे । नव्यङ्गः ।

अव्यङ्गा । स्त्री । शूकशिम्ब्याम् ॥

अव्यञ्जनः । पुं । शृङ्गहीनपशौ । त्रि । अव्यक्ते । अस्फुटे । अविद्यमानंव्यञ्जनंयस्ययस्मिन्वा ।

अव्यण्डा । स्त्री । शूकशिम्ब्याम् । कौंच इतिख्यातायाम् ॥ नविगतमण्डं यस्याः ॥

अव्यतिकरः । पुं । अप्रसङ्गे ।

अव्यथः । पुं । सर्पे । त्रि । निर्व्यथे । न व्यथायस्य । नव्यथते । व्यथभयसञ्चलनयोः । पचाद्यच् ।

अव्यथा । स्त्री । पथ्यायाम् । चारव्याम् ॥ ओषधीभेदे । मुण्ड्याम् ॥ नव्यथायस्याः । नव्यथते । व्यथ । पचाद्यच् । टाप् ॥

अव्यथी । पुं । अश्वे । नव्यथते तच्छीलः । व्यथ० । जिद्दक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्रसूभ्यश्चेतीनिः ॥

अव्यथिषः । पुं । अर्णवे । सूर्ये । नव्यथते । व्यथ० । अव्यथिषरितिटिषच् ।

अव्यथिषी । स्त्री । धरायाम् । रात्रौ ॥ टित्वान्ङीप् ॥

अव्यभिचारी । त्रि । केनापिप्रतिकूलेन हेतुनानिवारयितुमशक्ये ॥

अव्ययः । पुं । न । स्वरादिशब्दे । पुं । विष्णौ । शिवे ॥ अनाद्यनन्तेदेहादिसन्तानाश्रये आत्मज्ञानमन्तरेणानुच्छेद्येमायामयेसंसारवृक्षे । त्रि । उत्पत्तिविनाशादिसर्वक्रियाशून्ये । नित्ये । अविनाशिनि । अपरिच्छिन्ने । यथा । सदृशंत्रिषुलिङ्गेषु सर्वासुचविभक्तिषु । वचनेषुचसर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययमिति । नविद्यतेव्ययोऽवयवापचयोगुणापचयोविनाशोवा यस्य । यद्वा । नव्येति विकारं नभजत इत्यव्ययम् । विपूर्वादिणः पचाद्यच् । नव्यय. ।

अव्ययात्मा । पुं । अनश्वरस्वभावे ।

अव्ययीभावः । पुं । प्रायः पूर्वपदार्थप्रधानेसमासविशेषे ।

अव्यलीकं । पुं । सत्ये ।

अव्यवसायवान् । त्रि । शिक्षौ । व्यवसायरहिते । इतिचिकाण्डशेषः ।

अव्यवस्था । स्त्री । शास्त्रविरुद्धव्यवस्थायाम् । अपसिद्धान्ते । अविधौ ।

अव्यवस्थितः । त्रि । नीतिशास्त्रादिव्यवस्थानभिज्ञे ॥ सिद्धान्तरहिते ।

अव्यवहार्यः । त्रि । अभिधानाभिधेयक

पयोर्वाङ्मनसयोरविषये ॥ अवधा
रायोग्ये । नञ्‌ वधार्यः ॥

अव्यवहितम । त्रि । व्यवधानशून्ये । संस
क्ते । अपदान्तरे ॥ नञ्‌ व्यवधीयतेस्म ।
क्त' । दधातेर्हिः ॥

अव्याकृतः । पुं । बीजरूपे । अविवेके
। अव्यक्ते । प्रकृतौ । असम्भूतौ । सा
भासाज्ञाने । अनिर्वाच्ये ॥ नञ्‌ व्याकृ
तः ॥

अव्याकृताकाशः । पुं । अव्यक्ते ॥

अव्याज. । पुं । छलाभावे । शीघ्रे ॥

अव्यापकम्‌ । त्रि । परिच्छिन्ने ॥ नञ्‌ व्या
पकम्‌ ॥

अव्यापि । न । व्यक्ते ॥

अव्याप्यम्‌ । त्रि । व्याप्तिरहिते । अव्या
पनीये । अनधीने ॥

अव्याप्यवृत्तिः । त्रि । किञ्चिदवच्छिन्न
वृत्तौ । स्वसमानाधिकरणाभावप्र
तियोगिनि ॥ दैशिककालिकभेदेन
सद्विविधः । तत्पर्याय. । प्रादेशिक.
॥ आत्मनोविशेषगुणाः । बुद्धिसुख
दु.खेच्छाद्वेषयत्नधर्माधर्मभावनाख्य-
संस्कारा. ९ । आकाशस्यविशेषगुणः
शब्द १० । सामान्यगुणौसंयोगवि
भागौ १२ । एतेसर्वे अव्याप्यवृत्तय
स्युरितिन्यायभाषा ॥

अव्युत्पन्न. । त्रि । अनभिज्ञे ॥



अशक्यम्‌ । त्रि । अशक्ते ॥

अशकुम्भी । स्त्री । पानीयपृष्ठजे । का
ईइतियस्याः प्रसिद्धिः ॥

अशक्तः । त्रि । असमर्थे । सामर्थ्यहीने
॥ यथा । उपवासेष्वशक्तानांनक्तंभो
जनमिष्यतइति ॥ नञ्‌शक्तिरस्य । न
ञ्‌दुःसुभ्योहलिसक्थ्योरितिपाठात्प-
क्षेअच्‌ ॥

अशक्तिः । स्त्री । करणवैकल्यहेतुकेबु
द्धिधर्मे ॥ साचाष्टाविंशतिभेदभिन्ना
॥ यथा । एकादशेन्द्रियवधाःसहबुद्धि
बधैरशक्तिरुद्दिष्टा । सप्तदशधावबुद्धे
र्विपर्ययात्तुष्टिसिद्धीनामिति ॥
दशेन्द्रियवधास्तु । बाधिर्यंकुष्ठ
त्वंजडताजिघ्रतातथा । मूकता
ग्रपङ्गुत्वक्लैव्योदावर्त्तमत्तताः ॥ था
संख्यंश्रोत्रादीनामिन्द्रियाणांवधाः ।
एतद्धेतुकाबुद्धेरशक्तिः स्वव्यापारेभ
वति । तथाचैकादशहेतुत्वादेकाद
शधाबुद्धेरशक्तिरुच्यते । हेतुहेतुम
तोरभेदविवक्षया सामानाधिकर-
ण्यम्‌ । तदेवमिन्द्रियवधद्वारेण बुद्धे
रशक्तिमुक्त्वास्वरूपतोऽशक्तिमाह ।
सहबुद्धिवधैरिति । कतिबुद्धेःस्वरूप
तोवधाइत्यतआह । सप्तदशधाचबु
द्धेः । कुतः । विपर्ययात्तुष्टिसिद्धीनाम
। तुष्टयोनवेतितद्विपर्ययास्तन्निरूप

यान्नबभवंति । एवंसिद्धयोऽष्टाविति तद्विपर्ययास्तद्विरूपत्वादष्टौभवन्ति ॥ इतिसांख्याः ॥ अपिच । अशक्ति. कारकापायेसदर्थाप्रभविष्णुता कारकाणामन्त.करणबहिष्करणाना मपायेविनाशेसति विद्यमानेप्यर्थे अप्रभवनशीलत्वमशक्तिः । अन्धव धिरादेरिवरूपशब्दादाविति ॥

अशक्यः । त्रि । असाध्ये । अशकनीये ॥

अशत्रुः । पुं । चन्द्रे ॥ त्रि । शत्रुरहिते ॥ मित्रे ॥

अशनम् । न । ओदने ॥ भक्षणे ॥ अशा० । ल्युट ॥ ज्वरवान्ज्वरमुक्तोवा लघुकुर्यादशनदिनात्यये ॥

अशनाया । स्त्री । बुभुक्षायाम् । क्षुधायाम् ॥ अशितुमिच्छा अशनस्येच्छा वा अशनायतिवा । क्षुधइतिक्यच् । अशनायेति इच्छाभाव.। अप्रत्यया दित्यः ॥

अशनायितम् । त्रि । क्षुधिते ॥ अशन स्येच्छा । अशन येतिसाधुः । अश नायाजाताअस्य । तारकादिः ॥

अशनिः । स्त्री । पुं । चञ्चलायाम् । वि द्युति ॥ पवौ । वृक्षादिविनाशकेमे घोत्पन्नज्योतिषि ॥ अश्नाति सङ्घा तं करोति । अश्यतेऽनेनेतिवा । अर्त्तिसृधृधम्यश्यादिना अनिः ॥

अशनिवर्षः ॥ उल्काविशेषे ॥

अशनिप्लिट । स्त्री । विद्युति ॥ अशनेः प्लिट् ॥

अशब्दः । पुं० न । अवेदमूलके ॥

अशम. । पुं । इदंकृत्वेदंकरिष्यामीति सङ्कल्पप्रवाहानुपरमे ॥

अशय्य । पुं । तापसान्तरे ॥ यःकदा पिनशेते ॥

अशरीरः । पुं । स्वेनरूपेणाकाशकल्पे परमात्मनि ॥ त्रि । शरीररहिते ॥ य था । प्रत्यग् ज्ञानशिखिध्वस्तेमिथ्या ज्ञानेसहेतुके । नेतिनेतिस्वरूपत्वा दशरीरोभवत्ययमिति ॥

अशर्म ॥ न । दुःखे ॥ त्रि । पीडायुक्ते ॥ शर्मसुखम तद्विरुद्धम् । नञिति न् समासः ॥

अशाखा । स्त्री । शूलीतृणे ॥

अशान्तः । त्रि । इन्द्रियलौल्यादनुपरते ॥ आत्मसाक्षात्कारशून्ये ॥ नशान्तः ॥

अशाश्वत. । त्रि । अस्थिरे । दृष्टनष्टप्रा ये ॥ नशाश्वतः ॥

अशास्त्रम् । न । वेदादिविरुद्धे ॥ नशा स्त्रमस्मिन् ॥

अशास्त्रविहितम् । त्रि । वेदेनग्रन्थान्त्रा दिनावा अविहिते । बुद्धाद्यागमबो धिते ॥ शास्त्रेणविहितम । नशास्त्र विहितम् ॥

अश्चितः । त्रि । अग्निपुखे । शिखा रहिते ॥

अशितम् । त्रि । भुक्ते । तृप्ते । अश्यते स्म । अन्नभोजने । क्तः ॥

अशित्रम् । त्रि । चौरे । पुं । चरौ । अ श्नितेन । अन्नभोजने । अशित्रादि भ्यश्छौत्राविति इत्रप्रत्ययः ॥

अश्रिरः । पुं । वीतिहोत्रे । राक्षसे ॥ भास्करे । वायौ । न । हीरके ॥

अश्रिरा । स्त्री । अश्रिरराक्षसनार्थ्याम् ॥

अशिश्विका । स्त्री । पुत्ररहितायाम् ॥ नशिशुर्यस्याः । सख्यशिश्वीतिसाधु. । स्वार्थेकन् ॥

अशिश्वी । स्त्री । अशिश्विकायाम् ॥ ना स्याः शिशुरस्तीत्यर्थे सख्यशिश्वीति भाषायामिति निपातनात् ङीष् ॥

अशीतिः । स्त्री । सङ्ख्याविशेषे ८० ॥ सङ्ख्येये । अष्टदशतः परिमाणमस्य । पङ्क्तिविंशतिचिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चा शत्षष्टिसप्तत्यशीतीत्यादिनानिपा तनात्प्रकृतेरशीभावस्तिप्रत्ययश्च ॥

अशीर्षिकः । त्रि । अशीर्षवति ॥ शीर्षा दिषु शीर्षाश्च इतिपाठात्कन् ॥

अशीलः । त्रि । दुःशीले ॥

अशुचिः । पुं । विण्मूत्रश्लेष्मादौ । त्रि । शास्त्रोक्तशौचहीने ॥ यथा । व्रताना मुपवासानां श्राद्धादीनाञ्चसङ्गमे । करोतियः क्षौरकर्मसोऽशुचिः सर्वक र्मस्विति ॥ नशुचिः ॥

अशुद्धः । त्रि । अज्ञानतत्त्वार्थमलयुक्ते ॥ अपवित्रे ॥ अकृतशोधने ॥ नशुद्धः ॥

अशुभम् । न । पापे । अनिष्टफले ॥ य था । स्वेन्द्रियाणाञ्चसामर्थ्यंस्वकर्मा णिकृतानिच । मुहुर्मुहुश्चविस्मृत्य विरमे दशुभान्मनइति ॥ अमङ्गले ॥ त्रि । तद्युक्ते । नशुभम् ॥

अशून्यशयनव्रतम् । न । श्रावणकृष्णद्वि तीयायांकर्त्तव्येमत्स्यपुराणोक्तेव्रतवि शेषे ॥

अशृतम् । त्रि । अपक्वे ॥ नशृतम् ॥

अशेषः । त्रि । निःशेषे ॥ सम्पूर्णे ॥ शे षोऽस्य ॥

अशोकः । पुं । कङ्केलिपादपे ॥ यन्न । अशोकश्चरणाघाताज्जायते पुष्पव त्तरइति । अस्यगुणायथा । अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राहीवर्ण्यः कषायकः । दोषापचीतृषादाहकृमिशोषवि षास्रजिदिति ॥ नशोकोऽस्मात् । व कुलद्रुमे ॥ न । पारदे ॥ पुष्पे ॥ अ शोकस्य पुष्पम् । पुष्पमूलेषु बहुल मिप्रत्ययो विकारावयवार्थस्यलुक् । त्रि । सन्तापवर्जिते । निःशोके ॥

अशोकरोहिणी । स्त्री । कटुकायाम् । क टुरोहिण्याम् । अशोकस्यरोहति । क

संश्रु पमाने इतिखिनिः ॥

अशोकषष्ठी । स्त्री । चैत्रशुक्लषष्ठ्याम् ॥

अशोका । स्त्री । कटुरोहिण्याम् ॥ बुद्धशासनदेवीविशेषे। नशोकोऽस्याः॥

अशोकारिः । पुं । कदम्बद्रौ ॥

अशोकाष्टमी । स्त्री । चैत्रशुक्लाष्टम्याम् ॥

अशोचः । पुं । अनहङ्कृतौ ॥

अशोच्य । त्रि । शोचितुमयोग्ये ॥ निरपराधे ॥

अशौचम् । न । आशौचे ॥ वैदिककर्मानर्हत्वप्रयोजके संस्कारविशेषे । विहितकर्मविरोध्यदृष्टविशेषे । शुचित्वाभावे ॥ यथा। क्रियाहीनस्यमूर्खस्य महारोगिणएवच । यथेष्टाचरणस्या मरणान्तमशौचकमिति ॥ क्रियाकैमस्यनित्यनैमित्तिकक्रियाननुष्ठायिनः । मूर्खस्य गायत्रीरहितस्यसार्थगायत्री रहितस्येतिवद्धरः । महारोगिणः उन्मादादिपापरोगाद्यकान्यतमरोगवतः । यथेष्टाचरणस्यबृतवेश्यादासक्तस्येत्यर्थः ॥ नशौचम् ॥

अश्मकदली । स्त्री । काष्ठकदल्याम् ॥

अश्मकीटः । पुं । नारकीटे ॥

अश्मकुट्ट. । न । तपोविशेषाल्लब्धसंश्लेतापसान्तरे ॥ भक्षणार्थं प्रियङ्ग्वादीनश्मन्येवकुट्टयति । कुट्ट॰ अच॥

अश्मकेतुः । पुं । क्षुद्रपाषाणभेदाख्ये ॥

अश्मगर्भः । पुं । हरिन्मणौ । मरकते ॥ अश्मनोगर्भ. ॥

अश्मगर्भजम् । पुं । पन्नाइतिप्रसिद्धे मरकतमणौ ॥

अश्मघ्नः । पु । पाषाणभेदनवृक्षे । हाथाजोडीति भाषा ॥

अश्मजम् । त्रि । शिलाजाते ॥ न । शिलाजतुनि ॥ अश्मनोजातम् । जनीप्रादुर्भावे । पञ्चम्यामजातावितिडः । लोहे ॥

अश्मजतुकम् । न । शिलाजतुनि ॥

अश्मजातिः । स्त्री । मरकतादिरत्ने । अश्मनोजातिः ॥

अश्मदारणः । पुं । टाँकी इति प्रसिद्धे । टङ्के ॥ दारयति । दृ॰ ण्यन्ताल्ल्युः । अश्मनोदारणः ॥ दार्यते ऽनेनवा । ण्यन्ताल्ल्युट् ॥

अश्मा । पुं । पाषाणे ॥ अश्नुते ॥ अशूव्याप्तौसङ्घाते च । अन्येभ्योऽपीतिमनिन् ॥ अशिशकिभ्याछन्दसी तिमनिन्वा । भाषायामपीष्यते छन्दसीतितुशकिनैवान्वेतिव्याख्यानात् ॥

अश्मन्तम् । न । अशुभे ॥ चुल्ल्याम् ॥ मरणे ॥ अनवधौ ॥ क्षेत्रे ॥ अश्मनोप्यन्तो ऽत्र । शकन्ध्वादिः ॥

अश्मन्तकः । पुं । न । उद्दाने । चुल्ल्याम् । मल्लिकाच्छदने । दीपाधारा च्छादने ॥

। पुं । तृणविशेषे । अस्फोटके ॥ द्वयान्तरे । आवुडेति प्रसिद्धे । इन्दुके । क्षुराख्याम् । अल्पपत्रे । कोविदारस दृशे ।

अश्मपुष्पम् । न । शैलेये । कालानुसार्ये । शिलाजतुनि । अश्मनःपुष्पमिव ।

अश्मभाण्डम् । न । लौहभाण्डे । हमामदस्तेतिख्याते ॥

अश्मभित् । पुं । अश्मभेदे । पाषाणभेदे । त्रि । पाषाणभेदके । अश्मानं भिनत्ति । भिदिर० क्विप् तुक् ॥

अश्मभेदः । पुं । पाषाणभेदे । गुणास्तु अश्मभेदोहिमस्तिक्तः कषायोवस्तिशोधनः । भेदतोहन्तिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः । योनिरोगान् प्रमेहांस्प्लीहशूलव्रणानिचेति ।

अश्मरः । पुं । पाषाणजाते । प्रस्तरसम्बन्धिनि ।

अश्मरी । स्त्री । मूत्रकृच्छ्रे । अश्मानंराति । रादाने । आतोनुपेतिकः । गौरादिः ।

अश्मरीघ्नः । पुं । वरुणद्रौ । अश्मरींहन्ति । हन० । हन्तेरमनुष्यकर्त्तृकेचेतिटक् ।

अश्मरीहरः । पुं । देवधान्ये ।

अश्मसारः । पुं न । लौहे । अश्मनः सारः ॥

अश्मीरः । पुं । न । अश्मरीरोगे ।

अश्मोत्थम । न । शिलाजतुनि ॥

अश्यमानः । त्रि । भुज्यमाने ॥

अश्रम । न । नेत्राम्बुनि । अश्नुते व्याप्नोतीतिरक् ॥

अश्रद्धानः । त्रि । अश्रद्धीने । पापकारिणि । असुरसम्पदमारूढे । गुरुवेदान्तवाक्यार्थे इदमेवंनभवत्येवेति विपर्ययरूपानास्तिक्यबुद्धि रश्रद्धा तद्वति ।

अश्रान्तम् । न । सन्तते । त्रि । अश्रमे । अश्रुतपसिखेदेच । भावेक्तः । अनुनासिकस्येतिदीर्घः । अविद्यमानंश्रमः । क्रियाविशेषणत्वेक्लीवत्व द्रव्यविशेषणे तु त्रिलिङ्गम् ।

अश्रिः । स्त्री । कोण्याम् । खड्गादिभागे । गृहादेःकोणे । अश्नातिअश्नुतेवा । अशभोजने अशूव्याप्तौवा । वहिश्राद्रिः । आश्रीयतेप्रहारार्थम् । आङि श्रिहनिभ्यांह्रस्वश्चेतीण् सचडित् । डित्वाट्टिलोपआङोह्रस्वश्च ।

अश्रु । न । नेत्रजले । अश्नुते व्याप्नोति । अश्रादयश्चेति रन्प्रत्ययान्तंसाधु । नञ्पूर्वाच्छ्रयतेडुः । वा । नश्रूयते इतिविग्रहः ।

अश्रुत । त्रि । मूर्खे । अकृतश्रवणे । अनाकर्णिते ।

अश्लीकम् । न । अश्लीके । श्रोभे । रेफस्य लकारः ॥

अश्लीलम् । न । ग्राम्यवाचि । भण्डादिवचने ॥ श्रियंराति । आतोनुपेतिक.। तद्भिन्नम् । कपिलकादीनामुपसङ्ख्यानमितिलत्वम् । श्रीश्रोभातस्या सिध्मादित्वाल्लच् । अश्लीलंतदमङ्गल्यजुगुप्साव्रीडधीकरम् ॥

अश्लेषा । स्त्री । नवमनक्षत्रे । तत्रजातस्यफलंयथा । वृथाटनःस्यादतिदुष्टचेताः कष्टप्रदश्चापिदयाजनानाम् । सर्पैसदर्पोऽपिश्रठार्पितार्थः कन्दर्पसन्तप्तमनामनुष्यइति । त्रि । श्लेषशून्ये ॥

अश्लेषाभवः । पुं । केतुग्रहे । अश्लेषाया भवोयस्य ॥

अश्लेषाभूः । पुं । केतुग्रहे ॥

अश्वः । पुं । तुरगे । अश्वमांसगुणायथा । अश्वमांसंतुलवणं वह्निकृत्कफपित्तलम् । वातहृद्बृंहणंबल्यंचक्षुष्यंमधुरंलघु ॥ इति । उणर्थेमध्यगुरुः । संख्यायाम् ॥ पुं । नराणां पुंजातिभेदे । यथा । काकुत्स्थकपुष्टोऽमिथ्याचारश्चनिर्भयः । द्वादशाङ्गुलमेढ्रश्च दरिद्रश्चहयोमतः अश्वस्य लक्षणम् ॥ अश्नुते । अश्नुव्याप्तौसंघातेच । अशूमुषिलटीतिकन् ॥

अश्वगन्धिका । स्त्री । अश्वगन्धायाम् ॥

अश्वकर्णः । पुं । शालवृक्षे । सखुआइतिख्याते ॥ अश्वकर्णइवपत्रमस्य । अश्वकर्णः कषायः स्याद्व्रणस्वेदकफकृमीन् । वृध्नविद्रधिवाधिर्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥

अश्वकर्णक । पुं । शालवृक्षे । जरद्द्रुमे ॥

अश्विनी । स्त्री । अश्विनीनक्षत्रे ॥

अश्वखरज. । पुं । खेसरे । खच्चर इति भाषाप्रसिद्धे ॥

अश्वखुरः । पुं । नखीतिख्याते गन्धद्रव्ये ।

अश्वखुरा । स्त्री । अपराजितायाम् ।

अश्वगन्धा । स्त्री । वराहकर्ण्याम् । असगन्धइतिख्यातौषधौ ॥ अश्वगन्धानिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा । बल्या रसायनीतिक्ता कषायोष्णातिशुक्रला ॥

अश्वगन्धिका स्त्री । । अश्वगन्धायाम् । अश्वगन्धैव । स्वार्थेकः ॥

अश्वगोयुगम् । न । अश्वयुग्मे ॥ द्वावश्वौ । द्विगोयुगच ॥

अश्वगोष्ठम् । न । मन्दुरायाम् ॥ अश्वानांस्थानम् । गोष्ठजादयः स्थानादिषुपशुनामभ्यः इतिगोष्ठच्प्रत्ययः ॥

अश्वग्रीव । पुं । विष्णुदैत्यसुरभेदे ।

अश्वघ्नः । पुं । करवीरे ॥ अश्वंहन्ति । हन० अमनुष्यकर्तृके चेतिटक् । गमहनेत्युपधालोपः । कुत्वम् ॥ चि

। श्रयमे ।

अश्वतरः । पुं । गन्धर्वविशेषे । नागभेदे ॥ वेगसरे । गर्दभेनाश्वायामुत्पन्ने । घोटकाद्गर्दभीजाते । तनुरश्वः । वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यस्तनुत्वइति ष्टरच् ॥ अश्वेनाश्वायामुत्पन्नोऽश्वः अश्वत्वञ्जातिःतत्सहचरितस्योक्तधर्मस्य तनुत्वमन्यपितृकत्वात् । ङीषि । अश्वतरी ।

अश्वत्थः । पुं । पिप्पलद्रौ । वृक्षादीनां मध्ये भगवद्विभूतौ ॥ गर्दभाण्डे । प्लक्षे । पार्श्वपिप्पले । अश्वत्थंजलमस्याक्ति । मूले सिक्तत्वात् । अर्शआद्यच । अश्वत्थवत् कामकर्मवातेरितनित्यप्रचलितस्वभावत्वात् आशुविनाशित्वेन श्वोपिस्थास्यतीतिविश्वासानर्हत्वाच्चमायामयेसंसारवृक्षे ॥ प्राक्मलिवटाद्यपेक्षयान् श्वस्तिष्ठतीति अश्वस्तिष्ठतिवा । ष्ठागतिनिवृत्तौ । पृषोदरादित्वात्पूर्वोत्तरपदान्तयोःसकारयोस्तकारौ । सुपिस्थइतिकः । अस्थिरत्वपोयंसंसारवृक्ष । न । जले ।

अश्वत्थकम् । न । तृणविशेषे । अश्वत्थफलमश्वत्थः । तद्युक्तःकालोऽप्यश्वत्थः । अश्वत्थे अश्वत्थफलोत्पत्तिकाले देयमृणम् । कालात्स्वत्थयमनुसाद्वुन् ।

अश्वत्थफला । स्त्री । वृषायाम् ॥

अश्वत्थभेदः । पुं । स्वालीद्रुमे ॥

अश्वत्थव्रतम् । न । कन्यानांवाल्यवैधव्यदोषनिवारके व्रतविशेषे ॥ यथा । सुस्नाताचिरवस्त्राद्या कन्यापितृगृहस्थिता । करकेणाम्बुपूर्णेनसिञ्चेत्संप्रतिवासरम् । चैत्रेवाश्विनमासेवैचतृतीयासितपक्षतः । यावत्पूर्णाततीयास्यान्मासमेकंयथाविधि । प्रत्यहं ब्राह्मणान् भोजयेन्नित्यंपूजनं वसमाचरेत् । तदाशिषामुयात कन्यासौभाग्यं चसुखान्वितम् । प्रतिमांपार्वतीशयोर्वैश्वदेवभाजनेर्चयेत् । चन्दनैः न दूर्वाभिर्विल्वपत्रैर्यथाविधि । नैवेद्यैर्यथाभक्त्यानैवेद्यै प्रतिवासरे । एवंव्रतप्रभावेणवालवैधव्यनिवृत्तिः । जायतेकन्यकानांचततःपाणिग्रहक्रियेति ।

अश्वत्था । स्त्री । पूर्णिमातिथौ ॥ दृषपौर्णमास्याम् ।

अश्वत्थामा । पुं । द्रोणाचार्यपुत्रे । कृपीतनये ॥ अश्वस्येवस्थामबलंयस्य । पृषोदरादित्वात् सलोपः । यद्वा । अश्व इवतिष्ठतिष्ठाः । आत्मन्मनिन् ।

अश्वत्थिका । स्त्री ।
अश्वत्थी । स्त्री ।
} वृक्षविशेषे । पर्णिकायाम् । पिप्पलिकायाम् ॥

अश्वनाथः । पुं । अश्वपाले । अश्वान् नयति । कर्मण्यण् ॥

अश्वपतिः । पुं । रामायणप्रसिद्धे नृपतौ । कैकेये ॥

अश्वपालः । पुं । घोटकरक्षके ॥

अश्वपुच्छी । स्त्री । माषपर्ण्याम् ॥

अश्वबालः । पुं । काशे । अश्वस्यबाले ।

अश्वमहिषिका । स्त्री । अश्वमहिषयोः स्वाभाविकेवैरे । अश्वमहिषयोर्वैरम् । द्वन्द्वाद्वुन्वैरमैथुनिकयोः ॥

अश्वमारः । पुं । करवीरे ॥

अश्वमारकः । पुं । करवीरे ॥ अश्वानां मारकः ॥

अश्वमुखः । पुं । किन्नरे ॥ अश्वस्येवमुखमस्य ॥

अश्वमुखी । स्त्री । किम्पुरुषयोषिति ॥ अश्वस्येवमुखंयस्याः ॥

अश्वमेधः । पुं । यागभेदे । क्रतुराजि ॥

अश्वमेधीयः । पुं । यथौ । अश्वमेधाय ॥ अश्वमेधायहित. । अश्वमेधाच्छ ॥ अस्यलक्षणंयथा । गोक्षीरसवर्णश्च कुन्देन्दुहिमसन्निभम् । पीतपुच्छंश्यामकर्णं सर्वतोगतिमत्तमम् । श्यामंवापिमहोपालयज्ञेष्विंतुरगंविदुरिति ॥

अश्वयुग् । पुं । आश्विने ॥ स्त्री । अश्विनीनक्षत्रे । अश्वंयुनक्तिरूपेणानुकरोति । युजिर्योगे । सत्सूद्विषेतिक्विप् ॥

अश्वयुजौ । अश्वयुग्जिजाते । जातार्थप्रत्ययस्यबालुक् । पक्षे आश्वयुजः ॥

अश्वयुजः । पुं । आश्विने । अश्वयुजायुक्तापौर्णमास्यस्मिन्नस्ति । संज्ञापूर्वकत्वाद्वृद्ध्यभावः ॥

अश्वरोधकः । पुं । करवीरवृक्षे ॥

अश्वलः । पुं । वेदप्रसिद्धे ऋषिभेदे ॥

अश्वलक्षणम् । न । घोटकलक्षणे ॥

अश्वलोमा । स्त्री । सर्पविशेषे । हलाहले ॥ अश्वलालेत्यपिपाठः । इति त्रिकाण्डशेषः ॥

अश्ववक्त्रः । पुं । किन्नरे ॥ अश्वस्येववक्त्रमस्य ॥

अश्ववारः । पुं । सादिनि । असवारइतिख्याते ॥ अश्वंवारयति । इत्यण् । अण् ।

अश्ववारणः । पुं । गवये । गोसदृशे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

अश्ववाहः । पुं । सादिनि ॥

अश्ववित् । पुं । नले । दमयन्तीपतौ ॥ त्रि । अश्वविद्यान्विते ॥

अश्ववैद्यः । पुं । घोटकचिकित्सके । शालिहोत्रिणि । सालोतरीतिख्याते ॥

अश्वशाला । स्त्री । मन्दुरायाम् ॥

अश्वशृगालिका । स्त्री । अश्वशृगालवैरे ॥ अश्वशृगालयोर्वैरम् । द्वन्द्वाद्वुन्वै-

रमैथुनिकयोरितिवुन् ।

अश्वषड्गवम् । न । अश्वानांषट्के । अश्वानांषट्त्वम् । षट्त्वे षड्गवच् ।

अश्वसेननृपनन्दनः । पुं । सनत्कुमारे । इतिहेमचन्द्रः ॥

अश्वस्तन. । पुं । हस्तिविशेषे ॥

अश्वस्तनिकः । पुं । एकदिननिर्वाह्योचितान्ने । श्वोभवंश्वस्तनंभक्तंतदस्यास्तीति मत्वर्थीयष्ठन् । नञ् समासः ।

अश्वा । स्त्री । वडवायाम् ॥ अजादिषु पाठाट्टाप् ॥

अश्वाक्षः । पुं । देवसर्षपे ।

अश्वाभिधानी । स्त्री । अश्वबन्धनरज्ज्वाम् ।

अश्वारिः । पुं । महिषे । अश्वस्यअरिः ।

अश्वारूढः । पुं । अश्वारोहे ।

अश्वारूढा । स्त्री । देवीविशेषे ।

अश्वारोहः । पुं । अश्ववारके । सादिनि । त्रि । अश्ववाहके । अश्वमारोहति । वृषवीजजन्मनि प्रादुर्भावेच । कर्मण्यण् ।

अश्वारोहा । स्त्री । अश्वगन्धायाम् ।

अश्वावरोहकः । पुं । अश्वगन्धायाम् ॥

अश्विजौ । पुं । द्विवचनान्तः । अश्विनीकुमारयोः ॥

अश्विनौ । पुं । स्वर्वैद्ययोः । अश्विनीकुमारयोः । तौचावियुक्तस्वभवौ । प्रशस्ता. अश्वाःसन्त्ययोः । इनिः । यद्वा । अश्विन्यांजातौ सन्धिवेलेत्यणो नक्षत्रेभ्यो बहुलमितिलुकि लुकस्तद्धितलुकीतिङीपोलुक् । विशिष्टाश्वयोः । यथा । कपोलयोस्तथावर्तौ विद्येते वाजिनोर्यदि । तावश्विनावितिप्रोक्तौ राज्यवृद्धिकरौपराविति ॥

अश्विनी । स्त्री । अश्वयुजि । प्रथमनक्षत्रे । अस्यांजातस्यफलं यथा । सदैवदेवाभ्युदितो विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत । योषाविभूषात्मजभूषितोयं.स्यादश्विनीजन्मनिमानवस्येतिकोष्ठीप्रदीपः । अश्वः अश्वयमस्त्यस्याः । इनिः । ङीप् ।

अश्विनीकुमारौ । पुं । अश्विनीसुतः अश्वीभूतसंज्ञानामसूर्यपत्न्याः जपुत्रौ तौचदेवचिकित्सकौ । नित्यद्विवचनान्तोयम् ।

आश्विनीपुत्रौ । पुं । स्वर्वैद्ययोः ।

अश्विनीसुतौ । पुं । नासत्ययोः । स्वर्वैद्ययोः । वडवारूपिण्यां संज्ञायाऽश्वरूपयोगादश्विनी । अश्विन्या.सुतौ ।

अश्वीयम् । न । आश्वे । वाजिसङ्घे । त्रि । अश्वहिते । अश्वानांसमूहः । केशाश्वाभ्यांयञ्छावन्यतरस्यामितिछः । अश्वेभ्योहितंवा । अपूपादित्वाच्छः ॥

अश्वेङ्गितम् । न । घोटकेङ्गिते ।

अश्वोरसम् । न । मुख्याश्वे । अश्वानामुरइव । अग्राख्यायामुरसइतिटच् ।

अश्वत्रम । त्रि । अश्वीये । अश्वेभ्योहितम् । पश्चेयत् ।

अषडक्षीणः । त्रि । तृतीयावेद्यमंचे । द्वाभ्यामेवकृतेमंचे । अविद्यमानानि षडक्षीण्यत्र । अषडक्षाशितङ्गवलङ्कर्मैतिख स्वार्थे । अक्षिशब्दोत्रचक्षुरिन्द्रियेवर्त्तते । बहुव्रीहौसक्थ्यक्ष्णोरितिषच् ।

अषाढः । पुं । मासभेदे । पालाशदण्डे । त्रि । अषाढायांजाते । अविष्ठाफल्गुनीश्रवणोलुक् । लुकतद्धितलुकिस्त्रियाम् फल्गुन्यषाढाभ्यामित्यन् टाप् । अषाढा ।

अ . ढकः । पु । अषाढार्थे ।

अषाढा । स्त्री । पूर्वाषाढायाम् । उत्तराषाढायाम् । अषाढायामुत्पन्नायाम् ।

अष्टकम् । न । पाणिनेःसूत्रपाठे । अष्टावध्यायाः परिमाणमस्य । सङ्ख्यायाअतिशदन्तायाः कन् । त्रि । अष्टसङ्ख्यायाम् । अष्टसङ्ख्यकाध्यायादिपरिमितेग्रन्थे । अष्टसङ्ख्याविशिष्टे । यथा गङ्गाष्टकंनामाष्टकमिति ।

अष्टकर्णः । पुं । ब्रह्मणि । अष्टौकर्णाअस्य ।

अष्टकर्मा । पुं । अष्टगतिकेनृपे । अष्टौकर्माण्यस्य । तानिचोक्तान्युशनसा यथा । आदानेचविसर्गेचतथाप्रेषनिषेधयोः । पञ्चमेचार्थवचनेव्यवहारस्यचेक्षणे । दण्डशुद्ध्योः सदायुक्तस्तेनाष्टगतिकोनृप. । अष्टकर्मादिवंयातिराजाशक्राभिपूजितइतिमनुः । तत्रादानंकरादीनाम् । विसर्गोभृत्यादिभ्योधनदानम् । प्रैषोऽमात्यादीनांदृष्टादृष्टानुष्ठानेषु । निषेधोदृष्टादृष्टविरुद्धक्रियासु । अर्थवचनं कार्यसन्देहेराजाज्ञयैव तत्रनियमात् । व्यवहारेक्षणं प्रजानामृणादिविप्रतिपत्तौ । दण्डःपराजितानांशास्त्रोक्तधनग्रहणम् । शुद्धिःपापेकर्मणि जाते तत्प्रायश्चित्तसम्पादनमितिकुल्लूकभट्टाः । मेधातिथिस्तु । अकृतारम्भः । कृतानुष्ठानम् । अनुष्ठित विशेषणम् । कर्मफलसङ्ग्रहः । तथासामदानभेददण्डाः । एतदष्टविधंकर्मस्यात् । अथवावणिक्पथः । उदकसेतुबन्धनम् । दुर्गकरणम् । कृतस्य संस्कारनिर्णयः । हस्तिबन्धनम् । खनिखननम् । सैन्यनिवेशनम् । दारुवनच्छेदनञ्चेत्यष्टौ ।

अष्टका । स्त्री । सप्तम्यादिदिनत्रये । यथा । अष्टकातुसमाख्यातासप्तम्यादि

दिनत्रयम् । आर्द्रंतक्रमाधीयीतव्रत वर्ज्यविवर्जयेदितिब्रह्माण्डपुराणम् ॥ श्राद्धभेदे । पौषादिमासत्रयाणांकृष्णाष्टम्याम् ॥ यथा । तिस्रोष्टकाभवन्ति पूपाष्टका मासाष्टकाशाकाष्टकाचेति । तत्रापूपस्यानुरूपतया तस्यैव तृप्तिक्षमतयामुख्यत्वम् । मांसशाकयोस्तूपकरणत्वेनान्वयो यथासङ्ख्यमष्टकाद्वये मुख्यद्रव्यमोदनादिकमेव । अश्नन्तिपितरोऽस्याम् । अश भोजने । इष्यशिभ्यांतकन् । अष्टका पितृदेवत्ये ॥

अष्टकाङ्गम् । न । नयपीठ्याम् । पाशारङ्क इतिगौडभाषा प्रसिद्धे । इतित्रिकाण्डशेष ॥

अष्टा । त्रि । सङ्ख्याविशेषे ८ । सङ्ख्येये । अश्नुते । अशूव्याप्तौ सङ्घाते च । सप्यशूभ्यांतुट्चेतिकनिन् ॥

अष्टपात् । पुं । शरभे । लूतायाम् ॥

अष्टपाद् । पुं । किन्नेरौ । ऊर्णनाभविशेषे । शरभे ।

अष्टपादिका । स्त्री । हापरमाली इति गौडभाषाप्रसिद्ध लताविशेषे ॥

अष्टम । त्रि । अष्टानाम्पूरणे । तस्यपूरणेडट् । नान्तादसङ्ख्यादेर्मट् । पञ्चाङ्गस्यभागे । मानपञ्चाङ्गयो: कन्लुकौचेतिकस्य अनोवालुक् ।

अष्टमङ्गल । पुं । श्वेतोर. खुरपुच्छास्यपृष्ठकेशतुरङ्गमे । न । द्रव्यान्तरे ॥ तद्यथा । मृगराजोवृषोनाग कलशो व्यञ्जनंतथा । वैजयन्तीतथाभेरी दीप इत्यष्टमङ्गलमिति ॥ अन्यच्च । लोकेस्मिन्मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणोगौर्हुताशन'। हिरण्यंसर्पिरादित्यआपोराजातथाष्टम इतिस्मृति. । अष्टौमङ्गलानियस्य । अष्टानांमङ्गलानांसमाहार ॥ अष्टौषधयुक्तपक्वघृते । यथा ह्मावमिस्र । वचाकुष्ठंतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमथापिच । सारिवासैन्धवञ्चैवपिप्पलीघृतमष्टमम् । सिद्धं. .। मिदंमेध्यपिवेत् प्रातर्दिनेदिने । स्मृति. कुमाराणांपिवतामष्टमङ्गमिति ॥

अष्टमानम् । न । कुडवपरिमाणे । शराबार्द्धे ।

अष्टमिका । स्त्री । शुक्तिपरिमाणे स्तोलके । इतिवैद्यकपरिभाषा ।

अष्टमी । स्त्री । चीरकाकोल्याम् । तिथिविशेषे । अष्टानांपूरणी । ङीप् । अत्रजातस्यफलन्तु । भूपालत: प्रासधन. कृशाङ्ग' सुखीकृपालुर्युवतिप्रियश्च । चतुष्पदाढ्योधनधान्ययुक्त' स्यादष्टमीजोमनुज: सुधीर इति ।

अष्टमूर्त्तिः । पुं । शिवे । अष्टौमूर्त्त

योयस्य । यथा । पृथिवीसलिलंतेजो वायुराकाशमेवच । सूर्याचन्द्रमसौ याजिरष्टौशङ्करमूर्त्तयइतियादवः ॥ चितिमूर्त्तिः सर्वः १। जलमूर्त्तिर्भव २। अग्निमूर्त्तीरुद्र. ३। वायुमूर्त्तिरुग्रः ४। आकाशमूर्त्तिर्भीम. ५। यजमानमूर्त्तिः पशुपतिः ६। चन्द्रमूर्त्तिर्महादेवः ७। सूर्यमूर्त्तिरीशानः ८ । एता.शरभमूर्त्तिशिवस्याष्टपादा' ।

अष्टन' । पुं । मेघनादे ।

अष्टलोहकम । न । अष्टसङ्ख्यकधातुशेषे । यथा । सुवर्णम् । रजतम् । ताम्रम् । वङ्गः । सीसम् । कान्तलोहम । मुण्डलोहम् । तीक्ष्णलोहमिति ॥

अष्टवर्ग । पुं । आदिकादिवर्गेषु ॥ जीवकादौ । यथा । जीवकर्षभकौमेदे काकोल्यावृद्धिवृद्धिके। अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः । अष्टवर्गोहिमः स्वादुर्वृंहणः शुक्रलोगुरु. । भग्नसन्धानकृतत्त्वन्यबलासवलवर्द्धनः । वातपित्तास्रतृट्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत । राज्ञामप्यष्टवर्गस्तुयतोयमतिदुर्लभ. । तस्मादस्यप्रतिनिधिंग्रह्णीयात्तद्गुणंभिषक् । मेदाजीवककाकोली ऋद्धिद्वन्देपिचासति । वरीविदार्यश्वगन्धावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत ॥ मेदामहामेदास्थाने शतावरीमूलम् । जीवकर्षभयो. स्थानेविदारीमूलम् । काकोलीक्षीरकाकोल्योः स्थाने अश्वगन्धामूलम् । ऋद्धिवृद्ध्योः स्थानेवाराहीकन्दंक्षिपेत ॥ नीतिवेदिनांवर्गान्तरे । कृषिर्वणिकपथोदुर्गं-सेतुःकुञ्जरवन्धनम् । खन्याकरबलादानंसैन्यानांचनिवेशनम् । अष्टवर्गमिमंसाधु समंवृद्धोपिवर्द्धयेदिति ॥ अष्टानावर्गः ।

अष्टश्रवा. । पुं । ब्रह्मणि । द्रुहिणे ॥

अष्टाकपाल । पुं । हविर्भेदे ॥ यत्राष्टसुकपालेषुपुरोडाश. यज्ञाहूयते-तस्मिन्यज्ञे ॥ अष्टसुकपालेषुसंस्कृतः । संस्कृतंभक्ष्यादृत्यणोद्विगोर्लुंग-नपत्यइतिलुक् । अष्टन' कपालेह विषीत्यात्वम् ॥

अष्टाङ्गः । पुं । योगभेदे ॥ अष्टअङ्गान्यस्य । तानियथा । यमंनियममासनं प्राणायामौततःपरम् । प्रत्याहारं धारणाचध्यानंसार्द्धंसमाधिना । अष्टाङ्गान्याहुरेतानियोगिनांयोगसाधने इति । पाशके ॥ प्रणतिविशेषे । यथा । जानुभ्याञ्चतथा पद्भ्यांपाणिभ्यामुरसाधिया । शिरसावचसादृष्ट्याप्रणामोऽष्टाङ्गईरित इति ॥

अष्टाङ्गार्घ्यः । पु । अष्टद्रव्यघटितपूजोपकरणविशेषे ॥ यथा । आपःक्षीरंकुशाग्राणिदधिसर्पिःसतण्डुलाः । यवाःसिद्धार्थकाश्चैवअष्टाङ्गार्घ्यः प्रकीर्त्तितइतितन्त्रशास्त्रम् ॥ अपिच । आपःक्षीरं कुशाग्राणि घृतंमधु तथादधि । रक्तानिकरवीराणितथारक्तंचचन्दनम् ॥ अष्टाङ्गएष अर्घ्योवैभानवेपरिकीर्त्तित ॥ इतिकाशीखण्डम् ॥

अष्टादश । त्रि । अष्टादशानां पूरणे ॥ डट् ॥

अष्टादश । त्रि । साष्टदशसङ्ख्यायाम् ॥ साष्टदशसङ्ख्येये ॥ अष्टौचदशच अष्टाधिकादशेतिवा । अष्टनःसङ्ख्यायामित्यात्त्वम् ॥ अथाष्टादशवाचकाः शब्दाः ॥ द्वीप । विद्या । पुराणम् । स्मृति । धान्यमिति ॥

अष्टादशाङ्ग । पु । अष्टादशद्रव्यात्मके पाचने ।

अष्टापद । पु । न । कनके ॥ शारीणां खेलनाधारपट्टे । शारीणांफलके ॥ पु । शरभे ॥ मर्कटे । मकडी इति भाषाप्रसिद्धे ॥ कृमौ । कैलाशे ॥ कीलके ॥ पक्षौ पंक्तौ अष्टौ पदान्यस्य ॥ अष्टौधातव पदान्यस्य ॥ अष्टसुधातुषुपदं प्रतिष्ठाअस्येतिवा ॥ अष्टन. संज्ञायामितिदीर्घ ॥ यद्वा । अष्टानामऽपदम् ॥

अष्टापदी । स्त्री । चन्द्रमल्ल्याम् ॥ लूतायाम ॥ अष्टौपादाः अस्याः । सङ्ख्यासुपूर्वस्येति पादस्यान्तलोपे पादोऽन्यतरस्यामिति ङीपिपाद्‌पत् ॥

अष्टापाद्यम् । न । अष्टभिर्गुणिते ॥ अष्टभिरापाद्यते गुण्यते इतितत ॥

अष्टारचक्रवान् । पुं । मञ्जुघोषे । जिनविशेषे ॥ अष्टारचक्रमस्यस्यमतुप् ॥

अष्टि । स्त्री । वीजे ॥ अश्नुते भूमौक्षिप्यते । अशु० । कर्मणिक्तिन । पृषोदरादि ॥ षोडशाक्षरायांवृत्तौ ॥ षोडशाङ्के ॥

अष्टिदिनान्तरालः । त्रि । षोडशसाध्यन्तरे ॥

अष्ठीला । स्त्री । नाभेरधोभागेण्धाणपिण्डिकावद्वातव्याधिविशेषे. यथा । आध्मापयन्वस्तिगुदंरुध्वावातश्चलोन्नताम् । कुर्यात्तीव्रार्त्तिमष्ठीलांमूत्रविण्मार्गरोधिनीमिति ॥ वर्त्तुलपाषाणखण्डे ॥

अष्ठीवत् । न । पुं । जानुनि । ऊरुपर्वणि ॥ अतिशयितमस्थियस्मिन् । मतुप् । आसन्दीवदष्ठीवदितिनिपातनादस्थिशब्दस्याष्ठीभावः ॥ जानूर्वोः सन्धौ ॥

अस । पुं । अन्यस्मिन् ॥ सनभवति । न

असमासः ॥

असंवीतः । त्रि । नग्ने ॥

असंस्कृतः । त्रि । गर्भाधानादिसंस्कार विधुरे ॥ अनुपनीते ॥ नसंस्कृतः ॥ सुसंस्कृतःसुतः श्रेष्ठोनापरोवेदपा- रगः ॥

असंस्तुतः । त्रि । अपरिचिते ॥ नसं- स्तुतः ॥

असंहतः । पुं । सेनानांपृथग्वृत्तिमति व्यूहे ॥ असंलग्ने ॥

असकृत् । ा । पौनःपुन्ये ॥ अनेकशः ॥ नसकृत् ॥

[illegible]क्तः । त्रि । सर्वसम्बन्धशून्ये ॥ फला [illegible]शारहिते कर्त्तृत्वाभिमानही ने यथाविधिकर्मकर्त्तरि ॥ नसक्तः ॥

असक्तबुद्धिः । त्रि । अहमेषां ममैतेइत्य भिष्वङ्गरहितबुद्धौ॥ असक्ताबुद्धिर्यस्य ॥

असक्तात्मा । त्रि । अनासक्तचित्ते । तृ ष्णाशून्यतयाविरक्ते ॥ असक्त.आत्मा अन्तःकरणंयस्य ॥

असक्तिः । स्त्री । सङ्गाभावे । ममेदमि त्येतावन्मात्रेणप्रीतिः सक्तिस्तदभावे ॥ नसक्तिः ॥

असङ्कसुक. । त्रि । स्थिरमतौ ॥ नसङ्क सुकः ॥

असङ्कुलः । पुं । गजाद्यध्वनि। विस्तृ तेपथि ॥ नसङ्कुलः ॥

असङ्क्रान्तमासः । पुं । मलमासे । म लिम्लुचे ॥

असङ्ख्यः । त्रि । युद्धवर्जिते ॥ परार्द्धातीतसंख्यायाम् ॥ सामान्यतोगणना- रहिते ॥

असङ्ख्यातः । त्रि । अकृतसङ्ख्ये । अन गिने इतिभाषा ॥

असङ्ख्येयः । पुं । परमात्मनि ॥ हरौ ॥ यस्मिन्संख्याइर्नामरूप भेदादिनवि द्यते ॥ ३। सङ्ख्यातुमयोग्ये ॥

असङ्गः । पुं । सङ्गविरोधिनि । पुत्रवित्त लोकैषणात्यागरूपे वैराग्ये ॥ नि र्विषये चिदात्मनि॥ यथा । आत्म स्वामप्यविद्यांतामसङ्गोनस्पृशत्यसौ । दृष्ट्वागतपौवियच्छिन्नावस्पृश्यो विय ता यथा ॥ नदष्टुप्लाक्षिप्यते व्योमना तपेनापिशुष्यति । अविद्यया विद्यया ज्ञानात्मन्यैतिशयस्तथेति ॥ त्रि । रा गाभाववति ॥ आशायातु निराशस्त्व मभावयातुभावना । अमनस्त्वमनो यातुतवासङ्गं नजीवतः॥ नास्तिसङ्गो यस्य ॥

असङ्गतः । त्रि । अनुचिते॥ नसङ्गतः ॥ सङ्गतिरहिते ॥ नासङ्गतंप्रयुञ्जीत ॥

असङ्गतिः । स्त्री । अर्थालङ्कारभेदे ॥ यथा । भिन्नदेशतयात्यन्तंकार्यकार णभूतयोः । युगपद्धर्मयोर्यत्रख्यातिः

साख्यादसङ्गतिः। इत्यव्हेर्यंकार्यंत हेश्मेवकार्यमत्यक्षमानंदृष्टम्। यथा धूमादि। यत्र हेतुफलरूपयोरपि धर्मयोः केनाप्यतिशयेन नानादेशतयायुगपद्वभासनंसातयोःस्वभावोत्पन्न परस्परसङ्गतित्यागादसङ्गतिः। उदाहरणम्। जले च यणे तस्से च वेश्या भय इतं जणो अस्सिमम्। दन्तक्खअं कवोले वहुए वेअणा सवत्तीणम। अस्यसंस्कृतं यथा। यस्मै वव्रणस्तस्यैववेदनाभवतितज्जने ऽलीकम्। दन्तक्षतंकपोलेवध्वावेदनासपत्नीनामिति।

असत्। पुं। इन्द्रे। इतित्रिकाण्डशेषः॥ त्रि। निरुपाख्ये। प्रागभावप्रतियोगिनि। निःस्वरूपे। यत्सम्बन्धितयायन्नविद्यते तत्तत्रासदित्युच्यते। निषेधमुखेन प्रतीयमाने अभावत्वाश्रये। अश्रद्धयाहुतंदत्तं तपस्तप्तं कृतं चयत्। असदित्युच्यतेपार्थ नचतत् प्रेत्यनो इह। यत्कालतो देशतो वस्तुतोवा परिच्छिन्नं तदसत्। अविद्यमाने। प्रत्यक्षागोचरत्वादसत् स्वभावमिववर्त्तमाने कारणात्मनि॥ असज्जने। दुराचारा दुर्विचेष्टा दुष्प्रज्ञाः प्रियसाहसाः। असन्तस्त्विति विख्याताः सन्तश्चाचारलक्षणाः॥



सदत्यंताभावोऽसदितिबौद्धाः॥

असती। स्त्री। व्यभिचारिण्याम। कुलटायाम्। सत्याभिन्ना।

असतीसुतः। पुं। स्त्री। कौलटेरे। असत्यासुतः।

असत्कृतः। त्रि। परिभूते। प्रियभाषणापाद्यप्रक्षालनपूजादिसत्कारशून्ये। नसत्कृतः।

असत्पथः। पुं। मन्दमार्गे। कुपथे। नसत्पथः।

असत्यम्। त्रि। मिथ्यायाम्। सत्यंनास्तियत्रतस्मिन्॥

असदध्येता। त्रि। कुपाठिनि। अज असदध्ययनशालिनि॥ नसदध्ये

असद्ग्रहः। पुं। दुष्टग्रहे। नसद्ग्रहः। लङ्के। बालकोकाहठ इतिभाषा।

असद्योनिः। स्त्री। पश्वादियोनौ। तस्यांस्थितामसमनिष्टफलंभुज्यते। नसद्योनिः।

असद्रूपः। त्रि। देशादिप्रपञ्चे। असदाध्यमन्नतंरूपंस्वरूपंयस्य।

असनम्। न। क्षेपणे। पुं। जीवकद्रुमे। प्रियसालके। विजयसाराख्ये। अजकर्णे। महासर्जद्रुमे। अस्यते। असुक्षेपणे। ल्युः।

असनपर्णी। स्त्री। वातकवचे। शीतलवातके।

असम्बद्ध । त्रि । समुङ्कते । पण्डितम्मन्ये । दृप्ते । इतिजटाधरः । अकृतसम्बन्धे । नसम्बद्धः ॥

असपत्न । त्रि । शत्रुवर्जिते ॥ नविद्यतेऽसपत्नोयस्य ॥

असभ्यः । त्रि । सभायामनर्हे स्त्रीवर्णनादौ । सभायामनुपयुक्ते । खले ॥

असमः । पुं । बुद्धे । त्रि । विषमे । अतुल्ये । नविद्यते समोयस्य ॥

असमञ्जसम् । त्रि । अयुक्ते ॥ नसमञ्जसम् । पुं । केशिन्यामुत्पन्नेसगरात्मजे ॥

असमर्थ । त्रि । सापेक्षे । अशक्ते । दुर्गे । नसमर्थः ।

असमवायिकारणम् । न । कार्यसकारणे . वासन्हैकस्मिन्नर्थे समवेतत्वेसति कारणे । यथातन्तुसंयोगःपटस्य तन्तुरूपंपटरूपस्य । यथावा । परमाणुद्वयसंयोगोद्व्यणुकस्य कपालरूपंच घटरूपस्य । असमवायिकारणन्तु संबंन्द्रव्येगुणः गुणेगुणः कर्मच ॥ असमवायिच ततकारणञ्च ॥

असमानयानकर्मा । पुं । सन्धेः प्रभेदे । यत्र त्वमत्रयाहि अहमत्रयास्यामीति साम्प्रतिकोत्तरकालीनफलार्थितयै वक्रियते सोऽसमानयानकर्मासन्धिबोध्यः ॥



असमाहितः । त्रि । अनेकाग्रमनसि । विक्षिप्तचित्ते ॥ नसमाहितः ॥

असमीक्ष्यकारी । त्रि । जाल्मे । अविचार्यकर्तरि ॥ असमीक्ष्याविचार्यकर्तुंशीलमस्य । सुपीतिणिनिः ॥

असमेषुः । पुं । अनङ्गे ॥ असमाः इषवोयस्य ॥

असम्पृक्त. । त्रि । असम्बद्धे ॥ नसंपृक्तः ॥

असम्प्रज्ञातसमाधिः । पु । निर्विकल्पकसमाधौ ॥ निवृत्तचेतोव्यापारे य परमानन्दसाक्षात्कारः सौषुप्तानन्दसाक्षात्कारवत् सोऽसम्प्रज्ञातसमाधिः ॥

असम्बद्धम् । त्रि । अवद्धे । अनर्थकवाक्ये ॥ नसम्बद्धम् ॥

असम्बद्धप्रलापः । पुं । सत्यस्यापिराजदेशपौरवार्त्तादेर्निष्प्रयोजनवर्णने ॥ त्रि । तद्वति ॥

असम्बाध. । त्रि । अन्योन्यपीडारहिते ॥

असम्भूतिः । स्त्री । प्रकृतौ । चित्तव्याप्तामायायां परमेश्वरस्योपाधौ । संभवनंसम्भूतिःकार्यम् । तस्याःअन्या॥

असम्भेदः । पु । अविदारणे । अविनाशे ॥ सम्भेदनम् । भिदिर्विदारणे । घञ् । नसम्भेदः ।

असम्मतम् । त्रि । अप्राप्ये । अनभिप्रेते ॥ नसम्मतम ॥

असम्मूढः । त्रि । स्थितप्रज्ञे । सम्मोहवर्जिते । भ्रान्तिरहिते ॥ नसम्मूढः ॥

असम्मोहः । पु । प्रत्युत्पन्नेषुवोद्दव्येषु कर्त्तव्येषुवा अव्याकुलतयाविवेकेन प्रवृत्तौ । नसम्मोहः ॥ त्रि । तद्वति ॥

असम्यग्व्ययः । पुं । आयतुरीयांशादधिकव्यये । व्यसनविषयव्यये ।

असवः । पुं । कुकरौंधा इतिविश्रुते क्षुपे ॥

असलम । न । लोहे ॥ असमन्तवि शेषे ॥

असहनः । पुं । स्त्री । शत्रौ ॥ अमर्षणे ॥

असाधारणम् । त्रि । तन्मात्रसम्बन्धिनि ॥ साधारणाद्भिन्ने । विशेषे ॥ न्यायमते साध्यव्यापकीभूताभावप्रतियोगिनिहेतौ । यथा । वह्निमान् जलत्वादित्यादि ॥

असाधारणत्वम् । न । तद्भिन्नावृत्तित्वेसतिसकलतद्वृत्तित्वे ।

असाधारणानैकान्तिकः । पुं । हेत्वाभासविशेषे । सर्वसपक्षव्यावृत्ते ॥ यथा शब्दोनित्यःशब्दत्वादिति । शब्दत्वं सर्वेभ्योनित्येभ्योव्यावृत्तंशब्दमात्रवृत्ति ॥

असाधुः । त्रि । खले ॥ सज्जनाद्द्यत्व दुर्नये परद्रव्यादिष्वचर... । स्वगुणोच्चगिरो मुनिव्रता परवर्णग्रहणेष्वसाधवः ।

असाध्यः । त्रि । याप्ये । अप्रतिक्रिये । असाधनीये ॥ बुद्धिमद्साध्यंनकिञ्चिदितिवात्स्यायनः ॥ नसाध्यः ॥

असान्द्रम् । त्रि । विरले ॥ नसान्द्रम् ॥

असाम्प्रतम् । । । अयुक्ते ॥ यथा । ...त्तिसर्वमर्यादानान्वयाचप्यपेक्षते । अस्यदग्धोदरस्यार्थेकोमकुर्यादसाम्प्रतमिति ॥ नसाम्प्रतम् ॥

असारः । पुं । एरण्डवृक्षे ॥ न । अगुरुणि ॥ त्रि । फल्गौ । निस्सारे ॥ नसारोऽस्य ॥

असि । । । त्वमित्यर्थे ॥ यथा वेत्सि - ॥ वाक्यालङ्कारे ॥

असिः । पुं । निस्त्रिंशे । खड्गे ॥ स्त्री । नदीभेदे ॥ अस्यते असुक्षेपणे अस तिवा असदीप्तौ । सर्वधातुभ्यइन् ॥ खनिकष्यज्यसिवसीत्यादिनावा ॥

असिकम् । न । अधरचिबुकयोर्मध्यभागे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

असिकारः । पुं । खड्गकारिणि ॥ असिंकरोति । कृञ॰ । कर्मण्यण् ॥

असिक्निका । स्त्री । असिक्न्याम् । दूत्याम् ॥ यथा । गतोगणस्तूर्णमसिक्निकानामिति ॥

असिक्नी । स्त्री । अवृद्धान्तःपुरचारिप्रेष्यायाम् । नदीभेदे । सिनोति

। षिञ्बन्धने । अञ्जिष्टघिभ्यःक्तः । यद्वा । सोयतेस्म । क्तः । सिता शुक्लके शातद्भिन्ना । छन्दसिक्लमेकइतितस्य क्त । नान्तत्वान्ङीप् । वीरिण्याम् ।
असिगण्डः । पुं । क्षुद्रोपधाने ॥ छोटा सिरहाना इति भाषा ।
असितः । पुं । श्यामवर्णे । व्यासशिष्ये ऋषिविशेषे । शनौ ॥ कृष्णपक्षे । न । कासीसे । त्रि ० कृष्णवर्णवति । श्यामले ॥ सितविरुद्धोऽसितः ।
असितकतः । पुं । मधुनालिकेरे ॥
असिता । स्त्री । खङ्गतायाम् । नील्याम् । असितपलितयोः प्रतिषेधात् वर्णादनुदात्तादितिङीष् तकारस्यन कारादेशश्चन ।
असिताश्मशेखर । पुं । बुद्धभेदे ।
असितार्चिः । पुं । अनले । असिताश्चिर्ज्वालास्य ।
असिताङ्गः । पुं । नीलाङ्गी ।
असितोत्पलम् । न । नीलोत्पले ।
असिदंष्ट्रः । पुं । मकराख्ययादसि ।
असिद्धः । पुं । हेत्वाभासविशेषे । सच त्रिविधः । आश्रयासिद्धः स्वरूपासिद्धः व्याप्यत्वासिद्धश्चेति । त्रि । अपक्के । असिद्धे । सिद्धिरहिते ।
असिद्धि. । स्त्री । अनिष्पत्तौ । न्यायमतेसात्रिविधा । यथासिद्धिः १ यथा काञ्चनमयपर्वतो वह्निमानित्यादि. । स्वरूपासिद्धि. २ यथापर्वत काञ्चनमयवह्निमानित्यादि । व्याप्यत्वासिद्धि ३ यथा पर्वतोवह्निमान् ज्वलत्वात् इत्यादि ।
असिधाराव्रतम् । न । असिधाराचङ्क्रमणतुल्ये व्रतविशेषे । यथा । युवायुवत्यासार्द्धं यन्मुग्धाभर्तृवदाचरेत । अन्तर्निवृत्तसङ्गःस्यादसिधाराव्रतंहि तदितियादव' ।
असिधाव । पुं । शस्त्राणांमार्जके । असिंधावति । धावु० । कर्मण्यण् ।
असिधावकः । पुं । शस्त्रमार्जके । असिं धावति । धावुगतिशुद्ध्योः । कर्मण्यण् । स्वार्थेकन् । ण्वुल्वा ।
असिधेनु. । स्त्री । छुरिकायाम् । असेर्धेनुरिव । स्वल्पखड्गे ।
असिधेनुका । स्त्री । छुरिकायाम् । असेर्धेनुकेव ।
असिपत्र. । पुं । इक्षौ । नरकान्तरे ॥ खड्गकोषे । गुण्डनामकतृणे । यस्यकन्दः कशेरुः । खड्गाकारदलेवृक्षविशेषे । आसन्नघातके ।
असिपत्रकः । पुं । इक्षौ ।
असिपत्रवनम् । न । नरकविशेषे । यथा । यस्त्विहवै निजवेदपथादनापद्यपगतः पाखण्डञ्चोपगतस्तमसिप-

न्वनं प्रवेश्य कश्यामप्रहरन्ति तत्रासा वितस्ततोधावमान उभयतोधारैस्ता लवनासिपत्रैश्छि द्यमानसर्वाङ्गोहाह तोस्मीति परमयावेदनया मूर्च्छि त' पदेपदेनिपततिस्वधर्मत्यागीपा-खण्डानुगतंफलंभुङ्क्ते । इति ॥

असिपत्रव्रतम । न । अश्वमेधेक्रियमा णे व्रतविशेषे ॥

असिपुच्छः । पुं । शिशुमारे ॥

असिपुत्रिका । स्त्री । छुरिकायाम् । असेः पुत्रीव । स्वार्थेकन ॥

असिपुत्री । स्त्री । छुरिकायाम् । असेः पुत्रीव ॥

असिमेदः । पुं । विट्खदिरे ॥

असिहेतिः । त्रि । खड्गयोद्धरि । नैस्त्रिं शिके । असिर्हेतिर्यस्य ॥

असु । न । चित्ते । तापे । असवः पुं भूम्नि प्राणादिपञ्चवायुषु । असन्ते अस्यन्तिवा । असुचेपणे । अस्यन्तेआ भिरितिवा । असदीप्तौ । भृसृस्नि हीत्यादिनाउ' । भूम्निप्राणः प्राणा दिपञ्चवाच्यआध्यात्मिकएकएव । प्रा णापानाद्यास्तुपञ्चतस्यवृत्तयः । एवं चैकस्मिन्नपितत्र नैयायिकोक्तमदादा ह्रस्यादिवदकुर्वन्तनसेवप्रयोज्यम प्रा णोनामवायुरित्यादौतद्वृत्त्यर्थं. प्राणा शब्द इतिनैकमर्थंविरुध्यते ॥

असुखम् । न । दुःखे ॥

असुतरः । त्रि । दुस्तरे । सुतरोनभव तीत्यसुतरः ॥

असुधारणम् । न । जीवने ॥ असूनां धारणम ॥

असुरः । पु । दैतेये । विरोचनादौ । सुरत्यजि । राहुग्रहे । सूर्ये । अ स्यतिक्षिपतिदेवान् असुर. । असेरु रन्नित्युरन् । वा । नसुरः असुरः । नञोतितत्पुरुषः । अविद्यमानासु रायस्येतिवा ॥ असुष्वरमतेवा । अ न्येभ्योमोतिडः । सुरेभ्योऽन्यो' ॥

असुररिपुः । पुं । विष्णौ । कृष्णे । सुराणांरिपुः ॥

असुरा । स्त्री । रात्रौ । राशौ ॥

असुराह्वम् । न । कांस्येइतिहेमचन्द्रः ॥

असुर्यः । त्रि । असुरेभ्योहिते । गवा दित्वाद्यत् ॥ असुराणांस्वभूरितो

असुहृद' । पुं । शत्रौ । असून्जुहाति । चूर्मेरनो । सम्पूर्विपेत्यादिनाक्किप् ॥

असूयकः । त्रि । असूयाशीले । अ सूयति । तन्वीलादिः । असुउपता पे । निन्दहिंसेतिवुञ् ॥

असूया । स्त्री । परगुणेषुदोषावि ष्कारे । अर्थदानादिगुणेषुदम्भिक त्वादिरूपदोषारोपणे ॥ असूयनम । असूञ् असूयायाम् । कण्ड्वादि

त्वाद्यकिप्रत्ययादित्य. ॥ दोषे ॥ वधूरसृक्कुटिलं ददर्शेति रघु' ॥

असूयु । पुं । समत्सरे ॥ असूयति । असूञ् उपतापे । मृगय्वादित्वात् साधु' ॥

असूर्चशम् । न । अनादरे ॥ सूर्चं आदरे सरेफः । तस्माल्ल्युट् । नञ्समासः ॥

असूर्य्यम्पश्य. । त्रि । सूर्यादर्शिनि ॥ गुप्तिपरेप्रयोगोयम । यदपरिहार्यदर्शनं सूर्यमपिनपश्यतीति सत्यपिसूर्यदर्शने प्रयोगोभवति ॥ यदातुसूर्यदर्शनाभावमात्रम् सूर्येतरस्य चन्द्रादर्शनं वाविवक्षितं तदाखशून्भव ।न अनभिधानात् ॥ सूर्यंनपश्यति । दृशिर्प्रेक्षणे । पाघ्राध्मेतिपश्यादेशः ॥

असृक्करः । पुं । शरीरस्थरसधातौ ॥

असृक्पः । पुं । स्त्री । राक्षसे ॥ असृक् पिबति । पा° । क. ॥

असृग्दर । पुं । प्रदरे । फलितयोनेरक्तादिधातुक्षरणे ॥

असृग्धरा । स्त्री । त्वचि ॥ असृजोरक्तस्यधरा ॥

असृक् । न । रक्ते ॥ ताम्बूलरसादिवन्मध्येनसृज्यते सृजत्वात् । नसृजति वा । सृजविसर्गे । क्विप् । क्विन् प्रत्ययस्येतिकुत्वम् । क्विनप्रत्ययोयस्मादिति बहुव्रीहि. । ऋत्विगित्यादिनाहिसृजेः क्विन्विहितः ॥ यद्वा । अस्यते । असुक्षेपणे । बाहुलकात् ऋज ॥ कुङ्कुमे ॥ षोडशयोगे ॥ तज्जातस्यफल यथा । धनीकुरूप' कुमति 'दुरात्माविदेशगामीरुधिरप्रकोप' । महाप्रलोभी पुरुषोवलीयानसृक्-प्रसूतौकिलयस्यजन्तोरिति ॥

असृष्टान्नम् । त्रि । अन्नदानहीने ॥ असृष्टमन्नंयेनसः ॥

असेचनकम् । त्रि । अत्यन्तप्रियदर्शने । यस्यदर्शनान्नतृप्यति किन्तुपुन. पुनर्दिदृक्षतएवतस्मिन् ॥ तदसेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्यदर्शनात् । नसिच्यतेमनोऽत्र । षिचक्षरणे । करणेति ल्युट् । सञ्ज्ञायांकन ॥

असौम्यस्वरः । त्रि । मन्दस्वरे । अस्वरे ॥ असौम्योरूक्ष.स्वरोयस्यस ॥

अस्खलितः । त्रि । अप्रतिहते ॥

अस्त । पु । चरमाचले । पश्चिमाचले ॥ लग्नात्सप्तमे ॥ त्रि । क्षिप्ते । अवसिते । अवसानप्राप्ते । निम्लोचने ॥ अस्यतेस्म । असुक्षेपणे । क्तः ॥ यद्वा । असतिस्म । असदीप्तौ । गत्यर्थेतिक्तः ॥ न । मृत्यौ । कालधर्मे ॥

अस्तक. । पुं । निर्वाणे । मोक्षे ॥

अस्ततन्द्रि. । त्रि । अनलसे । अस्तातन्द्रिरालस्यं यस्य ॥

अस्तम् । ा । विनाशे । अदर्शने ॥ असनम् । असुक्षेपणे । तम् प्रत्ययः ॥

अस्तमनम् । न । सूर्यादर्शने । यथा । तिरोधानञ्चयच्चेतितद्वेवास्तमनंरवे । नैवास्तमनमर्कस्य नोदय' सर्वदा-सत' । इति ॥

अस्तमयः । पुं । प्रलये ॥ ग्रहाणांसूर्य प्रत्यासत्तौ । यथा । रविणास्तमयोयोगोवियोगस्तूदयोभवेदिति ॥

अस्तमित' । त्रि । दरिद्रे ॥

अस्तसन्ध्या । स्त्री । अर्द्धार्कास्तमनान् घटिकात्रयसम्मितेकाले ॥

अस्ताचल. । पुं । चरमाद्रौ । पश्चिमपर्वते ॥ अस्तश्चासावचलश्च ॥

अस्ताद्रि । पुं । चरमाचले ।

अस्ति । ा । विद्यमाने । सत्त्वे । यथा । अतिथिर्बालकश्चैव राजाभार्यातथैव च । अस्तिनास्तिनजानन्ति देहिदेहिपुनःपुनरिति । असनम् । असदीसौ । क्तिचतिर्वा ॥

अस्तिमान् । त्रि । धनिनि ॥

अस्तु । ा । अभ्यनुज्ञाने । अङ्गीकारे । असूयायाम् ॥ पीडायाम् । प्रतिक्षेपे ॥ प्रशंसायाम् । प्रकर्षे ॥ सत्त्वणे ॥ असमप्रत्यर्थे । असूयापूर्वकाङ्गीकारे । असति अस्यतिवा । तुन् ॥

अस्तुङ्कारः । पुं । अभ्युपगमे ॥ अस्तुकरोति । कर्मण्यण् । अस्तुइतितिङन्तप्रतिरूपकमव्ययम् । अस्त्वोश्चेतिवक्तव्यमितिमुम ॥

अस्तेयम् । न । अदत्तादानरूपपरस्वहरणादिराहित्ये ॥

अस्त्यानम् । न । निन्दायाम् । भर्त्सने ॥

अस्त्रम् । न । क्षेप्यशरादौ । प्रहरणे ॥ चापे । करवाले । अस्यते । असुक्षेपणे । असतिवा । असदीप्तौ । सर्वधातुभ्यष्ट्रन् ।

अस्त्रकण्टकः । पुं । बाणे ॥

अस्त्रगृहम् । न । आयुधागारे ॥

अस्त्रचिकित्सकः । पुं । शस्त्रवैद्ये

अस्त्रजित् । पु । कपाटवक्षे । कपोतवक्षस्ये ।

अस्त्रमार्जः । पुं । अस्त्रसंस्कारिणि । शस्त्रमार्जे । शाणाजीवे । असिधावे ।

अस्त्रसायकः । पुं । नाराचास्त्रे । समुद्यलोहमयबाणे ।

अस्त्रागार' । पुं । अस्त्ररक्षणगृहे ।

अस्त्री । त्रि । धन्विनि । अस्त्रंधनुरस्यास्ति । अतइनि. ॥

अस्थागम् । त्रि । अतलस्पृशि । अगाधे ।

अस्थाघम । त्रि । अगाधे ।

अस्थानम् । त्रि । अतलस्पर्शे । न । म

न्दस्थले । अनधिकारिणि । अस्थाने हिस्थाप्यमानेचवाचामितिवच्यम

अस्थायम । त्रि । अगाधे ।

अस्थायी । त्रि। नश्वरे । स्थितिरहिते ॥

अस्थारम् । न । गभीरे ।

अस्थावरम । त्रि । स्थावरेतरद्रव्ये । जङ्गमवस्तुनि ।

अस्थि । न । कीकसे । वीजे । अस्यते । असुक्षेपणे । असिसञ्जिभ्यांक्थिन् । अस्थीनि तरुण नलक कपालरुचकव लयभेदात् पञ्चविधानिभवन्तीतिवैद्याः ॥

स्थिकम् । न । अस्थिनि । स्वार्थे यावात्कन् ।

स्थिकृत् । पुं । शरीरस्थमेदोधातौ ।

अस्थिज । पुं । मज्जनि ।

अस्थितुण्डः । पुं । स्त्री । पक्षिणि ।

अस्थिधन्वा । पुं । शम्भौ ।

अस्थिपञ्जरः । पुं । शरीरास्थिसमूहे । करङ्के ।

अस्थिभक्षः । पुं । स्त्री । पक्षिभेदे । कुक्कुरे ।

अस्थिभुक । पुं । स्त्री । कुक्कुरे । शुनि ।

अस्थिमाली । पुं । रुद्रे । अस्थ्नांमालासास्ति अस्य । व्रीह्यादित्वादिनिः ॥

अस्थिरः । त्रि । चञ्चले । सङ्कसुके । न स्थिरः ॥

अस्थिविग्रह. । पुं । भृङ्गरीटे । भृङ्गिनामकशिवद्वारपाले ॥

अस्थिशृङ्खला । स्त्री । ग्रन्थिमति । अस्थिसंहारे ।

अस्थिसंहारः । पुं । हस्तिशुण्डाम । ग्रन्थिमति । यथा । अस्थिसंहारकःप्रोक्तोवातश्लेष्महरोऽस्थियुक् । उष्णःसरः कृमिघ्नश्चदुर्नामघ्नोक्षिरोगजित् ॥ रूक्ष. स्वादुर्लघुर्वृष्यः पाचनःपित्तलःस्मृतः । काण्डत्वकविरहितमस्थिशृङ्खलायामा षाष्टं विदलमकञ्चुकृत दर्दुम । सम्पिष्टसुतनुततस्तिलस्य तैलेसम्पक्ववटकमतीववातहारि ।

अस्थिसंहारिका । स्त्री । ग्रन्थिमति । हाडजोडा इतिख्यातौषधौ ।

अस्थिसंहारी । पुं । अस्थिसंहारके ग्रन्थिमति ।

अस्थिसारः । पुं । मज्जायाम् ।

अस्थिस्नेहसञ्चक. । मज्जनि । मज्जायाम ।

अस्नाविरम् । त्रि । शिरावर्जिते । स्थूलशरीरवर्जिते । अविद्यमानाःस्नावाः शिरा यस्मिन ।

अस्निग्धदारु । न । देवदारुप्रभेदे । देवकाष्ठे ।

अस्पर्शः । त्रि । स्पर्शाभाववति । सम्बन्धशून्ये ।

अस्पर्शयोगः। पुं। ब्रह्मस्वभावे ॥ स्पर्शं नंस्पर्शं सम्बन्धोनविद्यतेयस्ययोग-स्य केनचितकदाचिदपिस. ॥ यथाहुः। अस्पर्शयोगोवैनामसर्वसत्त्व-सुखोहितः। अविवादोऽविरुद्धश्चदे-शितस्तंनमाम्यहमिति ॥ अद्वैतानुभवोऽस्पर्शः। सएवयोगो जीवस्य ब्रह्मभावेनयोजनात्। सर्व सम्बन्धाख्य स्पर्शवर्जितत्वात् अस्पर्श योगः ॥

अस्पष्टम्। त्रि। अव्यक्ते ॥ नस्पष्टम् ॥

अस्फुटम्। त्रि। अस्पष्टे ॥ नस्फुटम् ॥ सर्वे शब्दोवर्णात्मकएव व्यञ्जकविशेषाभावादस्फुट. ॥

अस्फुटवाक्। त्रि। अव्यक्तवाचि। लोहले ॥ नस्फुटावागस्य ॥

अस्मत्। त्रि। अस्मच्छब्दस्यप्रथमैकवचने। देहत्रयविशिष्टत्वेनाशुद्धेजीवे। कर्त्तासुखीत्याद्यिथवह्नियमाणे ॥ अहंशब्दप्रत्ययालम्बने। अहंप्रत्यय वेद्ये। अहंशब्दप्रत्ययालम्बनत्वेनप्रत्यक्षे। सर्वदोपलब्धिस्वरूपे प्रत्यगात्मनि ॥ अस्ति। असभुवि। युष्मिम्यामहिक् ॥

अस्मि। ।। अहमित्यर्थे ॥ यथा। दासेकृतागसिभवत्युचितः प्रभूणां पादप्रहार इतिसुन्दरिनास्मिदूये इति ॥ अस्मीत्यस्मदर्थानुवादेहमर्थेपी

तिगणव्याख्यानम् ॥

अस्मिता। स्त्री। दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतायाम् ॥ बुद्धिपुरुषयोरभेदाभिमाने ॥ मोहे ॥ सचाष्टविधः। देवादिरष्टविधमैश्वर्यमासाद्या ऽमृताभिमानिनो ऽणिमादिकमात्मीयंशाश्वतमभिमन्यन्त इति। सोय मस्मितामोहोऽष्टविधैश्वर्यविषयत्वादष्टविधः ॥

अस्रः। पुं। कोणे ॥ कचे ॥ न। अश्रुणि ॥ शोणिते ॥ अस्यते। असुक्षेपणे। बाहुलकाद्रः ॥

अस्रकण्ठः। पुं। शरे ॥ अस्रः कण्ठे र

अस्रखदिरः। पुं। रक्तखदिरवृक्षे

अस्रजम्। न। मांसे ॥

अस्रपः। पु। राक्षसे ॥ अस्रं र पिबति। पा०। आतोनुपेतिकः। । मूलर्क्षे ॥

अस्रपत्रकः। पुं। भिण्डायाम। भिण्डीतिप्रसिद्धशाके ॥

अस्रपा। स्त्री। जलोकायाम ॥ अस्रं पिबति। पा०। कः। टाप ॥

अस्रफला। स्त्री। सल्लकीवृक्षे ॥

अस्रबिन्दुच्छदा। स्त्री। लक्ष्मणानामकन्दे ॥

अस्रमातृका। स्त्री। शरीररसे ॥

अस्ररोधिनी। स्त्री। लज्जालुलता-

याम ॥

अस्त्राक्षेकः । पुं । श्वेततुलस्याम् ॥

अस्त्रीत्रयं चि । अस्वपति । अस्त्रोत्थस्य ।

सुखादित्वादिनिः ॥

अस्तु । न । नेत्रजले ॥ अस्यति । असु क्षेपणे । अश्वादिषुदन्त्यमध्यस्यापि

पाठात साधु ॥

अस्वच्छन्द. । त्रि । अतन्त्रे । अधीने ॥ नस्व. छन्दोऽस्य ॥

अस्वन्तम । न । अशुभे ॥ चुल्याम् ॥ म रणे ॥ अनवधौ ॥ क्षेपे ॥ असुनाम-

न्तोऽत्र ॥

न्तर: । त्रि । अत्यन्तदुरन्ते ॥

: । पुं । देवतायाम् ॥ त्रि । अनि

॥ अविद्यमानः स्वप्नोनिद्राअस्येति

विग्रहः ॥

अस्वर. । त्रि । असौम्यस्वरे । काका दिवद्रूक्षस्वरे ॥ अप्रशस्तः स्वरोयस्य ॥

अस्वर्ग्यम् । त्रि । स्वर्गहेतुधर्मविरोधि नि ॥ अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टंधर्ममप्या

चरेन्नतु ॥ स्वर्गायहितंनभवतीति ॥

अस्वादुकण्टकः । पु । गोक्षुरके ॥ अ स्वादुः कण्टकोयस्य सः ॥

अस्वाध्यायः । पुं । विधिपूर्वकवेदाध्यय नवर्जिते । निराकृतौ ॥ नस्वाध्यायो

वेदाध्ययनमस्य ॥

अस्वामिकम । त्रि । स्वामिरहितेवस्तु



नि ॥ यथा । एतञ्चाग्रदानंस्वभूमाव-

स्वामिकायाञ्चनदद्यात् । अस्वामि

कान्यरण्यम: । अटव्य:पर्वता:पुण्या

स्तथातीर्थानियानिच । सर्वाण्यस्वा-

मिकान्याहुर्नहितेषुपरिग्रह' ॥ पु

ण्याइतिविशेषणात् अटव्योनैमिषा

द्या. । पर्वताहिमालयाद्य: । नद्यो

गङ्गाद्याः । तीर्थानिपुरुषोत्तमादि

क्षेत्राणि । वाराणस्याद्यायतनानिच ।

। स्वाम्यभावेहेतुमाह नहितेष्विति ।

इतिश्राद्धतत्त्वम् ॥

अस्वैरी । पुं । परतन्त्रे ॥ नस्वैरी ॥

अह । I । प्रशंसायाम् ॥ क्षेपणे ॥ नि योगे ॥ विनिग्रहे ॥ आचारातिक्रमे

॥ पूजायाम् ॥

अहंयुः । त्रि । अहङ्कारिणि ॥ अहमस्या स्ति । अहमितिमान्तमव्ययम् । अ

हंशुभमोर्युस् ॥

अहङ्कार. । पुं । अहमितिकरणे ॥ ग र्वे ॥ अहङ्कारस्तुसर्वेषां पापबीजम

मङ्गलम् । ब्रह्माण्डेषुचसर्वेषां गर्वप र्यन्तमुन्नतिः ॥ सचद्विविधः । विशे

षरूप:सामान्यरूपश्चेति । तथाय

महमेतस्य पुत्रइत्येवव्यक्तमभिमन्य

मानोविशेषरूपोव्यष्ट्यहङ्कार. । अ

स्मीत्येतावन्मात्रमभिमन्यमान' सा

मान्यरूपः समष्ट्यहङ्कारः । सचहि

रण्यगर्भोमहान् आत्मेतिच सर्वानु स्यूतत्वादुच्यते । अयमेवपराहन्ता रूपोवृहदारण्यके योवेदाहं ब्रह्मा स्मीतिवृत्तिरूपउक्त. ॥ अहमभिमा नरूपोयोहङ्कार' ससर्नसाधारण ॥ आरोपितैर्गुणैरात्मनोमहत्त्वाऽभि- माने ॥ अहमेव श्रेष्ठइतिदुरभिमाने ॥ महाकुलप्रसूतोहं महतांशिष्यो ऽतिविरक्तोस्मि नास्ति द्वितीयोम- त्समइत्यभिमाने ॥ आत्मश्लाघना भावेपि मनसि प्रादुर्भूते हंसर्वोत्कृष्ट इतिगर्वे ॥ महाभूतकारणभूतेऽभि मानलक्षणे ॥ अभिमानात्मिकाया मन्तःकरणवृत्तौ ॥ कोनाममानवो- लोकेदेवोवादानवोपिवा । अहङ्कार जयंकृत्वासर्वदासुखभाग्भवेत् ॥ अ हङ्कारस्य मनस्यन्तर्भावः । तस्यसङ्क- ल्पात्मकत्वाविशेषात् । तथाहि मन सोवाह्य आभ्यन्तरश्च यथायोगंस- र्वोविषयः । अहङ्कारस्यतु अनात्मो परक्तआत्मैवेति अतोविषयभेदेपिस्व रूपाभेदायुक्तोन्तर्भावः ॥ पुराणमते सात्विकराजसतामसभेदात्सत्रिवि धः । तत्रसात्विकाहङ्कारात् इन्द्रिया धिष्ठातारोदेवा मनश्चजातम् । रा जसाद्दशेन्द्रियाणिजातानि । ताम सात्सूक्ष्मपञ्चभूतानिजातानीति॥

यथोक्तंविष्णुपुराणे । वैकारिकस्तैज सश्च भूतादिश्चैवतामसः । त्रिवि- धोयमहङ्कारोमहतत्वादजायते- ति ॥ वैकारिकःसात्विकाहङ्कारः । तैजसो राजसइन्द्रियादिश्च । भूतादि स्तामसः ॥

अहङ्कारवान । त्रि । अहंयौ ॥ अहङ्का रोस्यास्ति । मतुप् ॥

अहङ्कारी । त्रि । अहङ्कारयुक्ते । अभि- मानिनि ॥

अहङ्कृतः त्रि । अहङ्कारवति ॥

अहङ्कृतिः । स्त्री । गर्वे ॥ स्वरूपे ॥

अहतम् । न । नूतनांशुके ॥ यथा

षट्ट्रीतंनवश्वेतं सदशंयन्नधारि अहतंतंविजानीयात् पावनंसर्वक

स्विति ॥ त्रि । अनाहते । अनुपहते ॥

अहः । न । दिवसे ॥ नजहाति । ओहा

क्त्यागे । नञिजहातेरितिकनिन् । रोमुपीतिरः ॥

अहन्ता । स्त्री । अहम्भावे ॥

अहन्धीः । पुं । देहादावनात्मन्यात्म- वुद्धौ ॥

अहम् । । । अहङ्कारार्थे । विभक्तिप्रति रूपकमव्ययम् ॥

अहमहमिका । स्त्री । परस्पराहङ्कारे ॥

अहमहंशब्दोऽस्यांच । वीप्सायांद्वित्व म् । ब्रीह्यादित्वाट्ठन् । अनित्यत्वा

द्व्ययानामिति नटिलोपः ॥

अहमुत्तर । पुं । अभिमानाधिक्ययुक्ते ॥ अहमहंभावः अहंकार अभिमानउत्तरोऽधिकोयस्य ॥

अहम्पूर्विका । स्त्री । अभिमानविशेषे । अहम्पूर्वमहम्पूर्वमितियोधानांधावनक्रियायाम् ॥ अहम्पूर्व महम्पूर्वमित्यहम्पूर्विकास्त्रीयामित्युक्तेः ॥ अहम्पूर्वम् । सुप्सुपेतिसमासः । स्वार्थेकन् ॥ अहम्पूर्वमिर्त्यक्तियस्याम् । ठन्वा ॥

अहम्मतिः । स्त्री । अज्ञाने । अविद्यायाम् ॥ अहमितिविभक्तिप्रतिरूपकमव्ययमहङ्कारार्थकम् । अहम्मअस्वप्नामतिः ॥

...गणः । पुं । मासे ॥ अह्नां गणः ॥ ...ग्रहार्थां मध्यादिज्ञानार्थं श्वेतवराहकल्पावधिरहर्पष्व्यवधिप्रहस्पसिद्धान्तोक्तकल्पावधिकल्पाद्यब्दावधिवा इष्टकालपर्यन्तं परिगणिते दिनसमूहे । दिनपिण्डे । खुन्दे ॥

अहर्ज्जरः । पुं । संवत्सरे ॥ वत्सरोहि अहोभिःपरिवर्त्तमानो लोकान् जरयतीति अहानिवाऽस्मिन् जीर्यन्त्यन्तर्भवन्तीतिभाष्यकृतांव्याख्यानात् । औपनिषदोय प्रयोगः ॥

अहर्दिवम् । न । अहन्यहनि ॥ अहनि चदिवाच । अचतुरेत्यादिनावीप्सा

यांद्वन्द्वोऽचप्रत्ययश्च ॥

अहर्पतिः । पुं । सूर्ये ॥ अह्नःपतिः । अहरादीनांपत्यादिषुवारेफः ॥ पक्षे अहःपतिः ॥

अहर्बान्धवः । पुं । दिवाकरे ॥

अहर्मणिः । पुं । भास्करे ॥ अह्नोमणिरिव ॥ अर्कवृक्षे ॥

अहर्मुखम् । न । प्रत्यूषे ॥ अह्नोमुखम् ॥ रोऽसुपीतिरः ॥

अहल्यम् । त्रि । हलानाकृष्टक्षेत्रे ॥ देशभेदे ॥

अहल्या । स्त्री । गौतमर्षिपत्न्याम् ॥ इयम्पञ्चकन्यास्वेका ॥ अप्सरोभेदे ॥

अहस्करः । पुं । भास्करे ॥ अहःकरोति । दिवाविभेतिटः । कस्कादित्वात्सः ॥

अहस्पतिः । पुं । यदाक्षयमासोभवति तदाक्षयमासस्यपूर्वोत्तरावधिमासौ भवतः तयोः परस्मिन्नधिमासे ॥

अहह । ा । अद्भुते ॥ खेदे । परिक्लेशे ॥ प्रकर्षे ॥ सम्बोधने ॥ अहंजहातिजिहीतेवा । ओहाक्त्यागेओहाङ् गतौ । अन्येभ्योपीतिडः । पृषोदरादित्वान्मलोपः ॥ भावेवाप्रत्ययः ॥

अहहा । ा । अहहेत्यस्यार्थे पु । अहंजहातिजिहीतेवा । ओहाक्त्यागेओहाङ् गतौ । क्विप् । पृषोदरादित्वान्मलोपः ॥ भावेवाप्रत्ययः ॥

अहार्य्य'। पुं। पर्वते ॥ त्रि। हर्त्तुमशक्ये ॥ ह्रियते। हृञ्हरणे। ऋहलोर्ण्यत। नञ्हार्य्यः ॥ अभेद्ये ॥

अहि। पुं। वृत्रासुरे ॥ सर्पे ॥ सूर्य्ये ॥ सीसके ॥ राहौ ॥ पथिके ॥ खले ॥ यथा ॥ विषधरतोप्यतिविषमः खलइतिनमृषावदन्तिविद्वांस'। यदहिर्नकुलद्वेषीस्वकुलद्वेषीपुन पिशुन इति ॥ वप्रे ॥ अश्लेषानक्षत्रे ॥ अष्टमे ॥ पञ्चमात्रिकस्यषष्ठे ।ऽऽ। प्रभेदे ॥ आहन्ति। हनहिंसागत्योः। आङिश्रिहनिभ्यांह्रस्वश्चेतीण्। सचडित। डित्वाट्टिलोप.। आङोह्रस्वश्च ॥

अहिंसा। स्त्री। वाङ्मनःकायैः परपीडावर्ज्जने। प्राणिनांपीडायानिवृत्तौ। अशास्त्रीयप्राणिपीडनाभावे ॥ यथाहमनु'। यावेदविहिताहिंसानियतास्मिंश्चराचरे। अहिंसामेवतांविद्या द्वेदाद्धर्मो हिनिर्बभाविति ॥ हिंसनम् हिंसा। नहिंसा ॥

अहिंस्रा। स्त्री। ओषधिभेदे। कुलेखाडा इतिगौडभाषा। कुलिकद्रुमे ॥ हिंस्राख्यौषधिप्रभेदे ॥

अहिकः। पुं। भुवर्च्चे ॥

अहिका। स्त्री। शाल्मलिद्रुमे ॥

अहिकान्तः। पु। समीरे ॥ अहेः कान्तः ॥

अहिगणः। पुं। पञ्चमात्रिकस्यसप्तमऽ।ऽ। प्रभेदे ॥ सर्पाणांसमूहे ॥

अहिच्छत्रः। पुं। देशविशेषे। प्रत्यग्रथे॥ मेषशृङ्गीवृक्षे ॥

अहिच्छत्रा। स्त्री। जादेशमसिद्ध पुरीविशेषे ति प्रसिद्धायां शर्करायाम्

अहिजित्। पु । शक्रे ॥ अहिंसर्पमिन्द्रंवाऽजैषीत्। जिजये। क्विप ॥

अहिजिह्वा। स्त्री। नागजिह्वाख्यलतायाम् ॥

अहित'। त्रि। शत्रौ ॥ अपथ्ये ॥ नहितमस्मात् ॥

अहितुण्डिक'। पुं। व्यालग्राहिणि। भिक्षार्थसर्पखेलके। संपेला तम। ख्याते ॥ अहेस्तुण्डंमुखम् तेन दीव्यतीतिठक्। संज्ञापूर्वकत्त्वाद्वृद्धा भाव ॥

अहिद्विट्। पु। गरुडे ॥ शक्रे ॥ मयूरे ॥ नकुले ॥ हरौ ॥ अहिंद्वेष्टि। द्विष०। क्विप् ॥

अहिनकुलिका। स्त्री। अहिनकुलयोवैरे ॥ अहिनकुलयोवैरम्। द्वन्द्वाद्वुन वैरमैथुनिकयोरितिवुन् ॥

अहिनिर्ल्वयनी। स्त्री। सर्पनिर्मोके। सर्पत्वचि ॥ अहिर्निलीयतेऽस्यां सा अहिनिर्ल्वयनीति व्याख्यातार' ॥

अहिपतिः। पुं। वासुकिनागे ॥ शेषना-

गे । अहीनांपतिः

अहिपुत्रक' । पुं । तरालो । नौकाज लोत्सारके ॥

अहिपूतनः । पुं । क्षुद्ररोगविशेषे ॥

अहिफेनम् । न । आफूके । अफीमइ तिविश्रुते ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

अहिब्रध्नः । पुं । रुद्रविशेषे । शिवे ॥

अहिब्रध्नदेवता । स्त्री । उत्तरभाद्रपदा याम् । अहिब्रध्नोदेवताअस्याः ॥

अहिभयम् । न । राज्ञांस्वपक्षप्रभवेभये ॥ अहिरिवगृहस्थत्वात् आहताका रत्वाच्च स्वपक्षएवाहिः । अहेर्भ यम् । निजोथमित्रस्वसमाश्रितश्च- न्यतः कार्यसमुद्भवश्च । भृत्या दीनोविविधोपचारैः पक्षंबुधा.स विषंवदन्ति । सर्पभये ॥

अहिभयदा । स्त्री । भूम्यामलक्याम् ॥

अहिभुक् । पुं । गरुडे ॥ बर्हिणि ॥ ना कुल्याम् ॥ गन्धनाकुल्याम ॥ अहिं भुङ्क्ते । भुजअभ्यवहारे । क्विप् ॥

अहिमः । त्रि । शीतस्पर्शशून्ये ॥

अहिमर्द्दनी । स्त्री । गन्धनाकुलीनाम कन्दे ॥

अहिमारः । पुं । } अरिमेदकवृक्षे ॥
अहिमेदक' । पुं । }

अहिलता । स्त्री । नागवल्याम् । अहि लोकस्यपातालस्यलता । शाकपार्थि वादिः ॥ गन्धनाकुल्याम् ॥

अहीनः । पुं । अहर्गणसाध्यसुत्याकक्र तौ । अह्नांसमूहः । अह्न ख क्रतौ । अहीनयजनमशुचिकरमितिश्रुतिः ॥ अहिस्वामिनि ॥

अहीरणिः । पुं । द्विवक्त्राहौ । द्विमुख सर्पे ॥ इति त्रिकाण्डशेषः ॥

अहुतः । पुं । ब्रह्मयज्ञाख्येजपे ॥

अहे । । । क्षेपे ॥ वियोगे ॥

अहेरु' । स्त्री । शतमूल्याम् ॥ नहिनो ति । हिगतौ । बाहुलकाद्रुः ॥

अहैतुकः । त्रि । फलाभिसन्धानरहिते ॥

अहो । । । धिगर्थे ॥ शोके ॥ करुणा र्थे ॥ विषादे ॥ सम्बोधने ॥ प्रशंसा याम् ॥ विस्मये ॥ पादपूरणे ॥ असू यायाम् ॥ वितर्के ॥ अहानम् । ओ हाङ्गतौ । डोप्रत्ययः ॥

अहोरात्रः । पुं । दिनरात्रिमात्रात्मके काले । सूर्योदयद्वयपरिच्छिन्ने त्रिं शन्मुहूर्त्तात्मकेकाले । सच (मानुषा होरात्रः) षष्टिघटिकाभिर्भवति । यथा । अहोरात्रेविभजतेसूर्योमा नुषदैविके । रात्रिः स्वप्नायभूतानां चेष्टायैकर्मणामह इति ॥ मतान्तरे तुचतुर्विंशतिर्होराभिर्मानुषाहोरा त्रोभवति । यथोक्तवह्निपुराणेगणभे दनामाध्याये । चतुर्विंशतिवेलाभि

रहोरात्रंप्रचक्षते । पश्चिमाद्दृहरा न्नाह्निहोरात्राणांविद्यतेक्रमइति ॥ (पै त्राहोरात्र:) पैत्र्येरात्र्यहनीमासःप्र विभागस्तुपक्षयोः । कर्मचेष्टास्वहः कृष्णःशुक्लः स्वप्नायशर्वरी ॥ (दैवा होरात्र.) दैवेरात्र्यहनीवर्षंप्रविभा गस्तयोःपुन. । अहस्तत्रोदगयनंरा त्रिःस्याद्दक्षिणायनम् ॥ (प्राजापत्या होरात्र:) युगसहस्राभ्यांप्राजापत्य मेकमहोरात्रम् ॥ अहश्चरात्रिश्चत यो. समाहार' । रात्राह्नाहा: पुंसि । अह' सर्वैकदेशेत्यच् समासान्तः ॥

अहोवत । I । अनुकम्पायाम् ॥ खेदे ॥ सम्बोधने ॥ अहोच वतच ॥

अहोही । I । चित्रे ॥ अहोच हीच ॥

अह्राय । I । द्रुते ॥ ह्रवनम् । ह्रुङ्अप नयने । बाहुलकाद्भावे घञ् । वृद्धि. । पृषोदरादित्वाद्वलयः । ततोनञ् समासः ॥

अह्रीकः । पुं । क्षपणके ॥

अह्लला । स्त्री । भल्लातकवृक्षे ॥

---

आ

आ॰ स्मृतौ ॥ स्मृतिसूचनेयथा । आ एवं किलतत् ॥ वाक्ये ॥ वाक्यस्यान्य थात्वेद्योत्ये यथा । आएवंमन्यसे । पू र्वमेवंमंस्था इदानींत्वेवंमन्यसइत्य- र्थः ॥ अनुकम्पायाम् ॥ आदेवदत्तो दरिद्रः ॥ समुच्चये ॥ देवेभ्यश्चपितृ भ्यश्च आ ॥ आप्नोति । आप्लृव्याप्तौ । क्विप् । पृषोदरादित्वात् पलोपः ॥ स्वीकारे ॥ अयंप्रगृह्यसंज्ञकत्वात्प्लु तप्रगृह्याअचीतिसन्धिंनयाति ॥

आः । पुं । महेश्वरे ॥ पितामहे ॥

आकम्पितः । त्रि । कम्पविशिष्टे । प्रेखि ते ॥ आकंप्यतेस्म । कपिचलने । गत्यर्थेतिक्त' ॥

आकरः । पुं । निवहे ॥ धातुरत्न त्तिस्थाने । खनौ ॥ श्रेष्ठे ॥ ६ न्त्यत्र एत्यकुर्वन्तिव्यवहारमस्मि त्वा । डुकृञ्करणे । आकीर्यन्तेधातवो ऽत्र वा । कृविक्षेपे । पुंसिसंज्ञायामिति घः ॥

आकरिकः । त्रि । आकरेनियुक्ते ॥ तत्र नियुक्त इतिठक् ॥

आकर्णनम् । न । श्रोत्रकर्मणि । श्रवणे ॥

आकर्णितः । त्रि । अवधृते ॥ श्रुते ॥

आकर्षः । पुं । द्यूते ॥ इन्द्रिये ॥ पाशके ॥ शारिफलके ॥ धन्वाभ्यासाङ्गे । को दण्डाभ्यासवस्तुनि ॥ आकर्षणे ॥ नि कषोपले ॥ आकर्षणमाकृष्यते आ

कर्षन्त्यग्निपूर्व्वा । कृषविलेखने । घञ् ॥ काष्ठविशेषे ॥ आकृष्यतेऽनेन खलादिगतं धान्यमित्याकर्षः ॥

आकर्षकः । पुं । अयस्कान्ते ॥ चुम्बके ॥ त्रि । कर्षके । आकर्षणकर्त्तरि ॥ आकर्षकुशले ॥ आकर्षकुशलः । आकर्षादिभ्यःकन् ॥

आकर्षणम् । न । आकर्षे । बलादानयने ॥

आकर्षणी । स्त्री । फलपुष्पाद्याकर्षकयष्टिकाविशेषे । आँकडाइतिभाषा ॥

आकर्षिकः । पुं । वणिग्विशेषे ॥ आकर्षाचरति । आकर्षात् ष्ठल् । स्त्रीत्वे आकर्षिकी । ङीष् ॥

आकलनम् । न । आकाङ्क्षायाम् ॥ परिसंख्याने ॥ बन्धने ॥ कलशब्दसंख्यानयोः । आङ्पूर्वादस्माल्ल्युट् ॥

आकलितः । त्रि । अनुष्ठिते ॥ धृते ॥

आकल्पः । पुं । कल्पने ॥ वेषे । मण्डने ॥ आभरणे ॥ त्रि । कल्पान्तावधिके ॥ आकल्पनम् । कृपूसामर्थ्ये । घञ् । कृपोरोलः ॥ आकल्पतेवा । आकल्पयतिवा स्वार्थणयन्तः ॥

आकल्पकः । पुं । तमोमोहग्रन्थौ ॥ उत्कलिकायाम् ॥ मुदि ॥

आकषः । पुं । निकषोपले । कसौटीतिख्याते कषपाषाणे ॥ आङ्पूर्वात् कषेरच् ॥

आकषकः । त्रि । आकषेकुशले ॥ आकषादिभ्यःकन् ॥

आकस्मिकम् । त्रि । अकस्माद्भवे ॥

आकाङ्क्षा । स्त्री । अभिलाषे ॥ वाक्यार्थज्ञानहेतौ पदस्यपदान्तरव्यतिरेकप्रयुक्तान्वयाभावे ॥ आकाङ्क्षारहितं वाक्यं नप्रमाणम् । यथागौरश्वःपुरुषोहस्तीतिनप्रमाणमाकाङ्क्षाविरहात् ॥ न्यायमते यत्पदस्तेयत्पदान्वयबोधो नभवतितत्पदेतत्पदवत्तेति ॥ प्रतीतपर्य्यवसानविरहइत्यालङ्कारिकाः ॥

आकायः । पुं । निवासे ॥

आकारः । पुं । इङ्गिते । अभिप्रायानुरूपचेष्टाविष्करणे ॥ आकृतौ । मुखप्रसादवैवर्ण्यादिरूपेप्रीत्यप्रीतिसूचकेदेहधर्मे ॥ मूर्त्तौ ॥ आकरणम् । घञ् ॥ आकारश्छाद्यमानोपि नशक्योविनिगूहितुम् । बलाद्धिविवृणोत्येवभावमन्तर्गतंनृणाम् ॥

आकारकरभः । पुं । अकर्करादइतिप्रसिद्धे ॥

आकारगुप्तिः । स्त्री । रत्याद्युत्थरागादिगोपने । अवहित्थायाम् ॥ आकारस्यशोकादिजनितमुखग्लान्यादेर्गोपनम् । क्तिन् ॥ रत्यादिसूचकोमु-

खरागादिराकार: अङ्गवैकृतमिति यावत्। गुप्तिर्गोपनम। आकारस्यभयलज्जादिनागुप्तिराकारगुप्ति: ॥

आकारगोपनम। न। आकारगुप्तौ ॥

आकारणम्। न। आह्वाने ॥ आकरणम्। आङ्पूर्वात् कृञोण्यन्ताल्ल्युट्॥

आकारणा। स्त्री। आकारणार्थे। हूतौ ॥ आकारणम्। कृञोण्यन्ताद्युच् । टाप् ॥

आकारमौनम्। न। अवचनमात्रे ॥

आकालिकम्। त्रि। क्षणध्वंसिनि। आशुविनाशिनि ॥ पूर्वदिवसे मध्याह्नादावुत्पद्यदिनान्तरेतत्रैवनश्वरे ॥ समानकालावाद्यन्तौयस्य। आकालिकडाद्यन्तवचनदूति समानकालस्याकालादेश: इकट्प्रत्ययश्चनिपातनात् ॥ स्तनयित्नौ ॥ अकालोत्पन्नवस्तुनि ॥ कालंमर्यादीकृत्येत्याकालम्। अकालेभवम्। ठञ ॥

आकालिक-लय.। पुं। कपिलशापेन काले ज्वल प्रपनरूपेमलयविशेषे॥

आकालिका। स्त्री। विद्युति ॥ आकालाट्ठंश्चेतिठन् ॥

आकालिकी। स्त्री। सौदामिन्याम् ॥ आकालाट्ठंश्चेति चकाराट्ठञ्। ङीप् ॥

आकाश:। पुं। न। शब्दतन्मात्रादुत्पन्ने। वियति ॥ आकाशगुणास्तु। शब्द: श्रोत्रेन्द्रियव्यापिच्छिद्राणिचविविक्तता। वियत: कथिताएतेगुणाः गुणविचारिभिरिति ॥ आसमन्तात्काशते इतियोगाद्ब्रह्मणि। असङ्गस्वभावे॥ यथाहु:। आसमन्तात्काशतेयमित्याकाशस्त्वमात्मन:। जगत्कारणतातस्य सर्ववेदान्तसम्मतेति॥ आसमन्तातकाशन्ते सूर्यादयोऽत्र। काशृदीप्तौ। हलश्चेतिघञ ॥ ... ऽनतिरिक्तमेवाकाशमित्याहु: ॥

आकाशकल्प:। त्रि। आकाशादीषदूनमात्रांशेनन्यूनेपरमात्मनि ॥ यथोक्तम्। निरंशत्वाद्विभुत्वोरे। थाऽनश्वरभावत:। ब्रह्मव्योम्नो... स्तिचैतन्यंब्रह्मणोधिकमिति ॥

आकाशजननी। स्त्री। प्रगण्डमध्यस्थितजनानांबाह्यार्थदर्शनार्थेषुच्चुद्रच्छिद्रेषु ॥ यद्द्वारा ऽऽग्नेयास्त्रगुका प्रक्षिप्यन्ते इतिराजधर्म: ॥

आकाशनिलय। पुं। तापसविशेषे॥ योह्याकाशएव वायुधारणाबलेन निलीयते न भूमौ स: ॥

आकाशप्रदीय:। पुं। तुलाया दीयमाने राधादामोदरसम्प्रदानके आकाशदीपे ॥

आकाशमांसी। स्त्री। निरालम्बायाम। क्षुद्रजटामास्याम् ॥ केदारे

उत्पत्तिरस्याः ॥ ॥

आकाशमूली । स्त्री । पाना इतिगौड भाषाप्रसिद्ध कुम्भिकायाम् ॥ जलव ल्कले ॥

आकाशरक्षी । पुं । प्रगण्डस्थितमण्डि ध्रे । दुर्गबहिः प्राचीरोपरिस्थिते चरे ॥ इतिराजधर्म । मत्वर्थीय- इन् ॥

आकाशवल्ली । स्त्री । अमरवेल आको श्वेल इतिख्याते लताविशेषे । खव ल्याम ॥

आकाशवाणी । स्त्री । अशरीरिण्यांवा । दैववाण्याम् ॥

आकाशसलिलम् । न । दिव्योदके ॥

आकाशास्तिकायः । पु । अजीवपदार्थे ॥ स च लोकाकाशास्तिकायो ऽलो- काकाशास्तिकायश्चेति द्विरूपः ॥

आकिञ्चन्यम् । न । अकिञ्चनिमनि । अकिञ्चनतायाम् ॥ भावे ष्यञ् ॥

आकीर्णम् । त्रि । व्याप्ते । सङ्कीर्णे । ना नाजातीयसम्मिलिते ॥ आकीर्य्यते- स्म । कृविक्षेपे । क्तः ॥

आकुञ्चनम् । न । न्यायमते पञ्चप्रका रकर्म्मान्तर्गतकर्म्मविशेषे । सङ्कोचे ॥

आकुञ्चितः । त्रि । आभुग्ने ॥

आकुलम् । त्रि । व्यस्ते । व्याकुले ॥ चु म्भिते । लोले ॥ आकोलति । कुल संख्याने । इगुपधेतिकः ॥

आकुलाकुलम् । त्रि । आकुलप्रकारे ॥ प्रकारेगुणवचनस्येति द्विर्भावः ॥

आकुलितम् । त्रि । क्षोभिते । आकुली कृते । सञ्चालिते ॥

आकूतम् । न । अभिप्राये । आशये ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

आकूतिः । स्त्री । स्वायम्भुवमनोः कन्या याम् । क्रियायाम् ॥

आकृतिः । स्त्री । रूपे । वपुषि । जातौ ॥ अवयवसंस्थानविशेषे ॥ आकृतिर्जा तिलिङ्गाख्या । न्यायसूत्रम् । जाति लिङ्गमित्याख्या यस्याः जातेर्गोत्वा देर्हि सास्नादिसंस्थानविशेषो लिङ्ग म् । तस्यच परम्परया द्रव्यवृत्तित्वम् । जातिद्रव्यासमवायिकारणतावच्छे दिकालिङ्गं धर्मोयस्याः सेत्यर्थइति कश्चित् ॥ द्वाविंशत्यक्षरायांछन्दसि ॥ आकरणम् । कृञ् । क्तिन् ॥ आक्रि यतेऽयंगौरयमश्व इतिव्यज्यतेऽनेने- ति आकृतिःसंस्थानम् ॥

आकृतिच्छत्रा । स्त्री । घोषातक्याम् ॥

आकृष्टम् । त्रि । आकर्षिते । कृताक र्षणे ॥ आकृष्यतेस्म । कृषविलेख ने क्तः ॥

आकेकरा । स्त्री । दृष्टिविशेषे ॥ यथा । दृष्टिराकेकराकिञ्चित्स्फुटापाङ्गे प्र

सारिता । मौखिताङ्गीपुरालोकेता राध्यावर्त्तनोत्तरेति न्वृत्यविलासो-क्तेः ॥

आकोकेरः । पुं । मकरराशौ ॥

'आकैाशलम् । न । अकैाशले ॥

आक्रन्दः । पुं । क्रन्दने ॥ आह्वाने ॥ मित्रे ॥ दारुणयुद्धे ॥ भ्रातरि ॥ शब्दे ॥ पार्ष्णिग्राहात् परस्मिन्राज्ञि ॥ दे शाक्रमणायाचरतः पार्ष्णिग्राहस्ययो नियामकस्तस्याऽनन्तरोन्नृपतिरित्यर्थः ॥ न । दुःखिनांरोदनस्थाने ॥ सारावदृदिते ॥ आक्रन्दनम् आक्रन्दते आक्रन्द्यतेऽस्मिन् आक्रन्दयतिवा । क्रदिआह्वानेरोदनेच । आङः क्रन्द सातत्ये । घञ् ॥ पचाद्यच्वा ॥

आक्रन्दिकः । त्रि । दुःखिनांरोदनस्थाने गमनकर्त्तरि ॥ आक्रन्दंधावति । आक्रन्दाच्चेतिठञ् ॥ स्त्री । ङीप् ॥

आक्रमः । पुं । अधिक्रमे ॥ आक्रमणम् । आङ् पूर्वात्क्रमेर्भावेघञ् ॥

आक्रमणम् । न । आक्रमकरणे । व्यापने ॥ आङःक्रमेर्भावेल्युट् ॥

आक्रान्त. । त्रि । कृताक्रमणे । व्याप्ते ॥ अभिभूते ॥ आक्रामतिस्म । क्रमुपादविक्षेपे । क्तः ॥

आक्रीडः । पु । उद्याने । राज्ञःक्रीडा साधनेसाधारणेवने ॥ लीलास्थाने ॥ आक्रीडन्त्यत्र । क्रीडृविहारे । हलश्चेतिघञ् ॥

आक्रुष्टः । त्रि । निन्दिते ॥ क्रोशतेः कर्मणिक्तः । व्रश्चेतिषत्वेष्टुत्वम् ॥

आक्रोशः । पुं । अभिशापे ॥ शापे ॥ विरुद्धानुध्याने ॥ आक्रोशनम् । क्रुश आह्वाने । भावे घञ् ॥

आक्रोशनम् । न । अभीषङ्गे ॥ आक्रोशे ॥ आङ्पूर्वात्क्रुशेर्ल्युट् ॥

आक्षद्यूतिकम् । न । अक्षद्यूतेन निर्वृत्ते वैरे ॥ निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यश्च ठक् ॥

आक्षपाटिकः । पुं । अक्षदर्शके । व्यवहारे ॥

आक्षपादः । पुं । नैयायिके ॥ न । यशास्त्रे ॥

आचारः । पुं । आचारणायाम ॥

आचारणम् । न । मैथुनार्थाक्रोशे ॥ चरसञ्चलने । प्रयोजकणयन्ताल्ल्युट् ॥

आचारणा । स्त्री । मैथुनंप्रत्याक्रोशे । परस्त्रीनिमित्तंपुंसः परपुरुषनिमित्तंस्त्रियावा दूषणे ॥ यथा कृताऽगम्यागमनस्त्वं स्थानान्तरंगच्छेति ॥ आचारणम । चरेःप्रयोजकणयन्तात युच ॥

आचारित । त्रि । अभिशस्ते । मिथ्यापवाददूषिते ॥ परस्त्रियां परपुरुषे वा

मैथुनं प्रति मिथ्या दूषिते ॥ आक्षार्यंते स्म । क्षरेर्ण्यन्तात् क्तः ॥ आक्षार संजातो ऽस्येति तारकादित्वादितच्वा ॥

आक्षिकः । पुं । आक्षेरगाछ इति गौड भाषा प्रसिद्धे आछुकवृक्षे । रञ्जनद्रौ ॥ त्रि । अक्षदेविनि ॥ अक्षैर्दीव्यति अदेवीत् देविष्यति वा तैर्जयति वा । तेन दीव्यतीति ठक् ॥ अक्षैर्जिते ॥

आक्षिप्त । त्रि । क्षिप्ते ॥ आक्षिप्यते स्म । क्षिपे. क्तः ॥

आक्षीवः । पुं । शोभाञ्जने । अक्षीबे ॥ मत्ते ॥ आक्षीवति आक्षीवयति वा । क्षीवृ मदे । पचाद्यच् ॥

आक्षुद्रकम् । न । अक्षेत्रत्वे ॥

आक्षेपः । पुं । अपवादे । भर्त्सने ॥ आकृष्टौ ॥ धनादिन्यासकरणे ॥ काव्यार्थालङ्कृतिप्रभेदे । यथा । निषेधोवक्तु मिष्टस्ययो विशेषाभिधित्सया । वक्ष्यमाणोक्तविषयः स आक्षेपो द्विधामतः ॥ विवक्षितस्य प्राकरणिकत्वा दनुपसर्जनीकार्यस्याशक्यवक्तव्यत्व मतिप्रसिद्धत्वं वा विशेषं वक्तुं निषेधो निषेध इव यः स वक्ष्यमाणविषय उक्तविषयश्चेति द्विधा आक्षेपः । क्रमेणो दाहरणम् । एएहि किं



पि कीए अविकरणिक्किव भणामि अलमहवा । अविआरिअकज्जारम्भआरिणी मरउण भणिस्सम् ॥ अस्य संस्कृतं यथा । एएहि किमपि कस्याअपिकृते निष्कृप भणामि अलमथवा । अविचारितकार्यारम्भकारिणी म्रियतां न भणिष्ये ॥ ए इत्यव्ययं सानुनयसम्बोधने एहि आगच्छ । एर्ह्लिं वीतिपाठे इदानीमपीत्यर्थः । अथवेति पूर्वाक्षेपे । अलं न भणिष्यामीत्यर्थ. । खेदातिशयात् पुनरुक्तिः । अलंव्यर्थमिति । अविचारितेति स्वभावमनालोच्य अनुरागवर्द्धनपरेत्यर्थः । अत्र विरहदुर्दशातिशयो वक्ष्यमाणोवक्तु मशक्य तयानिषिद्ध इत्याक्षेपालङ्कारः ॥ ज्योत्स्नामौक्तिकदामचन्दनरसः शीतांशुकान्तद्रवः कर्पूरं कदलीमृणालवलयान्यम्भोजिनी पल्लवा. । अन्तर्मानसमास्त्वया प्रभवतातस्या स्फुलिङ्गोत्करव्यापाराय भवन्ति हन्तकिमनेनोक्तेन न ब्रूमहे इति ॥ आक्षेपणम् । क्षिपप्रेरणे । घञ् ॥

आक्षेपक । पुं । निन्दाकरे ॥ व्याधे ॥ अनिलव्याधिविशेषे ॥ तस्य कारणलक्षणे यथा । यदातु धमनीः सर्वा. कुपितो ऽभ्येति मारुतः । तदाक्षिपत्या

मुहुर्मुहुर्द्दर्द्दन्मुहुश्चरः ॥ मुहुर्मुहुस्तदाक्षेपदाक्षेपकइतिस्मृतइति ॥ आक्षिपति । ण्वुल् ॥

आखोटः । पुं । शैलपीलौ ॥ अक्षोट एव । स्वार्थे अण् ॥

आखोडः । पुं । अक्षोटवृक्षे ॥

आखः । पुं । खनित्रे ॥ आखनत्यनेन । खनु अवदारणे । खनेर्डः ॥

आखण्डलः । पुं । सहस्राक्षे ॥ आखण्डयति । खडि भेदने । वृषादिभ्यःकलच् ॥

आखनः । पुं । खनित्रे ॥ आखनत्यनेन । खनु० । खनो घचेति घः ॥

आखनिकः । पुं । चौरे ॥ शूकरे ॥ मूषिके ॥ देवताडवृक्षे । त्रि । खनितरि ॥ आखनति । खनु० । आङिपणिपनिपति खनिभ्यइति इकन् ॥ पुं । खनित्रे ॥ आखनत्यनेन । खने ईडरइकारकवकावाच्याइतिइकप्रत्ययः ॥

आखनिकवकः । पुं । खनित्रे ॥ आखनत्यनेन । खनु० । इकवकप्रत्ययः ॥

आखरः । पुं । खनित्रे ॥ आखनत्यनेन । खनु० । खनेर्डडर इतिडर प्रत्ययः । डित्त्वसामर्थ्यादभस्यापिटेर्लोपः ॥

आखानः । पुं । आखने ॥ आखनत्यनेन । खनु० । खनोघचेतिचकाराद्घञ् ॥

आखुः । पुं । मूषिके ॥ शूकरे ॥ चौरे ॥ कृपणे ॥ यथा । विभवेसतिनैवात्ति नददातिजुहोतिन । तमाहुराखुंतस्मान्नंभुक्ताकृच्छ्रेणमुह्यतीति ॥ देवताडवृक्षे ॥ आखनति । खनु० । आङ्परयोःखनिशृभ्यांडिच्चेतिकुः ॥

आखुकर्णपर्णिका । स्त्री । आखुपर्णीम् ॥

आखुकर्णी । स्त्री । मूषाकानीइतिभाषाप्रसिद्धायां भूमिचर्य्याम् । मूषककर्ण्याम् ॥ पाककर्णेतिङीष् ॥

आखुगः । पुं । गजानने । गणेशे ॥

आखुघातः । पुं । शूद्राद्यधमे ॥ अन्ति । हन० । बाहुलकादण् ॥

आखुपर्णिका । स्त्री । लताविशेषे । पचित्रायाम् । वृषायाम् ॥ स्वार्थे कः ॥

आखुपर्णी । स्त्री । उंदुरकानी इतिप्रसिद्धायांमूषकपर्ण्याम् । वृषायाम् ॥ आखुः पर्णमस्याः । तत्कर्णाकारपत्रत्वात् । पाककर्णेति ङीष् ॥ आखुपर्णी कटुस्तिक्ता कषाया शीतला लघुः । विपाके कटुकामूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥

आखुपाषाणः । पुं । पाषाणभेदे ॥ आखुपाषाणनामायं लोहसङ्करकारकः । इतिराजनिर्घण्टः ॥

आखुभुक् । पुं । बिडाले ॥ आखून् भुङ्क्ते । भुजपालनाभ्यवहारयो. । क्विप् ॥

आखुरथः । पुं । गणेशे। आखूरथेऽस्य ॥

आखुविषघ्ना । पुं । देवताडवृक्षे ॥ देवदाली लतायाम् ॥

आखेटः । पुं । मृगयायाम् ॥ आखिद्यन्ते प्राणिनोऽत्र । खिटत्रासे । हलश्चेति घञ् ।

आखेटकः । पुं । मृगयायाम् ॥ स्वार्थे-कन् ।

आ॰ ग्शीर्षकम् । न । गुडङ्ग इति गौडप्रसिद्धे कुट्टिमान्तरे । यथा । शीर्षं द्रुमशीर्षं तथाचाखेटशीर्षम् । इतिकुट्टिमभेदा.स्युःशाब्दिकैः समुदाहृता इति ।

आखेटिकः । पुं । विश्वकद्रौ । मृगयाकुशलकुक्कुरे ॥

आखोटः । पुं । अक्षोटे । पार्वतीये ॥

आख्या । स्त्री । नाम्नि । संज्ञायाम् । उक्तौ ॥ आख्यानम् । ख्याप्रकथने । आतश्चोपसर्गइत्यङ् ॥

आख्यातम् । त्रि । कथिते ॥ व्याख्याते ॥ न । तिङि ॥ क्रियाप्रधानमाख्यातमिति वैयाकरणा । भावप्रधानमाख्यातमितिनैगमाः ॥ आख्यायतेस्म । ख्या॰ । चक्षिङ आदेशोवा । क्त ॥

आख्याता । त्रि । प्रतिपादयितरि ॥ वक्तरि तृच् ॥

आख्यानम् । न । सौपर्णमैत्रावरुणा द्युपाख्याने ॥ आङ्पूर्वात्ख्यातेर्ल्युट् ॥

आख्यानकी । स्त्री । आख्यानकीतौजगु रूगश्चोजौ जतावनोजेजगुरूगुरुश्चेदिति लक्षण लक्षितेवृत्ते ॥

आख्यायिका । स्त्री । उपलब्धार्थकथायाम् ॥ यथा । प्रबन्धकल्पनांस्तोकसत्यांप्राज्ञाःकथांविदुः । परम्पराश्रयायास्यात्साम ताख्यायिका क्वचिदिति ॥ गद्यपद्यप्रबन्धे ॥ त्रि । कथके ॥ आचष्टे । चक्षिङःख्याञ् । ण्वुल् ॥

आगतम् । त्रि । आयाते । उपस्थिते ॥ प्राप्ते ॥ गम्॰ । क्त. ॥

आगतिः । स्त्री । आगमने ॥ क्तिन्नन्त ॥

आगन्तुः । त्रि । अतिथौ ॥ आगमनशीले ॥ अनियते ॥ आगन्तूनामन्तेसंनिवेशः ॥ आगच्छति । गम्लृगतौ । सितनिगमीतितुन् ॥

आगन्तुकः । त्रि । अतिथौ ॥ आहार्ये । अनित्यस्थायिनि ॥ स्वार्थेकन् ॥

आगमम् । न । तन्त्रशास्त्रे ॥ अस्यार्थः । आगतंशिववक्त्रेभ्योगतञ्चगिरिजामुखे । मतंश्रीवासुदेवस्यतस्मादागमम्-च्यतेइति ॥ तस्यलक्षणं यथा । सृष्टिश्चप्रलयश्चैवदेवतानांतथार्चनम् ।

साधनञ्चैव सर्वेषांपुरश्चरण मेवच ॥ षट्कर्मसाधनंचैवध्यानयोगश्चतु-र्विधः। सप्तभिर्लक्षणैर्युक्तमागमंतद्विदुर्बुधा. इति ॥ अपिच। पु। सिद्धंसिद्धैः प्रमाणैस्तुहितं चात्रपरत्रच। आगमः शास्त्रमाप्तानामाप्तास्तत्त्वार्थवेदिनइति ॥ शास्त्रमात्रे॥ उपदेशपरम्परायाम् ॥ आगतौ ॥ साक्षिपत्रादौ ॥ वेदे ॥ प्रकृतिमन्वयानुपघातिनि कार्ये ॥ एकादशभवने॥ आगमनम्। गम्लृ०। ग्रहवृद्दनिश्चिगमश्चेत्यप् ॥

आगमनम्। न। आगतौ। आवना इतिभाषा ॥

आगमवेदी। पुं। गौडपादाचार्ये। शङ्कराचार्यस्य परमगुरौ ॥

आगमापायी। त्रि। उत्पत्तिविनाशवति ॥ आगमापायौ विद्येतेऽस्य। इनि. ॥

आगमार्थः। पुं। अद्वैतदर्शने ॥

आगमावर्त्ता। स्त्री। विछाटी इति गौडभाषा प्रसिद्धे क्षुपविशेषे। वृश्चिकाल्याम् ॥

आगमितम्। त्रि। अधीते। पठिते ॥

आगरा। स्त्री। क्षुम्रपुरे॥ यथा। कालपी मन्दिरे, कालपीनस्तमी आरपीता सर्वाश्चर्पीतिप्रियम। नागराजी मदामीहमेदस्विनी मागरामागतः साइजल्लालदीतियवनाधिकारप्रसिद्धोयंशब्दः ॥

आगवीनः। त्रि। गोःप्रत्यर्पणपर्यन्तं कर्मकर्त्तरि ॥ आङ्मर्यादाभिविध्योरित्यव्ययीभावेउपसर्जनह्रस्वे चकृते आगवीन इतिखः। गुणावादेशौ ॥

आगः। न। अपराधे॥ पापे॥ एति। इणगतौ। इण आग अपराधेचेत्यसुन् आगादेशश्च ॥

आगस्कृत्। त्रि। अपराधिनि ॥

आगस्त्यः। पुं। अगस्त्यतनये ॥ अगस्त्यापत्यम्। ऋष्यण्। बहुत्वे अगस्तय. ॥ न। अगस्तिकुसुमा

आगाधम्। न। अगाधे। अतिग

आगामी। त्रि। आगन्तुके। प्रवा. ॥ भविष्यत्काले ॥ आगमिष्यति। गम्लृ०। आङि णिद्दितिगमेरिनि ॥

आगारम्। न। मन्दिरे। गृहे ॥ आगम्यते। अगकुटिलायांगतौ। कर्मणि भावेवाघञ्। आगमच्छति। ऋगतौ। कर्मण्यण् ॥

आगू। स्त्री। प्रतिज्ञाने ॥ आगमनम्। आगमे क्विपि गमः क्वावित्यनुनासिकलोपे ऊचगमादीनामित्यूकारादेश। ओःसुपीतियणि अभि शंसिच। आग्नम्आगू। शेषंवधूवत् ॥

आग्निमारुतम्। न। हविर्विशेषे ॥ अ

ग्निमरुतौदेवते अस्य । सास्यदेवते त्यण् । देवताद्वन्द्वे चेत्युभयपदवृद्धिः ॥

आग्निष्टोमिकः । पुं । अग्निष्टोमविदि ॥ अग्निष्टोममधीतेवेदवा । क्रतूक्थादीतिठक् । ग्रन्थे ॥ अग्निष्टोमस्य व्याख्यानस्तत्रभवोवा । क्रतुयज्ञेभ्यश्चेति ठञ् ॥

आग्नीध्रः । पुं । प्रियव्रतपुत्रेन्नृपतिविशेषे आग्नीध्रोनामन्वपतिर्जम्बूनाधोमतः कुले । तज्जातन्वपसंज्ञाभिः कथ्यमानादय. ॥ न । होतुर्गृहे ॥ अमध्ये । अिग्नन्धोदीप्तौ । क्विप् । पः । अग्नीधः स्थानम् । अग्नीधरणभश्च । तात्स्थ्यात्तृत्विक्प्याग्नीध्रउच्यते । आग्नीध्रमाधारः । इत्यभ्यजितुङीपिआग्नीध्रीति बोध्यम् ॥

आग्नेयम् । न । स्वर्णे । रक्ते । महापुराणे । यथा । अग्निनोक्तं पुराणंयदाग्नेयं वेदसम्मितम् । भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं पठतांशृण्वतांन्णामिति ॥ देवविशेषे ॥ अग्निहिते ॥ अग्निदेवताके ॥ स्थालीपाके ॥ अग्निर्देवता अस्य अग्नायीदेवता अस्यवा । अग्नेर्ढगितिढक् । भस्याढइतिपुंवद्भाव. ॥

आग्नेयास्त्रम् । न । अग्निदेवताके अस्त्रविशेषे ॥

आग्नेयी । स्त्री । अग्निकोणे ॥ अग्नियोषिति । स्वाहायाम् ॥ अग्निदेवताकायामृचि ॥ ङीप् ॥

आग्रयणम् । न । नवसस्येष्टयाम् ॥

आग्रहः । पुं । अनुग्रहे ॥ आसङ्ग ॥ आक्रमे ॥ ग्रहणे ॥ आग्रहणम् । ग्रहपादाने । ग्रहदृदृिश्चमप ॥ आवेशे

आग्रहायणः । पुं । मार्गशीर्षे ॥ आग्रहायण्या युक्तापौर्णमासी अस्मिन् । ज्योत्स्नादित्वादण् ॥

आग्रहायणिकः । पुं । मार्गशीर्षे ॥ अग्रहायण्या मृगशिरसा युक्तापौर्णमासी अस्मिन् । आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् मतान्तरे वत्सरायमासोयम् ॥

आग्रहायणी । स्त्री । मार्गपूर्णिमायाम् मृगशिरोनक्षत्रे ॥ अग्रेहायनमस्याः मतभेदे मार्गशीर्षमारभ्यवर्षमवृत्तेः । प्रज्ञाद्यण् । पूर्वपदादितिणत्वम् । गौरादित्वान्ङीष् । आग्रहायणीपौर्णमासी तद्योगान्नक्षत्रमपितथा ॥

आग्रहारिकः । पुं । अग्रदानिनि ॥

आघट्टकः । पुं । रक्तापामार्गे ॥

आघाटः । पुं । सीमायाम् ॥ अपामार्गे ॥

आघातः । पुं । वधस्थाने ॥ आमहननयाम् । हनने । चोट इतिभाषा । आहन्यते अत्रआहननंवा । हन०

घञ् ॥

आघातनम् । न । वधस्थले । हनने ॥

आघारः । पुं । घृते । वैदिकानांकर्मविशेषे । ऋग्वेदिनांस्रुवेणचतुराज्यं स्रुचिन्त्वा प्रजापतिंमनसाध्यात्वातूष्णीं समेवीयव्यकोणादारभ्याग्नेर्यीं यावदविच्छिन्नाघृतधारा दीयते पुनश्च स्रुवेण चतुराज्यं स्रुचिहत्वाइन्द्रं ध्यात्वा अग्नेर्नैरृतींदिशमारभ्य ऐशानीं दिशमवधीकृत्य सन्तत्या घृतं धार्यते तस्मिन् कर्मणि ॥ यजुर्वेदिनांतु स्रुवेणमन्त्रोच्चारणपूर्वकं पूर्वोक्तक्रमेणघृतधारादाने ॥ इतिपशुपतिः ॥ आघरणम् । घृच क्षरणदीप्त्योः । घञ् । सेके ।

आघारणम् । न । सेचने ।

आघूर्णितः । त्रि । आहते । घूर्णिते । भ्रामिते । घूर्णनेनादौ ।

आघोटा । स्त्रि । अन्यात्मकशब्दवत्तरि ॥

आघ्राणम् । न । तृप्तिसामान्ये । गन्धग्रहणे ॥ आघ्रायतेस्म । घ्रागन्धोपादाने । क्तः । नुदविदेतिवा नत्वम् ।

आघ्रातम् । त्रि । शिङ्घिते । घ्राणविषयीकृते ॥ आक्रान्ते । हृष्टे । आघ्रायतेस्म । घ्रा० । क्तः । नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योन्यतरस्यामितिपाक्षि



को नत्वाभावः ॥

आङ् । । सीमायाम् । मर्यादायाम् । तेन विनेत्यर्थे । यथा । आसमुद्रक्षितीशानाम् ॥ अभिव्याप्तौ । तेनसहेत्यर्थे । यथा । आकुमारं यशः । क्रियायोगे । धातुनायोगे सतियोर्थो जायते तत्र । यथा । आरोहति ॥ ईषदर्थे । यथा । आपिङ्गलः । अतति । अतसातत्यगमने । बाहुलकात् डाङ्प्रत्ययः ।

आङ्गम् । न । कोमलाङ्गे । त्रि । अधिकारीये । अङ्गसम्बन्धिनि । इदम् । अण् ।

आङ्गारम् । न । अङ्गारवृन्दे । णां समूहः । भिक्षादिभ्योण् ॥

आङ्गिकः । त्रि । मार्दङ्गिके । अङ्गानां भावव्यञ्जकभ्रूक्षेपादौ । अङ्गजाते ॥ अङ्गेनहस्तादिना निर्वृत्तम् । निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यइति ठक् ।

आङ्गिरस । पुं । वाचस्पतौ । जीवे । अङ्गिरसोऽपत्यम् । ऋष्यन्धकेत्यण् । बहुत्वे अत्रिभृगित्यणो लुक् । आङ्गिरसः आङ्गिरसौ अङ्गिरसः ॥

आचत्वाम् । त्रि । ऊचाणे ।

आचमः । पुं । आचमने । जलप्राशने ॥

आचमनम् । न । उपस्पर्शे ॥ वैधकर्मारम्भात पूर्वं वारत्रयजलपानानन्तरं-

यथा क्रमाष्टाङ्गस्पर्शरूपशुद्धिजनक-
क्रियायामित्यर्थं । अत्र प्रमाणम् ।
प्रक्षाल्यपाणीपादौचत्रि. पिवेदम्बु-
वीक्षितम् । सम्वृत्याङ्गुष्ठमूलेन द्विः
प्रमृज्यात् ततोमुखम् । संहत्यति-
सृभि. पूर्वमास्यमेव मुपस्पृशेत् । अ
ङ्गुष्ठेन प्रदेशिन्या घ्राणं पश्चादनन्तर
म् ॥ अङ्गुष्ठानामिकाभ्याञ्चचक्षुःश्रोत्रे
पुनःपुनः॥नाभिंकनिष्ठाङ्गुष्ठेनहृदयन्तु
तलेनवै । सर्वाभिस्तुशिरःपश्चात् वा
हूचाग्रेणसंस्पृशेत् । इतिदक्षः । आ
प्तं पर्वणांकृत्वागोकर्णाकृतिवत् क
रम् । संहताङ्गुलिनातोयंगृहीत्वा
पाणिनाद्विज' । मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां
षेणाचमनंचरेत् । माषमज्जनमा
त्रं।स्तुसंगृह्यत्रिःपिवेदपः । इतिभार
द्वाजः ॥ दक्षिणेनोदकंपीत्वावामेन
संस्पृशेद्बुधः । तावन्नशुध्यतेतोयंयाव
द्वामेन नस्पृशेदितिदेवीभागवतम् ।
अद्भिस्तुप्रकृतिस्थाभिर्हीनाभिः फेन
बुद्बुदैः । हृत्कण्ठतालुगाभिस्तुयथा
संख्यंद्विजातयः ॥ शुध्येरन् स्त्रीचशूद्र
श्चसकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः । इतियाज्ञव
ल्क्यः । स्त्रियास्तैदर्शिकंतीर्थं शूद्र
जातेस्तथैवच । सकृदाचमनाच्छु
द्धिरेतयोरेवचोभयोरिति । चमुअ
दने । भावे ल्युट् । अदनंचात्र जल

स्यैवेतिव्याख्यातारः । आचम्यते अ
नेनाऽत्र । अधिकरणे वाल्युट् ।

आचमनकः । पुं । निष्ठीवनपात्रे । पत
द्ग्रहे । प्रोक्ते ।

आचमनीयम् । न । मुखप्रक्षालनार्थं
जले । यथा । उदकंदीयतेयत्तुप्रस
न्नंफेनवर्जितम् । आचमनायदेवेभ्य
स्तदाचमनमुच्यतइति ॥ कालिका
पुराणम् ।

आचरणम् । न । आचारे । व्यवहारे
। आङ्पूर्वाच्चरतेर्भावे ल्युट् । रथा
दौ ॥ आचरतिगच्छत्यनेनेतिकर
णे ल्युट् ।

आचरितम् । त्रि । कृताचरणे । व्यवहृ
ते ॥ पारिभाषिकस्तद्यथा । दारपुत्र
पशून् हत्वाकृत्वाद्वारोपवेशनम् । "
चार्थी दाप्यतेऽर्थंस्वंतदाचरितमुच्य
ते । इति ।

आचर्य्यः । पुं । गन्तव्यदेशे । चरेराङि"
चागुराविति यत् ।

आचान्तः । त्रि । कृताचमने ।

आचामः । पुं । आचमने । भक्तमण्डे
। मासरे । आचम्यते । चमु० । भक
र्त्तरीतिघञ् । वृद्धिः । भावेवाघञ् ।

आचारः । पुं । मन्वाद्युक्तानामाचमना
दिव्यवहारे । चरित्रे । शीले । सर्व
शास्त्रप्राधान्यं यथा । सर्वागमानामा

चारःप्रथमं परिकल्पते। आचारप्रभ वोधर्मोधर्मस्यप्रभुरच्युत इतिमहाभा तम् ॥ आचार. परमोधर्मःश्रुत्युक्तः स्मार्त्तएवचेतिमनु. । अपिच । आ- चाराद्विच्युतोविप्रोनवेदफलमश्नुते । आचारेणतुसयुक्तः सम्पूर्णफलभा गभवेत् ॥ एवमाचारतोदृष्ट्वाधर्मस्य मुनयोगतिम् । सर्वस्यतपसोमूल माचारंजगृहुःपरमितिच ॥ आच र्यते । चर० घञ् ॥

आचारवर्जितः । त्रि । आचारबहिर्भूते ॥ आचरेणवर्जितः ॥ आचार हीने॥ लोकवाह्यव्यवहर्त्तरि ॥

आचारहीनः । त्रि । गुर्वतिथिप्रत्यु त्थानाद्याचारवर्जिते ॥ आचारेणआ चाराद्वाहीनः ॥ आचारहीनंनपुन न्तिवेदायद्यप्यधीताःसहषड्भिरङ्गैः ॥

आचारी । त्रि । आचारवति । श्रुति स्मृत्युक्ताचारयुक्ते ॥ म० इनिः ॥

आचारी । स्त्री । हिलमोचिकायाम् ॥

आचार्य्यः । पुं । मन्त्रव्याख्याकृति । सा ङ्गकृत्स्नवेदाध्यापयितरि । यथाहम- नुः । उपनीयतु य.शिष्यं वेदमध्या पयेद्द्विजः ॥ सकल्पसरहस्यञ्चतमा- चार्यं प्रचक्षते । इति ॥ मोक्षसाधन स्योपदेष्टरि श्रीगुरौ ॥ सचोक्तःकु लार्णवे । स्वयमाचरतेशिष्यानाचा रेस्थापयत्यपि । आचिनोतिहि- शास्त्रार्थमाचार्य्यस्तेनकथ्यते ॥ आ म्नायतत्त्वविज्ञानाच्चराचरसमानतः । यमादियोगसिद्धत्वादाचार्यइतिक थ्यते । इति ॥ श्रीशङ्कराचार्ये ॥ द्रो णाचार्य्ये ॥ आचर्यते । चरेर्ण्यत ॥

आचार्य्यकम् । न । आचार्यकर्मणि ॥ योपधाद्गुरूपोत्तमाद्वुञ ॥

आचार्य्यमिश्रः । पुं । गैारवान्विते ॥

आचार्य्या । स्त्री । स्वयंमन्त्रव्याख्यान कारिण्याम् ॥ पुंयोगाभावान्नानुगा गमोङीष्च ॥ टाप् ॥

आचार्य्यानी । स्त्री । आचार्ययोषिति॥ आचार्यस्य स्त्रीत्यर्थे इन्द्रवरुणभव शर्वेत्यादिना आचार्यशब्दस्या० गमोङीष्च । आचार्यादणत्वंचे ति णत्वाभावः ॥

आचिख्यासा । स्त्री । आख्यातुमिच्छा याम् ॥

आचित. । पुं । शकटोन्मेये । शाकटे भारे । छकडेकाभार इतिभाषा ॥ श्ययुतपले ॥ न । दशभारपरिमा णे । २५ मण इतिभाषा ॥ त्रि । स ङ्गृहीते ॥ छन्ने ॥ व्याप्ते ॥ आचीयते स्म । चिञ् चयने । क्तः ॥ ग्रथिते । गुम्फिते ॥

आच्छन्नम् । त्रि । आच्छादिते । आवृ

ते ॥

आच्छादः । पु । वस्त्रे । इतिहेमचन्द्रः ॥

आच्छादनम् । न । पिधाने । वस्त्रे । अपवृतिमात्रे । छादयति । छदअपवारणे आङ्पूर्वः । णयन्तात्ल्युट् । आच्छाद्यते ऽनेनवा ॥

आच्छादितः । त्रि । आवृते । कृताच्छादने ॥

आच्छिन्नः । त्रि । बलाद्धृते ॥

आच्छुकः । पुं । आचगाछ इतिगौड भाषा प्रसिद्धे वृक्षविशेषे । पक्षीके । रत्नावली ॥

आच्छुरितम । न । सशब्दहासे ॥ नखवाद्ये । नखाघातविशेषे । आच्छुरम् । छुरच्छेदने । क्तः ॥

आच्छुरितकम् । न । सशब्दहासे ॥ परस्यामर्षजनकेहास्ये । नखाघातविशेषे । आच्छुरणमपरच्छेदनम् । आच्छुरेर्भावेक्तः । स्वार्थेकः ।

आच्छोदनम् । न । मृगयायाम् । आच्छिद्यन्तेऽत्र । छिदिर्° । ल्युट् । पृषोदरादिः ॥

आजम् । न । घृते । त्रि । अजस्यमांसादौ । यथा । तिलजतैलसुपाकसुपाचितंकासमर्दसुरसेविमर्दितम् । हृपभूपभवधूपधूपितंवह्निमान्द्यजरणं त्वजापलम् । बाहृगाधातवोनृणाम

जानामपिताहृशा. । अतोधातुविवृद्ध्यर्थमाजंमांसंप्रशस्यते । इति । अजस्येद मित्यर्थे अण् ॥

आजकम् । न । छागवृन्दे । अजानांसमूहः । गोत्रोक्षोष्ट्रेतिवुञ् ।

आजकारः । पुं । भरोवृष । शिवस्यवृषे ॥

आजगवम् । न । शिवस्यधनुषि । अजगवे । प्रज्ञाद्यण् ॥

आजन्मसुरभिपत्रः । पुं । मरुवके ॥

आजमीढ । पुं । युधिष्ठिरपाण्डवे । स्वार्थेऽण् ।

आजानम् । न । देवलोके । स्वभावे ।

आजानदेवः । पुं । देवताविशेषे । यथा । सृष्टेराजननादादौ देवत्वंये प्रपेदिरे । आजानदेवास्तेज्ञेयाः पूर्वेभ्य' सूक्ष्ममूर्त्तयःइति । पूर्वेभ्य. पूर्वपूर्वेभ्य. । अपिच । कल्पादावेवदेवत्वंगता आजानदेवता इति ।

आजानुबाहुः । त्रि । जानुपर्यन्तदीर्घबाहुविशिष्टे । यथा । आजानुबाहु. सुशिराः सुललाटः सुविक्रम इति रामायणम् ॥

आजानेयः । पुं । स्त्री । कुलीनाश्वे । शोभनाश्वे । यथा । शक्तिभिर्भिन्नहृदया. स्खलन्तःपदेपदे । आजानन्ति यतः संज्ञामाजानेयास्ततः स्मृताः ।

इत्यस्यग्रहणम् । अजनम् । अजग
ति क्षेपणयोः । घञ् । आजेन क्षेपे
ण आनेयः प्रापणीयः आयत्तो वा ।

आजिः । स्त्री । समभूमौ । सङ्ग्रामे ।
आक्षेपे । क्षणे । मर्यादायाम् । य-
था । आजेः प्रगुणाम् । अजन्त्यस्या-
म् । अज० । अज्यतिभ्याञ्चेतीण् ।
अजनम् । इणजादिभ्य इतीण् विधा
नसामर्थ्याद्वीभावो न । अन्यथा । व्यादि
भ्य इत्येवावक्ष्यत । बहुलंतणीति वा ।

आजीवः । पुं । जीविकायाम् । आजी
व्यते अनेन । जीवप्राणधारणे । हल
श्चेति घञ् ।

आजीवी । पुं । एकान्दण्डिनि ।

आजीव्यम् । न । उपजीव्ये ।

आजु । स्त्री । वेतनंविनाकर्मकर्त्तरि ।
रेफान्त. ।

आजू । स्त्री । वेतनंविनाकर्मकर्त्तरि ।
विष्टगाम् ॥ बेठी देह इ० हिमग्रे-
षयांप्रसिद्धम् बेगारीत्यन्यत्र ॥ आज
वति । जुगतौ । क्विब्वचिप्रच्छ्योतिक्वि
प् दीर्घौ । हठाद्भृतिकः क्लेशोवि
ष्टिराजूश्चकीर्त्यते ।

आज्ञप्तः । त्रि । आदेशिते । प्राप्ताज्ञे ।

आज्ञा । स्त्री । निदेशे । शासने । ज-
ाङ्ग्रहणस्थाने । आज्ञानम् । आ-
अवबोधने । आतश्चोपसर्ग इत्यङ् ।
टाप् ॥

आज्ञाकारी । त्रि । आज्ञानुवर्त्तिनि ।
आज्ञयाकर्मकारिणि ।

आज्ञाचक्रम् । न । भ्रुवोर्मध्ये । षट्च
क्रान्तर्गतषष्ठचक्रे । आज्ञासंज्ञकं-
चक्रम् । यथा । आज्ञानामांतदूर्ध्वेतु
आत्मनाधिष्ठितंपरम् । आज्ञासङ्क्र
मणंतत्रतेनाज्ञेति प्रकीर्त्तितम् । तत्र
निहितचित्तस्यपुरुषस्य सर्वपदार्थानां
ज्ञानाकारेण एवं भूतमेवंवर्त्तते एवंभ
विष्यतीतिज्ञानेन आज्ञायाइतः परं
त्वयैवंकर्त्तव्यमितिपरमेश्वराज्ञायाः
सङ्क्रमणंभवति तेनहेतुनातद्गाज्ञा
चक्रमितिकीर्त्तित मित्यर्थः ।

आज्ञापकः । त्रि । आज्ञाकर्त्तरि ।

आज्ञापत्रम् । न । आदेशलिपौ । नि-
देशलिखने । हुकमनामा इतिपा
रस्यभाषा ।

आज्ञापनम् । न । विज्ञापने । जनाव-
ना इति भाषा ।

आज्ञाप्तः । त्रि । आज्ञाप्तिविशिष्टे । ल
ब्धाज्ञे ।

आज्यम् । न । घृते । आअज्यतेऽनेन ।
अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु । आ
ङ्पूर्वादञ्जेः संज्ञायामितिक्यप् । आ
अनक्त्यनेनवा । श्रीवासे ।

आज्यपाः । पुं । पुलस्त्यस्यतनयेषु वैश्या

नापिहृषु ॥ आज्यंपिअत । पापाने । क्विप् ॥

आज्यभागः । पुं । वैदिकानामाहुतिविशेषे ॥ तत्र । ऋग्वेदिनामग्नेरुत्तरभागे स्रुवेणाग्निसम्प्रदानकघृताहुतिः । तद्दक्षिणभागे सोमसम्प्रदानकाहुतिश्च ॥ यजुर्वेदिनान्त्वग्नेरुत्तरदक्षिणयो पश्चिमादिप्राच्यन्तघृतधारेति पशुपतिः ॥

आज्यस्तोत्रम् । न । सामगानां प्रातःसवनेगायत्रसाम्नागीयमानेषु चतुर्षुस्तोत्रेषु ॥

आञ्जनेयः । पुं । हनूमति ॥ यथा । उल्लङ्घ्यसिन्धोः सलिलंसलीलंयः शोकवह्निंजनकात्मजायाः । आदायतेनैव ददाहलङ्कांनमामितंप्राञ्जलिराञ्जनेयमिति ॥ अञ्जनाया अपत्यम् । स्त्रीभ्योढक् ॥

आञ्जिनेयः । पुं । अञ्जनहारी इतिभाषाप्रसिद्धे जन्तुविशेषे ॥ इतिशब्दमाला ॥

आटरूषः । पुं । वृषे । वासके ॥ अटरूषएव । स्वार्थेऽण् ॥

आटिः । पुं । शरारिपक्षिणि ॥ आअटति । अटगतौ । इन् ॥

आटिकी । स्त्री । अनुपजातपयोधरादिस्त्रीव्यञ्जनायाम् ॥ गृहान्तरादटनाद्दृत्त्वादाटिकी ॥

आटिक्यः । त्रि । अटना प्रवृत्ते ॥

आटीकनम् । न । वत्सानांगमने ॥ आ ईषत् । टीकृगतौ । ल्युट् ॥

आटीकरः । पुं । वृषे ॥

आटीकलम् । न । वत्सानांक्रीडाख्यस्थाम् ॥

आटोपः । पुं । दर्पे ॥ संरम्भे ॥ आनाहे ॥ उदरेवायुजन्यगुडगुडाशब्दे ॥

आडम्बरः । पुं । तूर्यस्वने ॥ पक्ष्मणि ॥ संरम्भे । कोपे ॥ गजगर्जिते ॥ युद्धपटहे ॥ हर्षे ॥ आरम्भे ॥ दर्पे ॥ यथा । असारस्यपदार्थस्यप्रायेणाडम्बरोमहान् । नहितादृक् ध्वनिः स्वर्णेयादृक्कांस्येप्रजायते इति ॥ आडम्ब्यते । डविक्षेपे । चु० । घञ् । भावेवा । आडम्बंराति रायतिवा । आतोनुपेतिकः । मूलविभुजेतिवाकः ॥ आडम्बयतिवा । बाहुलकादरन् ॥

आडिः । स्त्री । शरालिखगे ॥ स्वनाम्नाख्याते मत्स्यविशेषे । इति गौडाः ॥ आअडति । अडउद्यमने । इन ॥

आडिका । स्त्री । शरारिविहगे ॥

आडी । स्त्री । शरालिपक्षिणि ॥ कृदिकारादितिङीष् ॥

आडूः । पुं । उडुपे । भेले । जलप्रवद्रव्ये । डैंगाडैंगी इतिभाषाप्रसिद्धे ।

अयति । अयशब्दे । अणोडश्चेत्युः ॥

आढकः । पुं । न । धान्यमानभेदे । सर्वतोदशाङ्गुलमाने । प्रस्थचतुष्टये ॥ चतुःप्रस्थमथाढकमित्युक्तेः ॥ चतुष्कलमितेधान्यमानपात्रे ॥ पुष्कलानितुचत्वारिआढक परिकीर्त्तित-इतिवचनात ॥ द्रोणचतुर्थभागइति लीलावती ॥ अष्टमुष्टिर्भवेत्कुञ्चिरित्यादिवचनाच्च षटपञ्चाशदधिकद्विशतमुष्टिर्भवति । व्यवहारे षोडशसेरोविंशतिसेरोवा ॥ वैद्यकमते अष्टशरावपरिमाणम् । तत्पर्यायः । पात्रं कंतम् भाजनमितिपरिभाषा ॥ अपचयविवक्षायामाढकिकेत्यपिस्यादितिसारसुन्दरी ॥

आढकिकः । त्रि । आढकपरिमितब्रीह्यादिवापयोग्येक्षेत्रे ॥ आढकस्यवापः । तस्यवापइतिठञ् । आढकंपचति । सम्भवत्यवहरतिपचतीतिठञ् । टिड्ढेतिङीप् आढकिकी ॥

आढकी । स्त्री । शमीधान्यविशेषे । तुवरीम । अरहर इतिभाषा ॥ अस्या गुणा यथा । आढकीतुवराग्राहिणीमधुराशीतलालघु । ग्राहिणी वातजननीवर्ण्यापित्तकफास्रजिदिति । त्रि । परिमाणान्तरे । आसमन्तात्ढौकते ढौक्यतेवा । ढौकृगतौ । अच् घञ्वा । पृषोदरादिः । आढकमस्ति अस्याःपरिच्छेदकत्वेन । अर्शआद्यच्वा । गौरादित्वान्ङीष ॥

आढकीनः । त्रि । आढकिके ॥ आढकं सम्भवति अवहरति पचतिवा । आढकाचितपात्रात् खोन्यतरस्या मिति-खः ॥

आढ्यः । त्रि । युक्ते । विशिष्टे ॥ यथा गुणाढ्यो धनाढ्यइति ॥ सम्पन्ने । बहुधने ॥ आध्यायति । ध्यै० । आतइति कः । पृषोदरादिः । यद्वा । आढौकते अनायम् । ढौकृगतौ । बाहुलकात् यः । ग्रहंशरीरं मानुष्यंगुणाढ्यो ह्याढ्यउच्यते ॥

आढ्यचरः । त्रि । पूर्वमाढ्ये ॥ आढ्यो भूतपूर्वे । भूतपूर्वेचरट् । स्त्री । आढ्यचरी ॥

आणकः । त्रि । अधमे ॥ अणकएव । स्वार्थेअण् ॥

आणवम् । न । अणिमनि । अणुत्वे ॥ अणोर्भावः । इगन्ताच्चेत्यण् ॥

आणवीनम् । त्रि । अणव्ये । अणुधान्योद्भवे क्षेत्रे ॥ अणूनां भवनं क्षेत्रम् । विभाषातिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यइतिखञ् ॥

आणिः । पुं । स्त्री । अक्षाग्रकीले । रथचक्राग्रस्थितकीले ॥ अस्त्रयाम । को

ष्ठै । सीमनि ॥

आण्डम् । त्रि । अण्डसम्भवे ॥

आण्डजः । त्रि । अण्डजे ॥ स्वार्थे अण् ॥

आण्डीरः । त्रि । आण्डवति ॥ आण्डो स्यास्य । काण्डाण्डादीरन्नीरचाविति तीरच् ॥

आतः । ऽ । इतोपीत्यर्थे ॥

आतङ्कः । पुं । रोगे ॥ सन्तापे ॥ शङ्कायाम् ॥ मुरज्यध्वनौ ॥ भये । ज्वरे ॥ आतङ्कनम् । तकि कृच्छ्रजीवने । घञ् । हलश्चेति करणे वा ॥

आतञ्चनम् । न । प्रतीवापे । गलितस्य स्वर्णादेर्द्रव्यान्तरेणाव चूर्णने । इति स्वामी । निःक्षेपणमिति सुभूतिः । उपद्रव इति रायमुकुटः । द्रवद्रव्यप्रक्षेपणोचित चूर्णमिति सारसुन्दरी ॥ दुग्धादेर्दध्यादिभावार्थं तक्रादि प्रक्षेपे ॥ जवने । वेगे ॥ प्रापणे ॥ आप्यायने ॥ तञ्चु गतौ । ल्युट् ॥

आततः । त्रि । विस्तृते ॥ व्याप्ते ॥ आसमन्तात्ततम् । आतन्यतेवा । तनु विस्तारे । तनिमृङ्भ्यां किच्चेतितन् । आतन्यतेस्मवा । क्तः । अनुदात्तोपदेशेतिनलोपः ॥

आततायी । त्रि । वधोद्यते ॥ सयथा । अग्निदोगरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः । क्षेत्रदारापहारी च षडेते ह्याततायिन. ॥ आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् । नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चनेति ॥ द्रोहकारिणि ॥ आततं यथा तथा अयितु शीलमस्य ॥

आतपः । पुं । प्रकाशे । द्योते । सूर्यालोके ॥ अस्यगुणा यथा । आतपः कटुको रूक्षः स्वेदमूर्च्छातृषावहः । दाहवैवर्ण्यजननो नेत्ररोग प्रकोपण इति ॥ आतपति । तपसन्तापे । अच् ॥

आतपत्रम् । न । छत्रे ॥ आतपात् त्रायते । त्रैङ् पालने । आतोनुपेतिकः । सुपीतियोगविभागाद्वाक ॥

आतपवारणम् । न । छत्रे ॥ आतपस्य वारणम् ॥

आतपाभावः । पुं । छायायाम् ॥

आतपोदकम् । न । मृगतृष्णाजले ॥ आतपेनोष्णोदके ॥ आतपस्य उदकम् ॥

आतरः । पुं । तरपण्ये । नद्यादितरणार्थेयेकपर्दकादौ ॥ यथा ॥ आतरस्य घवहेतोर्मुररिपुतरणौ तत्रावलम्बस्व । अपणं पणमिह कुरुषे नाविक पुरुषे न विश्वासइति ॥ आतीर्य्यतेऽनेन । पुंसिसंज्ञायामितिघ. ॥

आतर्पणम् । न । प्रीणने । तृप्तौ । मङ्गलालेपने ॥ आङ् पूर्वात्तृपेर्भावेल्युट् ॥

आतापी । पुं । असुरविशेषे ।

आतायी । पुं । चिल्ले । चील इति प्र० ख्याते । आतायते तच्छीलः । तायृ सन्तानपालनयोः । सुप्यजाताविति णिनिः । यद्यप्यत्र वृत्तिकारादिभिरनुपसर्गे इत्युक्तम् तथापि भाष्ये उपसर्गे णिनिः स्वीकृतः ।

आतारः । पुं । तरपण्ये । आतरे ।

आतिः । स्त्री । शरारिविहङ्गे । आअतति । अत० । अज्यतिभ्यां चेतीण् । यद्वा । अतनम् । इणजादिभ्य इतीण् ॥

आतिथेयम् । न । अतिथ्यर्थे । अतिथिभोजनादौ । त्रि । अतिथौ साधौ । अतिथिसेवके । तत्र साधुरित्यधिकारे । पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् । स्त्री । ङीप् ॥

आतिथ्य । पुं । अतिथौ । त्रि । अतिथ्यर्थवस्तुनि भक्ष्यभोज्यादौ । अतिथिसेवायाम् ॥ अतिथये इदम् । अतिथेर्ण्यः ।

आतिवाहिकः । पुं । अर्चिरादिमार्गे । न । शरीरान्तरे । देवतायेन शरीरेण बिभर्त्ति जीवं परलोकं नयति तदातिवाहिकं शरीरान्तरमिति व्याख्यानात् ॥

आतुः । पुं । उडुपे । भेलके । डेंगा डेंगी इति भाषा ।

आ[illegible] त्रि । आमयाविनि । रोगिणि । कातरे । आतुतोर्त्ति । तुरच्चरो । छान्दसा अपि क्वचिद्भाषायां प्रयुज्यन्ते । वृगुपधेति कः ॥

आतृप्यम् । न । आता इति गौड़भाषा प्रसिद्धे फलविशेषे । सरीफा इति भाषाप्रसिद्धे । अस्यगुणास्तु । तृप्तिजनकत्वरक्तवर्द्धकत्वस्वादुत्वशीतलत्वबलमांसकारित्वहृद्यत्वदाहरक्तपित्तवायुनाशित्वानीति द्रव्यगुणाः ।

आतोद्यम् । न । वीणावंश्यादिवाद्ये । तच्चतुर्विधं भवति यथा । ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम् । वंश्यादिकन्तु शुषिरं कांस्यतालादिकं घनमिति । आसमन्तात् तुद्यते । तुद व्यथने । ण्यत् ।

आत्त । त्रि । गृहीते । ग्रस्ते ।

आत्तगन्धः । त्रि । दूरीभूताहङ्कारे । अभिभूते । आत्तः अरिणा गृहीतः गन्धो गर्वो यस्य सः । गृहीतगन्धे ।

आत्तगर्व । त्रि । भग्नाहङ्कारे । आत्तगन्धे । आत्तः वैरिणा गृहीतो गर्वो यस्य ।

आत्मगुणः । पुं । तार्किकसमयप्रसिद्धेषु बुद्ध्यादिचतुर्दशसु ॥ ते चोक्ताः । बुद्ध्यादिषट्कं सङ्ख्यादि पञ्चकं भावना तथा । धर्माधर्मौ गुणा एते

आत्मनःस्युस्तद्दृशा तेषु नवासाधारणगुणाः। पञ्चसाधारणगुणाः॥ इति॥ अत्राहुः। काणादजैमिनीयैश्चिच्छ ॥आत्मनोगुणाः। उक्तावृत्ता- त्मनोनैतेकिन्तु लिङ्गात्मनोहिते- इति॥

आत्मगुप्ता। स्त्री। कौँचइति प्र° लता विशेषे। मर्कट्याम्। शूकशिम्ब्याम्॥ आत्मनागुप्ता दुस्पर्शत्वात्। कर्तृ करणे इतिसमासः॥ त्रि। स्वरक्षिते॥

आत्मग्राही। त्रि। कुक्षिम्भरौ। स्वोदरपूरके। स्वार्थिनि॥

आत्मघाती। त्रि। आत्महन्तरि॥ अवैधबुद्धिपूर्वकात्महनने॥ यथा। व्यापादयेत् वृथात्मानस्वयंयोऽग्न्युदकादिभिः। विहितंतस्यनाशौचंनाग्निर्नाप्युदकादिकमिति कूर्मपुराणम्॥

आत्मघोष.। पुं। काके॥ कुक्कुटे॥ काकाइतिशब्दात् आत्मानं घोषयति। घुषिर्विशब्दे। अण्॥

आत्मचैतन्यम्। न। नित्यज्ञानस्वरूपे॥

आत्मजः। पु। तनये। पुत्रे। आत्मनो देहाज्जातः। पञ्चम्यामजाताविति जनेर्डः॥

आत्मजन्मा। पुं। पुत्रे। सुते॥ आत्मनोजन्मास्य॥

आत्मजा। स्त्री। कन्यायाम्। दुहितरि॥ बुद्धौ॥ आत्मनोजाता। डः। टाप्॥

आत्मतत्त्वम्। न। तत्त्वज्ञासकेनित्यशुद्धबुद्धमुक्तसत्यस्वभावेप्रत्यक्चैतन्ये॥

आत्मदः। पुं। अविद्यानिरासेनजीवस्वरूपाभिव्यञ्जकेश्रीगुरौ॥ हरौ॥ आत्मानंददाति। डुदाञ्दाने। आतइतिकः॥

आत्मदर्शः। पु। दर्पणे॥ आत्मास्वरूपं दृश्यतेऽनेन अत्रवा। पुंसीतघ॥

आत्मध्यानम्। न। आत्मनश्चिन्तने॥ ब्रह्मैवास्मीतिसद्वृत्त्यानिरालम्बतया स्थितिः। ध्यानशब्देनविख्यातापरमानन्ददायिनी त्याचार्योक्तेः॥

आत्मा। पुं। स्वभावे। यथा। पुण्यात्मा॥ प्रयत्ने। यथा। महात्मा॥ शरीरे। यथा। कृष्णात्मा॥ परव्यावर्त्तने। यथा। मैवैषात्मनाकृतम्॥ मनसि॥ धृतौ॥ मनीषायाम्॥ अर्के॥ हुताशने॥ वायौ॥ जीवे। देवत्वे। त्वंपदार्थे। नित्योपलब्धिस्वभावे। प्रत्यगात्मनि॥ यथा। प्रत्यग्रूपः परागूपाद्व्यावृत्तोनुभवात्मकः। प्रथतेयःसआत्मेति प्राहुरात्मविदोबुधाइति॥ अवस्थात्रयभावाभावसाक्षित्वेन सत्यज्ञानादिस्व

रूपे । निष्प्रपञ्चरितस्वरूपे । ज्ञान
मूर्त्योराश्रये । सर्वजन्तूनां प्रत्यक्चे
तनेस्वसंवेद्ये प्रसिद्धे । मुख्यगौणमि
थ्येतित्रिविधेषु साक्षिपुत्रादिदेहादि
लक्षणेषु । भूतात्माचेन्द्रियात्माच
प्रधानात्मातथा भवान् । आत्माच
परमात्माचत्वमेकः पञ्चधास्थितः ॥
त्यज्यमानेपिनत्यक्तः प्राप्यमाणेपि
नाप्यते । आगमापायसाक्षीयःसआ
त्मानुभवात्मकः ॥ विशुद्धचिद्रूपेत्व
म्पदलक्ष्ये तुरीये । अहंप्रत्ययवेद्ये
॥ इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्या
त्मनोलिङ्गम् । न्यायसूत्रम् । १।१०
॥ यच्चाप्नोतियदादत्ते यच्चात्तिविष
यानिह । यच्चास्यसन्ततोभावस्तस्मा
दात्मेतिकीर्त्तितः ॥ अततिसन्तत
भावेनजाग्रदादिसर्वावस्थास्वनुवर्त्त
ते । अतसातत्यगमने । सातिभ्यां
मनिन्मनिणाविति मनिण् । भावे
॥ ब्रह्मणि ॥ यथा । आत्मैवेदंसर्वम् ।
हार्दाकाशे ॥

आत्मनीनः । पुं । सुते । श्याले । मा
त्राधारे । विदूषके । त्रि । आत्मने
हिते । यथा । अद्यापि नैवात्मनीनं
कृतंकर्मयातंजनुः कापिलब्धंनवै श
र्म । किंदारदेहात्मजस्वर्णवृन्देनचे
तोरतिंविन्दसेचेन् मुकुन्देनेति ॥ प
थ्ये । आत्मनेहितम् । आत्मन्विश्व
जनभोगोत्तरपदात् खः ॥

आत्मपरिज्ञानम् । न । ब्रह्मात्मैक्यसा
क्षात् कारे । आत्मनः परिज्ञानम् ॥

आत्मप्रकाशः । पुं । आत्मनः प्रकाशे
। आत्मनस्ततप्रकाशत्वंयत पदार्था
वभासनम् । नाग्न्यादिदीप्तिवद्दी
प्तिर्भवत्यान्ध्यंयतोनिशि ॥

आत्मबन्धुः । पुं । पितृष्वसुः पुत्रे । मा
तुलपुत्रे । मातृष्वसुः पुत्रे । आत्म
नोबन्धुः ।

आत्मवीरः । पुं । प्राणवति । श्याल
के । विदूषके ।

आत्मभवः । पुं । सुरज्येष्ठे । हिरण्यग
र्भे । विष्णौ ।

आत्मभावः । पुं । मनोवृत्तौ ।

आत्मभूः । पुं । ब्रह्मणि । पितामहे ।
चतुरानने । कामदेवे । विष्णौ ।
शिवे । आत्मनोविष्णोः सकाशात्
आत्मनास्वयमेववाभवति । भू० ।
भुवःसंज्ञान्तरयोरितिक्विप् ।

आत्ममूली । पुं । दुरालभायाम् ।

आत्मम्भरिः । त्रि । स्वोदरपूरके । आ
त्मोदरमात्रस्यभरणकर्त्तरि । आ
त्मानंबिभर्त्तीतिविग्रहे फलेग्रहिरा
त्मम्भरिश्चेतिआत्मनोमुमागमोभृ
ञइन्प्रत्ययश्चनिपात्यते ॥

आत्मयाजी । त्रि । सर्वत्रपरमात्मभावना । पुरस्सरं नित्यं विहितकर्मणोनुष्ठातरि । आत्मशुद्ध्यर्थमेवस्वर्गाद्यासक्तिंहित्वायोदेवानयजतेसरवत्यर्थं ॥

आत्मयापनम् । न । कालक्षेपे । शरीररक्षणे । आत्मनः स्वस्ययापनम् ।

आत्मयोनिः । पुं । कामदेवे । परमेष्ठिनि ॥ शिवे । विष्णौ । आत्मैव योनिः उपादानकारणमस्य ।

आत्मरक्षा । स्त्री । महेन्द्रवारुणीदक्षे । आत्मनोरक्षणे ।

आत्मलाभः । पुं । ज्ञाने । आत्मनोलाभोऽज्ञानमेव तस्मात् ज्ञानमेवात्मनोलाभः । नत्वात्माद्यनात्मभवद्प्राप्तिलक्षणआत्मलाभः लभ्यलब्ध्रोर्भेदाभावात । आत्मलाभात् परोलाभोनास्तीति मुनयोविदुः ।

आत्मलोकः । पुं । स्वस्वरूपे ॥ आत्मैवलोकः ।

आत्मलोम । न । श्मश्रुणि । स्वलोममात्रे ।

आत्मवान । त्रि । अप्रमत्ते । अप्रमादिनि । सर्वदासावधाने । ज्ञानिनि । स्वेनहिन्विसदाप्रतिष्ठिते ॥ धृतिमति । मनस्विनि । अध्यर्थमतुप् । आत्मवान्सत्त्ववानुत्तमयुक्तमनाः ।

आत्मवश्यः । त्रि । मनोधीने । स्वाधीने ॥ आत्मनोवश्यः । आत्माधीनेयेयस्तथा ।

आत्मवित् । त्रि । मुक्त । आत्मानमस्वंशब्दादिविषयबुद्धिप्रत्ययसाक्षिणं योवेदसतथा । कर्मिणि । आत्मानंशरीरेन्द्रियाद्यतिरिक्तनित्यात्मकर्तारंपरलोकेदुःखभागिनंवेत्ति विजानातीति तथा ॥

आत्मशल्या । स्त्री । शतावर्याम् ॥

आत्मशुद्धिः । स्त्री । चित्तशुद्धौ । आत्मन शुद्धिः ।

आत्मसम्भावितः । त्रि । सर्वगुणविशिष्टोहमित्यात्मनैव पूज्यतांप्रापितोनकैश्चित् साधुभिस्तथ ॥ आत्मनासम्भावितः ।

आत्मसाक्षी । त्रि । बुद्धिवृत्तिषु ।

आत्मस्थः । त्रि । हृदिस्थे ।

आत्महत्या । स्त्री । आत्मघाते । स्ववधे ।

आत्मघ्ना । पुं । देवाजीवे । देवले । त्रि । आत्मघातिनि । उदरभेदिनि । अनात्मन्यात्माभिमानिनि । अविदुषि । आत्मघातस्य प्रायश्चित्तविधानादर्शनात् संसरणमेवफलं निश्चितम् ॥ आत्मानंहन्तिक्विप् । आत्माज्ञानंसर्वपापस्यमूलम । अविद्यादोषेणविद्

मानस्यात्मनस्तिरस्करणात विद्यमानस्यात्मनो यत्नार्थंफलमजरामरत्व दिसंवेदनादिलक्षणं तदुतस्येवतिरोभूत भवतीति प्राकृतोऽविद्यानात्महेत्युच्यते। येयथासन्तमात्मानमकर्त्तारं स्वप्रभुम्। कर्त्ता भोक्तेतिमन्यन्तेतएवात्महनोजनाः। यथाहु राचार्याः। लब्ध्वाकथञ्चिन्नरजन्मदुर्लभं तत्रापिपुंस्त्वंश्रुतिपारदर्शनम्। यस्त्वात्ममुक्त्यै नयतेतमूढधी सह्यात्महास्वं विनिहन्त्यसद्ग्रहादिति। नृदेहमाद्यंसुलभं सुदुर्लभ प्लवसुकल्पगुरुकर्णधारम्। मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमानभवाब्धिं नतरेत् सआत्महेति श्रीभागवतम्।

आत्माधीन। पुं। सुते। पुत्रे। प्राणधारे॥ श्य.ले। विदूषके। इतिहेमचन्द्र.। त्रि। स्वायत्ते। आत्मनोऽधीन.।

आत्माशी। पुं। मत्स्ये। इतित्रिकाण्डशेष'॥

आत्माश्रय। पुं। दोषविशेषे। स्वापेक्ष्य मात्माश्रयः। स्वस्य स्वापेक्षत्वे ऽनिष्टप्रसङ्ग मात्माश्रयः। स्वोत्पत्तिस्थितिज्ञप्तिद्वारात्त्रेधा। यथा। यद्यर्यंघटे एतद्घटजन्यः स्यात्तदाएतद्घटानाधिकरणक्षणोत्तरवर्त्ती नस्यात्। यद्ययंघटएतद्घटवृत्ति'स्यात् एतद्घटव्याप्योनस्यात्। यद्ययंघट एतद्घटज्ञानाभिन्नःस्यात् ज्ञानसामग्रीजन्य' स्यात्। एतद्घटभिन्नःस्यादितिवासर्वत्रापाद्यम्॥

आत्मीयः। त्रि। अन्तरङ्गे। स्वकीये॥

आत्मोद्भवः। पुं। आत्मजे। पुत्रे।

आत्मोद्भवा। स्त्री। दुहितरि। पुंश्राम। माषपर्ण्याम्।

आत्मोपजीवी। पुं। भारिकादौ। देहक्लेशोपजीविनि। आत्मनादेहेनउपजीवितुं शीलमस्य। सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये इति णिनिः।

आत्यन्तिकम्। त्रि। अतिशयेन॥

आत्ययिकः। त्रि। अत्ययः प्रयोजनमस्येत्यर्थे। अत्ययार्हे। विनयादित्वात् स्वार्थे ठक्॥

आत्रेयः। पुं। अत्रिमुनेः पुत्रेषु। तेच त्रयः। दत्तोदुर्वासाश्चन्द्रश्चेति। अत्रेरपत्यम्। इतश्चानिञ इतिढक्॥ शरीरस्थरसधातौ। इतिहेमचन्द्रः।

आत्रेयिका। स्त्री। ऋतुमत्याम्। इति हलायुध.।

आत्रेयी। स्त्री। ऋतुमत्याम्। पुष्पवत्याम्। नदीविशेषे। आत्रेयीवाऽगम्यत्वात्। अपत्ये ढक्। ङीप्॥

आथर्वण । पुं । अथर्ववेदज्ञब्राह्मणे पुरोहिते ॥आथर्वणिकस्यायं धर्मआम्नायोवा । आथर्वणिकस्येकलोपश्चेच्छया इकोलोपश्च ॥ न । अथर्वणास मूहे ॥ भिक्षादिभ्योण् ॥ शान्तिगृहे ॥

आथर्वणिक । पुं । अथर्वाध्ययनपरे ॥ अथर्वाणमधीते । वसन्तादिभ्यष्ठक् । वाखिडनायनेतिनिपातनाट्टिलोपो न भवति ॥

आददानः । त्रि । उपादानंकुर्वति ॥

आदमः । पुं । मुनिविशेषे ॥ अयच्चर-मलप्रवर्त्तकोद्वापराख्येबभूव ॥

आदर । पुं । आरम्भे । सन्माने । सादरे । दृविदारणे । आङ्पूर्व ऋदोरप् ॥

आदर्शः । पुं । टीकायाम् । दर्पणे । प्रतिपुस्तके ॥ आदृश्यते रूपमत्र । दृशिरप्रेक्षणे । हलश्चेति घञ् ॥

आदह । । उपक्रमे ॥ कुत्सने ॥ हिंसायाम ॥

आदाता । त्रि । ग्रहीतरि ॥

आदानम । न । ग्रहणे । स्वीकारे । वाजिनामलङ्कारे । रोगलक्षणे । आङ्पूर्वाद्दाञो ल्युट् ॥

आदानी । स्त्री । नलुर्वा इति प्रसिद्धे फलशाके । हस्तिघोषायाम् ॥

आदास्यमान । त्रि । गृहीष्यमाणे ।

आदि । पु । प्रथमे । प्रागसत्त्वस्थायाम । नियतपूर्ववृत्तिकारणे । इत्यर्थे ॥ आदिशब्दः पदान्तरगुणस्यसूचकोमतः । यथा गर्गादि ॥ सामीप्येव्यवस्थायां प्रकारेऽवयवेतथा ॥ आदिशब्दन्तुमेधावीचतुर्ष्वर्थेषुलक्षयेत् ॥ आमर्थमंदीयतेगृह्यते । इदाञ् । उपसर्गेघोः किः ॥ यद्वा । अदनम् । अद । इगुपधादिभ्यइतीः ॥ पूर्वकालवृत्तित्वमादित्वम् ॥

आदिकर । पु । प्रथमकर्त्तरि । आदेः कर्त्तरि ॥आदिंकरोति । दिवाविभेतिट ॥

आदिकविः । पुं । ब्रह्मणि ॥ वाल्मीकिमुनौ । प्राचेतसे ॥ आदौकविः ॥ कर्मधारयोवा ॥

आदिकारणम् । न । पूर्वनिर्दिष्टे । मूलहेतौ । निदाने ॥ आदौ कारणम् । आदि मुख्यंकारणम ॥

आदिगदाधर । पुं । गयास्थदेवताविशेषे ॥

आदिजिन । पुं । ऋषभदेवे ॥

आदितः । । आदावित्यर्थे ॥ आद्यादिभ्यउपसंख्यानात्तसिः

आदिताल । पुं । तालविशेषे ॥ यथा एकएवलघुर्यत्रआदितालः सकथ्यते ॥

।गुरुस्तत् पुरतोवाच्य'प्रायेणैतन्निद र्शनमितिसङ्गीतदामोदर: ॥

आदितेय. । पुं । देवे । अदित्या. अपत्यम् । कृदिकारादक्तिन इतिङीषन्तात् स्त्रीभ्योढक । तस्य एयादेश ।

आदित्य: । पुं । सवितरि । सूर्ये ॥ देवे ॥ आदित्याद्वादशप्रोक्ताइतिवचनात् गणेवहुवचनान्त. । यथा । तत्रचद्वादशादित्याश्चैत्रादिषु तपन्ति ये । विष्णुयमविवस्वन्तोंशुमान् पर्जन्य इत्यपि। वरुणेन्द्रधातृमित्रा पूषा त्वष्टाभग.परइति । विष्णौ । आदित्यमण्डलान्तस्थे हिरण्मयेपुरुषे । अर्कवृक्षे । अदिते रादित्यस्यवाऽपत्यमित्यर्थे दित्यदित्येतिण्य: ॥ अदितेरखण्डितायामह्या: अयंपतिरित्यर्थेवा मत्यय. । पुनर्वसुनक्षत्रे द्विवचनान्त: । न । उपपुराणविशेषे ॥

आदित्यपत्र' । पुं । क्षुपविशेषे । अर्कपत्रे ॥

आदित्यपुष्पिका ।स्त्री। लोहितार्के ।

आदित्यभक्ता । स्त्री । सुवर्चलायाम् । हुलहुल् इति प्रसिद्धे शाके ।

आदित्यभवनम् । न । उदयाद्रौ । आदित्योऽस्मिन्भवति प्रादुर्भवति ।

आदित्यवर्ण' । त्रि । सर्वजनतोऽवभासके स्वभानेऽन्यप्रकाशानपेक्षे । आदित्य:वर्णोऽस्य ।



आदित्यसूनु: । पुं । सुग्रीववानरे यमे । कर्णे । शनौ ॥ सावर्णिमनौ ॥ वैवस्वतमनौ । आदित्यस्यसूनु:॥

आदिदेव: । पुं । देवदेवे । महादेवे । नारायणे । विष्णौ । जगदुपादानादिगुणवति वासुदेवे । विधातरि । आदि:कारणम् सचदेवश्च ।

आदिपुरुष' । पु । ब्रह्मणि । चतुर्वक्रे ।

आदिवराह: । पु । विष्णौ । हरौ ॥

आदिमम् । त्रि । आद्ये । प्रथमभववस्तुनि । आदौ भवम् । मध्यान्मादित्य न्नादेश्चेतिवचनात् म: । यद्वा । अग्रादिपश्चाड्डिमच् ।

आदिमत । त्रि । कार्य्ये । सकारणे ॥ आदिर्विद्यतेऽस्य । मतुप् ॥

आदिराज: । पुं । पृथुसंज्ञके नृपे । आदौराजा । टच् ।

आदिशक्ति' । स्त्री । परमात्मशक्तौ ।

आदिष्टम् । त्रि । आदेशिते । उपदिष्टे । न । आज्ञप्ते ॥ उच्छिष्टे । आदिश्यते । दिश: क्त: । आदिष्टमादेशितेविषु । आज्ञप्तोच्छिष्टयो: क्लीवमिति मेदिनी ।

आदिष्टी । त्रि । आदेशकर्त्तरि । आदिष्टमनेन । इष्टादिभ्यश्चेति इनि:

। पु । ब्रह्मचारिणि । ब्रतादेशनम अाद । त्रि । प्रथमे । आदिभवे । अ...

आदिष्टंतदस्यास्ति । इनि ॥ | द्वितीये । न । धान्ध । ... दे ...

आदीनव । पु । दोषे । परिक्लिष्टे । दुरन्ते ॥ आदानम । दीङ क्षये । भावे क्त । स्वादयआदित । आदितश्चेतिनत्वम् । आदीनस्यवानम् । घञर्थेकइति वाहुलकाद्वाते क ॥

दिगादिभ्योयत ॥

आद्यकवि । पुं । धातरि । वाल्मीकौ ।

आद्यमाषक । पु । माषकपरिमाणे । पञ्चगुञ्जासु ॥ ...कृष्णलैसमधते विज्ञेयो रौप्यमाषक इत्यपिदर्शनात् । केचित अयमस्मिन्कालेइत्याहु. । पूर्वंतु माषकंसप्तकृष्णलाइति । मष्यते । मषहिंसायाम् । हलश्चेति घञ । क । आद्योमुख्यश्चासौ माषकश्च ॥

आदीपनम । न । आलिम्पने । सन्दीपने ॥

आदृत । त्रि । कृतादरे । सादरे । अर्चिते । पूजिते । आद्रियतेस्म । दृङआदरे । क्त. ।

आदेश. । पुं । आज्ञायाम् । शासने । उपदेशे । शास्त्राचार्योपदेशगम्ये । ...र्थसञ्चारे । ज्योतिश्शास्त्रफले । वर्णस्यस्थाने वर्णान्तरोत्पत्तौ । प्रकृतिप्रत्ययोपघातिकार्ये । आदेशनम् । आदिश्यते येनवा । दिश० । घञ् ।

आदेशी । पुं । दैवज्ञे । गणके । त्रि । आदेशवति । म० इनि । उपदेशके । आदिशतितच्छील' ।

आदेष्टा । पुं । आदेशकर्त्तरि । ऋत्विजि । यजमाने । यागविषये स्वेष्टसम्पादनाय यत्नार्थं कर्मकुर्वितिकृत्विजांप्रेरके । आदिशति ऋत्विजादीन् यागादिस्वेष्टसम्पादनाय प्रेरयति । दिशअतिसर्जने । तृच् ॥

आद्यबीजम । न । आदिकारणे । निमित्ते । आद्यंमुख्यंबीजम् ।

आद्या । स्त्री । उमायाम् । दुर्गायाम् । काल्याम् । तारायाम । त्रिपुरसुन्दर्याम् । भुवनेश्वर्याम् । प्रकृतौ ॥ यथा । सत्येतुसुन्दरी आद्या त्रेतायांभुवनेश्वरी । द्वापरेतारिणी आद्याकलौ काली प्रकीर्त्तितेतिमुण्डमालातन्त्रम । आदौभवा । दिगादित्वाद्यत् । टाप् ।

आद्याकाली । स्त्री । परायप्रकृतौ ॥ यथा । कालसङ्कलनात्कालीसर्वेषामादिरूपिणी । कालत्वादादिभूतत्वादाद्याकालीति गीयतइति श्रीमहानिर्वाणतन्त्रम् ।

आदून । त्रि । आदिहीने । औदरिके । विजिगीषाविवर्जिते ॥ विजिगीषा व्यवसायःकश्चित् प्रकर्षोवा आलस्यात् तेनविहीनोऽयं केवलमुदराधीन इतिभरतः ॥ आदेवीत् । आङ् पूर्वाद्दीव्यतेरकर्मकत्वात् क्तः । दिवो विजिगीषायामितिनिष्ठातस्यनत्वम् । यस्यविभाषेतिनेट् । च्छ्वोरित्यूठ् ॥

आद्योपान्तम् । न । पूर्वापरमित्यर्थे ॥

आधमनम् । न । वन्धके । इतिस्मृतिः ॥

आधर्म्मिक । त्रि । अधर्मशीले । अधर्म्मं चरति । अधर्माच्चेतिवाच्चि का ठञ् । चरतिरिहासेवायाम् । नत्वनुष्ठान मात्रे । तेनदैववशात् अधर्मे प्रवृत्तो पिसुवृत्त. आधर्मिक इतिनोच्यते ॥

आधर्षित । त्रि । अवमानिते ॥

आधानम् । न । अग्न्याधाने । गर्भाधाने । बीजप्रक्षेपकाले । आधीयते । डुधाञ् । ल्युट् । वन्धके । स्थापित-द्रव्ये ॥

आधानिकम् । न । गर्भाधानसंस्कारे ॥ आधानम् प्रयोजनमस्य । प्रयोजनमिति ठक् ॥

आधारः । पुं । अधिकरणे । आश्रये । औपश्लेषिको वैषयिकोऽभिव्यापकश्चेत्याधारस्त्रिधा । यथा । कटे आस्ते स्थाल्यां पचतीत्यौपश्लेषिकस्यो-दाहरणम् । मोक्षेइच्छास्तीतिवैष-यिकस्य । सर्वस्मिन्नात्मास्तीत्यभिव्यापकस्योदाहरणम् ॥ अम्बुधारणे । जे आदिसेकार्थं सेतुना वहुनालंजलं निरुध्यधार्यतेस आधारोवद्धकन्दरादिः बाधबन्धइतिख्यातः टीका इतिचेतिभरतः ॥ यस्यार्थंजल वन्धनमाधारइति वैकुण्ठः ॥ जेत्रादिसेकार्थं जलाधारस्थानमाधार इति मधु. ॥ आलवाले ॥ आध्रियन्ते अस्मिन्निति आधारः । अध्यायन्यायेतिसूत्रे अवहाराधारेत्युपसंख्यानाद्धिकरणेघञ् ॥

आधारशक्तिः । स्त्री । सर्वाधारशक्तिरूपायां परदेवतायाम् ॥

आधार्म्मिकः । त्रि । अधार्मिके ॥ इति त्रिकाण्डशेषः । नाधा र्मिकोवसेद्ग्रामे नव्याधिवहुलेभृशम् ॥

आधिः । पुं । मनःपीडायाम् । मनस्यायाम ॥ अधिष्ठाने ॥ वन्धके । यथा । आधिर्विनश्येद्विगुणोभवेयदिनमोक्ष्यते इति ॥ व्यसने । यथा । आधिप्रस्तो येनमुक्तेत् सधोरः । आधीयतेदुःखमनेन आधानंवा । डुधाञ् धारण पोषणयोः । उपसर्गेघोःकिः ॥

आधिक्यम् । न । अतिशयतायाम् । अधिकत्वे । अधिकस्यभावः । ष्यञ् ।

आधित्तः । त्रि । वक्रे ॥ व्यथिते ॥ इत्य जयपाल ॥

आधिदैविकम् । त्रि । दाहशीताद्युत्थे दुःखे । अतिवातातिवृष्ट्यादिहेतुकेदुःखे ॥ देवान् अग्निवाय्वादीन् अधिकृत्यप्रवृत्तम । अधिदेवंवाभवम् । अध्यात्मादेट्ठञिष्यते । अनुशतिकादीनाञ्चेत्युभयपदवृद्धिः ॥ यच्च राक्षसविनायकग्रहाद्यावेशनिबन्धनमाधिदैविकदुःखमितिसाङ्ख्याः ॥

आधिपत्यम् । न । अधपतित्वे । प्रभुत्वे । स्वामित्वे ॥ अधिपतेःकर्मभावो वा । ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ् ॥

आधिभोगः । पुं । बन्धकद्रव्यस्यभोगे ॥

आधिभौतिकम् । त्रि । व्याघ्रसर्पादिप्रयुक्तदुःखादौ ॥ भूतानिप्राणिनोधिकृत्यप्रवृत्तमधिभूतंवाभवम् । अध्यात्मादेट्ठञ् । अनु० उ० ॥

आधिमन्यवः । पुं । ज्वराग्नौ ॥

आधिवेदनिकम् । न । स्त्रीधनविशेषे ॥ पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम् । आधिवेदनिकञ्चैवस्त्रीधनं परिकीर्त्तितमित्यत्राधिवेदनिकस्य पृथक्त्वेनोक्तत्वात् तत्स्वरूपमाह । द्वितीयस्त्रीविवाहार्थिनापूर्वस्त्रियैपारितोषिकं धनंयद्दत्तंतदाधिवेदनिकमुच्यते । यथा । अधिविन्नस्त्रियैदेयमाधिवेदनिकं समम् । नदत्तंस्त्रीधनंयस्यैदत्तेत्वर्द्धं प्रकीर्त्तितम् ॥ इति याज्ञवल्क्य ॥

आधिस्तेन. । पुं । बन्धकचोरे ॥ यथा । नभोक्तव्योबलादाधिर्भुञ्जानोवृद्धिमुत्सृजेत् । मूल्येनतोषयेच्चैनमाधिस्तेनोन्यथाभवेदितिमनु. ॥

आधुत. । त्रि । आधूते ॥ आधुयतेस्म । धुञ् कम्पने । क्तः ॥

आधुनिक. । त्रि । इदानीन्तने । नव्ये । अधुनाजाते ॥ ठञ् ॥

आधूतः । त्रि । ईषत् कम्पिते ॥ आधूयतेस्म । धूञ् कम्पने । क्तः । यस्य विभाषेतिनेट् ॥

आधेयम । त्रि । आधारस्थि । आधारस्थितवस्तुनि ॥ आधातुंयोग्यम् । अचोयत् । ईद्यति । उत्पाद्ये ॥ यथा पक्वमृन्मयपाके रक्तताग्रुणः सवह्निसंयोगादिनानिष्पाद्यते ॥

आधोरणः । पुं । निषादिनि । हस्तिपके ॥ आधोरयति । धोरृगतिचातुर्य्ये । ल्यु ॥

आध्मात. । पुं । शब्दिते ॥ दग्धे ॥ त्रि । वातरोगविशेषविशिष्टे ॥ यथा । साटोपमत्युग्ररुजमाध्मातमुदरं भृशमिति । जानीयादित्यन्वयः ॥

आध्मानः । पुं । वातव्याधिविशेषे ॥ त

स्वरूपम् । साटोपमत्युग्रहजमा
ध्मातमुदरभृशम् । आध्मानमिति-
जानीयाद्घोरं वातनिरोधजमिति
निदानम् ॥ आनाह ॥

आध्माता । स्त्री । [illegible] आनाम गन्ध
द्रव्ये ॥

आध्मा [illegible] । [illegible] । [illegible]

आध्यात्मिकम् । न । शरीरादौ ॥ श्रो
कमे [illegible] नादिनिमित्त
दुःखादौ ॥ दुःखविशेषे ॥ आत्मा
[illegible]संघातमधिकृत्य प्रवृत्तम् । अ
ध्यात्मम् एव । अध्यात्मादिभ्यः ठञ् ॥
तच्च द्विविधम् । शारीरकं मानसञ्च ।
तत्र शारीरं व्याध्युत्थं मानसं का
माद्युत्थम् ।

आध्यानम् । न । चिन्तने । उत्कण्ठा-
पूर्वकस्मरणे ॥ ध्यै चिन्तायाम् ल्युट् ॥

आध्यापकः । पुं । अध्यापके ॥ स्वार्थे अण् ॥

आध्वर्यवम् । न । यजुर्वेदविहिते
अध्वर्युसम्बन्धिनि ॥ अध्वर्योरिदम्
पदाध्वर्युपरिषदश्चेत्यञ् । अध्व
र्योः कर्म भावो वा । उद्गात्रादित्वा
दञ् ॥

आनः । पुं । अन्तर्मुखश्वासे । उच्छ्वासे ॥

आनकः । पुं । पटहे ॥ भेर्य्याम् । मृद
ङ्गे । ध्वनद्घने । सशब्दमेघे ॥ आ
नयति प्राणयति [illegible]

तियोधाने । आङ् पूर्वकात् अन प्रा
णनइत्यस्मात् ण्वुल् ॥

आनकदुन्दुभिः । पुं । कृष्णजनके । व
सुदेवे ॥ आनकैर्दुन्दुभिश्चोपलक्षितः
। वसुदेवजन्मनि देवैरानकदुन्दुभि
वादनात् ॥ पुं । स्त्री । वृहड्ढक्का
याम् ॥

आनतः । त्रि । नते । अवाग्रे । अ मु
खे ॥ विनयनम्रे ॥ आनमतिस्म । आ
ङ् नमप्रह्वत्वे । गत्यर्थेति क्त ॥

आनतिः । स्त्री । नम्रतायाम् ॥

आनद्धम् । न । चर्मवद्धमुखवाद्यमात्रे
मुरजपटहादौ ॥ वेशभूषादिक
ल्पनायाम् ॥ त्रि । सन्दिते । ग्रथिते ।
बद्धे । व्याप्ते ॥ यथा । आनद्धः [illegible]भि
र्दोषैरिति ॥ आनह्यते [illegible]
णह बन्धने । [illegible]
[illegible]ध ॥

आननम् । न । मुखे ॥ आ अनन्त्यनेन
। अन प्राणने । ल्युट् ॥

आनन्तर्य्यम् । न । अनन्तरे । चतुर्व
र्णादित्वात् स्वार्थे ष्यञ् ॥

आनन्त्यम् । न । अनन्तमित्यर्थे ॥ दे
शकालवस्तुपरिच्छेदशून्ये । अनन्त
मेव । अनन्तावसथेतिह भेषजाञ्
ञ्य ॥

आनन्दः । पुं । सम्मदे । हर्षे । सुखे ।

। मद्ये । छन्दोभेदे । ढगणेऽ। आदि गुरुत्रिकले । प्राक्पश्चिमोत्तरद्वार गृहे । आत्मनि । बुद्ध्यादौप्रतिबि म्बतयाऽ वस्थितस्यप्रियादिशब्दवा- च्यस्य आनन्दमयस्यकारणभूते । ब्रह्मणि । आनन्दनम् । टुणदिसम द्धौ । घञ् । ४८ वत्सरे । निष्पत्ति. सर्वसस्यानांसर्वशस्यसमार्घता।इतंतै १.समंयाति आनन्देनन्दतिप्रजाइति ततफलम् । त्रि । आनन्दविशिष्टे । सुखिनि । हर्षयुक्ते । आनन्द. स्वरू पमस्य ।-आनन्दोस्ति अस्य अस्मिन् वा । अर्शआदिभ्योऽच् ।

आनन्दथुः । पुं । सुखे । आनन्दे । चि। खनि । टुणदि° । द्वितोऽथुच् ।

आनन्दकृत. । पुं । मेहने ।

आनन्दनम् । न । गमनागमनसमये सु···द्यादेरा···लिङ्गनारोग्यस्वागतादि प्रश्ना··· ··आनन्दोत्पादने । सभाज ने । ··प्रश्न । टुणदि° । ल्युट् ।

आनन्दपट । पुं । न । नवोढावस्त्रे ।

आनन्दप्रभवम् । न । रेतसि । वीर्य्ये । आनन्दात् प्रभवोऽस्य ।

आनन्दभुक् । पुं । प्राज्ञे । यथा लोके निरायासस्थितःसुखी आनन्दभुगुच्य ते तथा सुषुप्तोपि आनन्दभुक् । अ त्यन्तानायासरूपाहीयं सुषुप्तिरूपा स्थितिरनेन प्राज्ञेनानुभूयते तस्मा दानन्दभुक् प्राज्ञ ।

आनन्दमय. । पुं । जीवे । आनन्दप्र चुरे । प्राज्ञे । मनसोविषयविषय्या कारस्पन्दनायासदुःखाभावादानन्द मय आनन्दप्राय' प्राज्ञउच्यते । कारणशरीरे सर्वोपरमत्वात् सुषु- प्तौस्थूलसूक्ष्मप्रपञ्चलयस्थाने । पञ्च मकोषे । काचित्तत्सुखाद्वत्तिरान न्दप्रतिबिम्बभाक् । पुण्यभोगे भोग शान्तौ निद्रारूपेणवर्त्तते । कादा चित्कत्वतो नात्मास्या दानन्दमयो प्ययम् । प्राचुर्य्येमयट् । त्रि । आन न्दप्रधाने । न । ब्रह्मणि ।

आनन्दसम्प्लव: । पुं । परमानन्दे । आन न्दसम्प्लवे लोनोनापश्यमभयंमुने ।

आनन्दा । स्त्री । विजयायाम् । आरा मशीतलायाम् ।

आनन्दार्णवः । पुं । परमेश्वरे । यात्रा योगान्तरे । यथा । स्वोच्चमूलत्रिको णस्थःसौम्यःपापविवर्जित' । आनन्दा र्णवयोगोयं धर्मार्थविजयावह इति ।

आनन्दि. । पुं । कौतुके । हर्षे ।

आनन्दित. । त्रि । आनन्दयुक्ते । आह्ला दिते । हृष्टे । आनन्द' सञ्जातोऽस्य । तारकादित्वादितच् ।

आनन्दी । त्रि । सुखिनि । हृष्टे । आ

नन्दविशिष्टे ॥ सर्वसम्पदासमृद्धे ।
अनन्दोऽस्याऽस्ति । इति ॥

आनन्दी । स्त्री । आकन्दा नाम इति गौडभाषा प्रसिद्धे इक्षविशेषे ।

आनमनम । न । सर्वतोभावेन नमने ॥

आनर्मित । त्रि । आवर्जिते ॥

आनय । पु । उपनयने ॥

आनयनम । न । स्थानान्तरात्स्थानान्तरानीते । लाया इति भाषा ॥

आनर्त्तः । पुं । द्वारकाइतिख्यातेदेशे ॥ यथा । आनर्त्तान्सउपव्रज्यस्वृद्धान जनपदान् स्वकान । दध्मौदरवरं तेषांविषादं शमयन्निवेति । आनर्त्तदेशवासिनिजने ॥ जले ॥ रणे ॥ नृत्यशालायाम् ॥ आनृत्यन्त्यत्र नृत्तगीतादिविशेषे । हलश्चेति घञ्॥

आनर्त्तपुरम । न । द्वारावत्यांपुर्याम् ॥

आनर्त्तित । त्रि । कम्पिते ॥

आनाम्य । त्रि । अभिभवनीये । आङ्पूर्वस्य नमतेरभिभवार्थे । यो ऽचुपधादितियतिप्राप्ते निपातनात् ॥

आनाय । पु । जाले ॥ नयनम् । णी ञ प्रापणे । श्रिणीभुवोनुपसर्ग इति घञ् । आसमन्तान्नायोऽनेन । आनयन्ति मत्स्यानानेन । जालम् इति शब्दरत्नावली ॥

आनाय्यः । पुं । दक्षिणाग्नौ । आनीयते । णीञ० । आनाय्योऽनित्ये इत्याङ्पूर्वान्नयतेर्ण्यदायादेशश्च निपात्यतेदक्षिणाग्निविषये । दक्षिणाग्निर्हिगार्हपत्यादानीयते अनित्यश्च सततमप्रज्वलनात् ॥

आनाहः । पु । विण्मूत्ररोधकरोगे । विबन्धे । विष्टम्भे ॥ तस्यसम्प्राप्तिरूपे यथा । आमंशकृद्वानिचितंक्रमेण भूयो विबद्धंविगुणानिलेन । प्रवर्त्तमानं न यथास्वमेनविकार मानाह मुदाहरन्तीतिनिदानम् ॥ दैर्घ्ये ॥ आनहनम् आनह्यतेऽनेनवा । णहबन्धने । भावे करणे वा घञ् ॥

आनिलिः । पुं । हनुमति । भीमे ॥ अनिलस्यापत्यम् । अत इञ् ॥

आनिली । स्त्री । स्वातिनक्षत्रे ॥ अनिलोदेवताऽस्याः । अण् । ङीप् ॥

आनीतः । त्रि । आहृते ॥ आनीयतेस्म । णीञ० । क्त ॥

आनीलः । पुं । नीलघोटके ॥ त्रि । ईषन्नीले ॥

आनुकल्पिकः । पुं । अनुकल्पस्थे ॥ अनुकल्पमधीते वेद वा । उक्थादित्वाट्ठक् ॥

आनुकूलिक । त्रि । अनुकूले ॥ अनुकूलं वर्त्तते । ततप्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलमिति ठक् ॥

आनुकूल्यम् । न । अनुकूलतायाम् । साहाय्ये ॥ भावे कर्मणि वा ष्यञ् ॥

आनुपदिकः । त्रि । अनुपदं धावमाने ॥ अनुपदं धावति । गाथोत्तरपदप दव्यनुपदं धावतीति । ठक् ॥ अनुप दमधीते । उ॰ ठक् ॥

आनुपूर्व्यम् । न । अनुक्रमे ॥ पूर्वं पूर्वं पूर्वानुक्रमेणवा । वीप्सायां योग्यता यां वाऽव्ययीभावः । अनुपूर्वस्य भावः वर्णदृढादिभ्यःष्यञ् चेतिष्यञ् । ङीष् । हलस्तद्धितस्येतियलोपः । स्त्रियां वेतिपक्षेक्लीवता ॥

आनुपूर्वी । स्त्री । परिपाट्याम् । मूला वधिक्रमे ॥ अनुपूर्वं भावः । वर्णदृढा .भ्यः ष्यञ्चेति ष्यञ् । षित्त्वान् ङीष् , यलोपः ॥

आनुमानिकम् । न । प्रकृतौ । प्रधाने ॥ त्रि । युक्तिसिद्धे । लैङ्गज्ञाने ॥ अनु मानविषयीभूते ॥ अनुमानसम्ब- न्धीये ॥

आनुरक्तिः । स्त्री । अनुरागे ॥

आनुलोमिकः । त्रि । अनुलोमे ॥ अनु लोमं वर्त्तते । तत्प्रत्यनुपूर्वमित्या दिना ठक् ॥

आनुश्रविकः । पुं । स्वर्गादिसाधनेकर्म कलापे ॥ शब्दप्रतिपन्ने स्वर्गभोगादौ ॥ गुरुपाठादनुश्रूयते इत्यनुश्रवो वे- दः । तत्र भवइत्यर्थे ठक् प्रत्ययः ॥

आनुषक् । । । आनुपूर्व्ये ॥

आनूपम् । न । भौमपानीयप्रभेदे ॥ यथा । वह्वम्बुर्बहुवृक्षश्चवातश्लेष्माम यान्वितः । देशोऽनूपइतिख्यात आ नूपं तद्भवंजलम् ॥ आनूपंवार्य्यभिष्य न्दि स्वादुस्निग्ध घनंगुरु । वह्निहृत् कफकृन्निन्द्यं विकारानकुरुतेवहूनि ति ॥ पुं । अनूपदेशस्थजन्तुमात्रे ॥

आन्रत । त्रि । अनृतस्वभावे ॥ अनृत शीलमस्य । छत्रादिभ्योऽण् ॥

आन्रशंस्यम् । न । अनुकम्पायाम् । अ निष्ठुरतायाम् ॥ भावेष्यञ् ॥

आनेयः । पुं । भ्रातृाद्वैश्यकुलाद्वा आ नीते दक्षिणाग्नौ ॥ त्रि । आनेतुंश क्येघटादौ ॥ आनीयते । णीञ्॰ । अचोयत् ॥

आन्तरः । त्रि । अभ्यन्तरे ॥

आन्तरप्रपञ्चः । पुं । आभ्यन्तरेद्वैतवि स्तारे ॥ सचान्नमयादिपञ्चकोषशरी रादित्रयास्तीत्यादिषड्भावविकार त्वङ्मांसादिषाट्कौशिकाशनापि- पासादिषडूर्म्मिश्रोत्रादिज्ञानेन्द्रिय- पञ्चकवागादिकर्म्मेन्द्रियपञ्चकप्राणा दिवायुपञ्चकमनआद्यन्तःकरणचतु ष्टयसङ्कल्पाद्यन्तःकरणवृत्त्यवस्थात्र यतद्व्यापारतदभिमानिविश्वतैजस-

प्रागसमाधिमूर्च्छाकरणत्रदकाम-क्रोधाद्यरिषड्वर्गसाधनचतुष्टयसा-त्विकादिगुणत्रयसुखदु. खज्ञानाज्ञा नपञ्चक्लेशमैत्र्यादिचतुष्टययमाद्य-ष्टाङ्गप्रत्यक्षादि प्रमाणचतुष्टयरो-गारोग्यादिसमुदायो यथायोग्य-विविधनामरूपगुणधर्मसत्ताश्रयो-बोध्यः ।

आन्तरालः । पुं । आत्मनोऽणुत्ववादिनि ॥ अणुवदन्त्यान्तरालः 'सूक्ष्मनाडीप्रचारत' । रोमाग्रः सहस्रभागेन तुल्यास्तु प्रचरन्त्ययम् ।

आन्तरीक्षम् । न । अन्तरीक्षे । गगने । त्रि । अन्तरीक्षभववस्तुनि ।

आन्तिका । स्त्री । अन्तिकायाम् ।

आन्त्रम । न । अन्त्रे । अमतिशनेनवा । अमगतौ । अमिचिमीतिक्तः । अनुनासिकस्यक्विझलोरितिदीर्घः । त्रि अन्त्रसम्बन्धिनि ॥

आन्दोलनम् । न । पुनःपुनरालोचनायाम् । कम्पने । चलने ।

आन्दोलितम त्रि । कृतान्दोलने । कम्पिते । चलिते ॥

आन्धसिक' । त्रि । पाचके । सूपकारे । अन्धोभक्तंशिल्पमस्य । शिल्पमिति-ठक ।

आत्मः । त्रि । अर्वाचीने । अर्वाग्भवः ।

अन्त्राः ।

आन्यभाव्यम् । न । अन्यभावे । अन्यस्य भावोन्यभावः । ततोब्राह्मणादित्वात् स्वार्थे ष्यञ् । अथवा अन्योभावो ऽन्यद्वस्तु तस्यभावइति भावेष्यञ् ।

आन्वयिकः । त्रि । प्रशस्तकुलजे । सत्कुलोद्भवे । कौले । दिव्यभावरतेकुलाचारिणि साधके ॥ ऊर्द्धस्रोतसिकःशैवःकौल आन्वयिकःस्मृत इति त्रिकाण्डशेषः । अन्वयेकुलेभवः । ठक् ।

आन्वाहिकम । त्रि । प्रतिदिनसम्पाद्ये पाकादौ ।

आन्वीक्षिकी । स्त्री । तर्कविद्यायाम । गौतमादिप्रणीते न्यायशास्त्रे आत्मविद्यायाम् । अनुश्रवणोक्त मीक्षणं परीक्षया अन्वीक्षा । सा प्रयोजनमस्याः । प्रयोजनमिति ठञ् ॥

आन्वीपिकः । त्रि । अनुकूले । अन्वीपं वर्त्तते । ततप्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलमिति ठक् ॥

आपः । पुं । अष्टवसुमध्ये वसुविशेषे । न । अपांसमूहे । तस्यसमूहइत्यण् ॥

आपक्वम । न । अभ्यूषे । भर्जितेचरितयवादौ । ईषत् पक्वम् । आङीषदर्थे इति समासः ।

आपगा। स्त्री। नदीमात्रे॥ अपांसमूह आपम। तेनगच्छति। गम्लृ०। अन्येभ्योपीतिड:॥

आपण। पुं। हट्टी हाट इतिभाषाप्रसिद्धायां क्रयविक्रयशालायाम्। निषद्यायाम्॥ आसमन्तात्पणायन्तेऽत्र। पण०। गोचरसञ्चरेतिघान्तःसाधुः॥

आपणिक:। पुं। वणिजि। पण्याजीवे। आपणो व्यवहारोऽस्यास्ति। अत इति ठन्॥ आपणेन व्यवहरति इत्यर्थेवाठक्। यद्वा। आपणायते। पणव्यवहारे। आङिपनिपतिखनिभ्यइति इकन्॥ आपणस्यधर्म्यं। तस्यधर्म्यमितिठक्॥ आपणस्यावक्रये व्यवक्रय इति ठक्॥

आपति। पुं। श्येने। बाज इतिभाषाप्रसिद्धखगे। त्रि। दैवायत्ते॥ आपतति। पत्लृगतौ। आङिपणीति इकन्॥

आपत्तिः। स्त्री। आपदि॥ प्रापणे॥ दोषे॥ आपदनम् अनयावा। पद गतौ। स्त्रियांक्तिन्॥

आपत्प्राप्तः। त्रि। आपन्ने। विपद्ग्रस्ते॥ आपदं प्राप्तः॥

आपद्। स्त्री। विपत्तौ। विपदि॥ क्लेशे॥ मनस्तापं नकुर्वीतआपदंप्राप्यपार्थिवः। समबुद्धिः प्रसन्नात्मासुखदुःखेसमोभवेदित्युपदेश॥ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामंश्रीरामंभूयोभूयोनमाम्यहम्॥ आपदनमनयावा। पदे सम्पदादित्वात् क्विप्॥ आपत्कालेनास्तिमर्यादा॥

आपदा। स्त्री। विपत्तौ॥ भागुरिमते हलन्तादपि टाप्॥

आपनम्। न। मरिचे॥ प्रापणे॥

आपनिक। पुं। इन्द्रनीलमणौ॥ किराते॥ आपनायते। पनव्यवहारे। आङिपणिपनीति इकन्॥

आपनेय। त्रि। प्रापणीये॥ लब्धव्ये॥

आपन्न:। त्रि। विपद्ग्रस्ते। आपत्प्राप्ते॥ प्राप्ते॥ यथा। आपन्नः संसृतिं घोरां यन्नाम विवशो गृणन्। ततः सद्योविमुच्येतयद्बिभेतिस्वयं भयमितिभागवतम्॥ आपद्यतेस्म। पदगतौ। क्तः॥ आगते॥

आपन्नसत्त्वा। स्त्री। गर्भवत्याम्॥ आपन्नः सत्त्वोजन्तुरनया स्यावा॥

आपमित्यकम्। न। विनिमयात् प्राप्ते। परिवर्त्तनेनाप्ते। बदले कर्के लीजो वस्तु इति भाषा॥ अपमानम्। मेङ्प्रणिदाने। उदीचां माङो व्यतीहारे इतिक्त्वा। कुगतीतिसमासः। समासेऽनञिति ल्यबादेश:। म

श्तेरिदन्यतरस्यामितीत्वम् । अप-मित्य निर्वृत्तम । अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कना वितिकक ।

आपराह्लिकम् । त्रि । अपराह्णतने । अपराह्णेभवम् । कालाट्ठञ् ॥

आपव. । पुं । वशिष्ठमुनौ ।

आपः । न । जले । आपोभिमार्जनं कुर्वीतिस्मृतिः । आप्नोतेरसुनिसान्त क्लीवम । आप. कर्माख्यायांह्रस्वोनुट्चवेत्यत्र बाहुलकात आप. आपसो इत्युक्तं कौमुद्याम् । तत्रबाहुलका दित्युपलक्षणम् ह्रस्वनुटौ वास्त इति व्याख्यानात । तथाच ब्रुवते कतमेपि नपुंसकमाप इतिकोशमुदाहृत्य सर्वमापोमयं जगदिति प्रयोगो दुर्घटवृत्तौ समर्थित इति ।

आपस्तम्बः । पुं । कल्पसूत्रकारे । शाखान्तरे ।

आपस्तम्बिनी । स्त्री । त्रिकिन्व्यांखताट्याम् ।

आपाकः । पुं । आवा इतिप्रसिद्ध कुम्भकारस्थमृत्पात्रदहनस्थाने । पवने ।

आपात. । पु । पतने । तत्काले । तदात्वे । पातने । मार्गे । आपतन्तिसञ्चरन्ति अस्मिन् । घञ ।

आपाततः । ा । अवधारणंविनेत्यर्थे । अकस्मादर्थे ।

आपानम् । न । पानगोष्ठ्याम् । सुरापानायसम्भूयोपवेशने । मद्यपानार्थसभायाम् । आसम्भूय पिबन्त्यत्र । पापाने । ल्युट् ।

आपानभूमिः । स्त्री । मधुपानस्थाने ।

आपिञ्जरम् । न । स्वर्णे ।

आपीडः । पुं । शेखरे । शिखामाल्ये । शिरोभूषणे । वह्निर्निःसृतदारुणि । आपीडयति पीडअवगाहने । पचाद्यच् ।

आपीडितः । त्रि । आकृष्टे । समन्तात्पीडिते ॥

आपीतम् । न । माक्षिकधातौ ।

आपीनम् । न । ऊधसि । आप्यायतेस्म । ओप्यायीवृद्धौ । गत्यर्थे ... । प्यायःपी निष्ठायाम् । सोर न्तर्गस्युन । आङ्पूर्वस्यान्धूधसोःस्यादेवेति पीभावः । ओदितश्चेतिनिष्ठानत्वम् । पुं । अन्धौ । कूपे । इतिवोपदेव. ॥ त्रि । अतिस्थूले । ईषत्स्थूले ।

आपूपिकम् । न । पिष्टकसमूहे । अपूपानांसमूहः । अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् । त्रि । पिष्टकाजीवे । कान्दविके । भक्ष्यकारे । अपूपाःपण्यमस्य । तदस्यपण्यमितिठक् । यद्वा अपूपभक्षणं शीलमस्य । शीलमिति अपूपभक्षणंहितमस्मै । हितंभक्षा इ

तिवाठक्। अपूपेसाधुर्वा। गुडादि भ्यष्ठञ्॥

आपूप्य.। पुं। सक्तुषु॥ अपूपार्थकपिष्टादौ। चूर्णके॥

आपूरितः। त्रि। अभिव्याप्ते॥ परिपूर्णे॥ यथा। आपूरितं महापात्रमिति॥

आपूर्त्तिः। स्त्री। ईषत्पूरणे॥ सम्यक्पूरणे॥

आपूषम्। न। रङ्गे। रांग इतिभाषा॥

आपृच्छा। स्त्री। आलापे। आभाषणे॥ आपृच्छनम्। पृच्छ०। गुरोश्चहल इत्यः॥

आपृष्टः। त्रि। अनुज्ञाते॥

आप्त..क्लिमम्। न। लब्धात्तृतीयषष्ठ नवम..द्वादशभवनेषु॥

आप्त'। त्रि। प्रत्ययिते। विश्वासाधारे॥ प्राप्ते। लब्धे॥ सत्ये॥ रागद्वेषादिवर्जितेयथार्थवक्तरि॥ हितोपदेष्टरि॥ युक्ते। भ्रमादिशून्ये। तत्त्वार्थवेदिनि॥ पुं। भ्रमप्रमादविप्रलिप्साकरणापाटवरूपदोषचतुष्टयरहितेऋष्यादौ॥ आप्यतेस्म। आप्लृव्याप्तौ। क्तः॥ स्वस्मिन्॥ जिने॥

आप्तकामः। त्रि। प्राप्तस्वरूपानन्दतृप्ते॥ आप्ताः कामायेन॥

आप्तगर्वः। त्रि। प्राप्ताहङ्कारे॥

आप्तजन।.पुं। हिते। हितोपदेष्टरि॥ आप्तश्चासौजनश्च॥

आप्तवचनम्। न। आप्तश्रुतौ॥ शब्दे॥ आप्तस्यवचनम्। कर्मधारयोवा॥

आप्तवाक्यम्। न। आगमे॥

आप्तवाक्। स्त्री। वेदे॥ कर्मधारय.॥ बहुव्रीहित्वाम्मुनौ॥ पुं॥

आप्तश्रुति। स्त्री। आप्तवचने॥ वेदे॥ आप्ताचासौश्रुतिश्च॥

आप्ता। स्त्री। जटायाम्॥ इतिशारावली॥

आप्तिः। स्त्री। सम्बन्धे। योगे॥ लाभे। सम्प्राप्तौ॥ व्याप्तौ॥ आप्यते। आप्लृ०। स्त्रियांक्तिन्नाबादिभ्य'॥

आप्तोक्तिः। स्त्री। शब्दे। सिद्धान्तवाक्ये॥

आप्यम्। न। कुष्ठौषधौ॥ त्रि। अम्मये। जलविकारे फेनादौ॥ कर्मणि प्रभूते मन्त्रादौ। प्राप्तव्ये॥ अपांविकारः। तस्यविकारइत्यणन्ताच्चतुर्वर्णादित्वात्स्वार्थेष्यञ्॥ स्त्री। आप्या॥

आप्यायक। पुं। पुष्टिकरे॥

आप्यायनम्। न। तर्पणे। तृप्तौ। प्रीणने॥ परिपूरके॥

आप्यायित.। त्रि। तृप्ते। प्रीते॥ पूरिते॥

आपृच्छनम्। न। आनन्दने॥ पृच्छ

चीप्सायाम् । आङ्पूर्वायमानन्दनार्थं. । ल्युट् ॥

आप्रदानम् । न । आदाने ॥

आप्रपदम् । न । पादाग्रपर्य्यन्ते ॥

आप्रपदीनम् । त्रि । पादाग्रपर्य्यन्तलम्बमाने वस्त्रादौ ॥ पादस्याग्र प्रपदम् । तन्मर्यादीकृत्य आप्रपदम् । आप्रपदंप्राप्नोतीत्यर्थे अनेन खः ॥

आप्रवणम् । न । उत्प्लवने ॥ उद्गरणे ॥ त्रि । ईषदवनते ॥

आप्लव. । पुं । स्नाने ॥ आप्लवनम् । प्लुङ् गतौ । घञभावपक्षे ऋदोरप् ॥

आप्लवव्रती । पु । स्नातके । समाप्तवेदाध्ययनकृतस्नाने ॥ आप्लवते । प्लुङ्० । अच् । आप्लवस्यास्त्यौव्रतीच ॥ आप्लवः स्नानम् । तद्व्रतीनित्यस्नायीतिमुकुटः ॥

आप्लावः । पुं । स्नाने ॥ आप्लवनम् । प्लुङ् ० । विभाषाङिरुप्लुवोरितिवा घञ् ।

आप्लाव्यम् । न । आप्लवे ॥ आप्लवते । प्लुङ् ० । भव्यगेयेतिसाधु ॥

आप्लुतः । त्रि । स्नाते । कृतस्नाने ॥ पुं । स्नातके ॥ आप्लवनम् । प्लुङ्० । क्तः ॥

आप्लुतव्रती । पुं । श्रुतेः पाठात् स्नाते । स्नातके । आश्रमान्तरमगते समाप्तवेदव्रते ॥ आप्लवते । प्लुङ्० । गत्यर्थाकर्मकेतिक्तः । सचास्त्यौव्रतीच । मुकुटस्तु आप्लुतं स्नानं तद्व्रती नित्यस्नायीत्याह ॥

आप्वा । पुं । वायौ ॥ आप्नोतिसर्वम् । आप्लृ० । श्वेवयज्वेतिवन्नन्तः ॥

आफूकम् । न । अहिफेने ॥ आफूकशोषणंग्राहिश्लेष्मलवातपित्तलम् । तथा खसफलेद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥

आबद्ध' । पु । दृढवन्धे ॥ प्रेम्णि ॥ अलङ्कारे ॥ भूषणे ॥ पु । योक्त्रे ॥ त्रि । आप्ते ॥ आवध्यतेस्म । वध० । क्तः ॥

अबन्धः । पुं । वन्धने ॥ प्रेम्णि ॥ योक्त्रे ॥ आवध्यतेऽनेन । बन्धवन्धने । हलश्चेति घञ् ॥

आबाधा । स्त्री । पीडायाम । दुःखे ॥ भूखण्डे । चिकोणश्चेचमध्यरज्जु· ने मेण यत्खण्डद्वय जायते तत्स्मृतम् ॥ बाधृलोडने । आङ्पूर्व गुरोश्चेत्यः ॥

आबिलः । त्रि । अनच्छे । अप्रसन्ने । कलुषे ॥ आबिलति । बिलभेदने । इगुपधेतिकः ॥

आबिलकन्दः । पुं । मालाकन्दे ॥

आबुत्तः । पुं । नाट्योक्त्या भगिनीपतौ ॥ आपनम् आप् । सम्पदादित्वात् क्विप् । आपमुत्तनोति । अन्येभ्योपीति डः ॥

आभण्डनम् । न । निरूपणे ॥

आभरणम् । न । अलङ्कारे । भूषणे ॥

आभ्रियतेऽनेन । भृञ्भरणे । ल्युट् ॥

आभा । स्त्री । उपमायाम् ॥ कान्त्याम् । शोभायाम् ॥ दीप्तौ ॥ बबूले ॥ आभा वब्बलपर्याय' कथित कैश्चिदैरिहे ति भावप्रकाशे वातव्याधौ त्रिकशूलचि कत्सा ॥

आभाति । स्त्री । छायायाम् ॥

आभाषणम् । न । आलापे । कथने ॥ भाषणव्यक्तायावाचि । आङ्पूर्व । ल्युट् ॥

आभाषितः । त्रि । अभिमुखीकृते ॥

आभासः । पुं । प्रतिबिम्बे ॥ दीप्तौ ॥ सदृशे ॥ आभिमुख्येनभासते । भासृ० । पचाद्यच् ॥ ईषद्भासनवा ॥

आभास्वरः । पुं । चतुष्षष्टिसङ्ख्यकगण देवताविशेषे ॥ आभास्वराश्चतुष्षष्टिरित्युक्तं ॥ द्वादशसङ्ख्यकेगण देवताविशेषे ॥ आत्माज्ञाताद्मोदान्त शान्तिर्निर्वाणं शमस्तप. । कामः क्रोधोमदोमोहोद्वादशाऽऽभास्वरामे ॥ आसमन्ताद्भासनशीलः । भासृदीप्तौ । स्थेशभासपिसकसोवरजितिवरच् ॥

आभिजात्यम् । न । कौलीन्ये ॥ पाण्डित्ये ॥ अभिजातस्यभाव. । ष्यञ् ॥

आभिमन्यव. । पुं । परीक्षिति नृपे ॥ अभिमन्योरपत्यम् । अण् ॥

आभिरः । पुं । गोपे ॥ आसमन्तात भियंराति । रादाने आत इतिक ॥

आभिरूप्यम् । न । अभिरूपत्वे ॥

आभीक्ष्णम् । न । भृशे । अत्यन्ते । अतिशये ॥ निश्चये ॥ त्रि । तद्युक्त क्रियायाम् ॥

आभीक्ष्ण्यम् । न । पौनःपुन्ये ॥ भृशार्थे ॥ भावेष्यञ् ॥

आभीर । पुं । अहीर इतिप्रसिद्धेगोपे । ब्राह्मणादम्बष्ठायामुत्पन्ने ॥ वैश्यभेदएव आभीरोगवाद्युपजीवीतिस्वामी ॥ देशविशेषे ॥ यथा । श्रीकोङ्कणादधोभागेतापीत. पश्चिमेपरे । आभीरदेशो देवेशिविन्ध्यशैलेव्यव स्थित इतिशक्तिसङ्गमतन्त्रम् ॥ न । मात्रावृत्तप्रभेदे ॥ यथा । एकादश कलधारि कविकुलमानसहारि । इदमाभीरमवेहिजगणमन्तमनुधेहि ॥ यथा । तरलनयनवलितेन मदमन्थरचलितेन । सुमुखिहृदय मभिलाषि सपदिनकस्यकरोषीति ॥ आअभिईरयति । ईरगतौकम्पनेच । पचाद्यच् ॥

आभीरपल्लि. । स्त्री । गोपग्रामे ॥ गोपगृहपङ्क्तौ ॥ आभीराणांपल्लि ॥

आभीरपल्ली । स्त्री । गोपग्रामे । घोषे । अहीरवासा इति भाषा ॥ आ

भीराणांपल्ली ॥

आभीरी । स्त्री । महाशूद्राम । अही रनी इति भाषा ॥ आभीरस्त्रीजाती या वा । पुंयोगादितिजातेरिति च ङीष ॥

आभील म । न । कृच्छ्रे । दुःखे ॥ त्रि । कष्टयुक्ते ॥ भयानके ॥ आसमन्तात् भियंलाति । ला० । क. ॥

आभुग्नः । त्रि । ईषद्वक्रे । आकुञ्चिते ॥

आभेरी । स्त्री । रागिणीविशेषे ॥

आभोग. । पु । वरुणस्यच्छत्रे ॥ परिपूर्णतायाम ॥ यत्ने ॥ आभोजनम् । भुज० । भावे अधिकरणे वा घञ् ॥ कविनामयुक्त गानसमापककाव्ये ॥ यथा । यत्रैवकविनामस्यात्सआभोगइतीरितइतिसङ्गीतदामोदरः ॥

आभ्यन्तर' । त्रि । अभ्यन्तरभवे ॥ तत्रभव इत्यण् ॥

आभ्युदयिकः । त्रि । अभ्युदयनिमित्ते आद्धादिकर्मणि ॥

आभ्रिः । पु । काष्ठकुद्दालेन खननकर्त्ते ॥ अभ्राखनति । तेनदीव्यती' इतिठक् ॥

आम् । न । अङ्गीकारे ॥ ज्ञाने ॥ निश्चयस्मृतौ । प्रतिवचने ॥ आमयति । अमगत्यादिषुणयन्तः क्विप् ॥

आम' । पुं । रोगमात्रे ॥ रोगविशेषे ॥ मलवैषम्यरोगे ॥ न । षट्प्रकाराजीर्णरोगमध्ये रोगविशेषे ॥ आहारस्यरसःसारो योनपक्वोऽग्निलाघवात् । आमसंज्ञां सलभते बहुव्याधिसमाश्रयः ॥ आममन्नरसंके .त केचित्तुमलसञ्चयम् । प्रथमांदोषदुष्टिंवा केचिदामप्रचक्षते ॥ आंमच । अविपक्वमसंसक्तं दुर्गन्धिबहुपिच्छिलम् । सादनंसर्वगात्राणामामञ्मित्यभिशब्दितम् ॥ तेनामेन सहायुक्ताद्दोषादूष्याश्चताद्दशाः । तदुद्भवा आमयाश्चसामाइतिबुधैः स्मृताः ॥ त्रि । अपक्वे । असिद्धे । पाकरहिते ॥

आमगन्धि । न । अवाघुत्यगन्धयुक्ते । विस्त्रे । अपक्वमांसादिगन्धा ॥

आमखण्डः । पुं । गुडखण्डे ॥

आमनस्यम् । न । पीडायाम् । व्यथायाम् ॥ अमनसो भावः । ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ् ॥

आमन्त्रणम् । न । सम्बोधने ॥ आनन्दने ॥ निमन्त्रणे ॥ कामचारानुज्ञायाम् ॥ यस्याकरणे प्रत्यवायोनस्यात यथा । इह शयीत भावन् ॥ मन्त्रिगुप्तभाषणे ॥ आङ्पूर्वः । ल्युट् ॥

आमन्त्रणा । स्त्री । पृच्छायाम् ॥

आमन्त्रितम् । न । सम्बोधनप्रथमायाम् ॥ त्रि । निमन्त्रिते ॥

आमन्दः । पुं । वासुदेवे ॥

आमन्दा । स्त्री । खड्गभेदे ।

आमयः । पुं । रोगे । अमरोगे । भावे घञ् । आमयाच्यनेन । याम्राप ग्रो । अन्येभ्योपीतिड । यद्वा । आमयनमनेनवा । मीङ्हिसायाम् । एरच् । घोवा । न । कुष्ठौषधौ ।

आमयावी । त्रि । रोगिणि । मन्दानलयुक्ते । विकृते । आमयो स्यास्ति । आमयस्योपसंख्यानंदीर्घश्चेति- विनि ॥

आमर्शनम् । न । स्पर्शे ।

आमर्षः । पुं । कोपे । मर्षणम् । मृष तितिक्षायाम् घञ् । नञ् समासः । अन्येषामपीतिदीर्घः । निरुद्धो ३,निरामर्षं निर्वीर्यमरिनन्दनमि- तिप्रयोग ।

आमलकः । पुं । वासकवृक्षे । न । धात्रीफले । क्षुद्रामलके । आमलते । मल । कुन्शिल्पिसंज्ञयोः । आमलक्या फलम् । फलेलुगितिविकारावयवप्रत्ययस्यलुक् । त्रि । धात्रीद्रुमे । तिष्यफलायाम ।

आमलकी । स्त्री । अमृतायाम् । तिष्यफलाद्रुमे । आमलते । मलधारणे । कुन् । जातेरितिङीष् ।

आमवातः । पु । स्वनामख्यातेरोगविशेषे । तल्लक्षणं यथा । युगपत् कुपितावेतौ त्रिकसन्धिप्रवेशकौ । स्तब्धञ्चकुरुतो गात्रमामवातः सउच्यते । एतौवातकफौ । त्रिकसन्धिप्रवेशकौ वेदनयेतिबोद्धव्यौ ॥

आमश्राद्धम । न । आमान्नविहितश्राद्धे । आपद्यनग्नौतीर्थेच चन्द्रसूर्यग्रहेतथा । आमश्राद्धंद्विजैः कार्यंशूद्रेणतुसदैवहि । अपत्नीक प्रवासीच भार्यायस्यरजस्वला । आमश्राद्धंद्विजैः कार्यंशूद्रेणतुसदैवहीतिच ।

आमातीसारः । पु । षट्प्रकारातीसारमध्येरोगविशेषे ॥

आमात्यः । पुं । अमात्ये ।

आमानस्यम् । न । पीडायाम् ॥

आमान्नम । न । अपक्वतण्डुलाद्यन्ने ।

आमाशयः । पुं । नाभिस्तनयोर्मध्यभागे अपक्वस्थाने ।

आमिक्षा । स्त्री । वैश्वदेव्याम । तप्ते पक्वेपयसि दधियोगेन जातायांदुग्धविकृतौ । तद्घनं भूतः पिण्डआमिक्षा जलंवाजिनम् ॥ आमिष्यते । मिषुसेचने । बाहुलकात्सक् । यद्वा । आमक्षति । मक्षरोषे सङ्घातेच । अच् । पृषोदरादिः ॥

आमिक्षीयम् । न । आमिक्ष्ये । दधिनि । आमिक्षायैहितम । विभाषाह

विरूपादिभ्यइति छ ॥

आमिच्यम्। न। आमिक्षीये। आमिक्षायैहितम्। यत्॥

आमिषम्। न। पुं। भोग्यवस्तुनि॥ सम्भोगे॥ उत्कोचे॥ पलले। मांसे॥ सुन्दराकाररूपादौ। लोभस्त्वये। लाभे। कामगुणे। रूपे। भोजने। लोभ्यवस्तुनि। विषये। आमिषति। मिषस्पर्द्धायाम्। मेषतिवा। मिषुसेचने। इगुपधेतिक'। यद्वा। अमति। अमगत्त्यादिषु। अमेर्द्दीर्घश्चेतिटिषच्॥ यद्वा। आमिष्यते भुज्यते। मिषश्लेषणे। घञ्। संज्ञापूर्वकत्वान्नगुणः। घञर्थेक' इतितुपरिगणनादयुक्तम्॥

आमिषप्रिय। त्रि। मांसाभिलाषिणि॥ पुं। कङ्कपक्षिणि॥

आमिषाशी। त्रि। मत्स्यमांसभोजनशीले। शौष्कले॥ आमिषमश्नाति। अशभोजने। सुपीतिणिनि॥

आमीक्षा। स्त्री। आमिक्षायाम्। आङ्पूर्वान्मिहेर्द्दीर्घश्चेतिस'॥

आमुक्त। त्रि। पिनद्धे। परिहितवस्त्रादौ। परिहितकवचेजने। आमुच्यतेस्म। मुलृमोचणे। क्त॥

आमुष'। पुं। कण्टकयुक्तवंशविशेषे॥

आमुष्मिक। त्रि। स्वर्गसुखाद्यनुभवे॥ अमुष्मिन् परलोकेभवं'। ठक्॥

आमुष्यायण। त्रि। ख्यातवंशोद्भवे। सत्कुलजाते॥ अमुष्यापत्यम्। नडादित्वात्फक्। षष्ठ्या अलुक्॥

आमूलम्। न। मूलपर्यन्ते॥

आमोद'। पुं। अतिदूरगामिनिगन्धे॥ गन्धे॥ हर्षे॥ निश्वासगन्धे॥ सुमहद्गन्धे॥ आमोदनम आमोदयतिवा। मुदहर्षे। आङ्पूर्वं'। भावे घञ्। स्वार्थण्यन्तः। पचाद्यच्वा॥

आमोदनम्। न। आमोदकरणे॥ ल्युट्॥

आमोदितः। त्रि। आनन्दिते। सहर्षे॥ सुगन्धिते॥ आमोद सञ्जातोऽस्य। तारकादित्वादितच्॥

आमोदी। त्रि। मुखवासने। कर्पूरादिनानाद्रव्यरचितमुखवासार्हद्रव्ये॥ आमोदोऽस्तिअस्य अस्मिन्वा। इनिः॥

आम्नातः। त्रि। अभ्युक्ते॥ यथा। अनाम्नातेष्वमन्त्रत्त्वमिति॥

आम्नाय। पुं। आगमे॥ निगमे॥ वेदे॥ सम्प्रदाये। गुरुपरम्परागतसदुपदेशे॥ उपदेशे॥ वंशे॥ कथने॥ कुलक्रमे। अभ्यासे॥ यथा। तस्यसन्दिदिहे बुद्धिर्मुहु सीतांनिरीक्ष्यच। अम्नायानामयोगेनविद्यांप्रशिथिलां

ग्निवेति रामायणम् ॥ आम्नायते अ
भ्यस्यते । म्ना अभ्यासे । कर्म्मणि घञ् ।
स्यादुर्धेतिणः । आम्नानं वा । भावे
घञ् । आत इति युक् ॥

आग्निकेय । पुं । कार्त्तिकेये । स्कन्दे ॥
धृतराष्ट्रराजनि ॥ अम्बिकाया अप
त्यम ॥ स्त्रीभ्योढक् ॥

आम्भसिक । पुं । मत्स्ये ॥ अम्भसावर्त्त
ते । ओजस्सहोम्भसावर्त्ततेइतिठक ।
ठस्येक ॥

आम्र । पु । चूते । रसाले ॥ अथास्यपु
ष्पादीनांगुणाः । आम्रपुष्पमतीसा
रकफपित्तप्रमेहनुत् । असृक्दुष्टि
हरशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम्
॥ आम्रंबालकषायाम्लं रुच्यंमारुत
पित्तकृत् । तरुणंतु तदत्यम्लंरूक्षं
दोषत्रयास्रकृत् ॥ * ॥ आम्रमामत्व
चाहीनमातपेतीवशोषितम् । अ
म्लंस्वादुकषायंस्याद्भेदनकफवातजि
त ॥ ॥ पक्वन्तु मधुरंवृष्यंस्निग्धंशुक्र
बलप्रदम् । गुरुवातहरंहृद्यंवर्ण्यंशी
तमपित्तलम् ॥ कषायानुरसं वह्नि
श्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् ॥ * ॥ तदेववृक्ष
सम्पक्वं गुरुवातहरंपरम् ॥ मधुरा
म्लसरंकिञ्चित् भवेत् पित्तप्रकोपन
म् ॥ ॥ आम्रंकृत्रिमपक्वंयत्तद्भवे
त् पित्तनाशनम् । रसस्याम्लस्यहाने
स्तुमाधुर्य्याच्च विशेषतः । चूषितन्तत्
परं रुच्यंबलवीर्य्यकरंलघु । शीतल
शीघ्रपाकिस्यात् वातपित्तहरंसरम् ॥ *
॥ तद्रसो गालितो बल्यो गुरुर्वातहर
सरः । अहृद्यस्तर्पणोऽतीवबृंहणः
कफवर्द्धनः ॥ ॥ तस्यखण्डंगुरुपरंरो
चनं चिरपाकि च । मधुरंबृंहणंबल्यं
शीतलंवातनाशनम् ॥ वातपित्तह
रं रुच्यंबृंहणं बलवर्द्धनम् । वृष्यंवर्ण्य
करंस्वादुदुग्धाक्तं गुरुशीतलम् ॥ * ॥
मन्दानलत्वं विषमज्वरञ्चरक्तामय
बद्धगुदोदरञ्च । आम्रातियोगेन
नयनामयञ्च करोति तस्मात् इतितानि
नाद्यात् ॥ ॥ एतद्धाम्रविषयमधुरा
म्रपरनतु । मधुरस्य परंनेत्रहितत्वा
द्यागुणायतः ॥ * ॥ शुण्ठ्यम्भस्त्वनुपा
नंस्यात् आम्राणामतिभक्षणे । जीरकं
वाप्रयोक्तव्यं सहसौवर्चलेन च ॥ * ॥
आम्रबीजं कषायंस्यात् छर्द्यतीसार
नाशनम् । ईषदम्लञ्चमधुरं तथा हृ
दयदाहनुत् ॥ * ॥ आम्रस्यपल्लवंरुच्यं
कफपित्तविनाशनम् । पल्लवमत्र
वदलम् । अस्य शाकप्रकारस्तु । स्वि
न्ना निष्पीडिता. काभकोकिलाहा
रपल्लवाः । घृतसिन्धत्थसंसिद्धारुच्या
रामठवासिता ॥ सपिष्टखण्डयुक्ता
स्तैलिताश्चाम्रपल्लवाः । लवङ्गार्द्रक

सयुक्तामारीचैश्चिकारका ॥ ॥ *अ स्यपल्लवमुकुलाना प्रकारस्तु । आम्र स्यैवनवताम्रकचिप्रवाला खण्डी कृतालवणमिश्रितपिण्डिताश्च । वा ल्लीकधूपनजुषोघृतदुग्धसिक्ता सन्दी पयन्ति पवनस्यसखच्छिएते ॥ मुकुल सहकारशाखिन. शृतखण्डीकृतसै न्धवान्वित. । दधिमध्यमरीचसस्कृत स्त्रियातामरुचिछिनत्तिहि ॥ कफ पित्तहरौह्ययौमुखवैरस्यनाशनौ । वह्निसन्जननौरुच्यौ चूतजौ पुष्पपल्ल वौ ॥ ॥आम्रमामंजलस्विन्नंमर्दितं दृढपाणिना । सिताशीताम्बुसंयुक्तं कर्पूरमरिचान्वितम् ॥ प्रपानकमि दंश्रेष्ठभीमसेनेननिर्मितम् । सद्योरु चिकरबल्यंशीघ्रमिन्द्रियतर्पणमिति ॥ अम्यते । अमगत्यादौ । अमित- म्योर्दीर्घश्चेतिरक्दीर्घश्च ॥

आम्रगन्धकः । पुं । समष्ठिलायाम् । शा कविशेषे ॥

आम्रपेषी । स्त्री । शुष्काम्रखण्डे ॥

आम्ररसाकृति. । स्त्री । रसालायाः प्र भेदे । यथा । किञ्चित्कुङ्कमसंयुक्त विमस्तुदधिगालितम् । सशर्कर भवे त् पीतापक्वाम्ररससन्निभा ॥ पीता शिखरिणीया साख्यीवर्णवर्तीहि- सा । सुरुच्यामधुराबल्यावातपित्तह रापरेति ॥

आम्रवणम् । न । चूतवने ॥ प्रनि रन्त्यादिनावननकारस्यणा

आम्रात । पु । आमडा अम्बाडा इ. विश्रुतेफलवृक्षविशेषे । कपीतने । पीतने ॥ आम्रातमम्लवातघ्नंगुरूष्णंरु चिकृतपरम् । पक्वन्तुतुवरं स्वादुरस पाकं हिमस्मृतम् ॥ तर्पणंश्लेष्मलंस्नि ग्धवृष्यंविष्टम्भिदं हणम् । गुरुबल्यंम रुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ अ माबट इतिख्याते आम्रातके ॥ रा- जाम्रे ॥

आम्रातकः । पुं । आम्राते । कपीतने- वृक्षे ॥ अमोट इतिख्याते आम्रावर्त्ते ॥ पक्वस्यसहकारस्यकटे विस्ता ... रस । घर्मशुष्कोमुहुर्दत्त आम्रात- क इतिस्मृत. ॥ आम्रमतति । अत सातत्यगमने । कृत्रादिभ्यःवुन ॥

आम्रातकेश्वरः । पुं । सिद्धस्थानविशेषे ॥ आम्रातकेश्वरे सूक्ष्मासूक्ष्माख्याप रमेश्वरीत्यागमः । सूक्ष्माचाम्रात केश्वरे इति देवीगीताच ॥

आम्रावर्त्त. । पुं । आम्रातके । अमावट अमोट इतिभाषाप्रसिद्धे ॥ आम्रा वर्त्तस्तृषाछर्दिवातपित्तहरःसरः । रुच्यःहृद्योगुभिःपाकाल्लघुश्चसहि- कीर्त्तित. ॥

आम्रेडितम । न । द्विस्त्रिरुक्ते ॥ यथा । सर्पःसर्प इति ॥ आम्रेड्यते आधिक्ये नो च्यतेस्म । म्रेडृउन्मादे । क्त. ॥

आम्लवेतस. । पुं । अम्लवेतसवृक्षे ॥

आम्ला । स्त्री । अम्लिकायाम् । तिन्ति डीवृक्षे ॥ श्रीवल्ल्याम् ॥

आम्लिका । स्त्री । चिञ्चायाम् ॥ अम्लो द्गारे ॥

आय । पुं । धनागमे । प्राप्तौ । लाभे ॥ एकादशभवने ॥ वास्तुविषये ध्व जाद्यष्टसु ॥ आयाध्वजोधूम्रहरिश्व गोखरेभध्वाङ्क्षकाः इत्युक्ते. ॥ ग्रा मादिषुस्वामिग्राह्ये भागे ॥ स्त्र्यगार रक्षके ॥

आयःशूलिकः । त्रि । तीक्ष्णकर्म्मवि- ॥ तीक्ष्णोपायेनयोऽन्विच्छेत्सआ- यःशूलिकोजनः । अयः शूलेन अर्था नन्विच्छति । अयः शूलदण्डाजिना- भ्यांठक् ठञावितिठक् ॥

आयतः । त्रि । दीर्घे । लम्बा इति भा षा ॥ आयम्यतेस्म । क्तः । आयतते वा । यतीप्रयतने । पचाद्यच् ॥ आकृ ष्टे ॥ अतिप्रसृते ॥

आयतच्छदा । स्त्री । कदल्याम् ॥ आय ताश्छदाः यस्याःसा ॥

आयतनम् । न । आश्रये । विश्रामस्था ने । यज्ञस्थाने । चैत्ये । देवस्थाने- ॥ आयतन्तेऽत्र । यती० । अधिकरणे ल्युट् ॥

आयतिः । स्त्री । दैर्घ्ये ॥ प्रभावे । को षदण्डजे तेजसि ॥ उत्तरकाले । आ गामिकाले । फलदानकाले ॥ प्राप्तौ ॥ सङ्गे ॥ संयमे ॥ आयम्यते अनया अ त्रवा आयमनं वा । यमउपरमे । स्त्रि यांक्तिन् ॥ आयास्यतिवा । याते र्बा हुलकाड्डति. ॥

आयती । स्त्री । भविष्यत्काले ॥ कृदि कारादिति ङीष् ॥

आयत्तः । त्रि । अधीने । वशीभूते ॥ आयततेस्म । यती० । अकर्मकत्वा- त्कर्त्तरि क्तः ॥

आयत्तिः । स्त्री । स्नेहे । वशित्वे । वास रे ॥ बले । स्थाने । सामर्थ्ये ॥ सीम नि ॥ आयतनम् । यती० । स्त्रिया॥ क्तिन् ॥

आयमनम् । न । आकर्षणे ॥ यथाहढ स्यधनुष आयमनमिति ॥ आकृष्य दीर्घीकरणे ॥

आयल्लकम् । न । उत्कण्ठायाम् ॥ इति हेमचन्द्रः ॥

आयसम् । न । लौहे ॥ त्रि । अयसो- विकारे । अयोनिर्मिते ॥ अण् ॥

आयसी । स्त्री । लोहमयकवचे । अङ्ग रक्षिण्याम् ।जालिकायाम् ॥ ङीप् ॥

आयस्त. । त्रि । तेजिते । शाणादिना-तीक्ष्णीकृते । क्षिप्ते ॥ क्रुद्धिते ॥ कुपिते । हते । उक्तु के । प्रयत्नं कुर्वाणे ॥ यसुप्रयत्ने । कत्तरि क्त ॥

आयस्थानम् । न । स्वामिग्राह्योभाग' आय. स यस्मिन् उत्पद्यते तस्मिन् ।

आयात. । त्रि । आगते ॥

आयानम । न । स्वभावे । इतिजटाधरः ॥

आयाम. । पुं । दैर्घ्ये । आयम्यते अनेन वा आयमनं वा । घञ् । यद्वा । आयाति । यः । अर्त्तिस्तु सुद्रुति मन ।

आयामवान् । त्रि । आयामिनि । आयामोऽस्ति अस्य अस्मिन् वा । तदादिभ्यो मतुवन्यतरस्यामिति मतुप् ।

आयामी । त्रि । आयामवति । पच्चे इनिः ।

आयासः । पुं । आयामे । श्रमे । आयसनम् । यसु० । घञ् ।

आयी । त्रि । लाभवति । मतुवर्थे इनिः ।

आयु' । पुं । छान्दसः । मनुष्ये । एति । इण्० । छन्दसीणउण् । बहुलवचनात् भाषायामपोति व्याख्यानकृत् । जीवितव्याप्यकाले । आयुषि ॥ वायुनाजगदायुनेतिवर्णविवेक । मा

धविष्णाजटायुं मामितिभट्टिः । कटौ विन्ध्यस्याद्रेरभजतजटायो प्रबभिज इत्यादिप्रयोगाश्चानुकूलास्तेषाम् । आत्माति । या० । मृगव्यादित्रौ ।

आयुक्त. । त्रि । व्यापारिते । ईषद्युक्ते । कर्माध्यक्षे । नियोगिनि ॥

आयुत । त्रि । समन्तात्युक्ते ।

आयुधम् । न । शस्त्रमात्रे ॥ आयुधानात्रयोभेदः प्रहरणानि पाणिमुक्तानि यन्त्रमुक्तानि चेति । तत्र । प्रहरणानि खड्गादीनि । पाणिमुक्तानि चक्रादीनि । यन्त्रमुक्तानि अश्मशराद्यादीनि । आयुध्यन्ते ऽनेनि । युधसम्प्रहारे घञर्थे कविधानम ॥

आयुधधर्मिणी । स्त्री । जयन्तीः ॥

आयुधागारम् । न । अस्त्रगृहे ॥ अत्र नियुक्तस्य लक्षणम् मुक्तमात्स्ये १८९अध्याये । स्थापनाजातितत्त्वज्ञः सततं प्रतिजागरः । राज्ञःस्यादायुधागारेदक्ष.कर्म सुचोद्यत इति ।

आयुधिक. । पुं । अस्त्रजीविनि । शस्त्राजीवे । काण्डपृष्ठे । अयुधेनजीवति । आयुधाच्छ्चेतिचाट्ठञ् ।

आयुधीय' । पुं । आयुधिके ॥ आयुधेन जीवति । छः ॥

आयुर्द्रव्यम । न । औषधे ।

आयुर्वेदः । पुं । अष्टादशविद्यान्तर्गतध

न्वन्तरिप्रणीत विद्याविशेषे । चिकित्साशास्त्रे । रोगोपशमपूर्वकानन्दफलके अष्टस्थानसंयुते अथर्ववेदस्योपाङ्गे । आयुः शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगः तदस्मिन् विद्यते । अथवा आयुरनेन विन्दतीत्यायुर्वेदः । ऋग्वेदस्योपवेदे । इति शौनकोक्तचरणव्यूहः ॥

आयुर्वेदी । त्रि । आयुर्वेदज्ञे । चिकित्सके । वैद्ये ।

आयुर्योगः । पुं । औषधे ।

आयुष्मान् । त्रि । चिरजीविनि । दीर्घायुषि । अतिशयितमायुरस्य । मतुप् । तसौमत्वर्थे ॥ पुं । तृतीययोगे ॥ तत्रजातस्य फलं यथा । यस्यान्नजन्मकालेधनुष्मान् यानेयानंतस्य शेषुकार्य्यम् । कुर्यान्नूनं क्रीडनं पुष्पशय्यां दासैर्दासैरन्वितोगर्वितश्चेति ।

आयुष्यम् । त्रि । पथ्ये । आयुषोनिमित्ते । आयुषेहिते ॥ यत् ।

आयुः । न । जीवितकाले । परमायुषि । पथ्याशिनांशीलवतां नराणां सद्वृत्तिभाजां विजितेन्द्रियाणाम् । एवं विधानामिदमायुरत्र चिन्त्यं सदाद्यंमुनिप्रवादः । एते । अष्टमभवने । एति । इण्गतौ । एतेर्णिच्चेत्युसि । णित्त्वाद्वृद्धौकृतायामायादेशः ।

आयुस्कारः । त्रि । परमायुर्जनके ।

आयोगः । पुं । गन्धमाल्योपहारे । व्यापृतौ । व्यापारे । रोधे । आयोजनम् । युजिर्० । घञ् ॥

आयोगवः । पुं । शूद्राद्वैश्यायामुत्पन्ने जातिविशेषे । काष्ठतक्षणमस्य कर्म ।

आयोजनम् । न । आहरणे । द्रव्यासादने । यथा । कुत्रचित्तण्डुलासन्निकवस्थालीकाचेन्धनम् । तेषामायोजनं कुर्वन् मुख्यकर्त्ताभिधीयत इति ।

आयोधनम् । न । युद्धे । वधे । युधसम्प्रहारे । भावे ल्युट् ।

आरः । पु । मङ्गलग्रहे । शनिग्रहे । पित्तले । रेफल इतिगौडभाषाप्रसिद्धे मधुराम्लफले । वृक्षविशेषे ॥ न । मुण्डलोहे । पित्तले । रीत्याम् ॥ कोणे । प्रान्तभागे । ऋगतौ । भावे घञ् ।

आरकूटः । पुं । न । पित्तले । रीत्याम् । यथा । अकाञ्चनेकाञ्चननायिकाङ्के किमारकूटाभरणेन न श्रियइति ॥ आरंकूटयते । कूटदाहे । पचाद्यच् ।

आरवः । पुं । हस्तिकुम्भाधः स्थले । गजकुम्भसन्धौ । हस्तिशीर्षमर्मणि । सैन्ये ॥ त्रि । रक्षके ॥ रक्षणीये ।

॥ स्त्री । रक्षायाम् ॥ आरक्षति । र
क्षपालने । पचाद्यच् ॥
आरग्वध. । पुं । धनवहेडा सोनालु गि
रमालव अमलतास इतिभाषाप्रसि
द्धे राजवृक्षे । व्याधिघाते ॥ अस्य गु-
णा: । आरग्वधोगुरु: स्वादु:शीतल:
स्रंसनोत्तम. । ज्वरहृद्रोगपित्ता
स्रवातोदावर्त्तशूलनुत् । तत्फलंस्रं
सनंरुच्यंकुष्ठपित्तकफापहम् । ज्वरे-
तुसततं पथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम्भिि-
॥ आरगम् । रोगशङ्कायाम् । सम्प
दादित्वात् क्विप् । आरगंरोगशङ्का
मपिहन्ति । कर्मण्यण् । बहुलंतणी
तिकृन्तेर्वध: अदन्त: ॥ यद्वा । रुजरा
गे । सम्पदादित्वात् क्विप् । आरुजं-
रोगशङ्कामपिहन्ति ॥
आरट्ट: । पुं । अश्वयोनौ देशविशेषे ॥
आरट्टज: । पु । आरट्टदेशोद्भवघोटके
। पारसीके ॥ आरट्टे जात. । जनी°
। ड: ॥
आरत्रि' । पुं । पयसांभ्रमे । आवर्त्ते ।
कुलवखडके ॥ इतिहारावली ॥
आरण्य: । त्रि ॥ हिंस्रपक्षिमृगादौ ॥ अ
रण्ये भव: । अरण्याणा. ॥ गोमये ॥
वागोमयेषु ॥
आरण्यक: । पुं । पथि ॥ अध्याये ॥ न्या
ये ॥ विहारे ॥ मनुष्ये ॥ हस्तिनि ।
गजे ॥ अरण्ये भव: । पथ्यध्यायाद्य-
र्थे अरण्यान्मनुष्यइतिवुञ् ॥ गोमय-
ये ॥ वा गोमयेषु ॥ न । काण्वानां
माध्यन्दिनानाञ्चब्राह्मणविशेष ॥ अ
रण्येऽनूच्यमानत्वात् तस्य । अर-
ण्येध्ययनादेतदारण्यकमुदाहृतम् ॥
आरण्यकुक्कुट. । पं । वनकुक्कवाकौ ॥
आरण्यकुक्कुट' स्निग्धोऽबृंहण:श्लेष्मलो
गुरु: । वातपित्तक्षयवमीविषमज्वर
नाशन: ॥
आरण्यपशु: । पुं । अरण्यजातपशौ ॥
सचसप्तधा । यथा । महिष: । वान
र: । ऋक्ष: । सरीसृप: । रु ।. । पृष-
त: । मृग: ॥ इतितिथ्यादितत्त्वे पैठी
नसि: ॥
आरण्यमुद्गा । स्त्री । मुद्गपर्ण्याम् ॥
आरण्यराशि: । पुं । मेषे ॥ वृषे ॥ सिं-
हे ॥ मकरप्रथमार्द्धे ॥
आरति. । स्त्री । उपरमे । निवृत्तौ ॥
आरमणम् । रमक्रीडायाम । क्ति-
न् ॥
आरथ' । पुं । एकाश्वगनत्याम् ॥
आरनालम् । न । काञ्जिके ॥ आरनाला
लन्तुगोधूमै रामै. स्यान्निस्तुषीकृ-
तै' । पक्वैर्वासन्धितैस्तत्तुसौवीरसदृ
शंगुणै: ॥ आरनति । ऋगतौ । अच्
। नलति । गन्धगन्धे । ज्वलतीतिवा:

। आरो नालोस्य ।

आरनालकम् । न । काञ्जिके । आरो नालोऽस्य । शेषाद्विभाषेतिकप् ।

आरवी । स्त्री । आरबनाम्नोम्लेच्छवि-शेषदेशस्यभाषायाम । अस्यपठनमु हूर्त्तःपारसीवद्बोध्य ।

आरब्धः । त्रि । कृतारम्भे । न । आरम्भे ।

आर । पुं । म्लेच्छदेशप्रभेदे ।

आ.र ।ा । स्त्री । आरवीभाषा-याम् ॥

आरभटी । स्त्री । नाट्यवृत्तौ ॥

आरमणम् । न । आरामे ।

आरम्भः । पुं । त्वरायाम् । उद्यमे । स्वार्थंपरोपकारार्थंवागृत्त्वेचादिस म्पादनप्रयत्ने । वधे । दर्पे । प्रस्ता वनायाम् । उपक्रमे । प्रथमकृतौ । प्रारम्भे । आरम्भणम् । रभराभस्ये । घञ् । रभेरशबलिटोरितिनुम् ।

आरम्भवादः । पुं । तार्किकाणां मीमां सकानाञ्चवादे । सयथा । आत्मा काणादगुणतः कारणं पूर्वमिष्यते । कुलालादिव दण्डत्स्तुघटवज्जन्मना ग्भाक् । पृथिव्यप्तेजोवायूनांकर्म-संयोजितावयवः । द्व्यणुकादिक्रमेणा ण्डमारभन्तइदंभवदिति ।

आरम्भवादी । पुं । वैशेषिके । त्रि । त न्मतवादिनि ।

आरम्भसिद्धिः । स्त्री । कार्यसिद्धौ ।

आरम्भी । पुं । आरम्भवादिनि । वैशे षिके । समवाय्यसमवायिनिमित्त कारणेभ्योभिन्नस्यकार्यस्ययोत्पत्ति-स्तां योवक्तितस्मिन्निच्छयर्थ । सचवै शेषिक ।

आरव. । पुं । शब्दमात्रे ॥ आरवणम् । रुशब्दे । विभाषाङिरुप्लुवोरितिघ ञोभावेऋदोरप् ॥

आरा । स्त्री । चर्मप्रभेदकास्त्रे । चर्म प्रभेदिकायाम् । आद्रयर्त्ति ऋच्छ तिवा । ऋगतौ । अच् । आर्यतेवा । भिदादावाराशस्त्र्यामितिपाठात् साधुः । प्रतोदे । अर्यन्तेऽनयाऽस्वा. । आङ्पूर्वात्तिः । आङोर्त्तिश्च । उ पसर्गादृतीति वृद्धिः ॥

आराग्रम् । न । अर्द्धचन्द्राद्यस्त्रमुखे ॥ अर्द्धचन्द्रक्षुरप्रादिधाराग्रंमुखमुच्यते । आराग्रन्तुमुखन्तेषांपुष्पपत्रादिभेद तः । इतिहलायुधः ॥

आरात् । ा । दूरे । समीपे ॥ आरा ति । रादाने । वाहुलकादातिप्र त्ययः ।

आराति. । पुं । अरौ । शत्रौ ।

आरातीयः । त्रि । दूरस्थे । निकटस्थे । आरातभवः जातः आरातोवा । वृद्धा च्छः ॥

आरात्रिकम् । न । नीराजनायाम् ॥ नीराजननिमित्तदीपे । नीराजनामन्त्रे । आदौचतुष्पादतलेचविष्णोर्द्वौनाभिदेशे मुखमण्डलैकम् । सर्वेषु चाङ्गेष्वपिसप्तवारानारात्रिकंभक्तजनस्तुकुर्यात् ॥

आराधनम् । न । पचने ॥ साधने ॥ अवाप्तौ ॥ तोषणे ॥ पूजने । असारसंसारविवर्त्तनेषु मायात तोषमसभ ब्रवीमि । सर्वत्रदैत्या.समतामुपेतसमत्वमाराधनमच्युतस्येतिप्रह्लादः ॥ असारोयंससारस्तत्रविवर्त्तनानिदेवमनुष्यतिर्यगादिजन्मानि तेषुतत्तदुचितैर्भोगैस्तोषंमायात किन्तुसर्वत्र सर्वेषुभूतेषुसमतांसमदर्शितामुपेतमामुत । तदेवाच्युतस्याराधनमित्यर्थ. ॥ आराध्यतेऽनेन । राधसंसिद्धौ । भावकरणादौ ल्युट ॥

आराधना । स्त्री । साधनायाम् । सेवायाम् । परिचर्यायाम् ॥ टाप् ॥

आराधनीयः । त्रि । आराधयितुंयोग्ये ॥

आराध्यः । त्रि । उपास्ये । सेव्ये ॥

आरामः । पुं । उपवने । कृत्रिमवने । क्रीडार्थवने ॥ आरमन्त्यत्र । रमक्रीडायाम् । हलश्चेतिघञ् ॥

आरामशीतला । स्त्री । सुगन्धिपत्रविशेषे । आनन्धाम् । गन्धाढ्यायाम् ॥

आरालिकः । त्रि । पाचके । सूपकारे ॥ जिह्मगामिनि ॥ अरालंकुटिलं चरति । चरतीतिठक ॥

आराव । पुं । आरवे । निनादे । निस्वने ॥ आरवणम । शब्दे । विभाषाङिरुप्लुवो रितिघञ् ॥

आरु । पुं । वृक्षविशेषे ॥ कर्कटे ॥ शूकरे ॥

आरुणि । पु । उद्दालके । ॥ अरुणस्यापत्यम् । अतइञ् ॥

आरुणेय । पुं । श्वेतकेतुमुनौ ॥ आरुणेरपत्यम । ढक ॥

आरुरुक्षु । त्रि । आरोढुमिच्छौ ॥

आरूः । पुं । तरोर्भेदे ॥ कर्कटे ॥ दंष्ट्रिणि । शूकरे ॥ पिङ्गलवर्णे ॥ त्रि । तद्वर्णवति ॥ ऋच्छति । अर्त्तेरुवा । ऋगतिप्रापणयो. । णित्कसिपद्यर्त्तेरित्यूः ॥

आरूकम् । न । वीरसेनद्रव्ये । आडूइति भाषा । हिमाचलप्रसिद्धौषधीविशेषे । आड इति गौडभाषा ॥ तत्पत्रपुष्पादिभेदतस्तुजाति ॥

आरूढः । त्रि । कृतारोहणे ॥ उच्चस्थानगते ॥ आङ्पूर्वाद्रुहेर्गत्यर्थेतिक्त । ढत्वधत्वष्टुत्वढलोपदीर्घाः ॥ आरूढोनैष्ठिकंधर्मंयस्तु प्रच्यवते पुनः । प्रायश्चित्तंनपश्यामियेनशुध्येतसआ

त्मता ॥

आरेवतः । पुं । आरग्भे । राजवृक्षे ॥ न । पारेवतवृक्षफले ॥ आरेवयति निस्सारयतिमलम् सारकत्वात् । रेवृप्लवगतौ । णिच् । विच् । अतति । अत० अच् । आरेव्चासौ अ-तश्च ॥

आरोग्यम् । न । अनामये । लाघवे । ागराचित्त्ये ॥ अरोगस्य भावः । ब्राह्मणादित्वात्ष्यञ् ॥ रोगाभावसाने ॥

आ ग्यशाला । स्त्री । चिकित्सालये ॥ यथा । धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यंसाधनंयत. । अतस्त्वारोग्यदाता रोभवति सर्वदः ॥ आरोग्यशालांकुर्वीतमहौषधपरिच्छदाम् । विदग्धवैद्यसंयुक्तांवस्त्रवरससंयुताम् ॥ वैद्यस्तुशास्त्रवित्प्राज्ञोदृष्टौषधपराक्रमः । ओषधीमूलतत्त्वज्ञःसमुद्धरणकालवित् ॥ बलवीर्यविपाकज्ञः शालिमांसौषधीगणे । त्यागिवद्देहिनां तद्वदनुकूलःप्रियंवदइतिवैद्यकम् ॥

आरोपः । पुं । मिथ्यारोपणे ॥ यथारज्जौसर्पारोपवत् वस्तुन्यवस्त्वारोपः ॥ मिथ्याविष्करण ॥

आरोपणम् । न । न्यासे । संस्थापने ॥

आरोपितः । त्रि । कल्पिते ॥ कृतारोपणे । निहिते । न्यस्ते ॥

आरोहः । पुं । अवरोहे ॥ वरारोहाकटौ । वरस्त्रियाःश्रोण्याम् ॥ आरोहणे ॥ गजारोहे ॥ दीर्घत्वे ॥ समुच्छ्रये ॥ परिमाणविशेषे ॥ नितम्बे ॥ आरुह्यते अनेनवा आरोहणम् आरोहतिवा । रुहेःकरणेभावेवा घञ् । अच्वा ॥

आरोहकः । त्रि । आरोहणकर्त्तरि ॥

आरोहणम् । न । सोपाने । पैडी इति भाषा । पाषाणादिनिर्मिते सौधाद्युपरिगमनमार्गे ॥ समारोहे । नीचादूर्ध्वगमने । चढना इतिभाषा ॥ प्ररोहणे । अङ्कुरादिजनने ॥ आरुह्यतेऽनेन । रुहप्रादुर्भावे । करणेल्युट् ॥

आर्किः । पुं । अर्कपुत्रे । शनैश्चरे ॥

आर्गवधः । पुं । राजवृक्षे । आरग्वधे ॥

आर्घा । स्त्री । मधुमक्षिका विशेषे । यापीतादीर्घतुण्डा षट्पदसन्निभा भवति ॥

आर्घ्यम् । न । मधुप्रभेदे ॥ मधूकवृक्षा निर्यासंजरत्काष्ठाश्रमोद्भवाः । स्रवन्त्यार्घ्यंतदाख्यातंश्वेतकं माक्षिकंपुन ॥ तीक्ष्णतुण्डास्तुयाः पीतामक्षिकाः षट्पदोपमाः । आर्घास्तास्तत् कृतं यत्तदार्घ्यमित्यपरेजगु ॥ आर्घ्यंमवति चक्षुष्यंकफपित्तहरं परम ।

| आर्त्तव | आर्थीभा |
|---|---|

कषायं कटुकं पाके तिक्तञ्चबल पुष्टिकृत् ॥

आर्त्व:। त्रि। अश्वावति॥ अर्वास्ति अस्य अश्विन्वा। प्रश्नाऽश्वाद्यभ्योण इति पाणिन्युक्तेण.॥

आर्चिक:। पुं। ऋचांव्याख्याने॥ त्रि। ऋक्षुभवे॥ द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमाध्वरपुरश्चरणनामाख्याताट्ठक्॥

आर्जवम्। न। अकौटिल्ये॥ आर्जवं हि कुटिलेषु न नीति'। यथा हृदयवस्थहरणे। परप्रतारणाराहित्ये। परचित्तानुसारित्वे॥ अश्रधानेषुश्रोतृषुस्वज्ञातार्थसङ्गोपने॥ विहितप्रतिषिद्धयोरेकरूपप्रवृत्तिनिवृत्तिशालित्वं शारीरमार्जवम्॥ ऋजोर्भाव:। इगन्ताच्चलघुपूर्वादित्यण्॥

आर्त्त.। त्रि। पीडिते। असुस्थे। जराव्याध्यादिना ऽवसन्ने। दु:खाभिभूते॥ पुत्रवियोगादिदु:खिते॥

आर्त्तगल:। पुं। नीलझिण्ट्याम्। वाणायाम्॥ आर्त्त:वीणोगलति। गलअदने। प० अच्॥

आर्त्तभाग:। पुं। ऋषिविशेषे॥ ऋतभागस्य गोत्रापत्यम्। विदाद्यञ्॥

आर्त्तवम्। न। रजसि। स्त्रीपुष्पे॥ पुष्पे। त्रि। ऋतुजे॥ ऋतुसम्बन्धिनि॥ ऋतु' प्राप्तोऽस्य। ऋतोरण्॥ ऋतुरेववा। प्रज्ञादिभ्यश्चेत्यण्॥

आर्त्तवी। स्त्री। घोटक्याम्। वाजिन्याम्॥

आर्त्ति'। स्त्री। पीडायाम्॥ रोगे॥ आङ्ऋच्छते: क्तिनिउपसर्गादृतीतिवृद्धि:॥

आर्त्विजीन.। पुं। ब्राह्मणे॥ यजमाने॥ ऋत्विक्कर्माहति। ऋत्विजवा अर्हति। यज्ञर्त्विग्भ्यांघखञावि.ति सूत्रेण यज्ञर्त्विग्भ्यांतत्कर्मार्हतीतिचोपसङ्ख्या नमितिवार्त्तिं नञ्॥ विद्यानयजेत विद्या' याजयेदितिद्वयोरपिविदुषोरधिकारात॥ योवाइमांपदश स्वरशोवर्णशोवाचविदधाति स आर्त्विजीनइति आर्त्विजीना. स्यामेत्यधर्ववाकरणमितिभाष्यम्॥

आर्त्विज्यम्। न। ऋत्विक्साध्यकर्मणि॥ ऋत्विज: कर्म। ष्यञ्॥

आर्थिक:। त्रि। अर्थग्राहके॥ अर्थादागते॥ अर्थंगृह्णाति। प्रतिष्कठार्थललामञ्चेतिठक्॥

आर्थीभावना। स्त्री। भावनाविशेषे॥ प्रयोजनेच्छाजनितयागादिक्रि.येच्छाविषयव्यापार आर्थीभावना। साचाख्यातत्वांशेनोच्यते। आख्यातसामान्यस्य व्यापारवाचित्वात्। सा

चांशत्रयमपेक्षते । साध्यंसाधनमि
तिकर्त्तव्यताञ्च । किम्भावयेत् केन
भावयेत् कथंभावयेदिति । तत्रसा
ध्याकाङ्क्षायां स्वर्गादिफलंसाध्यत्वे
नान्वेति । साधनाकाङ्क्षायांयागा
दि करणत्वेनान्वेति । इतिकर्त्त-
व्यताकाङ्क्षाया प्रयाजाद्यङ्गजात-
मितिकर्त्तव्यतात्वेनान्वेति ॥

आर्द्रकः । पु । कृषके ॥

आर्द्र । त्रि । सजलवस्तुनि । क्लिन्ने ।
स्तिमिते । भीजा गीला इतिभाषा ॥
अर्द्यतेस्म । अर्द गतौ । अर्हेर्दीर्घ
श्चेतिरक ॥ आर्द्रद्रव्यंद्विधाप्रोक्तं सर
संनीरसंतथा । सदुग्धंगुसरसकंद्वि
नीरसमुच्यते ॥ वास्तूकंसार्षपंशा
कंगिंगुरुद्योरण्डमार्षकम् । धत्तूरा-
द्यमिदंसर्वमार्द्रंसरसमुच्यते । वटाश्व
त्थकरीराद्यमार्द्रद्रव्यन्तुनीरसम् ।
सदुग्धन्तुद्विधाप्रोक्तंमृदुतीक्ष्णमिति
क्रमात् । शातलावज्रसीहुण्डवारि
ण्याद्यास्तुतीक्ष्णकाः । दुग्धिकार्क-
क्षीरिण्याद्यामृदुदुग्धा. प्रकीर्त्ति-
ताः ॥

आर्द्रकम् । न । मूलविशेषे । अपाकशा
के । शृङ्गवेरे । अदरख इतिभाषा
। आर्द्रिकाभेदिनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णा
दीपनीचसा । कटुकामधुरापाके



रूक्षावातकफापहा ॥ येगुणाःकथि
ताःशुण्ठ्यास्तेपिसन्त्यार्द्रकेखिला ।
भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रक भक्षण
म् ॥ अग्निसन्दीपनंरुच्यं जिह्वाकण्ठ
विशोधनम् ॥ कुष्ठेपाण्डुामयेकृच्छ्रे
रक्तपित्ते कफज्वरे । दाहेनिदाघेश
रदिनैवपूजितमार्द्रकम् ॥ अपिच ।
चक्षुष्यंरोचनंस्वर्थ्यं विकाशिविशदंस
रम् । स्तम्भाटोपानिलघ्नञ्चलवणार्द्र-
कभक्षणम् ॥ गुडार्द्रकवातहरंचक्षु
ष्यंपित्तनाशनम । ज्वरघ्नंचातितृष्य
ञ्चवर्चोभेदिकफापहम् ॥ सुत्वचा
रहितमङ्कुरत.सत्क्षालितंविमलकै
र्बहुतोयैः । मिश्रितंलवणनिम्बुपयो
भिर्वीक्षमार्द्रकमुपैतियोग्यताम् ॥
तैलासुरीरजनिसिन्धुजपङ्कसङ्गिप्र-
स्यन्दमाननवनिम्बुरसप्रसक्तम् । स्वा
दुस्तरांशिशिरवासरभोजनेषु कस्ये-
तिवर्णनपथंखलुशृङ्गबेरम् ॥ इष्यो
र्ष्मांदीपनंहृद्यंसन्तेहंलघुपाचनम् ।
रोचनंतर्पणंबल्यंचार्द्रकंपरिकीर्त्ति
तम् ॥ वातपित्तकफेभानांशरीरव
नचारिणाम् । एकएवनिहन्तास्ति-
लवणार्द्रककेशरी ॥ आर्द्रायाजातम्
। पूर्वाह्णापराह्णार्द्रेति बुन् ॥ आर्द्र
यतिजिह्वायांवा । कुन ॥ आर्द्रसंज्ञ
कंवा संज्ञायामितिकन् । अर्दयतिक

आर्य्यकः | आर्य्यिका

फवा । अर्द्द° । अर्द्दे दीर्घश्चेतिरक् । रकं ॥

आर्द्रकवटः । पुं । मुद्गार्द्रकवटे ॥

आर्द्रता । स्त्री । पङ्किलत्वे ॥

आर्द्रपटवासाः । पुं । तापसविशेषे ॥ आर्द्रपटंवासआच्छादनंयस्य ॥

आर्द्रभाषा । स्त्री । भाषाणीति गौड भाषा प्रसिद्ध माषपर्य्याम् ॥

आर्द्रशाकम् । न । आर्द्रके ॥

आर्द्रा । स्त्री । षष्ठनक्षत्रे ॥ तत्रजातस्यफलंयथा । क्षुधाधिकोरक्तशरीरकान्ति'कलिप्रिय. कोपयुतोऽविनीतः । प्रसूतिकालेचभवेत्किलार्द्रान चार्द्रचेता.शरणागतेपीति ॥ टाप् ॥

आर्द्रालुब्धक' । पुं । केतुग्रहे ॥

आर्भटिः । स्त्री । अत्यादरे । टी । स्त्री ॥

आर्य्यः । पुं । स्वामिनि ॥ वृद्धे ॥ गुरौ ॥ सुहृदि ॥ त्रि । श्रेष्ठकुलोत्पन्ने । सत्कुलोद्भवे ॥ पूज्ये । श्रेष्ठे ॥ सङ्गते ॥ नाट्योक्त्या मान्ये ॥ ... ॥ स्वच्छस्वान्ते ॥ कर्त्तव्यमाचरन् काम मकर्त्तव्यमनाचरन् । तिष्ठतिप्रकृताचारे सतुआर्यइतिस्मृत ॥ अर्त्तुंयोग्यः अर्य्यतेवा । ऋगतौ । ऋहलोर्ण्यत ॥

आर्य्यक' । पुं । पितामहे ॥ मातामहे ॥ न । पिण्डपात्रादिपितृकार्य्ये । इति त्रिकाण्डशेष' ॥

आर्य्यका । स्त्री । श्रेष्ठायांनार्य्याम ॥ उदीचामात इति प्रत्येइत्त्वाभावः ॥

आर्य्यगृह्यः । त्रि । आर्यपक्षाश्रिते ॥ आर्य्यैर्गृह्यते । पदास्वैरिवाह्यापक्ष्येषु चेतिग्रहेः पक्षेक्यप् ॥

आर्य्यधर्म्मः । पु । सदाचारे ॥ त्रि । त इति ॥

आर्य्यपुत्र' । पुं । भर्त्तरि ॥ गुरुपुत्रे ॥

आर्य्यमिश्रः । त्रि । गौरवयुक्ते ॥

आर्य्यहलम् । न । बलात्कारे ॥

आर्य्या । स्त्री । उमायाम् । गौर्य्याम् पार्वत्याम् ॥ मात्रावृत्तप्रभेदे ॥ यथा । पादेद्वादशविषमे मात्राश्चाष्टादशद्वितीयेहि। पञ्चदशचेये कथितागाथा तथैवार्य्या ॥ सानवधा । पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपलाच । गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिश्चनवधार्य्येदं

आर्य्यावर्त्तः । पुं । देशविशेषे । पुण्यभूमौ । यथा । आसमुद्रात्तुवैपूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् । हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्य मार्य्यावर्त्तंमनुर्जगौ ॥ आर्याः आसमन्तात् वर्त्तन्ते पुनः पुनरुद्भवन्त्यत्र । वृतु° । हलश्चेतिघञ् ॥

आर्य्यिका । स्त्री । आर्य्यकायाम् ॥ उदीचामिति पक्षेइत्त्वम् ॥

आर्षः । त्रि । ऋषिप्रणीते । वेदोक्ते ॥
पुं । विवाहविशेषे । वरात् गोद्वयं गृहीत्वा तेनैवसह कन्यादाने ॥ यत्र स्थायर्त्त्विजेदैव आर्ष आदाय गोयुगम् । चतुर्दशप्रथमज. पुनात्युत्तरजश्चषट् । इति याज्ञवल्क्य. । ऋषेरिदायम् । अण् । ऋषिणाप्रोक्तम् । तेनप्रोक्तमित्यण् ॥

॰। धर्म्मः । पुं । मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्यादिप्रणीतेधर्म्मे ।

आर्षभिः । पुं । चक्रवर्त्तिनि । भरते । ऋषभस्यापत्यम् । अतइञ् ॥

आर्षभी । स्त्री । कपिकच्छाम् ॥ मध्यमार्गे नक्षत्र विशेषाणांसंज्ञाविशेषे ॥

.।। तथाहेचापिफल्गुन्यैामघाचैवार्षभीमतेति ।

आर्षभ्यः । पुं । षण्डतायोग्येऋषे । ऋषभस्यप्रकृतिः । ऋषभोप्रानड्डोऽर्यः ।

आर्ष्टिषेणः । पुं । मुनिविशेषे ॥ ऋष्टिषेणस्यगोत्रापत्यम् । विदाद्यञ् । अपत्यसामान्ये शिवाद्यण् ॥

आर्हतः । पुं । सप्तपदार्थवादिनिजिनविशेषे । वादवादिनि ।

आर्हन्ती । स्त्री । योग्यतायाम् ॥ अर्हतोभावः । ब्राह्मणादिषु अर्हतानुम्चेतिनु मागम. ष्यञ्च । ङीष ।
यलोपः ।

आर्हन्त्यम् । न । योग्यत्वे । अर्हतोभावः । नुम्ष्यञौ ॥

आलम् । न । हरिताले । त्रि । अनल्पे । आआलयति । अलभूषादौ । अच् । आलातिवा । ला॰ । आतश्चोपेतिक. ।

आलम्बित. । त्रि । प्राते ।

आलगर्द्दः । पुं । अलगर्द्दे । स्वार्थेऽण् ।

आलभनम् । न । स्पर्शने ।

आलम्ब. । पुं । अवलम्बे । आश्रये । घञ् ।

आलम्बनम् । न । आश्रये । विभावविशेषे । लविअवस्रंसने । आङ्पूर्वाद् ल्युट् ॥

आलम्बित: । त्रि । धृते ।

आलम्बी । त्रि । आलम्बितुंशीले । लवि॰ । सुपीतिणिनि. ॥

आलम्भः । पुं । वधे । मारणे । स्पर्शे । आलभनम् । डुलभष् प्राप्तौ । घञ् । लभेश्च । उपसर्गात् खलघञोरिति नुम् ॥

आलभ्य । त्रि । वधार्हे ।

आलय । पुं । गृहे । आलीयतेऽत्र । लीश्लेषणे । पुंसीतिघः ।

आलयम् । । । मोक्षपर्यन्ते । लयंमर्यादीकृत्य ।

आलयविज्ञानम् । न । अहङ्कारास्पदे

पूर्वापरानुसन्धातरि ॥

आलवालम् । न । वृक्षमूलसेकार्थं स्वल्पजलखाते । आवाले ॥ आसमन्ताज्जलस्यलवमालाति । लाआदाने । मूलविभुजादित्वात्कः ॥

आलस. । त्रि । अलसे । क्रियामन्दे ॥ आलसति । लसश्लेषणे । पचाद्यच् ॥

आलस्यम् । न । अलसत्वे । सतिसामर्थ्ये अवश्यकर्त्तव्यकरणानुत्साहलक्षणे । कौसीद्ये ॥ सत्त्यामप्यौदासीन्यप्रच्युतौ कफादिना तमसाच कायचित्तयोर्गुरुत्वे ॥ व्याधित्वेनाप्रसिद्धमपियोगविषये प्रवृत्तिविरोधिनि ॥ प्रहत्त्यसामर्थ्यं रज' कार्यविरोधि आलस्यम् ॥ त्रि । अलसयुक्ते । तुन्दपरिमृजे । मन्दे ॥ आलसएव । स्वार्थेष्यञ् ॥ अलसस्य कर्मभावोवा । ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ् ॥ आलस्यमस्यास्ति । अ० अच्वा ॥

आलातम् । न । अङ्गारे ॥ स्वार्थेऽण् ॥

आलानम् । न । करिणो बन्धनस्तम्भे ॥ गजबन्धनरज्जौ । बन्धने ॥ आलीयतेऽत्र । लीङ्श्लेषणे । अधिकरणेल्युट् । विभाषालीयतेरित्यात्वम् ॥

आलापः । पु । आभाषणे । कथोपकथने । सम्भाषणे ॥ आलपनम । लपेर्घञ् ॥

आलाप्यः । त्रि । आलापयोग्ये ॥

आलावर्त्तम् । न । वस्त्रनिर्मितव्यजने ॥

आलाबुः । स्त्री ।
आलाबूः । स्त्री । } अलाब्वाम् । तुम्ब्याम् ॥

आलास्यः । पुं । कुम्भीरे ॥ इतिहेमचन्द्र' ॥

आलि. । पुं । भ्रमरे ॥ वृश्चिके ॥ स्त्री । वयस्यायाम् । सख्याम् ॥ सेतौ । क्षुद्रसेतौ । आगन्तुजलवारणार्थं धां-वृतौ ॥ सस्यार्थजलधारणे ॥ पङ्क्तौ । आरामस्थपुष्पादिगुल्मपङ्क्त्याम् ॥ सन्ततौ ॥ त्रि । विशदाशये । शुद्धान्त'करणे ॥ अनर्थे ॥ अलति दंशेसमर्थो भवति । अलेर्बाहुलकादिण् ॥ आलयति । अलभूषणे । कृ ' ॥ आ अलन्त्यम्भः । अलवारणे । सर्वधातुभ्यइन् ॥ अल्यतेऽनयावा । अलभूषादौ । इञजादिभ्यः ॥ आलति । आङिइन् ॥

आलिङ्गनम । न । प्रीतिपूर्वकमिथोदेहसंश्लेषे । उपगूहने । परिरम्भे ॥ कामशास्त्रे ततसप्तधा । यथा । आमोदालिङ्गनम् । मुदितालिङ्गनम् । प्रेमालिङ्गनम् । आनन्दालिङ्गनम् । रुच्यालिङ्गनम् । मदनालिङ्गनम् । विनोदालिङ्गनमिति ॥

आलिङ्गितः । त्रि । आश्लिष्टे ॥

आलिङ्गी । पुं । मृदङ्गविशेषे । आलिङ्ग्ये ॥

आलिङ्ग्यः । पुं । यवाकृतिमृदङ्गे ॥ गोपुच्छाकृतिरालिङ्ग्यः ॥ शब्दार्णवेतु । चतुरङ्गुलहीनोङ्कान्मुखेचैकाङ्गुलेनय. । यवाकृतिः सआलिङ्ग्य-आलिङ्ग्यसह्विवाद्यते इत्युक्तम् ॥ आलिङ्ग्यते । लिगिगतौ । ऋहलोर्ण्यत ॥

आलिञ्जरः । पुं । माट कुण्डा गोल जाला इत्यादि भाषाप्रसिद्धे मणिके । जलभाण्डे ॥ अलिञ्जरएव । स्वार्थे अण् ॥

आलिन्दः । पुं । अलिन्दे ॥ स्वार्थे प्र० अ ॥

आलिम्पनम् । न । मङ्गलालेपने । आतर्पणे । मण्डोदके ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

आली । स्त्री । आलिशब्दार्थे ॥ कृदिकारादितिङीष ॥

आलीढम् । न । धन्विनःपादन्यासप्रभेदे । दक्षपतसङ्कोचान्यपादप्रसारणे । दक्षिणजङ्घाप्रसारवामपादसङ्कोचरूपावस्थानेच ॥ लक्षणं यथा । नमितापूर्वजङ्घाच पश्चिमाप्रगुणाभवेत् । असमोमध्यकायश्चस्यादालीढस्य लक्षणमिति ॥ त्रि । अशिते । भुक्ते ॥ क्षते ॥ सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रे रितिक्षतेलक्षम् ॥ आलेहनम् । लिहेर्नपुंसकेभावे क्तः ॥

आलीढकम् । न । तर्णकानांस्थलीषु क्रीडने ॥

आलीनकम् । न । रङ्गे । राँग इतिभाषा ॥

आलुः । पु । कोकणदेशप्रसिद्धे कन्दविशेषे । कासकन्दे । कासालौ । विशालपत्रे ॥ पेचके ॥ स्त्री । झारी इति भाषाप्रसिद्धे सनालजलपात्रे । कर्कर्याम् ॥ न । कचालू इत्यादिप्रसिद्धेषु मूलविशेषेषु ॥ अथोच्यते । कन्दोबहुविधोलोकेआलुशब्देनभण्यते । कच्चालुचैवघण्टालु पिण्डालु शर्करादिकम्॥इङ्गेजैर्यत्समानीतंविलाती पदपूर्वकम् कोषादिषुनदृष्टंततभक्षितश्चाविवेकिभिः॥निघण्टौनास्य पर्यायानगुणा.परिकीर्त्तिताः । स्मार्त्तैर्नैतद्यवहृतमभक्ष्यंतद्धितार्थिभि ॥ सावूदानायथाऽभक्ष्यस्तथैतत्कथितंबुधै । निजधर्ममजानद्भिर्गृहीतवालिशैर्वृथेति ॥ भेलके ॥ आलाति । ला० । मितद्व्यादित्वात् डु' ॥ इय र्त्ति अर्थतेवा । ऋ० । चोरश्चेत्यत्र चोरितिछित्त्वाऋधातोरपि म

स्येषालुत् वितिकेचित् ॥

आलुकः । पुं । नागाधिपे । शेषनागे । कासालौ । न । मूलविशेषे । तद्विवरण यथा । आलुकमप्यालूकं तत्कथितं वीरसेनस्य । काष्ठालुक शङ्खालुकहस्त्यालूकानिकथ्यन्ते । पिण्डालुकमध्यालुकरक्तालूकानिकथितानि । काष्ठालुकंकाठिन्ययुक्तंकठारु । शङ्खालुकं श्वेततायुक्तसाँखालु । हस्त्यालुकं दीर्घतयुक्तं महाशरीरम् । पिण्डालुकंवर्त्तुलं । सुथनी । मध्वालुकं मधुरतायुक्तं रोमाञ्चितदीर्घ सुथनी । रक्तालुकं रताक रतलुडा इतिच । एषांगुणाः । आलुकं शीतलसर्वंविष्टम्भिमधुरं गुरु । सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्ज्जरंरक्तपित्तनुत् । कफानिलकरं वल्यंवृष्यंस्तन्यविवर्द्धनमितिभावप्रकाशः । एलवालुके ।

आलुकी । स्त्री । अर्ब्द घुड्या इतिख्याते । रक्तालुप्रभेदे । रक्तालुभेदेयाऽदीर्घवर्त्तुलाचप्रथितालुकी । आलुकीवलकृत् स्निग्धागुर्वीहृत्कफनाशिनी । विष्टम्भकारिणीतैलेतलिता तिरुचिप्रदा ॥

आलूः । स्त्री । आलुशब्दार्थे । आलुनाति । लूञ्० । क्विप् ।

आलूकम् । न । आलुके । वीरसेने ॥

आलूकं शीतलंसर्वंविष्टम्भिमधुरंगुरु । सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्जरंरक्तपित्तनुत् । कफानिलकरं वल्यं वृष्यंस्तन्यविवर्द्धनम् । एलवालुके ॥

आलूनः । त्रि । छिन्ने ॥

आलेख्यम् । न । चित्रे ॥ नानार्थे ॥

आलेख्यशेषः । त्रि । मृते ॥

आलेपः । पुं । उपलेपे ॥

आलोकः । पुं । द्योते । प्रकाशे । चाँदनाइतिभाषा । दर्शने । देखना इतिभाषा । वन्दिभाषणे । स्तुतावितियावत् । आलोकनम् । लोकृदर्शने । घञ् ।

आलोकनम् । न । दर्शने । लोकृ० ल्युट् ।

आलोकितः । त्रि । दर्शिते ॥

आलोचनम् । न । दर्शने । विवेचने ।

आलोचितः । त्रि । विवेचिते । कृतालोचने । इतिकर्त्तव्यतयाविचारिते ॥

आवनेयः । पुं । भौमग्रहे । त्रि । अवनीसम्भूते ॥

आवन्त्यः । पुं । व्राटधानेन व्रात्याद्ब्राह्मणात्सवर्णायांसम्भूतिमति ॥

आवपनम् । न । द्रव्यस्थापनपात्रे । भाण्डे । मेराम् । येषुप्रक्षिप्य धान्यादिनीयते तस्यामित्यर्थ. । ओप्यते निचाप्यते धान्यमत्र । टुवपबी

जतन्तुसन्ताने । ल्युट् ॥ वपने । सम्यक्चुरिकर्मणि ॥

आवरकः । पुं । अपवरके । आच्छादके ॥ आव्रियतेऽनेन । वृञ्० । कृञादिभ्यःसंज्ञायांवुन् ॥

आवरणम् । न । ढाल इतिप्रसिद्धफलके ॥ आच्छादने ॥ अविद्यादिबन्धने । अञ्जने ॥

आवरणच्युतिः । स्त्री । बन्धनाशे ॥

आवरणशक्तिः । स्त्री । अज्ञानशक्तौ ॥ यथा ऽल्पोपिमेघोऽनेकयोजन माय तमादित्यमण्डल मवलोकयितृन यनपथपिधायकतयाच्छादयतीव तथा ऽज्ञानंपरिच्छिन्नमपि आत्मान परिच्छिन्नम संसारिण मवलोकयितृबुद्धिपिधायकतयाच्छादयतीवताहृशं सामर्थ्यम् । अनया आवरणशक्त्या ऽऽ वृतस्यात्मन कर्त्तृत्वभोक्तृत्व सुखित्वदुःखित्वादिसंसारसम्भावनापि भवति । यथा स्वाज्ञानेनावृतायांरज्जौ सर्पत्वसम्भावना भवति । अन्तर्दृग्दृश्ययोर्भेदं बहिश्च ब्रह्मसर्गयोर्भेदं वा स्वात्मावलोकयितृबुद्धिमखण्डसच्चिदानन्दस्वरूपंवा आवृणोति । वृञ्वरणे । कर्त्तरिल्युट् । तदेवशक्तिः ॥

आवर्जितः । त्रि । आहृते । मज्जिते ॥

यथा । हविरावर्जितंहोतस्त्वयावधिवद्गन्धिष्विति ॥ आनमिते ॥

आवर्त्तः । पुं । चक्राकारेवारिभ्रमे ॥ भ्रुवाख्येरोमसंस्थानविशेषे ॥ आवर्त्तने ॥ चिन्तने ॥ राजावर्त्तनामोपरत्ने ॥ मेघनायकचतुष्टयान्तर्गतमेघाधिपविशेषे । आवर्त्तोनिर्जलोमेघः ॥ न । माक्षिकधातौ ॥ आवर्त्तनम् । वृतु० । भावेघञ् ॥

आवर्त्तकी । स्त्री । लताविशेषे । भगतवल्ली इति कोकणप्रसिद्धायाम् । मनोज्ञायाम् । रक्तपुष्प्याम् ॥

आवर्त्तनम् । न । अह्नोमध्यभागे । सूर्यस्यपश्चिमदिगवस्थितच्छायायाः पूर्वदिग्गमनारम्भसमये ॥ आवर्त्तनात्तु पूर्वाह्णोह्यपराह्णस्ततःपरम ॥ दुग्धादेरालोडने । औटाना इतिभाषा ॥ धातुद्रव्यस्यद्रवीकरणे । गलावना इतिभाषा ॥ पुं । जम्बुद्वीपोपद्वीप विशेषे ॥ श्रीहरौ ॥ पुनःपुनर्जननमरणसृष्टिप्रलयादिरूपसंसारचक्रमावर्त्तयति । वृतु० । बहुलमन्यत्रापीतियुच् ॥

आवर्त्तनमणिः । पुं । राजावर्त्तनामोपरत्ने ॥

आवर्त्तनी । स्त्री । ताम्रादिधातुद्रव्यद्रवणार्थे मृतपात्रविशेषे । तैजसावर्त्त

न्याम् । मूषायाम् ॥

आवर्त्तितः । त्रि । गुणिते ॥

आवर्त्ती । त्रि । आवर्त्तनशीले ॥ आवर्त्तयति ॥ प्रशंसायांणिनिः ॥

आवर्त्तिनी । स्त्री । अजशृङ्गीवृक्षे ॥

आवर्हः । पुं । उत्पाटने ॥ आवर्हणम् । उद्यमे । घञ् ॥

आवर्हितः । त्रि । उत्पाटिते । उन्मूलिते ॥

आवलिः । स्त्री । वीथ्याम् । श्रेण्याम् । इत्यादिपङ्क्तौ ॥ आवलति । वल सम्वरणे । आङि इन् ॥ परम्परायाम् ॥

आवलितः । त्रि । चञ्चले ॥

आवली । स्त्री । आवलिः । श्रेण्याम् ॥

आवल्यम् । न । दौर्वल्ये ॥ भावेष्यञ् ॥

आवश्यकम् । न । अवश्यम्भावे ॥ मनोज्ञादित्वाद्वुञ् । अव्ययानां भमात्रे इतिटिलोपः ॥ अवश्यकर्त्तव्ये ॥

आवसथ. । पुं । गृहे । वेश्मनि ॥ आर्याकोषे ।आर्याछन्दसि ग्रन्थभेदे ॥ व्रतविशेषे ॥ न । गृहे । गेहे । द्वसिते ॥ वसतिस्थाने । विश्रामस्थाने ॥ आवसन्त्यत्र एत्य वसन्तियत्रवा । वसनिवासे । उपसर्गेवसेरित्यथः ॥

आवसथिकः । पुं । गृहस्थे ॥ त्रि । गृहवासिनि ॥ आवसथे वसति । आवसथात्ष्ठल् । स्त्री । ङीष् ॥

आवसथ्य. । पुं । आवसथसम्बन्धिनिलैकिकेग्नौ ॥ आवसथएव । अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः ॥

आवसितम् । त्रि । ऋद्धे । निष्पन्नधान्ये ॥ आअवसीयतेस्म । षोन्तकर्म्मणि । क्तः ॥ रक्षार्थमाच्छादितेधान्ये ॥ आवस्यतेस्म । वसआच्छादने । क्तः ॥ मर्द्दनानन्तरमपनीततृणे (हे) लीकरणयोग्ये धान्यराशाविति वैयमुकुटः ॥

आवहः । पुं । कामदे ॥ वायोः प्रथमगणे । भूमिवायौ ॥ यथा । द्यौमुलज्योतिरादित्यौ नन्दोषरिलधास्तथा । चित्रज्योतिः सत्यज्यो. ज्योतिष्मानस्कन्धआवहइति॥आभिमुख्येनवहतीति । अभिमुखमागच्छनवा वायुरावहः ॥ पचाद्यच् ॥

आवहमानः । त्रि । क्रमागते ॥

आवापः । पुं । आलवाले ॥ पानभेदे ॥ प्रक्षेपे ॥ भाण्डपचने । आपाके ॥ वलये ॥ शत्रुचिन्तने । परराष्ट्रचिन्तायाम् ॥ निम्नोन्नभूमौ ॥ प्रधानहोमे ॥ आवपन्तिजलमत्र । टुवपबीजतन्तुसन्ताने । हलश्चेति घञ् ॥

आवापकः । पुं । वलये । प्रकोष्ठाभरणे ॥ आउप्यते । टुवप० । कर्म्मणिघञ्

स्वार्थे संज्ञायांवाकन् ॥

आवापनम् । न । सूत्रयन्त्रे । ताँत इति भाषा ॥

आवापस्थानम् । न । आहुतिप्रक्षेपप्रदेशे ॥

आवारि । न । हट्टगालये । हट्टवेश्मनि । हाटघर इतिभाषा ॥ इत्युणादिकोष' ॥

आवारितः । चि । छादिते ॥

आवालम् । ग । वालमभिव्याप्येत्यर्थे- ॥ आङ्मर्यादाभिविध्योरित्यव्ययीभावः ॥

आवालम् । न । आलवाले । वृक्षमूलकृतजलाधारे ॥ आवलते ऽस्मिनेन असंवरणे । हलश्चेतिघञ् । आ ईषत्वालाइत्याः अन्नया ॥

आवास' । पुं । गेहे । वासस्थाने ॥ आवसत्यत्र । वसेर्ल्लश्चेतिघञ् ॥

आवाहनम् । न । आह्वाने ॥ यथा । विनायकं तथादुर्गां वायु माकाशमेवच । आवाहयेद्व्याहृतिर्भिस्तथैवाश्विकुमारकाविति मत्स्यपुराणम् । निमन्त्रणे ॥

आवाहनी । स्त्री । पूजायांमुद्राविशेषे ॥

आविक. । पुं । कम्बले । त्रि । मेषसम्बन्धिनिमांसादौ ॥ भेडीदुग्धे ॥ आविकंलवणं स्वादुस्निग्धोष्णंचाश्मरीप्रणुत् । अहृद्यंतर्पणं केश्यंशुक्रपित्तकफप्रदम् ॥ गुरुकासेनिलोद्भूते केवलेचानिले वरम् ॥

आविग्न. । पुं । करमर्दे । करौंदा इति भाषा ॥ आविजतेस्म । ओविजीभयचलनयोः । आङ्पूर्व. । गत्यर्थाकर्मकेति क्तः । ओदितश्चेतिनिष्ठान् भीते ॥

आविद्धः । त्रि । कुटिले । पराहते । चिप्ते ॥ मूर्खे ॥ अभिभूते ॥ विद्धे ॥ आविध्यतेस्म । व्यधः क्तः । ग्रहिज्यासारणम् ॥

आविद्धकर्णी । स्त्री । पाठायाम्

आविधः । पुं । वेधनास्त्रे । वेधसाधने सूच्यादौ ॥ भ्रमरसूच्यादौ । बर्मा इतिभाषा ॥ आविध्यन्त्यनेन आविध्यते येनवा । व्यध० । घञर्थेकः

आविध्यः । पु । रावणमन्त्रिदृष्टे ॥

आवि. । ग । प्राकाश्ये । प्रादुः ॥ अवते । उड्शब्दे । इर् ॥

आविर्भावः । पुं । प्रकाश ॰ ॰ दुर्भावे । देवावतरणे ॥ उत्पत्तौ ॥

आविर्भूतः । त्रि । प्रकाशिते । प्रादुर्भूते । अवतीर्णे ॥

आविष्कारः । पुं । प्रकाशे ॥

आविष्कृतः । त्रि । प्रकटिते । प्रकटीकृते ॥ आविः अकारि । डुकृञ् ० । क्तः

। आविः क्रियतेस्मवा ॥

आविष्ट । त्रि । प्रेतबाधिते । भूतादिग्रस्ते ॥ आवेशयुक्ते । निविष्टे ॥ व्याप्ते ॥

आविः । अ । प्राकाश्ये । स्फुटत्वे । प्रादुः ॥ अयंनिपातः प्रकाशवाची ॥

आवीतः । पुं । व्यतिरेकन्याये ॥ यथा । यत्कृतकं तदनित्यमित्यन्वयादनित्यत्वमवगम्य यन्नानित्यंनतत्कृतकमितिव्यतिरेकइति । विशेषणस्यष्टमितोवीतः सनभवतिइत्यवीतः । अवीतएव आवीतः ॥

आवीरचूर्णम् । न । फागइति आवीरइतिचभाषाविदिते फल्गुनि ॥ यथा । चन्दनागुरुकस्तूरीकुङ्कुमद्रवसंयुतम् । आवीरचूर्णंरुचिरंगृह्यतापरमेश्वरेति ब्रह्मवैवर्त्ते श्रीकृष्णजन्मखण्डे ८ अध्यायः ॥

आवुकः । पुं । नाट्योक्त्याजनके ॥ अवति । अव० । बाहुलकादुण् । णित्त्वादुपधावृद्धिः ॥

आवृत् । स्त्री । अनुक्रमे । परिपाट्याम् ॥ आवर्त्तनमत्रवा । वृतुवर्त्तने । सम्पदादित्वात्क्विप् ॥

आवृतः । त्रि । कृतावरणे । आच्छादिते । वेष्टिते । संवीते ॥ आव्रियतेस्म । वृञ्वरणे । क्तः ॥ ब्राह्मणादुग्रकन्यायामुत्पन्ने ।

आवृतिः । स्त्री । आवरणे ।

आवृत्तः । त्रि । व्यावृत्ते । निवृत्ते ॥ यथा । आवृत्तानांगुरुकुलाद्विप्राणांपूजकोभवेदिति ॥ कृतावरणे ॥ आवर्त्ततेस्म । वृतु० । क्तः ॥

आवृत्तचक्षुः । त्रि । कार्यकारणभावादुपरतकरणग्रामे ॥ आवृत्तानि विमुखीकृतानिविषयेभ्य श्चक्षूंषि करणानियेन चक्षुर्ग्रहणस्योपलक्षणार्थत्वात ॥ निवृत्तचक्षुषि ॥

आवृत्ति । स्त्री । अभ्यासे । पुनरुच्चारणे ॥ आवर्त्तनम् । वृतु० । क्तिन् ॥ ध्याने ॥

आवेगः । पुं । त्वरायाम् । वेगे ॥ आवेजनम् । ओविजी० । घञ् ॥

आवेगी । स्त्री । वृद्धदारकवृक्षे गावेगोऽस्यस्याः । अर्शआद्यच् । गौरादिः ॥

आवेदनम् । न । निवेदने ॥ आङ्पूर्वाद्विदेर्ल्युट् ॥

आवेशः । पुं । अहङ्कारविशेषे । आटोपे । संरम्भे ॥ अभिनिवेशे । सङ्गे ॥ अनुप्रवेशे ॥ ग्रहामये । भूतसञ्चारे । भूतादिनारोगे ॥ अपस्माररोगे ॥ आवेशनम् । विश० । घञ् ॥

आवेशनम् । न । शिल्पशालायाम् । गृहादन्यस्मिनकारूणां कर्मस्थाने ॥ भूतावेशे ॥ प्रवेशे ॥ कोपे ॥ परिवेशे ।

। सूर्यादिपरिधौ ॥ आविशन्त्यत्र। विशप्रवेशने। करणेति ल्युट युक्वा ॥
आवेशिक । त्रि । अतिथौ ॥ असाधारणे। स्वीये ॥ अवेशे अगृहे भव अध्यात्मादित्वाट्ठञ् ॥
आवेशितः । त्रि । निवेशिते । स्थापिते ॥ यथा । नमय्यावेशितधियां कामः कामायकल्पते। भर्जिता' क्वथिताधा•ना' प्रायोबीजायनेशते इतिश्रीभागवतेश्रीकृष्णोक्तिः॥ मयि परमात्मनीत्यर्थः॥
आवेष्टकः । पुं । प्राचीरादौ । घेर इतिभाषा ॥
आशंसा । स्त्री । इच्छायाम् । स्पृहाया । अप्राप्तप्राप्तीच्छायाम् ॥ आशस र् । शंसुस्तुतौ । गुरोश्चेत्यः । टाप् ॥
आशंसितः । त्रि । वांछिते ॥ आख्याते । उक्ते ॥ नपुंसके भावेक्तः ॥
आशंसिता । त्रि । इच्छावति । आकाङ्क्षाशीले ॥ आशंसते ।आङः शासुइच्छायाम् । तृन् ॥
आशंसुः । त्रि । इच्छौ । इच्छाशीले । इष्टार्थप्राप्तीच्छौ । आशंसितरि ॥ आशंसते । आङःशा० । सनाशंसेच्छुः ॥
आशक्तः । त्रि । सम्यक्शक्तिविशिष्टे ॥

आशङ्का । स्त्री । भये । त्रासे । सङ्कोचे ॥ ईषद्वितर्के ॥
आशनः । पुं । असनवृक्षे ॥
आशयः । पुं । अभिप्राये ॥ पनसे । आधारे ॥ विभवे ॥ अजीर्णे ॥ चेतसि ॥ वासनाख्ये संस्कारे ॥ आफलविपाकाच्चित्तभूमौशेते इतिव्याख्यानात् ॥ कोष्ठागारे ॥ सन्ताने ॥ आत्मयविधाने ॥ आशेरते ऽस्मिन्कर्मानुभववासना इत्यर्थात् ॥ किम्पचाने ॥ धर्माधर्मे । अदृष्टे ॥ शयने ॥ आशयनम् । शीङ्स्वप्ने । एरच् ॥ हृदेशे ॥ यथा । अहमात्मागुडाकेशसर्वभूताशयस्थितइति ॥
आशयाश' । पुं । पावके । वह्नौ । आशेरतेऽस्मिन्नाशयः । एरच् । आधारः । तमश्नाति । कर्मण्यण् ।
आशयिता । त्रि । भोजयितरि ॥ अशेर्ण्यन्तात् तृच् ॥
आशरः । पुं । अग्नौ । राक्षसे । आशृणाति । शॄहिंसायाम् । पचाद्यच् ॥
आशा । स्त्री । दीर्घाकाङ्क्षायाम् । अशक्योपायार्थविषयायां तृष्णायाम् । अनवगतोपायार्थविषयायांवाप्रार्थनायाम् । अप्राप्तवस्त्वाकाङ्क्षायाम् । अनिर्ज्ञातप्राप्तीष्टार्थप्रार्थनायाम् । आयतायांतृष्णायाम् ॥

यथा। पिशाचमोचनं तीर्थं कतिधा-नावगाहितम्। तथाप्याशा पिशाचीनामाशाभिश्चनमुच्यतीति। इ-रिति। दिशि। आसमन्तादश्नुते। अशूङ्व्याप्तौ। पचाद्यच्॥

आशापुरसम्भव:। पुं। भूमिजगुग्गुलौ। आसापुरीधूप इतिभाषा॥

आशाबन्ध:। पुं। समाश्वासे। मर्कटजालके। दिग्बन्धे॥ आशयाबन्ध। आशाया: बन्धोवा॥

आशाम्बर:। त्रि। दिगम्बरे॥

आशास्यम्। त्रि। आशंसनीये। आशी:साध्ये॥

आशित:। त्रि। अशिते। भुक्ते। आ-शायतेस्म। शोतनूकरणे। क्त:। शाच्छोरन्यतरस्यामितीत्वम्॥

आशितङ्गवीनम्। त्रि। पुरागोभ्यस्तृप्तिकृतस्थले। पहलेगायजहाँचरी हैं इतिभाषा॥ त्रिष्वाशितङ्गवीनंस्यात् गोभिर्भुक्ताशिता:पुरा॥ आशिता:-भोजिता: गावोयत्र। अषडक्षाशितङ्गवलमितिख:। निपातनात्पूर्वस्य मुम्॥

आशितम्भव:। पुं। तृप्तौ। न। अन्नादौ। आशितो भवत्यनेन आशितस्य भवनं वेतिविग्रहे। आशिते भुव:करणभावयोरित्याशितम्भवोपपदाद्भुवते: करणभावयो: खच्प्रत्यय:। मुमागम: पूर्वपदस्य। यावता ऽन्नेना तिथ्यादिर्भोजितो भवतिसए वमुच्यते। भावे आशितभवम्॥

आशिता। त्रि। अश्नुरे। बहुभोजनशीले॥

आशिर:। पुं। अग्नौ। सूर्ये। राक्षसे। अश्नुते। अशूव्याप्तौ सङ्घातेच। अश्नातिवा। अशभोजने। अशेर्णिद्दितिकिरच॥

आशी.। स्त्री। हितस्याशंसने। मह्यं यद्धमेच्छितं तत्प्रतितदभिष्टप्रार्थने। आशीर्वादे॥ सर्पतालुगदन्ते॥ आशीस्तालुगतादंष्ट्रा तया:विद्धोन-जीवति। इति विषविद्या॥ त्रायाम्। अप्राप्तप्रार्थने। इ नाशौ षधौ। आशास्ते इतिविग्रहे। आङ्:शासुइच्छायाम्। शासुअनुशिष्टौ। अस्मात् क्विप्चेति क्विप्। आशास: क्वौ उपधायाइत्त्वम्। यद्वा आशासनमनयावा। सम्पदादि:। आशास:क्वौ विसीत्त्वम्॥

आशी:। स्त्री। सर्पदंष्ट्रायाम्। सर्पविषे॥ हिताशंसने॥ आशीर्विवक्षा क्लिश्रोरितिराजशेखरोक्त्या ईकारान्तोयम्। आशीराशीर्हिदंष्ट्रायामिति द्विरूपकोशाश्च॥

आशीर्वादः । पुं । आशीर्वचने । मङ्गलप्रार्थनायाम् ॥ आशिषोवाद ॥

आशीविषः । पुं । विषधरे । सर्पे ॥ आशिषि विषमस्य । पृषोदरादिः ॥

आशु । ा । क्षिप्रे ॥

आशुः । पुं । न । व्रीहिप्रभेदे । वर्षाभव धान्येषष्टिकादौ । पाटले व्रीहौ ॥ न । द्रुते । शीघ्रे ॥ शीघ्रेक्रियाविशेषणत्वेक्लीवम् । सत्वगामित्वे वाच्यलिङ्गम् ॥ अश्नुते । अशूङ्व्याप्तौ । कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्यउण् इत्युण् ॥

आशुगः । पुं । वायौ ॥ वाणे । शरे ॥ अर्के ॥ त्रि । शीघ्रगामिनि ॥ आशुगच्छति । अन्यत्रापीतिगमेर्डः ॥

आशुतोषः । पुं । महादेवे । महेश्वरे ॥ त्रि । शीघ्रंसन्तुष्टे । आशुशीघ्रंतोषस्तुष्टिर्यस्य ॥

आशुपत्री । स्त्री । गजभक्ष्यायाम् । शल्लकीलतायाम् ॥

आशुव्रीहि. । पुं । आशुधान्ये । पाटले ॥ आशुसंज्ञकोव्रीहिः ॥

आशुशुक्षणिः । पुं । अग्नौ । वायौ ॥ आसमन्तात् शोष्टुमिच्छति । आङ्पूर्वाच्छुष्यतेःसन्नन्तात् आङिशुषेः सनश्छन्दसीत्यनिः । छान्दसानामपिक्वचिद्भाषायांप्रयोगः ॥

आशेकुटी । पुं । पर्वते ॥ इति शब्दमाला ॥

आशौचम् । न । अशुद्धौ । वर्णाश्रमविहितकर्मानुष्ठानसङ्कोचावस्थायाम् ॥ अशौचमेव । स्वार्थे अण् ॥

आश्चर्यम् । न । अपूर्वे । अद्भुते । चित्रे । विस्मये ॥ त्रि । अद्भुतवति ॥ आइतिचर्यते अभिनीयते । आश्चर्यमनित्ये इति अभूततद्भावेसुट्निपात्यते । यथा । आश्चर्यंयदिसभुञ्जीत । अद्भुतमित्यर्थः ॥

आश्मः । पुं । अश्मनोविकारे । तस्यविकारइत्यण् ॥

आश्मनः । पुं । अरुणे । सूर्यसारथौ ॥

आश्मरथ्यः । पुं । ऋषिविशेषे ॥ अश्मरथस्य गोत्रापत्यम् । गर्गादिभ्योयञ् ॥

आश्यानः । त्रि । शोषिते ॥

आश्रम. । पुं । न । ब्रह्मचारिणि । गृहिणि । वानप्रस्थे । भिक्षौ । यथा । ब्रह्मचारीगृहस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा । एतेगृहस्थप्रभवाश्चत्वारः पृथगाश्रमाः ॥ सर्वेपिक्रमशस्त्वेते यथाकालंनिषेविताः । यथोक्तकारिणं विप्रंनयन्ति परमाङ्गतिमिति ॥ अत्रकलौविशेषो यथा । ब्रह्मचर्याश्रमोनास्तिवानप्रस्थोपिनप्रिये । गार्ह-

स्थोभैक्षुकश्चैव आश्रमौ द्वौकलौ युगे इति॥ वने ॥ मठे ॥ मुनीनांवा स्थाने॥ आश्रमन्त्यनेनवा । श्र मतपसि खेदे च । घञ् । नोदात्तो पदेशस्येतिवृद्धिर्न ॥ यद्वा । आसम न्ताच्छ्रमो ऽत्र स्वधर्मसाधनक्लेशात्॥ परमात्मनि ॥ आश्रमवत् सर्वेषांसं सारारण्येभ्रमतांविश्रामस्थान त्वा- दाश्रमः परमात्मा । अस्यार्थः । आ श्रमवदाश्रम' यथारण्येचरतामाश्र- मच्छायादीनांविश्रामस्थानम् एवं संसारारण्ये भ्रमतांप्राणिनां सुषुप्ते मोक्षेच विश्रामस्थानं भवति परमे श्वर इति ।

आश्रमधर्मः । पुं । आश्रमाणां ब्रह्मचा रिप्रभृतीनां शास्त्रविहिते साधने । यथा । ब्रह्मचारिणः स्वाध्यायः । गृ हस्थस्य दानंदमश्च यज्ञश्च । वानप्रस्थ स्यतप' । परिव्राजकस्य अभयंसत्त्वसं शुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिरिति । य स्त्वाश्रमंसमाश्रित्य अधिकारःप्रवर्त्त ते । सखल्वाश्रमधर्मस्तु भिक्षादण्डा दिकौ यथा ॥ यतीनान्तुशमो धर्मो नियमोवनवासिनाम् । दानमेवगृ हस्थानांशुश्रूषा ब्रह्मचारिणामिति श्रुतिः। महानिर्वाणेतु। पुरैवकथितं तावत्कलिसम्भवचेष्टितम्। तपःस्वा ध्यायहीनानां नृणामल्पायुषामपि- । क्लेशप्रयासाशक्तानां कुतोदेहपरिश्र मः। ब्रह्मचर्याश्रमोनास्तिवानप्रस्थो ऽपि न प्रिये। गार्हस्थोभैक्षुकश्चैवआ श्रमौद्वौकलौयुगे। गृहस्थस्य क्रियाः सर्वाआगमोक्ताः कलौशिवे । नान्य मार्गैःक्रियासिद्धि कदापिगृहमेधि नाम् ॥ भैक्षुके प्याश्रमेदेवि वेदोक्तं दण्डधारणम् । कलौनास्त्येवतत्त्वज्ञे यतस्तच्छ्रौत संस्कृतिः। शैवसंस्कार विधिनाव धूताश्रमधारणम् । तदे व कथितंभद्रेसंन्यासग्रहणंकलौ । विप्राणामितरेषाञ्चवर्णानां प्रबले कलौ । उभयत्राश्रमेदेविसर्वेषा- मधिकारिता। सर्वेषामेवसं॰ ॰ाः कर्माणिशैववर्त्मना। विप्राणामितरे षाञ्चकर्मलिङ्गंपृथक् पृथक् । इत्यु क्ते रागमोक्त एव आश्रमधर्मः कला वनुष्ठेयः। सचतस्मादेवतन्त्रो समा दनुसन्धेयः।

आश्रमवित् । पुं । दत्तप्रभृतिषु । लोकि आश्रमाः परमार्था इतिसमर्थयन्ते। तदसत्। वेषस्याश्रमशब्दार्थत्वेशूद्रा देरपि प्रसङ्गात् । जातेश्चदुर्विवेचन त्वात् । तन्मूलशौश्रमस्यदर्शयितुम शक्यत्वात्। संस्कारस्यचदेहसमवा- यित्वे पारलौकिकत्वायोगात्। अस

ङ्केचात्मनितदसम्भवात् ॥

आश्रमिक: । त्रि । आश्रमयुक्ते ॥

आश्रमी । पुं । ब्रह्मचर्याद्याश्रमविशिष्टे । अनाश्रमी न तिष्ठेत दिनमेकमपिद्विज: ॥

आश्रय: । पुं । व्यपदेशे ॥ सामीप्ये ॥ आधारे । अवलम्बे ॥ यथा । परिजनस्यराजादि: ॥ निकेते । आयतने । गृहे ॥ राज्ञां सन्ध्यादिषड्गुणान्तर्गतगुणविशेषे । अरिणापीड्यमानस्यजिगीषोर्बलवदाश्रयणे ॥ विषये ॥ आश्रयणम । श्रिञ् एरच् ॥

आश्रयाश: । पुं । अग्नौ । पावके ॥ चित्रकवृक्षे ॥ त्रि । आश्रयनाशके । आश्रयाशिनि ॥ आश्रयमाधारमश्नाति अश्नभोजने । कर्मण्यण् ॥

आश्रयासिद्ध: । पुं । हेत्वाभासविशेषे ॥ यथा । गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत् इति । अत्र गगनारविन्दमाश्रय: सचनास्त्येव । आश्रय: असिद्धोयस्यस: ।

आश्रव: । पुं । अङ्गीकृतौ । क्लेशे ॥ त्रि । सङ्क्लिनिदर्श्योर्विधातुंशक्ये । वचनस्थिते ॥ आशृणोतिवाक्यम् । शुश्रवणे । पचाद्यच् । आङ्पूर्वाच्छृणोतेर्न्ह दीरघ्वा ॥

आश्रित: । त्रि । आश्रयप्राप्ते । शरणागते । आधेये ॥ उपविष्टे ॥ न्यायमतेपरमाणवाकाशादिनित्यद्रव्यभिन्नसर्वद्रव्याणामाश्रितत्वंसाधर्म्यम् ॥ आश्रयति आश्रीयतेस्म वा । श्रिञ् । गत्यर्थेति कर्मणिवा क्त ॥

आश्रुत: । त्रि । अङ्गीकृते । स्वीकृते ॥ कृतश्रवणे । आकर्णिते ॥ आश्रूयतेस्म । श्रुश्रवणे । क्त: ॥

आश्लिष्ट: । त्रि । आलिङ्गिते ॥ श्लिषआलिङ्गने । गत्यर्थाकर्मकेति क्त: ॥

आश्लेष: । पुं । आलिङ्गने ॥ एकदेशसम्बन्धे ॥ आश्लेषणम् । श्लिष । घञ् ॥

आश्वम् । न । अश्वीये । अश्ववृन्दे ॥ अश्वानांसमूह: । कुत्स्याभावे अण् ॥ अश्वस्यकर्मभावयो: ॥ प्राणभृज्जातित्वात् अञ् ॥ त्रि । रथादौ ॥ अश्वेन ऊह्यते । शेषइत्यण् ॥

आश्वतराश्वि: । पुं । बुडिलमुनौ ॥ अश्वतराश्वस्यापत्यम् । इञ् ॥

आश्वत्थम् । न । अश्वत्थवृक्षफले ॥ अश्वत्थस्यफलम् । प्लक्षादिभ्योऽण् विधेर्न लुक् ॥

आश्वयुज: । पुं । आश्विनमासे ॥ आश्वयुजीपौर्णमास्यस्मिन्नस्ति । सास्मिन्पौर्णमासीति अण् ॥

आश्वयुजी । स्त्री । आश्विनपूर्णिमायाम् ॥ अश्वयुजायुक्तापौर्णमासी । नक्ष

चेणयुक्त'काल इत्यण्। टिड्ढेति-
ङीप ॥

आश्वलायन'। पु। ऋषिविशेषे ॥ अ
श्वलस्यगोत्रापत्यम् । नडादिभ्यः
फक् ॥

आश्वस्तः। त्रि। जातविश्वासे ॥

आश्वास.। पु। निर्वृतौ ॥ आख्यायिका
परिच्छेदे ॥ आश्रयप्रदाने ॥ आश्व
सनम्। श्वसप्राणने। घञ् ॥

आश्वासकः। त्रि। आश्वासकारिणि ॥

आश्विनः। पुं। शरद् प्रथमेमासे। इषे
॥ तत्रजातस्यफलम्। राज्ञांप्रियः का
र्य्यकलाविदग्धः स्याद्धर्मगर्भोग्रमती
ग्गशुद्धिः । सुखीवदान्योबहुमान
शाली भक्तो भवेदाश्विनमासजन्मे
ति ॥ अश्विन्यायुक्तापौर्णमासी अ
श्विन्नस्ति । साश्विनपौर्णमासीत्य
ण्। रवेःकन्याराशिस्थितिकाले ॥

आश्विनेयौ। पुं। अश्विनीकुमारयोः।
स्वर्वैद्ययो'॥ अश्विन्याः अपत्ये। स्त्री
भ्योढक् ॥ नित्यद्विवचनान्तः ॥

आश्वीनः। त्रि। एकाह्नेनैकाश्वगम्य
मार्गे ॥ अश्वेनैकाह्नेनातिक्रम्यते।
अश्वस्यैकाहगम इति खञ् ॥

आषाढः। पुं। ग्रीष्मद्वितीयमासे। शु
चौ ॥ आषाढीपौर्णमासी अस्मिन्
। साऽस्मिन् पौर्णमासीत्यण् ॥ तत्र
जातस्यफलम्। अनल्पजल्पी प्रमदा
भिलाषी प्रमादशीलोगुरुवत्सलश्च
। बहुव्ययो मन्दहुताशन'स्या दाषा
ढमासप्रभवोमनुष्यइति ॥ व्रतिनां
पालाशदण्डे ॥ आषाढीपूर्णिमाप्र
योजनमस्य। विशाखाषाढादण् म
न्थदण्डयोरित्यण् ॥ मलयाचले ॥
रवेर्मिथुनराशि स्थितिकाले ॥

आषाढकः। पुं। आषाढमासे ॥

आषाढभवः। पुं। भौमग्रहे ॥ त्रि।
आषाढजाते ॥

आषाढभू.। पुं। कुजे। मङ्गलग्रहे ॥

आषाढा। स्त्री। पूर्वाषाढायाम् ॥ उ
त्तराषाढायाम् ॥

आषाढाभू.। पुं। मङ्गलग्रहे ॥

आषाढिः। पुं। रतिदेव्या'स्वामि ॥

आषाढी। स्त्री। आषाढमासस्यपूर्णि
मायाम ॥ आषाढयायुक्ता पौर्णमा
सी। नक्षत्रेणयुक्त'कालइत्यण् । त
तो ङीप् ॥

आषाढीयः। त्रि। आषाढायांजाते ॥
श्रविष्ठाषाढाभ्यांछण् वक्तव्यः ॥

आष्ट्रम्। न। आकाशे। वियति ॥ अ
श्नुते अशूव्याप्तौ सङ्घातेच। अश्ना
तिवा। अशभोजने। भ्रास्जगमिन
मीत्यादिनाष्ट्रन् वृद्धिश्च ॥

आ०। ।। स्मरणे ॥ अपाकरणे ॥ को-

पे॥आ:रचश्चस्तिष्ठतिष्ठ॥ सन्तापे। य
था। विद्यामातर मा: प्रदर्शयन्तपशू-
नभिश्रामकेहे निखपाइति॥पीडाया
म्॥ आ शीतम्॥क्रोधाविष्कारे॥ सा
टोपतर्जने। आस्ते। आसउपवेशने
। क्विप्॥ आङ्पूर्वादसतेर्वा॥
आस।।। बभूवेत्यर्थे॥
आसः। पुं। धनुषि॥ अस्यन्तेशरा अने
न। असु०। अकर्त्तरिचकारकेसं-
ज्ञायामिति घञ्॥
आसक्तः। त्रि। आसक्तिविशिष्टे। विष
यान्तरपरिहारेण सर्वदानिविष्टे। त
त्परे। प्रसिते। अत्यन्तरते॥ न।
नित्ये। अनवरते॥ आसञ्जि। षञ्ज
ङ्गे। कर्मणि क्तः॥
आसक्तिः। स्त्री। अनुरागे। प्रीतौ।
आनुरक्तौ॥ आङ्पूर्वात्षञ्जे क्तिन्॥
आसङ्गम्।न। अनवरते। नित्ये॥ पुं।
अभिनिवेशे॥ परिष्वङ्गे॥ प्राप्तस्रो
पस्थितेऽपि विनाशे संरक्षणाभिलाषे
॥ कर्तृत्वाभिमाने। भोगाभिलाषे
॥ त्रि। सयुक्ते॥ स्त्री। तुवर्य्याम्।
सौराष्ट्रमृदि॥ आसञ्जनम्। षञ्ज०
घञ्॥
आसङ्गिनी। स्त्री। वातभ्रमे। वात्या
याम्॥
आसत्तिः। स्त्री। सङ्गमे॥ लाभे। स
न्निधौ॥ पदसन्निधानकारणे। यत्
पदार्थस्ययत्पदार्थेनान्वयोऽपेक्षित-
स्तयोर व्यवधानेनोपस्थितिकारण-
मिति न्यायमुक्तावली॥
आसन। पुं। जीवकद्रुमे॥ असनं।
असुक्षेपणे। ल्युः। प्रज्ञाद्यण्॥ न
। द्विरदस्कन्धदेशे। यत्रमहामात्रो
निवसति॥ पीढा चौकी इत्यादिभा
षाप्रसिद्धे पीठे। विष्टरे॥ विजिगीषो
र्दुर्गादीनवष्टभ्य स्थितौ॥ यात्रानि
वर्त्तने। अरिविजिगीष्वोः प्रतिबद्धश
क्त्यो. कालप्रतीक्षयातूष्णीमवस्थाने
॥यथा।परस्परस्यसैन्यानां साम्यत्त्रा
स्वाविचक्षणः। आसनं स्वामिनेब्रूया
न्मन्त्रीस्वामिहितेरतइति॥ अष्टाङ्ग
योगस्यतृतीययोगाङ्गे। पञ्चप्रकार
करचरणादि संस्थानविशेषे॥ यथा।
पद्मासनंस्वस्तिकाख्यं भद्रंवज्रासनं त
था। वीरासनमितिप्रोक्तं क्रमादास
नपञ्चकमिति॥ एषालक्षणानि य
थास्थानेद्रष्टव्यानि॥ अन्यच्च। आस
नानिकुलेशानि यावन्तो जीवज
न्तवः। चतुरशीति लक्षाणि चैकैक
समुदाहृतम्॥ आसनेभ्यःसमस्तेभ्य
साम्प्रतंद्वयमुच्यते। एकंसिद्धासनना
मद्वितीयंकमलासनम्॥ इतिनिरु
त्तरतन्त्रम्। स्थिरसुखमासनमिति

पतञ्जलिः ॥ सुखेनैव भवेद्यस्मिन्नज
स्रं ब्रह्मचिन्तनम् । आसनं तद्विजानी
यान्नेतरत्सुखनाशनमितिपूज्यपा
दाः ॥ आस्यतेऽत्र । आस उपवेशने
। करणेति ल्युट् ॥ शृङ्गारासनानि
बन्धशब्देद्रष्टव्यानि ॥

आसनबन्ध । पु । उपवेशने ॥

आसना । स्त्री । स्थितौ ॥ आस्यतेऽस्या
म । आस० । ण्यासश्रन्थोयुच् ॥

आसनी । स्त्री । विपणौ ॥ स्थितौ ॥

आसन्दः । पु । वासुदेवे । श्रीकृष्णे ॥

आसन्दी । स्त्री । क्षुद्रखट्वायाम् । पीठि
कायाम् ॥ सभामध्यवेदिकायाम् ॥
आस्यतेऽस्याम् । आस० । शब्दादय
श्चोतसाधुः ॥

आसन्नः । त्रि । निकटे ॥ उपस्थिते ॥ आ
सीदतिस्म । गत्यर्थेतिक्तः । आसा
द्यतेस्मेतिवा । क्तः ॥

आसन्यः । पु । प्राणे ॥ त्रि । आस्यभवे ॥
आस्येभवः । यत् । पद्वन्नेत्यासन्नादे
शः प्रभृतिग्रहणस्य प्रकारार्थत्वात् ॥

आसवः । पुं । मद्यमात्रे ॥ मद्यविशेषे ।
मैरेये । शीधौ ॥ शीधुरिक्षुरसैः प
क्वैरपक्वैरासवो भवेत् । मैरेयं धात
की पुष्पगुडधानाम्ल संहितमितिमा
धवेन भेद कृत. । आर्षेरामायणेतु ।
शर्करासवमाध्वीकाः पुष्पासवफला
सवाः । वासचूर्णैश्चविविधैर्दृष्टास्तैस्तैः
पृथक्पृथगित्युक्तम् ॥ कुम्भकभट्टस्तु ।
आसूयतेइत्यासवो मद्यानामवस्था-
विशेषः सद्यःकृतसंसाधन. सन्धानम
द्यभावइत्याह ॥ यदपक्वौषधाम्बुभ्यां
सिद्धं मद्यं स आसव । आसवस्य गुणा
श्चयावीजद्रव्यगुणै समाः । आसू
यते । षुञ् अभिषवे । ऋदोरप् ॥

आसवद्रुः । पु । तालवृक्षे ॥

आसादनम् । न । सन्निधापने । स्थापने ॥

आसादित. । त्रि । प्राप्ते । लब्धे ॥ आलि
वंशीधरे कामकेलीपरे । किं मया सा
दितं मौनमारोपितम् ॥ आयोजिते
। सन्निधापिते ॥ आसाद्यतेस्म ।
षद्लृ० । णयन्त. । क्तः ॥

आसारः । पुं । धारासम्पाते । वेगवृष्टौ
। सुहृद्बले । प्रसरणे । सैन्यानां सर्व
तोव्याप्तौ । अन्वागच्छद्बले । आस
रणम् । आस्रियतेनेनवा । सृगतौ ।
घञ् ॥

आसिकः । त्रि । खड्गधारिणि । असि.
प्रहरणमस्य । प्रहरणमितिठक् ॥

आसिका । स्त्री । आसने । आसउपवे
शने । धात्वर्थनिर्देशेण्वुल् ॥

आसिक्त. । त्रि । ईषत्सिक्ते ॥

आसितम् । न । स्थानविशेषे ॥ आस्यते
ऽस्मिन् । आस० । क्तोधिकरणेचेत्य

धिकरणे क्तः ॥

आसीनः । त्रि । उपविष्टे । बैठा इतिभाषा ॥ आसनेोपविष्टे ॥ अचले ॥ बुद्धावभिव्यक्तविज्ञानप्रकाशने ॥ आस्ते । आस०। लटःशानच् । ईदासः ॥

आसीनप्रचलायितम् । न । उपविश्य निद्रावशेनदोलने । ऊँघना इति-भाषा ॥

आसुतिः । पुं । अभिषवे । मद्यसन्धाने । मदचुवानाइतिभाषा ॥ षुञ्०।क्तिन्॥

आसुतीवलः । पुं । कन्यापाले । शूद्रजातिविशेषे ॥ यज्वनि ॥ शौण्डिके॥ आसुति रस्यास्ति । रजःकृष्यासुतिपरिषदोवलच् । वले इति दीर्घः ॥

सुरः । पुं । असुरे ॥ प्रज्ञाद्यण् ॥ ब्राह्माद्यष्टविवाहान्तर्गतविवाहविशेषे । आसुरोद्रविणादानादितियाज्ञवल्क्यः ॥ ज्ञातिभ्योद्रविणंदत्त्वा कन्यायैचैवशक्तितः । कन्याप्रदानंस्वाच्छन्द्यादासुरोधर्म उच्यते इतिमनुः॥ अत्रमानुषइत्यपिसंज्ञा।शुल्केनमानुषइतिहारीतस्मृतात्॥ असुराणामिवायम् । अण् ॥ न । विड्लवणे॥ असुरस्यकर्मभावोः। त्रि । असुरसम्बन्धिनि॥अण्॥

सुरनिश्चयः । पुं । वेदार्थविरोधिनिनिश्चये ॥ आसुरो विपर्यासरूपोवेदार्थविरोधीनिश्चयोयस्य ॥

आसुरभावः । पुं । हिंसानृतादिस्वभावे ॥ आसुराणा मसुरप्रकृतीना भावःस्वभावः ॥

आसुरत्वम् । न । अयज्वनांधने । यागादिशून्यानांवित्ते ॥ अयज्वनान्तुयद्वित्त मासुरस्वं तदुच्यतेइतिमनोः॥ आसुराणांस्वम् ॥

आसुरिः । पुं । कपिलमुनेःशिष्ये ब्राह्मणे ॥

आसुरी । स्त्री । राजिकायाम ॥ छेदभेदाद्यात्मिकायां चिकित्सायाम् ॥ असुरस्येयम् । तस्येदमित्यण् । असुतिवा । असेरुरन् । प्रज्ञाद्यण् । टिड्ढेतिङीप् ॥

आसुरीप्रकृतिः । स्त्री । शास्त्रानभ्यनुज्ञातविषयभोगहेतुरागप्रधानायां राजस्यां प्रकृतैा । वैदिकनिषेधातिक्रमेण स्वभावसिद्धरागद्वेषानुसारि सर्वानर्थहेतुप्रवृत्तिहेतुभूतायां राजस्यां प्रकृतैा ॥ विषयभोगप्राधान्येन रागप्राबल्यादासुरीत्वम् ॥

आसुरीसम्पत् । स्त्री । असुरत्वप्राप्तिहेतुभूतायां रजस्तमोमय्या सम्पदि ॥ अशुभवासनासन्ततैा॥यथा।दम्भोदर्पोभिमानश्चक्रोधःपारुष्यमेवच।अज्ञानंचाभिजातस्य पार्थसम्पदमासुरी-मिति ॥ शरीरारम्भकालेपापकर्मभि

रभिव्यक्ता मभिलष्यजातस्य कुपुरुष
स्यदभावा अज्ञानान्मातदोषात्सम्भव
न्ति नत्वभयायात्सगुणाद्यर्थः ॥
आसेकः । पुं । आसेचने ॥
आसेक्यः । पुं । नपुंसकविशेषे ॥ तल्ल
क्षणंयथा । पित्रोरल्पस्वल्पवीर्यत्वाद्या
सेक्यः पुरुषो भवेत् । स शुक्रंप्राश्य
लभते ध्वजोन्नतिमसंशयमिति ॥
आसेचनः । त्रि । अद्भुतिकृति । असे
चनके ॥ न आसिच्यतेमनोऽत्र । षि
चक्षरणे । करणेतिल्युट् ॥
आसेचनकम् । त्रि । असेचनके । आसे
चने ॥ संज्ञायांकन् ॥ तदासेचनकं
दृष्टेर्नास्त्यन्तोयस्यदर्शनात् ॥
आसेदिवान् । त्रि । आसन्ने ॥
आसेधः । पुं । राजाज्ञया ऽवरोधे ॥
आसेवनम् । न । पौनः पुन्ये ॥
आसेवा । स्त्री । स्वारसिकीं प्रवृत्तौ ॥
आस्कन्दनम् । न । तिरस्कारे ॥ रणे ॥
संशोषणे ॥ स्कन्दिर्गतिशोषणयोः
भावे ल्युट् ॥
आस्कन्दितम् । न । अश्वगतिविशेषे ।
उत्तेरिताख्येवेगे ॥ स च सम्यग्गति ॥
आस्कन्दने ॥ स्कन्देः स्वार्थण्यन्तात्
भावेक्तः । आस्कन्द सञ्जातोऽस्य ।
तारकादित्वादितच् ॥
आस्कन्दितकम् । न । आस्कन्दिते । अ
श्वानांपञ्चमगतौ । उत्तेरिते । उप
कण्ठे ॥
आस्तः । त्रि । क्षिप्ते ॥
आस्तरः । पुं । करिकम्बले ॥ वस्त्रादया
स्तरणे ॥
आस्तरणम् । न । हस्तिपृष्ठस्थितचित्र
कम्बले । प्रवेणयाम् । भूलइतिभा
षा ॥ आस्तीर्यते ऽनेनवा । स्तृञ् आ
च्छादने । कर्मणि करणेवा ल्युट् ॥
आस्तारकः । पुं । माषेण्डरीप्रभृति
खाद्यद्रव्यसिद्ध्यर्थं स्थालीस्थजलोप-
रिदीयमाने तृणादौ । थर इति-
भाषा ॥
आस्तावः । पुं । यज्ञीयदेशविशेषे ॥ या
ज्ञिकानां संवाददेशे ॥ आगत्य स्तु
वन्त्यस्मिन् । ष्टुञ् स्तुतौ । घञ् ॥
आस्तिकः । पुं । मुनिविशेषे । सतु जर
त्कारुमुनेः पुत्रः । तत्पिता गर्भस्थंतं
मात्वा अस्तीत्युक्त्वा गतइत्यस्मा-
दास्तिकः । इतिमहाभारतम् ॥ आ
स्तिके ॥ त्रि । नास्तिकभिन्ने । वेद
प्रमाणवादिनि । श्रद्धालौ ॥ अस्तिप
रलोक इत्येवं मतिर्यस्यसः । अस्ति
नास्तिदिष्टंमतिरिति अस्तीतिनिपा
तात् यद्वा वचनसामर्थ्यात् इतीप्या
ख्यातात् ठक् ॥
आस्तिकार्धदः । पुं । जनमेजयेराज्ञि ॥

आस्तिक्यम् । न । श्रद्धायाम् ॥ आस्तिकस्यकर्म भावो वा । पुरो° यञ् ॥

आस्तीकः । पुं । मनसापुत्रे आस्तिकमुनौ ॥

आस्तीकजननी । स्त्री । मनसादेव्याम् ॥

आस्था । स्त्री । आलम्बनायाम् ॥ स्थाने ॥ यत्ने ॥ अपेक्षायाम् ॥ आस्थान्याम् ॥ आतिष्ठन्त्यस्याम् आस्थानंवा । ष्ठा° । आतश्चोपसर्गेऽङ् । टाप् ॥ तात्पर्य्येणावर्त्तने ॥

आस्थानम् । न । सभायाम् ॥ निवासस्थाने ॥ आतिष्ठन्त्यस्मिन् । ष्ठा° अधिकरणे ल्युट् ॥ यत्ने ॥

आस्थाननिकेतनाजिरम् । न । सभामण्डपाङ्गने ॥

आस्थानी । स्त्री । सभायाम् ॥ आतिष्ठन्त्यस्याम् । ष्ठा° । अधिकरणे ल्युट् । ङीप ॥

आस्थानीधूर्त्तः । त्रि । सभाधूर्त्ते ॥

आस्थितः । त्रि । आरूढे ॥ प्राप्ते ॥ आङ्पूर्वात्तिष्ठतेर्गत्यर्थेतिक्तः । यतिष्ठतीतीप्सितम् ॥ अङ्गीकृतवति ॥

आस्थितिः । स्त्री । आस्थायाम् । तात्पर्य्येणावर्त्तने ॥

आस्पदम् । न । पदे । स्थाने । प्रतिष्ठायाम् ॥ यथा । "अनुवाद्यमनुक्त्वातु न विधेयमुदीरयेत् । नह्यलब्धास्पदं किञ्चित्कुत्रचित् प्रतितिष्ठतीति" ॥ कृत्ये ॥ प्रभुत्वे ॥ इष्टमगृहे ॥ आपद्यते ऽस्मिन् । आत्मनः पदंस्थानंवा । आस्पदं प्रतिष्ठायामितिनिपातनात सुट् ॥

आस्पन्दनम् । न । कम्पने । स्पन्दने ॥

आस्फालः । पुं । हस्तिकर्णास्फालने । झलञ्झलायाम् ॥

आस्फालनम् । न । ताडने ॥ आटोपे । प्रागल्भ्ये ॥

आस्फुजित् । पुं । शुक्राचार्य्ये ॥

आस्फोटः । पुं । अर्कद्रुमे ॥ शूराद्दोर्वाद्यादिशब्दे ॥ आस्फोटयति । स्फुटिर् विकसने । अच् ॥

आस्फोटकः । पुं । खरोट इति भाषाप्रसिद्धे शैलपीलौ ॥

आस्फोटनम् । न । मुद्गरे ॥ विकाशे ॥ वाह्वादिशब्दे ॥ स्फुटने ॥ आ स्फुटे ल्युट् ॥

आस्फोटनी । स्त्री । वेधनिकायाम् । मुक्तादिवेधिन्याम् ॥ आस्फुट्यते ऽनया । स्फुटभेदनेचुरादिः । करणे-ल्युट् ॥

आस्फोटा । स्त्री । नवमल्ल्याम् । वनमल्ल्याम् ॥ आस्फोटयति । स्फुटिर्° । पचाद्यच् ॥

आस्फोटितम् । न । करास्फोटे ॥

आस्फोतः । पुं । अर्कवृक्षे ॥ कोविदा-रे ॥ भूपलाशवृक्षे ॥ आस्फोटयति । स्फुटिर्० । पचाद्यच् । पृषोदरादिः ॥

आस्फोतकः । पुं । अर्कपर्णे ॥

आस्फोता । स्त्री । अपराजितायाम् ॥ वनमल्लयाम् ॥ सारिवायाम् ॥ हापर-मालीति गौडभाषाप्रसिद्धवृक्षवि-शेषे । कुष्ठविषरोगनाशित्व मस्यगु णः ॥ टाप् ॥

आस्माकः । त्रि । अस्मत्सम्बन्धिनि ॥ यु ष्मदस्मदोरितिपक्षेऽण् । तस्मिन्नणि चयुष्माकास्माकौ ॥

आस्यम् । न । मुखे ॥ मुखमध्ये ॥ त्रि । मुखमध्यभवे । आस्यन्दते अन्नादि ना प्रस्रवति । आस्यन्द्यतेवा अन्ना दिना द्रवीक्रियते । स्यन्दूप्रस्रवणे । अन्येभ्योपीतिडः । यद्वा । अस्यते व र्णायेन अस्यतेग्रासोऽस्मिन्वा । असु क्षेपणे । कृत्यल्युट इति ण्यत् ॥

आस्यपत्रम् । न । पद्मे ॥ आस्यमिवपत्त्रा ण्यस्य ॥

आस्यलाङ्गलः । पुं । शूकरे ॥

आस्यलोम । न । श्मश्रुणि ॥

आस्यशुद्धिः । स्त्री । मुखस्यप्रकृतरस त्वे ॥

आस्या । स्त्री । स्थितौ ॥ आसनम् । आ सउपवेशने । कृत्यल्युटोऽन्यत्र । बाहु लकात् यण्वा ॥

आस्रासवः । पुं । लालायाम् ॥

आस्रपः । पुं । मूलनक्षत्रे ॥

आस्रवः । पुं । क्लेशे ॥ अनेकान्तवादि नां पदार्थान्तरे । चक्षुरादीन्द्रियप ञ्चकस्य यथास्वं प्रवृत्तौ ॥ वृत्तिः पञ्चविकल्पा ध्रुवौध्रुवा चक्षुरादिव र्गस्य । येषास्रवन्त्यजस्रंयतस्त तो साविह्वास्रवःप्रोक्त इत्याहुः ॥

आस्वादः । पुं । रसे ॥ रसानुभवे ॥

आस्वादवान् । त्रि । रसवति । स्वादु युक्ते ॥

आस्वादितः । त्रि । भुक्ते । लीढे ॥

आह । अ । क्षेपे ॥ नियोगे ॥ इद ममा वने ॥ उवाचेत्यर्थे ॥ कालमात्रेनि पातोयम् ॥

आहकज्वरः । पुं । नासाज्वरइतिप्रसिद्ध नासारोगविशेषे ॥ तल्लक्षणं यथा । तनुनारक्तशोथेन युक्तोनासापुटान्त रे । गात्रशूलज्वरकरः श्लेष्मणाह्या हकज्वरइति ॥

आहतः । त्रि । गुणिते ॥ ताडिते ॥ मि थ्योक्ते । मृषार्थके । वन्ध्यासुतोसी त्यादिवचने ॥ ज्ञाते ॥ पुं । आनके । ढक्कायाम् ॥ न । पुरातनेवस्त्रे ॥ नू तनेवस्त्रे ॥ मृषार्थकवाक्ये ॥ आघू

र्थितेः । आहन्यतेस्म । हन० क्तः ॥

आहतलक्षणः । त्रि । कृतलक्षणे । गुणैः प्रसिद्धे । आहतमभ्यस्तं लक्षणं यस्य ॥

आहरः । पुं । उच्छ्वासे । अन्तर्मुखश्वासे ॥

आहरणम् । न । द्रव्याद्यानयने । आनीते ॥

आहव' । पुं । युद्धे । यज्ञे ॥ आह्वानम् आहूयते ऽस्मिन्निति वा । ह्वेञ्स्पर्द्धायांशब्देच । आङियुद्ध इत्यप् सम्प्रसारणञ्च ॥

आहवनम् । न । यागे । आसमन्तात् जुहोत्यस्मिन् । ल्युट् ।

आहवनीयः । पुं । यज्ञाग्निविशेषे । होमार्थे । आहुत्यधिकरणे । गार्हपत्याग्नेरुद्धृत्यहोमार्थं योग्निः संस्क्रियते तस्मिन् । आहूयतेप्रीयते प्रक्षिप्यते वा हविरत्र । कृत्यल्युट इत्यधिकरणे अनीयर् । यद्वा । आहवनमर्हति । तदर्हतीतिछः ॥

आहाः । पुं । अभियोक्तरि । आजिहीते । ओहाङ्गतौ । क्विप् । विश्वपावत्प्रक्रिया ।

आहार. । पुं । द्रव्यगलाध. करणे । जेमने । भोजने । चर्व्यचोष्यलेह्यपेयात्मके दृष्टफले । सात्त्विकराजसतामसभेदात्त्रिविधे । आहरणम् हृञ० । घञ् । यद्वा । आहरन्ति रसमस्मात् । अकर्त्तरिचेति घञ् ॥

आह्रियते हृ० ल्यु० अन्ने । हारे ॥ आहरणे ।

आहारसम्भवः । पुं । शरीरस्थरसधातौ ॥

आहार्य्यम् । त्रि । आगन्तुके । आहरणीये । आरोप्यमाणे । आहर्त्तुं योग्यः । हृञ् । ऋहलोर्ण्यत् । पुं । नाट्योक्तौ भूषादिना रचिते व्यञ्जकविशेषे ।

आहार्य्यशोभा । स्त्री । कृत्रिमशोभायाम् । चित्रभूषादिना कृतद्युतौ ॥

आहावः । पुं । निपाने । कूपसमीपे पश्वादीनां जलपानाय प्रस्तरादिनिर्मिते जलाशये । खेल इतिभाषा । आह्वाने ॥ युद्धे । विग्रहे । आहूयन्तेऽत्र । ह्वेञ् स्पर्द्धायांशब्देच । निपानमाहाव इति ह्वेञः । सम्प्रसारणमप्प्रत्ययश्चनिपाने निपात्यते ।

आह्निकः । पुं । पाणिनिमुनौ ॥ केतुग्रहे ॥

आहिण्डिकः । पुं । निषादेन वैदेह्याजनिते अन्त्यजविशेषे । अस्यच बन्धनस्थानेषु० बाह्यसंरक्षणा दाहिण्डिकानामित्यौशनसेदर्शितत्वात् । कारावराहिण्डिकयोः समानमातापितृकत्वेपि वृत्तिभेदात् संज्ञाभेदः ।

आहितः । त्रि । अर्पिते । निहिते । न्यस्ते । स्थापिते । संपादिते । कृते ।

यथा। आहितोजयविपर्ययेोपि मे श्लाघ्य एव परमेष्ठिना त्वयेति रघुवंशे रामं प्रति भार्गववाक्यम्। आधीयतेस्म। डुधाञ्० क्तः। दधातेर्हिः॥

आहितलक्षणः। त्रि। सौन्दर्य्यादिगुणविशिष्टे। गुणैः प्रतीते। प्रख्यातगुणे। आहितानि लक्षणानि यस्मिन्॥

आहिताग्निः। पुं। अग्निहोत्रिणि। साग्निके॥ आहितः अग्निर्येन। वाहिताग्न्यादिः॥

आहितुण्डिकः। त्रि। व्यालग्राहिणि॥ अहेस्तुण्डं मुखं तेन दीव्यति। तेन दीव्यतीति ठक्॥

आहुक. । पुं। उग्रसेने॥

आहुतम्। न। भूतयज्ञे॥ पञ्चमहायज्ञान्तर्गतन्नयज्ञे॥ त्रि। हुतवस्तुनि। समिधादिद्रव्यैर्भिराभिमुख्येन हुते॥

आहुतिः। स्त्री। देवयज्ञे। होमे। देवमुद्दिश्य मन्त्रोच्चारणपूर्वकाग्नौ हविर्निक्षेपे॥ तद्विशेषो यथा। अल्पे रूक्षे सस्फुलिङ्गे वामावर्त्ते भयानके। आर्द्रकाष्ठैः समुत्पन्ने फुत्कारवति पावके॥ कृष्णार्चिषि सुदुर्गन्धे तथा लिहति मेदिनीम्। आहुतिं जुहुयाद्यस्तु तस्य नाशो भवेद्ध्रुवमिति॥

आहुल्यम्। न। तरवट इ० काश्मीरादिषु प्रसिद्धे क्षुपविशेषे। काञ्चनपुष्पे। शिम्बीफले॥

आहूतः। त्रि। कृताह्वाने॥ ह्वयतेः कर्मणि क्ते सम्प्रसारणदीर्घौ॥

आहूतसम्प्लवः। त्रि। प्रलयकालपर्य्यन्ते॥ आहूतस्य विश्वस्य सम्प्लवः सलिले सम्यक् प्लवनं यत्र॥

आहूतिः। स्त्री। आह्वाने॥ आङ्पूर्वात् ह्वेञः स्त्रियां क्तिन्निति भावे क्तिन्। सम्प्रसारणम्॥

आहृतः। त्रि। आनीते॥

आहेयम्। त्रि। अहिसम्बन्धिविषास्थ्यादौ॥ अहेर्भवम्। इति कुक्ष्योच्यादिना ढञ्। स्त्री। आहेयी॥

आहो। अ। प्रश्ने॥ विकल्पे॥ त्रि..॥ आहन्ति। हन्तेर्डो प्रत्यय.॥

आहोपुरुषिका। स्त्री। दर्पोत्थात्मसम्भावनायाम्। आत्मनि शक्त्याविष्करणे॥ अहो अहम्पुरुषः। शुश्रुपेतिसमास. अहो इति अहमित्यर्थे। मयूरव्यंसकादित्वाद्वासमासः। अहोपुरुषस्य भावः मनो० वुञ्। आहोपुरुषिका दर्पाद्यास्यात् सम्भावनात्मनीत्यमर॥

आहोस्वित्। अ। विकल्पे। आहो॥ आहो चस्वितच॥

आङ्ग. । पुं। अङ्गानां समूहे॥ खण्डिका

ह्र

ह्रिस्वा ह्रन्। अहष्टखोरेवेति नियमा ह्रिलेपेन॥

आह्निकः। दिननिर्वर्त्त्ये। दिनसाध्ये॥ दिनसम्बन्धिनि॥ न। प्रकरणसमूहे। ग्रन्थभागे॥ भोजने॥ नित्यक्रियायाम॥ अह्नानिर्वृत्तम्। तेननिर्वृत्तमितिठञ्॥ आह्निकश्चिसन्ध्यान्तंभवति॥

आह्रादः। पुं। मेघशब्दे। स्तनने॥

आह्लादः। पुं। आनन्दे। हर्षे॥

आह्लादितः। त्रि। आनन्दिते। हृष्टे॥

आह्वयः। पुं। नामनि॥ आह्वयति-इत्याह्वः। आतोनुपसर्गइति के प्राप्ते कविधौ सर्वत्रप्रसारणिभ्योड-तडः। तैर्यायते प्राप्यते। या०। घञर्थेकः॥

आह्वा। स्त्री। नाम्नि। संज्ञायाम्॥ आह्वान माह्वा। आतश्चोपसर्ग इत्यङ्॥

आह्वानम्। न। आवाहने। आकारणे। हूतौ॥ नामनि॥ आङ्पूर्वात ह्वेञो ल्युट्॥

इः

इ। अ। भेदे। कोपोक्तौ। अपाकरणे॥

इक्षुः

अनुकम्पायाम्॥ खेदे॥ सम्बोधने॥ जुगुप्सायाम्॥ विस्मये॥ प्रत्यक्षसन्निधावितिकश्चित्॥

इः। पुं। कामदेवे। मदने॥ इकारे॥

इकटः। पुं। वंशाङ्कुरे॥

इक्कटः। पुं। तृणविशेषे। बहुमूले॥

इक्षवः। पुं। इक्षुमात्रे॥ इतिशब्दरत्नावली॥

इक्षागिका। स्त्री। अनिच्छौ॥

इक्षु। पुं। ईख इतिस्वनामप्रसिद्धेरसाले। मधुतृणे। गुडतृणे। असिपत्रे। मत्स्यपुष्पे॥ अथगुणाः। इक्षवोरक्तपित्तघ्नावल्याहृष्याः कफप्रदाः। स्वादुपाकरसाः स्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमाः॥ अस्यभेदाः। पौण्ड्रकोभीरुकश्चापिवंशकः शतपोरकः। कान्तारस्तापसेक्षुश्चकाण्डेक्षुः सूचिपत्रकः॥ नैपालोदीर्घपत्रश्चनीलपोरोथकोशकृत्। इत्येताजातयस्तेषांगुणावेध्याययास्थलम्॥ बालइक्षुः कफंकुर्यान्मेदोमेहकरश्चसः। युवात्ववातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत्॥ रक्तपित्तहरोवृद्धः क्षतहृद्बलवीर्यकृत्। मूलेतुमधुरोत्यर्थं मध्ये पिमधुरःस्मृतः। अग्रेग्रन्थिषुचक्षेयइक्षुः पटुरसोजनैः॥ * ॥दन्तनिष्पीडितस्येक्षोरसः पित्तास्रनाशनः।

शर्कराऽसमवीर्यःस्याद्विदाहीकफ-
प्रद.॥ मूलाग्रजन्तुजग्ध्यादिपीडना
न्मलसङ्करात् । किञ्चित्कालंविधृ
त्याचविकृतिंयाति यान्त्रिकः ॥ त-
स्माद्विदाहीविष्टम्भीगुरुःस्याद्यान्त्रि
कोरसः ॥ रसः पर्युषितोनेष्टोम्ल-
त्वोवातापहोगुरुः । कफपित्तकरः
शोषीभेदनस्यातिमूत्रलः ॥ * ॥ प
क्वोरसोगुरुःस्निग्धःसुतीक्ष्णः कफवा
तनुत् । गुल्मानाहप्रशमनःकिञ्चित्
पित्तहरःस्मृतः ॥ * ॥ इक्षोर्विकाराः
तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः ।
गुरवोमधुरावल्याः स्निग्धावातहराः
सराः । वृष्यामोहहराः शीताबृंह
णाविषहारिणइति ॥ इष्यते । इष इ
च्छायाम् । इषेःक्सुः । षढोःकःसि
। आदेशप्रत्यययोः । कषयोगेक्षः
॥ अस्य विकाराः । खण्डकाफाणित
गुडखण्डमत्स्यण्डिकासिताः । क्रिमी
न्नालघवोज्ञेयाः शीतवीर्ययथोत्तर
मिति ॥ कोकिलाक्षवृक्षे ॥

इक्षुकाण्डः । पुं । मुञ्जे ॥ काशतृणे ॥

इक्षुकुट्टकः । पुं । गौडिके ॥ इक्षून्कुट्ट
यति । कुट्टच्छेदने । क्वुन्शिल्पिसं
ज्ञयोरपूर्वस्यापि ॥

इक्षुगन्धः । पुं । काशतृणे ॥ क्षुद्रगो
क्षुरे ॥

इक्षुगन्धा । स्त्री । कोकिलाक्षे ॥ क्रोष्ट्र्या
म् । शुक्लविदार्याम् । कृष्णभूमिकू
ष्माण्डे ॥ काशे ॥ गोक्षुरे ॥ इक्षुग
न्धइवगन्धोऽस्याः । वा इक्षु. गन्धो
ऽस्याः । इक्षुशब्दस्तद्गन्धसदृशेगौणः ॥

इक्षुगन्धिका । स्त्री । भूमिकूष्माण्डे ॥ इ
क्षुगन्धैव ॥

इक्षुजः । पुं । फाणितादिषु ॥ फाणित
श्चैवमत्स्यण्डीगुडः खण्डकमेवच ।
सितासितोपलाचैतेषड्भेदाइक्षुजा
मताः ॥

इक्षुतुल्या । स्त्री । आनाखुइतिगौड-
भाषाप्रसिद्धे तृणविशेषे । इक्षुवालि
कायाम् ॥

इक्षुदर्भा । स्त्री । तृणविशेषे
त्रिकायाम् । सुदर्भायाम् ॥

इक्षुनेत्रम् । न । इक्षुमूले ॥

इक्षुपत्रः । पुं । जुन्हरीजुवार इति च
प्रसिद्धेधान्ये । यावनाले ॥

इक्षुमः । पुं । शरतृणे ॥

इक्षुवालिका । स्त्री । तालमखानाइ-
तिप्रसिद्धे क्षुरके । इक्षवालिकायाम् ॥
काशे ॥

इक्षुमती । स्त्री । सरिद्विशेषे ॥

इक्षुमूलम् । न । मोरटके । वंशनेत्रेवृक्षे ॥

इक्षुयन्त्रम् । न । कोल्हू वेलना इति-
चप्रसिद्धे इक्षुनिष्पीडनयन्त्रे ॥

इक्षुयोनिः । पुं । पुण्ड्रकेक्षौ ॥

इक्षुरः । पुं । गोक्षुरे । तालमखाणा इति भाषाप्रसिद्धे कोकिलाक्षे । काशे ॥ इक्षुम् इक्षुगन्धं राति । रादाने । आतोनुपेतिकः ॥

इक्षुरकः । पुं । कोकिलाक्षवृक्षे । स्थूलशरे । काशतृणे ॥

इक्षुरसः । पुं । काशतृणे ।

इक्षुरसक्वाथः । पुं । गुडे ।

इक्षुरसोदः । पुं । इक्षुसमुद्रे ।

इक्षुवल्लरी । स्त्री ।
इक्षुवल्ली । स्त्री । } क्षीरकन्दे । क्षीरविदार्याम् । सिराले इति हिमगिरिभाषा ।

इक्षुवाटिका । स्त्री ।
इक्षुवाटी । स्त्री । } पुण्ड्रके ।

इक्षुवेष्टनः । पुं । भद्रमुञ्जे ।

इक्षुशरः । पुं । काशे ।

इक्षुशाकटम् । न । इक्षुक्षेत्रे । इक्षूणां भवनं क्षेत्रम् । भवने क्षेत्रे शाकटशाकिनौ ।

इक्षुशाकिनम् । न । इक्षुशाकटे । शाकिनः ।

इक्षुसारः । पुं । गुडे ।

इक्ष्वाकुः । पुं । वैवस्वतमनुपुत्रे । सत्यसत्ययुगे अयोध्यायांसूर्यवंशीयप्रादिराजः । स्त्री । कटुतुम्ब्याम् । इक्षुमाकरोति । मितद्र्वादिभ्याट् डुः ॥ इक्षुरितिशब्दमकति । अकगतौ । बाहुलकादुणवा ॥

इक्ष्वारिः । पुं ।
इक्ष्वालिकः । पुं । } काशतृणे ।

इक्ष्वालिका । स्त्री । इक्षुतुल्यायाम् ॥

इङ्गः । पुं । अद्भुते । ज्ञाने । जङ्गमे इङ्गिते । इङ्गनम् । इगिगतौ । घञ् । इङ्गतिवा । पचाद्यच् ।

इङ्गना । स्त्री । संज्ञायाम् ॥

इङ्गितम् । न । इङ्गतेर्भावे । चेष्टायाम् । अभिप्रायसूचकेवचनस्वरादौ शरीरव्यापारे । आकारे । अभिप्रायानुरूपचेष्टाविष्करणे । इङ्गनम् । इगि० । क्तः । इङ्गिताकाराभ्याञ्च शावबालमिव्यादौ तु गेवलीवर्द्दन्यायेन इङ्गितंचेष्टितम् आकारोमुखरागादिरित्यभियुक्ताः ॥ गमने ।

इङ्गितज्ञः । त्रि । भावज्ञे ॥ इङ्गितंजानाति । ज्ञा० । आतइति कः । नष्टेङ्गितज्ञोऽवसरेऽवसीदति ।

इङ्गुदः । पुं । इङ्गुदीवृक्षे । इंगुआ हिंगोटा इतिच०प्रसिद्धे तापसतरौ ॥ इङ्गुंद्यति । दोअवखण्डने । आतोनुपेतिकः । पृ० । इङ्गुदःकुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषकृमीन् । हन्त्युष्णःश्वित्रशूलघ्नस्तिक्तकःकटुपाकवान् ।

इङ्गुदी । स्त्री । तापसतरौ । तनुपत्रे । विषकण्टे । तैलफले । हिंगोटा इतिभाषा । इङ्गुदात्जातेरिति-ङीष् ॥

इङ्गुलः । पुं । } इङ्गुदस्यार्थे ॥
इङ्गुली । स्त्री । }

इङ्गेजः । पुं । खण्डजने । लेच्छे ॥ यथा । पूर्वाम्नाये नवशतंषडशीतिः प्रकीर्त्तिताः । फिरङ्गभाषया मन्त्रा स्तेषांसंसाधनात् कलौ ॥ अधिपामण्डलानाञ्च सङ्ग्रामे ष्वपराजिताः । इङ्गेजा नवषट्पञ्चलेच्छजाश्चापिभाविन इतिमेरुतन्त्रे २३ प्रकाशः ॥

इच्छक. । पुं । रुचके । टावानेबू इति गौडभाषाप्रसिद्धे । त्रि । इच्छायुक्ते ॥

इच्छा । स्त्री । मनोधर्मविशेषे । वाञ्छायाम् । लिप्सायाम् । सुखे तत्साधने चेदंमे भूयादिति स्पृहात्माचित्तवृत्तिःकामइति रागइतिचोच्यते । न्यायमते अस्या कारणम् । निर्दुःखत्वे सुखे चेच्छातज्ज्ञानादेवजायते । इच्छातुतदुपायेस्यादिष्टोपायत्वधीर्यदि । चिकीर्षाकृतिसाध्यत्वप्रकारेच्छातुयाभवेत् । तद्धेतु' कृतिसाध्येष्टसाधनत्वमतिर्भवेत् ॥ अस्याः-प्रतिबन्धः । बलवद्विष्टहेतुत्वमतिः स्यात् प्रतिबन्धिकेति भाषापरिच्छे दः ॥ एषणमिच्छा । इच्छेतिसूत्रेण इषेः शप्रत्ययेनिपातितः ॥

इच्छावती । स्त्री । धनादीच्छायुक्तायां स्त्रियाम् । कामुकायाम् । इच्छास्त्यस्याः । मतुप् ॥

इच्छावसुः । पुं । कुवेरे ॥

इच्छितः । त्रि । वाञ्छिते ॥ इच्छासंजाताऽस्य । ता° इतच् ॥

इच्छु. । त्रि । इच्छाविशिष्टे । आकाङ्क्षायुक्ते ॥ इच्छाशीले ॥ इच्छतितच्छीलः । इषइच्छायाम् । विन्दुरिच्छुरितिसाधुः ॥

इज्जलः । पुं । हिज्जलवृक्षे । निचुले । एति । इण° । क्विप् तुक् । इत् जलमस्य ॥

इज्यः । पुं । सुरगुरौ । वृहस्पतौ ॥ पुष्यनक्षत्रे । श्रीहरौ । येयजन्तिमखैः पुण्यैर्देवतादीन् बहूनपि । आत्मानमात्मनानित्यं विष्णुमेवयजन्तिते ॥ इतिहरिवंश' । त्रि । पूज्ये । श्रीगुरौ ॥ इज्याऽस्यास्ति । अर्शआद्यच् ॥

इज्या । स्त्री । दाने । अध्वरे ॥ अर्चायाम् । सङ्गमे । गवि । कुट्टन्याम् । यजनम् । यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु । व्रजयजोर्भावेक्यप् । वचिस्वपीत्यादिनासम्प्रसारणम् । टाप् ॥

इज्याशीलः । पुं । यायजूके । पुनः पुन

र्थत्वकर्त्तरि॥ इल्वाशीलमस्य॥ इल्वां शीलति शीलयतिवा। शीलसमाधौ। शीलिकामिभक्ष्याचारिभ्योण् इति ण.॥

इल्वाकः। पु। इंचला मोचाचिङ्डी इतिगौडभाषा प्रसिद्धे मत्स्यविशेषे॥

इट्चर। पुं। षण्डे। गोपतौ॥ एषण स। इट्। इष॰ क्विप्। इषाचरति। पचाद्यच्॥

इडविडा। स्त्री। पुलस्त्यभार्यायाम्॥

इडा। स्त्री। इक्ष्वाकोस्तनयायाम्। बुधग्रहस्यभार्यायाम्॥ गवि। सौरभेय्याम्॥ वचने॥ भूमौ। वसुमत्याम्॥ स्वर्गे॥ नाडीविशेषे। वाममुष्काध.स्थाधनुर्वक्राभामनासापर्यन्तं-गताया नाडीसेडेत्युच्यते॥

इडाचिका। स्त्री। गन्धोल्याम्। वरव्याम्। ततैया वरडै भिरड चिमडी इत्यादिभाषाप्रसिद्धायाम्॥

इडावत्सरः। पुं। संवत्सरे॥

इडिका। स्त्री। भूमौ॥ इडैव। स्वार्थे कः। इडकम्॥

इडिक्कः। पुं। वनच्छगले॥ इतिहेमचन्द्रः॥

इडुत्सरः। पुं। संवत्सरे॥

इत्। अ। इत्थमेव॥

इतः। त्रि। गते॥ स्मृते॥ इण्॰। गत्यर्थे तिक्त.॥ मासे॥ ख्याते। एतेःकर्त्तरिक्तः॥

इतरः। त्रि। अन्यस्मिन्॥ पामरे। नीचे॥ तरचंतर.। तृ॰ ऋदोरप्। ए: कामस्यतरः। इनाकामेन तीर्यते वातरतिवा। पचाद्यच्। यद्वा। इतंगमनं करोति। तत्करोतीतिणिच्॥ यद्वा। इतेनज्ञानेनचीयते। मातिप दिकाद्धात्वर्थ इतिणिच्। वाहुलकादरः॥ यद्वा। इ इत्यव्ययमपकर्षे। द्विवचनेतितरप् द्रव्यप्रकर्षत्वान्नाम्॥

इतरविशेषः। पुं। अन्यभेदे॥

इतरेतरम्। त्रि। अन्योन्यस्मिन्। परस्परे॥

इतरेतरयोग.। पुं। सत्त्वप्राधान्ये चार्थविशेषे॥ यथा। प्लक्षश्चन्यग्रोधश्च प्लक्षन्यग्रोधौ। धवश्च खदिरश्च पलाशश्च धवखदिरपलाशा॥

इतरेतराश्रयः। पुं। इतरेतरयोराश्रये॥

इतरेद्युः। अ। अन्यदिने। इतरस्मिन्नहनि॥ सद्यःपरुत् परार्य्यैषमःइत्यादिना इतरशब्दादेद्युस् प्रत्ययः॥

इतश्चेतश्च। अ। अनियतदिग्देशे॥

इतस्ततः। अ। अत्रतत्र॥

इतः। अ। अपादानार्थे। पञ्चम्यर्थे॥ अस्मात्। पञ्चम्यास्तसिल् इदमइश्॥

इति । अ । हेतौ । प्रकाशने । निदर्शने । प्रकारे । परकृतौ । अनुकर्षे । समाप्तौ । प्रकरणे । स्वरूपे । सान्निध्ये । विवक्षानियमे । मते ॥ प्रत्यक्षे । अवधारणे । व्यवस्थायाम् । विवक्ष्यमाणे । परामर्शे । माने । इत्थमर्थे । एवमर्थे । प्रकर्षे । उपक्रमे । एति अयतिवा । इण० । क्तिच् ।

इतिकथः । त्रि । अपार्थवाचि । अश्रद्धेये । नष्टे । इतिइत्थम्प्रकारेणकथायस्य ।

इतिकर्त्तव्यता । स्त्री । कल्पे । पद्धतौ ॥

इतिह । अ । उपदेशपारम्पर्य्ये । ऐतिह्ये ॥ इति एवम् ह किल ।

इतिहा । अ । पारम्पर्य्यप्राप्तोपदेशे ॥

इतिहासः । पुं । पूर्ववृत्तकथायाम् ॥ पुरावृत्ते । व्यासादिप्रणीते पुरावृत्तप्रकाशिनि भारतादिग्रन्थे । धर्मार्थकाममोक्षाणा मुपदेशसमन्वितम् । पूर्ववृत्तकथायुक्त मितिहासंप्रचक्षते । इतिस्मृतिः । इतिहइतिपारम्पर्य्योपदेशोऽस्त्यम् । सआस्तेऽस्मिन्नस । आस० । हलश्चेति घञ् ।

इतिहासपुराणम् । न । आथर्वणब्राह्मणभागे ॥ प्रसिद्धयोरितिहासपुराणयोः ।

इत्कटः । पुं । ओकडा इति गौडभाषा प्रसिद्धे वृक्षविशेषे । बहुमूले । खरच्छदे ।

इत्किला । स्त्री । रोचनायाम् । गन्धद्रव्यविशेषे ।

इत्थम् । अ । एवम्प्रकारे । अनेन एतेन वा प्रकारेणेत्यर्थे इदमस्थमुप्रत्यय । एतेतौरथोरितिइदादेशः ॥

इत्थम्भूतः । त्रि । एवम्प्रकारसमे । कञ्चित् प्रकारंप्राप्ते । इममेतंवा प्रकारमापन्नः । द्वितीयान्तादपिथम् । तथाच शास्त्रीयव्यवहारः । लक्षणेत्थम्भूताख्यानेत्यादिः । एतेन कथम्भूतो व्याख्यातः ।

इत्था । अ । इत्थमर्थे । अनेन एतेनवा प्रकारेणेत्यर्थे प्रकारवचने थाल् ।

इत्यः । त्रि । गम्ये ॥

इत्या । स्त्री । शिविकायाम् । ईयते ऽनया । इण० । संज्ञायांसमजेतिक्यप् ॥

इत्वरः । त्रि । क्रूरकर्मणि । पथिके । दुर्विधे । नीचे । पुं । षण्डे । एति तच्छीलः । इण० ( इण्नशजिसर्त्तिभ्यःक्वरप् ।

इत्वरी । स्त्री । अभिसारिकायाम् । असत्याम् । एतितच्छीला । इण् । क्वरप् । टिड्ढेतिङीप् ।

इत्वा । स्त्री । गन्त्र्याम् ।

इदम् । त्रि । पुरोवर्त्तिनि । इद्यते चराच

रात्मके जगति ॥ सन्निकर्षे ॥ सन्नि
धानादनन्तरोक्त मिदमोविषयः ॥ ए
ति । इण्गतौ । इणोदमुगितिदम्
प्रादोष्टत्तिः ॥ इन्दति । इदिपरमै-
श्वर्यै । इन्द.कमिर्नलोपश्चेतिदोघि
त' ॥ पुं । प्रथमैकवचने । अयम ।
तथैतद्देशकालादौ दृष्टोयमितिकी
र्त्यते ॥ स्त्री । प्रथमैकवचने । इयम् ॥

इदंकार्या । स्त्री । दुरालभायाम् ॥

इदानीम् । अ । सम्प्रत्यर्थे ॥ वाक्याल
ङ्कारे ॥ अस्मिन्काले । दानीञ्च ।
इदमइष् ॥

इदानीन्तनः । त्रि । आधुनिके । सम्प्र
तिजाते ॥ इदानीम्भवः । सायञ्चिर
ं त्यादिनाट्युः ॥

इदावत्सरः । पु । संवत्सरादिपञ्चान्तर्ग
तवत्सरविशेषे ॥

इद्धम् । न । आतपे ॥ दीप्ते ॥ आश्चर्ये
॥ त्रि । निर्मले ॥ वर्द्धिते ॥ ञिइन्धी
दीप्तौ । ञीतःक्तइतिवर्त्तमानेक्तः ॥

इद्धशासनः । त्रि । अप्रतिहताज्ञे ॥

इद्धा । अ । प्राकाश्ये ॥ समिद्धमिद्धेशम
ह्नोददासि ॥

इध्मम् । न । समिधि । अग्निसन्दीपन
काष्ठे ॥ इध्यते अग्निरनेन । ञिइन्धी०
। इषियुधीतिमक् । अनिदितामिति
नलोपः ॥

इनः । पुं । अर्के । सूर्ये ॥ पत्यौ । प्रभौ
॥ नृपभेदे ॥ एति ईयतेवा । इण्० ।
इण्षिञ्जितिनक् ॥

इनानी । स्त्री । वटपत्रीवृक्षे ॥

इन्दम्बरम् । न । इन्दीवरे । नीलोत्पले ॥

इन्दिन्दिरः । पुं । भ्रमरे । षट्पदे ॥

इन्दिरा । स्त्री । श्रियाम् । लक्ष्म्याम ॥

इन्दिरामन्दिरम् । न । विष्णौ ॥ इति
राजवल्लभः ॥

इन्दिरालयम् । न । पद्मे ॥ इन्दिरायाआ
लयः । क्लीवत्वमभिधानात् ॥

इन्दिरावरम् । न । नीलोत्पले ॥ इन्दि
रायावरम् प्रियमिष्टमितियावत् ॥

इन्दिवरम् । न । नीलोत्पले ॥ इन्दति-
। इदिपरमैश्वर्ये । इगुपधात् किदि-
ति इन् । इन्दिः लक्ष्मीः तस्याः वर
मिष्टम् ॥

इन्दीवरम् । न । कुवलये । नीलाम्भो-
जे ॥ इन्देरिन्नन्तात् कृदिकारादिति
ङीष् । इन्दी लक्ष्मीस्तस्याः वरमि
ष्टम् ॥

इन्दीवरिणी । स्त्री । उत्पलिन्याम् ॥

इन्दीवरी । स्त्री । शतमूल्याम् । शता
वर्य्याम् ॥ इन्दीवरमस्त्यस्याः । अर्श-
आद्यच् । गौ० । ङीष् ॥

इन्दुः । पुं । चन्द्रमसि ॥ कर्पूरे ॥ मृग-
शिरोनक्षत्रे ॥ एकाङ्के ॥ उनत्ति अ-

त्तरसेव सर्वामपि भुवं क्लिन्नां करोति । उन्दी क्लेदने । उन्देरिच्चादेरिश्च्युः ॥
इन्दुकः । पुं । अश्मन्तकवृक्षे ॥
इन्दुकमलम् । न । सितोत्पले ॥
इन्दुकलिका । स्त्री । केतक्याम् ॥
इन्दुकान्तः । पु । चन्द्रकान्तमणौ ॥ इन्दुःकान्तोऽस्य ॥
इन्दुकान्ता । स्त्री । रजन्याम् ॥ इन्दुःकान्तोयस्याः ॥
इन्दुक्षयः । पुं । अमावास्यायाम् ॥
इन्दुजनकः । पुं । समुद्रे ॥ इन्दोः जनकः ॥
इन्दुजा । स्त्री । नर्मदायाम् । सोमोद्भवायाम् ॥
इन्दुपुत्रः । पु । बुधग्रहे ॥ इन्दोःपुत्रः ॥
इन्दुपुष्पिका । स्त्री । विषलाङ्गला इति विषलाङ्गलिया इतिच गौडभाषाप्रसिद्धे कलिकारीवृक्षे । स्वर्णपुष्पायाम् ॥
इन्दुभम् । न । मृगशिरोनक्षत्रे ॥
इन्दुभा । स्त्री । कौमुद्याम् । ज्योत्स्नायाम् ॥
इन्दुभृत् । पुं । शिवे ॥ इन्दुं बिभर्त्ति । डुभृञ्० । क्विप् ॥
इन्दुमती । स्त्री । पूर्णिमायाम् ॥
इन्दुरत्नम् । न । मुक्तायाम् ॥
इन्दुलेखा । स्त्री । अमृतायाम् । गुडूच्याम् । सोमलतायाम् ॥ शशिनः कलायाम् ॥ यमानिकायाम् ॥ इन्दोर्लेखेव ॥
इन्दुलोहकम् । न । रौप्ये ॥
इन्दुवल्ली । स्त्री । सोमलतायाम् ॥ गुडूच्याम् ॥
इन्दुव्रतम् । न । चान्द्रायणे ॥
इन्दूरः । पुं । मूषिके ॥
इन्द्रः । पुं । देवराजे । पुरन्दरे । श० ॥ अन्तरात्मनि ॥ परमेश्वरे ॥ इन्द्रोमायाभिःपुरुरूपईयते इतिश्रुतौपरमेश्वरस्य प्रकरणात् ॥ आदित्यविशेषे ॥ कुटजवृक्षे ॥ रात्रौ ॥ भारतवर्षोपद्वीपविशेषे ॥ षण्मानस्यचतुर्थे ऽ।।ऽ प्रभेदे ॥ ज्येष्ठानक्षत्रे ॥ विष्कम्भादिषु षड्विंशयोगे ॥ तत्रजातस्यफलम् । प्रतापशीलोवलवान्गुणाढ्यः क्षमाधिकःश्रीकमलाभ्युपेतः । किलेन्द्रयोगो यदिजन्मकालेमहेन्द्रतुल्यःपुरुषः प्रसन्न इति ॥ इन्दति । इदि० । ऋज्रेन्द्रेत्यादिनारन् ॥
इन्द्रकम् । न । सभागृहे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥
इन्द्रकीलः । पुं । हिमवतोदक्षिणेकुलान्तपीठसन्निहितेद्रिविशेषे ॥ मन्दरपर्वते ॥
इन्द्रकुञ्जरः । पु । ऐरावते ॥ इन्द्रस्यकु

ज्वरः ॥

इन्द्रकोषः । पुं । मञ्चके । खट्वायाम् ।

इन्द्रगोपः । पुं । तीज इति वीरवहुटी इति च भाषाप्रसिद्धे वर्षाभवरक्तवर्णकीटे । शक्रगोपे । अग्निके ॥ इन्द्रो गोपोऽस्य ॥

इन्द्रचन्दनम् । न । हरिचन्दने ॥

इन्द्रचिर्भिटी । स्त्री । लताविशेषे । युग्मफलायाम् । दीर्घवृन्तायाम् ॥

इन्द्रच्छदः । न । सहस्रगुच्छे हारे ॥

इन्द्रजालम् । न । कुहके । जाले । कुसृतौ । मन्त्रौषधादिना यथास्थितस्य वस्तुनोऽन्यथाप्रख्यापने । मायाकर्मणि । भानुमतीकाखेल इतिभाषा ॥ वृद्धास्तु । एतस्मात्किमिवेन्द्रजालमपरं यद्गर्भवासस्थितंरेतश्चेततिहस्तमस्तकपदप्रोद्भूतनानाङ्कुरम् । पर्य्यायेण शिशुत्वयौवनजरावेषैरनेकैर्वृतं पश्यत्यत्ति शृणोति जिघ्रति तथा गच्छत्यथागच्छतीत्याहुः ॥ इन्द्रेण योगविशेषेण जालम् ॥ क्षुद्रोपायविशेषे ॥

इन्द्रजालिकः । पुं । कुहककारिणि । शौभिके । भानमती इतिभाषा ॥

इन्द्रजित । पुं । रावणात्मजे । मेघनादे ॥ इन्द्रमजैषीत् । जि० । क्विप्तुकौ ॥

इन्द्रजिद्विजयी । पुं । लक्ष्मणे ॥

इन्द्रतूलम् । न । आकाशेउटडीयमानेतूले । ग्रीष्महासे । वंशकर्फे ॥

इन्द्रतूलकम् । न । इन्द्रतूले ॥

इन्द्रदारु । न । देवदारुणि ॥

इन्द्रदिक् । स्त्री । पूर्वदिशि ॥

इन्द्रद्युम्नः । पुं । ऋषिविशेषे । भाल्लवेये ॥ नृपतिविशेषे ॥

इन्द्रद्रुः । पुं । अर्जुनवृक्षे ॥ कुटजवृक्षे ॥ इन्द्रस्यद्रुः ॥

इन्द्रधनुः । न । वक्रीभूतेरोहिते । शक्रधनुषि ॥ रविकिरणा बहुवर्णा वातेनविलोडितानभसि । शक्रायुधसंस्थानादृश्यन्ते तत्तु इन्द्रधनुः ॥

इन्द्रध्वजः । पुं । राज्ञादृष्ट्यर्थं क्रियमाणे उत्सवविशेषे । शक्रध्वजे ॥ यथोक्तंभविष्योत्तरपुराणे । एवंयः कुरुते यात्रामिन्द्रकेतोर्युधिष्ठिर । पर्जन्यकामवर्षीस्यात्तस्मिन राज्येनसंशय इति ॥

इन्द्रनील । पुं । पन्ना इतिभाषाप्रसिद्धे मरकतमणौ ॥ क्षीरमध्येक्षिपेच्छ्रीलंक्षीरस्वेन्नीलतांव्रजेत् । इन्द्रनीलमितिख्यातमितिपरीक्षा ॥

इन्द्रपुष्पा । स्त्री । लाङ्गलिकीवृक्षे । विषलाङ्गला इतिगौडभाषा प्रसिद्धे ॥

इन्द्रपुष्पिका । स्त्री । विषलाङ्गलाइति

गौड भाषा प्रसिद्धे कलिकारीवृक्षे॥

इन्द्रप्रस्थः। पुं। न। युधिष्ठिरनिर्मितेपुरो त्तमे। वज्रराजधान्याम्। पार्थनगरे। दिल्ली इतियवनभाषा॥

इन्द्रप्रहरणम्। न। पवौ। वज्रे॥ इन्द्रस्यप्रहरणम्॥

इन्द्रभम्। न। ज्येष्ठानक्षत्रे॥

इन्द्रभूतिः। पुं। अर्हतांगणाधिपभेदे॥

इन्द्रभेषजम्। न। शुण्ठ्याम्॥

इन्द्रमहकामुकः। पुं। कुक्कुरे॥

इन्द्रयवः। पुं। न। इन्द्रजौ इतिभाषा प्रसिद्धेतिक्तवीजविशेषे। कलिङ्गे। भद्रयवे। कुटजवीजे॥ ऐन्द्रंयवंचिदोषघ्नंसङ्ग्राहि कटुशीतलम्। ज्वरातिसाररक्तार्शः कृमिवीसर्पकुष्ठनुत्॥ दीपनगुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित॥ यवाकारवीजत्वात्यवम्। इन्द्रसंज्ञस्यवृक्षस्य यवम्॥

इन्द्रलुप्तः। पुं। केशनाशकरोगे। केशघ्ने॥ न। मस्तकोद्भवरोगविशेषे। खालत्ये॥ तस्यलक्षणम्॥ रोमकूपानुगंपित्तं पित्तेनसहमूर्च्छितम्। प्रच्यावयति रोमाणिततः श्लेष्मासशोणितः॥ रुणद्धिरोमकूपांस्तुततोन्येषामसम्भवः। तदिन्द्रलुप्तंखालत्यं रुज्येतिचविभाव्यते॥ खालत्यंरुज्येतितस्यपर्यायकथनम्। तथाचभोजः। तदिन्द्रलुप्तमित्याहुःखल्लीत्याचकेचनेति। कार्त्तिकस्त्वाह। इन्द्रलुप्तंश्मश्रुणिभवति खालत्यं शिरोरुहेष्वेव रुज्यासवेदनेति आगमस्तत्रनास्तीति नि ानटीका॥

इन्द्रलुप्तकम्। न। इन्द्रलुप्तरोगे॥

इन्द्रलुप्तिकः। त्रि। इन्द्रलुप्तरुजान्विते। निष्केशशिरसि॥

इन्द्रवंशा। स्त्री। वर्णवृत्तविशेषे॥ वंशस्थछन्दसेर्यदिपूर्वमक्षरं दीर्घंप्रयुक्तंकवितावतारकैः। गौडावनीनाथ कुलप्रकाशक स्यादिन्द्रवंशेत्यभिधानतत्तदा॥

इन्द्रवज्रा। स्त्री। वर्णवृत्तविशेषे॥ कर्णद्वयौगणड्समगेन्द्रहारा राजन्नियस्याश्चरणेसमस्ते। तामिन्द्रवज्रामतिमात्रकान्तां भोगीन्द्रवक्त्राज्जगरन्दधाराम्॥ यथा। रक्ताम्बुजे नोद्दितलम्बमाला शीतांशुचण्डातपकुण्डलाभ्याम्। ताराशुताराबलिहृद्यहारैः स्त्रीयांश्रियम्भूषयतीवसन्ध्येति॥

इन्द्रवज्राहतपक्षः। पुं पर्वते॥

इन्द्रवारुणिका। स्त्री। इन्द्रवारुण्याम्॥

इन्द्रवारुणी। स्त्री। राखालसशा इति गौडप्रसिद्धलतायाम्। विशालायाम्। पीतपुष्पायाम्। तोसतुंबी

कीजड जोश्वेतवर्ण और अतिकड वीहोती है इन्द्रहणोतिचभाषा ॥

इन्द्रंवारयति। वृञ्०। चु० । कृवृदा रीतिबाहुलकग्रहणात्दुनन् ॥

इन्द्रहच. । पुं । देवदारुणि ॥

इन्द्रवृद्धा। स्त्री ।व्रणरोगविशेषे। तल्लक्षणम । पद्मकर्णिकवन्मध्येपिडकाभिः पिडकाचिताम् । इन्द्रवृद्धान्तुतांविद्याद्वातपित्तोत्थितांभिषगिति ॥

इन्द्रव्रतम् । न । राज्ञोव्रतविशेषे । यथा । वार्षिकांश्चतुरोमासान् यथेन्द्रोऽभिप्रवर्षति । तथाभिवर्षेत्स्वंराष्ट्रंकामैरिन्द्रव्रतंचरन्निति ॥

इन्द्रशत्रुः । पुं । वृत्रासुरे । इन्द्रस्यशत्रुः शातयिता हन्तेतिषष्ठीसमासेन तत्रस्येन्द्रहन्तृत्वम् । इन्द्रे ॥ इन्द्रःशत्रुर्यस्येतिबहुव्रीहिस्वरस्येन्द्रेणवध्यत्वात् ॥

इन्द्रसावर्णिः । पुं । चतुर्दशमनौ ॥

इन्द्रसुत. । पुं । जयन्ते ॥ वालिनामवानरराजे ॥ अर्जुनपाण्डवे ॥ अर्जुनवृक्षे ॥ इन्द्रस्यसुतः ॥

इन्द्रसुरसः । पुं । इन्द्रसुरिसे ॥

इन्द्रसुरिसः । पुं । निर्गुण्ड्याम् । सिन्दुवारे । स्योंडी इति काशी भाषा । सभालूइतिभाषा । वनर्हां इतिपर्वतभाषा ॥

इन्द्रसूनु. । पुं । इन्द्रसुतस्यार्थे ॥

इन्द्रसेनः । पुं । कुशद्वीपस्थेऽद्रिविशेषे ॥

इन्द्रा । स्त्री । फणिज्झकवृक्षे ॥

इन्द्राक्षः । पुं । ऋषभौषधौ ।

इन्द्राग्निधूमः । पुं । हिमे ।

इन्द्राणिका । स्त्री । इन्द्रसुरिसे । निर्गुण्ड्याम् । इन्द्रस्यजन्या । इन्द्रवरुणेतिङीषानुकौ । अन्यजनकत्वाणीपिपुंयोगस्तत्रगृह्यते । कन् । ह्रस्वत्वञ्च । यद्वा । इन्द्रमानयति । अनेर्ण्यन्तात् कर्मण्यण् । ङीप् । कन् । ह्रस्वः ।

इन्द्राणी । स्त्री । इन्द्रपत्न्याम् ॥ शच्याम् । इन्द्रस्यस्त्री । इन्द्रवरुणेति ङीषानुकौ । दुर्गायाम् । यथा । ऐश्वर्यं परमंयस्याःवशेचैव सुरासुराः । इन्द्रिय परमैश्वर्ये इन्द्राणीतेनसाभिवेतिदेवी पुराणम् । इन्द्रसुरिसे । स्त्रीणांकरणे । नीलसिन्दुवारे । स्थूलैलायाम् । मातृकाविशेषे ॥

इन्द्रानुजः । पुं । विष्णौ ।

इन्द्रायुधम् । न ।इन्द्रधनुषि । शक्रायुधे ।

इन्द्रारिः । पुं । असुरे । इन्द्रस्यअरिः ।

इन्द्रावरजः । पुं । विष्णौ । इन्द्रस्यावरं जातः । अन्येष्वपीतिडः ।

इन्द्राशनः । पु । भङ्गायाम् । संविदि ।

इन्द्रासनम् । न । पञ्चमात्रिकस्यप्रथमे

।ऽऽ प्रभेदे ॥

इन्द्रियम् । न । विषयिणि । हृषीके । चक्षुरादिषु ॥ सात्त्विकाहङ्कारोपादानानि इन्द्रियाणि । तानिच बुद्धीन्द्रियकर्म्मेन्द्रियभेदाद्द्विविधानि । उभयमपि इन्द्रस्यात्मनो विषयोपलब्धिकरणतया लिङ्गत्वादिन्द्रियमुच्यते । तत्र श्रोत्रत्वक्चक्षूरसनाघ्राणाख्यानि ज्ञानेन्द्रियाणि भवन्ति । वाक्पाणिपादपायूपस्थानिच कर्मेन्द्रियाणि भवन्ति । उभयात्मकंमन । इत्येकादशानीन्द्रियाणि भवन्ति ॥ भूतप्रकृतिकानीन्द्रियाणीति नैयायिकाः । तथाच गौतमप्रणीतं सूत्रम् । घ्राणरसनचक्षुस्त्वक्श्रोत्राणीन्द्रियाणि भूतेभ्यः । १ । १२ ॥ विषयग्रहणकार्य्यानुमेयकरणमिन्द्रियम् । इन्द्रस्यात्मनो लिङ्गम् इन्द्रेणदृष्टं ज्ञातं ममचक्षुर्मम श्रोत्रमित्यादिक्रमेण इन्द्रेणसृष्टम् इन्द्रेणजुष्टम् प्रीणितं सेवितंवा इन्द्रेणदत्तं यथायथंविषयेभ्यः । इतिशब्दरूपे प्रकारे तेनइन्द्रेण दुर्जयम् इत्याद्यर्थं घ इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गत्वादिनिपातनादिन्द्रशब्दात्घच् ॥ रेतसि । स्त्री ॥

इन्द्रियकर्म्म । न । वाह्यानांश्रोत्रवागादीनां मान्तरयोश्चमनोबुद्ध्योःकर्म्मसु ॥ तानिचशब्दश्रवणस्पर्शग्रहणरूपदर्शनरसग्रहणगन्धग्रहणानि वचना दानगमनविसर्गानन्दाख्यानि, सङ्कल्पाध्यवसायौच यथासङ्ख्यंभवन्ति ॥

इन्द्रियग्रामः । पुं । इन्द्रियसमूहे ॥

इन्द्रियनिग्रहः । पुं । विषयेभ्य श्चक्षुरादिवारणे ॥ चक्षुश्श्रोत्रादिज्ञानेन्द्रियाणां वाक्पाण्यादिकर्म्मेन्द्रियाणाञ्च तत्तद्गोलकोपरोधमात्रेणहठान्निरोधइत्यर्थः ॥ इन्द्रियाणान्तु सर्वेषांयद्येकं क्षरतीन्द्रियम् । तेनास्य क्षरतिप्रज्ञाहृतेःपात्रादिवोदकम् ॥

इन्द्रियबधः । पुं । एकादशविधे इन्द्रियाणाम्बधे ॥ यथा । वाधिर्य्यंकुष्ठतान्धत्वं जडताऽजिघ्रता तथा । मूकता कौण्यपङ्गुत्वक्लैव्योदावर्त्तमत्तताः ॥ यथा सङ्ख्यमेकादशाना मेकादशवधाभवन्ति ॥

इन्द्रियवृत्तिः । स्त्री । श्रोत्रादीनांशब्दादिषु । वागादीनां वचनादिषु । मनोबुद्ध्योः सङ्कल्पाध्यवसाययो' ॥ यथाहुः साङ्ख्याः । शब्दादिषुपञ्चाना मालोचनमात्र मिष्यतेवृत्तिः । वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दाश्चपञ्चा

नाम ॥ वु, इन्द्रियाणां सम्मुग्धवस्तुमात्रदर्शनमालोचन मुक्तम् । यथाहुः । सम्मुग्धं वस्तुमात्रञ्च प्रागगृह्णात्यविकल्पितम् । ततसामान्यविशेषाभ्यां कल्पयन्ति मनीषिणइति । तथा । अस्तिह्यालोचनंज्ञानं प्रथमंनिर्विकल्पकम् । बालमूकादिविज्ञानसदृशंशुद्धवस्तुजम् ॥ तत. परंपुनर्वस्तुधर्म्मैर्जात्यादिभिर्यया । बुद्ध्यावसीयते सापिप्रत्यक्षत्वेनसम्मतेति ॥

इन्द्रियस्वापः । पुं । प्रलये ॥

इन्द्रियात्मा । पुं । इन्द्रियेषु ॥

इन्द्रियादिः । पु । इन्द्रियाणांकारणे राजसाहङ्कारे ॥ ॥

इन्द्रियार्थः । पुं । शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाख्ये । विषये । गोचरे । गन्धरसरूपस्पर्शशब्दाः पृथिव्यादिगुणास्तदर्थाः । इति न्यायसूत्रम् । १ । १४ ॥ वैशेषिकाणां द्रव्यगुणकर्मसु अर्थशब्दाभिधेयत्वम् । अतः पञ्चानांगन्धादीनामेवकथंतत्त्वमित्याशङ्कानिरासायसूदर्थादूस्युक्तम् । तेषामिन्द्रियाणामर्थाविषयाउद्दिष्टा अपि तदवेत्याशयः । इत्यञ्चतदर्थत्वंलक्षणमितिमन्तव्यम् । तच्छब्देनबहिरिन्द्रियाणिपरामृश्यन्ते । तथाच एकैकबहिरिन्द्रियमात्रग्राह्यविशेषगुणत्वं बहिरिन्द्रियद्वयाग्राह्यबहिरिन्द्रियग्राह्यगुणत्वंवातदर्थः । पृथिव्यादिगुणाइतिलक्ष्यनिर्देशः । तेके गुणा इत्याकाङ्क्षायांगन्धेत्यादि । पृथिव्यादीनांगुणाइतिषष्ठीसमासेन भाष्यसम्मत. तेनगुणगुणिनोरभेदो नेतिसूचितम् ॥ इन्द्रियैरर्थ्यंते । अर्थयाञ्चायाम् । कर्मणिघञ् ॥

इन्द्रियायतनम् । न । शरीरे ॥

इन्द्रियार्थसन्निकर्षः । पुं । प्रत्यक्षज्ञानहेतौ ॥ सचषड्विधः । संयोगः । संयुक्तसमवायः । संयुक्तसमवेतसमवायः । समवायः । समवेतसमवायः । विशेषणविशेष्यभावश्चेति ॥

इन्द्रियेशः । पुं । आत्मनि । जीवे ॥

इन्द्रेज्यः । पुं । बृहस्पतौ ॥ इन्द्रस्येज्यः ॥

इन्धनम् । न । वह्निसन्दीपनार्थतृणकाष्ठयो' । पाकार्हकाष्ठे । एधसि ॥ इन्धेऽग्निरनेन । ञिइन्धी० । करणेति ल्युट् ॥

इभः । पुं । गजे । हस्तिनि ॥ उत्तरपदस्थः श्रेष्ठे ॥ अष्टमे ॥ एति ईयतेवा । इण्० । इणः किदितिभ' ॥

इभकणा । स्त्री । गजपिप्पल्याम् ॥ इभकणा ॥

इभदन्ता । स्त्री । नागदन्त्याम् । पर्वपुष्प्याम् । विषौषधौ ॥

इभनिमीलिका । स्त्री । भङ्ग्याम् ॥ कुलंमिषश्चवैदग्ध्यीभङ्गिश्चेभनिमीलिकेतिचिकाण्डशेषः ॥

इभपालकः । पुं । हस्तिपके ॥

इभभरः । पुं । गजसमूहे ॥ इभानांभरः ॥

इभमाचलः । पुं सिंहे ॥

इभया । स्त्री । स्वर्णक्षीरीवृक्षे ॥

इभाख्यः । पुं । नागकेशरवृक्षे ॥

इभोषणा । स्त्री । गजपिप्पल्याम् ॥

इभ्यः । त्रि । आढ्ये । धनवति ॥ पुं । राज्ञि ॥ हस्तिपके ॥ इभमर्हति । दण्डादित्वात्यत् ॥ यद्वा । इःकामात् भ्यसते । भ्यसभये । अन्येभ्योपीतिड ॥

इभ्यग्रामः । पुं । हस्तिपकानांसवसथे ॥

इभ्या । स्त्री । शल्लकीवृक्षे ॥ करेण्वाम् । टाप् ॥

इभ्यिका । स्त्री । इभ्यायाम् ॥ इभ्येव । स्वार्थेकन् । उदीचामितीत्वा देशः । पक्षे इभ्यका ॥

इयत् । त्रि । इदम्परिमाणविशिष्टे । एतावति ॥ इदम्परिमाणमस्य । किमिदम्भ्यांवोघइतिवतुप् वस्यघः । इदङ्किमोरीश्की । यस्येतिलोपः । प्रत्ययमात्रमवशिष्यते ॥ पठन्तिचान्वैयाकरणाश्चोपनिषदाश्च । उदितवतिपरस्मिन्प्रत्ययेशास्त्रयोर्नैगतवतिविलयश्चप्राकृतेपिप्रपञ्चे । सम्पदिपदमुदीतं केवलं-प्रत्ययोयत् तदियदितिमिमीतेकोविदापण्डितोपीति ॥ पुं । इयान् । स्त्री । इयती ॥

इयत्ता । स्त्री । सीमायाम् ॥ परिमाणे ॥ संख्यायाम् ॥ इयतोभावः । तल् ॥

इरम्मदः । पुं । मेघज्योतिषि । वज्राग्नौ ॥ इराउदकम् तेनमाद्यतिदीप्यते अबिन्धनत्वात् इत्यर्थे उग्रम्पश्येरम्मदेत्यादिनाखश् प्रत्ययोमुमागमश्चनिपातितः ॥ वाडवोपिइरम्मदइतिकेचित् ॥

इरा । स्त्री । भुवि ॥ वाचि । वारुण्याम् ॥ सुरायाम् ॥ इं कामंराति । रादाने । आतोनुपेतिकः ॥ अम्बुनि । जले ॥ इणगतौ । एतिईयतेवा । ऋज्रेन्द्राग्रेतिसाधुः । निपातनाद्गुणाभावः ॥ अन्ने ॥

इराचरम् । न । करकायाम् । वर्षोपले ॥ त्रि । भूचरे ॥ अम्बुचरे ॥ इरायांचरति । चरेष्टः ॥

इराजः । पुं । कन्दर्पे ॥

इरावती । स्त्री । वटपत्रीवृक्षे । पाताखभेदीविशेषे ॥ परीक्षित्नृपतेर्भार्यायाम् ॥

इरिणम् । न । ऊषरभूमौ । शून्ये । निराश्रये । ऋच्छति । ऋगतिप्रापणयोः । अर्त्तेः किदिच्चेतीनन् ।

इरिमेदः । पुं । अरिमेदे । विट्खदिरे । इरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रजित् । हन्ति कण्डुविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषग्रहान् ।

इरिवेल्लिका । स्त्री । मस्तकोद्भवव्रणजन्यपीडाविशेषे । तल्लक्षणम् । पिडकामुत्तमाङ्गस्थां वृत्तामुग्ररुजाज्वराम् । सर्वात्मिकां सर्वलिङ्गां जानीयादिरिवेल्लिकामिति ।

इरेशः । पुं । विष्णौ । वरुणे । वागीशे । राज्ञि । इरायाः ईशः ।

इर्वारुः । स्त्री । कर्कट्याम् ।

इर्वारुशुक्तिका । स्त्री । फुट इतिभाषाप्रसिद्धे इर्वारुविशेषे । निर्भिन्नकर्कट्याम् ।

इलः । त्रि । प्रेरके । इलति प्रेरणां करोति । इल प्रेरणे । इगुपधलक्षणः कः ।

इलविला । स्त्री । पुलस्त्यभार्यायाम् । हविर्भुवि । कुवेरस्य जनन्याम् ।

इला । स्त्री । सौम्यकलत्रे । बुधयोषिति । धरित्र्याम् । गवि । वाचि । इलति । इल उत्क्षेपे । इगुपधेति कः ।

इलावृतम् । न । जम्बुद्वीपस्य नववर्षान्तर्गतवर्षविशेषे । तच्च सुमेरुसंवेष्ट्यास्ते । पश्चान्माल्यवतः प्राच्यां गन्धमादनशैलतः । इलावृतं नीलगिरेर्याम्यतो निषधादुदक् ।

इलिका । स्त्री । अचलायाम् । भुवि । इलैव । स्वार्थे कः ।

इली । स्त्री । ईल्याम् । करवालिकायाम् । कटारी हाथछुरी इतिभाषा । इल गतौ क्षेपे च । इन् । कृदिकारादिति वा ङीष् ।

इलीशः । पुं । इल्लिशे । हिलशे माछ इतिगौडभाषाप्रसिद्धे मत्स्यविशेषे ।

इल्लिशः । पुं । इलीशे । इल्लिशो मधुरः स्निग्धो रोचनो वह्निवर्द्धनः । पित्तहृत् कफकृत् किञ्चिल्लघुर्वृष्योऽनिलापहः ।

इल्लीशः । पुं । इल्लिशे ।

इल्वकाः । स्त्री । इल्वलासु । नित्यं बहुवचनान्तः ।

इल्वलः । पुं । वातापेर्भ्रातरि दैत्यविशेषे । मत्स्यप्रभेदे । पक्षिविशेषे । इलति । इल स्वप्ने क्षेपणे च । सानसिवर्णसि पर्णसीत्यादिना वलच् गुणाभावश्च निपात्यते ।

इल्वलाः । स्त्री । मृगशिरःशिरोदेशस्थतारकासु । मृगशिर शिरस्थानां पञ्चानां स्वल्पतारकाणां यास्तारकास्तच्छिरोदेशे निवसन्ति ताः इल्व

णाः । इच्छन्ति । इष० । निपातनाद्द
स्य गुणाभावश्च । नित्यबहुवचना
न्तोऽयम् ॥

इव । अ । उपमायाम् । सादृश्ये । साम्ये ।
ईषदर्थे । उत्प्रेक्षायाम् । वाक्यालं
ङ्कारे ।

इषः । पुं । आश्विनमासि । इषगतौ । ए
षणाम् इट् यात्रा । भावेक्विप् । साऽस्मि
न्नस्ति जिगीषूणाम् । अर्श आद्यच् ॥

इषिका । स्त्री । गजाक्षिगोलके ॥ ईष्य
ते । ईषउञ्छे । ईषगतिहिंसादर्शने
षु । ईषे. किद्ध्रस्वश्चेतीकन् । धातो
र्ह्रस्वश्च । तूलिकायाम् ॥ इष्यते । इ
षगत्यादौ । वुञादिभ्योवुन् ।

इषितः । त्रि । अभिप्रेते ॥ इष्टे ॥

इषिरः । पुं । अग्नौ । इष्यति । इषग
तौ । इच्छतिवा । इषइच्छायाम् ।
इषमदीत्यादिना किरच् ।

इषीका । स्त्री । काशे । मुञ्जामध्यवर्त्ति
तृणे । सींक तुली इतिचभाषा । ई
षति. ईषतेवा । ईषउञ्छे । ईषगति
हिंसादर्शनेषु । ईषेःकिद्ध्रस्वश्चेतिईं
कन् ॥ दर्भशलाकायाम् ।

इषुः । पुं । स्त्री । बाणे । सायके । प
ञ्चसु । इष्यतेऽनेन । इषगत्यादौ ।
ईषते हिनस्तिवा । ईषेःकिच्चेत्युरा
देरित्वम् ।

इषुधिः । पुं । स्त्री । इषूणांस्थाने । तूणी
रे । इषवोधीयन्तेऽत्र । डुधाञ्० । क
र्मण्यधिकरणेचेतिकिः ॥

इषुपुङ्खा । स्त्री । शरपुङ्खायाम् ।

इषुमाला । स्त्री । शरावल्याम् ।

इषूपलयन्त्रम् । न । शरशिलाक्षेपके
यन्त्रविशेषे ।

इष्टम् । त्रि । आशंसिते । पूजिते ॥ प्रि
ये । इष्यमाणे । इष्यते । इषइच्छाया
म् । मतिबुद्धीतिक्तः । पुं । सप्ततन्तौ
। यज्ञे ॥ एरण्डवृक्षे । न । संस्कारे ।
क्रतुकर्मणि ॥ क्रतुर्यज्ञः कर्मचदाना
दि तयोः समाहारः तदिष्टशब्दवा-
च्यम् । अतएव मनुः । एकाग्निकर्म
हवनं त्रेतायां यच्चहूयते । अन्तर्वे
दश्चयद्दानमिष्टन्तदभिधीयते इति ॥
अग्निहोत्रंतपः सत्यंवेदानाञ्चार्थ-
पालनम् । आतिथ्यंवैश्वदेवञ्चप्राकु
रिष्टञ्चनाकदम् । यजनम् । यजदे-
वपूजादौ । नपुंसके भावेक्तः । अनु
कूलवेदनीये देवादिवन्दनयागादि
फले । ईश्वराराधनादौ । एषणम् ।
इषेःक्तः । परमानन्दरूपत्वेन सर्वेषां
प्रियत्वादिष्टः परमात्मैव ।

इष्टका । स्त्री । गृहादिनिर्म्माणार्थंदग्ध
मृत्खण्डविशेषे । ईंटइतिप्रसिद्धे ।
इष्यते । इष० । इष्यशिभ्यांतकन् ।

इष्टकेषीकामालानामितिनिर्देशात् प्रत्ययस्यादित्यनेत्वम् ॥

इष्टकापथम् । न । इष्टकाभिर्निर्मितेपथि ॥ उशीरे । वीरणमूले ॥ इष्टकापथमस्य अधोवायुकरत्वात् ॥ यद्वा । इष्टकेव दृढः पन्थायस्य । इष्टकायामपि पन्थायस्येतिवा ॥

इष्टकामधुक् । त्रि । अभीष्टभोगप्रदे ॥ इष्टानांकामधुक् ॥

इष्टकावत् । त्रि । इष्टकावति ॥ इष्टकाः सन्त्यस्मिन् वा । अन्येभ्योपिदृश्य तद्धितमत्ययः ॥

इष्टगन्धः । त्रि । सुगन्धौ । न । वालुके ॥ इष्टश्चासौ गन्धश्च ॥ इष्टोगन्धोयस्यय स्मिन् वा ॥

इष्टा । स्त्री शमीवृक्षे ॥

इष्टापूर्त्तम् । न । यज्ञखातादिकर्मणि ॥ यथा । अग्निहोत्रंतपः सत्यं वेदानाञ्चानुपालनम् । आतिथ्यं वैश्वदेवश्च इष्टमित्यभिधीयते ॥ वापीकूपतडागादिदेवतायतनानिच । अन्नप्रदानमारामः पूर्त्तमित्यभिधीयते ॥ इष्टञ्च पूर्त्तञ्च अनयोः समाहारः ।

इष्टार्थोद्युक्तः । त्रि । उत्सुके । उत्साहयुक्ते ॥ इष्टश्चासावर्थश्च तत्रउद्युक्तः ।

इष्टिः । स्त्री । यागे ॥ दर्शपूर्णमासेष्ट्याम् ॥ अभिलाषे ॥ श्लोकसङ्ग्रहे ॥ एषणम् । इष० । क्तिन् ॥ इज्यते ऽनयेति वा । यज० क्तिन् ॥

इष्टिकापथिकम् । न । लामज्जकतृणे ॥ इतिराजनिर्घण्टुः ॥

इष्टिपचः । पुं । दैत्ये । दनुजे ॥

इष्टिमुट् । पुं । दैत्ये ॥ इष्टिंमुष्णाति । मुषस्तेये । क्विप् ॥

इष्टुः । स्त्री । इच्छाविशेषे ॥

इष्मः । पुं । कामे ॥ वसन्ते ॥ इष्यति । इषगतौ । इच्छतिवा । इषइच्छायाम् । इषियुधीतिमक् ॥

इष्यः । पुं । वसन्तौ ॥

इष्वः । त्रि । उपदेष्टरि ॥ इष्यतेऽसौ । इष० । सर्वनिघृष्वरिष्वलष्वशिवपद्वप्रह्वेष्वाअतन्त्रेइतिवन्गुणाभावश्च निपात्यते ॥

इष्वसनः । पुं । चापे ॥ अस्यतेअनेनेष्वसनः । इषूनामसनः ॥

इष्वासः । पुं । धनुषि ॥ त्रि । इषुक्षेपके । धन्विनि ॥ इषवो बाणा अस्यन्तेअनेन । असु० । हलश्चेतिघञ् ॥

इह । अ । दुःखभावनायाम् ॥ सन्तापे । कोपे ॥

इह । अ । अस्मिन् । अत्र । अधिकरणे । व्यवहारभूमौ । अस्मिन् । इदमोहः । इदमह्म् ॥

इहत्यः । त्रि । इहभवे । इहजातादौ ।

। अव्ययात्यप् ॥

ईहामुत्रार्थफलभोगविरागः । पुं । ए हिकपारत्रिकविषयभोगेभ्योनितरांविरतौ । मुक्तेर्द्वितीयसाधने । ऐहिकानांस्रक्चन्दनादिविषयभोगानाङ्कर्मजन्यतया अनित्यत्ववत् आमुष्मिकाणामप्यमृतादिविषयभोगानामनित्यतया तेभ्यो नितरांविरतौ ॥

ईही । अ । लङ्गच्छेत्यर्थे ॥ छान्तप्रतिरूपकम् ॥

ई:

ई । अ । विषादे । दुःखभावने ॥ अनुकम्पायाम् ॥ क्रोधे ॥ प्रत्यक्षे ॥ सन्निधौ ॥ सम्बोधने ॥

ईः । स्त्री । लक्ष्म्याम् । अस्य स्त्री । ङीष् ॥

ईक्षणम् । न । दर्शने ॥ चक्षुषि । दृशि ॥ ईक्षतेऽनेन । ईक्षट्° । ल्युट् ॥

ईक्षणिकः । पुं । हस्तरेखाद्यवलोकनपूर्वकशुभाशुभफलकथनेनजीविनि ॥ शुभाशुभयोरीक्षणमस्यास्य ठन् ॥

ईक्षणिका । स्त्री । दैवज्ञायाम् । लक्ष्याद्दिना जनानांशुभाशुभनिरूपिण्याम् ॥ म° ठन् ॥ ईक्षते । ईक्ष दर्शनाङ्कनयोः । खुल्वा ॥

ईक्षणीयः । त्रि । शोभमाने ॥ ईक्षितुयोग्यः । अनीयर् ॥ अवलोकनीये ॥

ईक्षा । स्त्री । दृष्टौ ॥ ईक्षणम् । ईक्ष° । गुरोश्चहलः । टाप् ॥

ईक्षितः । त्रि । अवलोकिते ॥ ईक्ष° नपुंसके भावेक्तः ॥

ईजानः । पुं । यजमाने । कर्मणि ॥ जते । ईज° । शानच् ॥

ईडा । स्त्री । स्तुतौ ॥ ईडनम् । स्तुतौ । गुरोश्चहलः । टाप् ॥

ईडितः । त्रि । स्तुते । कृतस्तवे ॥ ईडितस्य । ईड° । क्तः ॥

ईड्यः । त्रि । स्तुत्ये । वन्द्ये । रूप्ये ॥ ईडितुंयोग्यः । ण्यत् ॥

ईतिः । स्त्री । डिम्बे । अन्ये । उत्पाते ॥ प्रवासे ॥ कृषे. षट्प्रकारोपद्रवविशेषे ॥ यथा । अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभामूषकाः शुकाः । अत्यासन्नाश्चराजानः षडेता ईतयः स्मृताः इति ॥ ईयतेऽनया । ईङ् गतौ । क्तिन् ॥

ईदृक्षः । त्रि । ईदृशे ॥ दृक्चेतिदृश् ॥

ईदृक् । त्रि । ईदृशे । इसकेन्याय इसप्रकार इतिभाषा ॥ अयमिवदृश्यते । इदमिवपश्यतिवा । दृशिर्प्रे° । त्यदादिषुदृशइतिक्विन् । इदंकिमो

रीभक्ती ॥

ईदृशः । त्रि । ईदृशि ॥ अयमिव दृश्यते । इदमिव पश्यति वा । दृशेस्त्यदादिष्विति कञ् । इदम ईश् ॥

ईप्सा । स्त्री । आप्तुमिच्छायाम् ॥

ईप्सितः । त्रि । अपेक्षिते ॥ अभिप्रेते ॥ इष्टे ॥ आप्तुमिष्टम् । आप्लृव्याप्तौ । सन् । क्त । आप्ज्ञप्यृधामीत । अत्र लोपोऽभ्यासस्येत्यभ्यासलोप ॥

ईप्सु । त्रि । आप्तुमिच्छौ ॥

ईयिवान् । त्रि । उपगते ॥ इण् । उपेयिवाननाश्वाननूचानश्चेति लिटः क्वसुर्द्वित्वमभ्यासदीर्घत्वं वसोरिट् च निपात्यते । सूत्रे उपइत्यविवक्षितम् ।

ईरणः । पुं । वायौ ॥ ईरति ईरयति वा । ईर० । युच् । ल्युर्वा ॥ न । चलने ॥

ईरितम् । त्रि । प्रोक्ते ॥ प्रेरिते ॥ क्षिप्ते ॥ ईर्य्यते स्म । ईरगतौ कम्पने च । क्तः ।

ईरितात्मा । पुं । प्रकटितस्वरूपे ॥

ईर्म्मम् । न । व्रणे ॥ ईरति सुखम् । ईर गतिप्रेरणयोः । बाहुलकान्मक् ॥

ईर्य्या । स्त्री । ध्यानमौनादिकस्य भिक्षुव्रतस्यानुष्ठाने । चर्यायाम् ॥ चर्य्यां त्वीर्यांविदुर्बुधाः ॥ ईर्य्यते । ईरगतौ । ऋहलोर्ण्यत् ॥

ईर्य्यापथ । पुं । ध्यानाद्युपाये ॥ ईर्य्याया: पन्थाः । ऋक्पूरित्यः ॥

ईर्वारु । पुं । स्त्री । कर्कट्याम् ॥ ईरणम् । ईर० । स० क्विप् । ईरंतृणोति वारयति वा । वृञ्० । बाहुलकादुण् ॥

ईर्षा । स्त्री । अक्षमायाम् ॥

ईर्षालु । पुं । अक्षमे । ईर्षायुक्ते ॥

ईर्ष्यक । पुं । दृष्ट्वैयोन्याख्यक्लीबे ॥ दृष्ट्वाव्यवायमन्येषां व्यवायेय प्रवर्तते । ईर्ष्यक सतुविज्ञेयोदृष्टियोनिश्च सस्मृतः ॥

ईर्ष्या । स्त्री । अक्षान्तौ । परोत्कर्षासहिष्णुत्वे ॥ परोत्कर्षाऽक्षमेर्ष्यास्याद्दौर्जन्यान्मन्युतोपिच । ईर्ष्यणम् । ईर्ष्यईर्ष्यायाम् । गुरोश्चेत्यः ॥

ईर्ष्यालुः । त्रि । अक्षान्तिशीले । कुहने । सेर्ष्ये । ईर्ष्यांलाति । ला । मितद्र्वादित्वाड्डुः ।

ईला । स्त्री । धरित्र्याम् । गवि ॥ वाचि ॥ सौम्यकलत्रे ॥

ईलिः । स्त्री । ह्रस्वगदाकारेहस्तदण्डे । करपालिकायाम् । कटारी कटार इत्यादिभाषा ॥ ईर्त्ते ईर्य्यते वा । ईर० । इन् । कपिलकादि ॥ ईड्यते वा । ईड० । डलयोरभेदः ॥

ईलितः । त्रि । स्तुते ॥ ईड्यतेस्म । ई

उ॰ । क्तः । डलयोरभेदाल्लः ॥

ईली । स्त्री । ह्रस्वगदाकारे हस्तदण्डे । करपालिकायाम् । कृदिकारादिति पाक्षिको ङीष् ।

ईट् । पुं । परमेश्वरे ॥ ईष्टे । ईश ऐश्वर्ये । क्विप् ।

ईशः । पुं । महादेवे । सदाशिवे । ईशानकोणाधिपतौ ॥ सर्वेषामीशितरि । विशुद्धसत्त्वप्रधानमायोपाधिके परमेश्वरे । हिरण्यगर्भे । त्रि । प्रभौ । स्वामिनि । एकादशसु । ईष्टे । ईश॰ । इगुपधेतिकः ॥

ईशवलम् । न । पाशुपतानां द्वितीये पाशे । ईष्टे स्वातन्त्र्येणइति ईशः । तदीयंवलंरोधशक्तिर्द्वितीयः पाशः । तथाचोक्तम् । तासांमाहेश्वरीशक्तिःसर्वानुग्राहिकाशिवा । धर्मानुवर्त्तनादेवपाशइत्युपचर्य्यतेइति ।

ईशसखा । पु । कुबेरे । ईशःसखास्य ॥

ईशा । स्त्री । पार्वत्याम् । दुर्गायाम् । ईष्टे । ईश॰ । कान्ताट्टाप् ।

ईशानः । पुं । शिवे । महादेवे ॥ एकादशरुद्रान्तर्गतरुद्रविशेषे ॥ शिवाष्टमूर्त्त्यन्तर्गतसूर्यमूर्त्तौ । शमीवृक्षे । न । ज्योतिषि । त्रि । ईशितरि । नियन्तरि । स्वामिनि । ईष्टे तच्छील । ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु



चानश् ।

ईशानी । स्त्री । स्कन्दमातरि । दुर्गायाम् । ईशानस्यस्त्री । पुंयोगलक्षणो ङीष् ॥ शमीवृक्षे ।

ईशिता । स्त्री । ईशित्वे । अणिमाद्यष्टैश्वर्यान्तर्गतैश्वर्यविशेषे । प्रभुत्वे ॥ येनस्थावराअप्याज्ञाकारिणो भवन्ति ॥ ईशोऽस्यास्ति । अतइनिठनाविति इनिः । ईशिनो भावः । तस्य भावस्त्वतलाविति तल् ।

ईशिता । त्रि । ईश्वरे । अधिपतौ । प्रभौ । नियन्तरि । ईष्टे । ईश॰ । तृन् तृचा ।

ईशित्वम् । न । ईशितायाम् । देवानामष्टैश्वर्यान्तर्गतैश्वर्यविशेषे ॥ रभूतभौतिकानां प्रभवव्यूहव्ययानामीशिताभवति । ईशिनोभावः ।त्वः ॥

ईश्वरः । पु । शिवे । मन्मथे । विशुद्धसत्त्वप्रधानाज्ञानोपहितचैतन्ये । ईशनादिशक्तियुक्ते जगदधिष्ठातरि ॥ हिरण्यगर्भे । विचित्रशक्तित्वात सर्वसमर्थे सर्वनियन्तरि नारायणे । उक्तञ्चदेवीगीतायाम् । तत्रयाप्रकृतिःप्रोक्तासाराजन् द्विविधामता ॥ सत्त्वात्मिकातुमायास्यादविद्यागुणमिश्रिता । स्वाश्रयं यातु संरक्षेत् सा मायेतिनिगद्यते । तस्यां यत्प्रति

बिम्बस्थादिम्बभूतस्यचेशितुः । सईश्वरः समाख्यातः स्वाश्रयज्ञानवान् परः ॥ तस्यां स्वाश्रयाव्यामोहकारिण्यां शुद्धसत्त्वप्रधानायां मायायामीशितुःपरमात्मनोयत् प्रतिबिम्बंपतति तत् प्रतिबिम्बमीश्वरः । सचेश्वरः स्वाश्रयं व्यापकं ब्रह्मतज्ज्ञानवानभवति माययातदाधारब्रह्मणोनावरणात् ॥ सर्वज्ञः सर्वकर्त्ताचसर्वानुग्रहकारकः । इति ॥ देहेन्द्रियसङ्घातस्यस्वामिनिजीवे ॥ ईशनशीले । समर्थे । सर्वान्तर्यामिणि ॥ क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषईश्वरः इतिपतञ्जलिः ॥ ईशाह्मन्यथर्थंनचमामीशतेपरः । ददामिचसदैश्वर्यमीश्वरस्तेनकीर्त्तितः ॥ प्रभवादिषष्टिकादशेऽब्दे ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंकार्पासस्यमहार्घता । लवणं मधुगव्यञ्चईश्वरे दुर्लभं प्रिये ॥ त्रि । आढ्ये । स्वामिनि । ईशितुं शीलमस्येति । स्थेशभासपिसकसोवरच् इतिवरच् ॥ ईष्टे । ईश० । वरच् ॥ यद्वा । अश्नुते । अशूव्याप्तौ सङ्घातेच । अश्नोतेराशुकर्मणिवरट्चेतिवरट् । चादुपधाया ईत्वम् ॥

ईश्वरप्रणिधानम् । न । शौचादिपञ्चनियमेषु पञ्चमे नियमे । ईश्वरस्यमानसैरुपचारैरभ्यर्चने । सर्वकर्मणां तस्मिन् परमगुरौफलनिरपेक्षतयाअर्पणे ॥ ईश्वरे प्रणिधानम् ॥

ईश्वरभावः । पुं । प्रजापालनार्थमीशितव्येषु प्रभुशक्तिप्रकटीकरणे ॥

ईश्वररथचरणः । पुं । कालचक्रे ॥ ईश्वररथस्यचरणः ॥

ईश्वरसेतुः । पुं । मर्यादायाम् । वर्णाश्रमादिधर्मे ॥ ईश्वरस्यसेतुरिव ॥

ईश्वरा । स्त्री । उमायाम् ॥ श्रीवाण्यादिशक्तिषु ॥ वरजन्तादीश्वरशब्दात् टाप । पुंयोगविवक्षाभावान् न ङीप् ॥

ईश्वरी । स्त्री । गौर्याम । दुर्गायाम ॥ श्रीवाण्यादिशक्तिषु ॥ अश्नुते विश्वम् । वरजन्तादीश्वरान् ङीप ॥ यद्वा । ईष्टे । ईश० । वनिप् । वनोरचेतिङीब्रौ ॥ लिङ्गिनीवृक्षे ॥ वन्ध्याकर्कोटक्याम् ॥ रुद्रजटालतायाम् ॥ नाकुलीकन्दे ॥

ईषत् । अ । अल्पे । किञ्चित् ॥ ईषणम् । ईषगत्यादौ । अतमव्ययः ॥

ईषत्कर । पुं । अत्यल्पे । अनुबन्धे । गन्धे । लेशे । त्रि । ईषत्क्रियमाणवस्तुनि ॥ ईषत्क्रियते । ईषद्दुःसुषुकृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु ख-

ल् मत्ययः ॥
ईषत्पाण्डुः । पुं । धूसरवर्णे ॥
ईषदुष्णम । न । कवोष्णे । मन्दोष्णे ॥ त्रि । तद्वति ॥ ईषच्चतदुष्णञ्च ।
ईषद्धास्यम् । न । मन्दहास्ये । स्मिते ॥ ईषच्चतद्धास्यञ्च ॥ त्रि । तद्वति ॥
ईषद्रक्तः । पुं । अरुणे ॥ त्रि । तद्वति ॥
ईषा । स्त्री । हलयुगयोर्मध्यस्थकाष्ठे । लाङ्गलदण्डे ॥ ईषते । ईषगत्यादौ । इगुपधेतिकः । करणे गुरोश्चेत्यो वा ॥
ईषादन्तः । पुं । दीर्घदन्तगजे । उदग्र दन्ते ॥ ईषेवदन्तावस्य ॥
ईषिका । स्त्री । अक्षिकूटे । गजाक्षिगोलके ॥ ईषालाङ्गलकीलिका सेव । इवेप्रतिकृताविति कन् ॥ तूलिकायाम् ॥ अस्त्रविशेषे । यथा । सोभिमन्त्र्यशरेषीका मीषिकास्त्रेणवीर्यवान् । काकंतमभिसन्धायससर्जपुरुषर्षभः ॥ इतिरामायणम् ॥ ईष्यते ईषतिवा । ईषगत्यादौ ईषउञ्छेवा । क्वुन् ॥
ईषिरः । पुं । अग्नौ । पावके ॥
ईषीका । स्त्री । इषीकायाम् । तूलिकायाम् ॥ ईषीकास्यादिषीकापीति द्विरूपकोषः । पर्फरीकादित्वात् साधुः ॥



ईष्मः । पुं । कामदेवे ॥ वसन्तर्त्तौ ॥ ईषति ईषतेवा । ईषउञ्छे ईर्षगतिहिंसादर्शनेषु । इषियुधीन्धिन्न ईषीति दीर्घादि पाठस्याप्युक्तत्वान् मक् ॥
ईहा । स्त्री । उद्यमे । चेष्टायाम् ॥ वाञ्छायाम् ॥ ईहचेष्टायाम् । गुरोश्चेत्यः । टाप् ॥
ईहामृगः । पुं । कृत्रिममृगे । नाटक रूपकभेदे ॥ कोके । वृके । भेडिया इतिभाषा ॥ ईहा मृगेष्वस्य ॥ ईहां मृगयते वा । मृगअन्वेषणे । कर्मण्यण् ॥ ईहाप्रधानो मृगोवा । शाकपार्थिवादिः ॥
ईहितः । त्रि । अपेक्षिते ॥ न । उद्योगे ॥ चरिते ॥

---

## उः

उ । अ । सम्बोधने ॥ रोषोक्तौ ॥ अनुकम्पायाम् ॥ नियोगे ॥ पदपूरणे ॥ पादपूरणे ॥ विस्मये ॥ अवनम् । उङ् शब्दे । क्विप् । तुङ्न ॥
उः । पुं । ब्रह्मौ । चन्द्रमौलौ । शिवे ॥ उकारे ॥

उकनाहः । पुं । पीतरक्तवर्णे तुरङ्गे ॥

उक्तः । त्रि । कथिते । भाषिते । जल्पिते । अभिहिते ॥ न । एकाक्षरायां वृत्तौ । श्रीछन्दसि ॥ उच्यतेस्म । वचपरिभाषणे । ब्रूञोवचिर्वा । क्तः । सम्प्रसारणम् ॥

उक्तिः । स्त्री । व्याहारे । वचने ॥ वच० । क्तिन् । सम्प्रसारणम् ॥

उक्थः । पुं । यज्ञविशेषे ॥ न । प्राणे ॥ सामभक्तौ ॥ सामवेदे ॥ बह्वायज्ञीयातपरेषां यानिसामानिगीयन्ते तान्युक्थानि ॥ महाव्रताख्येक्रतौ प्रधानभूतंशस्त्रमुक्थशब्दार्थ. ॥ उच्यते । वच० । पातृतुदीत्यादिनाथक् ॥

उक्थशाः । पुं । यजमाने ॥ उक्थानि उक्थैर्वा शंसति । शंसुस्तुतौ । मन्त्रेश्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशोणिवन्निच्च न श्वेतवहादीनांडस पदस्येतिवक्तव्यम् । यत्रपदत्वंभावि तत्रडस् । उक्थशोभ्याम् । अन्यत्रणिवः । उक्थशासौ उक्थशासइत्यादिबोध्यम् ॥

उक्था । स्त्री । एकाक्षरवृत्ते ॥ साद्विविधा । श्रीः १ सर्वगुरुः । श्रीस्तेसास्ताम् ॥ उः २ सर्वलघुः । उरबतु ॥

उक्लेदः । पुं । वान्तौ ॥

उक्षः । त्रि । सिक्ते । धौते ॥

उक्षणम् । न । सेचने ॥

उक्षतर । पुं । तृतीयवयःप्राप्तवृषे ॥ तनुकुचा । वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्चतनुत्व इतिष्टरच् । षीषि । उक्षतरी ॥

उक्षा । पु । बलीवर्दे । वृषे ॥ उक्षति उक्षसेचने । श्वन्नुक्षन्निति कनिन ॥ ऋषभौषधौ ॥ त्रि । सेक्तरि ॥

उक्षितः । त्रि । सिक्ते ॥ क्लिन्ने ॥

उखर्वलः । पुं । तृणविशेषे । भूरिपत्रे । सुतृणे ॥

उखलः । पुं । उखर्वले । तृणोत्तमे ॥

उखा । स्त्री । पिठरे । रन्धनस्थाल्याम् । हाँडी भरथिया भाडू इत्यादिभाषा ॥ ओखति । उखगतौ । इगुपधेतिक ॥ उखन्यतेवा । खनुअवदारणे । अन्येभ्योपीतिडः । टाप् ॥

उख्यम् । त्रि । पैठरे । उखायां पक्के मांसादौ ॥ उखायां संस्कृतम् । शूलोखाद्यत् ॥

उग्रः । पुं । महादेवे । रुद्रे ॥ वायुमूर्त्तिरयम् ॥ क्षत्रियाच्छूद्रायामूढायामुत्पन्ने । आगुरि इतिगौडभाषामसिद्धे जातिविशेषे ॥ क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायांक्रूराचारविहारवान् । क्षत्रशूद्रवपुर्जन्तुरुग्रोनामप्रजायते ॥ चतुष्पुक्कसानान्तुविलोकोवधबन्धनमिति - मनुः । करणेनसमाचास्यवृत्ति भीं गंवनिर्मिता ॥ शोभाञ्जनद्रुमे । वेर

लदेशे ॥ वाह्लीके ॥ न । क्रूरसंज्ञक-नक्षत्रेषु । पूर्वोत्तरद्वारगृहे ॥ वत्स नाभाख्यविषे ॥ त्रि । उत्कटे । दारु-णकर्मकर्त्तरि ॥ उच्यति क्षुधासम्बध्य ते । उचसमवाये । ऋज्जेन्द्रेत्यादि नारक् गश्चान्तादेशः ॥

उग्रकर्म्मा । पुं । हिंस्रे ॥ उग्रंकर्मास्य ॥

उग्रकाण्डः । पुं । कारवेल्ले ॥

उग्रगन्धः । पुं । चम्पके ॥ कटफले ॥ अ-र्जकवृक्षे ॥ लशुने ॥ न । हिङ्गुनि ॥ त्रि । उत्कटगन्धयुक्ते ॥ उग्रोगन्धो-ऽस्य ॥

उग्रगन्धा । स्त्री । अजमोदायाम् ॥ व-चायाम् ॥ छिक्किकौषधौ ॥ अजग-न्धायाम् ॥ यवान्याम् ॥ उग्रोगन्धोऽ स्याः ॥

उग्रचण्डा । स्त्री । देवीविशेषे ॥

उग्रतारा । स्त्री । देवीविशेषे ॥ उग्राद् पिभयात् त्राति यस्माद्भक्तान् सदा-म्बिकेनिरुक्तिः ॥

उग्रत्वम् । न । उग्रतायाम् । चण्डता-याम् ॥ उग्रस्य भावः । त्वः ॥

उग्रधन्वा । पुं । इन्द्रे । मधुवधायोद्यत धनुष्के ॥ उग्रंधनुर्यस्य । धनुषश्चेति नङ् ॥

उग्रनासिक । त्रि । दीर्घनासाविशिष्टे ॥

उग्रशेखरा । स्त्री । भीष्ममातरि । ग ङ्गायाम् ॥

उग्रश्रवा । पुं । रोमहर्षणसुते । सूते ॥

उग्रसेन । पुं । आहुके । कंसजनके ॥

उग्रसेनसुतः । पुं । कंसे ॥

उग्रा । स्त्री । कनखलाधिष्ठात्र्याम् अम्बा याम् ॥ वचायाम् ॥ यवान्याम् ॥ छि क्किकौषधौ ॥ उग्रजातेर्भार्यायाम् ॥ धन्याके ॥ प्रखरायांनार्याम् ॥ टाप् ॥

उचितम् । त्रि । न्यस्ते ॥ परिमिते ॥ स म्यक्से । ग्राह्ये ॥ उच्यते । वचपरि-भाषणे । रुचिवचिकुचिकुटिभ्य.कि तच् ॥ युक्ते ॥ ज्ञाते । विदिते ॥

उच्चः । त्रि । उन्नते । तुङ्गे । प्रांशौ ॥ उच्चिनोति । चिञ् ० । अन्येष्वपी तिड. ॥ उच्चैस्त्वम् अस्ति अथवा । अ र्श आद्यच् । अव्ययानामितिटिलोप ॥ नारिकेरे ॥

उच्चकैः । अ । अतिशयोच्चे ॥ उच्चैः । अव्ययसर्वनाम्नामितिप्रागिवीयेष्वर्थे षुटेः प्रागकच् ॥

उच्चटा । स्त्री । दम्भे ॥ चर्य्यायाम् ॥ ल शुनप्रभेदे । गुञ्जायाम् ॥ भूम्याम लक्याम् ॥ नागरमुस्तायाम् ॥ जटि लौषधौ । चूडालायाम् । मुस्ताविशेषे ॥ श्वेतागुञ्जोच्चटाप्रोक्तेतिभाव प्रकाशः ॥ उच्चटति । चटगतौ । अ न्तर्भावितण्यर्थः । अच् ॥

उच्चण्डः । त्रि । त्वरायुक्ते । अविलम्बिते । प्रचण्डे । उच्चण्डनम् । चण्डिकोपे । घञ् ।

उच्चतरुः । पुं । नारिकेले ।

उच्चतालम् । न । पानगोष्ठ्यां नृत्ये ॥ इति हेमचन्द्रः ॥

उच्चदेवः । पुं । श्रीकृष्णे । गोविन्दे ।

उच्चन्द्रः । पुं । रात्रिशेषे ॥

उच्चय. । पुं । नीव्याम् । परिधानवस्त्रग्रन्थौ । इति हेमचन्द्रः ।

उच्चलम् । न । मनसि । चञ्चले । पुं । ध्वजस्योर्द्ध्वकूर्चे ।

उच्चलाटा । स्त्री । उन्नतललाटवत्याम् ।

उच्चाजतः । त्रि । प्रस्थिते ॥

उच्चाटनम् । न । वैरिणां एकदेशेऽनवस्थाकरणे ॥ उच्चाटनंस्वदेशादे र्भ्रंसनंपरिकीर्त्तितमितिशारदातन्त्रम् ॥

उच्चारः । पुं । उच्चारणे । विष्ठायाम् । उच्चार्यते त्यज्यते । चरगतौ । णयन्त. । घञ् ॥

उच्चारणम् । न । कथने । शब्दप्रयोगे ।

उच्चारितः । त्रि । उदाहृते ॥ प्रकाशिते ॥

उच्चावचः । त्रि । बहुविधे । नैकभेदे । उत्कृष्टापकृष्टे । उदक्च अवाक्च । मयूरव्यंसकादित्वात्साधुः ।

उच्चिक्रमिषा । स्त्री । उत्क्रान्तुमिच्छायाम् । उठवेकी इच्छा इतिभाषा ॥

उच्चिङ्गटः । पुं । तृणगडमत्स्ये । त्रि । कोपनपुरुषे ।

उच्चूडः । पुं । उच्चूले । अस्योच्चूडाश्चूडाश्चाबूर्द्धाधो मुखचूडकाविति ध्वजाङ्गेषुदक्षायुध. ।

उच्चूलः । पुं । ध्वजस्योर्द्ध्वकूर्चे । भण्डे कीपाग इतिभाषा ॥

उच्चैःश्रवाः । पुं । श्वेतवर्णेसमुद्रमन्थनोत्थिते इन्द्रस्यघोटके ।

उच्चैर्घुष्टम् । न । घोषणायाम् । उच्चैर्घुष्यतेस्म । घुषिर्विशब्दने । क्तः ।

उच्चैःश्रवा. । पुं । इन्द्रस्याश्वे । अश्वानां मध्येभगवतोविभूतौ । अयंसमुद्रमुखः । यथोक्तंभागवते । गृहीतोश्व स-समुखस्त्वयान्तपवलात्किलेति । उच्चैर्महान्श्रवोयशोयस्य । उच्चै.श्रवसीयस्यवा । यद्वा । उच्चै.शृणोति । श्रुश्रवणे । असुन् । उच्चैःश्रवससत्त्वन्तुप्रणिपत्यसमर्पितां । अन्वयतुपूषोदरादित्वाद्गागमोबोध्य. । आकाशस्थैर्दिवौकसैरितिधरणिरिति वत । त्रि । बधिरे ॥

उच्चैः । अ । अत्यर्थे । महति । उन्नते ॥ उच्चीयते । चिञ् । उदिचेर्डैसिः ।

उच्छन्नम् । त्रि । नष्टे ।

उच्छलत् । त्रि । उत्पतति ॥

उच्छशित: । त्रि । उल्लङ्घिते ॥ शशाप्लु तगताविच्यस्मात् । क्त ॥

उच्छादनम् । न । उत्सादने । उद्वर्त्तने । गन्धद्रव्यद्वाराशरीरनिर्मलीकरणे ॥

उच्छास्त्रम् । त्रि । शास्त्रमतिषिद्धे ॥ शास्त्रविरुद्धे ॥ उद्गतं शास्त्रात् ॥

उच्छिख: । त्रि । उद्गतज्वाले ॥

उच्छित्ति: । स्त्री । उच्छेदे ॥ उच्छेदनम् । क्तिन् ॥

उच्छिन्न: । त्रि । नष्टे ॥ उच्छेदिते ॥ उच्छिद्यतेस्म । छिदिर्द्वैधीकरणे । क्त: ॥

उच्छिलीन्ध्रम् । न । छत्राके । छत्रिकायाम् ॥

उच्छिष्ट: । त्रि । भुक्तावशेषे । ऊंठ ऊंठन ऊंठा इतिभाषा ॥ त्यक्ते ॥

उच्छिष्टभोजनम् । त्रि । देवनैवेद्यबलिभोजनकर्त्तरि ॥ इति हेमचन्द्र: ॥

उच्छिष्टमोदनम् । न । सिक्थके । मैण सिल्या इतिभाषा ॥

उच्छीर्षकम् । न । शिर:प्रदेशे ॥ उपधाने । सिराहना इतिभाषा ॥

उच्छून: । त्रि । स्फीते । उन्नते । वर्द्धिते ॥ अनोदाहरन्ति प्राञ्चीना: । कामिन्या:कियदुच्छूनमुर: प्रेयानसमीचते । नखंशालिमि बेत्यन्नमतिदीन:कृषीवलइति ॥ उत्श्वीयतेस्म । टुओश्विगतिवृद्ध्यो: । क्त: । ओदितश्चेतितस्यन: । यजादित्वा त्सम्प्रसारणे पूर्वरूपेचहल इतिदीर्घ: ॥

उच्छूनता । स्त्री । जृम्भणे ॥ भावेतल् ॥

उच्छृङ्खल: । त्रि । अबाधे । बन्धनरहिते । अनियन्त्रितवस्तुनि । निरर्गले ॥ उद्गतंशृङ्खलंनिगडंयस्य ॥

उच्छेद: । पुं । विनाशे ॥

उच्छेदी । त्रि । विनाशिनि ॥

उच्छेषणम् । न । उच्छिष्टे ॥

उच्छोषण: । त्रि । सन्तापकरे ॥

उच्छ्रय: । पुं । द्रुमादीनामुन्नतायाम् । उत्सेधे ॥ उच्छ्रयणम् । श्रिञ् सेवायाम् । बाहुलकादेरच् ॥

उच्छ्राय: । पुं । उच्छ्रये ॥ उच्छ्रयणम् । श्रिञ् ० । उदिश्रयतियेतीति घञ् ॥ उत्कृष्ट: आयोवा ॥

उच्छ्रित: । त्रि । सञ्जाते ॥ समुन्नद्धे ॥ उन्नते ॥ प्रवृद्धे ॥ उच्छ्रयति उच्छ्रीयतेस्मवा । श्रिञोगत्यर्थेतिकर्मणिवा क्त: ॥

उच्छ्रित्य । अ । सन्तन्येत्यर्थे ॥ निखन्येत्यर्थे ॥

उच्छ्वसित: । त्रि । प्रफुल्ले । विकासिते ॥ जीविते ॥ स्फुरणे । फरकना इति

भाषा। उत्श्वसिति। श्वस०। क्तः।

उच्छ्वासः। पुं। अन्तर्मुखश्वासे। आश्वरे। प्राणने। आख्यायिकापरिच्छेदे। औश्वासे। उच्छ्वसनम्। श्वसप्राणने। घञ्।

उज्जयनी। स्त्री। विशालायांपुरि। अवन्त्याम्।

उज्जयन्तः। पुं। रैवतपर्वते।

उज्जयिनी। स्त्री। महाकालपुर्य्याम्। अवन्तिकायाम्।

उज्जासनम्। न। वधे। मारणे। जघ्नुर्हिंसायाम्। स्वार्थणन्त'। भावे ल्युट्।

उज्जृम्भः। त्रि। प्रफुल्ले। प्रस्फुटिते। इतिहेमचन्द्र'। उज्जृम्भणम्। जृभि०। घञ्।

उज्जृम्भणम्। न। उज्जृम्भे।

उज्जृम्भितः। त्रि। प्रफुल्ले। न। चेष्टायाम्। उज्जृम्भःसञ्जातोऽस्य। तारकादित्वादितच्।

उज्ज्वलः। पुं। शृङ्गाररसे। न। स्वर्णे। त्रि। दीप्ते। विशदे। विकाशिनि। उद्वेज्ज्वलति प्रकाशते। ज्वलदीप्तौ। अच्। नतुज्वलितीतिणः। तत्राऽनुपसर्गादित्यनुवृत्तेः।

उज्झः। पुं। त्यागे। विसर्जने।

उज्झितः। त्रि। उत्सृष्टे। त्यक्ते। वर्जिते।'

उञ्। अ। सतर्के। सम्बोधने। पूरणे।

उञ्छः। पुं। उञ्छशिले। कृते। धान्यकणोच्चये। कणशआदाने। अबाधितस्थानेषु पथिवा क्षेत्रेषुवा अप्रतिहतावकाशेषु यत्रयत्रौषधयोविद्यन्ते तत्रतत्राङ्गुलीभ्यामेकैककणं समुच्चयित्वेतिबौधायनस्मृतेर्दर्शनात् एकैकधान्यगुडकोच्चयनमुञ्छ। उञ्छनम्। उछिउञ्छे। घञ्।

उञ्छनम्। न। आपणादिपतितकणोपादाने। ऊँछनाइतिभाषा। ल्युट्।

उञ्छशिलम्। न। आत्तशस्यात् क्षेत्राच्छस्यसञ्चये। ऋतइत्तौ।

उञ्छश्च शिलञ्चैतयोरेकवद्भावः।

उञ्छशील.। त्रि। उञ्छजीविनि। उद्धृतशस्यस्यशेषाहरणकर्त्तरि।

उटः। पुं। तृणपर्णादौ।

उटज'। पुं। न। मुनीनांतृणपर्णादिरचितालये। पर्णशालायाम्। उटाज्जायते। जनी०। अन्यत्रापीतिडः।

उडु। न। भे। तारकायाम्। जले। उ रोषोक्तिपूर्वकं डयते। डीङ् वि०। मितद्र्वादित्वात् डु प्रत्ययः।

उडु'। स्त्री। नक्षत्रे। ऋक्षे। अवतिइति उः। डयते डुः। डीङो मितद्र्वादित्वात्डुः। उश्चासौडु श्चेतिविग्रहः। उडुः उडू। उडवः इत्यादि

धेनुवत् ॥

उडुपः । पुं । न । प्लवे । कोले । भेले ॥ चर्मावनद्धे यानपात्रे ॥ पुं । चन्द्रे ॥ उडुनोजलं त पाति । पारचणे । सुपिस्थइत्यत्रसुपीति योगविभागा त कः । उडुनि जले पातीति वा ॥

उडुपतिः । पुं । चन्द्रे ॥ उडूनाम्पतिः ॥

उडुपथः । पुं । आकाशे ॥

उडुराट् । पुं । चन्द्रे ॥ उडुषु नक्षत्रेषु राजते । राजृ० । क्विप् ॥

उडूपः । पुं । न । उडुपे ॥ पुं । चमन्द्रसि ॥

उड्डयनम् । न । नभोगतौ । उडान इतिभाषा ॥

उड्डामरः । त्रि । श्रेष्ठे । उद्भटे ॥ पुं । तन्त्रविशेषे ॥

उड्डीनम् । न । खगानामूर्द्ध्वगतौ ॥ ऊर्द्ध्वडयनम् । डीङ्० । नपुंसके भावे क्तः । स्वादयओदितइत्योदित्त्वान्निष्ठानत्त्वम् ॥

उड्डीयमानः । त्रि । उड्डयनविशिष्टे खगे ॥ उडन्त उडता इतिभाषा ॥

उड्डीशः । पुं । आगमशास्त्रविशेषे ॥ चण्डीशे । शिवे ॥

उत् । अ । प्रश्ने ॥ वितर्के ॥ संशये ॥ आश्चर्ये । भृशे ॥ ऊर्द्ध्वे ॥ अप्यर्थे ॥

उत । अ । अत्यर्थे । विकल्पे ॥ समुच्चये । वितर्के ॥ प्रश्ने । पदपूरणे ॥ अप्यर्थे ॥ एवार्थे ॥ ऊयते स्म । उङ् शब्दे । क्तः ॥

उतनम् । त्रि । स्यूते । बुना इतिभाषा ॥ ऊयते स्म । वेञ्० । क्त. । यजादित्वात्सम्प्रसारणम् ॥

उतथ्यः । पुं । गौतमपितरि मुनिविशेषे ॥ अङ्गिरसः श्रद्धायामुत्पन्नेवृहस्पतेर्ज्येष्ठभ्रातरि ॥

उतथ्यतनयः । पुं । गौतममुनौ ॥

उतथ्यानुज. । पुं । देवाचार्ये । वृहस्पतौ ॥

उतथ्यानुजन्मा । पु । वृहस्पतौ । जीवे ॥

उताहो । अ । परिप्रश्ने ॥ विचारे ॥ विकल्पे ॥ उतच आहोच अनयोः समाहारः ॥

उत्क. । त्रि । अन्यमनस्के । उन्मनसि ॥ उद्गतंमनोऽस्य । उत्कउन्मनाइतिउद्गतमनस्कइत्तेरुच्छब्दात् स्वार्थेकन् ॥

उत्कटः । पुं । मत्तेभे ॥ रक्तेक्षौ ॥ शरे ॥ न । त्वक्पत्रे । गुडत्वचि । तजाख्यौषधौ । दारचीनी इतिभाषा ॥ अन्यत उत्कटसुगन्धित्वात्स्वार्थे उच्छब्दात् कटच् ॥ त्रि । तीव्रे ॥ मत्ते ॥ विषमे ॥ उद्गतःकटआवरणम् आवरकोवाअस्य ॥ यद्वा । उद्गतमदइत्तेरुच्छब्दात्स्वार्थे सम्प्रोदश्चेतिक-

ष्टे ॥

उत्कटकासन: । त्रि । विषमासने ॥

उत्कटा । स्त्री । सैंहलीलतायाम् ॥

उत्कण्ठ: । पुं । शृङ्गारस्य षोडशबन्धान्तर्गतबन्धविशेषे । आसनइति यस्य प्रसिद्धि: । तल्लक्षणम् । नारीपादौ चहस्तेनधारयेन्नलके पुन: । स्तनार्पितकर:कामी बन्धश्चोत्कण्ठसञ्ज्ञ: इति ॥

उत्कण्ठा । स्त्री । उत्कलिकायाम् । इष्टलाभे कालक्षेपासहिष्णुतायाम् ॥ उत्कण्ठनम् । कठिशोके । गुरोश्च खड्गस्य' ॥ आकाङ्क्षायाम् ॥

उत्कण्ठित: । त्रि । उत्सुके । उत्कण्ठायुक्ते ॥ उत्कण्ठासञ्जातास्य । तारकादित्वादितच् ॥

उत्कण्ठिता । स्त्री । स्वीयादिनायिकाभेदे ॥

उत्कता । स्त्री । गजपिप्पल्याम् । उत्कण्ठायाम् ॥

उत्कर' । पुं । धान्यादिराशौ । स्तूपे । अवकरे । हस्तपादादिविक्षेपे । उत्कीर्यते । क्षविशेषे । ऋदोरप् ॥

उत्कर्ष: । पुं । अतिशये । स्वकालात् परकालकर्त्तव्ये । इतिस्मृति: । अविद्यमानधर्मारोपे । उत्कर्षणम् । कृषवि० । घञ् । त्रि । अतिशययुक्ते ॥

उत्कल: । पुं । ओड्रदेशे । उडीसाइतिभा० । यथा । जगन्नाथप्रान्तदेशस्थौत्कल:परिकीर्त्तितइति । व्याधे । त्रि । भारवाहके । मोटिया इति भाषा ॥

उत्कलिका । स्त्री । उत्कण्ठायाम् । इष्टप्राप्तौकालक्षेपासहिष्णुत्वे । कामादिजातस्मृतौ ॥ कलिकायाम् ॥ हेलायाम् । सलिलतरङ्गे ॥ उत्पूर्वात्कले. कृञादिभ्योवुन् । क्वुन्वा ॥

उत्कलिकाप्रायम् । न । गद्यप्रभेदे । यथा । भवेदुत्कलिकाप्राय समासाढ्यं दृढाक्षरमिति यथा । प्रणिपातप्रवणसमधानाशेषसुरासुरादिवृन्दसौन्दर्यप्रकटकिरीटकोटिनिविष्टस्पष्टमणिमयूखच्छटाच्छुरितचरणनखचक्रविक्रमोद्दामवामपादाङ्गुष्ठनखशिखरखण्डितब्रह्माण्डविवरनिस्सरच्छरदमृतकरप्रकरभास्वरसुरवाहिनीप्रवाहपवित्रीकृतपिष्टपत्रितयकैटभारे क्रूरतरसंसारसागरनानाप्रकारावर्त्तविवर्त्तमानविग्रहं मामनुगृहाणेति ॥

उत्कलित: । त्रि । उन्मनसि । वृद्धिमति ॥

उत्कषित: । त्रि । उद्घृष्टे ॥

उत्का । स्त्री । उत्कण्ठितायां नायिकायाम् ॥

उत्कार: । पुं । धान्यस्योर्द्ध्वक्षेपणे । निकारे । धान्यस्यराशीकरणे । उत्कर

णम् । क्षविक्षेपे । क्षधान्ये इतिघञ् ॥

उत्कारा । स्त्री । प्रतिवर्षमद्भुतायाभुवि ॥

उत्कासिका । स्त्री । वमनव्याधौ ॥

उत्किरः । त्रि । निःक्षेपकर्त्तरि ॥ उत्किरतिविक्षिपति । क्त० इगुपधेतिकः ॥

उत्कीर्णः । त्रि । उल्लिखिते । कृतवेधने ॥ उत्कीर्य्यतेस्म । क्त० । क्तः । नत्वम् ॥

उत्कुटम् । न । उत्तानशयने ॥

उत्कुणः । पुं । उद्दंशे । मत्कुणे ॥

उत्कूटः । पुं । छत्रे ॥ इतिशारावली ॥

उत्कृतिः । स्त्री । षड्विंशत्यक्षरायांछन्दसि ॥

उत्कृष्टः । त्रि । प्रशस्ते । उत्तमे ॥ अतिशययुक्ते । उत्कर्षविशिष्टे ॥ उत्कृष्यतेऽयम् । कृषेः कर्मणिक्तः ॥

उत्कोचः । पुं । स्त्री । उपदायाम् । ढौकने ॥

उत्कोचकः । त्रि । कार्थिभ्योऽर्थंगृहीत्वा अयुक्तंकार्यंकुर्वाणे ॥

उत्क्रमः । पुं । अतिक्रमे । व्युत्क्रमे ॥

उत्क्रमणम् । न । उत्क्रान्तौ ॥

उत्क्रान्तः । त्रि । निर्गते ॥

उत्क्रान्तिः । स्त्री । उत्क्रमणे ॥

उत्क्रोशः । पुं । स्त्री । पक्षिविशेषे । कुररे ॥ उत्क्रोशति । क्रुशआह्वाने । पचाद्यच् ॥

उत्क्लेदः । पुं । वमनोपस्थिताविवेच्यर्थे । उकलाइ इति यस्यप्रसिद्धिः ॥

उत्क्लेशः । पुं । पीडायाम् ॥ वमनाद्योपस्थितौ । उकलाइ इतिभाषा । यथा । कफोत्क्लेशः । कफस्य वमनाद्योपस्थितिः ॥ उक्तञ्च । उत्क्लिश्यान्नंननिर्गच्छेत्प्रसेकष्ठीवनेरितम् । हृदयंपीड्यतेचास्यतमुत्क्लेशंविनिर्दिशेदिति ॥ उत्क्लेशइत्येके ॥

उत्क्षिप्तः । पुं । धत्तूरफले ॥ त्रि । ऊर्द्ध्वक्षिप्ते ॥

उत्क्षिप्तिका । स्त्री । कर्णाभरणविशेषे । कुलाम्याम् । कर्णान्दौ । कानतडका इतिभाषा ॥

उत्क्षेपः । पुं । ऊर्द्ध्वक्षेपणे । उछलना इतिभाषा ॥

उत्क्षेपकः । त्रि । उत्क्षेपकर्त्तरि ॥

उत्क्षेपणम् । न । व्यजने ॥ धान्यमर्द्दनवस्तुनि ॥ षोडशपणे ॥ उद्ध्वने । ऊर्द्ध्वदेशसंयोगहेतौ । ऊर्द्ध्वक्षेपे । अधःस्थितस्यवस्तुनऊर्द्ध्वंनयने ॥ उत्ऊर्द्ध्वंक्षेपणम् ॥

उत्खला । स्त्री । मुरानामगन्धद्रव्ये । तांलपर्याम् ॥

उत्खातः । त्रि । उन्मूलिते । उखाडा इतिभाषा ॥

उत्खातकेलिः । स्त्री । वप्रक्रीडायाम् ॥

यथा । उत्खातकेलिःशृङ्गाद्यैर्वप्रक्रीडानियते इतिशब्दार्णवः ॥

उत्तः । त्रि । आर्द्रवस्तुनि । क्लिन्ने । भीजा इतिभाषा ॥ उनत्तिस्म । उन्दीक्लेदने । अकर्मकत्वात्कर्त्तरिक्तः । नुदविदेति पक्षेनत्वाभावः ॥

उत्तंसः । पुं । कर्णपूरे । कर्णाभरणे । शेखरे । शिरोभूषणे ॥ उत्तंसयति उत्तंस्यतेनेनवा । तसि. शैचोभूषार्थः । पचाद्यच् । हलश्चेति घञ्वा ॥

उत्तप्तः । त्रि । सन्तप्ते ॥ परिप्लुते ॥ न । शुष्कमांसे ॥ उत्तप्यतेस्म । तप० । क्तः ॥ उज्ज्वले ॥

उत्तब्धः । त्रि । उत्तम्भिते ॥ उत् ऊर्ध्व ध. ॥

उत्तभितम् । त्रि । उन्नमिते ॥

उत्तमः । त्रि ॥ उत्कृष्टे । अनुत्तमे । वरेण्ये ॥ पुं । प्रियव्रतराजः पुत्रे तृतीयमनौ ॥ वैश्यिकाख्यनायके ॥ अतिशयेनउत्कृष्टः । उत्कृष्टार्थवृत्तेरुच्छब्दात्तमप् । द्रव्यप्रकर्षार्थत्वान्नाम् ॥ यद्वा । उत्ताम्यति । तमु । अच् ॥ उत्तम्यतेवा । घञ् । नोदात्तेतिनवृद्धि. ॥

उत्तमःश्लोकः । त्रि । पुण्ययशसि । श्रीहरौ ॥ उत्क्रान्ततमोयस्मात्सउत्तमाः । उत्तमाःश्लोकायशोयस्य ॥

उत्तमफलिनी । स्त्री । दुग्धिकावृक्षे ॥

उत्तमर्णः । पुं । ऋणदे । ऋणस्यदातरि । धनस्वामिनि । महाजन इति भाषा ॥ उत्तममृणमस्य । ऋणमाधमर्ण्ये इतिसूत्रे आधमर्ण्यशब्देनव्यवहारविशेषो लक्ष्यते । तेनोत्तमर्णोपिसिध्यति । लक्षणायान्तु धारेरुत्तमर्णइतिनिर्द्देशोलिङ्गम् ॥ देवर्षिपितृणे ॥

उत्तमश्लोकः । त्रि । पुण्ययशसि ॥

उत्तमसङ्ग्रहः । पुं । सम्यक्सङ्ग्रहणे । निर्जने परभार्ययासह केशाकेशिपरस्पराश्लिङ्गनसहासनादिरूपमिथुनीभावे । इतिमिताक्षरा ॥

उत्तमसाहसः । पुं । दण्डविशेषे । साशीतिपणसाहस्रे ॥ साशीतिपणसाहस्रो दण्डउत्तमसाहसः । इति याज्ञवल्क्योक्तेः ॥ सहस्रपणमिते ॥ यथाह मनुः । पणानांद्वेशतेसार्द्धे प्रथमःसाहसःस्मृतः । मध्यमः पञ्चविज्ञेयःसहस्रंत्वेवचोत्तम इति ॥

उत्तमा । स्त्री । उत्कृष्टायां नार्य्याम् । वरारोहायाम् ॥ दुग्धिकौषधौ ॥ स्वीयादिनायिकाप्रभेदे । अहितकारिण्यपिप्रिये हितकारिण्याम् ॥ टाप् ॥

उत्तमाङ्गम् । न । मस्तके ॥ उत्तमञ्च तदङ्गञ्च । सन्महदितिसमासः ॥

उत्तर

उत्तमाम्भ । न । नवविधासुतुष्टिषुतुष्टिविशेषे ॥ नानुपहत्यभूतानिविषयोपभोगोभवतीति हिंसादोषदर्शनाद्विषयोपरमेसति यातुष्टिः सा पञ्चमी उत्तमाम्भउच्यते ॥

उत्तमारणी । स्त्री । इन्दीवर्य्याम् ॥

उत्तम्भः । पुं । स्वतःफलतोवा तथाऽनर्थानुबन्धित्वशङ्कायाःप्रवृत्तिप्रतिबन्धिकाया विगमे ॥

उत्तम्भनम् । न । वर्द्धने ॥ उत्तम्भनम् । उद्‌स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ॥

उत्तम्भितः । त्रि । विधृते ॥ उत्तम्भित. ॥

उत्तरम् । न । प्रतिवाक्ये । वदल इति भाषाप्रसिद्धेप्रश्नस्यभञ्जने ॥ प्रश्नश्चोद्यधियापृच्छा तस्यभञ्जनमुत्तरम ॥ उत्तीर्यते निस्तीर्यते प्रकृताभियोगोऽनेन । तत्स्वरूपम । पक्षस्यव्यापकं सारमसन्दिग्धमनाकुलम् । अव्याख्यागम्यमित्त्येवमुत्तरं तद्विदोविदुरिति ॥ तस्यभेदाः । मिथ्यासम्प्रतिपत्तिश्च प्रत्यवस्कन्दनं तथा । प्राङ्न्यायश्चोत्तराः प्रोक्ताश्चत्वारः शास्त्रवेदिभिः ॥ इति नारदः ॥ कात्यायनेनापिव्यवहारविषये चतुर्विधमुत्तरमुक्तम् । सत्यंमिथ्योत्तरञ्चैव प्रत्यवस्कन्दनंतथा । पूर्वन्याय विधिश्चैवमुत्तरंस्याच्चतुर्विधमिति ॥ सिद्धान्तानुकूलतर्कोपन्यासे ॥ उत्तरणम् । रुद्रे । रप् ॥ पुं । सदाशिवे ॥ हरौ ॥ संसारसागरादुत्तारयतीति व्युत्पत्तेः ॥ विराटराजसुते ॥ त्रि । ऊर्द्ध्वे ॥ उदीच्ये ॥ प्रवरे । श्रेष्ठे ॥ अनन्तरे ॥ दिव्ये ॥ वामभागे ॥ उत्तरति । तॄप्लवनतरणयोः । पचाद्यच् ॥ यद्वा । अतिशयेनोद्गतः । तरप् । द्रव्यम ... स्वान्तमुः ॥

उत्तरकालः । पुं । भविष्यत्काले ॥ गौणकाले ॥ यथा ये एव मुख्याभिधायागीयमुख्यकाला दधस्तनः । स्वकालादुत्तरोगौणःकालःपूर्वस्यकर्मणा इति हरिहरपद्धतिः ॥

उत्तरकुरु. । पुं । जम्बुद्वीपस्यनववर्षान्तर्गतवर्षविशेषे ॥ रम्यकस्योत्तरं वर्षं तस्यैवान्तर्हिरण्मयम् । उत्तराः कुरवश्चैवयथावै भारतंतथा ॥ उत्तरं- मेरोः ॥

उत्तरकोशला । स्त्री । अयोध्यायाम । रामपुरि । साकेते । अवधपुरी इतिभाषा ॥

उत्तरक्रिया । स्त्री । अन्तिमक्रियायाम् । सांवत्सरिकश्राद्धादिपित्र्यक्रियायाम् ॥ यथा । प्रेतेपितृत्वमापन्नेसपिण्डीकरणादनु । क्रियन्तेया. क्रि

उत्तर

याःपित्र्यःप्रोच्यन्तेतास्त्रियोत्तरा इति विष्णुपुराणम् ॥

उत्तरक्रम । न । द्वारोर्द्ध्वकाष्ठादारुणि । त्रि । उत्तरतरङ्ग ॥

उत्तरच्छदः । पुं । शय्याया उपर्यास्तरणवस्त्रे । निचोले ॥

उत्तरणम् । न । नद्यादिपारगमने । उतरणा इतिभाषा ॥

उत्तरतः । अ । उत्तरादित्यर्थे । दिग्देशकालेषवाच्ये । दक्षिणोत्तरा-भ्यामतसुच् स्वार्थे । उत्तरतोवसत्यागतोरमणीयंवा ॥

उत्तरपक्षः । पुं । विचारसिद्धान्ते । समाधाने । कृतान्ते । समाधौ । सि-द्धान्तानुकूलतर्कोपन्यासे ॥ उत्तरस्यापक्षस्य ॥

उत्तरपादः । पुं । चतुष्पाद्व्यवहारान्तर्गतद्वितीयपादे । उत्तरे ॥

उत्तरपूर्वा । स्त्री । ईशानकोणे । उत्तरस्याः पूर्वस्याश्चदिशोरन्तरालम् । दिङ्नामान्यन्तराल इतिसमासः ॥

उत्तरफल्गुनी । स्त्री । द्वादशेनक्षत्रे ॥ अस्याःस्वरूपम् दक्षिणोत्तरमिलिततारकाद्वयम् ॥ पर्यङ्करूपंतारकाद्वयञ्च ॥ अस्यांजातस्यफलम् दाता दयालु स्वजने सुशीलः । विशालकी-र्त्तिः सुमतिः प्रधानः । धीरोनरोऽ

उत्तर

त्यन्तमृदुस्वभावः स्यादुत्तराफल्गुनिकाप्रसूतिरिति ॥

उत्तरफाल्गुनी । स्त्री । अर्यमदेवतायाम् । उत्तरफल्गुन्याम् ॥

उत्तरभाद्रपत् । स्त्री । उत्तरभाद्रपदायाम् ॥

उत्तरभाद्रपदा । स्त्री । अहिर्बुध्न्यदेवतायाम् । प्रौष्ठपदायाम् ॥ अस्याःस्वरूपम् ।उत्तरेसुमुखि भारमूर्त्तिभृत्युग्मकमिलितेद्वितारके । मीनधामरङ्कचेन्द्रयुग्मतोलोचनाञ्चलकलाः प्रजायिताइति कालिदासः । पर्यङ्करूपम्द्वितारात्मकमितिदीपिका ॥ अत्रजातस्यफलम् । धनीकुलीनःकृपणःक्रियाढ्योभूपालमान्योवलवान्महौजाः । सत्कर्मकर्त्तानिज बन्धुभक्तोयस्योत्तराभाद्रपदाप्रसूतः इति ॥

उत्तरमीमांसा । स्त्री । ब्रह्ममीमांसायाम् ॥

उत्तरवादी । त्रि । उत्तरस्यवक्तरि । आसामी इतिभाषा ॥

उत्तरसाक्षी । त्रि । स्वपक्षसम्बन्धिसाक्ष्यपरिभाषतां साक्षिणां यःस्वयंश्रुत्वाज्ञिनर्थिनाम्नाय्यतेवा सश्रुत्यर्थः । तथाच न रदः । साक्षिणामपियः साक्ष्यंस्वपक्षपरिभाषताम् । अवणाच्छ्रावणाद्वापिससाक्ष्युत्तरसंज्ञकइति

॥ परसाची इतिगौड भाषा ॥

उत्तरसाधकः । पुं । साधकसहाये । सहकारिणि ॥

उत्तरा । अ । उत्तराहि अर्थे ॥ उत्तराद्येति पचेआच् ॥

उत्तरा । स्त्री । उदीच्यान्दिशि । कौबेर्याम् ॥ उत्तरफाल्गुन्याम् ॥ परीचिन्मातरि । वैराट्याम् ॥ उत् ऊर्द्धं तरन्त्यत्र । तॄ० । ऋदोरप् ॥

उत्तरात् । अ । दिशि ॥ देशे ॥ काले ॥ उत्तरात् वसति आगतो रमणीयंवा । उत्तराधरदक्षिणादातिरितिस्वार्थे आतिः ॥

उत्तराधिकारी । त्रि । प्रथमाधिकारिणः पश्चादधिकारिणि । दायादे । अंसी इति भाषा ॥

उत्तरापथजन्मा । पुं । जातिविशेषे ॥ यथा । उत्तरापथजन्मान'कीर्त्तयिष्यामितानपि । यौनकाम्बोजगान्धाराः किराताबर्बरैःसह ॥ एतेपापकृतस्तातचरन्तिपृथिवीमिमामिति ॥

उत्तरापोशानम् । न । हस्तावसेचने ॥

उत्तराभासः । पुं । दुष्टोत्तरे ॥ तथाच कात्यायनः । प्रकृतेनत्त्वसम्बन्धमल्पमतिभूरिच । पचैकदेशव्याप्येव तच्चैवोत्तरं भवेदिति ॥

उत्तरायणम् । न । माघादिषण्मासात्मकेसूर्यस्योत्तरदिग्गमनकाले । देवानामहनि ॥ माघादिमासयुग्मैस्तु ऋतवःषट्क्रमादितः । उत्तरायणमाद्यैस्तैस्त्रिभिःस्याद्दक्षिणायनमित्युक्तेः ॥ मकरसङ्क्रान्तौ ॥

उत्तराशापतिः । पुं । कुबेरे ॥

उत्तराषाढा । स्त्री । एकविंशतितमे नक्षत्रे । वैश्वदेवे ॥ अस्यारूपम् । सूर्पाकृतितारचतुष्टयात्मकमिति कालिदासः । गजदन्तवदष्टताराम यमितिदीपिकाटीका ॥ तत्रजातस्यफलम् । दाताद्यावान्विजयी विनीतःसत्कर्मचेताविभवैः समेतः । कान्तासुतावाप्तसुखोनितान्तंवैश्वे सुवेशःपुरुषोमनीषीति ॥

उत्तरासङ्गः । पुं । प्रावारे । उत्तरीयांशुके ॥ उत्तरेऊर्द्धभागे आसज्यते । षञ्जसङ्गे । घञ् ॥

उत्तराहि । अ । उत्तरादर्थे ॥ अस्तातेर्विषये उत्तराद्येत्याहिप्रत्ययः दूरेचेदवधिमान् । उत्तराहि वसति रमणीयंवा ॥

उत्तरीयम् । न । संव्याने । उत्तरासङ्गे । उपवीतवद्धृतवस्त्रे ॥ उत्तरेऽस्मिन् देहभागे भवम् । गहादित्वाच्छः ॥ यथायज्ञोपवीतं हिधार्यतेचद्विजोत्तमैः । तथासन्धार्यतेयत्नादुत्तराच्छा-

दनं शुभमितिस्मृतिः॥ एकश्चेद्वासो भवति तस्योत्तरार्द्धेन प्रच्छादयतीति पारस्कर. ॥ नस्यात्कर्मणिकञ्चुकी ॥

उत्तरेण । अ । उत्तरदिग्देशकालेषु ॥ एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्या इति स्वार्थे एनप् अदूरेचेदवधिमानवधे र्वर्त्तते । उत्तरेण वसति रमणीयंवा॥

उत्तरेद्युः । अ । आगामिदिने ॥ उत्तरस्मिन्नहनि इत्यर्थेसद्य परुदितिउत्तरशब्दादेद्युस् प्रत्ययोनिपातितः ॥

उत्तलित' । त्रि । उतच्चिते ॥

उत्तस्थूः । चि । उत्थिते ॥

उत्तानः । त्रि । अगभीरे ॥ ऊर्द्धमुखश ते ॥ उद्गत स्तानोविस्तारोस्मात् ॥

उत्तानकः । पुं । उच्चटायाम् ॥

उत्तानपत्रक. । पुं । रक्तैरण्डे ॥

उत्तानपादः । पुं । स्वायम्भुवमनोःपुत्रेनृपतिविशेषे ॥

उत्तानपादजः । पुं । उत्तानपादस्यपुत्रे । ज्योतीरथे । ग्रहाधारे । ध्रुवे ॥

उत्तानशयः । चि । अतिशिशौ । डिम्भे । स्तनपे ॥ उत्तानःशेते । शीङ्स्वप्ने । पार्श्वादिषूपसंख्यानमित्यच् ॥

उत्तानशया । स्त्री । स्तनन्धयाम् ॥ टाप् ॥

उत्तापः । पुं । उष्णतायाम् । तेजसि । सन्तापे ॥ उत्तापयति । तपेरर्थन्तात् पचाद्यच् ॥

उत्तारः । त्रि । वह्निर्निर्गतनेत्रे ॥ मह ति । उद्भटे । उदारे ॥

उत्तारी । चि । चपले ॥ इतिभूरिप्रयोगः ॥

उत्ताल. । त्रि । उत्कटे ॥ श्रेष्ठे ॥ विकराले ॥ प्लवङ्गमे ॥ त्वरिते ॥ उन्नते ॥

उत्तिष्ठहोमः । पुं । वषट्कारप्रयोगान्ते॥ याज्यापुरोनुवाक्यान्ते ॥

उत्तिष्ठमान. । चि । वर्द्धमाने ॥

उत्तीर्णः । त्रि । मुक्ते । पारगते ॥

उत्तुङ्गः । त्रि । उच्चे । उन्नते ॥

उत्तुण्डित. । त्रि । अनिर्गतशल्येव्रणे ॥

उत्तुषः । पुं । भृष्टधान्ये । खाजिके । लाजासु । खील इतिभाषा ॥

उत्तेजना । स्त्री । प्रेरणायाम् । व्यग्रकरणे ॥

उत्तेजितम । न । अश्वचतुर्थगतौ । रेचिते ॥ उत्तेजितंमध्यवेगंयोजनंस्मृ शवल्गयेत्युक्तः ॥ त्रि । प्रेरिते ॥

उत्तेरितम् । न । अश्वपञ्चमगतौ । आस्कन्दिते । उपकण्ठे ॥ उत्तेरितेोति वेगान्धोनश्रणोतिनपश्यति ॥

उत्तोलनम् । न । ऊर्द्धनयने । उठावना इतिभाषा ॥

उत्तोलितः । त्रि । उदस्ते ॥

उत्क्षिप्तः। त्रि। ऊर्द्धक्षिप्ते। परिक्षिप्ते॥

उत्त्रासः। पुं। भये॥

उत्थानम्। न। उद्यमे॥ तन्त्रे॥ पौरुषे॥ पुस्तके॥ रणे॥ प्राङ्गणे॥ उद्गमे॥ हर्षे॥ मलरोगे। मलोत्सर्गे॥ वास्तव्ये॥ चैत्ये॥ सन्निविष्टोद्गमे॥ उत्थीयतेऽत्र। ष्ठागतिनिवृत्तौ। अधिकरणे भावे वा ल्युट्॥

उत्थानैकादशी। स्त्री। कार्त्तिकशुक्लैकादश्याम्॥

उत्थापनम्। न। उत्तोलने॥

उत्थितः। त्रि। उत्पन्ने॥ प्रोद्यते॥ वृद्धिमति॥ उत्तिष्ठतिस्म। ष्ठा° गत्यर्थेति क्त॥

उत्थिताङ्गुलिः। पुं। चपेटे। विस्तृताङ्गुलिकरतले। चपेटा थाप इतिभाषा॥

उत्पतः। पुं। खगे। पक्षिणि॥

उत्पतनम्। न। उत्पत्तौ॥ ऊर्द्धगमने॥ कूर्दने॥

उत्पतितः। त्रि। उद्गते। उत्पन्ने॥ उच्छ्रिते॥

उत्पतिता। त्रि। ऊर्द्धगमनशीले। उत्पतिष्णौ॥ उत्पतति तच्छील। पत्लृगतौ। तृन्॥

उत्पतिष्णुः। त्रि। समुद्गते। उत्पतितरि। ऊर्द्धपतनशीले॥ उत्पतति। पत्लृगतौ। अलङ्कृञितीष्णुच्।



उत्पत्तिः। स्त्री। देहसम्बन्धे॥ जन्मनि॥ आविर्भावे॥ सत्कार्य्यवादेहि मृत्पिण्डेविद्यमानस्य घटस्याविर्भावएवोत्पत्तिर्यथा तथैवकारणात्मना विद्यमानानां तत्त्वानामाविर्भावएवोत्पत्तिर्विवक्षिता॥ उत्पदनम्। पद्गतौ। क्तिन्॥

उत्पत्तिक्रमः। पुं। उत्पत्तेरनुक्रमे॥ स यथा। आत्मन आकाशः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओषधयः ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नात्सर्वाणि भूतानीति श्रुतिप्रसिद्धः॥

उत्पत्तिमत्। त्रि। अनित्यवस्तु[illegible]॥

उत्पत्तिविधिः। पुं। कर्मस्वरूपमात्रबोधकेविधौ॥ यथा। आग्नेयोऽष्टाकपालोभवति। यथावा। अग्निहोत्रंजुहोतीति। अत्रचविधौकर्मणः कर्त्तृत्वेनान्वयः। अग्निहोत्रहोमेनेष्टम्भावयेदिति॥ ननुयागस्यहिरूपे द्रव्यं देवताच। तथाच रूपाश्रवणे अग्निहोत्रंजुहोतीतिकथमुत्पत्तिविधि अग्निहोत्रशब्दस्य तत्प्रख्यन्यायेन नामधेयत्वादितिचेन्न। रूपाश्रवणेप्यस्योत्पत्तिविधित्वात्। अन्यथारूपश्रवणाद्दध्नाजुहोतीत्य-

यमेवोत्पत्तिविधि' स्यात् । तथाचा ग्निहोत्रं जुहोतीतिवाक्यमनर्थकं स्यात् ॥

उत्पत्तिव्युत्क्रम. । पु । उत्पत्तेर्विप र्यस्तक्रमे ॥ अयमर्थः । पृथिवीगन्ध तन्मात्रात्मिका रसतन्मात्रात्मिकाप् मात्रम्भवति । आपश्चता रूपतन्मा त्रात्मकतेजोमात्रं भवन्ति । तच्च ते जः स्पर्शतन्मात्रात्मकवायुमात्र भव ति । सच वायु' शब्दतन्मात्रात्मका काशमात्रं भवति । सचाऽऽकाश स्वकारणभूताऽज्ञानोपहितचैतन्य- म्मच भवतीति ॥

उत्पन्न' । त्रि । प्राप्तजन्मनि । उद्भूते । न्नेते ॥ उत्पद्यतेस्म । पद° । क्त. । ..भ्यामिति नत्वम् ॥

उत्पलम् । न । इन्दीवरे । नीलकमले ॥ कुष्ठौषधौ ॥ जलजपुष्पमात्रे । कुवलये ॥ जलजपुष्पविशेषे । कों भि इतिभाषा ॥ त्रि । मांसशून्ये ॥ उत्पलति । पलगतौ । पचाद्यच् ॥

उत्पलगन्धिकम् । न । चन्दनविशेषे । कृष्णताम्रे । गोशीर्षे ॥

उत्पलपत्रम् । न । कुवलयदले ॥ स्त्री नखक्षते । तिलके ॥

उत्पलशारिवा । स्त्री । अनन्तायाम् । श्यामालतायाम् ॥ उत्पलमस्त्यस्या.

उत्पलाकारपुष्पत्वात् । अर्शआद्यच् ॥ यद्वा । उत्पलमनया । उत्पला चासौशारिवाच ॥

उत्पलाक्षी । स्त्री । सुपर्णाख्यतीर्थदे व्याम् ॥

उत्पलिनी । स्त्री । कैरविण्याम् । छो टीकोर्भी इतिभाषा ॥ पद्मसमूहे । उत्पलाकरे ॥ उत्पलानि सन्त्यस्या म् । पुष्करादिभ्योदेशेइति इनिः ॥

उत्पली । स्त्री । तुषचर्पट्याम् ॥

उत्पटः । पुं । वृक्षनिर्यासे ॥ वैदिकोयम् ॥

उत्पवनम् । न । कुशखण्डिकायांपवित्र- मध्येन जलादेरुत्क्षेपणे ॥

उत्पश्य. । त्रि । उन्मुखे । ऊर्ध्वदृष्टिवि- शिष्टे ॥

उत्पाट. । पुं । योगविशेषे ॥ यथा । र वौविशाखा सोमे पूर्वाषाढा भौमे धनिष्ठा बुधेरेवती गुरौरोहिणी शुक्रेपुष्या शनावुत्तराफाल्गुनी चे दुत्पाटयोगः ॥

उत्पाटनम् । न । उन्मूलने । उपाडना इति भाषा ॥

उत्पाटिका । स्त्री । वृक्षस्यनीरसाया- न्त्वचि ॥ वैदिकोयम् ॥

उत्पाटितः । त्रि । उन्मूलिते । उपाडा इतिभाषा ॥

उत्पात: । पुं । अजन्ये । उपद्रवे । दिव्यान्तरीक्ष्यभूमिजोपसर्गे ॥ तत्र दिव्यो यथा । अपर्वणि चन्द्रादित्यग्रास: । आन्तरीक्ष्यो यथा । उल्कापातनिर्घातादि: । भौमो यथा भूकम्पादि. ॥ आध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिकभेदभिन्ने प्राणिनां शुभाशुभ सूचके महाभूतविकारे ॥*॥ अथोत्पाताध्याय: ॥ यानथेत्पातान् गर्ग: प्रोवाच तानहं वक्ष्ये । तेषां सङ्क्षेपो यं प्रकृतेरन्यत्वमुत्पात: ॥ अपचारेण नराणा मुपसर्ग: पापसञ्चयाद्भवति । संसूचयन्ति दिव्यान्तरिक्षभौमास्तमुत्पाता: । मनुजानामपचारादपरक्ता देवता: सृजन्त्येतान् । तत्प्रतिघाताय नृप: शान्तिं राष्ट्रे प्रयुञ्जीत ॥ दिव्यं ग्रहर्क्षवैकृत मुल्कानिर्घातपवनपरिवेषा: । गन्धर्वपुरपुरन्दरचापादि यदान्तरिक्ष्यं तत् ॥ भौमं चरस्थिरभवं तच्छान्तिभिराहतं शम मुपैति । नाभसमुपैति मृदुतां शाम्यति नो दिव्यमित्येके ॥ दिव्यमपि शम मुपैति प्रभूतकनकान्नगोमहीदानै: । रुद्रायतने भूमौ गो दोहात्कोटिहोमाच्च ॥ आत्मसुतकोशवाहनपुरदारपुरोहितेषु लोकेषु । पाकमुपयाति दैवं परिकल्पितमष्टधा नृप-



ते: ॥ अनिमित्तभङ्गचलनस्वेदाश्रुनिपातजल्पनाद्यानि । लिङ्गार्चायतनानां नाशाय नरेशदेशानाम् ॥ दैवतयात्राशकटाक्षचक्रयुगकेतुभङ्गपतनानि । सम्पर्य्यासनसादनसङ्गाश्च न देशनृपशुभदा: ॥ ऋषिधर्मपितृब्रह्मप्रोद्भूतं वैकृतं द्विजातीनाम् । यद्रुद्रलोकपालोद्भवं पशूनामनिष्टं तत् ॥ गुरुसितशनैश्चरोत्थं पुरोधसां विष्णुजञ्च लोकानाम् । स्कन्दविशाखसमुत्थं माण्डलिकानां नरेन्द्राणाम् ॥ वेदव्यासे मन्त्रिणि विनायके वैकृतं चमूनाथे ॥ विधातरि सविश्वकर्मणि लोकाभावय निर्दिष्टम् ॥ देवकुमारकुमारीवनिताप्रेष्येषु वैकृतं यत्स्यात् । तन्नरपते: कुमारकुमारिकास्त्री..र जनानाम् ॥ रक्ष:पिशाचगुह्यकनागानामेव मेव निर्दिष्ट: । मासैश्चाप्यष्टभि: सर्वेषामेव फलपाक: ॥ वृद्धा देवविकारं शुचि: पुरोधा त्र्यहोषित: स्नात: । स्नानकुसुमानुलेपनवस्त्रैरभ्यर्चयेत् प्रतिमाम् ॥ मधुपर्केण पुरोधा भक्ष्यैर्वलिभिश्च विधिवदुपतिष्ठेत् । स्थालीपाकं जुहुयाद्विधिवन्मन्त्रैश्च तल्लिङ्गै: ॥ इति विबुधविकारे शान्तयस्सप्तरात्रं द्विजविबुधगणार्चा गीतनृत्योत्सवाश्च । विधिवदवनिपा

उत्पात:

तैर्यैः प्रयुक्तानतेषांभवति दुरितपा-
कोदर्त्विशाभिमवद्दु।राष्ट्रस्यासन्निः
महीपतेर्दीप्यतेचतेऽधनमान्।मनु-
जेश्वरस्यपीडा तस्यचराष्ट्रस्यविज्ञेया
॥ जलमांसाद्रं ज्वलने नृपतिवधः प्रह
रणेरणोरौद्र'। सैन्यग्रामपुरेषुच ना
शोवन्हेर्भयंकुरुते ॥ प्रासादभवनतो
रणकेत्वादिषुचानलेनदग्धेषु । त
।ताचाषाण्मासात् परचक्रस्यागमो
नियमात् ॥ धूमोनाग्निसमुत्थोरज-
स्तमस्याह्निजंमहाभयदम् । व्यभ्रेनि
शाधुनाशोदर्शनमपिचाह्निदोषक-
रम् ॥' नगरचतुष्पादण्डजमनुजा-
नांभयकरंज्वलनमाहुः । धूमाग्नि
ि स्फुलिङ्गैः शय्याम्बरकेशजैर्मृत्युः॥
आयुधज्वलनसर्पणस्वनाः कोषनि-
र्गमनवेपनानिवा । वैकृतानियदि
वायुधेष्व।णाशुरौद्ररणसङ्कुलंवदे
त ।' मन्त्रैराग्नेयैः क्षीरवृक्षात्समि
द्भिर्होतव्योऽग्नि सर्पिषाच ।
अग्न्यादीनां वैकृतेशान्तिरेवंदेय-
॥ शा

केत्वात् चाशनिर्दिश्येद्गणो
योपं । समनेदेशभयंवदितेच-
च बाहुल्यम् ॥ राष्ट्रविभेदस्त्वन्य
अालवधोऽतीवकुसुमितेवाले। वृ
क्षात् च रसाधेसर्वद्रव्यक्षयोभवति

उत्पात:

॥ मध्येवाऽङ्गनानाशःसङ्ग्रामः शोणिते
मधुनि रोगः । स्नेहेदुर्भिक्षभयंमह
द्भयंनिस्रुतेसलिले ॥ शुष्कविरोहे
वीर्यान्नसङ्क्षय. शोषणेचविरूजाना
म् । पतितानामुत्थानेस्वयमभयंदैव
जनितञ्च ॥ पूजितवृक्षेह्यन्यतौकुसु
मफलंनृपवधायनिर्दिष्टम् । धूमस्त
स्मिन्ज्वालाथवाभवेन्नृपवधायैव ॥
सर्पत्सुतरुषुजल्पत्सुवापिजनसङ्क्ष
योविनिर्दिष्टः। वृक्षाणांवैकृत्येदश
भिर्मासैः फलविपाक. ॥ स्रग्गन्धधू
पाम्बरपूजितस्यछर्चविधायोपरि पा
दपस्य । कृत्वाशिवं रुद्रजपोऽत्रकार्यो
रुद्रेभ्यइत्यत्रषडेवहोमः' ॥ पाय
सेनमधुनाच भोजयेद्ब्राह्मणानघृत
युतेनभूपतिः । मेदिनीनिगदितात्र
दक्षिणावैकृतेतरुकृते हितार्थिभिः
नालेऽब्जयवादोनामेकस्मिन्द्वि
त्रिसम्भवोमरणम् । कथयतितदधि
पतीनांयमलंजातंच कुसुमफलम्॥
अतिवृद्धिः सस्यानांनानाफलकुसुम
सम्भवोवृक्षे । भवतिहियद्येकस्मिन्
परचक्रस्यागमोनियमात् ॥ अर्धेन
यदातैलं भवतितिलानामतैलता-
वासात् । अन्नस्यचवैरस्यंदातुर्विद्या
द्भयंसुमहत् ॥ विकृतकुसुमफलं
वाग्रामाद्धवापुराद्दक्षिणकार्य्यम् । -

सौम्योनचरः कार्योनिर्वास्योवापशुः शान्त्यै॥ सस्येचदृष्टाविकृतिंप्रदेयं तत्क्षेत्रमेवंप्रथमंद्विजेभ्यः। तस्यैवमध्येचरुमत्रभौमंकृत्वानदोषसमुपैतितज्जम्॥ दुर्भिक्षमनावृष्टावतिवृष्टौक्षुद्भयपरभयञ्च। रोगोह्यन्तुभवार्यांन्नपतिवधोऽनभ्रजातायाम्॥ शीतोष्णविपर्यासेनोसम्यगृतुषुसम्प्रवृत्तेषु। षण्मासाद्राष्ट्रभयंरोगभयंदैवजनितञ्च॥ अन्यर्त्तौसप्ताहंप्रबन्धवर्षेप्रधानन्टपमरणम्।रक्तेशस्त्रोद्योगोमांसास्थिवसादिभिर्मरकः॥ ॥ धान्यहिरण्यत्वक्फलकुसुमाद्यैर्वर्षितेभयंविद्यात्। अङ्गारपांसुवर्षे विनाशमायातितन्नगरम्॥ उपलाविनाजलधरैर्विकृतावाप्राणिनोयदावृष्टाः। छिद्रंवाप्यतिदृष्टौसस्यानामीतिसञ्जननम्॥ यद्यमलेर्केछाया,नदृश्यते दृश्यतेप्रतीपावा। देशस्यतदासुमहद्भयमायातंविनिर्दिश्यम्॥ अभ्रेनभसीन्द्रधनुर्दिवायदादृश्यतेथवारात्रौ। प्राच्यामपरस्यांवातदाभवेतक्षुद्भयंसुमहत्॥ सूर्येन्दुपर्जन्यसमीरणानां योगः स्मृतोवृष्टिविकारकाले। धान्यान्नगोकाञ्चनदक्षिणाभ्यदेयास्ततः शान्तिमुपैतिपापम्॥ अपसर्पणंनदीनांनगराद्दचि



रेणशून्यतांकुरुते। शोषाश्चाशोषाणामन्येषांवाह्रदादीनाम्॥ स्नेहासृङ्मांसवहाः सङ्कुलकलुषाः प्रतीपगाश्चापि। परचक्रस्यागमनंनद्यःकथन्तिषण्मासात्॥ ज्वालाधूमक्वाथाः रुदितोत्क्रुष्टानिचैवकूपानाम्। गीतप्रजल्पितानिचजनमरकायोपदिष्टानि॥ सलिलोत्पत्तिरखातेगन्धरसविपर्ययेचतोयानाम्। नाललाशयानां विकृतौ महद्भयं तत्रशान्तिमिमाम्॥सलिलविकारेकुर्य्यात्पूजांवरुणस्य वारुणैर्मन्त्रैः। तैरेवचजपहोमंशममेवं पापमुपयाति॥ प्रसवविकारेस्त्रीणां द्वित्रिचतुष्प्रभृतिसम्प्रसूतौवा। हीनातिरिक्तनेचदेशकुलसङ्क्षयो भवति॥ बडवोष्ट्रमहिषगोहस्तिनीषयमलोद्भवमरणमेषाम्। षण्मासात्स्तिफलंशाल्मोश्लोकौचगर्गोक्तौ॥ नार्य्यःपरस्यविषयेत्यक्तव्यास्ताहितार्थिना। तर्पयेच्चद्विजानकाले" "शान्तिञ्चैवात्रकारयेत्॥ १॥ यूथेभ्यस्त्यक्तव्याः परभूमिं नयेत् स्वामिनंयूथमन्यथातुविन। "त॥ २॥ परयोनावभिगमनं भव। "तिरश्चामसाधुधेनूनाम्। उक्षावा। अन्योन्यं पिबतिश्वावासुरभिसुतम्॥

उत्पात:

मासचयेणविद्यात्तस्मिन्: संशयंप-
रागमनम्। तत प्रतिघातायैतौश्लो
कौगर्गेणनिर्दिष्टौ॥ त्यागोविवास-
नंदानंतत्तस्याशु शुभं भवेत्। तपये
द्ब्राह्मणांश्चाजपंहोमञ्चकारयेत्॥
१॥ स्थालीपाकेन धातारं पशुना-
थपुरोहित:। प्राजापत्त्येनमन्त्रेणथ
जेदक्षवदक्षिणाम्॥ २॥ यानंवाह
।न युक्तंयदिगच्छेन्नत्रजेद्यवाहयुतम्।
राष्ट्रभयंभवतितदाचक्राणांसादभङ्गे
च॥ अनभिहततूर्य्यनाद.शब्दोवाता
डितेषुयदिनस्यात्। व्युत्पत्तौवातेषां
परागमोन्वपतिमरणंवा॥ गीतरव
तूर्य्यशब्दानभसियदावाचरस्थिरान्य
न। मृत्युस्तदागदावाविस्वरतू-
र्य्यैपराभिभव:॥ गोलाङ्गलयो: सङ्गे
दर्वीशूर्पाद्युपस्करविकारे। क्रोष्टुक
नादेच तथा शस्त्रभयंमुनिवचश्चेद
म॥ वायव्येष्वेवन्वपतिर्वायुंसक्तुभि-
रर्च्चयेत्। आवायोइति पञ्चचौजस
व्यः प्रयतैर्द्विजै:॥ ब्राह्मणान्परमान्ने
श्चाभिस्तर्पयेत्। वस्त्रवद-
क्षिणोहोम:कर्त्तव्यश्चप्रयत्नत:॥ पुर
पक्षिणोवनचरा वन्यावानिर्भयाविश
न्तिपुरम्। नक्तंवादिवसचरा: चपा
चरावाचरन्त्यहनि॥ सन्ध्याद्वयेपि
मण्डलमावधन्तो मृगाविहङ्गावा।

उत्पात:

दीप्तायांदिश्यथवाक्रोशन्त: संहता-
भयदा'॥ श्येना.प्रवदन्तश्चद्वारेक्रो-
शन्तिजम्बुकादीप्ता:। प्रविशेन्नरेन्द्रभ
वनेकपोतक' कौशिकोयदिवा॥ कु
क्कुटरुतंप्रदोषेहेमन्तादौच कोकि
लालापा। प्रतिलोममण्डलचरा:
श्येनाद्याश्चाम्बरेभयदा:॥ गृहचैत्य-
तोरणेषु द्वारेषुचपक्षिसङ्घसम्पात:।
मधुवल्मीकाम्भोरुहसमुद्भवश्चापिना
शाय॥ श्वभिरस्थिशवावयवप्रवेशनं
मन्दिरेषुमरकाय। पशुशस्त्र्याहा
रेन्वपमृत्युर्मुनिवचश्चेदम्॥ मृग
पक्षिविकारेषु कुर्याद्धोमान्सदक्षि-
णान्। देवा'कपोतइतिचजप्तव्या:प
ञ्चभिर्द्विजै:॥ १॥ सुदेवाइतिचैकेन-
देयागावश्चदक्षिणा:। जपेच्छाकुन
सूक्तं वामनो वेदशिरांसिच॥ २॥
शक्रध्वजेन्द्रकीलस्तम्भद्वारप्रपातभ-
ङ्गेषु। तद्वत्कवाटतोरणकेतूनांनरप
तेर्मरणम्॥ सन्ध्याद्वयस्यदीप्तिर्धूमो
त्पत्तिश्चकाननेनग्नौ। छिद्राभावेभू
मेर्दरणंकम्पश्चभयकारी॥ पाषण्डा
नांनास्तिकानाञ्चभक्त:साध्वाचारप्रो
ज्झित:क्रोधशील:।ईर्ष्य:क्रूरोविग्रहा
सक्तचेतायस्मिन्राज.तस्यदेशस्यना
श:॥ प्रहरहरछिन्धिभिन्धीत्यायुधका
ष्ठाश्मपाणयोबाला:। निगदन्त:प्रह-

उत्पातः

रन्तेतचापिभयं भवत्याशु ॥ अङ्गार गैरिकाद्यैर्विकृतप्रेताभिलेखनं यस्मिन् । नायकश्चिचितमथवाचयेच्च यंयातिनचिरेण ॥ लूतापटाङ्गमवलंनसन्ध्ययोः पूजितं कलहयुक्तम् । निर्व्योच्छिष्टस्त्रीकन्वयन्त्र तत्क्षयं याति ॥ दृष्टेषुयातुधानेषुनिर्दिष्टे न्मरकमाशुसम्प्राप्तम् । प्रतिघाताचैतेषांगर्गःशान्तिञ्चकारेमाम् ॥ महाशान्त्योथवलयो भोज्यानिसुमहान्तिच । कारयेतमहेन्द्रश्चमाहेन्द्रीश्चसमर्चयेत् ॥*॥ अथयत्रकालेउत्पाताद्दृष्टाविफलाभवन्तितत् प्रदर्शनार्थमाह ॥ नरपतिदेशविनाशेकेतोरुदयेथवाग्रहेर्केन्द्वोः । उत्पातानां प्रभवःस्वर्त्तुभवश्चाप्यदोषाय ॥ येच नदोषानजनयन्त्युत्पातास्तान्वृतुस्वभावकृतान । ऋषिपुत्रकृतैःश्लोकैर्विद्यादेतैःसमासोक्तैः॥*॥ तत्रवसन्ते ॥ वज्राशनिमहीकम्पसन्ध्यानिर्घातनिस्वनाः । परिवेशरजोधूमरक्तार्कास्तमयोदयाः ॥ द्रुमेभ्योन्नरसस्नेहबहुपुष्पफलोद्गमाः । गोपक्षिमदवृद्धिश्चशिवायमधुमाधवे ॥*॥ ग्रीष्मे ॥ तारोल्कापातकलुषंकपिलार्केन्दुमण्डलम् । अनग्निज्वलनस्फोटधूमरेणवनिलाहतम् ॥ रक्तपद्मारुणासन्ध्यानभः

उत्पातः

क्षुब्धार्णवोपमम् । सरितांचाम्बुसंशोषंदृष्ट्वाग्रीष्मेशुभंवदेत ॥*॥ वर्षासु ॥ शक्रायुधपरिवेशौविद्युच्छुष्कविरोहणम । कम्पोद्वर्त्तनवैकृत्यंरसनं दरणंक्षितेः ॥ सरोनद्युदपानानांवृद्ध्यूर्द्ध्वतरणप्लवाः । शरणंचाद्रिगेहानांवर्षासुनभयावहम् ॥*॥ शरदि ॥ दिव्यस्त्रीभूतगन्धर्वविमानाद्भुतदर्शनम् । ग्रहनक्षत्रताराणांदर्शनञ्चदिवाम्बरे ॥ गीतवादित्रनिर्घोषा वनपर्वतसानुषु । सस्यवृद्धिरपांहानिरपापाः शरदि स्मृताः ॥*॥ हेमन्ते ॥ शीतानिलतुषारत्वेनर्दनंमृगपक्षिणाम् । रक्षोयक्षादिसत्त्वानांदर्शनंवागमानुषी ॥ दिशोधूमान्धकाराश्च सनभोवनपर्वताः । उच्चैःसूर्योदयास्तौचहेमन्तेशोभनाःस्मृताः ॥*॥ शिशिरे ॥ हिमपाताऽनिलोत्पाताविरूपाद्भुतदर्शनम् । कृष्णाञ्जनाभमाकाशतारोल्कापातपिञ्जरम् ॥ चित्रगर्भोद्भवाः स्त्रीषुगोजाश्वमृगपक्षिषु । पत्राङ्कुरलतानाञ्चविकाराः शिशिरे शुभाः ॥*॥ ऋतुविशेषमाह ॥ ऋतुस्वभावजाह्येतेदृष्टाःस्वर्त्तौशुभप्रदाः । ऋतोरन्यत्रचोत्पातादृष्टास्तेचातिदारुणाः ॥ यद्दिशेषेणफलप्रदंभवतितत्तदाह ॥ उन्मत्तानाञ्चयाः गाथाः शिशूनांभाष

भाषितम् । स्त्रियोयच्चप्रभाषन्तेतस्य नास्तिव्यतिक्रमः ॥ येनकारणेनैतत् सत्यरूपंभवति तत्प्रदर्शनार्थमाह ॥ यदेवंचरतिदेवेषुपश्चाच्चरतिमानुषान् । काचोदितावाग्वदति सत्याह्येषासरस्वती ॥ उत्पातशास्त्रस्य प्रभावमाह ॥ उत्पातान् गणितविवर्जितोपिवृद्धाविख्यातो भवतिनरेन्द्रवल्लभश्च । एतत् तन्मुनिवचनंरहस्य मुत्तमंयज्ज्ञात्वा भवतिनरस्त्रिकालदर्शी ॥ इतिबाराह्यांचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥ अकस्मादायाति ॥ उत्पतनम् । पत्लृगतौ । घञ् । उत्पतति वा । ज्वलतीतिवा ॥

उत्पात भयम् । न । यस्मिन्नवनेउत्पातः सम्भूतस्तस्मिन् ॥

उत्पादः । पुं । उत्पादने ॥

उत्पादकः । पुं । पशुविशेषे । कुञ्जराराती । शरभे ॥ त्रि । उत्पादयितरि । जनके ॥ उत्पादयति । यदः० । ण्वुल् ॥

उत्पादनम् । न । उत्पन्नकरणे ॥

उत्पादना । स्त्री । क्रियायाम् । भावनायाम ॥

उत्पादशयनः । पुं । स्त्री । टिट्टिभपक्षिणि ॥

उत्पादिका । स्त्री । देहिकानामकीटे ॥ पूतिकायाम् ॥ हिलमोचिकायाम् ॥

उत्पाद्यः । पुं । पुरोडाशादिकर्मविशेषे ॥ त्रि । उत्पादितुंयोग्ये ॥

उत्पाली । स्त्री । आरोग्ये । सुस्थतायाम् ॥

उत्पिञ्जलः । त्रि । भृशमाकुले । स्मृत्पिञ्चे । अतिशयव्याकुले ॥

उत्पित्सुः । त्रि । उत्पतितुमिच्छौ । पततेः सन्नन्तादुप्रत्ययः । सनिमीमेती सादेशः । अभ्लोपोभ्यासस्य ॥

उत्प्रासः । पुं । उप ॥ उत्प्रासनम् । असुक्षेपणे असगतिदीप्त्यादानेषुवा । घञ् ॥

उत्प्रेक्षा । स्त्री । अनवधाने ॥ काव्यालङ्कारविशेषे ॥ यथा । सम्भावनमथोत्प्रेक्षाप्रकृतस्यसमेनयत् । अस्यार्थः । प्रकृतस्य उपमेयस्यसमेन उपमानेन यत्सम्भावनम् मिथ्यात्वेनवर्णनमिति । उदाहरणम् उन्मेषंयोमनसहते जातिवैरी निशाया मिन्दोरिन्दीवरदलदृशा तस्य सौन्दर्यदर्पः । नीतःशान्तिंप्रसभमनया वक्त्रकान्त्ये तिहर्षोल्लग्ना मन्ये ललिततनु ते पादयोः पद्मलक्ष्मीः ॥ लिम्पतीवतमोङ्गानिवर्षतीवाञ्जनंनभः । असत् पुरुषसेवेवदृष्टिर्निष्फलताङ्ग

ता ॥ उत्प्रेक्षणम् । ईषद्दर्शनाक्षन-
योः । गुरोश्चहलः । टाप् ॥

उत्प्रेक्षाव्यञ्जकम् । न । शब्दविशेषे ॥य
था । मन्येशङ्के ध्रुवंनूनंकिवा मायो-
नु वेद्मिच । ननुनानविजानामि उ
त्प्रेक्षाव्यञ्जकानिचेति ॥

उत्प्लवनम् । न । उल्लङ्घने । फलाङ्
ना इतिभाषा ॥

उत्प्लवा । स्त्री । नैाकाप्रभेदे ॥

उत्फालः । पुं । लम्फे ॥

उत्फुल्लः । त्रि । प्रफुल्ले । विकसितेपु
ष्पे । दृशाः [illegible] योन्यविशेषे ॥ उत्ता
ने ॥ न । स्त्रीणांकरणे ॥ उत्फल
ति । निफला० । क्तः । आ
दितश्चेतीडभावः । उत्फुल्लसम्फुल्ल
योरुपसंख्यानमिति निष्ठातस्यल ॥

उत्सः । पुं । प्रस्रवणे । पर्वतात्स्रवज्ज
लप्रपातस्थाने ॥ स्रवज्जले ॥ गिरे
रुपरिनिर्झराद्युत्थाम्बुसङ्घे ॥ उन
त्तिजलेन । उन्दी० । उन्दिगुधिकु
षिभ्यश्चेतिसः । किदित्यनुवृत्तेर्न
लोप ॥

उत्सङ्गः । पुं । अङ्के । क्रोडे ॥ त्रि । अ
सङ्गे ॥

उत्सङ्गवर्त्ती । त्रि । क्रोडस्थिते ॥

उत्सत्तिः । स्त्री । उच्छेदे ॥

उत्सन्नः । त्रि । उन्नते ॥ नष्टे ॥



उत्सर्गः । पुं । सामान्ये । सामान्यवि-
धौ ॥ न्याये ॥ त्यागे ॥ दाने ॥ वर्ज
ने ॥ सान्निककर्त्तव्यक्रियाविशेषे ॥ नी
लोद्वाहादैा ॥ अपानवायोव्यापारे
॥ बाहुल्यहठस्थवलवत्त्वे ॥ उत्सर्ज
नम् उत्सृज्यतेवा । घञ् ॥

उत्सर्जन् । त्रि । शब्दंकुर्वति ॥

उत्सर्जनम् । न । अपवर्जने । विश्रापि
ते । दाने । त्यागे ॥ उत्सृज० ।
ल्युट् ॥

उत्सर्पणम् । न । उल्लङ्घने ॥ उत्क
ष्यपुरतोगमने ॥

उत्सर्पिणी । स्त्री । जिनानांकालचक्रा
ऽवयवे ॥

उत्सर्पितः । त्रि । उपरिभावंप्राप्ते ॥

उत्सर्पी । त्रि । ऊर्द्ध्वप्रसारिणि ॥

उत्सवः । पुं । नियताह्लादजनकव्यापा
रे उपनयनविवाहादैा । महे । उ
द्धवे । उत्सेके ॥ इच्छाप्रसरे ॥ को
पे ॥ उत्सुवति । षूप्रेरणे । पचाद्य-
च ॥ यद्वा । उत्सवनम् । षूप्रसवैश्व
र्ययोः । ऋदोरप् ॥

उत्सवसङ्केतः । पुं । पार्वतीयानांगणे ॥
यथा । गणानुत्सवसङ्केतानजयत्स
सपाण्डव इतिमहाभारतम् ॥

उत्सादनम् । न । समुल्लेखे ॥ उद्वर्त
ने ॥ उद्वर्त्तने ॥ उत्साद्यतेऽनेन । ल्यु

कृ० । ल्युन्त. । ल्युट ॥

उत्सादित । त्रि । कृतोत्सादने । उद्वर्त्तिते । निर्मलीकृतशरीरे ॥

उत्सारकः । पुं । द्वारपाले ॥ त्रि । उत्सारयितरि ॥

उत्सारणम् । न । दूरीकरणे ॥ चालने ॥ स्थानान्तरप्रापणे ॥

उत्सारित । त्रि । अपसारिते ॥

उत्साह. । पुं । उद्यमे । अध्यवसाये । इदमहङ्करिष्याम्येवेतिनिश्चयात्मिकबुद्ध्याधृतिहेतुभूते ॥ कर्त्तव्यार्थेषुस्थेयसिप्रयत्ने । उत्साहोमन्त्रमूलंस्यादितिनीतिविदांमतम् । प्रभुशक्तिर्मन्त्रमूलातस्मादुत्साहवान्भवेत् ॥ ।कोत्तरेषुकार्येषुस्थेयसिप्रयत्ने ॥ सूत्रे ॥ उत्सहनम् उत्सहतेऽनेन वा । षह० । हलश्चेति घञ् ॥ कर्मसुसुकरप्रत्यय इव्यलकारको-भावोवाउत्साहः ॥ सङ्गीतोक्ते ध्रुवकविशेषे ॥

उत्साहवान् । त्रि । उत्साहविशिष्टे । उत्साहिनि ॥ उत्साहोऽस्यास्य । वत्वादिभ्योमतुबन्यतरस्याम् ॥

उत्साहवर्द्धनः । पुं । उद्यमवृद्धौ । वीररसे ॥ उत्साहेन वर्द्धते । वृधु० । अनुदात्तेतश्चहलादेरितियुच् ॥ उत्साहंवर्द्धयतीति वा । ल्युः ॥

उत्साहशक्तिः । स्त्री । राज्ञांशक्तिविशेषे ॥ विक्रमबलमुत्साहशक्तिरित्युक्ते ॥

उत्साही । त्रि । उत्साहवति ॥ बलादिभ्योमतुबन्यतरस्यामिति पक्षे इनि ॥

उत्सिक्तः । त्रि । उद्धते ॥ गर्विते ॥ वर्द्धिते ॥ उद्रिक्ते ॥ उपप्लुते ॥ त्यक्तमर्यादे ॥ उत्पूर्वात् सिच्चेःक्तः ॥ सिक्ते ॥

उत्सिच्यमानः । त्रि । उद्रिच्यमाने । वृद्धिमति ॥

उत्सुकः । त्रि । ईप्सितकर्मोद्युक्ते । इष्टार्थोद्युक्ते ॥ अभ्रममगुरुरागमिष्यतीत्युत्कण्ठाविशिष्टे । उत्कण्ठिते ॥ उत् उद्योगंसुवति सौति सुनोतिवा । षु प्रसवैश्वर्ययोः षुञ्अ० । क्विसंज्ञापूर्वकत्वात् गुणाभावः । क्विपिआगमशास्त्रस्यानित्यत्वात्तुग भावोवा । ततःसंज्ञायांकन् ॥ यद्वा । उत्सुवति । षूप्रेरणे । मितद्र्वादित्वाड्डु. । सत्विति वा । कनि केयइतिह्रस्वः ॥

उत्सूरः पुं । दिनावसाने ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

उत्सृष्ट । त्रि । कृतोत्सर्गे । त्यक्ते । विधूते ॥ यथा । आमंशूद्रस्यपक्वान्नं पक्वमुत्सृष्टमुच्यते इति ॥ उत्सृज्यतेस्म । सृजवि० । क्त. ॥

उत्सेकः। पुं। उत्सेचनेन शोषणे॥ उद्रु
त्यवहिःसेचने॥ उद्रेके॥ उत्सेच-
नम्। षिचक्ष°। घञ्॥

उत्सेचनम्। न। उर्द्ध्वसेके॥

उत्सेधः। पुं। गिरिद्रुमादीनामुन्नतौ।
उच्छ्रये॥ न। शरीरे। संहनने॥
उत्सेधनम् अनेनवा। षिधुग°।
घञ्॥

उत्स्वनः। पुं। उच्चशब्दे। त्रि। तद्वति॥

उद्। अ। प्रकाशे॥ विभागे॥ प्राबल्ये॥
अस्वास्थ्ये॥ शक्त्याम्। प्राधान्ये॥ ब
न्धने॥ भावे॥ मोक्षे॥ लाभे॥ ऊ
र्द्ध्वकर्मणि॥ ऊर्द्ध्वे॥ उत्कर्षे॥ प्राकट्ये
॥ नैकट्ये॥

उदम्। न। जले। जगत्त्रयान्तोदधिस
म्प्लवोदेनारायणस्योदरनाभिना-
लादितिभागवतोक्तेः॥

उदकम्। न। जले। वारिणि॥ उन-
त्ति। उन्दीक्ले°। उदकमित्युणादि
सूत्रेणसाधु॥

उदककुम्भः। पु। उदकुम्भे॥ उदकस्य
कुम्भः॥

उदकपरीक्षा। स्त्री। दिव्यविशेषे॥

उदकलोर्लः। त्रि। जलप्रिये॥

उदकिलः। त्रि। उदकवति॥ उदकम
स्त्यस्य अस्मिन्वा॥ पिच्छादित्वादि
लच्॥

उदकीर्णः। पुं। महाकरञ्जे॥

उदकीर्य्यः। पु। डालकरम्चा डहर
करञ्ज इतिगौडभाषाप्रसिद्धे करञ्ज
विशेषे॥

उदकुम्भः। पुं। जलकलशे॥ उदकस्य
कुम्भः। एकहलादाविन्युदादेशः॥

उदक्तम्। त्रि। कूपादिभ्यउत्थितेजला
दौ॥ उत्पूर्वादञ्चतेःक्तः॥

उदक्या। स्त्री। ऋतुमत्याम। रजस्व
लायाम्॥ उदकमर्हति। संज्ञाया
मितियत्॥ त्रि। जलार्हे॥ दण्डादि
त्वाद्यत्॥

उदगद्रिः। पुं। हिमालयपर्वते॥

उदगयनम्। न। उत्तरायणे। देवानां
दिवसे॥

उदगाहः। पुं। जलावगाहने। उदक
स्यगाहः अवगाहनम्। मन्थौदनेत्या
दिनोदादेशः।

उदग्भूमः। पुं। उत्कृष्टस्थाने। सञ्ज्ञौ
॥ कृष्णोदक्पाण्डुसंख्यापूर्बायाभूमे-
रजिष्यते॥

उदग्रः। त्रि। उच्चे॥ उन्नतमग्रमस्य॥

उदग्रदन्। पुं। उच्चदन्तेहस्तिनि॥ त्रि।
वृहद्दन्तयुक्ते॥ उदग्रौदन्तावस्य।
अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्चेतिद
न्तस्यदतृ॥

उदङ्कः। पुं। चर्ममयेघृतादिपात्रे॥ उ

इच्यते उद्ध्रियतेऽस्मिन् । अच्छु० । उदङ्कोऽनुदकइतिघञ् । तैलोदङ्क घृतोदङ्कः ।

उदक् । अ । उदग्दिग्भवे ॥ उदग्देशे द्भवे ॥ उदक्कालोत्पन्ने ॥ उदीच्यां दिशि उदीच्याःदिशः उदीचीदिग्वा । दिकशब्देभ्य.सप्तमीपञ्चमीप्रथमा भ्योदिग्देशकालेष्वस्ताति: ॥ अञ्चेर्लु गित्यस्तातेर्लुक् । एवंदेशेकालेच ॥

उदङ् । पुं । दिशि ॥ देशे ॥ काले ॥ त्रि । तद्भवे ॥ उत्कृष्टमञ्चति । अच्छु० । ऋत्विगितिक्विन् । नलोप' । नुम् । संयोगान्तलोपः । कुत्वम् ॥

उदज' । पुं । पशुप्रेरणे ॥ उदजनम् । अज० । समुदोरजःपशुष्विप्यप् । अ घञप्रोरितिपर्युदासाद्वीभावोन ॥

उदञ्चनः । पुं । भाण्डे ॥ न । पिधानार्थपात्रे । ढकना ढकनी इतिभाषा ॥ उदञ्चतेऽस्मिन् । अच्छु० । ल्युट् । उदकोदञ्चनम् ॥ ऊर्द्ध्वक्षेपणे ॥

उदञ्चितः । त्रि । ऊर्द्ध्वक्षिप्ते ॥ पूजिते ॥ उतऊर्द्धमञ्चितम् ॥

उदण्डपालः । पुं । मत्स्यविशेषे ॥ सर्पप्रभेदे ॥

उदथा । स्त्री । तैलपिपीलिकायाम् ॥

उदधिः । पुं । समुद्रे ॥ उदकानिधीयन्तेऽत्र । कर्मण्यधिकरणेचेतिधाञःकिः ॥

घटे ॥

उदधिमलः । पु । समुद्रफेने ॥

उदधिमेखला । स्त्री । पृथिव्याम् ॥

उदन्त' । पुं । वार्त्तायाम् । वृत्तान्ते ॥ साधौ ॥ उद्गतोऽन्तोयस्य ॥

उदन्तकः । पुं । उदन्तार्थे ॥ स्वार्थेकन् ॥

उदन्तिका । स्त्री । तृप्तौ ॥

उदन्या । स्त्री । पिपासायाम् ॥ उदन्यति उदकस्येच्छावा । सुपआत्मनःक्यच् । अशनायोदन्येति ईच्छाभाव.क्यचि उदकस्यउदन्भावश्चनिपात्यते। अप्रत्ययादित्य. ॥

उदन्वान् । पु । उदधौ । पारावारे । समुद्रे ॥ उदकानिसन्त्यत्र । उदन्वानुदधौचेत्युदकस्योदन्भावे निपातितो मतुपि ॥ ऋषिविशेषे ॥

उदपान. । पुं । न । कूपे ॥ क्षुद्रजलाशये ॥ उदकंपिबन्त्यस्मिन् । अधिकरणेल्युट् । उदकस्योद' ॥

उदमान. । पुं । आढकस्यपञ्चाशत्तमेभागे ॥ कुल्यास्यादष्टभिर्द्रोणैर्द्रोणपादेनचाढकः । अतोद्विशतिकोभागउदमानउदाहृतइत्युक्ते . ॥

उदमेयः । त्रि । उदकंमेयंयस्यतस्मिन् ॥ उदकस्योद' संज्ञायाम् ॥

उदयः । पुं । पूर्वपर्वते । उदयाचले ॥ उदयाऽचलसम्बन्धे । लग्ने ॥ दैर्यल्लट

श्यते भास्वान् स तेषामुदयः स्मृतः । तिरोधानश्च यत्रैति तद्देवास्तमनं रवेः ॥ नैवास्तमनमर्कस्य नोदयः सर्वदा सतः । उदयास्तमनेनाम दर्शनादर्शने रवेः ॥ उद्यन्ति ग्रहा अस्मात् । इण० । एरच् ॥ वृद्धौ । समुन्नतौ ॥ महिम्नि ॥ उत्पत्तौ ॥

उदयनः । पुं । वत्सराजे । वत्सेशे ॥ अगस्त्ये । घटोद्भवे ॥ कुसुमाञ्जलिग्रन्थकर्त्तरि । उदयनाचार्ये ॥ न । उदये ॥

उदयसन्ध्या । स्त्री । अर्क्कोदयात् प्राक् तर्घटिकात्रये ॥

उदरम् । न । जठरे । तुन्दे । कुक्षौ । नाभिस्तनयोर्मध्यभागे ॥ अन्तःसुषिरे ॥ युधि । रणे ॥ पुं । उदररोगे ॥ उत् ऋणाति । ऋगतौ । अच् ॥ यद्वा । उदृच्छति । उदियर्त्ति वा । ऋगतौ । अच् ॥ यद्वा । दृणाति । दृविदारणे । उद्दृणातेरजलोपूर्वपदान्त्यलोपश्च ॥

उदरग्रन्थिः । पुं । गुल्मरुजि ॥

उदरत्राणम् । न । उदरबन्धवस्त्रादौ । नागोदे । पेटी कमरबन्ध इतिभाषा ॥ उदरस्यत्राणंयेन ॥

उदरथिः । पुं । समुद्रे ॥ वियन्मणौ । सूर्ये ॥ उत्ऋच्छति उदयते वा । ऋ० । उदथसिद्धिरितिगथिन् ॥

उदरपिशाचः । त्रि । सर्वान्नभक्षके । सर्वान्नीने ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

उदरभेदी । त्रि । आत्मघ्नि ॥

उदरम्भरिः । त्रि । स्वोदरमात्रपूरके । आत्मम्भरौ ॥ उदरंबिभर्त्ति इति विग्रहे उदरस्यमुमागमोभृञ इन्प्रत्ययश्चनिपातसिद्धः ॥

उदररोगः । पुं । जठरव्याधिविशेषे । उदरी इतिभाषाप्रसिद्धे ॥

उदरव्याधिः । पुं । उदररोगविशेषे ॥ यथा । कदलीयवक्षारजलपानीयेन प्रसाधितम् । तदास्वादनात्प्रशाम्यन्ति उदरव्याधयोऽखिला इतिगारुडे-१९४ अध्यायः ॥

उदरशाण्डिल्यः । पुं । उपनिषत्प्रसिद्धे अतिधन्वनः शिष्ये ऋषिविशेषे ॥

उदरामयः । पुं । अन्नगन्धौ । अतिसाररोगे ॥

उदरावर्त्तः । पुं । नाभौ । तुन्दकूप्याम् ॥

उदरिकः । त्रि । उदरिले ॥ ठक् ॥

उदरिणी । स्त्री । गर्भवत्याम् ॥

उदरी । त्रि । तुन्दिले । पिचिण्डिले ॥ अतिशयितमुदरमस्य । तुन्दादिभ्य इलच्चेतिचकारादिनिः ॥

उदरिलः । त्रि । वृहत्कुक्षौ । उदरिणि

॥ अतिमथितमुदरमस्य । तुन्दादि भ्यइलजितिइलच ॥

उदर्कः । पुं । एष्यत्कालीनफले । भाविनिकर्मफले ॥ मयनफल इतिप्रसिद्धे मदनवृक्षस्य कण्टके ॥ उदर्च्यते । अर्कस्तवने । घञ् ॥ उदर्च्यते वा । अर्चपूजायाम् । उदच्यतेवा । अञ्चगतौ । घञ् ॥ भविष्यत्काले ॥

उदर्चिः । पुं । अग्नौ ॥ शिवे । हरे ॥ कन्दर्पे । दर्पके ॥ त्रि । उज्ज्वले ॥ उत ऊर्द्ध्वमर्चीरश्मिर्यस्य सः ॥

उदर्दः । पुं । रोगविशेषे ॥ तल्लक्षणम् । वरटीदष्टसंस्थानः शोथःसंजायतेबहिः । सकण्डुस्तोदबहुलश्छर्दिज्वरविदाहवान् ॥ उदर्दमितितंविद्याच्छीतपित्तमथापरे । वाताधिकं शीतपित्तमुदर्दस्त्वकफाधिकमिति ॥

उदलावणिकम् । त्रि । लवणाभ्भसासिद्धेव्यञ्जनादौ ॥

उदवसितम् । न । आलये । भवने । गृहे ॥ उत ऊर्द्ध्वमवसीयते स्म । षोऽन्तकर्मणि षिञ्बन्धने वा । क्तः । द्यतिस्यतीतीत्वम् ॥

उदश्वित् । न । अर्द्धजलयुक्ते घोले ॥ तक्रंह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्द्धाम्बुनिर्जलमित्युक्तेः ॥ छच्छिकायाम् ॥ उदकेनश्वयतिवर्द्धते । टुओश्विगतिवृ

द्ध्योः । क्विप् तुक् । उदकस्योदः संज्ञायाम् । उदश्वितइतिनिर्देशादस्य ससारत्वम् ॥ उदश्वित्कफकृद्बल्यं श्रमघ्नंपरमंमतम् ॥

उदसनम् । न । अपनयने ॥ उत्क्षेपणे ॥

उदस्तः । त्रि । उत्तोलिते ॥ उत्क्षिप्ते ॥

उदाजः । पुं । पशुभिर्यानांप्रेरणे ॥ उदजनम् । अज० । घञ् । अघञपोरित्युक्तेर्वीभावोन ॥

उदात्तः । पुं । स्वरप्रभेदे ॥ उच्चैरुदात्त इतितत्स्वरूपम् । उत् उच्चैरादीयतेस्म । क्तः । अचउपसर्गात्त इतितादेशः ॥ काव्यालङ्कारविशेषे । उदात्तंवस्तुनः सम्पत् । समृद्धिमद्वस्तुवर्णनमुदात्तः । इत्यलङ्कारसूत्रम् ॥ त्रि । दयात्यागादिसम्पन्ने ॥ महति ॥ श्रेष्ठे ॥ दातरि ॥

उदानः । पुं । कण्ठदेशस्थेवायौ । कण्ठस्थानीये ऊर्द्ध्वगमनवत्युत्क्रमणवायौ ॥ अन्दयस्यधर्चक्रनेत्रभागप्रकोपनम् । उद्वेजयति मर्माणि उदानोनाम मारुतः ॥ उदानोत्कण्ठतालुभ्रूमध्यमूर्द्धस्थितोवायुः ॥ ऊर्द्ध्वंन अनिति अनेन । अन० । हलश्चेति घञ् ॥ उदावर्त्तं ॥ भुजङ्गमविशेषे ॥

उदायुधः । त्रि । गृहीतशस्त्रे ॥

उदार: । त्रि । दातरि ॥ महति ॥ दक्षिणे । दक्षिणे । सरले ॥ गम्भीरे ॥ असाधारणे। उत्कृष्टमासमन्तात् राति । रा । आतश्चेतिकः ॥ उदर्यते । ऋगतिप्रापणयोः । कर्मणि घञ् ॥ उदुरेरासमन्तात् ऋच्छति । पचाद्यच् ॥

उदारधी: । त्रि । महाबुद्धौ ॥ उदारा धीर्यस्य ॥

उदावत्सर: । पुं । संवत्सरादिपञ्चान्तर्गतवत्सरविशेषे ॥

उदावर्त्त: । पुं । रोगविशेषे । गुदग्रहे॥ मलमूत्रवायुरोधकरोग इतिस्पष्टार्थः ॥ यतोर्द्धंजायतेवायोरावर्त्तःसचिकित्सकैः । उदावर्त्तइतिप्रोक्तोव्याधिस्तत्रानिलःप्रभुः । अपिच । वातविण्मूत्रजृम्भाश्रुक्षवोद्गारवमीन्द्रियैः। [*] क्षुत्तृष्णोच्छ्वासनिद्राणांधृत्योदावर्त्तसम्भवः ॥ जलावर्त्ते ॥

उदावृत्त: । त्रि । ऊर्द्धंनीते ।

उदास: । पुं । उत्क्षेपे ॥ उद्भावे ।

उदासीन. । त्रि । परतरे । शत्रुमित्रभिन्ने । शत्रुमित्राभ्यांपरस्मिन् राजनि ॥ विजिगीषोःशत्रुमित्रभूमितोव्यवहिते ॥ व्यवहितत्वादेव नोपकारी नाप्यपकारीकेवलमुदासीनइव । इतिभरतः ॥ अनुत्थशुभाशुभे । विवदमानयोरुभयोरप्युपेक्षके । येन कस्यचिन्मित्रादेःपक्षं भजते मध्यस्थे ॥ उदास्ते । आस० । लटःशानच । ईदासइतिईत्वम् ॥ विषयानन्तरो राजाशत्रुर्मित्रमतः परम् । उदासीनः परतरोज्ञेयः कार्यविशारदैः ॥

उदास्थित: । पुं । द्वारपाले । प्रतीहारे ॥ अध्यक्षे । पञ्चवर्गान्तर्गतचारविशेषे । प्रव्रज्यावसिते प्रव्रज्याच्युत.त ते नष्टसन्यासे । प्रव्रज्याच्युतपतितउदास्थितः । तंलोकेषुविदितदोषं प्रज्ञाशौचयुक्तं इत्यर्थिनंसान्त्वा रहसिराजा ब्रूयात् । यस्यदुष्कर्मपश्यसि तत् तदानीमेवमयिवक्तव्यमिति।तच्चवृत्त्युत्पत्तिकर्म्मरस्थापयेत् । प्रचुरसस्योत्पत्तिकर्म्भूम्य.तरञ्च तदुत्थर्थमुपकल्पयेत् । सचान्येषामपिप्रव्रजितानां राजचारकर्मकारिणां ग्रसाच्छादनादिकंदद्यात्॥ २ ॥ उदाङ्पूर्वात् ष्ठाधातोर्गत्यर्थाकर्मकेतिक्तः । द्यतिस्यतीतीत्वम् ॥

उदाहरणम् । न । उपोद्घाते । दृष्टान्ते । एकदेशप्रसिद्ध्याऽशेषप्रसिद्ध्यर्थं यदुदाह्रियतेतस्मिन ॥ उदाङ्पूर्वाद्धरतेर्ल्युट् ॥

उदाहार: । पुं । उपोद्घाते । उदाहृतौ॥ उदाहरणम् । घञ् ॥

[ * सहार्थे त्रितीया । ]

उद्राहृत: । त्रि । उच्चरिते ॥

उदाहृति: । स्त्री । उदाहरणे ॥ उदा
 ङ्पूर्वात् हृञ: स्त्रियांक्तिन् ॥

उदित: । त्रि । उक्ते ॥ उद्यतेस्म । वद-
 व्य० । क्त: । वृट् । वचिस्वपीतिसम्प्र
 सारणम् ॥ उन्नते । उद्गते ॥ यथा ।
 उदिते जगतीनाथे य कुर्याद्दन्तधा
 वनम् । सपापिष्ठ'कथंब्रूते पूजयामि
 जनार्दनमिति । वद्धे ॥ ऊर्जिते ॥
 उद्यतेस्म । दो अ०। क्त: । द्यतिस्यती
 तीत्वम्-॥

उदितोदित' । त्रि । शास्त्रज्ञे ।

उदीची । स्त्री । उत्तरदिशि । उत्उ-
 त्तर मञ्चत्यर्कम् । उत्क्रान्तंद्दृष्टिपथ
 मञ्चतिसूर्येवा । उदईदित्यञ्चेरतई
 कार: । ऋत्विगादिनाक्किन् । उगि
 तश्चेतिङीप ।

उदीचीन: । त्रि । उदग्भवे । उदक् ।
 विभाषाञ्चेरिति ख: ।

उदीच्य: । पुं । शरावत्या पश्चिमोत्तर
 देशे ॥ अथोदीच्यदेशा: । बाह्लीका
 वाटधानाश्चआभीरा: कालतोयका:
 । परन्ध्राश्चैवशूद्राश्च पह्लवाश्चात्मख
 ण्डिका: ॥ गान्धाराजवनाश्चैव सि
 न्धुसौवीरमद्रका: । शकाद्रुह्या.पुलि
 न्दाश्चपारदाहारमूर्त्तिका:॥ रामठा:
 कण्टकाराश्च केकयादेशमानिका: ।



क्षत्रियोपनिवेशाश्च वैश्यशूद्रकुला-
 नि च ॥ आत्रेयोथभरद्वाज'प्रस्थला:
 सदशेरका: । लम्पकास्तलगानाश्चसै
 निका:सहसाक्कुजै: ॥एतेदेशाउदी-
 च्यास्तुपुराणमत्स्यसंज्ञके ॥ न । बा-
 लनामगन्धद्रव्ये । ह्रीबेरे ॥ त्रि । उ
 दग्भवे ॥ उदीचि जाते ॥ उदीच्यां
 भव'जात आगतोवा । द्युप्रागपागु-
 दक्प्रतीचोयत् ॥

उदीरणम् । न । कथने । उच्चारणे ॥

उदीरित: । त्रि । उक्ते ॥ उद्दीपिते ॥ उ
 द्घोषिते ॥ उन्नते ॥ उदीर्यतेस्म ।
 ईर् । क्त: ॥

उदीर्ण: । त्रि । उदारे । महति ॥

उदुत्तम: । त्रि । अतिशयेनोत्तमे ॥ उ
 त्उत्कृष्ट उत्तम: ॥

उदुम्बर: । पुं । जन्तुफलवृक्षे । यज्ञाङ्गे
 । हेमदुग्धे । डुमरइतिभाषा । उ
 दुम्बरोहिमोरूक्षोगुरु: पित्तकफा-
 स्त्रनुत् । मधुरस्तुवरोवर्ण्योव्रणशोध-
 नरोपण: ॥ देहल्याम् । गृहावग्रह
 ण्याम् ॥ षण्डके । नपुंसके ॥ कुष्ठ-
 विशेषे ॥ न । ताम्रे ॥ यथा । यदुदु
 म्बरवर्णानां घटीनां मण्डलं महत् ।
 पीतं नगमयेत्स्वर्गं किन्तत् क्रतुगतं
 नयेदित्ययंश्लोक: सौत्रामणीयागे-
 सुरापानस्य दुष्टत्वमुद्भावयति । तत्र

उदूख | उद्गाता

महाभाष्यकारश्चाह । प्रमत्तगीतए ष: तत्रभवतोयस्त्वप्रमत्तगीतस्तत् प्रमाणमिति । प्रमत्तगीतइति । प्र मादेनविप्रतिपन्नत्वेनगीत इत्यर्थइ तिकैयट: । विप्रतिपन्नत्वेन वेदविष यविप्रतिपत्त्याश्रयत्वेन तत्संस्थि त्यारोप्यदैत्यनाशाय पूज्यस्यापिभग वतईश्वरस्यतथोक्तिरिति सन प्रमा णमितिभाव इतिविवरणकार: ॥ उं ग्रम्भुंइणोति । इन° । संज्ञायांभृ तृवृजीतिखच् । अवर्हिषदितिमुम् । उत्कृष्टम् उम्बरम् । प्रादिसमास: । उल्लङ्घितमम्बरमनेन ॥ उदतिश्ये नाम्बते वा । अविशब्दे । बाहुलका दरन् । पृषोदरादि: ॥ अशीतिरक्ति कापरिमिते । कर्षे ॥

उदुम्बरदला । स्त्री । दन्तीहचे ॥ उदु म्बरस्येवदलान्यस्या: ॥

उदुम्बरपर्णी । स्त्री । दन्तिकौषधौ ॥ उ दुम्बरस्येवपर्णान्यस्या: । पाककर्णेति ङीष् ॥

उदूखलम् । न । तण्डुलादिकण्डनार्थं काष्ठादिनिर्मिते कण्डनसाधने । उ लूखले । उखल इतिभाषा ॥ गुग्गु ले । गुग्गुलौ ॥ ऊर्द्ध्वंखतत्खम् । उ र्द्धं खाति । खा आ° । आतोनुपेति क: । पृषोदरादि: ॥

उदूढ: । त्रि । ऊढे ॥ स्थूले ॥ उदुह्यते स्म । वह° क्त: ॥

उद्गत: । त्रि । उत्पन्ने । उदिते ॥ ऊर्द्ध्वंग ते ॥ उद्वान्ते । छर्दितवस्तुनि ॥ नि स्सृते ॥ यथा । वदनोद्गतावाणी । उ द्गम्यते स्म । गम्लृ° । क्त: ॥

उद्गता । स्त्री । विषमवृत्तविशेषे ॥ स जसादिमेसलघुकेच नसजगुरुकेष्व थोद्गता । अंघ्रिगतभनजलागयुता' त जसाजगौचरणमेकत: पठेत् । इति तल्लक्षणम् ॥

उद्गम: । पुं । आविर्भावे । उदये । ऊर्द्ध्वंगमने ॥ उद्गमनम् । गम्लृ° । ग्रहवृहनिश्चिगमश्चेत्यप् ॥

उद्गमनम् । न । ऊर्द्ध्वंगमने ॥ ल्युट् ॥

उद्गमनीयम् । न । प्रक्षालितांशुक . ध ॥ उद्गम्यते अभिलष्यते । गम्लृ° । अ नीयर् । इयद्रूत्वविवक्षितम् । गृही तवन्युद्गमनीयवस्त्रे । इतिदर्शनात् ॥ त्रि । ऊर्द्ध्वंगम्ये ॥

उद्गरणम् । न । उद्गारे ॥

उद्गाढम् । न । अतिशये । अत्यर्थे ॥ त्रि । अतिशययुक्ते ॥ उद्गाह्यतेस्म । गा ह्रूवि° । क्त: ॥ क्रियाविशेषणत्वे क्लीव त्वम् । द्रव्यविशेषणत्वेतुवाच्यलिङ्ग ता ॥

उद्गाता । पुं । सामवेदज्ञर्त्विजि ॥ उद्गा

वतिसाम । गेयभेदे । ऋनट्टचौशसि खहादिभ्यः संज्ञायामनिटौ ॥

उद्गारः । पुं । उद्वमने ॥ ढकार इतिभाषाप्रसिद्धनागवायोः कर्मणि । कण्ठगर्जने ॥ उद्गरणम् । गॄशब्दे । उदश्रोश्रेरिति घञ् ॥

उद्गारशुद्धिः । पुं । सधूमाम्लोद्गाराभावे ॥

उद्गारशोधनः । पुं । कृष्णजीरके ॥

उद्गिरणम् । न । ऊर्द्धमुखस्य वायोः क्रियायाम् । छर्दौ ॥ टवमउद्गिरणे इतिधातुपाठेन निपातनात् गिरतेः ऋतइत्त्वम् । अन्यथा गुणेसति उद्गरणमिति स्यात् । यद्यप्ययंनिर्देशः आधुनिकः तथासति पृषोदरादित्वंबोध्यम् ॥

उद्गीतम् । त्रि । उच्चैर्गीते ॥

उद्गीतिः । स्त्री । उच्चैर्गाने ॥ आर्याभेदे ॥ यथा । नारायणस्यसन्तत मुद्गीतिः संस्मृतिर्भक्त्या । अर्चायामासक्ति दुस्तरसंसारसागरे तरणिरिति ॥ उदुच्चैर्गीतिः गानम् ॥

उद्गीथः । पुं । प्रणवे ॥ साम्नामुद्गाने ॥ सामविशेषे ॥ पाञ्चभक्तिकस्य साम्नो द्वितीयायां तृतीयायां वा भक्तौ ॥ उद्गीयतेऽसौ । गस्थोदीति थक् ॥

उद्गीर्णः । त्रि । उद्वमिते ॥ भक्षितस्यापकर्षणे ॥

उद्गूर्णः । त्रि । उद्यते । उत्तोलिते । उत्तोल्यधृतेवस्त्रादौ । उद्गूर्यतेस्म । गुरीउद्यमे । क्तः ॥

उद्ग्रन्थः । त्रि । उत्तुङ्गे ॥

उद्ग्रहणम् । न । उद्ग्राहे । ऊर्द्धग्रहणे ॥ उपसंहरणे ॥ उत्ऊर्द्धं ग्रहणम् ।

उद्ग्राहः । पुं । वादप्रभेदे । विचारविचारे ॥ उद्ग्रहणे । ऊर्द्धीकृत्यकस्यचिद्ग्रहणे ॥ उद्ग्रहणम् । ग्रहउपादाने । उदिग्रहइति घञ् ॥

उद्ग्राहमल्लः । त्रि । वादसमर्थे ॥ उद्ग्राहेमल्लइव ॥

उद्ग्राहिणी । स्त्री । पाशाख्यरज्जौ । फाँसा इतिभाषा ॥

उद्ग्राहितः । त्रि । उपन्यस्ते । बद्धे ॥ उद्धीर्णे ॥ ग्राहिते ॥ मच्छायिते ॥

उद्घः । पुं । हस्तपुटे ॥ वह्नौ ॥ श्लाघायाम ॥ उद्धन्यते उत्कृष्टोज्ञायते । हन्तेःकर्मणिअप् टिलोपोघत्वञ्चनिपातनात् ॥ देहजानिले ॥ त्रि । प्रकाण्डे । प्रशस्ते ॥ उद्घन्निनीचताम् । उत्पूर्वाद्धन्तेः सङ्घोद्घौ गणप्रशंसयोरितिनिपातितः । मनुष्योद्घः । मनुष्यरूढिशब्दत्वात् प्रशंसावचनैश्चेतिसमासः । प्रशस्तोमनुष्यइत्यर्थः ॥

उद्घनः । पुं । काष्ठतक्षणसाधने । अधः

काष्ठे ॥ निधायतक्ष्यते यत्रकाष्ठे का ष्ठंसउद्घनः । ऊर्द्धंहन्यते ऽस्मिन् । उ द्घनोऽत्याधानमिति अधिकरणेऽप्॥

उद्घर्षः । पुं । घर्षणे । झामकेन गाचा दिघर्षणे ॥

उद्घर्षणम् । न । झामकेन पादादिगा त्रघर्षणे ॥ इष्टकयोर्द्घर्षणे गुणा. । कण्डुकोठनाशित्वम् त्वग्गताग्निते जनत्वम् । शिरासुखकारकत्वञ्च ॥

उद्घसम् । न । मांसे ॥ इतिहारावली॥

उद्घाट. । पुं । उद्घाटने ॥ गृहविशेषे । चौकीकाघर इतिभाषा ॥

उद्घाटकम् । न । पुं । कूपाज्जलोद्धृत्य र्थयन्त्रविशेषे । घटीयन्त्रे । अरहट इतिभाषा । घिर्नी इतिच ॥

उद्घाटनम् । न । कूपाज्जलोत्तोलनार्थे यन्त्रे। घटीयन्त्रे । अरहटरहँटइतिच भाषा । कूपात्सलिलमुद्घाट्यतेऽ नेनवा । घटसङ्घाते । ग्राह्मनः । ल्युट्॥

उद्घाटितः । चि । अपावृते । कृतोद्घा टने । उघाडाखुलाइतिभाषा॥ गृ हेऽनुद्घाटितद्वारिनाहूतः प्रविशन्न र । वारितार्थप्रवक्तापिपश्चाद्भ्रम्श नंत्यजेदितितन्त्रशास्त्रम् ॥ घटेः क्तः । इट् ॥

उद्घाटिताङ्गः । पुं । मात्रे ॥ चि । अना वृतगात्रे॥उद्घाटितानिअङ्गान्यस्य॥

उद्घातः । पुं । पादस्खलने ॥ समुप क्रमे ॥ पवनाभ्यासयोगायकुम्भकादि न्ये । पवनाभ्यासयोगस्यकालभेदे ॥ नाभिमूलात् प्रेरितस्यवायोर्विवि च्यमानस्यशिरस्यभिहनन मुद्घात इत्युच्यतेसेयंकालपरीक्षा । प्राणेन प्रेर्यमाणेनअपान.पीड्यतेयदि । ग त्वाचोर्द्धंनिवर्त्तेत एतदुद्घातलक्ष णम् । उत्तुङ्गे ॥ मुद्गरे ॥ आरम्भे ॥ ग्रन्थे ॥ ग्रन्थपरिच्छेदे ॥ उत्हनन म् । हन० । घञ् । हनस्तोचिण्णलोः ॥ पाषाणादिभिःप्रतिघाते । ठोकर आखलीत्यादिभाषाप्रसिद्धे ॥ यथा । यथावनुद्घातसुखेन मार्गमितिर घुः ॥

उद्घुष्टः । त्रि । उद्घोषिते । नादिते॥

उद्घोषः । पुं । उद्घोषणे ॥ घुषघुष्टौ । घञ् ॥

उद्घोषितः । त्रि । उद्घुष्टे ।

उद्दंशः । पुं । उत्कुणे । मत्कुणे । कोत्क् कुणे । किटिभे ॥ उत्कृष्टोदंशः ।

उद्दण्डपालः । पुं । सर्प्यविशेषे ॥ मत्स्य प्रभेदे ॥

उद्दन्तुर. । त्रि । उत्तुङ्गे ॥ कराले ॥ उ त्कटदन्ते ॥

उद्दानम् । न । बन्धने ॥ उत्पूर्वात्द्य तेर्भावेल्युट् ॥

उद्दान्तः । त्रि । उत्कृष्टदमिते ॥

उद्दामः । पुं । प्रचेतसि । वरुणे ॥ पञ्चचत्वारिंशदक्षरायांवृत्तौ ॥ त्रि । अप्रतिबद्धे । बन्धरहिते ॥ स्वतन्त्रे ॥ महति ॥ यथा । उद्दामदन्तुरविधुन्तुददन्तघातैः । इतिप्रव्रज्या ॥ गम्भीरे ॥

उद्दामगीः । त्रि । प्रगल्भवाचि ॥

उद्दालः । पुं । बहुवारके । लसोडा इतिभाषा ॥ वनकोद्रवे ॥ उद्दालस्तु भवेदुष्णोग्राहीवातकरोभृशम् ॥ उद्दालयति । दलविशरणे । णिजन्तादच् ॥

उद्दालकः । पुं । वेदादिषुप्रसिद्धे ऋषिविशेषे । श्वेतकेतोःपितरि ॥ बहुवारकवृक्षे ॥ स्वार्थेकः ॥

उद्दालकपुष्पभञ्जिका । स्त्री । क्रीडाविशेषे ॥ यथा । विधिविष्णुमुखामरोदयस्थितिनाशेषुशिवोप्यनीश्वरः । जगदन्वतवत्त्वयउक्रमः क्षणमुद्दालकपुष्पभञ्जिकेति ॥ उद्दालकस्यश्लेष्मातकस्यपुष्पाणिभज्यन्तेयस्यांक्रीडायांसा । संज्ञायामितिण्वुल् ॥ नित्यंक्रीडाजीविकयोरिति षष्ठीसमासः ॥

उद्दिष्टः । त्रि । उपदिष्टे ॥

उद्दीपकः । त्रि । उद्दीपनकर्त्तरि ॥

उद्दीपनम् । न । प्रकाशने ॥ विभावविशेषे ॥

उद्दीपितः । त्रि । प्ररोचिते ॥ व्यक्ते ॥

उद्दीप्तम् । त्रि । अतिप्रकाशिते ॥ उद्दीप्यतेस्म । दीपीदीप्तौ । क्तः ॥

उद्देशः । पुं । अनुसन्धाने । अन्वेषणे ॥ सोपपत्तिकस्वरूपसङ्क्षेपे ॥ कीर्त्तने ॥ यथा । नवने नन्दनोद्देशे नचैत्ररथसंश्रये । इतिरामायणप्रयोगः ॥ उद्दिश्यते । दिशअतिसर्जने । हलश्चेतिघञ् ॥

उद्देशकः । त्रि । उद्देशकर्त्तरि ॥ उदाहरणे ॥

उद्देशतः । अ । एकदेशेन ॥ सार्वविभक्तिकस्तसिल् ॥

उद्देश्यः । त्रि । उद्देष्टव्ये । उद्देशनीये । प्रयोजने ॥ यमुद्दिश्यविधेयस्यप्रवृत्तिर्भवति ॥

उद्देहिका । स्त्री । कीटविशेषे । उपजिह्निकायाम् ॥

उद्योतः । पुं । प्रकाशे ॥ उद्द्योतनम् । द्युत० । घञ् ॥

उद्द्राव । पुं । पलायने । सन्द्रावे ॥ उद्द्रवणम् । द्रुगतौ । उद्दिश्यद्रवतियेनेतिपूद्रुवइति घञ् ॥

उद्धतः । पुं । राजमल्ले ॥ त्रि । चञ्चले । वाक्पाणिपादचापलवति । अविनी

उद्वारः

ते । अत्यान्ते ॥ प्रगल्भे ॥ आदर्ते ॥

उद्धतमनस्कत्वम । न । अभिमाने । गर्वे ॥

उद्धतिः । स्त्री । उन्नतौ ॥

उद्धरणम् । न । उद्धारे । मुक्तौ ॥ वान्ते ॥ उन्मूलने ॥ ऋणशुद्धौ ॥ उन्नये ॥ उद्ध्रियते । उद्धरते ल्युट् भावेवा ॥

उद्धर्षः । पुं । उत्सवे । उद्धर्षयति । हृषु अलीकेणिजन्तः । उद्गतोहर्षोवेति वा । घञ ॥

उद्धर्षणम् । न । रोमाञ्चे ।

उद्धवः । पुं । कृष्णमातुले । कृष्णशिष्ये । वृष्णीनांसम्मतो मन्त्री कृष्णस्यदयितः सखा । शिष्योबृहस्पतेः साक्षादुद्धवोबुद्धिसत्तमइतिश्रीविष्णुभागवतम ॥ उत्सवे । यज्ञे ॥ क्रतुपावके । यज्ञाग्नौ ॥ उद्धुनोति दुःखम् । धूञ कम्पने पचाद्यच् ॥

उद्धानम । न । चुल्लाम् ॥ उद्धीयतेऽत्र । डुधाञ० । ल्युट् ॥ त्रि । उद्गते । वमिते ॥

उद्धारः । पुं । उद्धृतौ । मुक्तौ ॥ यथा । पण्डितोपिहि मूर्खोसौ शक्तिवुक्तोप्यशक्तिकः । यःसंसारात्स्वमात्मानं समुद्धर्तुमिच्छति वह्निपुराणम् ॥ ऋणे ॥ परहस्तगतद्रव्यस्य पुनरादाने ॥ उद्ध्रियते हृञ० । धृञ० वा । कर्मणिघञ ॥

उद्धारणम् । न । उद्धारकरणे ॥

उद्धुरः । त्रि । निर्भरे । दृढे । ऋक्पूरित्यादिनासमासान्तः ॥

उद्धूतः । त्रि । अतिशयिते । उत्थापिते ॥

उद्धूननम् । न । ऊर्द्ध्वप्रक्षेपणे ॥

उद्धूलनम् । न । व्यञ्जनोपकरणभूतेषु चूर्णेषु ॥ यथा । एलालवङ्गकर्पूरकस्तूरीमरिचसैन्धवम् । चूर्णस्योद्धूलनं देयंभोज्येवीरेषुसम्भवे ॥ व्यञ्जनेषु च सर्वेषु शाकजेष्वन्यजेषु च । मांसमत्स्यभवेष्वेवंप्रलेहतलनादिषु ॥ आज्ये दाथवेनपचेत्सेन्हे ततोहिङ्गु इङ्गुदं विधिवेत् । वेसवारं सलवणं चिञ्चातिन्तिडीपि धिर्तं पचेत् ॥ अर्द्धस्विन्नेपि चिपेत्क्रम यथा दाडिमीरसम् । सिद्धेपाकेपदातव्यंचूर्णमुद्धूलनन्ततदिति ॥

उद्धूषणम् । न । रोमाञ्चे ॥ इतिहलायुधः ॥

उद्धृतः । त्रि । उत्क्षिप्ते ॥ परिभुक्तोज्झिते ॥ कृतोद्धरणे । समुद्धृते । उठाया इतिभाषा । पृथक्कृते ॥ उच्छेदिते ॥ उद्ध्रियतेस्म । हृञ० धृञ् वा । क्तः ॥

उद्धृतपाणिः । त्रि । उत्तरीयाद्वहिष्कृतदक्षिणबाहौ ॥ उद्धृतः पाणिर्येन ॥

उद्धृतिः । स्त्री । उद्धारे ॥ धृञ् क्तिन् ।

उद्ध्मानम् । न । चुल्लिभावे । चूल्हा भट्टी इतिभाषा ॥ उत् ध्मायतेऽग्निर नु । ध्माशब्दाग्निसंयोगयोः । ल्युट् ॥

उद्ध्य' । पुं । नदे ॥ उज्झत्युदकम् । उज्झ उत्सर्गे । भिद्योद्ध्यौनदे इति कर्त्तरिक्यप् उज्झेर्धत्वञ्चनिपात्यते ॥

उद्बन्धनम् । न । ऊर्द्ध्वबन्धने । गलेमेरस्सीदेकरखटकमर्नो फांसी इति-भाषा ॥

उद्बुद्धः । त्रि । विकसिते ॥ इतित्रायुधः ॥

उद्बोधः । पुं । किञ्चिद्ज्ञाने ॥

उद्भटः । पुं । कच्छपे ॥ शूर्पे । प्रस्फोटने । छूप इतिभाषा ॥ ग्रन्थादछि-भूतश्लोके ॥ त्रि । श्रेष्ठाशये । महाशये । महात्मनि ॥ प्रवरे ॥

उद्भवः । पुं । जन्मनि । उत्पत्तौ ॥ उत्कर्षेभगवद्विभूतिशब्दिते ॥ उद्भवनम् । उद्भवन्त्यस्मादितिवा । भू० । ऋ-दोरप् ॥ हरौ ॥ प्रपञ्चंप्रत्युपादानकारणत्वात् । उद्गतोभवात् संसारादा । उत्कृष्टंजन्मस्वेच्छयाभजते इति वा ॥

उद्भावनम् । न । कल्पने ॥

उद्भावितः । त्रि । उत्पादिते ॥

उद्भासितः । त्रि । प्रकाशिते ॥

उद्भिज्जः । त्रि । उद्भिद्यजाते । बीजकाण्डप्ररोहिस्थावरमात्रे । भूमिमुद्भिद्यजातेवृक्षगुल्मादौ ॥ यथा । उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्डप्ररोहिणः इतिमनुः ॥ उद्भेदनमुद्भित् । सम्पदादिक्विप् । उद्भिदोजातम् । पञ्चम्यामजाताविति ड' ॥

उद्भिद् । पुं । यागविशेषस्यनाम्नि ॥ उद्भिद्यते पशुफलमनेन यागेनेति-निरुक्तः ॥ त्रि । उद्भिज्जे ॥ तत्पञ्चविधम् । वृक्षगुल्मलतावल्लीभेदात् ॥ भुवमुद्भिनत्ति । भिदिर्वि० । इगुपधेतिकः ॥

उद्भूतम् । त्रि । उत्पन्ने । जाते ॥ उद्भवतिस्म । भू० । क्तः ॥ प्रत्यक्षयोग्ये ॥

उद्भिदम् । त्रि । तरुगुल्मादौ । उद्भिज्जे ॥ न । पांशुलवणे ॥ उद्भिनत्ति । भिदिर्० । इगुपधेतिकः ॥

उद्भूतरूपम् । न । नयनगोचररूपे ॥ यथा । उद्भूतरूपंनयनस्यगोचरोद्रव्याणितद्वन्तिपृथक्त्वसङ्ख्ये । विभागसंयोगपरापरत्वेस्नेहद्रवत्वं परिमाणयुक्तम् ॥ क्रियांजातिंयोग्यवृत्तिंसमवायञ्चतादृशम् । गृह्णातिचक्षुस्सम्बन्धादालोकोद्भूतरूपयोरितिकारिकावली ॥

उद्भेदः । पुं । रोमाञ्चे ॥ उद्भिद्यतेऽ

क्लिन्वा। अकर्त्तरि चेतिघञ्॥ स्फुरणे॥

उद्भ्रमः। पुं। उद्वेजने। उद्वेगे॥ उद्भ्रमणम्। भ्रमु अनवस्थाने। घञ्। नोदात्तोपदेशेति न वृद्धिः॥

उद्भ्रान्तः। त्रि। भ्रमान्विते। भ्रान्तिमापन्ने॥ न। बाहुमुद्यम्य मण्डलाकारेणासङ्ग्भ्रामणे॥

उद्यतः। त्रि। प्रवृत्ते॥ उत्तूर्णे॥ ऊर्द्ध्वीकृते॥ पुं। ग्रन्थपरिच्छेदे॥ उद्यम्यते स्म। यमउप०। क्तः॥

उद्यमः। पुं। उद्योगे। गुरणे॥ उद्यमनम्। यमउपरमे। घञ्। संज्ञापूर्वकत्वाद्वृद्ध्यभावः। अउद्यमइतिनिर्द्देशाद्वा॥

उद्यमनम्। न। उत्क्षेपणे॥

उद्यमितः। त्रि। प्रेरिते॥

उद्यानम्। न। निस्सरणे॥ प्रयोजने॥ आक्रीडे। फलप्रधानैराम्रः सर्वोपभोगयोग्यवने॥ उद्गमे॥ उद्यान्त्यनेन अस्मिन्वा। या प्रापणे। करणेल्युट्॥

उद्यानपालः। पुं। माली इतिख्याते आक्रीडरक्षके॥ उद्यानाध्यक्षे॥

उद्युक्तः। त्रि। उद्यमयुक्ते। उद्योगविशिष्टे। उद्योगिनि॥

उद्योगः। उद्यमे। यत्ने। चेष्टायाम्।

यथा। उद्योगादनिवृत्तस्य सुसहायस्य धीमतः। छायेवानुगता तस्य नित्यं श्रीः सहचारिणीति॥

उद्योगी। त्रि। उद्योगयुक्ते। उद्यमिनि॥ यथा। उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति। दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषइति॥

उद्योजकः। त्रि। प्रवर्त्तके॥

उद्रः। पुं। जलजन्तुविशेषे। अम्बुविडाल ओडविडाल इतिभाषा॥ उनत्ति। उन्दी०। स्फायीतिरक्॥

उद्रङ्कः। पुं।
उद्रङ्गः। पुं। } प्रतिमार्गके। नङ्गे॥

उद्रथः। पुं। रतकीले॥ ताम्रचूडखगे॥

उद्रिक्तः। त्रि। स्पष्टे। स्फुटे॥ उद्रिच्यते स्म। रिच०। क्तः॥

उद्रेकः। पुं। अतिशये। वृद्धौ॥ उपक्रमे॥

उद्रेका। स्त्री। महानिम्बे। डेकवकायन इतिभाषा॥

उद्वत्सरः। पुं। वत्सरे॥

उद्वमनम्। न। उद्गिरणे॥

उद्वर्त्तः। त्रि। अतिरिक्ते। उबरा इति भाषा॥ यथा। उद्वर्त्तोऽक्षिग्रन्थः समधिकफलमाचष्टे॥

उद्वर्त्तनम् । न । उत्पतने । ऊर्द्धगतौ ॥ विलेपने ॥ घर्षणे ॥ उत्सादने । शरीरनिर्मलीकरणगन्धद्रव्यादौ । उवटना इतिभाषा ॥ उद्वर्त्यतेऽनेन । इतुव॰ण्यन्तः । ल्युट् ॥

उद्वर्त्तित. । त्रि । उद्भ्रामिते ॥

उद्वर्द्धनम् । न । अन्तर्हासे ॥

उद्वर्हित: । त्रि । उद्धृते ।

उद्वसन. । त्रि । वासोरहिते ॥

उद्वहः । पुं । पुत्रे ॥ सप्तवाय्वन्तर्गतवायुविशेषे ॥ सप्तप्रवहवायोरूर्द्ध्वेस्थितः ॥ इतिशिरोमणिः ॥ उत्ऊर्द्ध्वन वहति । वहप्रापणे । पचाद्यच् ॥ नायके ॥

उद्वहा । स्त्री । कन्यायाम् । पुत्र्याम् ॥

उद्वान्तः । पुं । निर्मदेगजे ॥ उद्गतंवान्तमन्तर्मदं वमनमस्मात् ॥ त्रि । उद्वमिते । उद्गते । वमिस्वान्त्यक्तोऽग्न्यादौ ॥ उद्वम्यतेस्म । टुवम् उ॰ । क्त ॥

उद्वासनम् । न । वधे । मारणे । वास च्छेदने । चुरादिः । भावे ल्युट् ॥

उद्वाहः । पुं । विवाहे । दारपरिग्रहे । भार्य्यात्वसम्पादकग्रहणे । परिणये ॥ उत्कृष्टंवहनम् । वह॰ । घञ् ॥

उद्वाहनम् । न । विवाहे । रणरणे ॥ द्विगुणाकृते । द्विसीत्ये । द्विवारकृष्टक्षेत्रे ॥

उद्वाहनी । स्त्री । रज्जौ । वराटके । रस्सीइतिभाषा ॥

उद्वाहितः । पुं । परिणीते ॥

उद्वाहिता । स्त्री । परिणीतायाम् ॥ कस्मिकाले आगमोक्तान्यमार्गेण विवाहितागर्हिता भवति । यथा । उद्वाहितापियानारीजानीयात्सातुगर्हितेत्यागमसिद्धान्तः ॥

उद्वाहुः । त्रि । ऊर्द्धवाहुपुरुषे । उद्यतहस्ते ॥ उद्वाहुरिववामनः ॥

उद्विग्नः । त्रि । क्षुभिते । उद्वेगयुक्ते । दु:खपरिहारासमतया व्याकुलचित्ते ॥ भीते । ओविजीभयचलनयोः । क्तः । ओदितश्चेति तस्य न. । श्वीदितइतिनेट् ॥

उद्विग्नमनाः । त्रि । कम्पितहृदये ॥

उद्विवर्हणम् । न । उद्धरणे ॥

उद्वृत्तः । त्रि । उच्छिष्टे । उत्क्षिप्ते ॥ परिभुक्तोज्झिते ॥ दुर्वृत्ते ॥

उद्वेगः । पुं । उद्वेजने । उद्भ्रमे । एकाकीविजने कथंसर्वपरिग्रहशून्योऽस्मिविध्यामीत्येवंविधे व्याकुलताख्ये चित्तवृत्तिविशेषे ॥ विरहजन्येदुःखे ॥ उद्गमने ॥ भये ॥ न । गुवाकफले । सुपारी इतिभाषा ॥ उद्गतोवेगोऽस्मात् ॥ त्रि । स्तिमिते ॥ शीघ्रगामिनि ॥ उद्वाहौ ॥ उद्वेजनम् ।

ग्रोविन्नी० । इन् ॥

उद्वेजनम् । न । उद्वेगे ॥

उद्वेजनीयः । त्रि । उद्वेगकरे ॥

उद्वेल । त्रि । वेलामुल्लङ्घ्यवर्त्तमाने सिन्धौ ॥ उद्गतो वेलाम् । अत्यादय इतिसमासः ॥

उद्वेष्टनम् । न । हस्तपादयोर्ह्टतौ । वाँ जटा सरली इतिभाषा ॥ उन्मुक्तवन्धविश्लेषे ॥

उद्वोढा । पुं । परिणेतरि ॥ कलिकाले आगतोऽन्यमार्गया विवाहंकुर्वाणोगर्हितोभवति । यथा । उद्वोढापि भवेत् पापी संसर्गात् कुलनायिके । वेश्यागमनजंपापं तस्यपुंसोदिनेदिने । इतिमहानिर्वाणतन्त्रम् ॥

उन । त्रि । निकृष्टे ॥

उननुन्नः । त्रि । निकृष्टेन विद्धे ॥

उन्दः । पुं । क्लेदने । आर्द्रीभावे ॥

उन्दनम् । न । क्लेदने ॥

उन्दरु' । पुं । मूषिके ॥ इतिद्विरूपकोष' ॥

उन्दुरः । पुं । मूषिके ॥

उन्दुरुः । पु । आखौ । मूषिके ॥ उनत्ति । उन्दी० । बाहुलकादुरुः ॥

उन्दुरुकर्णी । स्त्री । आखुकर्णीलतायाम् ॥

उन्दूरुः । पुं । मूषके ॥ इतिहेमचन्द्र ॥

उन्नः । त्रि । क्लिन्ने ॥ इत्यपरे॥ उनत्ति स्म । उन्दीक्ले० । कर्त्तरिक्तः । नुदविदेतिमत्वे नत्वम् ॥

उन्नतः । त्रि । उच्चे । प्रांशौ ॥ उन्नमतिस्म । नमप्रह्वत्वे । गत्यर्थेतिक्तः ॥ महति ॥ उन्नताना मनुगमने खलु सम्पदोऽग्रतःस्थाः ॥

उन्नतनाभिः । त्रि । वृद्धनाभौ ॥

उन्नतभूतलम् । न । माले ॥ उन्नतञ्च ततभूतलञ्च ॥ चेन्नमाल्यमालम् ॥

उन्नतानलम् । त्रि । उन्नतनीचस्थानादौ । वन्धुरे ॥ उन्नतञ्चतदानतञ्च ॥

उन्नतिः । स्त्री । उदये ॥ समृद्धौ ॥ गरुडभार्यायाम् ॥

उन्नतीश' । पुं । गरुडे । वैनतेये ॥ समृद्धे ॥

उन्नद्धः । त्रि । उत्कटे ॥ उद्धते ॥

उन्नमितः । त्रि । उत्तोलिते ॥ ऊर्द्धीकृते ॥

उन्नय । पु । कूपादेर्जलादेरुद्धनने ॥ उन्नयनम् । णीञ्० । क्वचिदपवादविषयेप्युत्सर्गोभिनिविशते इत्यचु ॥

उन्नयनम् । न । वितर्के ॥ उन्नये ॥ त्रि । सोमके ॥ णीञ्० । ल्युट् ॥

उन्नसः । त्रि । उन्नतनासिके ॥ उन्नतानासिकाऽस्य । उपसर्गाच्चेतिनसादेशः ॥

उन्मादः । पु । मदच्छन्दे ॥

उन्नाय. । पुं । ऊर्द्ध्वनयने । उन्नये । उ ठाना इतिभाषा ॥ उन्नयनम । स्त्री अ प्रापणे । अयोदेर्निय इतिघञ् ॥

उन्नाहम । न । काञ्जिके ॥

उन्निद्र. । त्रि । उत्फुल्ले । विकसिते । प्रबुद्धे ॥ अप्रमादुद्धे ॥

उन्मज्जक: । पुं । तपोविशेषास्तस्यसंज्ञे तापसविशेषे ॥ कण्ठदघ्नजलेस्थित्वा तप:कुर्वन्प्रवर्त्तते । उन्मज्जक: स-विज्ञेयस्तापसोलोकपूजित: ॥

उन्मत्त' । पुं । धत्तूरे । धूस्तूरे ॥ मुचु कुन्दवृक्षे ॥ त्रि । उन्माद्यति । ग्रहवा ताद्यावेशवति ॥ उन्मादितिक्त । म दीज्जर्षे । । गत्यर्थेति क्त: । नध्या ख्येति न नत्वम ॥ उन्मत्तयतिवा । तत्करोतीतिणिच् । पचाद्यच् ॥

उन्मत्तक: । पुं । तापसान्तरे ॥ उन्नतो मत्तो मत्तस्वंयस्यस: । स्वार्थेक: ॥

उन्मथनम् । त्रि । व्यथके ॥ बाहुल कात्कर्त्तरि ल्युट ॥

उन्मथित । त्रि । उद्घर्षिते ॥

उन्मद. । त्रि । उन्मादविशिष्टे । उन्मदि ष्णौ ॥ उन्नतोमदोहर्षोऽस्य ॥ मद करे । उन्मदयति । पचाद्यच् ॥

उन्मदिष्णु: । त्रि । उन्मादशीले । उन्म त्ते ॥ उन्मदनशील: । मदीहर्षे । अलङ्कृञ्जीतीष्णुच् ॥

उन्मना: । त्रि । उत्के । उत्कण्ठितमन सि ॥ उन्नतंमनोऽस्य ॥

उन्मनी । स्त्री । योगिनोवस्थाविशेषे । यथाहु:पूज्यपादा: । उन्मन्यवस्थाधि गमायविद्वन्नुपायमेकंतवनिर्दिशाम: । पश्यन्नुदासीनतयाप्रपञ्चंसङ्क ल्पमुन्मूलयसावधानइति ॥

उन्मन्य: । पुं । वधे । मारणे ॥

उन्माथ: । पु । कूटयन्त्रे । मृगादिवधोप युक्ते यन्त्रे । आमिषंदत्वावृगपक्षि बन्धनार्थंयत्सन्धानयन्त्रंनिवेश्यते-तस्मिन् ॥ उन्मथ्यतेऽनेन । मथेवि-लोडने । हलश्चेति घञ् ॥ मारणे ॥ घातके ॥ उन्मथनम् । अथहिंसा याम् । घञ् ॥

उन्माद: । पुं । चित्तविभ्रमे ॥ भूताद्या वेशाच्चित्तानवस्थितौ ॥ विरहिणा: कश्चिच्चिदवस्थाविशेषे ॥ वातिकरो गविशेषे । मतिभ्रंशे ॥ मद्यन्त्युद्ध ताद्दोषायस्मादुन्मार्गमाश्रिता' मानसोयमतोव्याधिरुन्मादइतिकी र्त्तित: ॥ उन्मदनम । मदीहर्षे । घञ् ॥

उन्मादक । त्रि । उन्मत्ततजनकेधत्तू रादौ ॥

उन्मादन. । पुं । कामस्यपञ्चवाणान्तर्ग तवाणविशेषे ॥

उन्मादवान् । वि । उन्मत्ते । वातकृत चित्तविभ्रमे ॥ उन्मादोस्यास्ति । मतुप् ॥

उन्मादी । त्रि । उन्मादिष्णौ ॥ उत्पूर्वात्मदेः णमिन्त्यष्टाभ्योघिनुण् ॥

उन्मानम् । न । ऊर्द्धमाने ॥ द्रव्यान्तरपरिच्छिन्नगुरुत्वेन पलादिशब्दवाच्येन पाषाणादिना तुलादावारोपितेन येनसुवर्णादेर्गुरुत्वमुन्मीयते तदूर्द्धारोपणादूर्द्धमानमितिशब्देन विवक्षितं तदुन्मानमिति ऊर्द्धमानं किलोन्मानमितिवार्तिकार्थदीपिकोक्तेः ॥ वैद्यकपरिभाषयातु द्रोणपरिमाणे ॥ सामान्यतो लोकव्यवहारेणतु परिमाणमात्रे ॥

उन्मिषित. । वि । प्रफुल्ले । विकसिते ॥

उन्मीलनम् । न । उन्मेषे । विकासने ॥ उन्मीलनंचित्तकुतूहलानाम् । मीलनिमेषणे ल्युट् ॥

उन्मीलित. । त्रि । प्रस्फुटिते । विकसिते ।

उन्मुखः । वि । उत्पश्ये । ऊर्द्धास्ये ॥ उदूर्द्धंमुखंयस्य ॥ उद्युक्ते ॥

उन्मुद्रः । त्रि । प्रफुल्ले । विकसिते ॥

उन्मूलनम् । न । उत्पाटने ॥ उन्मूलनं पापविनिन्दकानाम् ॥

उन्मूलित । वि । उत्पाटिते । कृतोत्पाटने ॥

उन्मेषः । पुं । चक्षुषोरुन्मीलने ॥ उन्मिषति । मिषस्मेषणे । इगुपधेतिकः ॥

उप । अ । अधिकार्थे ॥ हीनार्थे ॥ आसन्ने । सामीप्ये ॥ सादृश्ये ॥ प्रतियत्ने । गुणाधाने ॥ व्याप्तौ ॥ पूजायाम् ॥ शक्तौ ॥ आरम्भे ॥ दाने ॥ दोषाख्याने ॥ आश्चर्यकरणे ॥ अत्यये ॥ निदर्शने ॥ उद्योगे ॥

उपकण्ठम् । न । ग्रामान्ते । उपशल्ये ॥ अश्वस्य गत्यमगतौ । आस्कन्दिते ॥ कण्ठासन्ने ॥ वि । निकटे । समीपे ॥ उपगतः कण्ठम् । अत्यादय इति समासः । उपगतः कण्ठःसामी[illegible]म्येतिवा ॥

उपकरणम् । न । नृपादीनां छत्रचामरादौ । परिच्छदे ॥ साधनसामग्र्याम् ॥ यथा । भोजनादौ व्यञ्जनादि । पूजायां गन्धादि । रणे शस्त्रादि । मृगबन्धनादौ वागुरादि । एवमन्यदप्यूह्यम् ॥ उपक्रियते । कृ० । ल्युट् ॥

उपकर्त्ता । वि । प्रतिकर्त्तरि ॥ उपकारकारिणि ॥

उपकल्पितः । वि । समर्पिते ॥

उपकारः । पुं । उपकृतौ ॥ विकीर्णकुसुमादिषु ॥ उपकरणम् । कृञ् ।

घञ् ॥

उपकारिका । स्त्री । उपकारकर्त्र्याम् ॥ पिष्टभेदे ॥ सामान्यनृपालये । पटमण्डपादिराजसदने ॥ उपकरोति । ण्वुल् । ह्रस्वम् ॥

उपकारी । त्रि । उपकारकर्त्तरि । उपकारविशिष्टे ॥ उपकारिणि मित्रे वा नोपकुर्यात्कथञ्चन । तं धिगस्तु नरं देवो भवेन्नवृषपङ्क्तिवि ॥ देवो नाश्यं विति संबोध्य च्यवनोक्तिः ॥ मं०दृनिः॥

उपकारी । स्त्री । सामान्यबोधे । पटमण्डपादिराजसदने ॥ उपकारयति । पचाद्यजन्तात् गौरादित्वान् ङीष् ॥

उ॰ र्यः । त्रि । उपकारयोग्ये ॥ कृञोण्यत् ॥

उपकार्या । स्त्री । नृपालये । सामान्यराजगृहे ॥ पटमण्डपादिराजसदने । पटभवने ॥ उपक्रियते । कर्मणि ऋहलोर्ण्यत् । टाप् ॥

उपकुञ्चिः । स्त्री । कृष्णजीरके ॥ कलाजाज्याम् ॥

उपकुञ्चिका । स्त्री । कृष्णजीरके ॥ कलाजाज्याम् ॥ तुल्यायाम् । सूक्ष्मैलायाम् ॥ उपकुञ्चति । कुञ्चकौटिल्ये । ण्वुल् ॥

उपकुर्वाणः । पु । सावधिब्रह्मचर्यवति । स्वाध्यायग्रहणार्थिनि ॥

उपकुल्या । स्त्री । वैदेह्याम् । पिप्पल्याम् ॥ उपकोलति । कुलसंस्त्यानेबन्धुषु च । अघ्न्यादिः ॥ त्रि । कुल्यीमन्ने ॥ उपगता कुल्याम् ॥

उपकूजितम् । त्रि । नादिते । शब्दिते ॥

उपकूपः । पु । कूपसमीपस्थजलाशये । आहावे ॥ उपगतः कूपम् ॥ न । कूपसमीपे ॥

उपकृतिः । स्त्री । उपकारे ॥ उपकरणम् । स्त्रियांक्तिन् ॥

उपकोसलः । पुं । वेदप्रसिद्धे कामलायनर्षौ ॥

उपक्रमः । पुं । उपधायाम् । राज्ञा धर्मार्थकामभयै रमात्यादेः परीक्षणे ॥ उपधाऽमात्यपरीक्षणमितिस्वामी । उत्कोच इतिनव्याः ॥ व्याख्याने । अयमस्योपायः अनेनैतत् सिद्ध्यतीतिज्ञात्वा प्रथमारम्भे ॥ यथा मानन्दस्य प्रथमारम्भः उपक्रमःस्तुः । उपायपूर्वआरम्भे ॥ प्रथमारम्भे ॥ विक्रमे ॥ चिकित्सायाम् ॥ उपक्रमणम् अनेनवा । क्रमु० । भावे घञ् । उपक्रम्यते इतिकर्मणिवा घञ् । नोदात्तोपदेशस्येतिनवृद्धिः ॥

उपक्रमोपसंहारौ । पु । तात्पर्यनिर्णायकषड्विधलिङ्गेषु प्रथमलिङ्गयोः ॥ प्र

करणप्रतिपाद्यस्यार्थस्य तदाद्यन्तयो
रुपपादनमुपक्रमोपसंहारौ । यथा
छान्दोग्यषष्ठप्रपाठके प्रकरणप्रतिपा
द्यस्याद्वितीयवस्तुन' एकमेवाद्विती
यमित्यादौ ऐतदात्म्यमिदंसर्वमि-
त्यन्तेचप्रतिपादनम् ॥ उपक्रमश्च
उपसंहारश्चतौ ॥
उपक्रान्तः । त्रि । तते । विस्तृते ॥
उपक्रोशः । पुं । निन्दायाम् । परीवा
दे ॥ उपक्रोशनम् । क्रुशआह्वाने ।
भावे घञ् ।। न । क्रोशासन्ने ॥
उपक्रोष्टा । पु । स्त्री । गर्दभे ॥ त्रि ।
निन्दके ॥
उपक्लृप्तः । त्रि । विन्यस्ते ॥ उपभोगा
र्थंकृतसंस्कारे ॥ रचिते ॥
उपक्लेशः । पुं । मदादिषु ॥
उपक्कणः । पुं । वीणानिनदे ॥
उपक्वाणः । पुं । वीणायाः क्वणिते ॥
क्वणशब्दे । क्वणोवीणायाञ्चेतिपा-
ञ्चिको घञ् ।
उपचेपणधर्म्मः । पुं । शूद्रस्वामिकामा
न्नस्य पाकार्थं ब्राह्मणगृहेसमर्पणे ॥
इतिशुद्धितत्त्वेकल्पतरुः ।
उपगतः । त्रि । स्वीकृते ॥ आसन्ने ॥
ज्ञाते ॥ उपगम्यतेस्म । गम्लृ० । क्तः
। मासे ॥
उपगतिः । स्त्री । उपाये ॥ उपगम्यते ऽ
नया । गम्लृ० । क्तिन् ॥
उपगमः । पुं । अन्तिकगतौ । समीपग
मने ॥ अङ्गीकारे । उपगमनम् ।
गम्लृ० । ग्रहवृदनिश्चिगमश्च० अप् ॥
उपगीतिः । स्त्री । आर्याप्रभेदः ॥ आर्या
परार्द्धसदृशं प्रथमार्द्धमपीरितयस्या
म् । उपगीतिर्यंप्रवदन्तिच्छितिनायक
सोदिताकविभिः ॥ नवगोपसुन्दरी
णां रासोल्लासेमुरारातिम् । अस्मा
रयदुपगीतिः स्वर्गकुरङ्गीदृशांगी-
तिम् ।
उपगूढः । त्रि । गृहीते ॥ उपगूहने ।
उपगूहनम् । न । आश्लेषे । परिरम्भे ॥
गुहू० । ल्युट् ॥
उपग्रहः । पुं । प्रग्रहे । वन्दिग्रहे
। वन्दीवान् बंदुवा इतिभाषा । व
न्धाम् ॥ उपयोगे ॥ अनुकूलने ॥
अनुकूलवति ॥ सर्वतोभद्रचक्रोक्तो
ल्कादौ ॥ उपगृह्यते । ग्रहउपादा
ने । ग्रहवृद्दिश्चप ।
उपग्रहणम् । न । उपग्रहे ॥
उपग्रामम । अ । ग्रामाधिकरणे । ग्रा
मेइत्यर्थे ॥ ग्रामे इति । विभक्त्यर्थे
व्ययीभावः ॥
उपग्राह्यम् । न । उपायने । उपढौक
ने । भेट इतिभाषा ॥उपगृह्यते ।
ग्रह० । ण्यत् ॥

उपघातः । पुं । रोगे ॥ अपकारे ॥ उपहननम् । उपहन्यतेऽनेन वा भावे करणे वा हन्तेर्घञ् ॥

उपघ्नः । पुं । निकटाश्रये ॥ उपहन्यते उपहननं वा । उपघ्न आश्रय इति साधुः ॥

उपचक्रः । पुं । चक्रवाकप्रभेदे ॥

उपचयः । पुं । उन्नतौ । वृद्धौ ॥ अरिस्थानभद्वृश्चिक्यरंध्रककुम्भेषु । नचेद्भवन्तितेदृष्टाः पापस्वस्वामिशत्रुभिः ॥ उपचयनम् । चिञ् । एरच् ॥

उपचरितः । त्रि । उपासिते । शुश्रूषिते । सेविते ॥ उपचर्यतेस्म । चर० । क्तः ॥

उपचर्य्यः । त्रि । उपचरणीये ॥

उपचर्य्या । स्त्री । चिकित्सायाम् ॥ उपसमीपे चर्य्या ॥

उपचाय्यः । पुं । यज्ञाग्नौ ॥ अग्निधारणार्थस्थलविशेषे ॥ उपचीयते अग्निधारणार्थमिष्टकाचयनेन निर्मितं स्थण्डिलं तस्मिन्नभिधेये उपपूर्वाच्चिनोतेः अग्नौपरिचाय्योपचाय्यसमूह्या इतिण्यदायादेशौ निपात्येते ॥

उपचारः । पुं । रुक्प्रतिक्रियायाम् । निग्रहे । रोगप्रतीकारे । चिकित्सायाम् ॥ सेवायाम् ॥ व्यवहारे ॥ उत्कोचे ॥ पूजाद्रव्ये ॥ उपचर्य्यते उपचर्यते वा । चर० । घञ् ॥

उपचारच्छलम् । न । धर्मविकल्पनिर्देशेऽर्थसद्भावप्रतिषेधे ॥ तथाहि । धर्मशब्दस्यार्थेनसम्बन्धः तस्य विकल्पो विविधः कल्पः शक्तिलक्षणान्यतररूपः । तथाचशक्तिलक्षणयोरेकतरवृत्त्याप्रयुक्ते शब्दे तदपरवृत्त्यायःप्रतिषेधः सउपचारच्छलम् । यथा । मञ्चाः क्रोशन्ति नीलोघट इत्यादौ मञ्चस्था एवक्रोशन्ति नतु मञ्चाः एवंघटस्य कथंनीलरूपाभेद । एवमहंनित्य इतिशक्त्याप्रयुक्ते अमुकस्मादुत्पन्नस्त्वंकथंनित्य इतिप्रतिषेधोप्युपचारच्छलम् । वाद्यभिप्रेतार्थस्यादूषणेन छलस्यासदुत्तरत्वम् । नचश्लिष्टलाक्षणिके प्रयोगाद्वादिन अपराधःस्यादितिवाच्यम । तत्तदर्थबोधकतयाप्रसिद्धस्य शब्दस्य प्रयोगे वादिनोऽनपराधात् । अन्यथापर्वतो वह्निमानित्युक्ते पर्वतोयं कथमवह्निमानित्यादिदूषणेनानुमानाद्युच्छेदः स्यात् ॥

उपचार्य्यः । पुं । चिकित्सायाम । रोगप्रतीकारे ॥

उपचितः । त्रि । दग्धे ॥ समृद्धे ॥ समाचिते ॥ निदिग्धे । लेपादिनावर्द्धिते ॥ पुष्टे ॥ सञ्चिते ॥ उपचीयतेस्म ।

चित्र॰ । क्तः ॥

उपचितिः । स्त्री । पूजायाम् ॥

उपचित्रम् । न । एकादशाक्षरवृत्तवि-
शेषे ॥ यथा । मुरवैरिवपुस्तनुतां-
मुदं हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम् ।
गगनंचपलामिलितं यथा शारदनी
रधरै रुपचित्रमिति ॥

उपचित्रा । स्त्री । मूषिकपर्ण्याम् ॥ द
न्तीदृक्षे ॥ स्वातीनक्षत्रे ॥ उपगता
चित्राम् ॥

उपच्छन्नः । त्रि । गूढे ॥

उपजनः । पुं । नानाविधदेहभेदसङ्ग्र-
हे ॥ समीपजने ॥ उपसमीपेजनः ॥

उपजप्यः । पुं । उपजापार्हे ॥ रिपुवंश्या
राज्यार्थिनः क्रुद्धामात्याश्चोपजापा
र्हाभवन्ति ॥

उपजातिः । स्त्री । वर्णवृत्तप्रभेदे ॥ य-
था उपेन्द्रवज्रापदसङ्गतानि यदी
न्द्रवज्राचरणानिसन्ति । तदोपजा
तिःकथिताकवीन्द्रैर्भेदाभवन्तीह च
तुर्दशास्याइति ॥

उपजापः । पुं । खलादीनांमिथोभेद
कभाषिते । भेदे । विच्छेदे ॥ उपां
शुजपनम । जपव्यक्तायांवाचि । ज
पमानसेच । घञ् ॥

उपजापसह. । त्रि । भेदयोग्ये ॥ सह
ते । पञ्चमर्षणे । पचाद्यच् । उपजापे
सहः ॥

उपजिह्वा । स्त्री । कीटविशेषे । वल्म्या-
म् ॥ दीमक सीअक इतिचभाषा ॥
इतिहेमचन्द्रः ॥

उपजिह्विका । स्त्री । प्रतिजिह्वायाम् ।
घण्टिकायाम् ॥ कीटविशेषे । उत्पा
दिकायाम् ॥

उपजीविका । स्त्री । उपजीव्ये । जीव-
नोपाये ॥ उपजीव्यतेऽनया । जीव
प्रा॰ । गुरोश्चेत्यः । संज्ञायांकन् कु
न्वा ॥

उपजीवी । त्रि । आश्रिते ॥

उपजीव्यम् । न । उपजीविकायाम् ॥

उपजोषम् । अ । आनन्दे । सुखे ॥ क
ल्याणार्थे ॥ उपजोषणम् । जुषी प्री
तिसेवनयोः ॥ अमप्रत्ययः ॥ यथा
कर्मभोगमित्यर्थे ॥

उपजोषणम् । न । सेवने ॥

उपज्ञा । स्त्री । आद्यज्ञाने ॥ यथापाणि
नेर्व्याकरणस्य वाल्मीकेःश्लोकनिर्मा
णस्य । उपज्ञायते । ज्ञाअवबोधने ।
आतश्चोपसर्ग इतिकर्मण्यङ् । उप
ज्ञानंवा ॥ विनोपदेशेनाद्यज्ञाने ॥

उपज्ञातः । त्रि । विनोपदेशेनज्ञाते ॥

उपढौकनम । न । पारितोषिकद्रव्ये ।
उपहारे । उपायने ॥

उपतन्त्रम् । न । शास्त्रविशेषे ॥ यथा ।

वैद्दोक्तान्युपतन्त्राणि कापिलोक्तानि यानिच । अद्भुतानिचतन्त्राणिजैमिन्युक्तानियानिच । वशिष्ठ.कपिलश्चैवनारदोगर्गएवच । पुलस्त्यो भार्गवः सिद्दोयाज्ञवल्क्यो भृगुस्तथा ॥ शुक्रोवृहस्पतिश्चैव अन्ये ये मुनिसत्तमाः । एभिः प्रणीतान्यन्यानि उपतन्त्राणियानिच ॥ नसङ्ख्यातानितान्यत्र धर्मविद्भिर्महात्मभिः । सारात्सारतराण्येव सङ्ख्यातानिनिवोधतेति वाराहीतन्त्रम् ॥

उपतपनम् । न । सन्तापकरे ॥ तपसन्तापे । करणे ल्युट् ॥

उपतप्ता । पुं । उपतापकमाचे । स्पष्टरि उपतपति । तप० । तृच । उपतपनम् । कृत्यल्युटोवहुलमितिभावे तृच्चा ॥

उपतापः । पु । त्वरायाम् ॥ उत्तापे ॥ उपघाते । गदे ॥ इष्टवियोगादिना मानसपीडायाम् ॥ उपतापयति । तपदाहे । चुरादि । अच् ॥ उपतपनं वा । तपसन्तापे । घञ् । यथा । परोपतापनंकर्म नकर्त्तव्यंकदाचन । नसुखंविन्दतेप्राणी परपीडापरायणइति ॥

उपतापी । त्रि । ज्वराद्युपतापवति ॥ म० इनिः ॥

उपत्यका । स्त्री । अद्रेरासन्नायांभूमौ ॥ तराई इति तलहटी दूण इतिचभाषा ॥उपासन्ना । उपाधिभ्यांत्यकन्नासन्नारूढयोरिति त्यकन् । त्यकनश्चनिषेधइतीत्वाभावः ॥

उपदंशः । पुं । अवदंशे । मद्यपानरोचके भक्ष्यद्रव्ये ॥ मेढ्ररोगविशेषे ॥ तस्यनिदानम् । हस्ताभिघातान्नखदन्तघाताद्धावनादत्युपसेवनाद्वा । योनिप्रदेषाच्चभवन्तिशिश्ने पञ्चोपदंशाविविधापचारैरिति ॥ समष्ठिलदृचे । शिग्रुवृचे ॥ दंशने ॥ उपदश्यते । दंशदशने । कर्मणिभावे वाघञ् ॥

उपदर्शकः । पुं । द्वारपाले ॥ द्रष्टयितरि ॥

उपदा । स्त्री । उत्कोचे ॥ उपायने ॥ उपदीयते । डुदाञ्० आतश्चोपसर्गइत्यङ् ॥

उपदानम् । न । उत्कोचे ॥ उपायने ॥ उपदीयते । डुदाञ्० । ल्युट् ॥

उपदानकम् । न । उपदाने ॥ स्वार्थेकः ॥

उपदिका । स्त्री । वम्याम ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥

उपदिष्ट. । त्रि । देशिते । प्राप्तोपदेशे ॥ उक्ते ॥ उपदिश्यते । दिशअतिसर्जने । क्तः ।

उपदी । स्त्री । वन्दायाम् । वन्दाके ।

उपदेशः । पुं । अनुशासने ॥ चोदनायाम् । प्रवर्त्तकवाक्ये ॥ हितकथने ॥ मन्त्रकथने । दीक्षायाम् ॥ यथा । चन्द्रसूर्य्यग्रहे तीर्थे सिद्धक्षेत्रे शिवालये । मन्त्रमात्रप्रकथनमुपदेशः स उच्यते इतिरामार्चनचन्द्रिका ॥ गुरुसम्प्रदाये ॥ यत्रापेक्षितस्यार्थजातस्य प्रतिपादकोग्रन्थसन्दर्भः पठ्यते स उपदेशः ॥ उपदेशनम् । दिश० । घञ् ॥ साधनहीनायोपदेशोनिरर्थकः ॥

उपदेष्टा । पुं । उपदेशकर्त्तरि । आचार्ये ॥ उपदिशति । दिश० । तृच् ॥ आचार्यद्वारा आत्मसुखोपदेशके चिद्रूपे ॥

उपदेहः । पुं । वृद्धौ ॥

उपदेहिका । स्त्री । कीटविशेषे । उपजिह्वायाम् । दीमक इतिभाषा ॥

उपद्रवः । पुं । उत्पाते ॥ रोगारम्भकदोषप्रकोपजन्येऽन्यस्मिन् विकारे ॥ यथा । योव्याधिस्तस्ययोहेतुर्दोषस्तस्यप्रकोपतः । योन्योविकारो भवति सउपद्रवउच्यते ॥ उपद्रवणम् । द्रुग । ऋदोरप् ॥

उपद्रष्टा । त्रि । उपदर्शके । उदासीनबोधस्वरूपत्वेन गुणप्रचारदर्शिनि ॥ देहचक्षुर्मनोबुद्ध्यात्मसु द्रष्टृसुमध्ये बाह्यान्देहादीनपेक्ष्याऽत्यन्तव्यवहिते द्रष्ट्रात्मनि पुरुषे । साक्षिपुरुषे ॥ यथा । ऋत्विग्यजमानेषु यजनकर्मव्यापृतेषु तत्समीपस्थोऽन्यः स्वयमव्यापृतो यज्ञविद्याकुशलत्वात् ऋत्विग्यजमानव्यापारगुणदोषाणामीक्षिता तद्वत् कार्यकरणव्यापारेषु स्वयमव्यापृतो विलक्षणस्तेषांकार्यकरणानां सव्यापाराणां समीपस्थाद्रष्टा उपद्रष्टा साक्षिपूरुषः ॥ उपपश्यति । दृशिर्० । बाहुलकात तृन् ॥

उपद्रुतः । त्रि । व्याकुले ॥

उपधर्म्मः । पुं । पाषण्डे ॥ इतिश्रीभागवतम् ॥

उपधा । अ । भेदे ॥

उपधा । स्त्री । पदोपान्त्यवर्णे ॥ धर्माद्यैः परीक्षणे । राज्ञा धर्मार्थकामभयोपन्यासेन अमात्यादीनामाशयान्वेषणे । यथोक्तं कालिकापुराणे । धर्मार्थकाममोक्षैश्चप्रत्येकं परिशोधनैः । उपेत्यधीयतेयस्मादुपधापरिकीर्त्तिता ॥ अर्थकामोपधाभ्योतु भार्याः पुत्रांस्तुशोधयेत् । धर्मोपधाभिर्विप्रांस्तु सर्वाभिः सचिवान पुनरिति ॥ उपधीयते शुद्धिज्ञानमत्र । डुधाञ्० । आतश्चोपसर्गइत्यङ् । टाप् ॥ ॥

उपधातुः । पुं । अष्टप्रधानधातुसदृषेषु स्वर्णमाक्षिकादिसप्तसु ॥ यथा । सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् । तुत्थं कांस्यञ्चरी तिश्च सिन्दूरञ्च शिलाजतु ॥ उपधातुषु सर्वेषु तद्धातुगुणा अपि । सन्ति किन्त्वेषु ते गौणास्तत्तद्यांशभावतइति ॥ शरीरस्थधातुभवोपधातवश्च सप्त । यथा । रसात् स्तनदुग्धम् १ । रक्तात् क्षीरज २ । मांसात् वसा ३ । मेदसो घर्मः ४ । अस्थ्नोदन्त. ५ । मज्जनः केशः ६ । शुक्रात् ओज. ७ इति वैद्या. ॥

उपधानम् । न । विषे ॥ गण्डौ । उप ै । सिराहना इति भाषा ॥ प्रणये ॥ व्रते ॥ उपधीयते आरोप्यते शिरोऽत्र । डुधाञ० । करणेतिल्युट् ॥ विशेषे ॥

उपधानीयम् । न । उपबर्हे । शिरोधाने ॥

उपधिः । पुं । कपटे । व्याजे ॥ रथचक्रे ॥ उपधीयते आरोप्यतेऽनेन । डुधाञ० । उपसर्गे घोः किः ॥

उपधूपितः । त्रि । आसन्नमरणे ॥ परिधूपिते ॥

उपधृति' । स्त्री । किरणे ॥

उपध्मानीय. । पुं । पफयोः पूर्वमर्द्धविसर्गसदृशे विसर्गविशेषे ॥

उपनत. । त्रि । उपस्थिते ॥ प्राप्ते ॥

उपनयः । पुं । उपनयने ॥ यथा । गृह्योक्तकर्मणा येन समीपं नीयते गुरोः । बालो वेदाय तद्योगाद्बालस्योपनयं विदुरिति स्मृतिः ॥ न्यायविशेषे ऽथ । उदाहरणापेक्षस्तथेत्युपसंहारो नतथेतिवा साध्यस्योपनयः ॥ गौ० सू० १ । ३७ साध्यस्यपक्षस्य उदाहरणापेक्षउदाहरणानुसारी य उपसंहार. उपन्यास. प्रकृतोदाहरणोपदर्शितव्याप्तिविशिष्टहेतुविशिष्टपक्षविशिष्टबोधजनकोपायावयवइत्यर्थः । निगमनं हेतुविशिष्टत्वेन नपंचबोधकम् किन्तुपक्षवृत्तिहेतुबोधकमिति तद्व्युदासः । अत्रच अन्वयव्यतिरेकव्याप्त्योरन्यतरत्वादिनानुगमं' कार्य. उदाहरणोपदर्शितेतितुपरिचायकमात्रमितितु नवाच्यम् । उदाहरणविपरीतव्याप्त्युपदर्शकोपनयवारकत्वात् । वस्तुतोऽवयवभेदेनैव तद्व्युदासः । सचोपनयो द्विविधोऽन्वयिव्यतिरेकिभेदात् । तथेतिसाध्यस्योपसंहारोन्वय्युपनयः । नतथेतिसाध्यस्योपसंहारो व्यतिरेक्युपनयः । अत्र च तथाशब्दप्रयोगावश्यकत्वे न तात्पर्यम् किन्तुव्याप्तिविशिष्टवत्त्वबोधे-

। तथाचवह्निश्याप्यधूमवाँश्चायमि
तिवातथाचायमितिवोपन्यासः। एवं
व्यतिरेकिण्यपि वह्न्यभावव्यापकी
भूताभावप्रतियोगिधूमवांश्चायमि-
तिवा नतथेतिवोपन्यासः ॥

उपनयनम् । न । आम्नायैर्वटुकृत्यायाम् । ब्राह्मणक्षत्रियविशां यज्ञसूत्र
धारणादिरूपप्रधानसंस्कारे । व्रतव
न्धे। अध्ययनार्थमाचार्यस्य उपसमी
पंनीयते येनकर्मणातस्मिन् ॥ णी
ञोल्युट् ॥ पादयोर्निपतने ॥ प्रापणे ॥

उपनागरिका । स्त्री । वृत्त्यनुप्रासघट-
कवृत्तिप्रभेदे ॥ माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैरु
पनागरिकेष्यते ॥ उदाहरणम् । अ
पसारय घनसारं कुरुहारंदूरएवकिं
कमलैः । अलमलमालिमृणालैरि
तिवदतिदिवानिशंबालेति ॥ वैद
र्भीरीतौ ॥

उपनायः । पुं । उपनयने ॥

उपनायनम् । न । उपनयने ॥ उपनय
नमेव । अन्येषामपिदृश्यत इतिदी
र्घः ॥

उपनाहः । पुं । व्रणलेपनपिण्डे । प्र
लेपइतिभाषा ॥ वीणायां यत्रतन्त्री
निबध्यते तस्योर्द्ध्वभागे । निबन्धने
॥ वीणादितन्त्रबन्धनस्थाने ॥ उपन
ह्यतेस्मिन् । णह॰ । हलश्चेति-
घञ् ॥

उपनिधिः । पुं । विन्यासः। निवस्तुनि ।
उपन्यस्तवस्तुनि । न्यासे । वासन
स्थमनाख्याय हस्ते न्यस्ययदर्पितम्
। द्रव्यमुपनिधिः प्रोक्तः स्मृतिषुस्मृ
तिवेदिभिः ॥ उपनिधीयते । डुधा
ञ्॰ । उपसर्गेघोःकिः ॥

उपनिषत् । स्त्री । वेदशिरोभागे ॥ त
त्राशीतिसहितशताधिकसहस्रस -
ङ्ख्याका उपनिषदश्चतुर्णां वेदाना
म् । तथाहि । ऋचएकविंशतिः । यजु
षोनवाधिकशतम् । साम्नःसहस्रम् ।
पञ्चाशदुपनिषदोऽथर्वणस्य ॥ ब्रह्म-
विद्यायाम् । ब्रह्मात्मैक्यसाक्षात्कारे
॥ यथाहुः । अत्रचोपनिषच्छब्दस्य
विद्यैकगोचरः । तच्छब्दावयवार्थस्य
विद्यायामेव सम्भवात् ॥ उपोपसर्गः
सामीप्ये तत्प्रतीचिसमाप्यते । सा
मीप्यतारतम्यस्यविश्रान्तेः स्वात्मनो
क्षणात् ॥ त्रिविधस्यसदर्थस्य निशब्दो
पिविशेषणम् । उपनीयत मात्मानं
ब्रह्मापास्तद्वयंयतः ॥ निहन्त्यविद्यां-
तज्जञ्चतस्मादुपनिषद्भवेत् । निह-
त्यानर्थमूलंस्वाविद्यां प्रत्यक्तयापर
म ॥ गमयत्यस्तसम्भेदमतोवोपनि-
षद्भवेत् ॥ प्रवृत्तिहेतून्निःशेषांस्तन्मू
लोच्छेदकत्वतः । यतोऽवसादयेद्वि

ष्यातस्मात् पनिषद्भवेत् ॥ यथोक्ताविष्याहेतुर्ब्राह्मण्योपितद्भेदतः। भवेदुपनिषन्नाम्ना ब्राह्मणं जीवनं यथेति ॥ उपनिषदनम् उपनिषीदति श्रेयोऽस्यां वा । षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु । सं० क्विप् सत्सूद्विष इतिषा- । सदिरप्रतेरितिषः ॥ धर्म्मे ॥ निर्जनस्थाने । रहसि ॥ समीपसदने ॥ व्रतविशेषे ॥ रहस्यग्रन्थे पुराणोपनिषदादौ ॥

उपनिष्करम् । न । महति राजमार्गे । पुरस्यघण्टापथे ॥ उपनिष्किरन्तिसैन्यान्यत्र । कृविक्षेपे । घः ऋदोरपतुन । अपोवाधकस्ल्युटोपि घस्याऽपवादत ॥ यद्वा । उपनिष्कीर्यते सैन्यैर्हन्यते । कृहिंसायाम् । कर्मण्यप् । ऋदुदुपधश्चेति षः ॥

उपनिष्क्रमणम् । न । निष्क्रमणाख्यसंस्कारे ॥ प्रधानमार्गे । राजपथे ॥ उपनिष्पूर्वात् क्रमे र्ल्युट ॥

उपनिहित. । त्रि । निक्षिप्ते ॥

उपनीत' । पुं । कृतोपनयने ॥ त्रि । प्रापिते ॥ समर्पिते ॥ उपपूर्वान्नयतेः क्तः ॥

उपनेत्रम् । अ । स्फटिकादिनिर्मितेनेत्रोपकारके ॥ नेत्रयोः समीपम् ॥

उपन्यस्तः । त्रि । समर्पिते ॥

उपन्यासः । पुं । वाङ्मुखे । वाक्योपक्रमे ॥ उपन्यसनम् । असुक्षेपणे । घञ् ।

उपपति. । पुं । जारे ॥ उपमितःपत्या । अव्याद्य'क्रुष्टाद्यर्थे तृतीययेतिसमास. । उपसृष्टः पतिरनेनवा । प्रादिभ्योधातुजस्यवाच्योवाचोत्तरपदलोपश्चेतिसमासः ॥

उपपत्ति' । स्त्री । सङ्गतौ ॥ समाधाने । सिद्धान्ते ॥ अनुग्राहिकायांयुक्तौ । युक्तौ ॥ षड्विधलिङ्गेषुषष्ठलिङ्गे ॥ यथा । प्रकरणप्रतिपाद्यार्थसाधने तत्र श्रूयमाणायुक्तिरुपपत्ति. । यथा । छान्दोग्येषष्ठप्रपाठके यथासोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वंमृन्मयं विज्ञातंस्यात् वाचारम्भणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येवसत्यमित्यादावद्वितीयवस्तुसाधने विकारस्य वाचारम्भणमात्रत्वयुक्तिःश्रूयते ॥ उपपदनम् । पदगतौ । स्त्रियांक्तिन् ॥

उपपत्तिमत् । त्रि । युक्तियुक्ते ॥

उपपदम् । न । पदस्यसमीपपदे । समीपोच्चारितेपदे । व्यावर्त्तके ॥ यथानामोत्तरे शर्म्मवर्म्मादि ॥ लेशे ॥ समभिव्याहृतस्वार्थपोषकपदे ॥ यथा प्रह्लादौ प्रादि ॥ उपोच्चारितं पदम् ॥

उपपन्नः । त्रि । अर्हे ॥ युक्ते । सङ्गते ॥

उपपातकम् । न । पापविशेषे ॥ यथा ॥

उपपा

मनु । गोवधोऽयाज्यसंयाज्यपार-
दार्यात्मविक्रया. । गुरुमातृपितृ
त्यागः स्वाध्यायाग्न्योःसुतस्य च ॥
परिवित्तितानुजेनोढे परिवेदनमे
व च-। तयोर्दानञ्च कन्यायास्तयोरेव
च याजनम् । कन्याया दूषणञ्चैव वा
र्द्धुष्यं व्रतलोपनम् । तडागारामदा
राणामपत्यस्य च विक्रयः ॥ व्रात्यता
बान्धवत्यागो भृत्याध्यापनमेव च ।
भृताच्चाध्ययनादान मपण्यानाञ्च-
विक्रयः ॥ सर्वाकरेष्वधीकारो महा
यन्त्रप्रवर्त्तनम् । हिंसौषधीनां स्त्र्या
जीवो ऽभिचारो मूलकर्म च ॥ इन्ध
नार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम्
। आत्मार्थञ्च क्रियारम्भो निन्दिता
न्नादनं तथा ॥ अनाहिताग्निता स्तेय
मृणानामनपक्रिया । असच्छास्त्राधि
गमनं कौशीलव्यस्य च क्रिया ॥ धा
न्यकुप्यपशुस्तेयं मद्यपस्त्रीनिषेवण
म् । स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधो नास्ति
क्यञ्चोपपातकमिति ॥ अस्यार्थः। गो
हननम् १। जातिकर्मदुष्टानां याजन
म् २। परपत्नीगमनम् ३। आत्म
विक्रयः ४। गुरुत्यागो मातृत्यागः
पितृत्यागः ७। गुर्वादीनां शुश्रूषाद्य
करणमित्यर्थः ॥ सर्वदा ब्रह्मयज्ञत्या
गः ८। अग्नेःस्मार्त्तस्य त्यागः ९। सु

उपपा

तस्य च संस्कारभरणाद्यकरणरूप-
त्यागः १० ॥ कनिष्ठेनादौ विवाहे
कृते ज्येष्ठस्य परिवित्तिता भवति
११ । अकृतदारज्येष्ठस्य कृतदा-
रस्य कनिष्ठस्य परिवेदनम् १२
। तयोश्च कन्यादानम् १३ । तयोरे
व विवाहहोमादियागेष्वार्त्विज्यम्-
१४ ॥ कन्याया मैथुनवर्जमङ्गुलीप्रक्षे
पादिना दूषणम् १५ । वृद्धिजीवन
म् १६ । व्रतलोपनं ब्रह्मचारिणो मै
थुनम् १७ । तडागविक्रयः १८ । आ
रामविक्रयः १९ । भार्याविक्रयः २०
अपत्यविक्रयः २१ ॥ यथाकालमनु
पनयनं व्रात्यता २२ । बान्धवानां
पितृव्यादीनामननुवृत्तिः २३ ति
नियतवेतनग्रहणपूर्वकमध्यापनं भृ
त्याध्यापनम् २४ । प्रतिनियतवेत
नप्रदानपूर्वक मध्ययनञ्च भृताद्ध्य
यनादानम् २५ । अविक्रेयाणां तिल
लाक्षागोरसादीनां विक्रयः २६ ॥
सुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानेषु राजाज्ञयाऽ
धिकारः २७ । महतां जलप्रवाहप्रति
बन्धहेतूनां यन्त्राणां सेतुबन्धादीनां
प्रवर्त्तनम् २८ । ओषधीनां जाति
माषादीनां हरितानां धान्यानां हिं
सनं नाशः २९ । भार्यादिस्त्रीणां वेश्या
त्वं कृत्वा तदुपजीवनं स्त्र्याजीवः ३०

श्येनादियज्ञेनानपराद्धस्य मारणम भिचार. ३१। मन्त्रौषधादिना वशीकरणं मूलकर्म ३२॥ इन्धनार्थम शुष्काणां द्रुमाणां छेदनम् ३३। अनातुरस्य देवपित्राद्युद्देशमन्तरेण पक्वाद्यनुष्ठानमात्मार्थं क्रियारम्भः ३४। निन्दितस्य लशुनादेर्भक्षणं निन्दितान्नादनम् ३५॥ सत्यधिका ऽग्न्यनाधानमनाहिताग्निता ३६ स्तेयं सुवर्णादन्यस्य सारद्रव्यस्या पहारः ३७। देवर्षिपितृणामृणस्य अनपक्रियाऽशोधनम् ३८। असच्छास्त्रस्य श्रुतिस्मृतिविरुद्धस्य शिक्षणं ३९। कौशीलव्यस्य तौर्यत्रिकस्य उप ...नं सततानुष्ठानम् ४०॥ धान्यस्तेयम् ४१। कुप्यस्य ताम्रलोहादेश्चौर्यम् ४२। पशूनां चौर्यम् ४३। द्विजातीनां पीतमद्याया स्त्रिया गमनम् ४४। स्त्रीवधः ४५। शूद्रवधः ४६ वैश्यवधः ४७। क्षत्रियवध. ४८। अदृष्टार्थकर्मभावबुद्धि र्नास्तिक्यम् ४९। एतत् प्रत्येक मुपपातकमित्यर्थः॥

उपपादनम्। न। सम्यक्कथने॥

उपपादितः। त्रि। सम्यक्कथिते॥ समर्पिते॥

उपपादी। त्रि। उपपादनशीले॥

उपपापम्। न। उपपातके॥

उपपुरम्। न। शाखानगरे॥ पुरसन्निधौ॥ उपसमीपे पुरम्॥

उपपुराणम्। न। व्यासोक्ताष्टादशपुराणस्य छन्नानामुनिप्रणीताष्टादशपुराणेषु॥ तानियथा। आद्यंसनत्कुमारोक्तं १ नारसिंहमतः परम् २। तृतीयं वायवीयञ्च ३ कुमारेणानुभाषितम्। चतुर्थं शिवधर्माख्यं ४ साक्षान्नन्दीशभाषितम्। दुर्वाससोक्तमाश्चर्यं ५ नारदीयमतः परम् ६॥ नन्दिकेश्वरयुग्मञ्च ७ तथैवोशनसेरितम् ८। कापिलं ९ वारुणं १० शाम्बं ११ कालिकाह्वयमेवच १२॥ माहेश्वरं १३ तथापाद्मं १४ दैवं सर्वार्थसाधकम् १५। पराशरोक्तम परं १६ मारीच १७ भास्कराह्वयम् १८॥ इतिकूर्मपुराणम्॥ दैवं देवीपुराणम्॥

उपपुष्पिका। स्त्री। जृम्भायाम्। हाफिकायाम्॥ इतिहारावली॥

उपप्रदानम्। न। उत्कोचे॥ उपसमीपेप्रदानम्॥ दानाख्यउपाये॥ भूमिधनादीनांप्रदानमुपप्रदानम्॥

उपप्लवः। पु। सैंहिकेये॥ विघ्ने॥ उत्पाते॥ ग्रहणे॥ यथा। उ प्रवेशनम्नसोरवेक्ष्वेति स्मृतिः॥ उपप्लवनम्

। मुङ्गतौ । ऋदोरप् ॥

उपप्लवी । त्रि । सभये ।

उपप्लुत. । त्रि । त्रुद्रिते ॥ प्लवमाने ॥ पीडिते ॥

उपबृंहित: । त्रि । वर्द्धिते ॥

उपभुक्ति: । स्त्री । उपभोगे ॥ उपभोजनम् । भुज० । क्तिन् ॥

उपभूषणम् । न । घण्टाचामरादिषु ॥ यथा । घण्टाचामरकुम्भादिपात्रोपकरणादिकम् । तद्भूषणान्तरेद्याद्यस्मात् तदुपभूषणमिति ॥ मावारः पानपात्रञ्चगेण्डुकोगृहमेव च । पर्यङ्कादियदन्यत्तत्सर्वंतदुपभूषणमितिकालिकापुराणे ६८ अध्याय: ॥

उपभृत् । स्त्री । स्रुचोभेदे । चक्राकारेण्वत्पात्रे ॥ आभृत्युपभृदित्याप स्तम्ब:॥ उपविभक्ति। ङुभृञ्। क्विप ॥

उपभोग: । पुं । निर्वेशे । भोजनातिरिक्तभोगे ॥ उपभोजनम् । भुज० । घञ् ॥

उपमन्त्रणम् । न । रहस्युपच्छन्दने ॥

उपमन्यु: । पुं । मुनिविशेषे ॥

उपमर्द: । पु । धर्मिनिवृत्तौधर्म्यन्तरप्रयोगे ॥ यथा अस्तेर्भू: ॥ अभावे ॥

उपमा । स्त्री । उपमाने । सादृश्ये ॥ अलङ्कारविशेषे । यथा । उपमायत्र



सादृश्यलक्ष्मीरुल्लसतिद्वयो: । हंसीवकृष्णतेकीर्त्ति स्वर्गङ्गामवगाहते- ॥ यत्रोपमानोपमेययो:सहृदयहृदयाह्लादित्वेनचारुसादृश्यमुद्भूततया ल्लसति व्यङ्ग्यमर्यादाविनास्पष्टंप्रकाशते तत्रोपमालङ्कार: । हंसीवेत्युदाहरणम् । इयम्बपूर्णोपमेत्युच्यते । हंसीकीर्त्ति स्वर्गङ्गावगाहनमिवशब्दश्चेत्येतेषा मुपमानोपमेयसाधारणधर्मोपमावाचकानाञ्चतुर्णामप्युपादानात् ॥ यथावा । गुणदोषौ वुधोगृह्णन्निन्दुक्ष्वेडाविवेश्वर: ॥ शिरसाश्लाघतेपूर्वं परकण्ठेनियच्छति॥अत्रयद्यप्युपमानोपमेययोर्नैकसाधारणोधर्म:। उपमानेश्वरे चन्द्रगरलयोर्ग्रहणमुपादानंतयोर्मध्येपूर्वस्यचन्द्रस्य शिरसाश्लाघनंवहनम् । उत्तरस्य गरलस्यकण्ठे नियमनंस्थापनम् । उपमेयेवुधेगुणदोषयोर्ग्रहणं ज्ञानं तयोर्मध्ये पूर्वस्यगुणस्य शिरसाश्लाघनं शिर:कम्पनेनाभिनन्दनम्। उत्तरस्यदोषस्यकण्ठेनियमनंकण्ठादुपरि वाचा अनुद्घाटनमितिभेदात् । तथापिचन्द्रगरलयोर्गुणदोषयोश्च विम्बप्रतिविम्बभावेनाभेदात् उपादानज्ञानादीनांगृह्णन्नित्याद्येकशब्दोपादानेनाभेदा

उपमा

ध्यवसायाञ्च साधारणधर्मतेति पूर्वस्मादिशेषः । वस्तुतोभिन्नयोरप्युपमानोपमेयधर्मयोः परस्परसादृश्यादभिन्नयोः पृथगुपादानं बिम्बप्रतिबिम्बभाव इत्यालङ्कारिक समयः ॥

* ॥ उपमाने ॥ उपपूर्वान्माङोभावे करणेवा अङ्॥ उपमानं येनोपमीयते याचोपमितिः सोपमेत्यर्थ ॥

उपमाता । स्त्री । मातृतुल्यायाम् ॥ सोषड्विधा । यथा । मातृस्वसा-मातुलानी पितृव्यस्त्री पितृष्वसा । श्वश्रूः पूर्वजपत्नीच मातृतुल्या प्रकीर्त्तिताः इतिस्मृतिः ॥ धायइतिभाषयाभाषितायां धात्र्याम् ॥ त्रि । उपमानकर्त्तरि ॥

उपमानम् । न । उपमायाम् । सादृश्ये ॥ अधिकगुणेचन्द्रादौ ॥ सादृश्यज्ञाने । उपमितिकरणे । यथा गौ गवयस्तथेतिवाक्ये ॥ प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनमुपमानमिति न्यायसूत्रम् । १ । ६ । प्रसिद्धस्यपूर्वप्रमितस्यगवादेः साधर्म्यात् सादृश्यात् तज्ज्ञानात् साध्यस्यगवयादिपदवाच्यत्वस्यसाधनंसिद्धिरुपमान मुपमितिर्यतइत्यध्याहारेणच करणलक्षणम् । अथवा साध्यसाधनमिति करणल्युटा करणलक्षणमेवेदम् । अत्रचवैधर्म्यो

उपमि

पमितिमपिमन्यन्ते टीकाकृतः । यथाच अतिदीर्घग्रीवत्वादिपशुत्वा वैधर्म्यज्ञानादुष्ट्रेकरभपदवाच्यताग्रहः । एवमन्योप्युपमानस्य विषय इतिभाष्यम् । तथामुद्गपर्णी सदृसी ओषधी विषंहन्तीत्यतिदेशवाक्यार्थे ज्ञाते मुद्गपर्णीसादृश्यज्ञानेजाते इयमोषधी विषहरणीत्युपमित्या विषयी क्रियते इत्यादि ॥ उपमितौ । उपमित्यनुयोगिनि ॥ उपमीयतेयेन तदुपमानम । उपपूर्वान्माङः करणे ल्युट् । प्रादिसमासः । उपपूर्वकोमाङ् सादृश्यहेतुके परिच्छेदेरूढः । येनवस्त्वन्तरं सादृश्येन परिच्छिद्यते तदुपमानमित्यर्थः । यथागौरिव गवय । इहहिगोःकरणम् । सादृश्यंहेतुः । पुरुष परिच्छेत्ता । सहिगोसादृश्येन गवयंपरिच्छिनत्ति ॥

उपमितः । त्रि । सादृश्यङ्गते ॥ उपमेये ॥

उपमिति । स्त्री । उपमायाम् ॥ मितिभेदे । संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञाने ॥ न्यायमतेन सादृश्यज्ञानजन्यज्ञाने । उपमाने ॥ यथा गोसदृशोगवयपदवाच्यइत्याकारशक्तिज्ञानम् । अस्यकरणंगवादिसादृश्यवत पिण्डप्रत्य

च्चम् । अस्यव्यापारः अतिदिष्टवाक्या
र्थस्मरणम् । इत्युपमानखण्डम् ॥
अपिच । ग्रामीणस्य प्रथमत पश्यतो
गवयादिकम् । सादृश्यधीर्गवादी-
नां यास्यात्सोपमितिः स्मृता ॥ वा
क्यार्थस्यातिदेशस्य स्मृतिर्व्यापारउ-
च्यते । गवयादिपदानान्तु शक्तिधी
रुपमाफलम् ॥ पदज्ञानन्तुकरणं श
क्तिधीरुपमाफलमिति भाषापरि-
च्छेदः ॥ उपमानम् । उमिक्ष° ।
क्तिन् ॥

उपमेतः । पुं । शालवृक्षे ॥ इतिशब्दच
न्द्रिका ॥

उपमेयम् । त्रि । उपमिते ॥ उपमीय
ते यत् तत् । माङ् । अचोयत् । ई
द्यति ॥

उपमेयोपमा । स्त्री । अर्थालङ्कारविशे
षे ॥ यथा । पर्यायेणद्वयोस्तच्चेदुपमे
योपमामता । धर्मोर्थइवपूर्णश्रीर-
र्थोधर्मइवत्वयि ॥ द्वयो. पर्यायेणोप
मानोपमेयत्वकल्पनं तृतीयसादृश्य
व्यवच्छेदार्थम् । धर्मार्थम् । धर्मार्थ
योर्ह्रिकस्यचित् केनचित्सादृश्ये व-
र्णिते तस्याप्यनेन सादृश्य मर्थसिद्ध
मपिमुखतोवर्ण्यमानं तृतीयसादृ-
श्य व्यवच्छेदार्थफलति । यथावा ।
खमिव जलं जलमिवखं हंसश्चन्द्रइव



चन्द्रइवहंसः । कुमुदाकारास्तारा
स्ताराकाराणि कुमुदानि ॥पूर्वेच पू
र्णश्रीरितिधर्म उपात्तः इहामखत्वा
दिधर्मोनोपात्त इति भेद. । उदाह
रणद्वयेऽपिप्रकृतयोरेवोपमानो पमे
यत्वकल्पनम् । राज्ञि धर्मार्थसमृद्धे
शरदि गगनसलिलादिनैर्मल्यस्यच-
वर्णनीयत्वात् । प्रकृताप्रकृतयोरप्ये
षा सम्भवति । यथा । गिरिरिवगज
राजोयं गजराजइवोच्चकैर्विभाति-
गिरिः । निर्झरइवमदधारा मदधा
रेवास्यनिर्झरःस्रवतीति ॥

उपयन्ता । पुं । दयिते । पत्यौ ॥ उपय
च्छति । यमउपरमे । तृच् ॥

उपयम. । पुं । विवाहे ॥ उपयमनम् ॥
यम° । यमः समुपनिविषुचेत्यप् ॥

उपयमनम् । न । विवाहे ॥

उपयाचक. । त्रि । समीपे याच्ञाकर्त्त-
रि ॥

उपयाचितः । पि । दिव्यदोहदे । स्वे-
ष्टार्थसिद्धये देवायदेये वस्तुनि ॥ प्रा
र्थिते ॥

उपयाचितकम् । त्रि । उपयाचिते । स्वे
ष्टलब्धये देवदेये ॥

उपयाजः । पु । यज्ञाङ्गे ॥ एकादशोप-
याजाः । उपपूर्वाद्यजेर्घञि प्रयाजानु
याजयो. प्रदर्शनार्थत्वात्कुत्वाभावः॥

उपयामः । पुं । विवाहे ॥ उपयमनम् । यम० । यम.समुपनिविषुचेतिपक्षे घञ ॥

उपयुक्त । त्रि । उचिते । योग्ये ॥ उपयुज्यते । युजिर० । क्त ॥

उपयोग । पु । आचरणे ॥ दृष्टसिद्ध्यर्थव्यापारे ॥ उपयुज्यते । युज० । घञ ॥

उपयोगिता । स्त्री । आनुकूल्ये । प्रयोजने । फलसाधनतायाम ॥ उपयोगिनो भाव । तल् ॥

उपयोगी । त्रि । अनुकूले । उपयुक्तद्रव्यादौ । क्रियासाधने ॥ उपयोगोऽस्ति अस्यास्मिन् वा । अतइनिठनावितीनि. ॥

उपरक्त । पु । स्वर्भानौ । राहौ ॥ राहुग्रस्ते इन्दौ सूर्येच । राहुकर्तृकग्रहणकर्मीभूते चन्द्रे अर्केच ॥ त्रि । व्यसनार्त्ते । दैवमानुषान्यतरपीडायुक्ते ॥ आसक्ते ॥ उपरज्यतेस्म । रञ्जरागे । कर्मणिक्त ॥

उपरक्षक. । त्रि । रक्षितरि ॥

उपरक्षणम । न । रक्षार्थैसैन्यविन्यासे । सज्जने । चौकी पहरा इति च भाषा ॥

उपरत. । त्रि । सर्वैषणाविनिर्मुक्तेपरिव्राजि । संन्यासिनि ॥ मृते ॥ विरते । निवृत्ते ॥

उपरतस्पृह । त्रि । इच्छारहिते ॥ सर्वथापिसत्त्वे स्वगतधनेच्छारहिते ॥

उपरति. । स्त्री । विषयेभ्यइन्द्रियाणां परावृत्तौ । निवर्त्तितानामेषाश्रोत्रादिपञ्चेन्द्रियाणां श्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यउपरमणे ॥ विहितानांकर्मणा विधिनापरित्यागे॥ पुमर्थं कर्मणानेतिधीरेषोपरतिर्भवेदित्युक्ते. ॥ लाभप्राप्तावौदासीन्ये॥ विरतौ ॥ उपरमणम् । रमक्रीडायाम् । क्तिन् ॥

उपरत्नम् । न । गौणरत्ने ॥ तानियथा । उपरत्नानिकाचश्च कर्पूराश्मातथैवच । मुक्ताशुक्तिस्तथाशङ्खइत्यादीनिवहून्यपि ॥ गुणायथैवरत्नानामुपरत्नेषुतेतथा । किन्तुकिञ्चित्ततोहीनाविशेषोयमुदाहृत इति ॥

उपरथ्या । स्त्री । क्षुद्रवीथिकायाम् ॥

उपरन्ध्रम् । न । अश्वस्यरन्ध्रोपरिभागे ॥ यथोक्तम् । कुक्षिनाभ्यन्तरेरन्ध्रमुपरन्ध्रंतथोपरीति ॥

उपरम. । पुं । उपरतौ । वैराग्ये ॥ उपरमणम । रम० । घञ । यमउपरमेइति निपातनान्नवृद्धिः ॥ नाशे ॥ उपरमतेऽस्मिनवा ॥

उपरमणम । न । परावृत्तौ ॥

उपरसः । पुं । गन्धकादिषु ॥ यथा । गन्धोहिङ्गुलमभ्रतालकशिलास्रोतोञ्जनंटङ्कणंराजावर्त्तकचुम्बकौ स्फटिकयाशङ्खःखटीगैरिकम् । कासीसंरसकंकपर्द्दसिकताबोलाश्चकङ्कुष्ठकं सौराष्ट्रीचमताअमीउपरसाःसूतस्यकिञ्चिद्गुणैः ॥ अथैषांशोधनविधिः । सूर्य्यावर्त्तोवज्रकन्दः कदली देवदालिका । शिग्रुकोषातकीवन्ध्याकाकमाचीचवालुकम् ॥ एषामेकरसेनैव त्रिवारैर्लवणैःसह । भावयेद्दलवर्गैश्चदिनमेकं प्रयत्नतः ॥ ततपचेज्जतद्रवैर्दोलायन्त्रेदिनं सुधीः । एवंशुद्ध्यन्तितेसर्वे प्रोक्ताउपरसाहिये ॥ विशेषश्च । कङ्कुष्ठंगैरिकंशङ्खकासीसंटङ्कणंतथा । नीलाञ्जनंशुक्तिभेदाः चुल्लकाः सवराटिकाः ॥ अम्लोरवारिणास्विन्नाःक्षालिताः कोष्णवारिणा । निश्चमायान्त्यमीयोज्याभिषग्भिर्योगसिद्धयेइति ॥

उपरागः । पुं । ग्रहणे । राहुग्रस्तार्कचन्द्रयोः । राहुकर्त्तृकचन्द्रादिकर्मकग्रहणरूपक्रियायाम् ॥ दुर्नये ॥ ग्रहकल्लोले ॥ व्यसने ॥ विगाने । निन्दायाम् ॥ उपरज्यतेऽनेन सूर्यश्चन्द्रश्च । रञ्जरागे । हलश्चेति घञ् । घञिचभावकरणयोरितिनलोपः ॥ सम्बन्धे ॥ यथा । गुणोपरागःस्वेच्छात पुरुषस्यकल्पत इतिसहस्रनामभाष्यम् ॥

उपरामः । पुं । निवृत्तौ । विरतौ ॥ उपरमणम् । रम० । घञ् । रमेरनुदात्तोपदेशत्वान्न वृद्धिनिषेधः ॥ निरहङ्कारत्वे ॥

उपरि । अ । ऊर्द्ध्व ॥ ऊर्द्ध्वे ऊर्द्ध्वायाम् ऊर्द्ध्वात् ऊर्द्ध्वाया ऊर्द्ध्व मूर्द्ध्वं वा वसत्यागतोरमणीयंवा । उपर्य्युपरिष्टादिति ऊर्द्ध्वस्योपादेशोरिल् प्रत्ययश्च ॥

उपरिचरः । पुं । वसुविशेषे ॥ विमानेनोर्द्ध्वंनिरन्तरंगमनादुपरिचर इति नामास्य । नृपतिश्चेदिदेशाधिपतिरासीत् ॥

उपरिवृद्धिः । त्रि । उत्तानवृद्धौ ॥ उपर्य्युपरिवृद्धीनां चरन्तीश्वरवृद्धयश्च उपरिवृद्धीना मुत्तानवृद्धीना मुपरिचरन्तीत्यर्थात् ॥

उपरिष्टात् । अ । ऊर्द्ध्व ॥ ऊर्द्ध्वे ऊर्द्ध्वायाम् ऊर्द्ध्वात ऊर्ध्वायाः ऊर्ध्वम् ऊर्ध्वां वा वसति आगतो रमणीयंवा । उपरिउपरिष्टादित्यूर्द्ध्वस्य उपादेशोरिष्टातिल्च प्रत्ययः ॥

उपरीतकः । पुं । शृङ्गारबन्धविशेषे ॥ तल्लक्षणं यथा एकपादमुरौ कृत्वा

द्वितीयं स्कन्धसंस्थितम् । नारीका मयतेकामीवन्ध:स्या दुपरीतकइति ॥ अत्रविपरीतको पिपाठ. ॥

उपरुद्ध: । त्रि । मूत्रादिवेगवति ॥

उपरूपकम् । न । नाटकप्रभेदे । स चाष्टादशविधो यथा । नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकं नाट्यरासकम् स्था नोल्लाप्यकाव्यानि प्रेङ्खणं रासकं तथा ॥ संलापक श्रीगदितं शिल्पक स्वविलासिका । दुर्मल्लिकाप्रकरणी हल्लीशोभाणिकेतिच ॥ अष्टादशमा हुरुपरूपकाणिमनीषिण: । विनावि शेषंसर्वेषांलक्ष्मनाटकवन्मतमिति- साहित्यदर्पणे ६ परिच्छेद ॥

उपरोध: । पुं । अनुरोधे ॥ उपरोधनम् । रुधिर् । घञ् ॥

उपरोधकम् । पुं । न । गर्भागारे । वासगृहे ॥ त्रि । उपरोधकर्त्तरि ॥

उपल । पुं । पाषाणे । प्रस्तरे ॥ मणौ । रत्ने ॥ उपलाति । लादाने । आ- तश्चेतिक: ॥ उंशम्भुप्रति औशम्भो वा पलति । पलगतौ । पचाद्यच् ॥ ओ: शम्भो: पल. बोधको वा ॥

उपलक्षक: । त्रि । लक्षयितरि ॥

उपलक्षणम् । न । अजहत्स्वार्थलक्षणायाम् । एकपदेन तदर्थान्यपदार्थकथने ॥ यथा । देशान्तरे मृते पत्यौ साध्वी तत्पादुकाद्वयम् । निधायोर- सिसंशुद्धा प्रविशेज्जातवेदसम् ॥ अत्रपादुकाद्वयमित्युपलक्षणम् द्रव्यान्तरस्यापि ॥ उपसमीपस्थं लक्षणमालोचनंयत्र ॥ स्वसिद्धयेपराक्षेप:परार्थेस्वसमर्पणम् । उपादानंलक्षणञ्चे त्युक्ताशुद्धैवसाद्विधा ॥ यथाकुन्ता:प्रविशन्तीत्युपादानम् । गङ्गायां घोष इत्युपलक्षणमितिकाव्यप्रकाश: ॥

उपलक्षणभाव: । पु । अवच्छेदकत्वे ॥

उपलक्षित । त्रि । बोधिते ॥ ज्ञाते ॥

उपलधिप्रिय: । पुं । चमराख्यवनजन्तौ ॥ इतिराजनिर्घण्ट: ॥

उपलब्ध. । त्रि । दृष्टे ॥

उपलब्धार्थ: । त्रि । अनुभूते ॥ उपलब्ध:अर्थोऽस्य ॥

उपलब्धार्था । स्त्री । आख्यायिकायाम् ॥ उपलब्ध: केनापि प्रमाणेन अर्थोऽभिधेयं यस्या. सा । भूतार्थशब्दरचनेति यावत् ॥

उपलब्धि: । स्त्री । मत्याम् ॥ प्राप्तौ ॥ ज्ञाने ॥ उपलम्भे ॥ उपलभ्यतेऽनया । डुलभष° । स्त्रियात् प्राप्तमड वाधित्वा बाहुलकात् क्तिन् ॥

उपलब्धा । पुं । आत्मनि ॥

उपलभेदी । पुं । पाषाणभेदिनि स्या-

वरे ॥
उपलम्भः । पुं । उपलब्धौ । अनुभवे ॥
उपलम्भनम् । डुलभष् प्राप्तौ । घञ् । उपसर्गात् खलघञोरितिनुम् ॥
उपलम्भनम । न । उपलम्भे ॥ उपलभ्यते । डुलभष्० । कर्मणिभावेवाल्युट् ॥
उपलम्भितः । त्रि । ज्ञापिते ॥
उपलभ्यः । त्रि । स्तवोपयुक्ते । स्तव्ये ॥ यथा । उपलभ्यः साधु । इति मुग्धबोधव्याकरणम ॥
उपला । स्त्री । अश्मरूपायांस्त्रिदि ॥ श र्करायाम् ॥ उपलाति । लाआदाने । आतश्चोपसर्गइतिकः । उंशम्भुं प्रति औ शम्भौवा । पलति । पलगतौ । पचाद्यच् । टाप् ॥
उपलिङ्गम । न । अरिष्टे । उपद्रवे ॥ इतिहेमचन्द्रः ॥
उपलेपः । पुं । उपलेपने ॥
उपलेपनम् । न । गोमयादिना आलेपे । उपाञ्जने ॥ उपलिप्यते । लिपउपदेहे । कर्मणि ल्युट् ॥
उपवटः । पुं । प्रियालवृक्षे । पियाले ॥
उपवनम् । न । आरामे । कृत्रिमेवृक्षसमूहे ॥ पुष्पप्रधाने रोपितवृक्षसमूहे ॥ उपगत वनम् । प्रादयोगताद्यर्थे इतिसमासः ॥
उपवर्त्तनम् । न । देशे । विषये । स्थानमात्रे ॥ उपवर्त्तन्तेऽत्र । इतु । घ ञोल्युटोपवादत्वादन्यत्रापीतियुच् ॥
उपवर्षः । पुं । मुनिविशेषे । कृतकोटौ ॥
उपवर्हः । पुं । शिरोधाने । उपधाने ॥ उपवृह्यतेऽनेनवा । वृहवृद्धौ वृहू उद्यमनेवा । घञ् ॥
उपवर्हणम् । न । उपवर्हे । उच्छीर्षके ॥ उप वृह० । ल्युट् ॥
उपवल्लिका । स्त्री । अमृतस्रवालतायाम् ॥
उपवसथः । पुं । ग्रामे ॥ उपवसन्तियत्र । वस० । उपसर्गेवसेरित्यथः ॥
उपवस्तम् । न । उपवासे । उप तनम् । वसुस्तम्भे । भावे क्तः । अनेकार्थत्वाद्भोजनेवृत्तिः ॥
उपवासः । पुं । उपवस्ते । अहोरात्रभोजनाभावे ॥ तपनोदयमारभ्य यामाष्टकमभोजनम् । उपवासः सविज्ञेय प्रायश्चित्तविधीयते । शास्त्रोदिते नित्ये काम्येवा अहोरात्राभोजने ॥ वैधोपवासे भोजनचतुष्टयनिवृत्तिरुक्तामहाभारते । सायमाद्यन्तयोरह्नोः सायम्प्रातश्च मध्यमे । उपवासफलं प्रेप्सोर्वर्ज्यं भक्तचतुष्टयमिति ॥ काम्योपवासाश्च महाभारते । त्रिरात्रं पञ्चरात्रंवा पक्षन्तमथापिवा । मासोपवासान् कुर्याद्वाचान्द्रायणमथा

ऽपिवेति ॥ उपावृत्तस्य पापेभ्योयस्तु वासोगुणै.सह । उपवासः सविज्ञेय'सर्वभोगविवर्जितः ॥ उपावृत्तस्य निवृत्तस्य। पापेभ्यः पापकर्मभ्यः। गुणाः स ू्तेषुदया चान्तिः अनसूया शौचम अनायास' मङ्गलम् अकार्पण्यम् अस्पृहाच। सर्वभोगविवर्जित. शास्त्रानुमतत्वच्यगीतादिसुखरहित इत्यर्थः ॥ उपवासासामर्थ्ये-प्रतिनिधय'स्कन्दपुराणे। पुत्रं वा विनयोपेतं भगिनींभ्रातरंतथा। एषामभावएवान्यं ब्राह्मणंविनियोजयेत् ॥ गरुडपुराणे । भार्याभर्त्तृव्रतंकुर्यात् भार्यायाश्चपतिस्तथा। असामर्थ्येद्वयोस्ताभ्यांव्रतभङ्गोनजायते॥ अनकल्पमाह वायुपुराणे। नक्तंहविष्यान्नमनोदनञ्च फलंतिला चीरमथाम्बचाज्यम् । यत् पञ्चगव्यदिवाथवायुः प्रशस्तमचोत्तरमुत्तरञ्चेति॥ उपवासासमर्थे विशेषमाहब्रह्मवैवर्त्त । उपवासासमर्थश्चेदेक विप्रन्तुभोजयेत्। तावद्धनानिवादद्यात् द्भक्ताद्द्विगुणं भवेत् ॥ सहस्रसम्मितांदेवींजपेद्वा प्राणसंयमान । कुर्योद्वादशसंख्याकान्यथा शक्तिव्रतेन रः ॥ वैशायनस्त्वाह । अष्टौतान्यव्रतघ्नानि आपोमूलंफलंपयः । हवि



र्ब्राह्मणकाम्याचगुरोर्वचनमौषधमिति ॥ अत्र श्रीसदाशिवः ॥ कलावन्नगताः प्राणानोपवासः प्रशस्यते । उपवासप्रतिनिधावेकंदानंविधीयतेइति ॥ उपवसनम् । वसनिवासे । घञ ॥ उपवासफलंनश्येद्दिवास्वप्नाच्च मैथुनात । स्त्रीणांसम्भेच्चणात्स्पर्शात् ताभिःसङ्कथनादपीच्चे कादशीतरुम् । सङ्कथनम् सम्यग्भाषणम् ॥

उपवासी । त्रि । उपवासयुक्ते । व्रतोपवासनिष्ठे तपस्विनि ॥ उपवासोऽस्यास्ति । इनि' ॥

उपवाह्यः। पुं । राजवाहकहस्तिनि । राजवाह्ये ॥

उपविषम् । न । कृत्रिमविषे। गरे। चारे ॥ पुं । गौणविषे ॥ अर्कचीरं स्नुहीचीरं तथैवकलिहारिका। करवीरोथधत्तूरः पञ्चोपविषा' स्मृता' ॥ तत्रतद्गुणाद्दोषाद्रष्टव्या' सुविचक्षणैः ॥

उपविषा। स्त्री । महौषधे। शृङ्ग्याम। अतीस इतिभाषा ॥ विषमुपगता। शुक्लकन्दाचोपविषा भङ्गुराघुणवल्लभा ॥

उपविष्टः। त्रि । आसीने । आसनावस्थिते। समासीने । बैठा इतिभा

उपविशतेः क्तः ॥

उपविष्टहोमः । पुं । स्वाहाकारप्रयोगान्ते याज्यापुरोनुवाक्यारहिते होमे॥

उपविष्टिः । स्त्री । आस्यायाम् । स्थितौ ॥

उपवीतम् । न । वामांसस्थापिते यज्ञसूत्रे । यज्ञोपवीते । त्रिगुणीकृत्य त्रिगुणितेकार्पासादिसूत्रविशेषे ॥ तदुक्तंछन्दोगपरिशिष्टे। ऊर्द्धन्तुत्रिवृतं कार्यं तन्तुत्रय मधोवृतम् । त्रिवृतञ्चोपवीतं स्यात् तस्यैकोग्रन्थिरिष्यतइति॥ उपनीयतेस्म। अजग०। अजेर्व्यघञपोः।वीगत्यादिषु वा । क्तः ॥ यद्वा । उपाजतिस्म उपवेतिस्मवा । गत्यर्थेतिक्तः ॥ उपवीतं यज्ञसूत्रंप्रोद्धृतेदक्षिणेकरे । प्रोद्धृतेवक्षिस्कृतेसति वामस्कन्धार्पितइत्यर्थः ॥

उपवीती । पुं । उपवीतवतिद्विजे ॥ उद्धृतेदक्षिणेपाणावुपवीत्युच्यतेद्विजः । दक्षिणेपाणौ उद्धृते वामस्कन्धस्थिते दक्षिणकक्षावलम्बे यज्ञसूत्रेवस्त्रे-वा उपवीती द्विजःकथ्यतइत्यर्थः । उपवीतमस्यास्ति । अतइनिठनाविति नि: ॥

उपवृंहित । त्रि । वर्द्धिते ॥

उपवेदः । पु । प्रधानवेदातिरिक्तवेदे॥ सचतुर्विधः। आयुर्वेदोधनुर्वेदोगान्धर्ववेदोऽर्थ शास्त्रमितिभेदात । तत्रऋग्वेदस्यायुर्वेदउपवेदः । यजुर्वेदस्य धनुर्वेदः । सामवेदस्य गान्धर्ववेदः । अथर्ववेदस्य शस्त्रशास्त्राणीति शौनकोक्तचरणव्यूहः ॥

उपवेशनम् । न । स्थितौ ॥

उपव्याघ्रः । पुं । मृगान्तके । चित्रके । चीताइति भाषा सिद्धे ॥

उपव्याख्यानम् । न । विस्पष्टप्रकथने ॥

उपशमः । पुं । शमे । इन्द्रियाणां संयमे । तृष्णाक्षये ॥ यतेरुपशमोधर्म इति स्मृतिः ॥ अभावे । प्रतीकारे ॥ सावशेषनाशे ॥ उपशमनम । शम । भावेघञ् ॥ उपशाम्यत्यनेनवा । हलश्चेति घञ् ॥

उपशयः । पुं । निदानपञ्चकान्तर्गतरोगज्ञानजनके ॥ तल्लक्षणम् । हेतुव्याधिविपर्यस्तविपर्यस्तार्थकारिणाम् । औषधान्नविहाराणामुपयोगंसुखावहम् ॥ विद्यादुपशयंव्याधेःसहि सात्म्यमितिस्मृतः ॥ इतिनिदानम् ॥व्याधिहेतुविपरीतौषधादितः सुखावहोपयोगे ॥ न । समीपशयने ॥ त्रि । शयमाने ॥ उपशयनम् । शीङ०। एरच् ॥

उपशल्यम् । न । ग्रामान्ते । ग्रामान्तभागे ॥ शल्यमुपगतम । प्रादिसमासः॥

उपशान्तः। त्रि। बाधिते। सम्यग्बाधिते॥ यथा। उपशान्तजगज्जीवविश्वाघ।व्यश्वरश्रममिति॥

उपशान्ति.। स्त्री। शमे॥ उपशमनम्। शम°। स्त्रियां क्तिन्॥

उपशायः। पुं। प्रहरिणांक्रमेणशयने। विशाये॥ उपशयनम्। शीङ्°। व्युपयोः शेतेः पर्याये इति घञ्। तवाशराशोपशाय॥

उपश्रुतम्। त्रि। अङ्गीकृते। स्वीकृते॥ उपश्रूयतेस्म। श्रुश्रवणे। क्त॥

उपश्रुतिः। स्त्री। दैवप्रश्ने॥ यथा। नक्तंनिर्गत्ययत्किञ्चिच्छुभाशुभकरंवचः। श्रूयते तद्विदुर्धीरा दैवप्रश्न मुपश्रुतिमिति॥ उपश्रूयते। श्रु°। कर्मणि स्त्रियां क्तिन्॥

उपश्लेषः। पुं। सम्बन्धविशेषे॥ यथा- आधाराधेययोरन्यत्रसिद्धयोः प्रादेशिकसम्बन्ध उपश्लेष.। कटेआस्ते स्थाल्यांपचतीत्यत्रौपश्लेषिकाधिकरणे सप्तमी॥

उपष्टम्भम्। न। स्थूणायाम्॥ पु। आधिक्ये॥

उपसंयमः। पुं। उपसंहारे॥

उपसंव्यानम्। न। परिधानांशुके। अन्तरीये॥ उपसंवीयतेऽनेन वा। व्येञ् संवरणे। कृत्यल्युटइतिल्युट्॥

उपसंहरणम्। न। उपसंहारे॥ ल्युट्॥

उपसंहार.। पुं। समासौ॥ सङ्क्षेपे॥ उपसंहरणम्। हृञ्°। घञ्॥

उपसङ्ग्रहः। पुं। अभिवादे। पादस्पर्शपूर्वकनमस्कारे। पादग्रहणे॥ स्थलने॥ उपसङ्ग्रहणम्। ग्रहउपादाने। ग्रहवृहनिश्चिगमश्चेत्यप्॥

उपसङ्ग्राह्य.। त्रि। अभिवाद्ये। उपसङ्ग्रहणीये॥

उपसत्ति.। स्त्री। सेवायाम्॥ सङ्गमावे॥ प्रतिपादने॥ उपसदेर्भावेक्तिन्॥

उपसद्। पु। प्रवर्ग्याहः प्रसिद्धायामिष्टौ॥ गार्हपत्यादित्रयभिन्नेऽग्नौ॥ यथा। गार्हपत्योदक्षिणाग्निस्तथैवाहवनीयक.। एतेऽग्नयस्त्रयोमुख्या. शेषाश्चोपसदस्त्रयइतिवह्निपुराणे गणभेदनामाध्यायः॥

उपसद्व्रती। पु। उपसत्सु इष्टिषुव्रतंपयोमात्रभक्षणतद्वत्॥

उपसन्नः। त्रि। उपनते। उपस्थिते॥ यथा। भगवन्नुदधौ मृतिजन्मजले सुखदुःखझषे पतितंव्यथितम्। कृपयाशरणागत मुद्धरमा मनुशाध्युपसन्नमनन्यगतिमितितोटकाचार्याः॥ शरणागते॥ उपासदत् उपसीदतिस्मवा। षद्लृ°। गत्यर्थेतिक्तः॥

उपसमाधानम्। न। राशीकरणे॥

उपसम्पन्नः । त्रि । प्रमीते । प्रोषिते । यज्ञार्थहतपशौ ॥ प्रणीते । सुसंस्कृते । पाकेनसंस्कृते मांसादौ ॥ पर्याप्ते ॥ प्राप्ते ॥ मृते ॥ उपसम्पद्यते स्म । तौपदग । कर्त्तरिकर्मणि वा गत्यर्थेति क्तः ॥

उपसम्भाषा । स्त्री । उपसान्त्वने ॥ सम्भाषणे ॥

उपसरः । पुं । स्त्रीगव्यादिषु पुंगवादीनां प्रथमगर्भाधानाय मैथुनाभियोगे । प्रजने ॥ उपसरणम् । सृगतौ । प्रजनेसर्त्तेरित्यप् । यथा गवामुपसरः ॥

उपसरणम् । न । समीपगमने ॥ उपसर्त्तव्ये ॥ सृ० । ल्युट् । उपसमीपे सरणम् ॥

उपसर्गः । पुं । रोगप्रभेदे ॥ उपप्लवे । उत्पाते । उपद्रवे । शुभाशुभसूचक महाभूतविकारे ॥ क्रियायोगे प्रपरादिषु ॥ यथा । निपाताश्चादयोज्ञेया उपसर्गास्तु प्रादयः । द्योतकत्वात् क्रियायोगे लोकादवगताइमे ॥ सत्रिधा । धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित्तमनुवर्त्तते । तमेवविशिनष्टयन्यउपसर्गगतिस्त्रिधा ॥ क्रमेणोदाहरणानि यथा । आदत्ते प्रहृते प्रथमतीति ॥ अपिच ॥ उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्रनीयते । प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥ उपसर्ज्जनम उपसृज्यते वा । सृज० । घञ् ॥

उपसर्ज्जनम् । न । प्रधानभिन्ने । गौणे । अप्रागग्रे । अमुख्ये । विशेषणे ॥ त्यागे ॥ उपसृज्यते । सृज० । कर्मणि ल्युट् ॥

उपसर्त्तव्यम् । त्रि । उपगन्तव्ये ॥

उपसर्पकः । त्रि । उपासके । उपसर्पणकर्त्तरि ॥

उपसर्पणम् । न । अनुगमने । अनुवृत्तौ ॥ सृप्लृगतौ ल्युट् ॥

उपसर्य्या । स्त्री । ऋतुमत्यां गवि । काल्यायाम् । गर्भाधानार्थं वृषभेणोपगन्तुं योग्यायाम् ॥ उपस्त्रियते वृषेण । सृगतौ । उपसर्य्याकाल्याप्रजने इति साधुः । काल्योपसर्य्याप्रजने इत्यमरः ॥

उपसादितः । त्रि । प्रापिते ॥

उपसार्य्यः । त्रि । समीपगमनीये ॥ प्राप्तव्ये ॥ कर्मणि ण्यत् ॥

उपसुन्दः । पुं । रामायणप्रसिद्धे सुन्दभ्रातरि राक्षसे ॥

उपसूर्य्यकम् । न । चन्द्रार्कमण्डले । चन्द्रार्कसमीपवर्त्तिमण्डले ॥ उपगतंसूर्य्यम् उपसूर्य्यम् । प्रादिसमासः । ततःस्वार्थेकन् । चन्द्रपक्षे उप

सूर्यमिव । इवार्थेकन् ॥

उपसूर्यकमण्डलम् । न । परिवेषे ॥

उपसृप्यः । चि । गम्य ॥

उपसृष्टम् । न । मैथुने । सुरते ॥ त्रि । उपसर्गयुक्ते । विसृष्टे ॥

उपसेक । पुं । सेचनेन मृदुकरणे ॥

उपसेचनम् । न । इते ॥ उपसिच्यते । षिचक्षरणे । ल्युट् ॥

उपस्कर: । पुं । कटककुण्डलहारादौ ॥ वेसवारे । व्यञ्जनादिसंस्कारार्थं धन्याकसर्षपादिपिष्टे ॥ दृषदुपलसूर्पादौ । गृहोपकरणकुण्डसम्मार्जन्यादौ ॥ उपकरोति व्यञ्जनेन समवैति । डुकृञ्० । समवायेचेतिसुट् ॥

उपस्करणम् । न । परिकरे ॥

उपस्कृत: । त्रि । मण्डिते ॥

उपस्तरणम् । न । आस्तरणे ॥ उपस्तीर्यते । स्तृञ्० । ल्युट ॥

उपस्थ: । पुं । न । लिङ्गे । शेफसि ॥ भगे । मदनागारे ॥ क्रोडे ॥ चि । समीपस्थे ॥ उपतिष्ठते । ष्ठा० । सुपीतिक: । मूर्द्धचादि: ॥

उपस्थपत्र । पुं । भाण्डीरे । वटे ॥

उपस्थाता । त्रि । भृत्ये । सेवके ॥

उपस्थानम् । न । नमस्करणे ॥ उपेत्य स्थानम् ॥ उपस्थीयते । ष्ठा० । ल्युट् ॥ सङ्गतौ ॥

उपस्थित: । चि । आगते ॥ निकटस्थिते । उपसन्ने ॥ प्राप्ते ॥ उपपूर्वात्तिष्ठतेर्गत्यर्थाकर्मकेति क्त: । द्यतिस्यतीतीत्वम् ॥

उपस्पर्श: । पुं । स्पर्शमात्रे ॥ स्नाने ॥ आचमने ॥ उपस्पर्शनम् । स्पृशस्पर्शे । घञ् ॥ उपस्पृश्यन्ते खान्यत्र । हलश्चेत्यधिकरणे घञ्वा ॥

उपस्पर्शनम् । न । उपस्पर्शे ॥ स्पृशे ल्युट् ॥

उपस्पृष्ट: । त्रि । आचान्ते ॥ सन्निधिमात्रेण सेविते ॥ उपस्पृशे: क्त: ॥

उपस्वत्वम् । न । उत्पन्ने । लभ्ये । तद्भिन्ने ततएवोपजाते स्वत्वास्पदीभूतभूम्यादिलब्धधनादौ ॥

उपहत: । चि । तिरस्कृते ॥ विघट्टिते ॥ अशुद्धद्रव्ये ॥ उत्पातग्रस्ते ॥ नष्टे ॥ यथा । कृत्वाशस्त्रविभीषिकां कतिपयग्रामेषुदीना: प्रजा मभ्रन्तोविटजल्पितै रुपहता: क्षोणीभुजस्तेकिल । विद्वांसोपिवयं किल त्रिजगतः स र्गस्थितिव्यापदामीशस्तत्परिचर्यया नगणितोयैरेषनारायण: इति ॥

उपहसितम् । न । हास्यप्रभेदे ॥

उपहार: । पुं । उपायने । भेट इतिभाषा ॥ नैवेद्यादिपूजासामग्र्याम् ॥ उपह्रियते । हृञ्० । घञ् ॥

उपहारपाणिः । त्रि । उपायनहस्ते ॥ उपहारः पाणौ यस्य ॥

उपहालक. । पुं । कुन्तलाख्यदेशे ॥

उपहासः । पुं । परीहासे । निन्दार्थवाक्यादौ । हांसी ठट्ठा इति भाषा ॥ उपहासाय किं न स्यादसत्सङ्गो मनीषिणाम् ॥

उपाहित. । त्रि । आहिते ॥ उपधीयते स्म । डुधाञ् ०क्तः । दधातेर्हिरिति-प्रकृतेर्हिरादेशः ॥

उपहूतः । त्रि । समर्पिते ॥

उपह्वरः । पुं । रथे ॥ न । एकान्ते । रहसि ॥ निकटे ॥ उपह्वरे गन्तव्ये समीपदेशेइतिवेदभाष्यम ॥ उपह्वरन्त्यत्र । ह्वृ कौटिल्ये । पुंसीतिघः ॥

उपांशु । अ । विजने । रहसि ॥ अप्रकाशोच्चारणे ॥

उपांशुः । पुं । जपविशेषे ॥ यत्समीपस्थोपिपरोनशृणोति तदुपांशुरित्युच्यते । यत्तदोष्ठवारणमर्थः । जिह्वौष्ठौचालयेत् किञ्चिद्देवतागतमानसः । निजश्रवणयोग्यः स्यादुपांशुः सजपः स्मृतः ॥ विधियज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टोदशभिर्गुणैः । उपांशु. स्याच्छतगुणः ॥ उपगताः अंशवोयत्र ॥

उपाकरणम् । न । श्रुते. संस्कारपूर्वग्रहणेस ॥ स्कार उपनयनं पूर्वयत्र तत् तद्यतग्रहणाच्च । संस्कारपूर्वग्रहणंयस्या दुपाकरणंश्रुतेरित्यमरः ॥ आवश्यादिविधातव्ये संस्कारविशेषे ॥ प्रारम्भे ॥ संस्कारपूर्वपशूनां हनने ॥ उपाक्रियतेऽनेन तत् । कृञो ल्युट् ॥

उपाकर्म्म । न । उपाकरणे ॥

उपाकृतः । पुं । अध्वरे अभिमंत्र्यहतेपशौ ॥ उपद्रवे ॥ त्रि । उपद्रुते ॥ प्रारब्धे ॥ उपाक्रियतेस्म । कृञ् हिंसायाम् । क्त ॥

उपाख्यः । त्रि । अप्रत्यक्षतउपलब्धे । प्रत्यक्षे ॥ उप आख्यायते । ख्या० । आतश्चोपसर्गइत्यङ् ॥

उपाख्यानम् । न । आख्याने । पुराणादिग्रथितवार्त्तायाम् । वर्णने ॥ उपाङ्पूर्वात्ख्यातेर्ल्युट् ॥ विशेषकथने ॥

उपागमः । पुं । समोपगमने ॥ स्वीकारे ॥ उपागमनम् । गम्लृ० । ग्रहवृदृनिश्चादिना अप् ॥

उपाङ्गः । पु । तिलके । तमालपत्रके । पत्रलेखायाम् ॥

उपाजे । अ । दुर्बलस्यसामर्थ्याधाने ॥ सत्समोप्रतिरूपकोयं निपातः ॥

उपाजेकृत्य । अ । दुर्बलस्यबलमाधायेत्यर्थे ॥ उपाजेऽन्वाजे इतिगतिसंज्ञा । कुगतीतिसमासः ॥

उपाजेकृत्वा । अ । उपाजेशब्दार्थे ॥

उपाञ्जनम् । न । उपलेपने ॥

उपात्त. । पुं । निर्मदहस्तिनि ॥ त्रि । गृहीते । स्वीकृते ॥ प्राप्ते ॥ वयंकेचिदुपात्तस्यदुरितस्यप्रचक्षते ॥

उपात्ययः । पु । शास्त्रतो लोकव्यवहाराच्च व्यतिक्रमे ॥ अतिक्रमे । क्रमोल्लङ्घने ॥ उपात्ययनम् । इण्० । एरच । उपगतस्या तिक्रम्यायनं वा ॥

उपादानम् । न । स्वस्वविषयेभ्य इन्द्रियाणां विकर्षणे । प्रत्याहारे ॥ हेतौ ॥ ग्रहणे ॥ अननुष्ठितस्यानुष्ठाने ॥ समवायिकारणे ॥ प्रवृत्तिजनकज्ञाने ॥ उत्पादके । उत्पत्तिस्थितिनाशायकारणे ॥ उपादाञोल्युट् ॥ आरम्भे ॥

उपादानाख्या । स्त्री । तुष्टे. प्रभेदे ॥ यातुप्रकृत्यापि विवेकख्याति' नसा प्रकृतिमात्राद्भवति मास्मभूत् सर्वस्य सर्वदातन्मात्रस्यसर्वान् प्रत्यविशेषात् । प्रव्रज्यायास्तु सा भवति तस्मात् प्रव्रज्यामाददीथाः कृतं ते ध्यानाभ्यासेनेत्यायुष्मन्निित्युपदेशे या आध्यात्मिकातुष्टिः सा उपादानाख्या नामद्वितीया सलिलमुच्यते ॥ उपादानमित्याख्यायस्या. ॥

उपादिकः । पुं । कीटविशेषे । वल्माम् । देहिकायाम् ॥

उपादेयः । त्रि । उत्कृष्टे । उत्तमे । ग्राह्ये ॥

उपाधिः । पुं । धर्मचिन्तायाम् ॥ कुटुम्बव्यापृते ॥ छले ॥ विशेषणे ॥ यथा । शर्मादेवश्च विप्रस्य वर्म्मात्राता च भूभुजः । भूतिर्दत्तस्य वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेदिति ॥ यःस्वधर्ममन्यनिष्ठतया भासयतिस.। उपाधेः प्रतिबिम्बपक्षपातित्वं न बिम्बपक्षपातित्वम् । लक्षणन्तु । यावत्कार्यमवस्थायिभेदहेतौ उपाधितेति ॥ अयथार्थव्यवहृतौ ॥ साध्यव्यापकत्वे सतिहेतोरव्यापके ॥ यथा । धूमवान् वह्निरित्यत्र आर्द्रकाष्ठमुपाधिः । यत्र धूमस्तत्रार्द्रेन्धनसंयोगइति साध्यव्यापकता । यत्रवह्निस्तत्रार्द्रेन्धन संयोगइतिनास्ति अयोगोलकेआर्द्रेन्धनाभावात । अस्यप्रयोजनम् । व्यभिचारस्यानुमानम् ॥ समीपआधे' । उपपत्त्आधिर्वा । आधानमाधिः । उपसर्गयोः किः । उपगत आधिम् । अत्यादय इति समासः। उपधीयतेऽनेनेतिवा ॥

उपाध्यायः । पुं । अध्यापके ॥ वेदैकदेशाध्यापके ॥ यथाह मनुः । एकदेशन्तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपिवापुनः । योध्यापयतिवृत्त्यर्थमुपाध्यायःसउच्यते इति ॥ उपेत्यास्मादधीयतेइतिवि-

ग्रहः । इङश्चेति घञ् ॥

उपाध्याया । स्त्री । उपाध्यायाम् । स्व यंविद्योपदेष्ट्रिन्याम् ॥ उपेत्याधीय तेऽस्याः । इङश्चेतिसूत्रे अपादाने स्त्रियामुपसङ्ख्यान तदन्ताच्चवाङी षितिघञ् । टाप् ॥

उपाध्यायानी । स्त्री । उपाध्यायपत्न्याम् ॥ उपाध्यायस्य स्त्री । मातुलोपाध्याययारानुग्वा

उपाध्यायी । स्त्री । उपाध्यायायाम् । स्वयंविद्योपदेष्ट्रिन्याम् ॥ उपेत्यअस्याअधीयतेइति विग्रहे यातुस्वयमेवाध्यापिकातत्रवाङीष्वाच्यइति इङश्चेतिसूत्रस्थवार्त्तिकात् घञ्पक्षे ङीष् ॥ उपाध्यायान्याम् ॥ उपाध्यायस्यस्त्री । मातुलोपाध्याययोरानुग् वेत्यानगभावः ॥

उपानत् । स्त्री । पन्नध्याम् । पादुकायाम । चर्मादिनिर्मितेपादकोषे ॥ अस्या धारणविधिर्यथा । वर्षातपादिके छत्री दण्डी रात्र्यटवीषु च । शरीरत्राणकामोवै सोपानत्कःसदाव्रजेदिति ॥ गुणायथा । पादप्रधारणं वृष्यं मोजस्यं चक्षुषोर्हितम् । सुखप्रचारमायुष्यं वस्यंपादरुजापहमिति ॥ पादे उपनह्यते बध्यते । पादम् उपनह्यतिवा । णहबन्धने । सम्पदादि

त्वात् क्विप्चेतिवाक्विप् । नहिवृति इषीतिपूर्वपदस्यदीर्घः ॥

उपान्तः । त्रि । निकटे ॥ प्रान्ते ॥

उपान्त्यम् । त्रि । अन्त्यसमीपे ॥ उत्तर भाद्रपदायाम् ॥

उपायः । पुं । राजादीनामरिवशीकरणहेतौ सामादिचतुष्टये । भेदोदण्डःसामदानमित्युपायचतुष्टयमित्युक्तं ॥ क्वचित् सप्तोपाया अप्युक्ताः । यथा । सामदानञ्चभेदश्चदण्डश्चेतिचतुष्टयम् । मायोपेक्षेन्द्रजालञ्चसप्तोपायाः प्रकीर्त्तिताइति । शृङ्गारेतुपराविञ्चिदुपायौद्वौ प्रकीर्त्तितौ ॥ यथा । उपायौद्वौप्रयोक्तव्यौ कान्तासु सुविचक्षणैः । सामदानञ्चे तिप्राहुः शृङ्गाररसकोविदाः॥ भेदे प्रयुज्यमानेहि रसाभासस्तुजायते । निग्रहेरसभङ्गःस्यात्तस्मात्तौदूषितौबुधैः ॥ भेदेकपटस्यावश्यंजायमानत्वात् कपटंविनाभेदासम्भवात् सति तस्मिन्कपटे रसाभास एव ॥ उपगतौ ॥ स्वार्थसम्पादके । साधने । पुरुषकारे ॥ उपायतेऽनेन । अय० । इलश्चेति घञ् ॥

उपायज्ञः । त्रि । कार्यसाधनकुशले ॥

उपायनम् । न । तोषकारिणि । उपहारे ॥ व्रतादिप्रतिष्ठायाम् ॥ उपगमने ॥

॥ उपेयते उपाथ्यतेवा । इणगतौ अ यगतौवा । कर्मणि ल्युट् ॥

उपारत. । त्रि । सन्निवृत्ते ॥

उपार्ज्जनम् । न । उद्योगादिना ऽर्थस ङ्ग्रहे । अर्ज्जने ॥ स्वत्वहेतुभूतव्यापारे इतिस्मृति॰ ॥

उपार्ज्जित । त्रि । कृतोपार्जने ॥

उपालब्धः । त्रि । अधिक्षिप्ते ॥

उपालम्भः । पुं । दुर्वचने । दुर्वाक्ये ॥ सचगुणाविष्करणेन स्तुतिपूर्वकः । यथा । महाकुलस्य भवत. किमिदमुचितमिति । निन्दापूर्वकश्च । यथा । वन्धकीसुतस्य भवत स्तदिदमुचितमिति ॥ परपक्षदूषणे ॥ उपालभ्यते । लभ॰ । घञ् । उपसर्गात् खल् घञोरितिनुम् ॥

उपावृत्त. । त्रि । श्रमशान्त्यर्थं मुहुर्भूमौ लुठिताश्वे । लुठिते ॥ पुनरागते ॥ निवृत्ते ॥ उपावृत्तस्य पापेभ्य॰ पापेभ्यो निवृत्तस्येत्यर्थात् ॥ उपावर्त्तते स्म । वृतु॰ । क्त ॥

उपाश्रयः । पुं । आश्रये ॥ उपाश्रयणम् । श्रिञ॰ । एरच् ॥

उपाश्रित॰ । त्रि । एकान्तप्रेमभक्त्या शरणागते॥ उपाश्रयति उपाश्रीयते स्म वा । श्रिञ्॰ । गत्यर्थेतिकर्मणिक्तः ॥

उपासकः । पु । स्त्री । शूद्रे । सेवके ॥



त्रि । उपासनाकर्त्तरि ॥ शाक्त.शैवा वैष्णवश्च सौरोगाणपतस्तथा । द्वि॰ थोवीरःपशुश्चैव तेषु भावा स्त्रयो मता. ॥ सात्विकादिविभेदेनपुनश्चैते विभेदिताः ॥ उपासते । उप आस॰ । ण्वुल् ।

उपासङ्ग. । पु । तूणीरे ॥ उपासज्यन्ते॰ शराः अत्र । षञ्जसङ्गे । हलश्चेति॰ घञ ॥

उपासनम् । न । शराभ्यासे ॥ उप अस्यन्ते पणे । भावे ल्युट् ॥ उपास्तौ । आसने ॥ सगुणब्रह्मविषयकमानसव्यापाररूपे शाण्डिल्यविद्यादौ ॥ शुश्रूषानमस्कारादिप्रयोगेण सेवने ॥ भावनायाम् ॥ लौकिकात्माभिमानवत् यावतत्तद्देवतादिस्वरूपात्माभिमानाभिव्यक्ति स्तावल्लौकिकप्रत्ययाऽव्यवधानेन स्वेष्टदेवतादिरूपं मनसोपगम्य आसनंचिन्तनमित्यर्थ.॥ नकैवल्यमुपासनात् ॥ आसउपवेशने । भावेल्युट् ॥

उपासना । स्त्री । वरिवस्यायाम् । शुश्रूषायाम् । परिचर्य्यायाम् ॥ देवाराधने । देवताचिन्तने ॥ यथोक्तं श्रीदेवीभागवते । नु विष्णूपासना नित्या वेदेनोक्तातुकुत्रचित् । नवि॰ ष्णुदीक्षानित्यास्तिशिवस्यापितथैव

च ॥ गायत्र्युपासनानित्यासर्ववेदैः समीरिता। यथाविना त्वधः पातो ब्राह्मणस्यास्तिसर्वथा ॥ तावता कृत कृत्यत्वं नान्यापेक्षाद्विजस्यहि । गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ कुर्यादन्यन्नवा कुर्यादिति प्राहमनुःस्वयम्। विहायतान्तुगायत्रींविष्णूपास्तिपरायणः ॥ शिवोपास्तिरतोविप्रोनरकंयातिसर्वथा । तस्मादाद्ययुगेराजन् गायत्रीजपतत्पराः ॥ देवीपादाम्बुजरता आसन् सर्वद्विजोत्तमाः ॥ इति ॥ उपासना प्रयोजनं चित्तैकाग्र्यम् ब्रह्मार्थावधारणसमर्थत्वम्। सत्यलोकप्राप्ति रुपासनाया अवान्तरफलम्॥ उपासनम्। आस०। ण्यासेतियुच्। टाप्॥

उपासितः। त्रि। वरिवसिते । सेविते । कृतोपासने॥ उपास्यते स्म। आस० । गत्यर्थेति क्तः ॥

उपासीनः। त्रि। समीपस्थे॥ उपसमीपे आसीनः ॥ कृतोपासने ॥

उपास्तिः। स्त्री। सेवायाम्। तात्पर्येणानुष्ठाने ॥ उप आस०। क्तिन् ॥

उपास्यः। त्रि। आराध्ये ॥ ध्येये॥ उपासितुं योग्यः। ण्यत् ॥ उपास्यं यन्नत ब्रह्मतत्त्वमित्यत्रेषु डिण्डिमः ॥

उपाहतम्। त्रि। ताडिते ॥ उपाहन्य ते स्म। हन। क्तः ॥

उपाहितः। पुं। अनलोत्पाते। उल्कापातादौ। अग्न्युत्पाते ॥ उपआसन्नमाहितंफलं यस्य ॥ त्रि। आरोपिते ॥ संयोजिते ॥ उपाधीयतेस्म। दधातेर्हिः। क्तः ॥

उपाह्वयः। पुं। उपनामनि ॥

उपेक्षकः। त्रि। द्वयोर्विवदमानयोर्जयपराजयासंसर्गिणि। तत्कृतहर्षविषादाभ्यामसंस्पृष्टे। उदासीने ॥ प्रतीकाररहिते ॥

उपेक्षणम्। न। त्यजने। वर्जने ॥

उपेक्षा। स्त्री। क्षुद्रोपायभेदे। त्यागे॥ अयन्तुयुद्धविषये ॥ औदासीन्ये। अनपेक्षणे ॥ यथा। अपुण्यवत्सुचौदासीन्यमेवभावये नानुमोदनं नचाक्षेपम् ॥ उपेक्षणम्। ईक्ष०। गुरोश्चेत्यः। टाप ॥

उपेक्षिता। त्रि। उपेक्षायाः कर्त्तरि ॥

उपेक्ष्य। त्रि। उपेक्षाबुद्धिविषये। यथेष्टादेषयो रभावस्तस्मिन् ॥

उपेतः। त्रि। युक्ते ॥ अनुगते।

उपेता। पुं। उपायेनोपेयस्य साधकेआत्मनि ॥

उपेन्द्रः। पुं। केशवे। विष्णौ। ॥ इन्द्रमुपगतोऽनुजत्वात्। कुगतीतिसमासः ॥ इन्द्रलोकादप्युपरिलोकेवर्त्त

मानत्वाद्दा । मन्मोपरियथेन्द्रस्त्वस्था पितोगोभिरीश्वर. । उपेन्द्रइतिकृ-ष्णत्वां गास्यन्ति दिविदेवताः । इति हरिवंश. ॥ न । इन्द्रसन्निधैा ॥ अव्ययार्थे ॥

उपेन्द्रवज्रा । स्त्री । त्रिष्टुभ्भेदे । एकादशाक्षराद्वृत्तिविशेषे ॥ यथा । यदीन्द्रवज्रा चरणाद्यवर्णा नरेन्द्रसर्वेलघवो भवन्ति । उपेन्द्रतुल्यामलशीलशालिन्नुपेन्द्रवज्राभिहितातदानीम् ॥ यथा । उपेन्द्रवज्रादिमणिच्छटाभिर्विभूषणानां छुरितंवपुस्ते । स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानं सुरद्रुमूलेमणिमण्डपस्थमिति ॥

उपेयः । त्रि । उपायसाध्ये । प्राप्तव्ये ॥

उपेयिवान् । त्रि । उपगते ॥ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्चेतिक्वसुप्रत्ययान्तोनिपात. ॥

उपेयुषी । स्त्री । सङ्गतायाम् ॥ क्वसुप्रत्ययान्ता दुगितश्चेति ङीप् ॥

उपोढ' । पुं । बलविन्यासे । व्यूहे ॥ त्रि । निकटे ॥ ऊढे । विवाहिते ॥ वहेः कर्त्तरिक्त. ॥

उपोती । स्त्री । पूतिकायाम । पोईशाक ॥

उपोत्तमम् । न । अन्त्यस्य समीपे ॥

उपोदकी । स्त्री । पूतिकायाम् ॥

उपोदिका । स्त्री । पोतक्याम् । मोहन्याम् । पोई इतिप्रसिद्धे पत्रशाके ॥ यथा । एकाहं षड्भिरुपेता क्रमन्यै र्व्यञ्जनान्तरैः । तण्डुलैरानतव्याजैर्हंसत्येषा उपोदिका ॥ वटमत्रव च्छुभपत्रिका परितप्ततैलसुघाचिता । नवहिङ्गुवाससुवासिता पांर भोक्तृचित्तविकासिका ॥ सुतप्ततैलविपाचिता सुघनाम्लतक्रविपाचिता । सुपोखिकाज्यविभर्जिता भोक्तृरागुरसनाग्रनर्त्तकी ॥ पोदिका-शीतलावल्याश्लेष्मलावातपित्तहा । पथ्याचदोषशमनी निद्रापुष्टिकरीमतेति ॥ उपाधिक मुद्कमस्याम् । उत्तरपदस्यचेत्युदकस्योदादेश. । कप् । टाप् ॥

उपोदीका । स्त्री । पोतक्याम ॥

उपोद्घातः । पु । उदाहारे । प्रकृतोपपादके । प्रकृत्यर्थं वर्णयितुमर्थान्तरवर्णने । प्रस्तोष्यमाणोपपादके प्रतिपाद्यमर्थं बुद्धैासङ्गृह्य तदर्थमर्थान्तरवर्णने । युक्त्यासार्थनिदर्शने ॥ चिन्ताप्रकृतसिद्ध्यर्थामुपोद्घातंविदुर्बुधाः ॥ उपसमीपे उद्धननं स्थापनम् । घञ् ॥ निर्दिष्टोपपादकत्वमुपोद्घात इतिजगदीशतर्कालङ्कार. ॥

उपोषणम् । न । उपवासे । अभोजने

॥ उपदाहे । ल्युट् ॥

उपोषितम । न । उपवासे ॥ उपवसनम् । वसनिवासे । भावे गत्यर्थेति क्तः । वसतिक्षुधोरितीट । शासिवसीति षः ॥ त्रि । कृतोपवासे ॥

उप्तः । चि । कृतवपने । वोया । इति भाषा ॥ अवकीर्णे । वखेरा । इति भाषा ॥ उप्यते । टुवप० । क्त' ॥ मुण्डिते ॥

उप्तकृष्टम । चि । सबीजकृष्टक्षेत्रे । बीजवपनानन्तरं कर्षितक्षेत्रे । बीजाकृते ॥ उप्तञ्चतत् कृष्टञ्च । पूर्वकालेति समासः ॥

उप्ति. । स्त्री । वपने ॥ टुवप् । क्तिन् ॥

उभौ । त्रि । द्वयो ॥ द्विवविशिष्टस्य वाचकोनित्यद्विवचनान्तोयंशब्दः ॥

उभय । त्रि । द्विवचनोज्झितद्वयोः । युगले । द्वो इतिभाषा ॥ उभौ अवयवौ अस्य । तयप् । उभादुदात्तोनित्यमितितयपोऽयजादेशः । कथमुभये देवमनुष्याइति यतोबहूनामुभावयवौ नघटतः । नैषदोष । अत्रहि द्वौ राशीसमुदायस्यावयवौ । एकोदेवानाम् अपरोमनुष्याणामिति ॥ उभादुदात्तोनित्यमितिनित्यग्रहणस्येदम्प्रयोजनम् वृत्तिविषये उभशब्दप्रयोगोमाभूत् उभयशब्दस्यैव यथा स्यादिति ॥

उभयतः । अ । पार्श्वद्वये ॥ सर्वतः ॥ उभयस्मात् । तसिल् ॥

उभयथा । अ । उभयप्रकारे ॥ उभयैः प्रकारैः । प्रकारवचनेथाल् ॥

उभयद्युः । अ । उभयदिने । उभयोरह्नोः ॥ द्युश्चोभयाद्वक्तव्यइतिसाधुः ॥

उभयेद्युः । अ । दिनद्वये । उभयोरह्नोः ॥ सद्यःपरुदिति उभया देद्युस् निपातितः ॥

उम् । अ । रोषे ॥ अङ्गीकृतौ ॥ प्रश्ने ॥ अवनम् । उङ्शब्दे । डुमप्रत्ययः ॥

उमा । स्त्री । कात्यायन्याम् । दुर्गायाम् ॥ ओर्महेशस्य मा लक्ष्मीः ॥ उमेति मात्रा तपसेनिषिद्धत्वाद्वा । अ र्कारान्तात्पिटाप् । टायामिति भाष्यप्रयोगात् । अजादित्वाद्वा ॥ उंशिवं माति । मामाने मिमीतेवा । मा ङ्माने शब्देच । कातोनुपसर्गेतिकः । अजादित्वाट्टाप् ॥ अवति जयते वा । उङ्शब्दे । विभाषातिलमाषोमेतिनिपातनात् मक् ॥ अतस्याम् ॥ हरिद्रायाम् ॥ कीर्त्तौ ॥ कान्त्याम् ॥ शान्तौ ॥

उमाकटम् । न । हरिद्रादिरजसि ॥ उमायारजः । अलावूतिलेतिकटच् ॥

उमागुरुः । पुं । हिमालयाचले ॥

उमाचतुर्थी । स्त्री । ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्याम् ॥ यथोक्तं ब्रह्मपुराणे। ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यान्तु जाता पूर्वमुमासती । तस्मात् सात्र सम्पूज्या स्त्रीभिः सौभाग्यवृद्धये इति ॥

उमाधवः । पुं । सदाशिवे ॥ उमायाः धवः ॥

उमापतिः । पुं । शिवे ॥ उमायाःपतिः

उमावनम् । न । वाणपुर्याम् । शोणितपुरे । देवी कोटे

उमासुतः । पुं ।
उमासूनुः । पुं । } कार्त्तिकेये ॥ षष्ठी समासः ॥

उमेशः । पुं ।
उमेश्वरः । पुं । } महादेवे । ईश्वरे ॥ षष्ठीसमासः ॥

उम्बरः । पुं । द्वारोर्द्ध्वकाष्ठे ॥ देहल्याम् ॥

उम्बी । स्त्री । उम्बीतिलोकप्रसिद्धे च र्वणे ॥ मञ्जरीत्वर्द्धपक्वा या यवगोधूमयोर्भवेत् । तृणानलेनसम्भृष्टा बुधैरुम्बीतिसास्मृता ॥ उम्बीकफप्रदा बल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ।

उम्यम् । न । उमाक्षेत्रे । अतसीने ॥ उमानां भवनं क्षेत्रम् । विभाषातिलमाषोमेतियत् ॥

उरःसूत्रिका । स्त्री । मुक्ताकृतहारविशेषे ॥ उरसः सूत्रमिव । इवेप्रतिकृताविति कन् ॥

उरगः । पुं । वासुकिप्रभृतौ पन्नगे ॥ उरसागच्छति । उरसोलोपश्चेति डप्रत्ययः सकारलोपश्च ॥ सीसके ॥ खले ।

उरगस्थानम् । न । पाताले ॥

उरगाशनः । पुं । गरुडे ॥ उरगानश्नाति । अश० । ल्यु. ॥ उरगा अशनमस्येतिवा ॥

उरणः । पुं । मेषे ॥ ऋच्छति अर्यते वा । ऋगतौ । अर्त्तेः क्युरुच्चेति क्युरादेशः ॥

उरणाक्षः । पुं । पद्माटौषधौ । दद्रुघ्ने ॥ उरणस्य मेषस्याक्षिवदक्षि यस्य तत्तुल्यपुष्पत्वात् । अक्ष्णोदर्शनादिति च ॥

उरणाख्यः । पुं । पद्माटे । चक्रमर्दके । पवाँड इतिभाषा ॥ उरणस्यमेषस्यआख्या आख्याऽस्य ॥

उरभ्रः । पुं । स्त्री । मेषे ॥ उरुभ्रमति । भ्रमुचलने । अन्येभ्योऽपीतिडः । पृ० ॥ यद्वा । उनाशम्भुनारभ्यते । रभराभस्ये । बाहुलकाद्रक् ॥

उररी । अ । अङ्गीकृतौ ॥ विस्तारे ॥ वयतेर्बाहुलकात् ररीक् । सम्प्रसारणञ्च ॥

उररीकारः । पुं । अङ्गीकारे ॥

उररीकृतम् । त्रि । अङ्गीकृते । स्वीकृते ॥ विस्तृते ॥ उररीक्रियतेस्म । क्तः ॥

उरश्छद: । पुं । कवचे ॥ उरश्छाद्यते ऽनेन । छद अपवारणे । पुंसीतिघ । छादेर्घेद्रतिह्रस्व ॥

उरः । न । वक्ष स्थले । वक्षसि ॥ श्रेष्ठे ॥ इयर्त्ति । ऋगतौ । अर्त्तेरुश्चेत्य-सुन् । उरादेशः किच्च ॥

उरसिजः । पुं । स्त्रीस्तने ॥ उरसिजायते । जनी० । सप्तम्यामितिडः । ह लदन्तादित्यलुक् ॥

उरसिलः । त्रि । प्रशस्तवक्षोयुक्ते । उरस्वति ॥ प्रशस्त मतिशयितंवा उरोवक्षोयस्य । पिच्छादित्वादिलच् । उरसावलं लक्ष्यते इतिस्वामी ॥

उरस्कट' । पुं । वार्त्तानामुत्तरीयविशेषे । वामयज्ञोपवीतके । पञ्चवटे । बुकचाछाड इतिगौडभाषाप्रसिद्धे । गाती इतिभाषा ॥

उरस्त्रम् । न । उरश्छदे ॥

उरस्त्राणम् । न । नागोदरे । वक्षस्त्राणकवचे ॥

उरस्यः । त्रि । औरसेपुत्रे । स्वजाते ॥ उरसानिर्मित. पुत्रः । उरसोऽण्चेतियत् ॥ उरसा एकदिक्‌वा । उरसोयश्चेतियत् ॥ चात्तसिः । उरस्त. । उरस्कवा । शाखादिभ्योयः ॥

उरस्वान् । त्रि । उरसिले ॥ प्रशस्तमतिशयितंवा उरोयस्य विशालत्वात् । मतुप् । मादुपधाया इतिवः ॥

उरी । अ । अङ्गीकारे ॥ विस्तारे ॥ वयतेरीक । सम्प्रसारणञ्च वाहुलकात् ॥

उरीकार: । पुं । स्वीकारे ॥ विस्तारे ॥

उरीकृत. । त्रि । स्वीकृते ॥ विस्तृते ॥ उरीक्रियतेस्म । क्तः ॥

उरु. । त्रि । विशाले । विपुले । महति । वडे ॥ ऊर्णोति । ऊर्णुञ० । महतिह्रस्वश्चे तिकुप्रत्ययो नुलोपो ह्रस्वश्च ॥

उरुकाल' । पुं । }
उरुकालक: । पुं । } महाकालखतायाम् ।

उरुक्रम: । त्रि । भगवति ॥ उरुर्महान् क्रमः शक्तिर्यस्य ॥

उरुगाय: । पुं । श्रीकृष्णे ॥ बहुकीर्त्तिमति ॥

उरुचक्षा: । त्रि । विस्तीर्णतेजसि ॥

उरुमान. । पुं । पूजायाम् ॥

उररी । अ । अङ्गीकारे ॥ विस्तारे ॥

उरुवुक: । पुं । रक्तैरण्डे ॥

उरुवूक' । पुं । एरण्डे ॥ रक्तैरण्डे ॥ उरुं महान्तं वायति । ओवैशोषणे । उलूकादयश्चेत्यूक: ॥ वाथेऽस्यमूलं ग्राह्यम् ॥

उरुव्यचाः । पुं । राक्षसे ॥

उरोज: । पुं । स्तने ॥

उर्ज्जितः । त्रि । वर्द्धिते ॥

उर्द्रः । पुं । उद्रे । अम्बुविडाले ॥

उर्बटः । पुं । वत्सरे ॥ इतित्रिकाण्डशेषः ॥

उर्व्वरा । स्त्री । सर्वशस्याढ्यभूमौ ॥ भूमिमात्रे ॥ ऋच्छति । ऋगतौ । पचाद्यच । यद्वा ईर्य्यते । ऋदोरप् । उरुणामरा ॥ यद्वा । उर्व्यते । उर्वीहिंसायाम् । खनोघचेति घः । उपधायाश्चेतिदीर्घ स्तुसंज्ञापूर्वकत्वान्न । उर्वेराति । कः ॥ यद्वा । सम्पदादित्वात् क्विप् । राल्लोपः ॥ उर्चासौवराच । ऊर्वुवरा वा ॥

उर्व्वरितः । त्रि । परिशिष्टे । अवशिष्टे । उवरा इतिभाषा ॥ शेषिते ॥

उर्व्वशी । स्त्री । स्वर्गवेश्यायाम् ॥ उरून् महतोऽश्नुते व्याप्नोति वशीकरोतीतियावत् । मू० कः । उरु अश्नातीतिवा ॥

उर्व्वशीरमणः । पुं । चन्द्रवंशीयनृपतिविशेषे । पुरूरवसि । ऐले ॥

उर्व्वशीवल्लभः । पुं । पुरूरवसि । बौधे ॥

उर्व्वारुः । पुं । कर्कट्याम् ॥ स्वादुकर्कट्याम् ॥

उर्व्वारुक. । पुं । कर्कटिकाख्येचिर्भिटिकाख्येवा फलविशेषे ॥

उर्व्वी । स्त्री । भूमौ ॥ ऊर्णोति । ऊर्णुञ्०। महतिह्रस्वश्चेतिकुर्नुलोपोह्रस्वश्च । वोतोगुणवचनादिति ङीष् ॥

उलपः । पुं । न । गुल्मिन्याम् । शाखापत्रप्रचयवत्यां लतायाम् । वीरुधि ॥ पुं । कोमले तृणविशेषे । बल्बजेषु । उलुखड इतिगौडभाषा ॥ वलति । वलसंवरणे । विटपविष्टपविशिपोलपा इतिवलेः सम्प्रसारणं कपश्च ॥ उल्यते । उल सौत्रः आवरणार्थोदाहार्थोवा । कपश्चाक्रवर्मणस्येतिकपो वा ॥

उलिन्द. । पुं । देशविशेषे ॥ इत्युणादिकोषः ॥

उलूकः । पु । पेचके । घूके । दिवान्धे । कौशिके । उल्लू इति भाषा ॥ इन्द्रे ॥ शकुनिपुत्रे । भारतयोधिनि ॥ न । तृणविशेषे ॥ उचति । उचसमवाये । उलूकादय इतिसाधु. ॥ यद्वा । वलते । वल० । उलूकादित्वाद्वलेः सम्प्रसारणमूकश्च ॥

उलूकी । स्त्री । ताम्रायाः सुता शुकीतस्याः कन्यायाम् ॥ शुकी शुकानजनयत् उलूकीप्रत्युलूककानिति विष्णुपुराणे १ अंशे २१ अध्याय. ॥

उलूखलम् । न । उदूखले ॥ गुग्गुलौ ॥ ऊर्ध्वंखमुलूखम् । पृषोदरादि । उलूखं लाति लाआदाने । आतो

नुपेति कः ॥

उलूखलकम । न । उलूखलार्थे ॥ स्वार्थे कः ॥

उलूतः । पुं । अजगरसर्पे ॥

उलूपी । पुं । शिशुके । शोंशु इतिप्रसिद्धे मत्स्यप्रभेदे ॥ चलुम्पिनि । गौडभाषायाम् उपल इतिप्रसिद्धे अतिचञ्चले मत्स्यविशेषे ॥ शिशुमाराकृतौ मत्स्यविशेषे ॥ उ विस्मयजनकं रूपमस्यास्ति । अतइनि. । रलयोरैक्यम् । ओ'श्मशोः रूपमस्यास्तीतिवा ॥

उलूपी । स्त्री । अर्जुनभार्यायाम् । कौरव्यनाम्नो नागस्य कन्यायाम् ॥

उलूलुः । पुं । उत्सवकालिके गौडादिदेशप्रसिद्धे स्त्रीभि'क्रियमाणे शब्दविशेषे ॥

उल्का । स्त्री । अग्निनिर्गतज्वालायाम् ॥ अनले ॥ तेजःपुञ्जे । रेखाकारेऽन्तरीक्षात् पतज्ज्योतिषि ॥ अस्यारूपप्रदर्शनन्तु । दिविभुक्तशुभफलानां पततां रूपाणि यानि तान्युल्काः । धिष्ण्योल्काशनिविद्युत्तारा इतिपञ्चधाभिन्ना॰॥ अस्यालक्षणम् । उल्काशिरसिविशाला निपतन्ती वर्द्धतेप्रतनुपुच्छा । दीर्घाचभवति पुरुषं नं द्रावेद्भेदाभवन्त्यस्याः ॥ काश्यपोपि । ह्रस्वाच्छिखाचह्रस्वाप्रा रक्तानीलशिखोज्वला । पौरुषीयप्र॰ग्रेन उल्का नानाविधास्मृता । इति ॥ ओषति । उषदाहे । अर्थतेवा । ऋगतौ । शुकवल्कोल्का इति साधुः ॥

उल्कापातः । पुं । अग्निशिखावत्तेजःपाते ॥ उल्कायाः पातः ॥

उल्कामुखी । स्त्री । शिवौ । लोमाशिकायाम् । दीप्तजिह्वायाम । लोमडीइतिभाषा ॥ उल्कामुखेऽस्याः ॥

उल्मुकम् । न । अङ्गारे । अलाते ॥ ओषति । उष॰। उल्मुकदर्वीतिनिपातनाद्गातो' मस्यलः मुकप्रत्ययश्च ॥

उल्लङ्घनम् । न । अतिक्रमणे ॥ अन्यथाकरणे ॥ उत्लघेर्ल्युट् ॥

उल्ललः । त्रि । रोमशे । बहुरोमयुक्ते ॥

उल्ललन् । त्रि । उत्प्लवमाने ॥

उल्ललितः । त्रि । आन्दोलिते । नरलिते ॥ चलिते ॥

उल्लसन् । त्रि । शोभमाने ॥

उल्लसनकम् । न । रोमाञ्चे ॥

उल्लसितः । त्रि । उद्धते ॥ उद्भूते ॥ विचित्रिते ॥

उल्लाघः । त्रि । शुचौ ॥ कृष्णे । मरिचे ॥ दक्षे ॥ गदान्निर्गते । नीरोगे ॥ उल्लाघतेस्म । लाघसामर्थ्ये । गत्यर्थेतिक्त' । उल्लाघ्यतेस्म । अनुपसर्गा

त्फुल्लचीवेतिवा साधुः ॥

उल्लापः । पुं । काकुवाचि । शोकरोगादिनाध्वने र्विकारे ॥

उल्लाप्नम । न । वर्त्तिकादिऋजुकरणे ॥

उल्लासः । पुं । ग्रन्थपरिच्छेदे ॥ प्रकाशे ॥ आह्लादे ॥ वृद्धौ ॥ उल्लसनम् । लसश्लेषणक्रीडनयोः । घञ् ॥ अलङ्कारविशेषे । एकस्यगुणदोषाभ्यामुल्लासोन्यस्यतौ यदि ॥

उल्लिखित. । त्रि । उत्कीर्णे ॥ तनूकृते ॥ उपरिलिखिते ॥ चित्रिते ॥

उल्लिङ्गितः । त्रि । भङ्गिभिरेवसम्यगवगते ॥

उल्लेख' । पुं । उच्चारणे । कथने ॥ अलङ्कारविशेषे । बहुभिर्बहुधोल्लेखादेकस्योल्लेखइष्यते । एकोनबहुधोल्लेखोप्यसौविषयभेदत. ॥ स्त्रीभिः कामोऽर्थिभिःस्वर्द्रु कालः शत्रुभिरैक्षि स' । गुरुर्वचस्यर्जुनोऽयंकीर्त्तौभीष्मः शरासने ॥ उल्लेखनम् । उत् लिखेर्घञ् ॥

उल्लेखनम् । न । वमने ॥ खनने ॥ उच्चारणे ॥ यथा । मासपक्षतिथीनाञ्चनिमित्तानाञ्चसर्वशः । उल्लेखनमकुर्वाणोनतस्यफलभाग्भवेदिति ॥ लिख० । ल्युट् ॥



उल्लोचः । पुं । वितानो । चन्द्रातपे । चंदोआ इतिभाषा ॥ ऊर्द्धं लोचति । लोचृभासने । अच् ॥ ऊर्द्धंलोच्यते वा । लोचृदर्शने । घञ् ॥ कुत्वन्तुन निष्ठायामनिट इतिवचनात् । अस्य तुतन्न सेट्त्वात् ॥

उल्लोलः । पु । कल्लोले । महोर्मौ । वडढेउ इतिगौडभाषा ॥ उत्लोडयति । लोडृउन्मादे । णिच् । पचाद्यच् । डलयोरेकत्वम् ॥

उल्वम् । न । जरायौ । गर्भवेष्टनचर्मणि ॥ कलले ॥ गर्त्ते ॥ उल्लीयते । लीङ्श्लेषणे । उल्वादयश्चेतिसाधु । यद्वा । ओलति उल्यतेवा । उलू सौचोदाहे । वल्यते वा वलप्राणने । अथवा उच्यतिउच्यते समवैत्यत्र वा । उचसमवाये । माग्वत् ॥

उल्वणः । त्रि । व्यक्ते । स्पष्टे ॥ उद्वणति वणशब्दे । पचाद्यच् । पृषोदरादिः ॥

उशन् । त्रि । कामयमाने ॥

उशत्तमः । त्रि । कमनीये ॥

उशना । पुं । भार्गवे । शुक्रे ॥ वष्टि । वशकान्तौ । वशेः कनसिः । ग्रह्यादित्वात सम्प्रसारणम् । ऋदुशन्-सित्यनङ् । उशना उशनसौ । अस्य सम्बुद्धौ वा अनङ् नलोपश्चवा । ते

न । ह्रेउशनन् ह्रेउशन ह्रेउशन: ॥

उशिक् । पुं । अग्नौ । वीतिहोत्रे ॥ घृते ॥ त्रि । कमनीये ॥ यथा । न यद्वचश्चित्रपदं हरेर्यशो जगत्पवित्रं प्रगृणीत कर्हिचित् । तद्वायसंतीर्थमुशन्ति मानसा न यत्र हंसा निरमन्त्युशिक्क्षया इति श्रीभागवतम् ॥ वष्टि उश्यते वा । वश० । वशः किदिति इजिप्रत्ययः ॥

उशी: । स्त्री । वाञ्छाविशेषे ॥

उशीनर: । पुं । गान्धाराख्ये देशविशेषे । खन्धार इति प्रसिद्धे ॥ चन्द्रवंशोद्भवस्य शिविन्नपते: पितरि ॥

उशीर: । पुं । न । वीरणाङ्गौ । नलदे । खस इति प्रसिद्धे ॥ उश्यते । वश० । वश: किदितीरन् अस्य गुणा यथा । उशीरं पाचनं शीतंस्तम्भनं लघुतिक्तकम् । मधुरं ज्वरहृद्वान्तिमदनुत् कफपित्तहृत् ॥ तृष्णास्त्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहमिति ॥

उशीरिक. । त्रि । उशीरविक्रेतरि ॥ उशीरं पण्यमस्य । किसरादिभ्य: ष्ठन् ॥

उशीरी । स्त्री । लघुकाशे । नीरजे ॥ उशीरीमधुराशीतापित्तदाहक्षया नहरेत् ॥

उष: । पुं । कामिनि ॥ गुग्गुलौ ॥ राविशेषे ॥ न । पांशुलवणे ॥

उषणम् । न । मरिचे ॥ पिप्पलीमूले ॥ ओषति । उष० । बाहुलकात्क्युन । ल्युट्वा । संज्ञापूर्वकत्वात् गुणाभाव: ॥

उषणा । स्त्री । कणायाम् । पिप्पल्याम् ॥ शुण्ठ्याम् ॥ टाप् ॥ चविके ॥

उषती । स्त्री । अकल्याणवचसि । निन्द्यार्थार्यावाचि ॥ उषे: शतरि आगमशासनस्यानित्यत्वात्नुमभाव: ॥ त्रि । अशुभयुक्तवचसि ॥ उषन् व्योहार: उषतवच: ॥

उषप: । पुं । सूर्य्ये ॥ अग्नौ ॥ ओषति । उष० । उषिकुटिदलिकचिखजिभ्य: कपन् ॥

उषर्बुध: । पुं । कृशानौ । पावके ॥ रक्तचित्रके ॥ उषसि सन्ध्यायां बुध्यते प्रकाशते । बुध० । इगुपधत्वात्क: । अहरादीनामित्यस्य व्यवस्थितविभाषात्वान्नित्यं र: ॥

उष३ । न । प्रत्यूषसि । अहर्मुखे ॥ एतस्यस्वरूपन्तु पञ्चपञ्चउष: काल इति । पञ्चपञ्चाशत् घटिकोत्तरमुष: काल इत्यर्थ: ॥ ओषत्यन्धकारम् । उषदाहे । उष: किदित्यसि: ॥ दशपाद्यान्तुवस: किदिति पाठ: । वसति सूर्य्योऽत्रेति उषा: । अपोभीति

उषा | उष्ट्रगो

कञ्च स्ववसस्वतवसोमासउषसस्य तदूप्यते इतिवार्त्तिकस्य समुषद्भिरि त्युदाहरणं विवृण्वद्भिर्हरदत्तादिभिरयं पाठ. पुरस्कृतः॥ स्त्री। दिवो दुहितरि देवतायाम्॥

उषसी। स्त्री। पितृप्रस्वाम्। सायंसन्ध्यायाम्॥

उषस्तिः। पु। ऋषिविशेषे। चाक्रायणे॥

उषस्यम्। न। हविर्विशेषे॥ त्रि। तद्देवताकद्रव्ये॥उषस् शब्दोदिवोदुहितरं देवता माचष्टे। सा देवता अस्य। वाय्वृतुपित्रुषसो यत्।

उषा। अ। रात्रौ॥ रात्र्यन्ते॥ ओष ति। उष०। का प्रत्ययः॥ सातु नचन्द्रतेजः परिहानिमारभ्य भानोरर्द्धोदयं यावद्भवति। यथाह वराहः। अर्द्धास्तमयात् सन्ध्याव्यक्तीभूता न तारकायावत्। तेज परिहानि रुषा भानोरर्द्धोदयं यावदिति॥

उषा। स्त्री। वाणासुरसुतायाम्। अनिरुद्धस्य भार्य्यायाम्॥ रात्रौ। धेनौ॥ सायंसन्ध्यायाम्॥ ओषति। उष०।इगुपधेतिकः। टाप्॥ यात्रामु हूर्त्तान्तरे॥ यथा। प्रभ्रष्टद्युतितारकास्फुटतटी प्राचीभवे न्निर्मला त्वीषद्रक्तविलोहितान्तधवलादेवैःसदा वाञ्छिता। नो वारं न तिथिं न योगकरणं लग्नञ्च नाप्रेक्ष्यते हत्वा दैत्यसहस्त्र सञ्चयमुषा नूनं करोत्युन्नति रि...॥

उषाकलः। पु। कुक्कुटे। ताम्रचूडे॥ उषायां कलोऽस्य॥

उषापतिः। पुं। अनिरुद्धे। कामात्मजे॥ उषाया पतिः॥

उषारमणः। पुं। अनिरुद्धे। कन्दर्पतनये॥ उषायाः रमणः॥

उषितः। त्रि। व्युषिते। पर्य्युषिते। वसाइतिभाषा॥ प्लुष्टे। दग्धे॥ स्थिते। कृतनिवासे॥ त्वरिते॥ उष्यते स्म। उष०। क्तः॥ वसेर्गत्यर्थाकर्मकेतिक्तः। यजादि। अनुदात्तत्वादिट् प्रतिषेधे प्राप्ते वसतिक्षुधो रितीट॥

उषेशः। पुं। अनिरुद्धे॥

उष्ट्रः। पुं। कण्टकाशने। मरुद्विपे। क्रमेलके। लम्बोष्ठे॥ ओषति उष्यते वा। उष०। उषिखनिभ्यां कित् इतिष्ट्रन्। बाह्यरथे॥ इतिधरणी॥

उष्ट्रकाण्डी। स्त्री। रक्तपुष्प्याम्। कर्णपुष्प्याम्॥ उंटाटीइतिगौडभाषा॥

उष्ट्रगोयुगम्। न। उष्ट्रयोः॥ द्वावुष्ट्रौ द्विरुगोयुगच्॥

उष्ट्रगोष्ठम्। न। उष्ट्रशालायाम्॥ उष्ट्रा

उष:

न । ह्रेउशनन् ह्रेउशन ह्रेउशन:॥

उशिक् । पुं । अग्नौ । वीतिहोत्रे ॥ घृ ते ॥ त्रि । कमनीये ॥ यथा । न यद्वचश्चित्रपदंहरेर्यशोजगत्पवित्रंप्रगृणीत कर्हिचित् । तद्वायसंतीर्थमुशन्तिमानसा न यत्रहंसा निरमन्त्युशिकक्षया इतिश्रीभागवतम् ॥ वष्टि उश्यतेवा । वश० । वश:किदितीजिप्रत्यय: ॥

उशी. । स्त्री । वाञ्छाविशेषे ॥

उशीनर: । पुं । गान्धाराख्ये देशविशेषे । खन्धारइति प्रसिद्धे ॥चन्द्रवंशोद्भवस्यशिविन्रपते: पितरि ॥

उशीर: । पुं । न । वीरणाङ्घ्रौ । नलदे । खस् इतिप्रसिद्धे ॥ उश्यते । वश० । वश: किदितीरन् अस्य गुणा यथा । उशीरं पाचनं शीतंस्तम्भनं लघुतिक्तकम् । मधुरं ज्वरहृद्वान्तिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥ तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहमिति ॥

उशीरिक. । त्रि । उशीरविक्रेतरि ॥ उशीरंपण्य मस्य । किसरादिभ्य: ष्ठन् ॥

उशीरी । स्त्री । लघुकाशे । नीरजे ॥ उशीरीमधुराशीतापित्तदाहक्षया नहरेत् ॥

उष: । पुं । कामिनि ॥ गुग्गुलौ ॥ रा

उष४

विशेषे ॥ न । पांशुलवणे ॥

उषणम् । न । मरिचे ॥ पिप्पलीमूले ॥ ओषति । उष० । वाहुलकात्क्यन् । ल्युट्वा । संज्ञापूर्वकत्वात् गुणाभाव: ॥

उषणा । स्त्री । कणायाम् । पिप्पल्याम् ॥ शुण्ठ्याम् ॥ टाप् ॥ चविके ॥

उषती । स्त्री । अकल्याणवचसि । निन्द्यार्थार्यांवाचि ॥ उषे:शतरि आगमशासनस्यानित्यत्वात्नुमभाव: ॥ त्रि । अशुभयुक्तेवचसि ॥ उषन् श्रोतार: उषत्वच: ॥

उषप: । पुं । सूर्ये ॥ अग्नौ ॥ ओषति । उष० । उषिकुटिदलिकचिखजिभ्य: कपन् ॥

उषर्बुध: । पुं । कृशानौ । पावके ॥ रक्तचित्रके ॥ उषसि सन्ध्यायां बुध्यते प्रकाशते । बुध० । इगुपधत्वात्क: । अहरादीनामित्यस्य व्यवस्थितविभाषात्वान्नित्यंर: ॥

उष४ । न । प्रत्यूषसि । अहर्मुखे ॥ एतस्यस्वरूपन्तु पञ्चपञ्चउष: कालइति । पञ्चपञ्चाशतघटिकोत्तरमुष: कालइत्यर्थ. ॥ ओषत्यन्धकारम् । उपदाहे । उष:किदित्यसि: ॥ इशपाद्यान्तुवस: किदितिपाठ: । वसति सूर्यणसहेति उषा: । अपोभीति

ऋच स्ववस्स्वतवसोमांसउषसस्म तद्दृश्यते इतिवार्त्तिकस्य समुषद्भिरित्युदाहरणं विवृत्वद्भिर्हरदत्तादि-भिरयं पाठः पुरस्कृतः ॥ स्त्री । दिवो दुहितरि देवतायाम् ॥

उषसी । स्त्री । पितृप्रसूयाम् । सायंसन्ध्यायाम् ॥

उषस्तिः । पुं । ऋषिविशेषे । चाक्रायणे ॥

उषस्यम् । न । हविर्विशेषे ॥ त्रि । तद्देवताकद्रव्ये ॥ उषस् शब्दोदिवोदुहितरं देवता माचष्टे । सा देवता अस्य । वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ।

उषा । अ । रात्रौ ॥ रात्र्यन्ते ॥ ओषति । उष० । क। प्रत्ययः ॥ सा तु न चन्द्रतेजः परिहानिमारभ्य भानोरर्द्धोदयं यावद्भवति । यथाह वराहः । अर्द्धास्तमयात् सन्ध्याव्यक्तीभूता न तारकायावत् । तेज परिहानि मुषाभानोरर्द्धोदयं यावदिति ॥

उषा । स्त्री । वाणासुरसुतायाम् । अनिरुद्धस्य भार्य्यायाम् ॥ रात्रौ । धेनौ ॥ सायंसन्ध्यायाम् ॥ ओषति । उष० । इगुपधेति कः । टाप् ॥ यात्रामुहूर्त्तान्तरे ॥ यथा । प्रभ्रष्टद्युतितारकास्फुटतटी प्राचीभवे त्रिर्मला त्वीषद्रक्तविलोहितान्तधवलादेवैः सदा वाञ्छिता । नो वारं न तिथिं न योगककरणं लग्नञ्च नाप्रेक्ष्यते हत्वा दोषसहस्त्रसञ्चयमुषा नूनं करोत्युन्नतिमि ॥

उषाकलः । पु । कुक्कुटे । ताम्रचूडे ॥ उषायां कलोऽस्य ॥

उषापतिः । पु । अनिरुद्धे । कामात्मजे ॥ उषाया पतिः ॥

उषारमणः । पुं । अनिरुद्धे । कन्दर्पतनये ॥ उषायाः रमणः ॥

उषित । त्रि । व्युषिते । पर्य्युषिते । वसाइतिभाषा ॥ प्लुष्टे । दग्धे ॥ स्थिते । कृतनिवासे ॥ त्वरिते ॥ उष्यतेस्म । उष० । क्तः ॥ वसेर्गत्यर्थां कर्मकेतिक्तः । यजादि । अनुदात्तत्वादिट् प्रतिषेधे प्राप्ते वसतिक्षुधोरितीट ॥

उषेशः । पुं । अनिरुद्धे ॥

उष्ट्रः । पुं । कण्टकाशने । मरुद्विपे । क्रमेलके । लम्बोष्ठे ॥ ओषति उष्यतेवा । उष० । उषिखनिभ्यां कित्तिष्ट्रन् । वाह्यरथे ॥ इतिधरणी ॥

उष्ट्रकाण्डी । स्त्री । रक्तपुष्प्याम् । कर्णपुष्प्याम् ॥ उंटाटीइति गौड़भाषा ॥

उष्ट्रगोयुगम् । न । उष्ट्रयोः ॥ द्वावुष्ट्रौ । द्वित्वेगोयुगच् ॥

उष्ट्रगोष्ठम् । न । उष्ट्रशालायाम् ॥ उष्ट्रा

शांस्थानम् । गोष्ठच् ॥

उष्ट्रधूसरपुच्छिका । स्त्री । विछाती विचिटीति गौडभाषाप्रसिद्धे वृक्षविशेषे ॥

उष्ट्रपादिका । स्त्री । मदनमालोतिगौडभाषाप्रसिद्धे वृक्षविशेषे । भूमिमत्तायाम् ॥

उष्ट्रशिरोधरम् । न । उष्ट्रग्रीवसंज्ञे भगन्दररोगविशेषे ॥ तस्य लक्षणम् । प्रकोपणैः पित्तमतिप्रकोपितं करोति रक्तापिटकां गुदागताम् । तदाशु पाकाद्धिमपूतिवाहिनी भगन्दरन्तूष्ट्रशिरोधरं वदेतिनिदानम् ॥

उष्ट्रिका । स्त्री । मृद्भाण्डप्रभेदे । मृन्मयेमद्यभाण्डे ॥ करभयोषिति । ऊंटिनीइतिभाषा ॥ वृश्चिकालीवृक्षे ॥

उष्ट्री । स्त्री । मृद्भाण्डविशेषे ॥ करभ्याम् । वाम्याम ॥ उषे.प्ट्रन्‌ल्लानङीष् ॥

उष्ण. । पुं । ग्रीष्मर्त्तौ । निदाघे ॥ आतपे ॥ पलाण्डौ ॥ नरकान्तरे ॥ त्रि । अशीते ॥ ओषति । उष० । इण्षिञ्जिदीङुष्यविभ्योनगितिनक् ॥ निरालस्ये । चतुरे । दक्षे ॥ उष्णस्पर्शप्रकारित्वमस्यास्ति । अर्श-आद्यच् ॥

उष्णकः । पुं । निदाघे ॥ ज्वरे ॥ त्रि । क्षिप्रकारिणि ॥ आतुरे ॥ उष्णमिव उष्णम्



। तंकारोति । शीतोष्णाभ्यांकारिणीतिकन् ॥ उष्णं कार्यमस्य । कालप्रयोजनाद्रोगे इतिकन् ॥ यावादिषु च्छता वृष्णशीतइतिस्वार्थेकनवा ॥

उष्णगुः । पुं । सूर्य्ये ॥ उष्णागावोऽस्य ॥

उष्णनदी । स्त्री । वैतरिण्याम् ॥

उष्णरश्मि. । पुं । सूर्य्ये ॥ उष्णरश्मयोऽस्य ॥

उष्णवातः । पुं । मूत्राघातविशेषे ॥

उष्णवारणम् । न । आतपत्रे । छत्रे ॥

उष्णवीर्य्य । पुं । शिशुमारे ॥ त्रि । वीर्य्योष्णवस्तुनि ॥ उष्णं वीर्यमस्य ॥

उष्णा । स्त्री । क्षयव्याधौ ॥ सन्तापे ॥ पित्ते ॥

उष्णांशु. । पु । सूर्य्ये ॥

उष्णागम. । पुं । निदाघकाले ॥ उष्णस्य आगमो यस्मिन् ॥

उष्णालुः । त्रि । उष्णपीडिते ॥ उष्णं नसहते । शीतोष्णेभ्यालुः ॥

उष्णासहः । पु । हेमन्तर्त्तौ ॥

उष्णिका । स्त्री । यवाग्वाम् । जाउ इतिगौडभाषा ॥ अल्पमन्नमस्याम् । प्राग्वयकोष्णिकेसंज्ञायामितिकन् । निपातनादन्नशब्दस्योष्णादेशः ॥ दच्छायाम् ॥

उष्णिक् । स्त्री । सप्ताक्षरायांवृत्तौ ॥ यथा । रङ्गे बाहुविस्फुरणात् कुम्भीन्द्रा

न्मदलेखा । कस्माभून्मुरमञ्जो' कस्तूरीरसचर्चा इति ॥ उत् लिह्यति । लिह प्रीतौ । ऋत्विगित्यादिना उत्पूर्वात् लिहेः किन् । निपातनादुपसर्गान्तलोपः षत्वञ्च । क्विन्नन्तत्वात् कुत्वेनहस्य घ ॥

उष्णीषः । पुं । न । शिरोवेष्टनवस्त्रे । पाघ पघडीइतिभाषा ॥ अस्यगुणा यथा । उष्णीषं कान्तिकृत् केश्यं रजो वातकफापहम् । लघुचेत्तु स्यते यस्माद्गुरुपित्ताक्षिरोगकृदितिभावप्रकाशः ॥ किरीटे ॥ लक्षणान्तरे ॥ उष्णमीषतेहिनस्ति । ईषगतिहिंसादर्शनेषु । इगुपधेतिकः । शकन्ध्वादिः ॥

उष्णोदकम् । न । तप्तजले ॥ क्वाथ्यमानं पादावशेषाद्वाविशेषपादहीन-जले । अस्यगुणाः । तत्पादहीनंवातघ्नं मध्यहीनन्तुपित्तनुत् । कफघ्नं पादशेषस्थं पानीयं लघुदीपनमि-ति ॥ उष्णञ्चतत् उदकञ्च ॥

उष्णोपगमः । पुं । निदाघे ॥ उष्णःउपगमोऽत्र ॥

उष्मः । पुं । निदाघे ॥ आतपे ॥ वसन्तकाले ॥

उष्मकः । पुं । ग्रीष्मर्त्तौ । उषति दहति । उषदहायाम् । अन्येभ्योपीति मनिन् । यावादित्वात् कन् ॥

उष्मपाः । पुं । पितृगणविशेषे ॥ उष्मपास्तु कवेः सुताः ॥ उष्माणंपिबन्ति । पापाने । क्विप् ॥ यावदुष्णंभवत्यन्नं यावदश्नन्ति वाग्यताः । पितरस्तावदश्नन्तियावन्नोक्ताहविर्गुणा इति स्मृतिः ॥

उष्मागमः । पुं । आतपे । निदाघे ॥ ओषतीत्युष्मा । अन्येभ्यइतिमनिन् । आगच्छतीत्यागमः । अच् । उष्मातापआगमोऽत्र ॥

उस्रः । पुं । वृषे ॥ मयूखे । किरणे ॥ वसन्तिरसा अस्मिन् । वस० स्फायितञ्चीतिरक् । यजादित्वात् सम्प्रसारणम् । नरपरेतिषत्वाभावः ॥

उस्रा । स्त्री । अर्जुन्याम् । गवि ॥ उपचित्रायाम् ॥ वसति क्षीरमस्याम् । उस्राट्टाप् ॥

उह । अ । सम्बोधनार्थ ॥ एवार्थे ॥ उच हचेतिविग्रहः ॥

उहह । अ । सम्बोधने ॥ उहच हच ॥

उहानः । पुं । देशविशेषे ॥

उह्यमानः । त्रि । आकृष्यमाणे ॥ वहनेनप्राप्यमाणे ॥ वहेःकर्मणिशानच् ॥

उह्रः । पुं । अनडुहि ॥ वहति । वह० । दशपाद्यां स्फायितञ्चीतिसूत्रेदम्भिवह्निवसीतिपाठात् रक् ॥

हें भात् ऊधादेशः ॥

# ऊः

ऊधस्यम् । न । दुग्धे । ऊधसि भवम् । यत् ॥

ऊनः । त्रि । न्यूने । हीने । असम्पूर्णे ॥ ऊनयति । ऊनपरिहाने ॥ पचाद्यच् ॥

ऊम् । अ । रोषोक्तौ ॥ पृच्छायाम् ॥ ऊयते । ऊयी० मुक् प्रत्ययः ॥

ऊमम् । न । नगरे ॥ अवति । अव० । अविसिवीत्यादिनामन्कित् ॥

ऊररी । अ । अङ्गीकारे ॥ ततौ । विस्तारे ॥ ऊयते । ऊयी० । बाहुलकात् ररीक् ॥

ऊरव्यः । पुं । वैश्ये ॥ ब्रह्मण ऊरोर्जातः । शरीरावयवाद्यत् । गुणादेशौ ॥ त्रि । ऊरुसम्भवे ॥

ऊरी । अ । अङ्गीकृतौ ॥ विस्तारे ॥ ऊयते । ऊयी० । बाहुलकाद्रीक् ॥

ऊरीकृतः । त्रि । अङ्गीकृते ॥ तते । विस्तृते ॥ ऊरीक्रियतेस्म । क्तः ॥

ऊरुः । पुं । जानूपरिभागे । सक्थिनि ॥ ऊर्णूयते आच्छाद्यते । ऊर्णुञ्० । ऊर्णोतेर्नुलोपश्चेति कर्मणि कुः ॥

ऊरुजः । पुं । वैश्ये ॥ ऊरोर्जातः । जनी० । पञ्चम्यामजातावितिडः ॥

ऊरुपर्वा । पुं । न । जानुनि । अष्ठीवति । घोंटू घुटना इति भाषा ॥ ऊरोः पर्व ॥

ऊ । अ । वाक्यारम्भे ॥ रक्षायाम् ॥ अनुकम्पायाम् ॥ सम्बोधने ॥

ऊः । पुं । महेश्वरे ॥ चन्द्रे ॥ प्रापिते ॥ अवति । अवरक्षणादौ । कर्त्तरि क्विप् । ज्वरत्वरेत्यूठ ॥ ऊकारे ॥

ऊढः । त्रि । विवाहिते ॥ वहनकर्मणि । कृतवहने ॥ धृते ॥ उह्यतेस्म । वह । क्तः ॥

ऊढकङ्कटः । त्रि । वर्मिते । सन्नद्धे । वद्धसन्नाहे ॥ ऊढो धृतः कङ्कटः कवचो येन ॥

ऊढा । स्त्री । भार्यायाम् ॥ टाप् ॥

ऊतः । त्रि । स्यूते ॥ ऊयतेस्म । ऊयी तन्तुसन्ताने । क्तः ॥

ऊतिः । स्त्री । रक्षणे ॥ स्यूतौ । सिमाइ इति भाषा ॥ लीलायाम् ॥ अवनम् । अव० । ऊतियूतीत्यादिना क्तिन् । ज्वरत्वरेत्यूठ ॥

ऊधन्यम् । त्रि । ऊधसि हिते ॥ गवादिषु ऊधसोनङ्चेतियत् ॥

ऊधस् । न । आपीने । क्षीराशये ॥ वहति उनत्तिवा । वहप्रापणे उन्दीक्लेदनेवा । असुन् । ऊधसोनङितिनि

ऊररी । अ । अङ्गीकारे ॥ विस्तारे ॥

ऊरुस्तम्भः । पुं । रोगविशेषे ॥ तस्य रूपम् । परकीया विपगुरुस्यातामति श्रमव्यथौ । ध्यानाङ्गमर्द्दस्तैमित्यतन्द्राछर्द्यरुचिज्वरैः ॥ संयुतौ पादसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिः । तमूरुस्तम्भमित्याहु राढ्यवातमथापरे इति ॥

ऊरुस्तम्भा । स्त्री । कदलीवृक्षे ॥

ऊर्क् । न । वले ॥ अन्ने ॥ ऊर्ज्जेर्लक्ष्मीत्वादिषु भ्राजभासेति क्विप् ॥ अन्नतशब्दाभिधेयोऽन्यन्तसारभूतः स्वच्छोन्नरस ऊर्गुच्यते इतिमीमांसकाः ॥

ऊर्ज्जः । पुं । कार्त्तिकमासे ॥ उत्साहे ॥ वले ॥ प्राणने ॥ कार्त्तिकनाम्निवर्षविशेषे ॥ न । जले । पानीये ॥ ऊर्जयति उत्साहयति जिगीषून् । ऊर्ज्जवलप्राणनयोः । ण्यन्तात् पचाद्यच् ॥ असुनि सान्तोप्ययम् ॥

ऊर्ज्जस्वलः । त्रि । वलाधिके । ऊर्जस्विनि ॥ अतिशयितः ऊर्जो वलमस्यास्ति । ज्योत्स्नातमिस्रेति ऊर्जसो वलच् । अदन्त ऊर्जशब्दाद्वलचि सगपिनिपात्यः ॥ अलङ्कारविशेषे ॥ रसभेदतदाभासतत्प्रशमानानिबन्धनेन रसवत् प्रायक ऊर्जस्वलालङ्कार इति रुद्रात् । तत्प्रशमनानवन्धने समाहितालङ्कारश्चेत्यर्थः ॥

ऊर्ज्जस्वी । त्रि । वलाधिके । ऊर्जस्वले ॥ अतिशयित ऊर्जो वलमस्यास्ति । ज्योत्स्नातमिस्रेति विनिः । अदन्तात् विनिकृते सगपिनिपात्यः ॥ न । अलङ्कारविशेषे ॥ ऊर्ज्जस्विरूढाहङ्कार मिति तस्य लक्षणम् । साहङ्कारवस्त्वभिधान मित्यर्थः ॥

ऊर्ज्जितः । त्रि । वलाद्यतिशययुक्ते । वलप्रकर्षशालिनि ॥ वलार्थादूर्जशब्दात्तारकादित्वादितच् ॥ वलार्थादूर्जगत्यर्थाकर्मकेत्यादिना कर्त्तरि क्तो वा ॥

ऊर्ज्जितशासनः । पु । नारायणे ॥ श्रुतिस्मृतिलक्षणमूर्जितं शासनमस्य । यथा । श्रुतिस्मृती ममैवाज्ञे यस्तेउल्लङ्घ्य वर्त्तते । आज्ञाच्छेदी मम द्वेषी मद्भक्तोपि न वैष्णवः ॥ इति भगवद्वचनम् ॥

ऊर्ज्जितिः । स्त्री । उत्कर्षे ॥

ऊर्णनाभः । पुं । मर्कटके । लूतायाम् । तन्तुसर्जने प्रसिद्धजीवे । मकडी इतिभाषा ॥ ऊर्णेव तन्तुर्नाभावस्य । अजितियोगविभागादच् । ऊयामोरितिह्रस्वः ॥

ऊर्णनाभिः । पुं । लूतायाम् ॥ ऊर्णानाभावस्य ॥

ऊर्णा । स्त्री । मेषादिलोम्नि । ऊनइति भाषा ॥ भ्रुवोरन्तरावर्त्ते ॥ सतुभ्रूद्वय मध्येसूक्ष्मालतन्तुरूप्यः शुभायतए क प्रशस्तावर्त्तो महापुरुषलक्षणम् । चक्रवर्त्त्यादीनां महायोगिनाञ्च भवति ॥ ऊर्णोति । ऊर्णुञ० । अ न्येभ्योपीतिडः । ऊर्णोतेर्ड इतिडो वा ॥

ऊर्णायु । पुं । लूताभङ्गे । ऊर्णनाभे ॥ मेषे ॥ मेषलोमकम्बले । पट्टू देव डु लोई पुरुखी इतिभाषा ॥ ऊर्णा अस्यास्ति । ऊर्णायायुस् । सित्वात् पदत्वम् । तेनयस्येतिलोपेन ॥

ऊर्द्दरः । पुं । राक्षसे ॥ शूरे ॥ ऊर्ज्जम र्दृणाति । दृ० । ऊर्जिदृणातेरल- चापूर्वपदान्त्यलोपश्च । अलचोःस्वरे भेदः ॥

ऊर्द्ध. । त्रि । उच्छ्रिते ॥ तुङ्गे ॥ उपरि ष्टात् उपर्य्यर्थे ॥ दण्डवत् स्थिते ॥ ऊर्द्धशब्दो दीर्घादिर्निर्बकारः सव- कारश्चदृश्यते ॥

ऊर्द्धक. । पुं । मृदङ्गविशेषे ॥ यवमध्या कृतिरूर्द्धक. ॥ शब्दार्णवस्तु । ऊर्द्ध कोगोपुच्छवत् सचितालोऽष्टाङ्गुलो मुखे । धृत्वोर्द्धंवाद्यते तेषांवादनंतु जनंनना ॥ इति ॥ अपिच । हरीत क्याकृतिस्त्वङ्कुस्तथालिङग्योयवाकृ

ति । ऊर्द्धकोदण्डतुल्यः स्यान्मुरजा भेदतोमताः ॥ ऊर्द्धःकायति । कै शब्दे । सुपीतिकः ॥

ऊर्द्धकण्ठी । स्त्री । महाशतावर्याम् ॥

ऊर्द्धङ्गमः । पु । ऊर्द्धस्थे ॥ इतित्रिका- ण्डशेषः ॥

ऊर्द्धजानुः । त्रि । उपरिभागेस्थूलजा नुके । ऊर्द्धज्ञौ ॥ उर्द्धजानुनीयस्य ॥

ऊर्द्धज्ञः । त्रि । ऊर्द्धजानुनि ॥

ऊर्द्धज्ञु । त्रि । ऊर्द्धजानुनि ॥ ऊर्द्ध- जानुनीयस्य । ऊर्द्धाद्विभाषेतिपक्षे ज्ञुः ॥

ऊर्द्धदेवः । पुं । विष्णौ । हरौ ॥

ऊर्द्धपादः । पुं । शरभे ॥

ऊर्द्धपुण्ड्. । पु । तिलकविशेषे ॥ सतु ब्राह्मणललाटे पुण्ड्रेक्षुवत् चन्दना दिनाकृतोर्द्धरेखात्रयरूपः । यथा । ऊर्द्धपुण्ड्रेत्रिपुण्ड्रंस्यात् त्रिपुण्ड्रेणोर्द्ध पुण्ड्रकमिति । ऊर्द्धपुण्ड्रंद्विजःकुर्या द्वारिमृद्भस्मचन्दनैरित्यादिषवह- व । ऊर्द्धपुण्ड्रंमृदाकुर्यात् त्रिपुण्ड्रं भस्मनासदा । तिलकंवैद्विजःकुर्या च्चन्दनेनयदृच्छया ॥ ऊर्द्धपुण्ड्रंद्वि- ज कुर्यात् क्षत्रियस्तुत्रिपुण्ड्रकम् । अर्द्धचन्द्रन्तुवैश्यश्चवर्त्तुलंशूद्रयोनि जः ॥ इतिब्रह्माण्डपुराणम् । अशु- चिर्वाप्यनाचारोमनसापापमाचरे-

ऊर्द्धमु

त्। शुचिरेवभवेन्नित्यमूर्द्ध्वपुण्ड्राङ्कितोनरः ॥ ऊर्द्ध्वपुण्ड्रधरोमर्त्योम्रियतेयत्रकुत्रचित् । श्वपाकोपिविमानस्थो ममलोकेमहीयते । इति ॥ वैदिकातिरिक्तएवास्याधिकारी ॥ यथोक्तंदेवीभागवते श्रीनारायणेन । ऊर्द्ध्वपुण्ड्रं त्रिशूलञ्चवर्त्तुलंचतुरस्रकम्। अर्द्धचन्द्रादिकंलिङ्गवेदनिष्ठोनधारयेत् ॥ जन्मनालब्धजातिस्तुवेदपन्थानमाश्रितः । पुण्ड्रान्तरंभ्रमाद्वापिललाटेनैवधारयेत् ॥ ख्यातिकान्त्यादिसिद्ध्यर्थं चापि विष्णवागमादिषु । स्थितंपुण्ड्रान्तरंनैवधारयेद्वैदिकोजनइत्यादि ॥ ऊर्द्ध्वश्चासौ पुण्ड्रश्च ॥

ऊर्द्धम् । अ । ऊर्द्ध्वशब्दार्थे ।

ऊर्द्ध्वमानम् । न । उन्माने ॥ पलादिशब्दवाच्येनपाषाणादिनातुलादावारोपितेन येन सुवर्णादिर्गुरुत्वमुन्मीयतेतदूर्द्ध्वारोपणादूर्द्ध्वमानमितिशब्देनविवक्षितम् । वट्ट वाट इतिचयत्भाषा ॥ ऊर्वादौ ॥ ऊर्द्ध्वविस्थितेन येनमीयते तत्। प्रथमश्चद्वितीयश्चऊर्द्ध्वमाने मतौ ममेतिमहाभाष्योक्तेः । प्रथमद्वितीयौ द्वयसजद्घ्रचौ ॥

ऊर्द्ध्वमुखम् । न । नक्षत्रविशेषेषु । य-

ऊर्म्मिः

था । आर्द्रापुष्या धनिष्ठा चशतारव्या श्रवणातथा । रोहिणीच्युत्तराचैवनवैतेऊर्द्ध्वमुखाः स्मृता' इति ॥

ऊर्द्ध्वमूलः । पुं । संसारवृक्षे ॥ ऊर्द्ध्वमुत्कृष्टंकारणं कार्यापेक्षया परमव्याकृतंमूलमस्येति । अस्तिह्रिसंसारस्यमूलम् । नेदममूलं भविष्यतीतिश्रुतेः ॥

ऊर्द्ध्वरेताः । पुं । महादेवे । सदाशिवे ॥ मुनिविशेषे । सनकादिषु ॥ भी-ष्मे ॥ सन्न्यासिनि ॥ ऊर्द्ध्वं रेतो यस्य सः । न पततिवीर्यंयस्येत्यर्थः ॥

ऊर्द्ध्वलिङ्गः । पुं । महेशे । देवदेवे । शिवे ॥

ऊर्द्ध्वलोकः । पुं । दिवि । स्वर्गे ॥

ऊर्द्ध्वस्थ. । त्रि । उपरिस्थिते ॥ ऊर्द्ध्वंतिष्ठति । छा० । सुपिस्थइतिक ॥

ऊर्द्ध्वस्थितिः । स्त्री । उपरिस्थितौ ॥

ऊर्द्ध्वावर्त्ते ॥ सतु अश्वस्यपृष्ठस्थानम् ॥

ऊर्द्ध्वासितः । पु । तरमुञ्जे ॥ कारवेल्ले ॥ त्रि । ऊर्द्ध्वोपवेशिते ॥ ऊर्द्ध्वमआसितः आसितो वा ॥

ऊर्म्मि. । पुं । स्त्री । वीच्याम् ॥ प्रकाशे ॥ वेगे ॥ भङ्गे । स्वल्पतरङ्गे ॥ वस्त्रसङ्कोचरेखायाम् ॥ वेदनायाम् ॥ पीडायाम् ॥ उत्कण्ठायाम् ॥ बुभुक्षादिषट्सु । बुभुक्षाच पिपासाच मा

स्थमनसः स्मृतौ । शोकमोहौश्च रीरस्य जरामृत्यू षडूर्मयइत्युक्तः ॥ ऋच्छति । ऋगतौ । अर्त्तेरूच्चेति मिः । अर्त्तेरूरादेशः ॥ अश्वगतिविशेषे ॥ यथा । पङ्क्तीकृतानामश्वानां नमनोन्नमनाकृतिः । अतिवेगसमायुक्तागतिरूर्म्मिरुदाहृतेतिवैजयन्ती ॥

ऊर्म्मिका । स्त्री । अङ्गुलीये ॥ वस्त्रभङ्गे ॥ तरङ्गे ॥ उत्कण्ठायाम् ॥ भृङ्गनादे ॥ ऊर्म्मिरिव । इवेप्रतिकृताविति कन् । ऊर्म्मिं प्रकाशं कायति वा । कै० । आतोनुपेतिकः ॥

ऊर्म्मिमान् । त्रि । वक्रे । कराले । वाँकाइतिभाषा ॥ तरङ्गिणि ॥ ऊर्म्मिरस्यास्ति । मतुप् । यवादिः ॥

ऊर्म्मिमाली । पुं । समुद्रे । अकूपारे ॥ ऊर्म्मीणांमालासाअस्तिअस्य । इनिः ॥

ऊर्म्मिला । स्त्री । सरिति ॥ लक्ष्मणभार्य्यायाम् ॥ कामभालायाम् ॥ ऊर्म्मिंलाति । आतोनुपेतिकः ॥

ऊर्व्वरा । स्त्री । उर्वरायाम्भूमौ ॥

ऊर्व्वसी । स्त्री । नारायणोरुनिर्भिन्नसम्भूता वक्ष्यमाणैनीतिहरिवंशप्रसिद्धायां स्वर्गवेश्यायाम् । उर्वश्याम् ॥ ऊरौ उषितेति । वसनि० । ऊर्व्वसी दीर्घादिर्दन्त्यान्तापृषोदरादिषु व्यु त्पादिता ॥

ऊर्व्याङ्गम् । न । गोमयच्छत्रिकायाम् । शिलीन्ध्रके ॥

ऊषः । पुं । क्षारमृदि ॥ प्रभाते ॥ प्रातःसन्ध्यायाम् ॥ रन्ध्रे ॥ चन्दनाद्रौ ॥ श्रवोविले ॥ ऊषति । ऊषरुजायाम् । इगुपधेतिकः ॥

ऊषकम् । न । ऊषे । स्वार्थेकन् ॥

ऊषणम् । न । मरिचे ॥ पिप्पलीमूले ॥ शुण्ठ्याम् ॥ पुं । चित्रके ॥ ऊषति । ऊष० । बाहुलकात्क्युन् ल्युड्वा ॥

ऊषणा । स्त्री । पिप्पल्याम् ॥ चव्ये ॥ टाप् ॥

ऊषरः । पुं । क्षारभूमौ । ऊषवति ॥ यत्रबीजमुप्तं न प्ररोहति तस्मिन्क्षित्यर्थः ॥ ऊषोस्यास्मिन् । ऊषसुषीतिरः ॥ रेणुकादिनवतीर्थेषु ॥ यथा । रेणुका सूकरः काशी काली कालौ वटेश्वरौ । कालिञ्जरोमहाकालऊषरानवमुक्तिदा इति वराहपुराणम् ॥

ऊषरजम् । न । पांशवलवणे ॥ रोमकनामायस्कान्तभेदे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

ऊषवान् । त्रि । ऊषरे ॥ मतुप् ॥

ऊषा । स्त्री । बाणसुतायाम् ॥

ऊष्मा । पुं । निदाघे ॥ ऊष्मायाः ग्रसस

ऊहः

हाः । ऊष्मोपायुक्तप्रधाना इत्यर्थः। एतत्त्वसोष्मणाइत्यस्य वायुनासहव र्तन्तइत्यर्थ इति प्रातिशाख्यभाष्ये- स्पष्टम् ॥

ऊष्मा । स्त्री । ऊष्मणि ॥ टाबन्त. । ऊ ष्मया सार्द्धमृक्षा पीतिर्द्विरूपः ॥

ऊहः । पु । अध्याहारे । तर्के ॥ अपूर्वा त्प्रेक्षणे इतिजैमिनि. ॥ आगमाऽ विरोधिना न्यायेन आगमार्थपरी क्षणे ॥ परीक्षणञ्च संशय्य पूर्वपक्षनि राकरणेनोत्तरपक्षव्यवस्थापनम् । तदिदं मननमाचक्षते आगमिनः सा तृतीया सिद्धि' तारतारमुच्यते । अन्येतुव्याचक्षते । विनोपदेशादि नाप्राग्भवीयाभ्यासवशात् तत्त्वस्य स्वय मूहनंयत् सा सिद्धिरूहइति । विमर्शात्मकतर्के ॥ समूहे ॥ असम

ऊहा

वेतार्थकपदत्यागपूर्वकसमवेतार्थ- कपदसमभिव्याहारकरणे॥ साका ङ्क्षवाक्यस्य पदान्तरेणाकाङ्क्षापूर- णे ॥ आरोपे ॥ ऊहनम् । ऊहवि- तर्के । भावे घञ् ॥

ऊहत्वम् । न । मानसत्वव्याप्ये जाति विशेषे । तर्कत्वासीत्यनुभवसिद्धे ॥ अन्यथाश्रुतस्यशब्दस्य अन्यथा लि ङ्गवचनादिभेदेन विपरिणमनमू- हस्तस्यभावे ॥

ऊहनम् । न । ऊहे ॥

ऊहनी । स्त्री । शोधन्याम् । सम्मार्ज- न्याम् ॥

ऊहा । स्त्री । अध्याहृतौ ॥ उहनम् । ऊह० । गुरोश्चहलइत्यप्रत्ययः । टाप ॥

---

ऋः

॥

ऋ । अ । गर्हणे ॥ वाक्ये ॥ मन्त्रस्तोभवचने ॥ ऋकारे ॥ स्त्री । देवमातायाम् ॥ पुं । स्वर्गे ॥

ऋक्थम् । न । धने ॥ स्वर्णे ॥ ऋच्यते- ऋच्शब्दे । बाहुलकात् थक् ॥

ऋक्षः । पुं । गिरिविशेषे ॥ तापीपयोष्णीनिर्विन्ध्याप्रमुखा ऋक्षसम्भवाः ॥ भल्लूके ॥ शोणके । श्योनाकप्रभेदे ॥ पुं । न । नक्षत्रे । भे ॥ मेषादिराशौ ॥ त्रि । कृतवेधने ॥ अच्छे ॥ ऋषति । ऋषीगतौ । सृवृभूशुषिमुषिभ्यःकिदिति ऋषे र्गतौ सः । षढोःकःसि ॥ यद्वा । ऋक्षणोति । ऋक्षहिंसायाम् । अच् ॥

ऋक्षगन्धा । स्त्री । ऋषिजाङ्गलिकायाम् । ऋषिजाङ्गल इति गौडभाषाप्रसिद्धायाम् ॥ क्षीरविदार्याम् । महाश्वेतायाम् ॥ वृद्धदारके । छगलान्त्याम् । वीरताड इति गौडभाषा ॥ ऋक्षान् गन्धयति । गन्धअर्दने । मूलविभुजादित्वात्कः ॥ यद्वा । ऋक्षोगन्धोऽस्याः । ऋक्षशब्दस्तद्गन्धसदृशेगौणः । ऋक्षस्येवगन्धोस्याः । समासान्तस्यानित्यत्वात् उपमानाच्चेतिनेकारः ॥

ऋक्षगन्धिका । स्त्री । क्षीरविदार्याम् । श्वेतभूकूष्माण्डे ॥ ऋक्षगन्धार्थे ॥ ऋक्षगन्धैव स्वार्थेकन् ॥

ऋक्षगिरिः । पुं । ऋक्षाभिधे कुलाचले ॥

ऋक्षरः । पु । ऋत्विजि ॥ न । वारिधारायाम् ॥ ऋषति । ऋषीगतौ । तन्यृषिभ्यां क्सरन् ॥ ऋक्षरःकण्टक- इति वेदभाष्यम् ॥

ऋक्षराजः । पुं । जाम्बवति ॥ चन्द्रे ॥ ऋक्षाणां राजा । टच् ॥

ऋक्षवान् । पु । नर्म्मदातीरस्थे पर्वतविशेषे ॥ ऋक्षाःसन्त्यस्मिन् । मतुप् ॥

ऋक्षविडम्बी । पुं । नक्षत्रसूचके ॥

ऋक्षहरीश्वरः । पु । सुग्रीवे ॥

ऋक्षेशः । पुं । चन्द्रमसि । सोमे ॥

ऋक्षोदः । पु । पर्वतविशेषे ॥

ऋग्वेदः । पुं । देवदैवत्ये ऋग्भाग्समुदाये । ऋचि ॥

ऋग्वेदाधिपतिः । पुं । गुरौ । वृहस्पतौ ॥ यथा । ऋग्वेदाधिपतिर्जीवः सामवेदाधिपःकुजः । यजुर्वेदाधिपःशुक्रः शशिजोऽथर्ववेदराट् । इति ॥

ऋक् । स्त्री । नियताक्षरपादयुते देवदैवत्ये एकविंतिशाखात्मके वेदभागे । समानाक्षरपादबन्धसमन्विते- मन्त्रविशेषे ॥ तस्यलक्षणम । यथा

र्थवशेन पाद्व्यवस्थितिः । अस्यार्थः । यत्रार्थवशेन एकान्वयित्वेनानुष्टुबादिपादव्यवस्थितिः । इति जैमिनिः ॥- ऋच्यन्ते स्तूयन्ते देवा अनया । ऋचस्तौ । क्विप् ॥

ऋचीषम् । न । पिष्टपचनपात्रे ॥ ऋचति । ऋचशब्दे । बाहुलकात् कीषन् ॥

ऋच्छरा । स्त्री । वेश्यायाम ॥ ऋच्छति । ऋच्छगतीन्द्रियमलयमूर्त्तिभावेषु । ऋच्छेररः ॥

ऋजिमा । पुं । आर्जवे ॥ ऋजोर्भाव. । इमनिच् ॥

ऋजीकः । त्रि । दुष्टे ॥ तपोधने ॥ अर्जते । ऋजगतिस्थानार्जनोपार्जनेषु । ऋजेश्चेति ईकन् ॥ यद्वा । ऋजीकन् । ऋजीक इन्द्रो धूमश्चेति कौमुदी ॥

ऋजीषम् । न । कटाहिकातम्बिकादौ पिष्टभर्जनपात्रे । पिष्टपचने ॥ धने ॥ उद्धृतरसे सोमलतायाः शेषे । एतच्छमन्त्रभाष्यस्पष्टम् ॥ नरकविशेषे ॥ अयपिष्टपचन प्रक्षेपः ॥ अर्ज्यते । अर्जअर्जने । ऋजेः ऋजचेतिईषन् ॥

ऋजुः । त्रि । अवक्रे । अजिह्मे । प्रगुणे । प्राञ्जले । सीधा इतिभाषा ॥ ऋजवे । हिन्वाणगा नेतरेस्वभावतः ॥ अर्जति । ऋजअर्जने । अर्जिदृशीति साधुः । अर्जयति गुणान्वा ॥

ऋजुकायः । पुं । कश्यपमुनौ ॥ त्रि । अवक्रशरीरे ॥ ऋजुः कायोस्य ॥

ऋज्रः । त्रि । गतिमति । ऋज्रास्वइति मन्त्रे ऋज्रा गतिमन्तः ऽश्वायस्येति वेदभाष्यात् ॥ नायके ॥ अर्जयते अर्जयतिवा । ऋजगत्यादिषु । ऋज्रेन्द्रेतिरन् । निपातनाद्गुणाभावः ॥

ऋञ्जसानः । पुं । मेघे ॥ ऋञ्जते । ऋजिभर्जने । ऋञ्जिवृधीति असानच् कित् । वेदभाष्ये तु यौगिकार्थ एव पुरस्कृत. ॥

ऋणम् । न । अधमर्णेनोत्तमर्णात पुनर्देयतयास्वीकृत्यगृहीतेधने । पर्य्युदञ्चने । उद्धारे । उधार इतिभाषा ॥ जले॥दुर्गे ॥ दुर्गभूमौ ॥ अर्यतेऽस्म । ऋगतौ । क्त । ऋणमाधमर्ण्येइति णत्वम् ॥

ऋणत्रयम् । न । त्रिविधे ऋणविशेषे ॥ यथा । देवानाञ्च पितॄणाञ्च ऋषीणाञ्च तथा नरः । ऋणवान् जायते यस्मात् तन्मोक्षे प्रयतेत्सदा ॥ तत्परिशोधनन्तु । देवाना मनृणो जन्तुर्यज्ञैर्भवति मानवः । अल्पवित्तश्च पूजाभिरुपवासव्रतैस्तथा ॥ श्राद्धेनप्रजयाचैव पितॄणामनृणो भवेत् । ऋषीणां

ब्रह्मचर्य्येण श्रुतेन तपसा तथा ॥ इतिविष्णुधर्म्मोत्तरम् ॥

ऋणमत्कुणः । पुं । } प्रतिभुवि । लग्नके । जामिन्
ऋणमार्गणः । पुं । } जमान इतिभाषा ॥

ऋणमुक्तिः । स्त्री । विगणने । ऋणपरिशोधने । ऋणस्य ऋणाद्वामुक्तिः ।

ऋणमोक्षः । पुं । ऋणमुक्तौ ॥

ऋणहर्त्ता । पुं । भौमे ॥ ऋणस्यहर्त्ता ॥

ऋणादानम् । न । उत्तमर्णेनाधमर्णात् स्वलाभधनग्रहणे । व्यवहारविशेषे ॥ ततसप्तविधम् । यथा । ईदृशमदेयम् १ । ईदृशमदेयम् २ । अनेनाधिकारिणादेयम् ३ । अस्मिन् समये देयम् ४ । अनेनप्रकारेणादेयम् ५ । इत्यधमर्णपञ्चविधम् । उत्तमर्णेतु दानविधिः ६ । आदानविधिश्च ७ । इतिद्विविधम् । तथाच नारदः । ऋणं देयमदेयञ्च येन यत्र यथा भवेत् । दानग्रहणधर्म्माश्च ऋणादानमितिस्मृतम् ॥ अदेयमितियदुक्तं तदाहकात्यायनः । नस्त्रीभ्योदासबालेभ्यः प्रदद्यात् किञ्चिदुद्धृतम् । दाता न लभते तत्तुतेभ्यो दत्तन्तु तद्वसु ॥ तत्रविशेषमाह बृहस्पतिः । परिपूर्णंगृहीत्वाधिं बन्धंवा साधुलग्नकम् । लेख्यारूढं साक्षिमद्वा ऋणंद



द्या ह्यनीसदा ॥ इतिविवादार्णवसेतुः ॥

ऋणान्तकः । पु । कुजे । मङ्गलग्रहे ॥

ऋणापनोदनम् । न । ऋणापनयने ॥

ऋणिकः । त्रि । अधमर्णे ॥

ऋणी । त्रि । ऋणवति । अधमर्णे । ऋणग्रस्ते ॥

ऋणोद्ग्राहणम् । न । अधमर्णगृहीतर्णग्रहणे ॥

ऋतम् । न । ब्राह्मणस्योत्तमवृत्तौ । उञ्छशिले ॥ ऋतमुञ्छशिलंज्ञेयमित्युक्तेः ॥ जले ॥ सत्ये ॥ मोक्षे ॥ कर्मफले ॥ सूनृतायांवाचि ॥ यथाशास्त्रं यथाकर्त्तव्ये बुद्धौ सुपरिनिश्चितेर्थे ॥ अवितथस्वभावे परमार्थभूतवस्तुनि ॥ मानससत्ये ॥ त्रि । दीप्ते ॥ पूजिते ॥ अर्यतेस्म ऋच्छतिवा । ऋगतौ । निष्ठेति गत्यर्थेतिवाऽर्त्तः क्तः ॥

ऋतजित् । पुं । यज्ञविशेषे ॥

ऋतधामा । पुं । विष्णौ ॥ ऋतं सत्यं धाम अस्य ॥

ऋतपः । पुं । संसारिणिजीवे ॥ ऋतंकर्मफलंपिबति । पा० । कः ॥

ऋतपर्णः । पुं । राजर्षिविशेषे ॥ यथा । कर्कोटकस्यनागस्य दमयन्त्यानलस्य च । ऋतपर्णस्यराजर्षेः कीर्त्तनं कलिनाशन मितिमहाभारतम् ॥

ऋतम्। अ। सत्यमित्यर्थे ॥

ऋतम्भरा। स्त्री। प्रज्ञाविशेषे ॥ ऋतं सत्यमेव विभर्त्ति न तत्र विपर्यासगन्धोप्यस्तीति यौगिक्येवेयं समाख्या॥ प्रत्यग्दीपस्य नदीविशेषे ॥

ऋतव्यम्। त्रि। ऋतुदेवताके हविरादौ॥ ऋतुर्देवताऽस्य। वाय्वृतुपितुषसोयत्। गुणावादेशौ॥

ऋतिः। स्त्री। कल्याणे॥ वर्त्मनि॥ जुगुप्सायाम्॥ स्पर्द्धायाम्॥ गतौ॥ अशुभे॥ ऋगतौ। क्तिन्॥

ऋतीया। स्त्री। अर्त्तने। जुगुप्सायाम्॥ऋतिःसौत्रः। ईयङ्पक्षे। अप्रत्ययादित्यः। टाप्॥

ऋतुः। पुं। कालविशेषे॥ सतु शिशिरादिभेदात् षड्विधः। यथा। मासद्वयात्मकः कालऋतुःप्रोक्तो विचक्षणैरिति। मलमासेतु मासद्वयात्मक एकोमासः तेन मासद्वयात्मकत्वमविरुद्धम्। षष्ट्यातु दिवसैर्मासः कथितो वादरायणैरित्युक्तः॥ शिशिरः पुष्पसमयो ग्रीष्मो वर्षाशरद्धिमः। माघादिमासयुग्मैस्तु ऋतवः षट्क्रमादिताः॥ उत्तरायणमाद्यैस्तैस्त्रिभिःस्याद्दक्षिणायनमिति॥ ऋतूनांव्यत्यये जाते यदुक्तंतच्चलिख्यते। यथा। शीतोष्णतावविपर्यासो ऋतूनांरिपुजंभयम्। पुष्पेफलेचविकृते राज्ञोमृत्युंतथादिशेदिति॥ सत्रिविधोपि। कार्त्तिकाग्रहायणपौषमाघाः शीतः १। फाल्गुनचैत्रवैशाखज्येष्ठाः ग्रीष्मः २। आषाढश्रावणभाद्राश्विनाःवर्षा. ३॥ द्विविधोपि। कार्त्तिकादिषण्मासा शीतः। १। वैशाखादिषण्मासाः ग्रीष्मः। २। इति स्मृतिः॥ स्त्रीपुष्पे। आर्त्तवे। रजसि। शोणितदर्शनोपलक्षिते गर्भधारणयोग्ये स्त्रीणामवस्थाविशेषे॥ ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणां रात्रयःषोडशस्मृताः चतुर्भिरितरैःसार्द्धं मह्नोभिः सद्विगर्हितैः॥ दीप्तौ॥ सुवीरे॥ मासे॥ इयर्त्ति गच्छति असाधारणं लिङ्गम्। ऋगतौ। अर्त्तेश्चतुरितितुः। चात्कित्त्वम्। ऋच्छति वा॥

ऋतुमासः। त्रि। फलितरौ। फलेग्रह्यौ। अवन्ध्यरक्षादौ॥ ऋतुःप्राप्तोनेन॥

ऋतुमती। स्त्री। रजस्वलायाम्। उदक्यायाम्॥ ऋतुरस्त्यस्याः। मतुप्। ङीप्॥

ऋतुराजः। पुं। वसन्ते॥ ऋतूनांराजा। राजाहःसखिभ्यष्टच्॥

ऋतुवृत्तिः। पु। वर्षे। संवत्सरे॥ ऋतुप्रवृत्तिरस्य॥

ऋतुसन्धि । पु । ऋतुद्वयसन्धिकाले । ऋ
त्वोरन्त्यादिसप्ताहयोः ॥ आहचा
थवाग्भट. । ऋत्वोरन्त्यादिसप्ताहा
वृतुसन्धिरितिस्मृतः । तत्रपूर्वा-
विधिस्त्याज्य सेवनीय.परोविधिरि-
ति ॥

ऋतुस्नानम् । न । रजस्वलायाश्चतुर्था
हकर्त्तव्यस्नाने॥ ततस्नानामन्तरं भर्त्तु
र्मुखंद्रष्टव्यम् । नान्यस्य । भ ्रसन्नि
धाने भर्त्तारं मनसि ध्यात्वा सूर्यंवि
लोकयेदितिकाशीखण्डम् ॥

ऋते । अ वर्जने । विना ॥ ऋतीयते ।
ऋतिःसौत्रोधातुः । ततःक्ते प्रत्य
यः ॥

ऋत्विक् । पुं । पुरोहिते । याजके ॥
ऋतैयजति ऋतुंयजति ऋतुप्रयुक्तो
वायजति । रूढिरेषा यथाकथञ्चिद्यु
त्पाद्या । यजदेवपूजादौ । ऋत्विगा
दिनाक्विन्नन्तो निपातितः॥ अग्न्या
धेयंपाकयज्ञानग्निष्टोमादिकान्म-
खान् । यःकरोतिवृतोयस्य सतस्य
र्त्विगिहोच्यते इतिमनु ॥ तेचयज्ञे
षोडश भवन्ति । तेषांनामानि य-
था । अध्वर्यु. १। प्रस्थाता २ । नेष्टा
३ । उन्नेता ४ । ब्रह्मा ५ । ब्राह्मणा
च्छंसी ६ । अग्नीध्रः ७ । पोता ८ ।
उद्गाता ९ । प्रस्तोता १० । प्रतिह
र्त्ता ११ । अस्तुब्राह्मणः १२ । होे-
ता १३ । मैत्रावरुणः १४ । अच्छा
वाकः १५ । ग्रावस्तुत् १६ । इति ॥

ऋद्धम् । न । आवसिते धान्ये । सम्पन्न
धान्ये ॥ परिपक्वमर्द्दितधान्ये ॥ सिद्धा
न्ते ॥ त्रि । सुसमृद्धे ॥ ऋध्यतिस्म ।
ऋधुवृद्धौ । क्तः ॥

ऋद्धिः । स्त्री । समृद्धौ ॥ देवताविशेषे ।
पार्वत्याम् ॥ अष्टवर्गान्तर्गतौषधिवि
शेषे । लक्ष्म्याम् । सिद्धौ ॥ अस्याःस्व
रूपम् । यथा । ऋद्धिर्वृद्धिश्चकन्दौद्वौ
भवतः कोषयामले । श्वेतलोमा
न्वितःकन्दोलताजाल सरन्ध्रक. ॥
सएवऋद्धिर्वृद्धिश्चभेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।
तूलग्रन्थिसमा ऋद्धि र्वामावर्त्तफला
चसा ॥ वृद्धि स्तुदक्षिणावर्त्तफलाप्रो
क्तामहर्षिभि. ॥ ऋद्धिर्बल्यात्रिदोष
घ्नीशुक्रलामधुरागुरुः । प्राणैश्वर्यक
रीमूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ औ
षधकरणे ऋद्धिवृद्ध्यो स्थाने वारा-
हीकन्दो वला वा देया ॥ ऋध्नोति ।
ऋधुवृद्धौ । क्तिच् । यद्वा करणे क्ति-
न् ॥

ऋधक् । अ । सत्ये ॥ वियोगे ॥ शीघ्रे ॥
सामीप्ये ॥ लाघवे ॥

ऋनामा । स्त्री । अदितौ । देवमात-
रि ॥ ऋ नाम अस्याः । डाबुभाभ्याम

न्यतरस्यामिति डाप् ॥

ऋभु । पु । देवे । सुरे ॥ ऋशब्दवाच्यः स्वर्ग, अदितिर्वा । स्वर्गादित्वाद्य यम् + तुच् ततो वा भवति इति ऋ पूर्वाद्भवतेर्मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यान मिति डुः । उपपदसमासः । क्विपि ऋभूरपि ॥ ब्रह्मणः पुत्रे परमहंसप रिव्राजके ॥

ऋभुक्षः । पु । वज्रे ॥ स्वर्गे ॥ ऋभवो-देवाः क्षियन्त्यस्मिन । क्षिनिवासग-त्योः । अन्येभ्योपीति डः ॥ इन्द्रे ॥

ऋभुक्षाः । पु । इन्द्रे । पाकशासने ॥ ऋभवो देवा क्षियन्तिनिवसन्त्यत्र । चोर्ड । ऋभुक्ष. स्वर्गः । सोऽस्यास्ती ति इनि. । ऋभुक्षाः पथिवत् ॥ य द्वा । ऋच्छति इयर्त्तीति वा । अर्ते र्भुक्षिनक् प्रत्ययः ॥

ऋषः । पुं । मृगविशेषे ॥ ऋच्छति इय र्त्तिवा । ऋगतौ । बाहुलकात् पः ॥

ऋषभः । पुं । वृषे ॥ कर्णरन्ध्रे ॥ कुम्भीर पुच्छे ॥ उत्तरस्थ. श्रेष्ठे ॥ औषधिवि-शेषे ॥ भगवदवतारविशेषे । आदि जिने ॥ अयम्भसन्त्ययुगे, अग्नीध्रसु तस्य नाभेः पुत्रः । अस्य पुत्रो जडभर तः ॥ आह चसः । इदंशरीरं मम दुर्विभाव्यं सत्त्वंहि मे हृदयं यत्र धर्मः । पृष्ठे कृतो मे यदधर्म आराद्तोहि मामृषभं प्राहुरार्या इति ॥ तन्त्री समुत्थितेकण्ठोत्थितेच सप्तस्वरान्त र्गते द्वितीयस्वरे ॥ अस्योत्पत्तिः । नाभिमूलाद्यदा वायुरुत्थितः कुरुते ध्वनिम् । वृषभस्येव निर्याति हेल या ऋषभः स्मृत इति सङ्गीतदामोद रः ॥ ऋषति बलीवर्द्दकृतस्वरसादृ श्यं गच्छति । ऋषी गतौ । ऋषिवृ षिभ्यां किदित्यभच् । गावोनर्दन्ति चर्षभम् ॥ अष्टवर्गान्तर्गतौषधिवि शेषे । शृङ्ग्याम् । विषध्याम् । क कुद्म्याम् ॥ पश्य गुणान् जीवके ॥ कोलपुच्छे ॥

ऋषभगजविलसितम् । न । अष्टिसंख्य कषोडशाक्षरवृत्तिप्रभेदे ॥ यथा । भ्रनिनगैः ऽ।।ऽ।ऽ।।।।।।ऽ स्वराङ्कमृष भगजविलसितम् । यथा । योहरि दृश्याण खरतरनखशिखरै दुर्जय दैत्यसिंहमुविकटहृदयतटम । कि न्विहचित्रमेत दखिलमपहृतवत कंसनिदेशहृष्य मृषभगजविल सि तमिति ॥

ऋषभतरः । त्रि । मन्दशक्ती भारस्यवो ढरि ॥ तनुऋषभः । वत्सोक्षाश्वर्ष भेभ्यश्चतनुत्वइति ष्टरच् । ङीषि । ऋषभतरी ॥

ऋषभध्वजः। पुं। चन्द्रमौलौ। सदाशिवे॥ ऋषभोवृषो ध्वजश्चिह्नमस्य ध्वजे अस्यवा॥ प्रथमजिनेन्द्रे॥

ऋषभी। स्त्री। नराकारयोषिति॥ शूकशिंब्याम्॥ शिरालायाम्॥ विधवायाम्॥

ऋषिः। पु। वेदे॥ दीधितौ। किरणे॥ मन्त्रद्रष्टरि। शास्त्रकृदाचार्ये। सत्यवाचि। भृगुवशिष्ठादिमुनौ। गोत्रप्रवर्त्तके काश्यपभरद्वाजशाण्डिल्यादौ। सप्तब्रह्मर्षिदेवर्षिमहर्षिपरमर्षयः। काण्डर्षिश्च श्रुतर्षिश्च राजर्षिश्च क्रमावरा इतिरत्नकोषः॥ तत्र ब्रह्मर्षयो वशिष्ठाद्याः १। देवर्षयः कण्वादयः २। व्यासाद्या महर्षयः ३। भेलाद्याः परमर्षयः ४। जैमिन्याद्याः काण्डर्षय ५। सुश्रुताद्याः श्रुतर्षयः ६। ऋतपर्णादयो राजर्षयः ७। एते पुराणप्रसिद्धाः। इतित्रिकाण्डशेषः॥ सूक्ष्मवस्तुविवेचनसमर्थे। सन्यासिनि॥ मन्त्रे॥ ज्ञानिनि। तत्त्वज्ञाननिष्ठे॥ ब्रह्मपुत्रे। अवगतपरमार्थे॥ ऋषति जानाति पश्यति सर्वान्मन्त्रान्। ऋषीगतौ। इगुपधात्किदित्तीन॥

ऋषिकः। पुं। ऋषौके॥

ऋषिकुल्या। स्त्री। नदीमात्रे॥ शुक्तिमत्पादोद्भवायां नद्याम्॥ ऋषिकुलहितायाम्॥ ऋषीणांकुल्या॥

ऋषिजाङ्गलम्। न। ऋषिजाङ्गलिकायाम्॥

ऋषिजाङ्गलिकी। स्त्री। ऋक्षगन्धायाम्। ऋषिजाङ्गलवृक्षे॥

ऋषिपुत्रः। पु। आचार्यविशेषे॥

ऋषिप्रोक्ता। स्त्री। माषपर्ण्याम्॥

ऋषियज्ञः। पुं। ब्रह्मयज्ञे। स्वाध्याये॥

ऋषिसर्गः। पु। सर्गविशेषे॥

ऋषीकः। पुं। काव्याद्यृषिपुत्रे॥

ऋष्टिः। पुं। असौ। खड्गे॥ उभयतो धारे खड्गे॥ ऋषति। ऋषीगतौ ~। क्तिच्॥

ऋष्यः। पुं। मृगविशेष॥ ऋष्योनीलाण्डको लोके सरोभ इतिकीर्त्तितः॥ ऋषति। ऋषी०। अघन्यादित्वात्साधुः॥

ऋष्यकेतनः। पुं। अनिरुद्धे॥

ऋष्यकेतुः। पुं। अनिरुद्ध। कामदेवपुत्रे॥ कामदेवे॥ ऋष्योमृगः केतुरस्य॥

ऋष्यगता। स्त्री। ऋष्यप्रोक्तायाम्। शतमूल्याम्॥

ऋष्यगन्धा। स्त्री। ऋषिजाङ्गलिकायाम्॥ वृद्धदारके॥

ऋष्यप्रोक्ता । स्त्री । शतावर्य्याम् ॥ अतिबलायाम् ॥ शूकशिंब्याम् ॥ ऋष्यैर्मृगैः प्रोक्ता । ऋषिभिरप्रोक्तावा ॥

ऋष्यमूकः । पुं । अद्रिविशेषे ॥ ऋष्यमूकस्तुपम्पायाः पुरस्तात् पुष्पितद्रुमः । सुदुःखारोहणो नाम शिशुनागाभिरक्षित ॥ अथवालिभयात् सुग्रीवादय. पञ्च वानराः स्थिता आसन्निति रामायणम् ॥

ऋष्यशृङ्गः । पुं । विभाण्डकसुते मुनिविशेषे ॥ अस्य भार्या लोमपादराजकन्या शान्ता । इतिरामायणम् ॥

## ॠ

ॠ । अ । वाक्यारम्भे ॥ रक्षायाम् ॥

ॠ । न । वक्षसि ॥ पु । भैरवे ॥ दनुजे ॥ ॠकारे ॥ स्त्री । देवाम्बायाम् ॥ दनौ ॥ स्मृतौ ॥ गतौ ॥

## ऌः

ऌ । अ । देवतात्मायाम् ॥ देवमातरि



॥ भुवि ॥ कुम्भे । पर्वते ॥ मन्त्रक्षोभवचने ॥ ऌकारे ॥

## ॡः

ॡ । अ । देवनार्याम् ॥ नार्यात्मनि ॥ मातरि ॥ पुं । महादेवे ॥ ॡकारे ॥ स्त्री । दैत्यभार्य्यायाम् ॥ दनुजमातरि ॥ कामधेनुमातरि ॥ इत्येकाक्षरकोषः ॥

## ए

ए । अ । स्मृतौ ॥ असूयायाम् ॥ अनुकम्पायाम् ॥ आमन्त्रणे ॥ हूतौ । आह्वाने ॥

एः । पुं । विष्णौ ॥ एकारे ॥

एकः । त्रि । प्रथमसङ्ख्यायाम् ॥ सङ्ख्येये । यथैको विप्रः । न तु विप्रस्यैका ॥ एकाकिनि । केवले ॥ एकादाकिनिच् चासहाये । चात्पचेलुक् ॥ श्रेष्ठे ॥ इतरस्मिन् ॥ सत्ये । अद्वितीये । सजातीयविजातीयादिभेदशून्ये । गुणगुणिभावशून्ये । अनु

पमे ॥ एकोन्यार्थे प्रधानेच द्विती-येकेवले तथा। साधारणे समानेऽल्पेसङ्ख्यायाञ्च प्रयुज्यते ॥ एति। इणगतौ। इणभीकापाशल्यतिमर्चिभ्यःकनितिकन् ॥

एकक:। त्रि। असहाये। एकाकिनि। एकला इतिभाषा॥ एकाद्वाकिनिश्चासहाय इत्यत्र चकारात्पचेकन्॥

एककार्य्यः। पुं। परस्परस्मारके अन्ते वासिप्रभृतिगणे॥ एकंकार्य्यमस्य॥

एककार्य्यत्वम्। न। सङ्गतिविशेषे। एककार्यकारित्वे॥

एककाल:। त्रि। अभिन्नसमये॥ एक: कालोयस्य॥

एककालिक:। त्रि। समानकालभवे॥ एककालेभव:। कठाञ्॥

एककालीन:। त्रि। एककालिके॥

एककुण्डल:। पुं। बलरामे॥ कुबेरे॥ एकंकुण्डलमस्य॥

एकगम्य:। त्रि। निर्विकल्पकज्ञानप्राप्ये॥

एकगुरु:। पु। सतीर्थ्ये॥ सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव:॥ एकोगुरुर्येषांते परस्परमेकगुरवोभवन्ति॥

एकचक्रम्। न। शुम्भपुर्य्याम्। हरिगृहे॥ पुं। असुरविशेषे॥

एकचक्रा। स्त्री। पुरीविशेषे॥

एकचर:। पुं। हिंस्रपशुविशेषे। गण्डके॥ त्रि। एकाकिचारिणि। सर्पादौ॥ व्याघ्रादौ॥ एकश्चासौ चरश्च। एक एवचरतिवा। चर०। पचाद्यच्॥ एकचर्य्या। स्त्री। असहायगमने॥

एकचारी। पुं। बहुसहचारिणि॥ एकके॥

एकचित्त:। त्रि। अनन्यमनसि॥ एकम् अनन्यविषयं चित्तं यस्यस:॥

एकजटा। स्त्री। उग्रतारायाम्॥

एकजन्मा। पुं। मण्डलेशे। भयापन्हे॥ शूद्रे॥ एकं जन्मास्य॥

एकजाति:। पुं। शूद्रे॥ यथा। ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयोवर्णाद्विजातय:। चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्तितुपञ्चमइतिस्मृति:॥ एका जातिर्जन्म अस्य॥

एकजातीय:। त्रि। तुल्यजातीये॥ एक: प्रकार:। प्रकारवचनेजातीयर्॥

एकजीववादी। त्रि। एकस्यैतन्यमेकयैवाविद्ययाबद्धं संसरति तदेव कदाचिन्मुच्यते नास्यादादीनां बन्धमोक्षौ इत्येवंवदनशीले। अयञ्च वादःश्रुतिवहिष्कृतत्वान्मुमुक्षुभिरनुपादेय:॥

एकतम:। त्रि। बहूनांमध्ये एकस्मिन्॥ एकाच्चप्राचामिति डतमच्। क

तमो भवतां साधुः ॥

एकतरः । त्रि । द्वयोर्मध्ये एकस्मिन् ॥ एकाच्चप्राचामितिडतरच् । कतरो भवतोर्देवदत्तः ॥

एकतः । अ । एकस्मात् ॥ तसिल् ॥

एकता । स्त्री । एकत्वे ॥ एकस्यभावः । तल् ।

एकतानः । त्रि । अनन्यवृत्तौ । एकविषयासक्तचित्ते । तद्वते ॥ एकं तानयति । तनुश्रद्धोपकरणयोः । कर्मण्यण् । एकस्तानो विस्तारो यस्येतिवा ॥

एकतानकः । पुं । एकाग्रे । अनन्यहृदये ॥ स्वार्थे कः ॥

एकतालः । पुं । समन्वितलये । नृत्यगीतवाद्यानामैक्यसाम्यं तचेतियावत् । विच्छेदरहिते ॥ एकः समस्तालोमानमस्येति ॥

एकत्र । अ । एकस्मिन् ॥ त्रल् ॥

एकत्वम् । न । एकतायाम् । अभेदे । भेदव्यावर्त्तके ॥ सायुज्यमुक्तौ ॥ एकस्यभावः । तस्यभावस्त्वतलौ विति त्वः ॥ एकवचने ॥ यथा । एकत्वं न प्रयुञ्जीतगुरावात्मनिचेश्वरे इति ॥

एकदंष्ट्रः । पुं । गणेशे । विघ्नराजे ॥ एका दंष्ट्रा अस्य ॥

एकदण्डी । पुं । विदिततत्त्वे सन्यासिनि ॥ यथा । यदातुविदितं तत्त्वं परम्ब्रह्मसनातनम् । तदैकदण्डं सङ्गृह्य सोपवीतां शिखांत्यजेत् ॥ मौनं योगासनं योगस्तितिक्षैकान्तशीलता । निस्पृहत्वं समत्वञ्च सप्तैतान्येकदण्डिन इति ॥ एकं दण्डमस्यास्ति । इनिः ॥

एकदन्तः । पु । विनायके । गणेशे ॥ एकोदन्तोऽस्य स्कन्देनोत्पाटितदन्तत्वात् ॥

एकदा । अ । युगपत् ॥ एकस्मिन् काले । सर्वैकान्यकिंयत्तदः कालेदा ॥

एकदृक् । पुं । काके ॥ शम्भौ । महादेवे ॥ त्रि । काणे ॥ एकादृक्यस्य ॥

एकदेशः । पुं । अवयवे । प्रतीके ॥ एकश्चासौदेशश्च ॥

एकदेशी । पुं । अवयविनि ॥ एकदेशशब्दोऽवयवेरूढः । सोस्यास्ति । अत इनि' । यद्यपीह एकगोपूर्वादिति ठञ प्राप्तस्तथापि पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनेतिनिर्देशादिनि. ॥

एकदेहः । पुं । चन्द्रजे । बुधग्रहे ॥

एकधा । अ । एकप्रकारे ॥ प्रकारे धा ॥

एकधुरः । त्रि । एकधुरीणे । एकभारवाहके गवादौ ॥ एकाचासौधूश्च । ऋक्पूरित्यः समासान्तः । परवल्लिङ्गतत्वात्स्त्रीत्वम् । टाप् । एकधुरांवह

ति । एकधुराल्लुक्चेतिखस्यलुक् ॥

एकधुरावहः । त्रि । एकधुरे । एकभारिके ॥ वहति इतिवहः । अच् । एकधुरायावहः ॥

एकधुरीणः । त्रि । एकधुरे ॥ एकाधूः । पूर्वकालैकेतिसमासः । ऋक्पूरित्यः । एकधुरां वहति । एकधुराल्लुक्चेति चकारेण खस्यानुकर्षणसामर्थ्यात् पक्षे अखणम् ॥

एकनटः । पु । कथके । मुख्यनटे । नाटकवर्णनकर्त्तरि ॥

एकपक्षः । त्रि । अनन्यगे ॥ सहाये ॥ एकःपक्षोयस्य ॥

एकपत्नी । स्त्री । सपत्न्याम् ॥ साध्व्याम् ॥ एकः पतिर्यस्या इतिविग्रहे नित्यंसपत्न्यादिष्विति एकपतिशब्दस्य नकारान्तादेशे ऋन्नेभ्य इतिङीप् ॥

एकपत्रिका । स्त्री । गन्धपत्रायाम् ॥

एकपदम् । न । तत्काले ॥ पुं । शृङ्गारबन्धविशेषे । तल्लक्षणम् । पादमेकं हृदिन्यस्यद्वितीयं स्कन्धसंस्थितम् । सन्नैाधृत्वारमेत् कामीबन्धस्त्वेकपदःस्मृतइति ॥

एकपदी । स्त्री । पथि ॥ एकःपादोऽस्याम् । कुम्भपदीषुचेतिनिपातः ॥ यद्वा । सङ्ख्यासुपूर्वस्येति पादस्यान्त्यलोपः । पादोन्यतरस्यामितिङीप् । स्वा

ङ्गाच्चेतिङीष्वा । पादःपत् ॥

एकपदे । अ । अकस्मादित्यर्थे ॥

एकपात् । पुं । शिवे ॥ विष्णौ ॥ एकः पादोऽस्य । सङ्ख्यासुपूर्वस्येति अन्त्यलोपः । पादोस्येतिस्मृतिः ॥

एकपिङ्गः । पुं । कुवेरे । धनाधिपे ॥ सा ह्ययं गौरीनिरीक्षणे तत्प्रभावात् वामेचक्षुषिनष्टे रुद्रानुनयात् तत् पिङ्गिमचिह्नं देव्या दत्तम् । अतएकं पिङ्गं यस्य ॥

एकपिङ्गलः । पुं । गुह्यकेश्वरे । कुवेरे ॥ एकंपिङ्गंलाति । ला० । आतोनुपेतिकः ॥

एकभक्तव्रतम् । न । रात्रिभोजनाभावविशिष्टे दिवाभोजने ॥ तदुक्तंस्कन्दपुराणे ॥ दिनार्द्धसमयेऽतीतेभुज्यते नियमेनयत् । एकभक्तमितिप्रोक्तं रात्रौतन्नकदाचनेति ॥

एकमूला । स्त्री । शालपर्ण्याम् ॥ अतस्याम् ॥

एकयष्टिका । स्त्री । हारविशेषे । एका यस्याम् । एकलडीकाहारइतिभाषा ॥

एकरजः । पुं । भृङ्गराजे । भंगरा । इतिभाषा ॥

एकराट् । पुं । चक्रवर्त्तिनि ॥

एकरूपः । त्रि । समानाकारे ॥ एकंरूपं यस्य सः ॥

एकर्षिः । पुं । सूर्य्ये ॥ एक एव ऋषति गच्छति । इन् ॥

एकलः । त्रि । एकाकिनि । अद्वितीये ॥ इतिपद्यावली ॥ अनवयवे ॥

एकलिङ्ग । पुं । कुवेरे । त्र्यम्बकसखे॥ न । साधनस्थलविशेषे ॥ तथाचागमः । पञ्चक्रोशान्तरे यत्र न लिङ्गान्तरमीक्ष्यते। तदेकलिङ्गमाख्यातं तत्र सिद्धिरनुत्तमेति ॥

एकवचनम् । न । येन पदेनैकोर्थं उच्यते तस्मिन् । एकस्यार्थस्य वचनम् । वचेः करणेल्युट् ॥ कर्मेणिषष्ठ्यासमासः ॥

एकवर्णी । स्त्री । वाद्यप्रभेदे । करतान्याम् । कङ्कमालायाम् ॥

एकवर्षिका । स्त्री । एकहायन्याङ्गवि ॥ एक.वर्षेयस्या. । एकवर्षेव । कः । हृस्वम् ॥

एकवाद्यः । पुं । डिण्डिमवाद्ये ॥

एकविंशतिः । स्त्री । एकाधिकविंशतौ ॥ यथा । नियुक्तस्तु यथान्यायं यो मांसं नात्ति मानवः । सप्रेत्य पशुतां याति सम्भवानेकविंशतिमितिमनुः ॥ नैयायिकमते एकविंशतिदुःखानियथा । षडिन्द्रियाणि षड्रूपादयोविषयाः षड्रूपादिज्ञानानि सुखम् दुःखम् शरीरञ्चेति । एकविंशतिदुःखनिवृत्तिर्मुक्तिरिति ॥

एकवीरः । पुं । वृक्षविशेषे । महावीरे । सन्नद्धीरे ॥ हैहये । कृतवीर्येपितरि ॥

एकवृक्षः । पुं । स्थानविशेषे ॥ यथा । चतुष्क्रोशान्तरे यत्र न वृक्षान्तरमीक्ष्यते । एकवृक्षःसविज्ञेयः इत्यागमः॥

एकशफ. । पुं । अश्वे ॥ एकखुरेजन्तुमात्रे ॥ यथा । खरोश्वोश्वतरोगौरः शरभश्चमरीतथा । एतेचैकशफाः क्षत्तः शृणु पञ्चनखान्पशूनि ति श्रीभागवतम् ॥

एकशृङ्गः । पुं । हरौ ॥ एकशृङ्गेपशौ ॥

एकशेष । पुं । समासप्रभेदे ॥

एकश्रुतिः । स्त्री । उदात्तानुदात्तस्वरितानामविभागेनोच्चारणे ॥ एकाचासौश्रुतिश्च ॥

एकषष्टिः । स्त्री । सङ्ख्यासङ्ख्येयविशेषे ॥ एकाधिकाषष्टिः ॥

एकसर्गः । त्रि । अनन्यमनसि । एकताने । एकाग्रे ॥ एक एकस्मिन्वा सर्गो निश्चयोऽस्य ॥

एकहस्तः । पुं । डमरुवाद्ये ॥

एकस्थः । त्रि । एकत्रस्थिते ॥ एकस्मिन् तिष्ठति । स्था० । कः ॥

एकहायनी । स्त्री । एकाब्दायांगवि ॥ एकःहायनोयस्याः । हायनान्ता

त्रेति ङीप् ॥

एका । स्त्री । आर्यायाम । कोङ्क्याम । पार्वत्याम ॥ इतित्रिकाण्डशेष. । यथा । एकैवाहंजगत्यत्रेति । एकै वशक्तिः परमेश्वरस्य भिन्ना चतुर्द्धा व्यवहारकाले । भोगे भवानी पुरुषे षुविष्णुःकोपेषु कालीसमरेषुदुर्गे-तिच ॥

एकाकी । त्रि । एकके । एकले ॥ एका दाकिनिश्चासहाये ॥

एकाक्षः । पु । काके ॥ त्रि । का.गो ॥ एकमक्षि यस्य । षच् ॥

एकाक्षरम् । न । प्रणवे ॥ एकञ्चतदक्षरञ्च ॥

एकाग्रः । त्रि । अनाकुले ॥ विषयान्तरव्याक्षिप्तचित्ते । एकताने । विक्षेपरहिते ॥ एकम् एकस्मिन्वा अग्रम स्य । अग्रंपुरोगतंत्रेयमितिस्वामी ॥ चित्तस्य चतुर्थ्याम्भूमौ । एकाग्रचित्ते ॥ एकविषयकधारावाहिकवृत्ति समर्थीतत्त्वोद्रेकेण तमोगुणकृततन्द्रादिरूपलयाभावात्तामाकारावृत्ति साच रजोगुणकृतचाञ्चल्यरूप विक्षेपाभावादेकविषयैवेति शुद्धे सत्त्वे भवति चित्तमेकाग्रम् । अस्यां भूमौ संप्रज्ञात.समाधिः तत्रध्येयाकाराकारवृत्तिरपि भासते ॥

एकाग्र्यम् । त्रि । एकाग्रे ॥ एकमग्र्यमस्य ॥

एकाङ्ग. । पुं । बुधग्रहे ॥ न । चन्दने ॥

एकाङ्गीसुगन्ध । पुं । कर्पूरादीनाङ्गणे । सुगन्धगणे ॥

एकात्मा । पुं । परमात्मनि विष्णौ ॥ एक. केवलोऽद्वितीयश्चासावात्माचेत्येकात्मा । जीवेश्वरभेदस्य जीवानांपरस्परभेदस्य जडतद्भेदस्यच मिथ्यात्वात् ॥ ज्ञानंज्ञेयं तथाज्ञाता त्रितयं भाति मायया । विचार्यमाणे त्रितये आत्मैवैकोऽवशिष्यत इतिश्रीमहानिर्वाणतन्त्रोक्तेश्च ॥ आत्मनोऽन्यद्विजानीहिसर्वं ध्वैवचागमादिष्युक्तेश्च ॥

एकादश । त्रि । एकादशानाम्पूरणे । तस्य पूरणेडट् ॥

एकादशक । पुं । इन्द्रियाख्ययेगणे ॥

एकादश । त्रि । एकाधिकदशसङ्ख्यायाम् । ११ ॥ सङ्ख्येये ॥ यथा । एकादशेन्द्रियाणीति । तत्र । बुद्धीन्द्रियाणि चक्षु.श्रोत्रघ्राणरसनत्वगाख्यानि । वाक्पाणिपादपायूपस्थान् कर्मेन्द्रियाण्याहु. ॥ उभयात्मकमत्र मनः ॥ मनोधिष्ठितानामेवहि चक्षुरादीनां वागादीनाञ्चस्वस्वविषये षुप्रवृत्तेः । एकादशसु इन्द्रियेषु मध्ये मन उभयात्मकम् ॥

एकादशद्वारम् । न । शरीराख्येपुरे ॥ एकादशद्वाराणि अस्य । सप्तशीर्षण्यानि नाभ्यासहावोर्ध्व चोणि शिरस्येकम् । तैरेकादशद्वारम्भवति शरीराख्यम्पुरम् ॥

एकादशी । स्त्री । हरिदिने । हरिवासरे ॥ सातु शुक्लपक्षे सूर्य्यमण्डलात् चन्द्रमण्डलस्य निर्गमरूपैकादश कलाक्रियारूपा । कृष्णपक्षेसूर्यमण्डले चन्द्रमण्डलस्यप्रवेशरूपैकादशकलाक्रियारूपा ॥ तत्रजातस्यफलम्॥ क्रोधोत्कटः क्लेशसहः सुभाषी यागादिकर्त्तास्वजनैकभर्त्ता । महामतिर्देवगुरुप्रियः स्यादेकादशी जो मनुजोतिहृष्टः ॥ एकादशानां पूरणी । डडन्तान्ङीप् ॥

एकान्नविंशति.। त्रि। एकोनविंशत्याम् ॥ एकेन न विंशतिः। एकादिश्चैकस्य चादुक् ॥

एकानंशा । स्त्री । पार्वत्याम् ॥

एकान्तम् । न । अत्यन्ते । अतिमात्रे । निर्भरे ॥ नियते ॥ क्रियाविशेषणत्वेऽस्यक्लीवत्वम् । द्रव्यविशेषणतु वाच्यलिङ्गत्वम् ॥ त्रि। निर्जने। अनैकान्तोर्थो ॥ एकःअन्तःनिश्चयोऽत्र । एकस्मिन्नेव अन्त.समाप्तिर्यस्यवा ॥

एकान्ततः । अ । अर्थात् . वारिणि ॥

एकान्तवादी । पुं । सप्तपदार्थवादिनि नास्तिकविशेषे ॥

एकान्ती । त्रि । विष्णुभक्तविशेषे ॥ यथा । एकान्तेनासमो विष्णुर्यस्मादेषां परायणः । तस्मादेकान्तिनः प्रोक्तास्तद्भागवत चेतसइत्यादिनाक्तं (मोक्ष) १३१ अध्यायः ॥

एकान्नः । त्रि । एकभक्ते ॥

एकान्नविंशतिः । त्रि । एकोनविंशतौ ॥ एकेन नविंशतिः । नञोविंशत्या समासेकृते एकशब्देनसह तृतीयेति योगविभागात् समासः । अनुनासिकविकल्पः ॥

एकापारम् । न । तुष्टे प्रभेदे ॥ सेवादयोऽर्जनोपायाः तेचसेवकादीन् दु खाकुर्वन्ति । दृष्यदुरीश्वरद्वारस्थदण्डिदण्डाहचन्द्रजाम् । वेदनां भावयन् प्राप्त क. सेवासु प्रसज्यते ॥ एवमन्ये प्यर्जनोपायाः दुःखा इति विषयोपरमे या बाह्यातुष्टि सा एकापारमुच्यते ॥

एकाब्दा । स्त्री । एकहायन्यांगवि ॥ एक. अब्दोयस्याःसा ॥

एकाम्बरम् । न । पुरुषोत्तमक्षेत्रसन्निधौ वर्त्तमाने भुवनेश्वरनाम्ना विश्रुते परमशक्त्याप्रतिष्ठिते पवित्रस्थाने ॥

एकायन. । त्रि । एकाश्रये ॥ एकताने

॥ एकमयनमस्य ॥ न । नीतिशास्त्रे ॥

एकायनगतः । त्रि । एकाग्रे । एकताने ॥ एकञ्च तदयनञ्च । एकायनंगतं । एकस्मिन्नयने गतं ज्ञानमस्येति वा ॥

एकावली । स्त्री । एकयष्टिकाख्ये हारे ॥ एकपङ्क्त्याम् ॥ अर्थालङ्कारप्रभेदे ॥ यथा । गृहीतमुक्तरीत्यार्थश्रेणिरेकावली मता । नेत्रे कर्णान्तविश्रान्ते कर्णौ दोस्तम्भदोलिनौ ॥ दोस्तम्भौ जानुपर्य्यन्तप्रलम्बनमनोहरौ । जानुनी रत्नमुकुराकारे तस्य हि भूभुजः ॥ उत्तरोत्तरस्य पूर्वपूर्वविशेषणभावः पूर्वपूर्वस्योत्तरोत्तरविशेषणभावो वा गृहीतमुक्तरीतिः । तत्राद्यः प्रकार उदाहृतः । द्वितीयो यथा । हिङ्गुलात्मसमैव यस्य विभुता यस्तत्र विद्योतते यस्यामुष्य सुधी भवन्ति किरणा राशेः स यासामभूत् । यस्तत पित्तमुष सुयोस्य हविषं यस्तस्य जीवातवे वोढा यद्गुणमेषमन्मथरिपोस्ताः पान्तु वोमूर्त्तयः ॥ अपिच । स्थाप्यतेऽपोह्यतेवापि यथा पूर्वंपरम्परम् । विशेषणतया यत्र वस्तु सैकावली द्विधा ॥ पूर्वंपूर्वं प्रतियत्रोत्तरोत्तरस्य वस्तुनो वीप्सया विशेषणभावेन यत् स्थापनं निषेधो वा सम्भवति सा द्विधा वश्यैकावली भण्यते । क्रमेणोदाहरणम् । पुराणि यस्यां सवराङ्गनानि वराङ्गनारूपपुरस्कृताङ्ग्यः । रूपं समुन्मीलितसद्विलासमस्त्रं विलासाः कुसुमायुधस्य ॥ न तज्जलं यन्न सुचारुपङ्कजं न पङ्कजं तद्यदलीनषट्पदम् । न षट्पदोऽसौ कलगुञ्जितो न यो न गुञ्जितं तन्न जहार यन्मनः ॥ पूर्वत्र पुराणां वराङ्गनास्तासामङ्गविशेषणमुखेन रूपं तस्य विलासास्तेषामप्यस्त्रमित्यमुना क्रमेण विशेषणं विधीयते । उत्तरत्र प्रतिषेधेऽप्येवं योज्यम् ॥ एकाद्यासौ आवलीच ॥

एकाश्रयः । त्रि । अनन्यगतौ । अनन्यगतिके ॥

एकाश्रितगुणः । पुं । एकवृत्तिधर्म्मे ॥ यथा । रूपम् १ रसः २ गन्धः ३ स्पर्शः ४ एकत्वम् ५ एकपृथक्त्वम् ६ परिमाणम् ७ परत्वम् ८ अपरत्वम् ९ बुद्धिः १० सुखम् ११ दुःखम् १२ इच्छा १३ द्वेषः १४ यत्नः १५ गुरुत्वम् १६ द्रवत्वम् १७ स्नेहः १८ संस्कारः १९ अदृष्टम् २० शब्दः २१ ॥ इतिसिद्धान्तमुक्तावली ॥

एकाष्ठीलः । पुं । वकपुष्पे । शिवमल्ल्याम् ॥ एकमस्थि लाति । ला० । कः । सुषामादित्वात् षत्वम् । दीर्घत्वञ्च ॥

एकाष्ठीला । स्त्री । पाठायाम् । वनतिक्तिकौषधौ ॥ टाप् ॥
एकाहः । पुं । एकदिने ॥
एकाहगमः । त्रि । एकाहगम्यमार्गे ॥ एकाह्नेन गम्यते । कर्त्तृकरणे कृतेतिसमासः ॥
एकाहारः । पुं । एकदिनकृत्स्यैकवार भोजने ॥ यथा । एकाहारः सदा कार्यो न द्वितीयः कदाचन । पर्य्यङ्कशायिनी नारी विधवा पातयेत् पतिमितिस्मृतिः ॥ त्रि । तद्वति ॥
एकीभावः । त्रि । विवेकानर्हत्वेनाविशेषतां प्राप्ते ॥
एकीयः । त्रि । एकपक्षे । सहाये ॥
एकेन्द्रियसंज्ञा । स्त्री । वैराग्यविशेषे । इन्द्रियहृत्य्यसमर्थतया पक्कानां कषायाणामौत्सुक्यमात्रेण मनसि व्यवस्थाने ॥ अथवा दृष्टानुश्रविकविषयप्रवृत्तेर्दुःखात्मकत्वबोधेन बहिरिन्द्रियप्रवृत्तिमजनयन्त्या अपि तृष्णाया औत्सुक्यमात्रेण मनस्यवस्थाने ॥
एकोद्दिष्टम् । न । प्रेतोद्देश्यकश्राद्धे ॥ एकोद्दिष्टविधिकसांवत्सरिके ॥ एक एव उद्दिश्यतेयत्र तत् ॥ एकमुद्दिश्य यच्छ्राद्धमेकोद्दिष्टं तदुच्यते ॥
एकोशिका । स्त्री । पाठायामोषधौ ॥
एजनम् । न । कम्पने ॥ पुं । वह्निः श्वासे ॥ ... । कम्पदे ॥
एडः । पुं । मेषे ॥ त्रि । बधिरे ॥ इलति । इलस्वप्ने । घञ् । डलयोरैक्यम् ॥ यद्वा । आसमन्तात् ईड्यते । ईड स्तुतौ । घञ् । अच् वा ॥
एडकः । पुं । वनच्छगले ॥ एडकस्य पक्षं योयं मेषाभिषसमं गुणैः ॥ पृथुशृङ्गमेषे । मेढ्रे । उरभ्रे ॥ इलति । एलयति वा । इलस्वप्नक्षेपणयोः । ण्वुल् । डलयोरैक्यता ॥
एडका । स्त्री । मेष्याम् ॥ अजादित्वात् टाप् । क्षिपकादित्वान्नेत्वम् ॥
एडगजः । पुं । दद्रुघ्ने । चक्रमर्द्दके ॥ एडो मेष एव गजो यस्य भक्षकत्वात् ॥ यद्वा । इलनम् । इलक्षेपे स्वप्ने च । घञ् । डलयोरैक्यता । एडे स्वप्ने गजति । गजमदे शब्दे च । अच् ॥
एडमूकः । त्रि । वाक्श्रुतिवर्जिते ॥ शठे ॥ एडोवधिरश्चासौ मूकश्च ॥
एडुकम् । न । एडूके ॥
एडूकम् । न । अन्तर्न्यस्तकीकसे कुड्ये ॥ ईड्यते । ईड स्तुतौ । उलूकादयश्चेतिसाधु ॥
एडोकम् । न । एडूके ॥ इतिद्विरूपकोषः ॥
एणः । पुं । कृष्णवर्णमृगे । हरिणजातिविशेषे ॥ अस्यमांसगुणाः । ए

णः कषायो मधुरः पित्तास्रकफवातहृत्। सङ्ग्राही रोचनो बल्यो ज्वरप्रशमनः स्मृत इति ॥ अपिच । एणो निलकफध्वंसी किञ्चित् पित्तकरो लघुः। उष्णो ग्राही रसेस्वादु र्बल्यो ज्वरहरःस्मृतइति ॥ एति । बाहुलकाण्णः ॥

एणकः । पुं । एणे ॥ स्वार्थेकः ॥

एणतिलकः । पु । चन्द्रमसि ॥ एणस्तिलकमिव यस्य ॥

एणभृत् । पुं । चन्द्रे ॥

एणी । स्त्री । मृग्याम् ॥ एणस्य स्त्री । पुंयोगादितिङीष् ॥

एणीनयना । स्त्री । मृगाक्ष्याम् ॥ एण्याः नयने इव नयने यस्याः । एणीनयने केलीकलहे प्रेयान् वदकिं किं नो कुरुते । धन्या रमणी सर्वं सहते दुःखं सुखवत् स्वान्ते मनुते॥

एतः । पुं । कर्बुरवर्णे ॥ त्रि । आगते ॥ कर्बुरवर्णयुक्ते॥ एति वर्णान् । इण्० । हसिमृग्रिण्वामिदमिलूपूधुर्विभ्यस्तन्निति एतेस्तन् ॥

एतद् । त्रि । आसन्नबुद्धिस्थे । पुरोवर्त्तिवाचके सर्वनामनि ॥ एति इण्० । एतेस्तुट्चेत्यदिः ॥ नित्यापरोक्षआत्मनि ॥

एतनः । पुं । निश्वासे ॥

एतर्हि । अ । सम्प्रति । इदानीम् ॥ अस्मिन्काले । इदमोर्हिल् । एतेतौ रथोः ॥

एतश. । पु । द्विजोत्तमे । ब्राह्मणे ॥ एति । इण्० । इण्स्तशनतशसुनाविति तशन् ॥

एतशाः । पुं । ब्राह्मणे ॥ एति । इण्० । इण्स्तशन्शितितशसुन् ॥ अत्वसन्तस्येतिदीर्घः । एतशसौ । एतशसः ॥

एता । स्त्री । आगतायाम् ॥ कर्बुरवर्णायाम् ॥ वर्णादनुदात्तात् तोपधात् तोनेति पाक्षिकोङीब् तत्सन्नियोगशिष्टस्तकारस्य नकारादेशश्च न ॥

एतावान् । त्रि । एतत्परिमाणविशिष्टे ॥ एतत् परिमाणमस्य । यत्तदेतेभ्यः परिमाणेवतुप् । आसर्वनाम्नः॥ एतावान् साङ्ख्ययोगाभ्यां स्वधर्मपरिनिष्ठया । जन्मलाभः परः पुंसामन्ते नारायणस्मृतिः ॥

एधः । पुं । इन्धने । ईंधन इति भाषा ॥ इध्यतेऽनेनाग्निः । ञिइन्धीदीप्तौ । हलश्चेति करणेघञ् । अवोदैधौ-द्मप्रश्रथहिमश्रथा इति घञिनलो पोगुणश्चनिपातितः ॥

एधतुः । पुं । पुरुषे ॥ अग्नौ ॥ एधते । एध० । एधिवह्योश्चतु. ॥

एधस् । न । वह्निसन्दीपनार्थे काष्ठे ।

समिधि । इन्धने ॥ एधतेऽनेन । ए
 ध० । असुन् ॥
एधा । स्त्री । समृद्धौ ॥ एधनम् । एध०
 । गुरोश्चेत्य. । टाप् ॥
एधितः । त्रि । प्रवृद्धे । वर्द्धिते ॥ एधते
 र्गत्यर्थत्वात्क्तः ॥
एनः । न । पापे ॥ अपराधे ॥ एतिग
 च्छति प्रायश्चित्तेन । इण आगसी
 त्यसुन नुडागमश्च ॥
एनी । स्त्री । एतायाम् ॥ अवर्णान्तिको
 ङीप् तकारस्य नकारादेशश्च ॥
एरका । स्त्री । निर्ग्रन्थितृणविशेषे । ए
 रकागुन्द्रमूलाच शिम्बी गुन्द्रा शरी
 तिचेतिनामान्तराणि । पटेला इति
 भाषा ॥ एरका शिशिरा वृष्या चक्षु
 ष्या वातकोपिनी । मूत्रकृच्छ्राश्मरी
 दाहपित्तशोणितनाशनी ॥
एरङ्ग । पुं । अरङ्गा रङ्गा इतिगौडेषु
 प्रसिद्धे मत्स्यविशेषे । एरङ्गो मधुरः
 स्निग्धोविष्टम्भी शीतलो गुरुरिति
 चास्य गुणाः ।
एरण्डः । पुं । अरण्ड इतिभाषाप्रसिद्धे
 वृक्षविशेषे । उरुबूके ॥ अस्य गुणा
 यथा । एरण्डयुग्मं मधुरं मुष्णं गुरु
 विनाशयेत् । शूलशोथकटीवस्ति-
 शिरः पीडोदरज्वरान् ॥ ब्रध्नश्वास
 कफानाहकासकुष्ठाममारुतानिति ।

एरण्डयुग्मम् शुक्लरक्तैरण्डौ ॥ एर
ण्डपत्रं वातघ्नं कफकृमिविनाशनम् ।
मूत्रकृच्छ्रहरञ्चापि पित्तरक्तप्रकोप
णम् ॥ वाताग्रदलं गुल्मवस्तिशूल
हरम्परम् । कफवातकृमीन् हन्ति
वृद्धिं सप्तविधामपि ॥ एरण्डफलम-
त्युष्णं गुल्मशूलानिलापहम् । यकृत्
प्लीहोदरार्शोघ्नं कटुकं दीपनं परम्
॥ तद्वन्मज्जा च विड्भेदी वातश्लेष्मो
दरापहः इति ॥ क्वाथेऽस्य मूलसंज्ञा
ह्यमित्याहुरपरेजनाः ॥ आ ईरय
ति वायुम् । ईरगतौ कम्पने च । बा
हुलकादण्डच् ॥
एरण्डकः । पुं । एरण्डे ॥ स्वार्थे कः ॥
एरण्डतैलम । न । एरण्डस्य स्नेहे ॥
 स्नेहे तैलच् ॥ गुणा यथा । एरण्डतै
 लं तीक्ष्णोष्णं दीपनं पिच्छिलं गुरु-
 । वृष्यं त्वच्यं वयःस्थायि मेधाकान्ति
 बलप्रदम् ॥ कषायानुरसं सूक्ष्मं यो
 निशुक्रविशोधनम् । विस्रंस्वादुरस
 पाके सतिक्तं कटुकं सरम् ॥ विषमज्व
 रहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् । हन्ति
 वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहा
 न् ॥ वातशोणितविड्बन्धब्रध्नशोथा
 मविद्रधीन् ॥ आमवातगजेन्द्रस्य श
 रीरवनचारिणः । एक एव निहन्ताय
 मेरण्डस्नेहकेशरीति ॥

एरण्डपत्रिका । स्त्री । दन्तीवृक्षे ॥

एरण्डफलम् । न । रेडीइतिप्रसिद्धे ए रण्डस्य फले । ऐरण्डे ॥ ऐरण्डं कोमलं ग्राह्यं फलं तक्रेण स्वेदितम् । पाचितं कटुतैलेन हिङ्गुनाति सुवासितम् ॥ कफानिलहरं हृद्यं रुच्यमुष्णञ्च पित्तलम् । अग्निसन्दीपनं रुच्यं गुरुपाकेति पिच्छिलम् ॥

एरण्डफला । स्त्री । लघुदन्त्याम् ॥

एरण्डा । स्त्री ।<br>एरण्डी । स्त्री ।　} पिप्पल्याम् ॥ इति शब्दचन्द्रिका ॥

एर्वारुः । पुं । कर्कटीप्रभेदे । लोमशायाम् । हस्तिदन्तफलायाम् ॥ आईरणम् । ईर० सम्पदादित्वात् क्विप् । एरं ईरणोति वारयतिवा । वृञ्० । बाहुलकादुण् ॥

एलकः । पुं । मेषे ॥ इतिराजनिर्घण्टः ॥

एलङ्गः । पुं । मत्स्यविशेषे । गौडभाषायां रायकडा रायखाँडा एलाङ्गा इति च ख्याते ॥ एलङ्गो मधुरो वृष्यः सङ्ग्राही कफवातहा । मेधाग्निपुष्टिकारी च शीतलो गुरुरेवच ॥ श्लेष्मप्रसादनः प्रोक्तो निर्घण्टे राजपूर्वके ॥

एलवालुकम् । न । सुगन्धिद्रव्यविशेषे । वालुके । ऐलेये । लालुका इतिगौडभाषा ॥ एलति । इलप्रेरणे । पचाद्यच् । टाप् । एलाइव वलते । वलप्राणने । बाहुलकादुण् । स्वार्थे कन् । ङ्यापोरितिह्रस्वः ॥

एला । स्त्री । इलायचीति भाषासिद्धायां बहुलगन्धायाम् । ऐन्द्रयाम् ॥ सा द्विविधा । सूक्ष्मास्थूलेति भेदात् ॥ सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटि रित्यादिनामभिः प्रसिद्धा ॥ स्थूलातु । पृथ्वीका चन्द्रबालाच निष्कुटिर्बहुला तथेत्यादिभिःख्याता ॥ अस्यागुणास्तु सूक्ष्मैलायां स्थूलैलायाञ्चद्रष्टव्याः ॥ एलयति । इलप्रेरणे । पचाद्यच् । टाप् ॥

एलापत्रः । पुं । नागविशेषे ॥

एलापर्णी । स्त्री । सुवहायाम् । रास्नायाम् । युक्तरसायाम् । काँटाभरुली एलानी इति गौडभाषा ॥ एलायाइव पर्णान्यस्याः । पाककर्णेति ङीष् ॥

एलावालुकम् । न । ऐलेये । एलवालुके ॥ ह्रस्वाभावः प्रक्रियापूर्ववत् ॥

एलीका । स्त्री । सूक्ष्मैलायाम् ॥

एल्वालु । न । एलवालुके ॥ एल्वालु कटुकं पाके कषायं शीतलं लघु । हन्ति कण्डूव्रणच्छर्द्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः ॥ बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्र-

गद्दक्रमीन् ॥

एव । अ । औपम्ये ॥ अनवक्लृप्तौ । अनियोगे ॥ वाक्यपूरणे ॥ अवधारणे॥ चारनियोगे ॥ विनिग्रहे ॥ एवकारस्त्रिविधः । विशेष्यसङ्गत. विशेषणसङ्गतः क्रियासङ्गतश्चेति । तत्र विशेष्यसङ्गतस्यैवकारस्य अन्ययोगव्यवच्छेदोऽर्थः । पार्थएव धनुर्द्धर इत्यादौ विशेषणे धनुर्द्धरे पार्थान्ययोगव्यवच्छेदबोधात् । धनुर्द्धरपदस्योत्कृष्टधनुर्द्धरत्वाच्चणिकत्वात् तथैवतात्पर्यात् । पार्थान्ययोगस्तादात्म्यम् ॥ विशेषणसङ्गतस्यैवकारस्या योगव्यवच्छेदोर्थः । शङ्खः पाण्डुर एवेत्यादौ विशेष्ये शङ्खे पाण्डुरत्वा योगव्यवच्छेदबोधात् ॥ क्रियासङ्गतस्यैवकारस्य चात्यन्तायोगव्यवच्छेदोर्थः । सम्भवाभिप्रायके नीलंसरोजं भवत्येवेत्यादावन्वयितावच्छेदकसरोजत्वसामानाधिकरण्येन सरोजनीलभवनकर्त्तृत्वात्यन्ताऽयोगव्यवच्छेदबोधादिति' सम्प्रदाय. ॥ परिभवे ॥ ईषदर्थे ॥ अयनम् । इण् शीभ्यां वन् ॥

एव' । त्रि । गन्तरि । गमनकर्त्तरि ॥ एति । इण्° । इण्शीभ्यां वन् ॥

एवम् । अ । उपमायाम् । सादृश्ये । वत् । वा । यथा । तथा । इवेत्यस्य पर्यायाः ॥ यथा । अग्निरेव विप्र । अग्निरिवेत्यर्थः ॥ इदम्प्रकारे । इत्थम् ॥ यथा । एवं वादिनि विप्रर्षौ । अवधारणे । यथा । एवमेतत ॥ अङ्गीकारे ॥ अर्थप्रश्ने ॥ परकृतौ ॥ पृच्छायाम् ॥

एषण । पु । लौहमयबाणे ॥

एषणा । स्त्री । इच्छायाम् । पुत्रलोकवित्तकामनासु ॥ न कश्चिदन्यः संसारभक्तादस्येषणात्रयात् ॥ इषेर्युच् टिटाप् ॥

एषणिका । स्त्री । एषण्याम् । नाराच्याम् । स्वर्णकारादीनांतुलायाम् । निक्ति इतिगौडभाषा । काँटाइति देशभाषा॥ इष्यतेऽनया । इषगतौ । ल्युट् । स्वार्थे कः । टाविच्चे ॥

एषणी । स्त्री । एषणिकायाम् ॥ व्रणमार्गानुसारिण्याम् । व्रणवेधशलाकायाम् । बेलकार इतिगौडभाषाप्रसिद्धायाम् ॥ चेतनाभिदि । इष्यतेनया । इषग° । ल्युट् । गौरादिषु एषणः करणइति ङीष् ॥

एषितव्य. । त्रि । अन्वेष्टव्ये ॥ एषितुं योग्यः । तव्यः ॥

एष्टव्यः । त्रि । एषितव्य ॥ यथा । एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोपि गयांव्रजेत् । यजेत वाश्वमेधेन नीलंवाद्दष

मुक्त्ततेदिति ॥

## ऐ:

ऐ । अ । हूतौ । आह्वाने ॥ स्मृतौ ॥ आमन्त्रणे ॥ मोचने ॥ ऐकारे ॥

ऐ । पुं । महेश्वरे ॥

ऐकध्यम् । अ । एकधार्थे ॥ एकाद्धोध्यमुञन्यतरस्यामिति धा प्रत्ययस्य ध्यमुञ् ॥

ऐकभाव्यम् । न । एकभावत्वे ॥ ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ् ॥

ऐकरस्यम् । न । सामरस्ये ॥ एकरसस्य भाव. । ष्यञ् ॥

ऐकागारिक. । त्रि । चौरे । तस्करे ॥ एकमसहायमगारं प्रयोजनमस्य । ऐकागारिकट् चौर इतिइकट् वृद्धिश्च निपातनात् ॥ स्त्रियां टित्त्वान् ङीपि । ऐकागारिकी ॥

ऐकाग्र । त्रि । एकताने ॥ एकाग्रात् स्वार्थेऽण् ॥

ऐकात्म्यम् । न । ऐक्ये ॥ एकात्मनो भाव. । ष्यञ् ॥

ऐकान्तिक. । त्रि । अव्यभिचारिणि । साधनानन्तर मवश्यम्भाविनि ॥

ऐकान्यिक: । पु । एकापपाठच्छात्रे ॥ यस्याध्ययने प्रवृत्तस्य परीक्षाकाले



विपरीतोच्चारणरूपं स्खलितमेकंजातं सोऽनेनोच्यते । एकमन्यदृत्तमस्य । कर्माध्ययने वृत्तमिति ठक् । एकमन्यदिति विगृह्य तद्धितार्थ इति समास: । ततष्ठक् । एवं द्वैयन्यिक: त्रैयन्यिक ॥

ऐकाह्निक. । त्रि । एकाहनिष्पन्ने ॥ पुं । एकदिनानन्तरभवे ज्वरे ॥ दिनेदिने एककालेसमागतज्वरे ॥ समुद्रस्योत्तरे तीरे द्विविदो नामवानर: । ऐकाह्निकज्वरंहन्तितस्य नामानुकीर्त्तिनात ॥ एकाहेभव: । ठक् ॥

ऐक्यम् । न । अभेदे । एकात्मभावे । एकत्वे । व्यतिरेकाभावे ॥ भावेष्यञ् ।

ऐक्षवम् । न । मोरटे । इक्षोर्मूले ॥ इक्षोरिदम् । अण् ॥ त्रि । इक्षोर्विकारे । गुडादौ ॥ तदवयवे ॥ बिल्वादण् ॥

ऐक्ष्वाक. । पुं । सूर्यवंश्यन्नृपे ॥ इक्ष्वाकोरपत्यम् । जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ् । बहुत्वलुक् । इक्ष्वाकूणां कुरामेथैत्वदधीनाहिसिद्धय इतिप्रयोग: ॥ इक्ष्वाकुषु जनपदेषु भव: । कोपधादण् । अस्यबहुत्वेपिनलुक् । ऐक्ष्वाकेषु चमैथिलेषुच फवन्त्वमाकमचाभिषइतिमुरारि: ॥ दाण्डिनायनेत्यु कारलोप: ॥

ऐङ्गुदम् । न । इङ्गुदीवृक्षस्यफले । हिङ्गोटा इतिभाषा ॥ इङ्गुद्या इदम् । प्लक्षादिभ्योऽणविधेर्नाणोलुक् ॥

ऐडविड । पुं । ऐलविले । कुवेरे ॥

ऐडूकम् । न । एडूके । सास्थिकुड्ये ॥ स्वार्थेऽण् ॥

ऐणम् । त्रि । एणस्य चर्मादौ ॥ एणस्य अवयवो विकारो वा । प्राणिरजतादिभ्योऽञ् ॥

ऐणिकः । त्रि । एणहन्तरि ॥

ऐणेयम् । त्रि । एणीत्वगादौ ॥ एण्या मृग्याविकारोऽवयवो वा एण्याढञ् ॥ स्त्रीणांरतिबन्धविशेषे ॥

ऐतरेय । पुं । ऋग्वेदोपनिषदि । तच्छाखायाम् ॥ त्रि । इतराया अपत्ये ॥

ऐतरेयी । पुं । ऋग्वेदीयशाखाविशेषाध्यायिनि ॥

ऐतिह्यम् । न । इतिह । पारम्पर्योपदेशे ॥ तत्रानिर्दिष्टप्रवक्तृकं पारम्पर्यप्रवादमात्रम् इतिह ऊचुर्वृद्धा इति ऐतिह्यम् । यथेह वटे यक्षः प्रतिवसतीति । इतिहेति निपातसमुदायः उपदेशपारम्पर्ये । तदेव । अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्य ॥ यद्वा चतुर्वर्णा[illegible] । स्वार्थेष्यञ् ॥

ऐनसः । पुं । एनसि ॥ स्वार्थिकः प्रज्ञा[illegible]द्यण् ॥

ऐन्दवम् । न । मृगशिरोनक्षत्रे ॥ त्रि । इन्दुसम्बन्धिनि ॥ इन्दोरिदम् । तस्येदमित्यण् ॥

ऐन्दवी । स्त्री । सोमराज्याम् ॥ ङीप् ॥

ऐन्द्र । पुं । अर्जुने ॥ वालिवानरे ॥ दैवसर्गान्तरे ॥ त्रि । शक्रसम्बन्धिनि ॥ इन्द्रस्यायम् । तस्येदमित्यण् ॥ न । ज्येष्ठानक्षत्रे ॥ मूलविशेषे । वनार्द्रकायाम् ॥ इन्द्रदेवताके हविरादौ ॥ इन्द्रोदेवतास्य । सास्यदेवतेत्यण् ॥

ऐन्द्रजालिकः । पुं । मायाकारके । मायाविनि ॥ इन्द्रजालेन चरति । चरतीतिठञ् ॥

ऐन्द्रलुप्तिकः । त्रि । केशघ्नरोगविशिष्टे । खल्लीटे । गञ्जा इतिभाषा ॥

ऐन्द्रिः । पुं । जयन्ते । इन्द्रपुत्रे ॥ काके ॥ अर्जुने ॥ वालिवानरे ॥ अपत्यार्थे इञ् ॥

ऐन्द्रियकम् । त्रि । प्रत्यक्षे । इन्द्रियग्राह्ये । इन्द्रियविषये ॥ इन्द्रियैरनुभूयते । कुलालादित्वाद्वुञ् ॥

ऐन्द्री । स्त्री । शच्याम् ॥ दुर्गायाम् ॥ अलक्ष्म्याम् ॥ एलायाम् ॥ इन्द्रवारुण्याम् । राखालसशा इतिगौडभाषा । इन्द्रायण इतिभाषा ॥ प्राच्यान्दिशि ॥ इन्द्रस्येयम् । तस्येदमित्यण् ।

टिड्ढेतिङीप् ॥

ऐभी । स्त्री । हस्तिघोषायाम् ॥

ऐर. । पुं । मण्डे ॥ इराअन्नम् तन्मयः ॥ न । ऐरंमदीयंसर इतिश्रुतिप्रसिद्धे मण्डेन पूर्णे मदकरे ब्रह्मलोकस्थे सरसि ॥

ऐरण्डम् । न । एरण्डस्यफले ॥

ऐराकः । पुं । खुरासानमध्येम्लेच्छदेशविशेषे ॥ तन्मध्ये चोत्तरेदेवि ऐराक' परिकीर्त्तितः । तन्मध्ये खुरासानमध्ये इति तन्त्रशास्त्रम् ॥

ऐरावणः । पुं । अभ्रमातङ्गे । ऐरावते । इन्द्रगजे ॥ इरया उदकेन वणति- । वणशब्दे । पचाद्यच् । इरावण एव । स्वार्थे प्रज्ञाद्यण् ॥ यद्वा इरा सुरा वनमुदकं यस्मिन् । पूर्वपदादितिणत्वम् । इरावणे भवः । तत्रभव इ-त्यण् ॥

ऐरावतः । पुं । नारङ्गे ॥ लकुचद्रुमे ॥ नागभेदे ॥ पञ्चमात्रस्य प्रथमे ऽऽप्रभेदे ॥ शक्रदिपे । अभ्रमुवल्लभे । चतुर्दन्तगजे ॥ इराउदकानि सन्त्यस्मिन् । मतुप् । इरावान् समुद्रः । इरावत्यब्धौ भवः तत्रभवइत्यण् ॥ इरावत्या विद्युत इवायंवा । तस्येदमित्यण् ॥ न । महेन्द्रस्य ऋजुदीर्घशरासने ॥

ऐरावती । स्त्री । वटपत्रीवृक्षे ॥ विद्युति ॥ विद्युद्भेदे ॥ इराआप. सन्त्यस्य इरावान् मेघ. । तस्येयम् । तस्येदमित्यण् । ङीप् । ऐरावतेनैकदिक् । तेनैकदिगित्यण्वा ॥ उत्तरमार्गेनक्षत्र विशेषाणां संज्ञाविशेषे ॥ यथा । पुष्याश्लेषा तथादित्यावीथी चैरावतीस्मृतेति ॥

ऐरिणम् । न । पांशवलवण ॥

ऐरेयम् । न । मद्यविशेषे ॥ चि । कुजे ॥ इराया अपत्यम् । स्त्रीभ्योढक् ॥

ऐलः । पुं । चन्द्रवंशीये पुरूरवसि न्टपे ॥ इलाया अपत्यम् । अण् ॥

ऐलवालुकम् । न । एलेये । वालुके । हरिवालुके । गन्धद्रव्यमिदम् एलवालुकमेव । स्वार्थेऽण् ॥

ऐलविल. । पु । कुबेरे । पुण्यजनेश्वरे ॥ इलविलाया' अपत्यम् । इडविलायावा अपत्यमितिविग्रहे । ऐडविलोपि । ऋष्यन्ध्योनदीत्यण् ॥ डलयोरेकत्वस्मरणादैडविलोपि । इडविडा अस्तिमातृत्वेन अस्येतिविग्रहे ज्योत्स्नादित्वा दणि ऐडविडोपि ॥

ऐलेयम् । न । २ एवालुकनामगन्धद्रव्ये ॥ इलायाअपत्यम् । स्त्रीभ्योढक ॥

ऐशानी । स्त्री । ईशदिशि । ईशानकोणे ॥ ईशानस्येयम् । अण ङीप ॥

ऐश्वरम् । न । अघटनघटनाचातुर्य्ये ॥ त्रि ॥ ईश्वरसम्बन्धिनि ॥ ईश्वरस्येदम् । अण् ॥

ऐश्वरी । स्त्री । ईश्वरसम्बन्धिन्यांशक्तौ ॥

ऐश्वर्य्यम् । न । विभूतौ । अणिमाद्यष्टसिद्धिषु ॥ सात्त्विकोबुद्धिधर्मऐश्वर्य्यम् । यतोऽणिमालघिमामहिमाप्राप्तिप्राकाम्यवशित्वेशित्वकामावसायित्वानां प्रादुर्भावः । ऐश्वर्य्या द्विधात इच्छाया भवति । ईश्वरोहि यदेवेच्छतितत्करोति ॥ सम्पत्तौ ॥ नियन्तृत्वे ॥ ईश्वरस्यभावः । गुणवचनेतिष्यञ् ॥

ऐषमः । अ । वर्त्तमानवत्सरे । एबौँ इतिभाषा ॥ अस्मिन् संवत्सरे । सद्यः परुत्परार्य्येषमः इदमश् समसण् प्रत्ययश्च संवत्सरे निपात्यते ॥

ऐषमस्तनः । त्रि । ऐषमोभवे ॥ ऐषमोह्यः श्वसोन्यतरस्यामिति शैषिकेष्वर्थेषु पक्षेत्युट्युलौ ॥

ऐषमस्त्यः । त्रि । ऐषमस्तने । ऐषमोभवे जाते इत्याद्यर्थेषु ॥ ऐषमोह्यसितिपक्षे त्यप् ॥

ऐहलौकिकम् । न । धने ॥ त्रि । इहलोकोपयोगिनि ॥ यथा । ऐहलौकिकमीहन्ते मांसशोणितवर्द्धनम् । पारलौकिककार्येषु प्रसुप्ताभृशना-



स्तिका इतिमहाभारते पावकाध्ययनम् ॥ इहलोकेभवम् । अध्यात्मादेष्ठञिष्यते ॥

ऐहिकः । त्रि । इहलोकभवे प्रतिपन्नशरीरसम्बन्धिनि स्रक्चन्दनवनितागृहक्षेत्रपशुभृत्यादिविषयजन्यसुखदुःखादिस्वरूपेभोगे ॥ इहभवम् । कालाट्ठञ् ॥

---

## ओः

---

ओ । अ । सम्बोधने ॥ आह्वाने ॥ स्मरणे ॥ अनुकम्पायाम् ॥ ओकारे ॥

ओः । पुं । ब्रह्मणि ॥ इत्येकाक्षरकोषः ॥

ओकः । पुं । शकुन्ते ॥ वृषले ॥ उचेरिगुपधलक्षणेके गुणः कुत्वञ्च ओकउचः केइतिनिपात्यते ॥

ओकणः । पुं । } केशकीटे । यूकायाम्
ओकणिः । पुं । } । जूँ इतिभाषा ॥

ओकः । न । पुं । आश्रयमात्रे ॥ गृहे । मन्दिरे ॥ उच्यते समवैत्यत्र । उचसमवाये । असुन् । गुणः । न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम् ॥

ओघः । पुं । प्रवाहे । जलस्य वेगे ॥ वृन्दे । सङ्घाते ॥ परम्परायाम् ॥ उपदेशे ॥ काल्याख्यायां तुष्टौ ॥ यथा । प्रव्रज्यापि न सद्यो निर्वाणदेति सैव कालपरिपाकमपेक्ष्य सिद्धिं ते विधास्यति अलमुत्तमतया तवेत्युपदेशे या आध्यात्मिका तुष्टि साकालाख्या ओघ उच्यते ॥ द्रुतनृत्ये ॥ नृत्यद्रुत्युपलक्षणं गीतवाद्ययोः ॥ ओचनम् । उच० । घञ् । पृषोदरादित्वात् घः ॥ वहति वा । वह० । पचाद्यच् । न्यङ्क्वादित्वात् साधुः ॥ यद्वा । आऊह्यतेऽनेन । ऊह० । हलश्चेति घञ् ॥

ओङ्कारः । पुं । प्रणवे । वेदितव्ये ब्रह्मणि वेदनसाधने ॥ अवति । अवरक्षणादौ । अवतेष्टिलोपश्चेति मन् । मनप्रत्ययस्यैवायं टिलोपो न तु प्रकृतेः । अन्यथा डिदित्येव ब्रूयात् । ज्वरत्वरेत्यूट् । गुणः । वषट्कार इति लिङ्गात् समुदायादपि कार प्रत्ययः ॥ अत्राह आपस्तम्ब ॥ ओङ्कारः स्वर्गद्वारं तद्ब्रह्म अध्येष्यमाण एतदादि प्रतिपद्येत विकथां चान्यां कृत्वा एवं लौकिक्या वाचा व्यावर्त्तते इति ॥ लौकिक्या वा चा व्यावर्त्तते तया मिश्रितं न भवतीत्यर्थः ॥

ओङ्कारा । स्त्री । बुद्धशक्तिविशेषे । तारायाम् ॥

ओजः । पुं । विषमसङ्ख्यायाम् ॥ ओजेनौजसमःपादे ॥ इति भरतादयः ॥

ओजतिथिः । पुं । विषमतिथौ ॥

ओजः । न । दीप्तौ ॥ अवष्टम्भे ॥ प्रकाशे ॥ प्राणबले । निजबले । सामर्थ्ये ॥ प्रथमतृतीयपञ्चमसप्तमनवमैकादशराशिषु ॥ धातुतेजसि ॥ शस्त्रादिकौशले ॥ ज्ञानेन्द्रियाणां पाटवे ॥ काव्यगुणे गौडीरीत्याम् ॥ तल्लक्षणम् । बहुसमाससंयुक्तवर्णपदाडम्बरः । यथा ओजःप्रसादमाधुर्यगुणातिशयभेदतः । गौडवैदर्भपाञ्चालीरीतयः परिकीर्तिताः ॥ ओजस्समासभूयस्त्वं मांसलं पदडम्बरम् ॥ तस्योदाहरणं यथा । गङ्गोत्तुङ्गतरङ्गसङ्गतजटाजूटाग्रजाग्रत्फणिस्फूर्जत्फूत्कृतिभीतिसम्भृतचमत्कारस्फुरत्सम्भ्रमा । आनन्दामृतवापिकां विदधती चित्तं गिरीशप्रिया त्वां पायान्नवसङ्गमे भगवती लज्जावती पार्वतीति ॥ रसादिस्सधातुसारभागजधातुविशेषे ॥ यथा । हृदि तिष्ठति यच्छुद्धं रक्तमीषत्सपीतकम् । ओजश्शरीरे सञ्जातं त

नाप्नान्नाम गच्छति ॥ भ्रमरैःफल पुष्पेभ्यो यथासम्भ्रियतेमधु । तद्वदोजश्शरीरेभ्योधातुःसम्भ्रियतेन्नृणामितिवैद्यकशास्त्रम् ॥ उब्जत्यनेन । उब्जआर्जवे । उब्जेर्बलेवलोपश्चेत्यसुन् ॥

ओजिष्ठ. । त्रि । ओजस्विनि ॥ सारतमे ॥ उभयत्र विन्यन्ता दोजस्विशब्दा दिष्ठन् । विन्मतोर्लुगिति लुक् टिलोपश्च ॥

ओडव: । पु । पञ्चस्वरयुक्तरागे ॥ सतु ऋ प वर्जितः । ष ग म ध नि युक्त.। यथा मल्लारादयः ॥ इतिसङ्गीतदामोदरः ॥

ओडिका । स्त्री । उडिधान्यइतिगौडभाषामसिद्धे धान्यविशेषे । नीवारे ॥

ओडी । पुं । ओडिका धान्ये ॥

ओड्र' । पुं । जवापुष्पे ॥ जवापुष्प वृत्ते ॥ अन्ने ॥ आङ्पूर्वादुनत्ति । उन्दी । स्फायितञ्चीतिरक् । बाहुलकाद्दस्यडत्वम् ॥

ओड्राः । पुं । भूमि । उडीसा इति प्रसिद्धे नीवृद्विशेषे ॥

ओड्रपुष्पम् । न । ओडर गुडहर इतिप्रसिद्धायांजवायाम् । जवाटत्ते ॥ ओड्रं पुष्प मस्य। ओड्रपुष्पकुसुमप्रियेम्बिके इतिश्वरानन्दः ॥

ओड्राख्या । स्त्री । जवावृक्षे ॥

ओतः । त्रि । पटेदीर्घतन्तौ ॥ अन्तर्व्याप्तौ ॥

ओतुः । पुं । स्त्री । विडाले ॥ अवतिविष्ठाम् आखुश्योगृह्वंवा । अवरक्षणादौ । सितनीतितुन् । ज्वरत्वरेत्यूठ् । गुणः ॥

ओतुमदः । पुं । मार्जारघर्मौ ॥

ओदनः । पु । न । अन्ने । भक्ते । भात इति भाषा ॥ उनत्ति । उन्दी०। उन्देर्नलोपश्चेति युच् ॥ यद्दा ऊर्द्दते ऽनेन । ऊर्द्दक्रीडायाम् । करणे ल्युट् । पृषोदरादिः ॥

ओदनपाकी । स्त्री । ओषधिविशेषे । नीलझिण्टयाम् ॥ पाककर्णेति ङीष् ॥

ओदनाह्वा । स्त्री । महासमङ्गायाम् ॥

ओदनिका । स्त्री । महासमङ्गायाम् ॥ बलायाम् ॥

ओदनी । स्त्री । बलायाम् ॥

ओद्म. । पुं । उन्दने ॥ उन्दी० । औणादिके मन् प्रत्यये । अवोदैधोद्म प्रश्रथहिमश्रथा इतिनलोपोगुणश्च निपातितः ॥

ओम् । अ । उपक्रमे ॥ प्रणवे ॥ अभ्युपगमे । अनुमतौ ॥ अपाकृतौ । अस्वीकारे ॥ मङ्गले । शुभे ॥ बेधेब्र

शक्तिवेदनसाधने ॥ अवति । अव-रक्षणादौ । अवतेष्टिलो पश्चेतिम न् । मनएवट्टिलोपः । ञ खरेभ्यू ह् । गुणः ॥

ओखः । पुं । अर्शोघ्ने । सूरणे । कन्दे ॥ त्रि । आर्द्रे । गीला भीजा इतिच भाषा ॥

ओलः । पुं । ओले । सूरणे ॥ ग्राम्यक न्दस्तुदोषलः ॥ त्रि । आर्द्रे । आला गीला इतिचभाषा ॥

ओषः । पुं । द.हे प्रोषे ।प्लोषे ॥ ओ षणम् । उष० । घञ् ॥

ओषणः । पुं । कटुरसे । झाल इति-भाषा ॥

ओषणी । स्त्री । पुत्त्रा इतिगौडभाषा प्रसिद्धे शाकविशेषे ॥

ओषधिः । स्त्री । फलपाकान्ते कदल्या दौ । व्रीहियवादौ ॥ जातिमात्रवि वक्षाय(।ने।ष)ेशब्दस्य प्रयोगो भव ति ॥ ओषः (।)ाषः ढ्ँ ह्‌स्वाधीयते ∞ । डुधाञ० । कर्मण्यधिकरणेचे ति किः ॥

ओषधिप्रस्थः । पुं । हिमालयस्य न-गरविशेषे ॥

ओषधी । स्त्री । फलपाकान्ते व्रीहिय-वादौ ॥ किमध्यधान्नात् कृदिकारा दितिङीष् ॥ जातिमात्रविवक्षाया

मस्य प्रयोगो भवति । ओषध्यः प-ञ्चधाख्याता लतागुल्मास्तुशाखिनः। पादपाः प्रसराश्चेति तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥ गुडूच्याद्यालताः प्रोक्ताः गुल्माः पर्पटकादयः । आम्राद्या. शा खिनोज्ञेया वटाश्वत्थादि पादपा. ॥ कण्टकार्य्यादिकाः सर्वाः प्रसरा इति कीर्त्तिताः

ओषधीपतिः । पुं । इन्दौ । चन्द्रमसि ॥ ओषधीनांपतिः ॥

ओषधीशः । पुं । ग्लावि । चन्द्रे ॥ ओ षधीनामीशः ॥ कर्पूरे ॥

ओष्ठः । पुं । दशनवाससि । रदनच्छ दे । ऊपरला होठ इतिभाषा ॥ अ धरे । नीचला ओठ होठ इतिच भाषा ॥ उष्यते उष्णाहारेण । उष० । उषिकुषीतिथन् ॥

ओष्ठपुष्पः । पुं । बन्धूकपुष्पवृक्षे ॥

ओष्ठरोगः । पुं । आस्यरोगान्तर्गतौष्ठ भवव्याधौ ॥ विशेषोस्यनिदाने ॥

ओष्ठी । स्त्री । बिम्बफले । कँदूरी इ तिभाषा ॥

ओष्ठोपमफला । स्त्री । बिम्बिकायाम् । कँदूरी इतिभाषा ॥ ओष्ठोपमा नि फलानियस्याः ॥

ओष्ठ्यः । पुं । ओष्ठभवेवर्णे ॥ त्रि । ओष्ठहिते ॥ ओष्ठेभवः । शरीराव

यवगश्चेति यत् ॥ ओष्ठयोर्हितः । श
रीरावयवाद्यत् ॥
औष्णम् । त्रि । ईषदुष्णे ॥ आउष्णम् ॥

## औः

औ । अ । आह्वाने ॥ सम्बोधने ॥ वि
रोधे ॥ निर्णये ॥ शूद्राणां प्रणवे ॥
यथा । चतुर्दशस्वरो योसौ सेतुरौ
कार संज्ञितः । सचानुस्वारनादाभ्यां
शूद्राणां सेतुरुच्यते इतिकालिका
पुराणम् ॥ औकारे ॥
औः । पुं । अनन्ते ॥ निस्वने ॥ स्त्री ।
विश्वम्भरायाम् ॥
औक्थिकः । पुं । उक्थाध्ययनकर्त्तरि ॥
उक्थमधीते वेदवा । क्रतूक्थादी
ति ठक् ॥
औक्थिक्यम् । न । औक्थिकानां धर्मे
॥ तेषामाम्नायेपि ॥ छन्दोगौक्थिके
तिञ्यः ॥
औक्षम् । न । वृषसमूहे ॥ उक्ष्णां स
मूहः तस्यसमूहइत्यण् । औक्ष
मनपत्य इतिटिलोपः ॥ अपत्येतु ।
औक्ष्णः । यपूर्वहने व्यलोपः ॥
औक्षकम् । न । उक्ष्णां समूहे । वृ



षहन्ने ॥ गोत्रोक्षोष्ट्रेति-वुञ् ॥
औखम् । त्रि । स्थालीपक्के ऽन्नादौ ।
पिठरपक्के ॥ उखा मेव स्वार्थ ष्यञ् ॥
औचिती । स्त्री । औचित्ये ॥ सत्ये
॥ उचितस्य भावः । ब्राह्मणादित्वा-
त् ष्यञ् । ङीष् । हलस्तद्धितस्येति
यलोपः ॥
औचित्यम् । न । उचितत्वे । योग्य
त्वे ॥ सत्ये ॥ उचितस्य भावः ।
ब्राह्मणादेराकृतिगणत्वात् ष्यञ् ॥
औजसिक । पुं । शूरे ॥ ओजसा वर्त्त
ते । ओजस्सहोम्भसावर्त्तत इति-
ठक् ॥
औड्रः । पुं । ओड्रदेशोद्भवे आदौ
क्षत्रिये पश्चाद्ब्राह्मणादर्शनेन क्रिया
लोपादिनाच शूद्रत्वमापन्ने इत्युप-
दवाच्ये ॥ त्रि । ओड्रदेशजे ॥
औत्कर्ष्यम् । न । उत्कर्षतायाम् ॥ भा
वे ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ् ॥
औत्तरपथिकः । त्रि । उत्तरपथेनाहृ-
ते ॥ तेनगच्छति उत्तरपथेनाहृत
ञ्चेति ठञ् ॥
औत्तरपदिकः । त्रि । उत्तरपदग्राहि
णि ॥ उत्तरपदं गृह्णाति । ठक् ॥
औत्तराहः । त्रि । उत्तरस्मिन्कालः भ
वः ततआगतोवा ॥ उत्तरादाहञ् ॥
औत्तरेयः । पुं । परीक्षिन्नृपतौ ॥ उत्त

राया: अपत्यम्। स्त्रीभ्योढक्॥

औत्तानपादिः। पुं। ध्रुवे। स्वायम्भुव मनोःपौत्रे॥ उत्तानपादस्यापत्यम्। इञ्॥

औत्सर्गिक. । त्रि। उत्सर्गार्हे॥ सामान्यविधिरुत्सर्ग.। उत्सर्गमर्हति। ठञ्॥ सामान्यत्वे॥

औत्सुक्यम्। न। उत्कण्ठायाम्॥ उत्सुकस्य कर्मभावोवा। ष्यञ्॥

औदनिकः। त्रि। सूपकारे॥ ओदनं शिल्पमस्य। शिल्पमिति ठञ्॥

औदमेयिः। पुं। उदमेयस्यापत्ये॥ अतइञ्॥

औदमेयी। स्त्री। उदमेयजातौ॥ इञन्तात् इतोमनुष्यजातेरिति ङीष्॥

औदरिकः। त्रि। उदरमात्रपूरके। आद्यूने। पेटार्थी इतिभाषा॥ अत्यन्तबुभुक्षिते। बुभुक्षयात्यन्तपीडिते॥ उदरे प्रसितः। उदराट्ठगाद्यूनइतिठक्॥

औदश्वितम्। न। अर्द्धजलयुक्ते घोले॥ त्रि। उदश्विति संस्कृते॥ उदश्वितोन्यतरस्यामिति पक्षेऽण्॥

औदश्वित्कः। पुं। औदश्विते॥ उदश्विति संस्कृतम्। उदश्वितोन्यतरस्यामिति ठक्। इसुसुक्तान्तात् कः॥

औदार्यम्। न। उदारतायाम्॥ उदारस्यभाव.। गुणवचनेति ष्यञ्॥

औदासीन्यम्। न। शुभाशुभयोरुपेक्षायाम्॥ ताटस्थ्ये॥ उदासीनस्यभावः। ष्यञ्॥

औदास्यम्। न। अकर्त्तृत्वे॥ वैराग्ये। अनुरागादिशून्यतायाम्॥ मनोयोगाभावे॥

औदुम्बरः। पुं। आद्यदेवे। यमे॥ न। कुष्ठरोगप्रभेदे॥ तस्यलक्षणम्। रुग्दाहरागकण्डूभिः परीतं रोमपिञ्जरम्। उदुम्बरफलाभास कुष्ठमौदुम्बरं वदेदिति॥ ताम्रे॥ उदुम्बरमेव। प्रज्ञाद्यण्॥ यत्ताङ्गशाखिनःफलादौ॥ फलमौदुम्बरं बाल मल्लतक्रेणसाधितम्। वेसवारभृते सा पे पाचितं सैन्धवान्वितम्॥ शीतं कषायं मधुरं रक्तपित्तप्रणाशनम्। मूत्रकृच्छ्रहरंसक्षयग् विबन्धाध्मानकारकम्॥ उदुम्बरस्या वयवोविकारो-वा। प्राणिरजतादिभ्योऽञ्॥ त्रि। ताम्रजे पात्रादौ॥

औद्गात्रम्। न। सामवेदविहिते ऋत्विजः कर्मणि भावेच॥

औद्दालकम्। न। वल्मीककीटसम्भृते मधुनि॥ प्रायोवल्मीकमध्यस्थाः कपिलाः स्वल्पकीटकाः। कुर्वन्तिकपिलं स्वल्पंतत् स्यादौद्दाल-

कंमधु ॥ औद्दालकं रुचिकरं स्वर्य्यं कुष्ठविषापहम्। कषायमुष्णमम्लं च कटुपाकञ्चपित्तकृत् ॥

औद्दालकि । पुं । गौतमे ॥ उद्दालकस्यापत्यम् । अतइञ् ॥ आरुणी ॥

औद्धत्यम् । न । अविनीतभावे ॥ उद्धतस्य भावः । ष्यञ् ॥

औद्भिज्जम् । न । पांशवलवणे ॥

औद्भिदम् । न । रेह इति प्रसिद्धे पांशुलवणे ॥ औद्भिदं पांशुलवणं यज्जातंभूमितः स्वयम् । क्षारं गुरु कटु स्निग्धं श्लेष्मलंवातनाशनम् ॥ औमस्य पानीयस्य प्रभेदे ॥ यथा । विदार्य्य भूमिं निम्ना यन्महत्याधारया स्रवेत । ततोऽस्मौद्भिदं नाम वदन्तीति महर्षयः ॥ औद्भिदंवारि पित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम्। प्रीणनं मधुरं वल्यमीषद्वातकरं लघु इति ॥

औद्वाहिकम् । न । उद्वाहसम्बन्धिधने ॥ भार्य्याप्राप्तिकाले लब्धेभार्याधने ॥ तद्भ्रातृभिरविभाज्यम्। यथाह याज्ञवल्क्यः। पितृद्रव्याविनाशेन यदन्यत स्वयमर्जयेत्। मैत्रमौद्वाहिकञ्चैव दायादानां न तद्भवेदिति॥

औपगवः । पुं । उपगवपत्ये ॥ उपगोरपत्यम्। तस्यापत्यमित्यण् ॥ उपसमीपे गौ र्यस्य इति उपगुर्गोपः । लक्षणया । ततपुरोहितोऽपि । यथाह हारीतः । यंवर्णं याजयेद्वस्तु सतद्वर्णत्वमाप्नुयात् । सद्योवर्णेषु वर्णं श्चेत्स्येवमेवाब्रवीद्भृगुः ॥ तथाच लक्षणया ब्राह्मणोप्युपगुपदवाच्यः । तस्यापत्य मौपगवः ॥ इति श्रीधरस्वामिन ॥

औपगवकम् । न । औपगवानां समूहे ॥ गोत्रोक्षोष्ट्रेतिवुञ् ॥

औपचारिक । त्रि । उपचारार्थे ॥ विनयादित्वात् स्वार्थेठक् ॥

औपच्छन्दसिकम् । न । वैतालीयच्छन्दोविशेषे ॥ तत्रैवान्ते ऽधिकेगुरौ स्यादौपच्छन्दसिकं कवीन्द्रहृद्यमितिलक्षणम् ॥ यथा । आतन्वानं सुरारिकान्तास्वौपच्छन्दसिकं हृदाविनोदम् । कंसं योनिर्जघानदेवो वन्देतं जगतां स्थितिं दधानमिति ॥ पुष्पिताग्राभिधंकेचिदौपच्छन्दसिकं विदुः ॥ अन्यच्च । विषमे ससजा गुरु समेचेत सरयाश्छन्दसिकं तदौपपूर्वम् । यथा । स्मरगागमयी वपुस्तमिस्रा परितस्तारवेरसत्यतवश्यम् । प्रियमापदिवापितेक्षिके परितस्तारवेरसत्यवश्यमिति ॥

औपचेयम् । न । उपधौ । रथाङ्गे ॥ छदिरुपधीतिस्वार्थेढञ् ॥

औपनिधिकम् । न । उपनिधौ । प्रीत्याभोगार्थमर्पिते द्रव्ये ॥

औपनिषद' । त्रि । श्रुतिवेद्ये परमात्मनि ॥ उपनिषदा दृश्यते गृह्यते वा । उपनिषदो व्याख्यान स्तत्रभवो वा । शेषइति अध्यात्मगयनादित्यद्र तिवा । अण् ॥

औपनिषदम्मन्यः । पुं । भर्तृप्रपञ्चे ॥ अयंवेदान्तैकदेशी ॥ त्रि । अन्यत्र ॥

औपनीविकम् । त्रि । नीविसमीपे व्यावृते ॥ भवार्थे उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् ।

औपमन्यवः । पुं । प्राचीनशाखाध्यायी ॥ उपमन्योर्गोत्रापत्यम् । विदाद्यञ् ॥

औपम्यम् । न । अनुहारे । उपमायाम् । साम्ये ॥ उपमैव । चतुर्वर्णादित्वात्ष्यञ् ॥

औपयिकः । त्रि । उपयुक्ते ॥ न्यायागत वस्तुनि । लभ्ये ॥ उपायन्त्यनेन । अयगतौ । हलश्चेति घञ् ॥ उपायएव । उपायो ह्रस्वश्चेतिठक्ह्रस्वश्च ॥

औपरोधिकः । पुं । पीलुदण्डे । मेखले ॥ त्रि । उपरोधसम्बन्धिनि ॥

औपवस्तम् । न । उपवासे ॥ उपवस्तमेव । प्रज्ञाद्यण् ॥



औपवस्त्रम् । न । उपवासे । भोजनाऽभावे ॥ उपवसति । तृच् । उपवस्तुरिदंकर्म । तस्येदमित्यण् । माषान्मधुमसूरांश्चवर्जये दौपवस्त्रकमितिस्मृतिः ॥

औपसर्गिकः । पुं । सन्निपातरोगविशेषे ॥ तस्यलक्षणम् । कफोनुलोमवातेन यदिपित्तानुगो भवेत् । स्वेदश्वयथ्वादिभिर्जुष्ट स्तदाभवतिमानवः ॥ प्रतिलोमः पुनस्तेनस्वास्थ्यमायातितत्क्षणात् । औपसर्गिकएवान्य सन्निपातउदाहृत इति ॥ त्रि । उपसर्गसम्बन्धिनि ॥

औपस्थ्यम् । न । उपस्थेन्द्रियसुखे ॥

औपानह्यः । पुं । मुञ्जे ॥ न । चर्मणि ॥ उपानहे अयम् । ऋषभोपानहो-र्ञ्यः ॥

औमीनम् । त्रि । उम्ये ॥ उमानाम्भवनं क्षेत्रम् । विभाषातिलमाषोमेति पचेखञ् ॥

औरगम् । न । फणिभे ॥ त्रि । सर्पसम्बन्धिवस्तुनि ॥ उरगस्येदम् । अण् ॥

औरभ्रः । पुं । कम्बले । रक्षके ॥ उरभ्रस्य इदम् । अण् ॥

औरभ्रकम् । न । मेषवृन्दे ॥ उरभ्राणां समूहः । गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रेतिवुञ् ॥

औरभ्रिकः । त्रि । मेषजीवने ॥

औरसः । पु । स्त्री । उरस्ये । स्वात्मजे । ऊढसवर्णायां जनितापत्ये ॥ यथा । सवर्णाया संस्कृतायां स्वयमुत्पादये त्सुयम् । औरसं तं विजानीयात् पुत्रप्रथमकल्पितमिति ॥ उरसानि र्मितः । उरसोऽण् चेत्यण् ॥

औरसिकः । चि । उर इवेत्यर्थे ॥ अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् ॥

और्द्धदेहिकम् । त्रि । और्द्ध्वदेहिके ॥ केचिदस्यानुशतिकादिषु पाठं ने च्छन्ति ॥

और्द्ध्वदेहिकम् । चि । प्रेतकर्मणि । प्रेतदाने । प्रेतमुद्दिश्य मरणदिनमारभ्य सपिण्डीकरणपर्यन्तं प्रत्यहं दीयमाने जलपिण्डादौ । मृतार्थं तद्देहदानं त्रिषु स्यादौर्द्ध्वदेहिकम् ॥ देहादूर्द्ध्वः ऊर्द्धदेहः । राजदन्तादिः । ऊर्द्ध्वदेहभवम् । अध्यात्मादित्वाट्ठञ् । अनुशतिकादित्वादुभयपदवृद्धिः ॥

और्द्ध्वस्रोतसिकः । चि । शैवे ॥ इति त्रिकाण्डशेषः ॥

और्वः । पुं । वाडवानले ॥ सतुभूगोलस्य दक्षिणसीमा । तत्र सर्वे नरकाः दैत्याश्च वसन्ति ॥ पञ्चप्रवरान्तर्गत मुनिभेदे ॥ ऊर्वस्य मुनेरपत्यम् । ऋष्यण् । गोत्रापत्ये विदाद्यञ् ॥ न । पार्श्ववत्त्वव्यण् ॥

और्वरः । त्रि । भौमे । रजसि ॥

और्वशेयः । पुं । अगस्त्यमुनौ ॥

औलूकम् । न । पेचकसमूहे ॥ उलूकानां समूहः । खण्डिकादित्वादञ् ॥

औलूक्यः । पुं । वैशेषिके । वैशेषिकदर्शनाभिज्ञे ॥

औशनसम् । न । शास्त्रविशेषे । विचित्रनिर्माणप्रतिपादके शिल्पशास्त्रे ॥ उशनसा प्रोक्तम् । तेनप्रोक्तमित्यण् ॥ उपपुराणविशेषे ॥

औशिजः । पुं । उशिजि ॥ स्वार्थिकःप्रज्ञाद्यण् ॥

औशीरम् । न । शयनासने ॥ शयनंखाप. शय्या वा । आसनम्पीठादि । खापपीठयोः समुदितयोरियं संज्ञा ॥ चामरे ॥ दण्डे ॥ पुं । चामरदण्डे ॥ त्रि । उशीरजे ॥ उश्यते । वशकान्तौ । वशः किदिति ईरन् । प्रज्ञाद्यण् ॥ यद्वा । उशीरस्येदम् । तस्येदमित्यण् ॥

औषधम् । न । रोगनाशकद्रव्ये । भेषजे । जायौ । अगदे ॥ सर्वैः प्राणिभिर्भुज्यमाने ओषधिप्रभवेऽन्ने ॥ रोगहन्तृत्वेन द्रव्यमात्रविवक्षाया मौषधशब्दप्रयोगः । तेन घृततैलादिकमप्यौषधशब्दवाच्यमिति ध्येयम् ॥

अम्

ओषधेरिदम् । ओषधिरेव वा । ओषधे रजाता विष्यण् ॥ गुण्या म् ॥

औषरम् । न । पांशवलवणे ॥

औषरकम् । न । सार्वगुणे । मृत्तिका लवणे । खारीलीन खारीनून इति च भाष

औषसः । त्रि । प्राभातिके ॥ अनुदितौ षसराग इति औषसातपभयादि ति च भारवि र्लक्ष्यम् ॥ उषसिभ वः । सन्धिवेलेत्यादिनायोगविभा गादण् । अन्यथा कालाट्ठञ् स्यादि तिव्याख्यातारः । अपभ्रंश एवायमि ति प्रामाणिका. ॥

औष्ट्रम् । त्रि । उष्ट्रसम्बन्धिनि ॥ औष्ट्रं दुग्धं लघु स्वादु लवणं दीपनं त था । कृमिकुष्ठकफानाहशोफोदर हरं सरम् ॥ उष्ट्रस्येदम् । अण् ॥

औष्ट्रकम् । न । उष्ट्रसमूहे ॥ तस्यसमू हइत्यर्थे गोत्रोक्षोष्ट्रेतिवुञ ॥ उष्ट्रस्य विकारोऽवयवोवा । उष्ट्राद्वुञ् ॥

औष्ठ्र. । त्रि । ओष्ठभवे ॥ शरीराव यवाच्चेति यत् ॥

अम् । न । परे ब्रह्मणि ॥ अनुस्वारे । पञ्चदशे स्वरे ॥ बिन्दुमात्रानुनासि कवर्णोयम् । अत्राकार उच्चारणार्थः । अयं नकारमकारस्थानेपि भव ति ॥

क.

अ । पुं । महेश्वरे ॥ विसर्गे । षोडषे स्वरे ॥ द्विबिन्दुमात्रः कण्ठ्यवर्णोय म् । अत्राकार उच्चारणार्थ. । अयं रे फसकारस्थानेपि भवति ॥

इत्यादिगौडकुलोत्पन्नाडीश्ववाल प्रधानोपनामतुलारामभिश्रात्मज-श्रीधनपति मिश्रापरनाम्ना तथा श्री सद्गुरुकुलावधूतश्रीपरमहंसपरिव्रा जकाचार्यश्रीमद्धरिहरानन्दनाथभा रतिशिष्येण ब्राह्मावधूतश्रीसुखा-नन्दनाथपरनामधेयेन विरचितेश ब्दार्थचिन्तामणा वर्गो. समाप्ति-ङ्गत. ॥ १ ॥

Accession No. 039163
Shantarakshita Library
Tibetan Institute, Sarnath

तत सत्

कः । पुं । ब्रह्मणि ॥ समीरे ॥ आत्म-नि ॥ यमे ॥ दक्षप्रजापतौ ॥ भास्क रे ॥ कामग्रन्थौ ॥ चक्रिणि । नारा यणे ॥ पतत्त्रिणि । खगे ॥ पार्थिवे ।